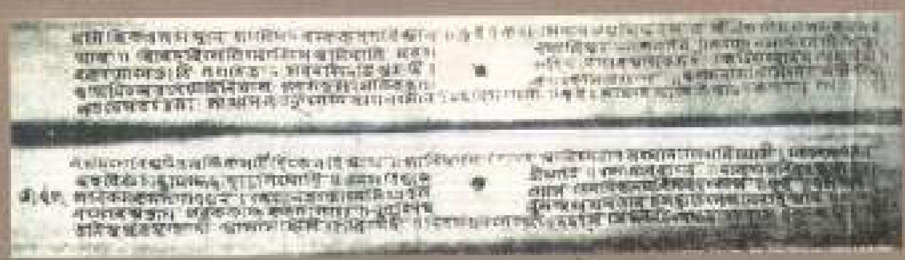


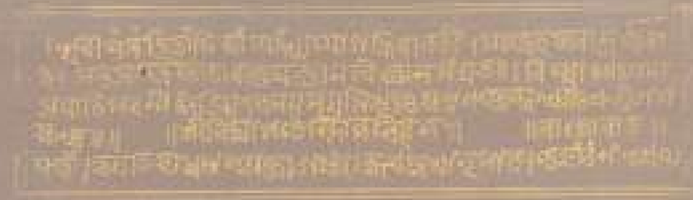


রিদ্যাপতি-গীত-সমগ্র
विद्यापति-गीत-समग्र
सम्पादक
पं. गोविन्द झा

CIIL

রিদ্যাপতি-গীত-সমগ্র

विद्यापति-गीत-समग्र





विद्यापति



सम्पादक

पं. गोविन्द झा

भारतीय भाषा संस्थान
मैसूर

विद्यापति-गीत-समग्र

प्रकाशन संख्या: 1025

विद्यापति-गीत-समग्र

सम्पादक : पं. गोविन्द झा

प्रकाशक : भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर

प्रथम संस्करण 2012

मूल्य :

मुद्रक : भारतीय भाषा संस्थान प्रेस, मैसूर।

विद्यापति-गीत-समग्र

सम्पादक

पं. गोविन्द झा

भारतीय भाषा संस्थान

मैसूर

Vidyapati-Gita-Samagra (Collection of the songs of Vidyapati)
Compiled by Pt. Govinda Jha

First Published: July 2012
Ashada 1933

Dr. S.N. Barman
Director in charge
Central Institute of Indian Languages
Manasagangotri, Mysore – 570 006, INDIA

Phone: 0091-821-2515820 (Director)
E-mail:barman_ashokbari@rediffmail.com

Fax: 0091-821-2515032
PABX: 0091/821-2345000
Website: http://www.ciil.org

For further information contact:
Dr.K. Kapfo
Head, Press & Publications
E-mail: kapfo@ciil.stpmy.soft.net

ISBN-978-81-7343-124-1

Price. ₹ 700/-

Published by
Dr. S.N.Barman, Director in charge
Central Institute of Indian Languages, Mysore

Printed at
CIIL Printing Press,
Manasagangotri,
Mysore-570 006, India

Cover Design: H. Manohar

आमुख

विद्यापतिक प्रेम आ' विरह-गाथा कें जे क्यो आजुक समयो मे पढ़ैत छथि, हुनक मन मे कृष्ण-भक्ति तरंगक स्थान पर राधा-विरहक भावे अधिक प्रकट भऽ उठैत छनि। श्याम-नाम मे राधा एतेक तल्लीन भेल छथि जे हुनका लागनि - हुनक शरीरक पंच-तत्व मे जे माटिक अंश छनि से मिला जाइक ओहि माटिक संग जाहि पर सँ कृष्ण चलैत छथि, हुनक शरीरक भीतर जे आगि सदा धधकि रहल छनि सेहो मिला जाइक दर्पणक आलोक मे जतय कृष्ण अपना कें कहियहु कखनहु निहारैत छथि, शरीरक भीतर जतेक जलराशि उमड़ि-गुमड़ि कए बहैत रहैत अछि से सबटा बाहर आबि कए ओहि नदी-पुष्करिणी मे मिला जाइक जतय श्रीकृष्ण अवगाहन करैत छथि आ' राधाकेर भीतरक सबटा प्राण-वायु बाहर भऽ कए मिला जाउक प्रकृतिक वायु-पुंज मे जकर मधुर प्रवाह सँ कृष्णक अंग-अंग शीतल भऽ जाइत छनि निदारुण ग्रीष्म मे। एहन राधा जे एहि लेल आकाश बनै चाहैत छथि जे तकर भीतर सँ श्याम-मेघक यातायात चलैत रहत युग-युग सँ - ताहि राधा केर मनो-व्यथा कें जँ क्यो अपन अजर लेखनी सँ अमरत्व प्रदान कैने छथि त ओ आर क्यो नहि, कवि-कोकिल विद्यापतिए छथि। विद्यापतिक राधा छथि सामान्या नारी, माटि-पानी केर ग्रंथन सँ जनिक शरीर-मनक अन्वय बनल छनि, जनिक प्रेम-भाव, प्रेम-भावना आ' प्रेम-भुवन हुनका असामान्या बना देने छलनि। जखन मंगल-काव्यक युग मे बंगालक कतेको कवि कृष्ण-जीवन पर, नहि त हुनक लीलामयता पर, नहि त राधा-कृष्ण प्रेमक उन्मतता पर आ' ने किछु त देह-तत्व पर जोर देने छलाह, तखनहि विद्यापति मानवीक ईश्वर-प्रेम मे जे आनन्द आ' विषादक छवि प्रस्फुट भ' उठैछ तकरहि काव्य-दर्पण प्रस्तुत कैने छलाह - एतहि ओ बाकी सब मध्ययुगीन कवि सँ भिन्न छलाह। एकर पूर्णांग अध्ययन संचयन संकलन आई धरि भेल नहि छल जाहि दुरूह कार्य मे पंडित

गोविन्द झा अत्यन्त साहसक संग अशीतिपरक अवस्था मे हाथ देने छथि जकर परिणाम आई पाठकक समक्ष विद्यापति-समग्रक रुप मे प्रस्तुत अछि।

जाहि नाट्य-रचनाक लेल मिथिलाक मध्य-युगक मंच प्रख्यात छल, ताहि नाटकीयताक छाप सेहो विद्यापतिक रचनामे हमरा भेटत। जाहि वर्णन-रत्नाकरक गद्यमय विश्लेषण आ' सामाजिक व्याख्यान सँ मध्य-युगक ज्ञान-चर्चा समृद्ध भेल छल, ताहि तरहक आलोक-वर्तिका हाथ मे धैने विद्यापतिक रचना डेग-डेग बढ़ैत गेल छल, जकर उत्कृष्ट उदाहरण मात्र 'भू-परिक्रमण' ग्रन्थे मे नहि, हुनक सृजनी साहित्य मे सेहो पाओल जायत। तर्क-वितर्क, भाव-विभाव, वाद-विसंवाद - सभक स्थान भेल छल कवि-कोकिलक कुहू-स्वरमे। एम्हर Harcourt Brace Custom केर पोथी 'Reading about the World'(1999) ग्रन्थक पहिल खंड मे (जकर संपादन कैने छलाह कतेको प्रख्यात साहित्यशास्त्री मिलि कए, जाहि मे छलाह- Paul Brians, Mary Gallwey, Douglas Hughes, Azfar Hussain, Richard Law, Michael Myers, Michael Neville, Roger Schlesinger, Alice Spitzer आओर Susan Swan प्रमुख) अत्यन्त गूढ़ वर्णन मे एहि तथ्य कें व्यक्त कैने छलथिन्ह- "In the well-known tradition of the influential early Indian poem called *Gita-Govinda* by Jayadeva, Vidyapati's love-songs re-create and reveal the world of Radha and Krishna, the major erotic figures of Indian mythology and literature. Such poems convey the devotion of Krishna's worshippers through the metaphor of human erotic love. While Jayadeva's poem celebrates Krishna's love and pays comparatively little attention to Radha the woman, Vidyapati is primarily concerned with the intense passion of Radha's love."

सबसँ पैघ पार्थक्य विद्यापति आ' हुनक युगक तथा बादहुक अन्य कवि सभ मे ई छलनि जे हुनक कविता कें ने मात्र 'वैष्णव पदावली'केर दर्जा देल जा सकैत छनि आ' ने 'शाक्त पदावली'केर। कोना एक विद्यापति एसगरे राधाक संग कृष्णक प्रेमक संगहि हर-पार्वतीक अन्योन्य अन्त:संबंध कें सेहो अपन काव्य मे प्रस्फुटित क' सकलाह सेहो शोधकर्त्ता लोकनिक लेल आई आश्चर्यक विषय छनि।

मुदा एहन सब तरहक शंका-समाधान भऽ जायत गोविन्द बाबूक एहि महान सम्पादकीय कृतिक माध्यमे।

ताहू सँ महत्वपूर्ण बात ई जे जतेक ठाम सँ विद्यापति कविवरक रचनाक पांडुलिपि आई धरि शोध-कर्ता लोकनि कें प्राप्त भेल छनि, जेना कि रामभद्रपुर आ' तरौनी मे तालपत्र मे, खंडिते रुप मे सही- से सभटा समेटि कए सम्पादक एहि महा-संकलन मे लऽ आनने छथि, जे कि अत्यन्त श्रम-साध्य कार्य छल। ताहि मे मित्र-मजुमदार तथा नेपाल-पोथी सभटा प्रतिफलित भेल अछि उपयुक्त टीका-टिप्पणी केर संग। आई जँ नगेन्द्रनाथ गुप्त द्वारा संकलित संपूर्ण पदावली रहितै, त एहि तरहें खंडित रुप कें जोड़बाक दु:साध्य कार्यक आवश्यकता नहि होइतैक।

अस्तु, देर अवश्य भेल मुदा तैयहु जे काज भारतीय भाषा संस्थानक आनुकुल्य सँ मैथिली प्रेमी विद्यापतिक पाठक-वर्गक समक्ष आई आबि रहल अछि, तकर श्रेय सम्पादक-प्रकाशक-पाठक सब कें जाइत छनि। एतेक शतकक बादो विद्यापति कें अविस्मरणीय बना देबाक श्रेय भरिसक हुनक प्रकाश-क्षमता कें जाइत छनि जे संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश सँ लऽ कए मैथिली- सबटा माध्यम मे अतुलनीय साहित्यक सर्जक छलाह। हुनक पदावली समग्र कें जन-समक्ष मे आनि कए संस्थानक वर्तमान प्रशासन हमरा सभक दिसि सँ साधुवादक पात्र बनल छथि। आ' प. गोविन्द झाजीक विषय मे त जतेक लिखब वा बाजब, से कमे हैत। एहन कर्मयोगी मिथिला मे होइत रहलाह, तैं मैथिली टिकल रहि सकलीह, एतबहि कहैत संस्थानक प्रेस, कॉपी एडिटर, प्रकाशन-विभाग सँ लऽ कए वर्तमान निदेशक, सभ कें हम अभिनन्दन ज्ञापन करै छियनि।

प्रो. उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'
रवीन्द्र भवन, विश्व-भारती तथा
भूतपूर्व निदेशक, भारतीय भाषा संस्थान,
मैसूर।

शांतिनिकेतन
1 जुलाई, 2012

विषय-क्रम

[टि. – वाम दिसक अंक () स्रोतक क्रमांक थिक आ दहिन दिसक गीतांक थिक]

प्रस्तावना

रूपरेखा ओ स्रोत

महाकवि विद्यापति मैथिल समाजक आ' विशेषतः मैथिली भाषा आ' साहित्यक गौरवध्वज थिकाह। हिनक अर्चा-चर्चा तँ उचिते खूब धूमधामसँ होइत रहल अछि, परन्तु खेदक विषय जे हिनक समग्र गीतक संग्रह आइ धरि मैथिली जगतमे प्रकाशित नहि भए सकल अछि। बंगला, अंग्रेजी आ' हिन्दीमे जे प्रकाशित अछि तकरा ने पूर्ण कहि सकैत छी, ने सन्तोषजनक, किएक तँ एहि सभमे गीतक पाठ बहुत बिगड़ल अछि तथा अर्थहु मे बहुतो भ्रान्ति अछि। तें हमरा आवश्यक बुझाएल जे विद्यापतिक समग्र प्रामाणिक गीत, बिगड़ल पाठ आ' अर्थकें सुधारि, सहज सुबोध छायाऽनुवादक संग एकत्र प्रकाशित कएल जाए। एही आवश्यकताक पूर्तिक प्रथम प्रयास थिक ई *विद्यापति-गीत-समग्र* ।

विद्यापतिक प्रामाणिक गीत कतेक उपलब्ध अछि से कहब कठिन। तखन प्रस्तुत संग्रहक नाममे समग्र शब्द एक विशेष अर्थमे राखल अछि – समग्र अर्थात् प्राचीन हस्तलेखमे मिथिला ओ नेपालमे पाओल गेल सभटा गीत। एहन प्राचीन हस्तलेख आठ गोट ज्ञात अछि – (1) रामभद्रपुर-तालपत्र, (2) नेपाल-तालपत्र, (3) तरौनी तालपत्र, (4) भाषागीतसंग्रह, (5) रागतरङ्गिणी, (6) हरगौरीविवाह नाटक, (7) गोरक्षविजय नाटक, तथा (8) नानारागगीत। दुइ-चारि गीत किछु आनहु प्राचीन स्रोतसँ लेल गेल अछि।

उक्त आठहु हस्तलेखमे बहुतो सम्प्रति लुप्त अछि। जे बाँचल अछि सेहो अपना आँखिएँ देखबाक सौभाग्य हमरा नहि भेल। अतः निम्नलिखित प्रकाशनहि कें अपन स्रोत बनबए पड़ल :

(1) विद्यापति विशुद्ध पदावली – सम्पादक शिवनन्दन ठाकुर।

(2) Songs of Vidyapati – सम्पादक सुभद्र झा।

(3) विद्यापति-पदावली – प्रकाशक बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्।

(4) भाषागीतसंग्रह – सम्पादक रमानाथ झा।

(5) हरगौरी विवाह – सम्पादक रामदेव झा।

(6) गोरक्षविजय – सम्पादक शशिनाथ झा।

(7) मैथिली प्राचीन गीतावली – सम्पादक सुरेन्द्र झा।

एहि स्रोत सभक गीतक अतिरिक्त विद्यापतिक भनितावाला शतशः गीत आधुनिक लिखित आ' मौखिक स्रोतमे, विशेषतः बंगालक वैष्णव पदावली सभमे भेटैत अछि। एकरा सभक प्रामाणिकता तँ बड़ सन्दिग्ध अछि, तैओ नाममे 'समग्र' शब्दक सार्थकताक हेतु एहनो गीत सभ दू भागमे दए देल अछि – *अर्वाचीन स्रोतक गीत* आ' *बंगाल स्रोतक गीत*। पहिल भागमे समग्रता राखल अछि। द्वितीय भागक गीत सभमे बड़-बड़ समस्या अछि। व्यावहारिक दृष्टिएँ बंगालक स्रोतवाला बहुतो गीत छाँटि देबए पड़ल। पूर्वहुक सम्पादकलोकनि एहि प्रकारक छटनी करैत अएलाह अछि।

अर्वाचीन स्रोतक गीत लगभग सभ आजुक लोकमुखी मैथिलीमे रचित अछि आ' एकर भावो लोकप्रसिद्ध आ' सोझ अछि। तें एकर सभ गीतक सम्पूर्ण छायानुवाद देब अनावश्यक बूझल। आवश्यकतानुसार यत्र-तत्र संक्षिप्त टिप्पणी मात्र दए देल अछि। सरल-सुबोध होएबाक कारणें पाठो अधिकतर स्वतः शुद्ध अछि। तें एहि भागमे पाठोद्धारो कदाचिते करए पड़ल अछि।

विद्यापतिक गीत कोन क्रमें राखल जाए इहो एक गम्भीर प्रश्न छल। पूर्वक कतोक सम्पादक लोकनि गीतकें विषयानुसार सजओलनि,

कतोक स्रोतक अनुसार। विमान विहारी मजूमदार रचनाक्रमें वा ऐतिहासिक दृष्टिएँ विन्यास कएल। प्राचीन हस्तलेख सभमे कतहु रागक्रम लक्षित होइत अछि। हम गीतक्रम स्रोतानुसार राखल अछि आ' स्रोतक्रम कालक्रमानुसार राखल। एहिमे हमरा एक सुलभ ई सूझल जे अध्येताकें स्पष्ट आभास भेटतनि जे विद्यापतिक भाषा आ' भाव कोना-कोना एहि छओ-सात सए वर्षमे बदलैत गेल अछि।

पाठोद्धारक प्रयास

सिद्धान्ततः स्रोतगत पाठमे कोनहु प्रकारक परिवर्तन करब अनधिकार चेष्टा मानल जाइत अछि। प्रायः सेह सोचि पूर्वक सातो संस्करण मे सामान्यतः अविकल राखल गेल अछि। एक विद्वान् तँ स्पष्ट शब्दमे कहिओ देलनि अछि :

[आकर ग्रन्थे जे पद जे भावे पाया गियाछे सेई भावेइ छापा हइल। छन्द ओ बानान संशोधनेर कोनओ चेष्टा करा हय ना।]

परन्तु आलोच्य हस्तलेख सभक दुःस्थितिकें देखैत हमरा ई आऽवश्यक आ' व्यावहारिक बुझाएल जे गीतक पाठमे मुख-परम्परया, प्रतिलिपि-परम्परया वा अज्ञतावश जे वर्तनी, व्याकरण, छन्द आदिक अशुद्धि स्पष्टतः लक्षित होइत अछि तकरा मूलमे संशोधित कए देल जाए। विद्वान् सम्पादक लोकनि बहुतो बिगड़ल पाठवाला प्राचीन हस्तलेख सभक सम्पादन एही विधिएँ करैत अएलाह अछि। से नहि कएने प्रकाशन व्यवहारोपयोगी नहि भए शुष्क शोधकर्म भए जाएत आ' सामान्य पाठक गीतक वास्तविक स्वरूप जनबासँ वंचित रहि जाएत। मूलक जे अंश बदलल से पाद-टिप्पणीमे यथावत् देखाए देल अछि, जाहिसँ मूल पाठकें लुप्त करबाक दोषी नहि होइ। हँ, व्याकरण, वर्तनी, अक्षराशुद्धि आदिक सुधार पादटिप्पणीमे देखाएब अनावश्यक बूझल।

परिवर्तित पाठ दू प्रकारक अछि। पहिल ओ जे आन स्रोतमे भेटल आ' अधिक उपयुक्त बुझाएल। दोसर ओ जे हम तर्क द्वारा स्वयं गढ़ल। नीक होइत जे ई बात सूचित कए देल जाइत आ' इहो स्पष्ट कए देल जाइत जे मूल पाठसँ विचलन कोन कारणें कएल गेल। परन्तु से कएने पोथी मोटाए जाइत तें विचलनक स्पष्टीकरण एहि प्रस्तावनहिमे एकत्रे कए देब व्यावहारिक बूझल।

मूल हस्तलेख आ' पूर्वक संस्करण सभमे जे पाठविकृति पाओल जाइत अछि तकर अनेक कारण अछि। विद्यापतिक गीतक जतेक हस्तलेख पाओल गेल अछि से सभटा हुनक समयसँ कमसँ कम एक सए वर्ष पछातिक मानल जाइत अछि। एहि अवधिमे स्वभावतः हुनक भाषाक स्वरूप बदलल होएत आ' गीत सभ पर अनुलेखनकालीन भाषाक प्रभाव पड़ल होएत। तकरा मूल अवस्था पर आनब गहन अनुसन्धानसापेक्ष अछि। सौभाग्यवश गीत प्रचुर मात्रामे उपलब्ध अछि आ' ओहि सभमे टुटलो-फुटलो रूपमे विद्यापति-कालक भाषाक स्वरूप झलकैत अछि आओर ताहि आधारपर पाठोद्धार बहुत किछु सम्भव अछि। पूर्वक सम्पादकलोकनि ई काज नहि कएल। ततबे नहि, ओ लोकनि मूल स्रोतक पाठहिकें परम प्रामाणिक मानि कोनो हस्तक्षेप करबासँ विरत रहलाह। अवश्ये मूलाश्रित संस्करण (क्रिटिकल एडिशन) मे मूलपाठमे हस्तक्षेप नहि कएल जाइत अछि, परन्तु व्याख्यामे आ' टिप्पणीमे मूलपाठक भ्रान्ति आ' तकर निराकरण देखाओल जाइत अछि। पाठोद्धार नहि कए पाएब तें क्षम्य थिक, परन्तु प्रत्यक्षतः बिगड़ल, संगतिहीन, अप्रासंगिक आ' दुर्बोध पाठहुकें परम प्रामाणिक मानि असाधारण बुद्धिक बलें घीचि-तीरिकें अर्थ बैसाए देब कथमपि समीचीन नहि कहल जाएत।

ई बात नहि जे पूर्वक संस्करण सभमे पाठोद्धारक प्रयास एकदम नहि कएल गेल। सुधार उत्तरोत्तर होइत गेल अछि। तैओ बहुत विकृति रहि

गेल, जकर मुख्य कारण हमरा जनैत हस्तलेखक मूल पाठकें अधिक श्रद्धासँ देखब थिक। एहिसँ अतिरिक्त पाठ-विकृतिक मोटा-मोटी पाँच गोट कारण लक्षित होइत अछि :

(क) **लिपिवाचन-भ्रम** – अनुलिपिकर्ता अपन आदर्श हस्तलेखक अक्षर चिन्हबामे बहुत चुकलाह अछि। कखनहु अक्षर अस्पष्ट छल तें भ्रम। अधिकतर भ्रम एहि कारणें भेलनि अछि जे तिरहुतामे बहुत अक्षरक आकृतिमे परस्पर साम्य अछि। एहना स्थितिमे प्रासंगिक अर्थ बुझलहि पर अक्षर ठीक-ठीक चीन्हल जाए सकैत अछि आ' तकर प्रयास अनुलिपिकर्ता विशेषतः व्यवसायी अनुलिपिकर्ता नहि करैत छथि। ओना तें विभिन्न अक्षरमे साम्य सभ लिपिमे होइत अछि, परन्तु मिथिलाक्षरमे से किछु अधिक देखि पड़ैत अछि, जेना (1) *र, ब* तथा *व* मध्य ; (2) *ल, न, ण* तथा *ब* मध्य ; (3) *ध, ब, क* तथा *र* मध्य ; (4) *तु, ओ, ए, उ* तथा *त* मध्य ; (5) *सु* तथा *अ* मध्य, इत्यादि। किछु उदाहरण देखल जाए :

संकेत – तिर्यक् थिक शुद्ध रूप आ' अंक थिक गीतांक।

(1) ब <> र – बापु बहीरि : बापुर हारि [97] ; गबड : गरल [180]; चराबहि पारे: रचाबहि आबे [223] ; देउब: देउर [245] ; रे बथा: बेबथा [137] ; बाज : राज [170] ; राति नबसि: बाति नड़ाए [171] ; रिस: बिस [278].

(2) तु <> त तथा सु <> अ – तुअ : तसु [101, 173, 121] ; अनाइति : सुनाइबि [268] ; अचिरे: सुचिरे [175]।

(3) तु <> ओ – आर : आतुर [96] ; बरिसओ सार : बरिस तुसार [35]

(4) ल <> न – नोत : लोत [168] ; दुर लए: <u>दुरनए</u> [209] ; कलोने : <u>कलोले</u> [275]।

एहन ठाम अर्थ बुझलहि पर अक्षर ठीक-ठीक चीन्हल जाए सकैत अछि। अर्थ सोचबाक कष्ट कमे अनुलिपिकार करैत होएताह।

(ख) लिप्यन्तरणजन्य विकृति – आलोच्य हस्तलेख सभ तिरहुतामे अछि। छपएबाक क्रममे तकर नागरी लिप्यन्तरण कराओल गेल। एहू क्रममे बहुत पाठ बिगड़ल अछि। समान लिपिसँ अनुलिपि करबामे एकटा विशेष सुविधा रहैत छैक – जँ पढल नहि भेल तँ आदर्शतुल्य रैखिक आकृति बनाए दिऔक, अभिज्ञ पाठक ठीक-ठीक पढि लेताह। ई सुविधा लिप्यन्तरणमे नहि छैक। तेँ तिरहुतासँ नागरीमे उतारल लेखमे आएल पाठविकृतिक उद्धार करबामे ओकर मूल तिरहुताक आकृतिक ध्यान करए पड़ैत छैक। जेना, नागरी पाठ अछि *तु अभिमानी*, किन्तु *तु* प्रसंगमे बैसैत नहि अछि, तेँ एकर तिरहुता रूपक ध्यान कएल, तखन बुझाएल जे ई *तु* नहि, *ओ* थिक – *ओ अभिमानी*। ज्ञातव्य जे तिरहुतामे *तु* आ' *ओ* दूनूक आकृतिमे बहुत साम्य अछि। एहि प्रकारक लिप्यन्तरणजन्य पाठ-विकृति बहुत पाओल जाइत अछि।

(ग) छन्द नहि जानब – विद्यापतिकालीन गीतमे दू प्रकारक छन्द चलैत छल। पहिल वर्णवृत्त, जाहिमे वर्णक संख्या नियत रहैत छल। दोसर मात्रावृत्त, जाहिमे मात्राक संख्या नियत रहैत छल। पछाति मिथिलामे वर्णवृत्तक उठाप भए गेल तँ बंगालमे मात्रावृत्तक। यथा, कृत्तवासक बंगला रामायण आ' बलरामदासक महाभारत चौदह वर्णबाला पयार नामक छन्दमे अछि तँ चन्दाझाक *मैथिली रामायण* आ' मनबोधक *कृष्णजन्म* सोलह वा पनरह मात्राक चौपाइ छन्दमे अछि। लगैत अछि हमर आलोच्य सम्पादक लोकनिकेँ, उठाप भए जएबाक कारणेँ, वर्णवृत्तक

ज्ञान नहि रहलनि आ' तहिँ पयारकेँ चौपाइ बूझि, सोलह/पनरह मात्रा पुरएबाक फेरमे किछु जोड़ैत शुद्धो पाठकेँ अशुद्ध करैत गेलाह। ई जोड़ कतहु मूल पाठहिमे कोष्ठक बीच राखल भेटैत अछि तँ कतहु पादटिप्पणी मे। एतए एके-दूटा उदाहरण देखल जाए। सभसँ प्राचीन हस्तलेख राम. मे पाठ अछि – *हृदअ तोहर जानि न भेला* [12]। ई एगारह वर्णक छन्द मे रचल अछि। एतए सुभ. आ' राप. दूनू सम्पादक *न* केँ *नहि* कए छन्द तोड़ि देलनि अछि। एही गीतक चारिम चरण अछि *न मुख बचन न चित थीरे* (एगारह वर्ण)। एहिमे सुभ. *रह* जोड़ि छन्द तोड़ि देल – *न मुख वचन न चित (रह) थीरे।* एहिना पाँचम चरण *घर गुरुजन सङ्का* मे सुभ. आ' राप. दूनू *दुजन* केँ *दुरजन* बनाए छन्द तोड़ल।

(घ) व्याकरण नहि जानब – विद्यापतिकालीन भाषाक व्याकरण नहि जनबाक कारणहु कतहु-कतहु पाठ बिगड़ल अछि। राम. गीतसं. 394 मे पाठ अछि *सिसिर महीपति दापे चापि लेल राजा भेल वसन्तू।* एहिमे *चापि लेल* नहि, *चापि कहुँ* चाही, किएक तँ समापी क्रियापद *भेल* आगाँ अछिए। ई *कहुँ* अव्यय सम्प्रति केँ भए गेल अछि। एहिना [16] मे *पढि कए* नहि, *पढि कहुँ* चाही; विद्यापतिक भाषामे एहन ठाम *कए* नहि चलैत छल। एही गीतमे *कुसुम धूरि मलायनिल पूरलि* मे *मलयानिलेँ* चाही; कर्मवाच्यक कर्तामे -ए लगैत अछि। तुल. हिन्दी – *मलायनिल ने कुसुमधूलि भरी।* गीत [71] मे *किछु दोष नहिक हमारि, हृदयहु चाहह बिचारि*, एतए दोष पुलिंग थिक, तेँ हमारि नहि *हमर* चाही। शुद्ध पाठ होएत *किछु नहि दोख हमार, हिरदए करह बिचार।*

(ङ) अर्थ नहि जानब – अधिकतर पाठविकृतिक कारण थिक अर्थ बुझबाक चिन्ता नहि करब। एही कारणेँ अक्षर चिन्हबामे भ्रम होइत अछि। उदाहरण अछि *कामदेव अहेरानी (अगेआनी* चाही) ; *नव रतिपति*

नव परिमल लागर [6] *(नव रितुपति नव परिमल आगर चाही)* ; *बिचर निसाचर* केर स्थानमे *निचर निसाचर* भए गेल [11]।

वर्तनी ओ शब्दस्वरूप

पाठोद्धारक समय एकटा इहो प्रश्न उपस्थित भेल जे भिन्न-भिन्न ठाम पाओल गेल भिन्न-भिन्न वर्तनीमे कोनो एके अपनाओल जाए आकि एकरूपता अनबाक आग्रह छाड़ि हस्तलेखमे जे जहिना अछि तहिना रहए देल जाए? इहो प्रश्न विचारणीय जे वर्तनी प्रतिलिपिकारक अपन थिक कि कविक? जँ कविक तखन तँ यथावत् राखब समीचीन। जँ से नहि तखन ओहिमे परिवर्तन कएल जाए सकैत अछि। हमरा जनैत वर्तनी प्रतिलिपिकारक थिक, किएक तँ सभ हस्तलेखमे भिन्न-भिन्न वर्तनी पबैत छी।

जँ से मानी तँ वर्तनी सुधारब वांछनीय। किछु वर्तनी प्राचीनताक आभास दैत अछि तँ किछु नवीनताक। जेना *मञे* आ *मोञे* मे पहिल अर्वाचीन थिक तँ दोसर प्राचीन। *मोर, मोहि, मो पति* इत्यादिक सादृश्यसँ प्रतीत होइत अछि जे पूर्वमे *मोञे* छल, पछाति *मञे* भए गेल। एहिना पूर्वमे अधिकरणकारक चिह्न चन्द्रविन्दु छल जे क्रमशः लुप्त होइत गेल। सभसँ महत्वपूर्ण अछि *ळ,* जे प्राचीन मैथिलीमे छल, किन्तु पछाति *ड़/ल* भए गेल। प्राचीन वर्तनीकेँ यथावते राखब समीचीन बुझाइत अछि। सभसँ बेसी दुबिधाक स्थिति अछि तत्सममे *ए/य* केर। प्राचीन कालसँ चल अबैत ई दुबिधा मैथिलीकेँ आइ धरि गछारने अछि। आलोच्य हस्तलेख सभमे राम. *य्* केर सर्वथा त्याग कएने अछि तँ आन द्विविधाक स्थितिमे अछि। एहना स्थितिमे प्रसिद्ध तत्सममे सर्वत्र *य्* राखब अधिक व्यावहारिक बुझाएल। तेँ वर्तनीक विषयमे हम एहि निष्कर्ष पर पहुँचलहुँ जे प्राचीनताक आभासबाला व्याकरणानुकूल वर्तनी यथावत् रहए देल जाए,

आन-आन विवेकानुसार सुधारल जाए सकैत अछि। मूल हस्तलेखक वर्तनीमे जे परिवर्तन कएल अछि से पाठशुद्धिमे देखाओल नहि।

पाठ-समीक्षा

पूर्वमे कहल जे कोन-कोन कारणेँ पाठ बिगड़ल आ' बिगाड़ल गेल। आब एक गीतक पाठ-समीक्षा विस्तारपूर्वक कएल जाए। एहीमे प्रायः सभ प्रकारक पाठविकृतिक प्रचुर उदाहरण भेटत आ' तकर उद्धारक रीति सेहो भेटत।

> ह्रदय तोहर जानि न भेला। आनक रतन आनि मञे देला।।1।।
> कएल माधब हमे अकाज। हाथि मेलाउलि सिंहसमाज।।2।।
> राखह माधब मोरि बिनती। देहे परिहरि पर जुबती।।3।।
> चुम्बने नयन काजर गेला। दसने अधर खण्डित भेला।।4।।
> पीन पयोधर नखरेँ मन्दा। जनि महेसर सेखर चन्दा।।5।।
> न मुख बचन न मन थीरे। काम्प घनहन सबे सरीरे।।6।।
> घर गुरुजन दुजन सङ्का। लओलह माधब मोहि कलङ्का।।7।।
> भन विद्यापति तञे दूति भोरि। चेतन गोपए बेकति चोरि।।8।।

(1) **ह्रदय** – राम. ह्रदअ। *य्* स्वनक लोप तद्भवक प्रभाव थिक। प्रामै. मे पूर्वकालमे लोप चलैत छल, परन्तु पछाति तत्सममे पुनः *य्* उपस्थित भए गेल। यथा राम. *पओधर, नअन,* नेपा. *पयोधर, नयन* (नएन, नञेन सेहो)।

(2) **न** – नेपा. *नहि* । *न* पाठ शुद्ध थिक, कारण जे ई गीत एगारह वर्णक चरण बाला वर्णवृत्तमे अछि ; *नहि* रखने छन्द टुटैत अछि।

(3) **आनक** – नेपा. *परक* । राम. *आनक* । प्रामै. मे ञ् व्यंजन नहि, उत्तरवर्ती स्वरक सानुनासिकताक प्रतीक थिक। राप.

अपनहि मने *न्* वा *म्* केर समीपवर्ती सभ व्यंजनहीन स्वरमे ञ् जोडि दैत छथि। प्राचीन हस्तलेखमे यत्र-तत्र एहन ञ् भेटैत अछि, परन्तु शब्दक आदिमे नहि, जेना प्रामै *सञो (=सऑं), नञेन (= नएँन)*; किन्तु *आन* (*ञान* नहि)। अतः राप. पाठ *ञान* अग्राह्य।

(4) **मेलाउलि** – नेपा. *मेराउलि*। *र्* तथा *ल्* केर विनिमय प्रामै. मे बहुत ठाम पाओल जाइत अछि। *ल्* प्राचीन आ' अधिक ठाम भेटैछ तें *ल्* राखल।

(5) **समाज** – राप. एकर अर्थ नहि बूझि पाओल। ओ अर्थ करैत छथि-- "हाथी को सिंह के समाज में मिला दिया।" शुद्ध अर्थ होएत ""सिंहके साथ मिला दिया।"

(6) **जुबती** – नेपा. *युवती*। *य्* लिपिक भ्रम थिक। प्रामै. मे सर्वत्र प्राभाक *य्* आदिमे *ज्* भए जाइत अछि।

(7) **चुम्बने** – ई करणकारक थिक तें व्याकरणानुसार *चुम्बनें* "चुम्बनसँ" होएबाक चाही, परन्तु लगमे नासिक्य वर्ण रहने नासिक्यता स्वतः आबि जाइत अछि तें एहन ठाम चन्द्रबिन्दु नहि देल जाइछ।

(8) **नयन** – राम. *नअन*। हृदय जकाँ एतहु *य* राखल। *नएन* आ' *नञेन* सेहो पाओल जाइछ।

(9) **पयोधर** – राम. *पओधर* प्राचीन रूप थिक।

(10) **नखरें** – नेपा. *नखर* अग्राह्य। करणकारकक चिह्न लुप्त नहि होइछ। सुभ. एकरा *नखर (रेख)* कए देल जाहिमे *रेख* फाजिल अछि। एहिसँ अर्थ आ' छन्द दूनू बिगड़ैत अछि।

(11) **सेखर** – नेपा. *सरद* पाठ अप्रासंगिक।

(12) **न मन** – नेपा. *तन चित* अग्राह्य।

(13) **काम्प** – नेपा. *कापए*; राम. *कॉपए*। दूनू अग्राह्य; दूनू छन्द तोड़ैत अछि। *काम्प* प्राचीन थिक, *काँप* नवीन। नेपा. मे चन्द्रबिन्दु तें राम. मे नासिक्य व्यंजन।

(14) **दुजन** – राप. आ' सुभ. दूनू सम्पादक एकरा *दुरजन* बनाए छन्द तोड़ल अछि।

(15) **सङ्का** – राम. आ' नेपा. दूनू मे *शङ्का* पाठ अछि, परन्तु प्रामै. मे तालव्य श् नहि पाओल जाइत अछि। तें एकरा हम लिपिक भ्रम मानि दन्त्य *स्* कए देल।

(16) **लओलह** – नेपा. *न गुनह*; सुभ. *गुनह*। स्पष्टतः लिपिवाचन भ्रम। मिलाउ तिरहुता लिपिसँ। *न* नहि, *ल*; *गु* नहि, *ओ*, पुनः *न* नहि, *ल*। आओर, कलंक गुनल नहि, लगाओल जाइत अछि। *गुनह* द्विकर्मक नहि थिक तें ओकरा *मोहि* आ' *कलंक* दूनू सँ अन्वय कोना होएत?

(17) **भन** – राम., नेपा. *भने*। प्रामै.क व्याकरणमे *भने, सुने, देखे* एहन रूप नहि पाओल जाइत अछि। अतः *भन* पाठ चाही। *भने* ई रूप भनहि, भनइ, भने एहि प्रकारें विकसित भेल होएत।

(18) **तञे** – नेपा. मे ई छुटल अछि। दूनू सम्पादक छुटले पाठकें शुद्ध मानल जाहिसँ छन्द टूटैत अछि।

(19) **दूती** – राम. *दुति*, जे रूप अन्यत्र नहि भेटैछ तें अग्राह्य। रूपान्तर *दूति* पाओल जाइछ।

(20) बेकत – नेपा. *गुपुति* ठीक नहि। चोरि तँ गुप्त होइतहिँ अछि। प्रशंसा तखन जखन व्यक्तो चोरि छिपाबए।

ई भेल पाठसमीक्षाक एक उदाहरण। एहि प्रकारें जँ सभ गीतक समीक्षा लिखितहुँ तँ बेसम्हार भए जाइत। तें मनहि मन पाठ समीक्षा करैत गेलहुँ, जे पाठ उत्तम बुझाएल से राखल।

आब पाठ विकृतिक किछु रोचक उदाहरण देखल जाए। एहिमे (क) थिक मूल हस्तलेखगत पाठ, (ख) थिक परिशोधित पाठ आ' (ग) थिक टिप्पणी।

1. *(क) कतहु सारस बासर जोरए गुपुत कुसुमबान* - राप. एकर अर्थ करैन छथि – "कहीं छिपा हुआ कामदेव दिन में ही सारस पक्षी को प्रेमपाश मे जोड रहा है।" *(ख) कतहु सर सरासन जोडए कुपित कुसुमबान* "कतहु क्रुद्ध कामदेव धनुष पर बाण चढ़ाए रहल छथि।" (ग) वसन्त वर्णनमे सारस पक्षीक चर्चा अप्रासंगिक।

2. (क) *जनि वन पसेर लहरी* "जैसे जंगल । (जंगली आग की लपट।" राप. पृ-24 । (ख) जनि दिढ पासान रेह री" जेना पाषाण-रेखा दृढ़ होइत अछि (तहिना सुजनक वचन)।" (ग) पसेर शब्दक अर्थ आगि कोना?

3. (क) *तोहँहुँ मान वित अभिमानी, पर जना ओ बड भय हानी*।" तुम भी मान-धन की अभिमानिनी हो (और) वे पर-पुरुष हैं। बड़ा भय है कि हानि (न हो जाय!)।" राप. पृ.45 । (ख) *तोहँहुँ मानिनि ओ अभिमानी, पर जनाओब उभय हानी* "तोहूँ मानिनी छह आ' ओहो अभिमानी अछि। जँ अनका जनएबह (आनक सहायता लेबह) तँ दूनूक हानि (गुप्त प्रेम प्रकट भए जएतहु)।"

4. (क) *दारुण सुनि दुरजन बोल, जनि कम कम लागए गून* "दुर्जन का दारुण वचन सुनकर (कृष्ण को मेरा) गुण बहुत थोड़ा जान पड़ा।"—राप. पृ. 261 । (ख) *दारुन सुनिअ दुजन बोल, जनि कबकब लागए ओल* "सुनैत छी, दुर्जनक बोल दारुण होइत अछि, ओ ओल जकाँ कबकब लगैत अछि।"

5. (क) *पर अनुरोधें बोध दुर जाए, नाथ वराह दुअओ हलखाए* "दूसरों के अनुरोध से (जिससे अनुरोध किया जाता है उसका) ज्ञान दूर चला जाता है। (फल यही होता है कि) नायक (और) नायिका दोनो दूर हट जाते हैं।" राप. 2/28 । (ख) *पर अनुबोधें रोष दुर जाए, माधव राइ दुअओ हरखाए* "आनक बुझओला-सुझओलासँ रोष दूर भेल। माधव आ' राधा दूनू प्रसन्न भेल।"

6. (क) *विमुख बुझाए न करिअए बोल* "विमुख बुझाना है, मैं (उससे) बातें नहीं करती।"-राप. 1/156 । (ख) *पिसुन बुझाए न करिअए घोल* "पिशुनक समक्षमे घोल नहि करबाक चाही।"

गीतक प्रामाणिकता

कोन गीत विद्यापतिक कोन नहि से निर्धारण करब सोझ नहि। एहिमे गहन अनुसन्धानक आवश्यकता छैक। एतए ताहिमे पड़ब अप्रासंगिक। तथापि मोटा-मोटी एतबा कहि सकैत छी जे मिथिला आ' नेपालमे पाओल गेल प्राचीन हस्तलेख सभमे उपलब्ध गीत प्रामाणिक मानल जाइत अछि। तहिँ प्रस्तुत संग्रहमे हम एही गीत सभकेँ प्रामाणिक कहल अछि। विद्यापतिक नाम बाला जे गीत सभ लोकक मुहसँ वा बंगालक वैष्णव भजन सभसँ संगृहीत अछि ताहिमे किछु मात्रकेँ छाडि सभटा अप्रामाणिक प्रतीत होइत अछि, कारण जे एकरा सभक भाषा, भाव आ' शैलीमे आधुनिकता झलकैत अछि, विद्यापतिक कवित्व-प्रतिभा नहि देखाइत अछि आओर बहुत गीत विद्यापतिक प्रसिद्ध-प्रसिद्ध गीतक अपटु नकल-सन लगैत अछि। एक-दू टा उदाहरण देखल जाए। *कुञ्जभवन सञो निकसलि रे*⋯ एहि गीतमे सभ चरणमे समान अन्त्यानुप्रास अछि – *गिरिधारी, बटमारी, सारी* इत्यादि। ई शैली विद्यापतिक प्राचीन स्रोतक छओ सएसँ अधिक गीत बीच एको गीतमे नहि पाओल जाइत अछि। विद्यापति अन्त्यानुप्रास बदलैत चलैत छथि, सूरदास वा तुलसीदास जकाँ अन्त तक धएने नहि रहैत छथि। विद्यापति साडीकेँ *चीर* कहैत छथि, *सारी* नहि। तेँ *फाटत मोर सारी* विद्यापतिक भाषा नहि, आजुक भाषा थिक। *एहिना चानन भेल बिखम सर रे भूखन भेल भारी*⋯ विद्यापतिक नहि, किएक तँ एहूमे आद्यन्त समान अन्त्यानुप्रास अछि, *ऊधव* आ' *सारी* शब्द अछि। तेसर उदाहरण अछि *गौरा तोर अङ्गना*। अलमधिकेन। विद्यापतिक गीतक प्रायः सभ संकलयिता लोकनि विद्यापतिक नाम जोडल देखि प्रायः सभ गीतकेँ विद्यापतिक रचल मानि लेने छथि।

वास्तवमे प्रस्तुत संग्रहक किछु प्राचीनो गीतक प्रसंग सन्देह होइत अछि जे विद्यापतिक थिकनि कि कोनो आन कविक। सन्देहक एक कारण

अछि गीतक गुणवत्ता। विद्यापतिक प्रमुख वैशिष्ट्य थिक प्रसाद गुण अर्थात् अभिव्यक्तिक स्पष्टता, चमत्कार अर्थात् विस्मयजनकता तथा सरसता अर्थात् रोचकता। जे गीत एहि तीनू गुणसँ रहित अछि तकरा विद्यापतिकृत मानब हृदय स्वीकार नहि करैत अछि। बेरि-बेरि मन भेल जे एहन गीतकेँ तथा अपूर्ण गीत सभकेँ छाँटि दिऐक। परन्तु से साहस नहि भेल। कोन-कोन गीत एहि कोटिक से पाठक स्वयं बूझि जएताह।

गीतक प्रामाणिकता आँकबाक प्रयास विमान विहारी मजूमदार विद्वत्तापूर्वक कएल अछि आ' तकर रचनाक ऐतिहासिक क्रम सेहो निरूपित कएल अछि। हुनक सरणि धए प्रामाणिकताक मात्रा निरूपित कएल जाए तँ प्रस्तुत संग्रहक गीतक चारि कोटि होएत—(i) कवि आ' संरक्षक दूनूक नामबाला, (ii) केवल कविक नाम बाला, (iii) "इति विद्यापतेः" एहि प्रकारक टिप्पणी द्वारा निर्दिष्ट कवि-नाम बाला, तथा (iv) बिनु नाम बाला। एहि चारू कोटिमे प्रामाणिकता उत्तरोत्तर अल्प मानल जाए सकैत अछि। इहो सम्भव जे आनो-आनो कविक गीतमे विद्यापतिक नाम जोड़ाए गेल हो।

अन्तमे एतबे कहब जे ई विषय अनुसन्धान सापेक्ष अछि तेँ जे कहल से 'कच्चा माल' बूझल जाए।

विद्यापतिक परिचय

विद्यापतिक जन्म शुक्ल यजुर्वेदक माध्यन्दिन शाखाक काश्यपगोत्रीय ब्राह्मण-कुलमे लक्ष्मणसंवत् 241 (1350 ई.) क आस-पास मधुबनी जिलाक बेनीपट्टी थानाक अन्तर्गत बिसफी गाममे भेल। हिनक कुलक मूलपुरुष गढ़ बिसफीमे बसैत छलाह तेँ हुनक सन्तान *बिसइबार* (बिसपीबाला) कहबैत छथि। विद्यापतिक एहि कुलक परिचय मैथिल ब्राह्मणक पंजीमे प्रामाणिक रूपेँ भेटैत अछि (देखू पंजीक दू उद्धरण, परिशिष्ट 2 मे)। तदनुसार हिनक पिता छलाह गणपति ठाकुर, माता गाङ्गो देवी, मातामह बुधबाड़ श्रीशंकर, ससुर सम्बुआले हरिवंश शुक्ल। हिनका तीन पुत्र हरपति ठाकुर, वाचस्पति ठाकुर आ' नरपति ठाकुर।

पंजीक आधार पर विद्यापतिक उनैस पीढ़ीक वंशावली परिशिष्ट 1 मे देल गेल अछि। ताहिसँ तथा अन्यान्य स्रोतसँ ज्ञात होइत अछि जे मिथिलाक इतिहासमे हिनक पूर्वज सभक महिमा जहिना राजनीतिमे, तहिना शासन-प्रशासनमे आ' तहिना सारस्वत साधना मे अद्वितीय रहल अछि। हिनक वृद्धप्रपितामह देवादित्य ठाकुर मिथिलाक नान्यवंशी राजाक महामन्त्री रहथि। हिनका सात बालक। ई अपन राजा हरिसिंहदेवक राज्य व्यवस्थाकेँ सात विभागमे संगठित कएल आ' अपन सातो बेटाकेँ एक-एक विभागक अध्यक्ष बनाओल।

देवादित्यक बालक लोकनि बड-बड़ गोट सामन्त, सेनाध्यक्ष, प्रशासक आ' पण्डित रहथि जे पंजी आ' वंशावलीमे आएल विशेषणपद सभसँ प्रकट होइत अछि। सातो बालकमे महामहोपाध्याय पदवी केवल धीरेश्वर ठाकुरमे पबैत छी जे विद्यापतिक प्रपितामह छलाह। देवादित्यक पौत्र चण्डेश्वर ठाकुरक प्रतिष्ठा एहि कुलमे प्रायः सभसँ उपर छल। वस्तुतः मिथिलाक सम्पूर्ण शासनसूत्र हिनके हाथमे छल; राजा तँ मानू नाम मात्र

प्रभु छलाह। ई स्वर्णतुलादान कएल, अनेक युद्धमे विजय प्राप्त कएल आओर धर्मशास्त्रमे मैथिल परम्परा स्थापित कएल। ई कर्णाटवंशी राजा हरसिंहदेवक महामन्त्री छलाह।

जखन 1324-25 ई. मे गयासुद्दीन तुगलक हरसिंहदेवकेँ परास्त कए देल, आओर 1351-58 क बीच फीरोजशाह तुगलक मिथिलाक शासनाधिकार ओइनिबार भोगीश्वर ठाकुरकेँ देल तखन पुनः देवादित्यक ओएह पुत्र आ' पौत्र लोकनि चण्डेश्वर ठाकुरक नेतृत्व मे मिथिलाक शासनसूत्र धएलनि। राजा बदललाह, शासन बिसइबारे लोकनिक हाथमे रहल।

धीरेश्वरक पुत्र जयदत्त आ' पौत्र गणपतिक प्रसंग कोनो सूचना नहि भेटैत अछि। अनुमान कए सकैत छी जे धीरेश्वर हिनका दूनूकेँ पढ़ाए-लिखाए पण्डित बनाए राजाश्रय धराए देने होथि आ' पछाति बालक विद्यापति सेहो अपन पिताक वा पितामहक आङुर धए दरबार जाए लागल होएताह। ई एक गीतमे भोगीश्वरक उल्लेख कएने छथि। एहि गीतकेँ जँ प्रामाणिक मानी तँ हिनक लेखन भोगीश्वरक अस्तित्व कालहिसँ आरम्भ भेल आ' हिनक अन्तिम रचना *दुर्गाभक्तितरङ्गिणी* मानल जाइत अछि जे भैरवसिंहक आज्ञासँ लिखल गेल। तदनुसार लगभग 88 वर्षक जीवनमे ई 15 वर्ष अध्ययन-काल छाड़ि 73 वर्ष धरि लेखनी धएने रहलाह।

विद्यापतिक शिक्षा कतए आ' कोन शास्त्रक भेल से कहब कठिन। ताहि दिन मिथिलामे विद्याक दुइ गोट केन्द्र बड उत्कृष्ट छल—एक मड़रौनी आ' दोसर सरिसब। ई दूनू बिसपीसँ बहुत दूर नहि छल। अनुश्रुति अछि जे माण्डर कुलक महामहोपाध्यय वटेश झाक पुत्र पक्षधर झा हिनक सहपाठी छलाह। हुनका ओतए एक भोज भेल। सभ नेओतहारी भोजन कएल, विद्यापति छूटि गेलाह। गृहपति पक्षधरकेँ से ज्ञात भेलनि तँ परिहासपूर्वक बजलाह - *प्राघुणो घुणवत् कोणे सूक्ष्मत्वान् नोपलक्षितः*

अर्थात् पाहुन घुन जकाँ कोनमे दुबकल आ' ततेक पातर रहथि जे देखिए नहि पड़लाह। विद्यापति उत्तर देलथिन – *प्रायेण स्थूलबुद्धीनां सूक्ष्मे दृष्टिर्न जायते* अर्थात् ठीके, स्थूलबुद्धिकें सूक्ष्म वस्तु नहि सुझैत छैक। ई घटना सरिसबमे वा मङरौनी मे भेल होएत, किएक तँ पक्षधरकें मङरौनीमे माम आ' सरिसबमे बहिनोए।

ताहि दिन मिथिलामे न्यायशास्त्र आ' धर्मशास्त्र मुख्य रूपें प्रचलित छल। विद्यापति न्यायशास्त्र पढ़ल तकर कोनो प्रमाण नहि भेटैत अछि। परन्तु धर्मशास्त्रीक रूपमे विद्यापति दूर-दूर धरि सुविदित छलाह। बंगालक प्रकाण्ड धर्मशास्त्री रघुनन्दन भट्टाचार्य अपन *स्मृतितत्त्व* मे विद्यापतिकें बेरि-बेरि उद्धृत कएने छथि। किछु पण्डित हिनक प्रतिद्वन्द्वी वा हिनका प्रति ईर्ष्यालु सेहो छलाह। केशवमिश्र हिनक उल्लेख 'अतिलुब्ध नगरयाचक' शब्दें कएल अछि। धर्मशास्त्रमे ई अनेक ग्रन्थ लिखल।

विद्यापति शास्त्र जे कोनो पढ़ने होथु, पढ़ब शीघ्रे छाड़ि देलनि आ' लगभग चौदह-पनरह वर्षक अवस्थामे राजाश्रय धए लेलनि। एहि समयमे ओइनिबार राजवंशमे घोर बन्धुविग्रह बजरल छल। कहल जाइत अछि राजा गणेश्वरक वध कराए भवसिंह हुनक राज्य हथिआए लेल। गणेश्वरक बालक कीर्तिसिंह जौनपुरक सुलतान इब्राहिमशाहक सहायतासँ राज्य पलटओलनि आ' विद्यापतिकें राजपण्डित बनाए शासन करए लगलाह। विद्यापति *कीर्तिलता* मे एहि घटनावलीक काव्यात्मक विवरण लिखल।

कीर्तिसिंहक असामयिक निधन भेला पर महाकवि देवसिंहक आश्रयमे अएलाह। जखन देवसिंह बन्धुविग्रहसँ व्यथित आ' विरक्त भए तीर्थयात्रामे चललाह तँ सहायतार्थ हिनका संग कए लेल। एहि क्रममे ई देश भ्रमण कएल आ' किछु दिन हुनका संग नैमिषारण्यमे बिताओल। एही यात्राक क्रममे ई *भूपरिक्रमण* लिखल जे सम्भवतः प्रारूपावस्थहिमे

रहि गेल। पछाति एकरे कथा सभकें लए *पुरुषपरीक्षा* लिखाएल। एकर लक्ष्य रहल होएत युवराज शिवसिंहकें एक आदर्श पुरुष बनाएब।

नैमिषारण्यसँ घुरला पर विद्यापति आ' शिवसिंह दूनू दाम्पत्यजीवनमे प्रवेश कएल। आरम्भ भेल *भनइ विद्यापति ई रस जान राजा सिवसिंह रूपनराएन लखिमादेवि रमान*। बहए लागल रसधार। विद्यापति दू विवाह कएल तँ मिथिलापति सात। विद्यापतिक कोनहु पत्नीक नाम ज्ञात नहि अछि। शिवसिंहक सातो पत्नीक नाम ज्ञात अछि – लखिमा, सुखमा, मधुमती, सुरमा, रूपिनि, मेधावती आ' मोदवती। बहुतो नाम विद्यापतिक गीतक भनितामे आएल अछि। शिवसिंह प्रायः निःसन्तान रहलाह। विद्यापतिकें तीन पुत्र आ' दू कन्या। पहिल पुत्र हरपति मुद्राहस्तक रहथि, कोन राजाक से ज्ञात नहि अछि। हिनक एक ग्रन्थ अछि दैवज्ञबान्धव, जाहिसँ प्रतीत होइत अछि जे ई ज्यौतिष शास्त्रक विद्वान् छलाह। शेष दूनू बालक वाचस्पति आ' नरपतिक विषयमे किछु ज्ञात नहि अछि।

विद्यापतिक ई सरस-सफल जीवन लगभग तीस वर्ष धरि चलैत रहल। एहि अवधिमे राजपरिवारक विभिन्न डेओढ़ीमे आदर पबैत रहलाह, आदरकर्ताक नाम भनितामे दए-दए आभार व्यक्त करैत रहलाह। आ' मैथिली साहित्यक भंडार भरैत रहलाह। एही कालमे *कीर्तिपताका* आ' *गोरक्षविजय* नाटक सेहो रचल।

एहि कालमे शासन-प्रशासन आ' राजनैतिक गतिविधिमे विद्यापतिक भूमिका अवश्यमेव महत्वपूर्ण रहल होएत परन्तु तकर सूचना केवल जनश्रुतिमे भेटैत अछि – *राजा शिवसिंह बन्धन मोचल तखन सुकवि जीला* इत्यादि।

विद्यापतिक जीवनमे, वा मिथिलाक इतिहासमे कहू सभसँ अधिक आनन्दक दिन ओ छल होएत जहिआ शिवसिंह मिथिला पर चढ़ि आएल यवनसेनाकेँ परास्त कएल, देवसिंह स्वर्गवासी भेलाह, शिवसिंह राजा भेलाह, विद्यापति महाराजपण्डितक पद पर नियुक्त भेलाह आ' बिसफी ग्रामदान पओलनि। एहि घटनावलीक वर्णन एक अपभ्रंश गाथामे सम्भवतः विद्यापति स्वयम् रचल – दूर दुग्गम... (787)।

एहि स्वर्ण-कालक अन्त भेल 1405-6 ई. क आस-पास जखन जौनपुरक इब्राहिमशाह मिथिला पर आक्रमण कएल आ' युद्धमे शिवसिंह अलक्षित भए गेलाह। विद्यापति रानी लोकनिकेँ लए सुरक्षार्थ नेपालमे ससरी प्रान्तक रजाबनौली गाममे राजा पुरादित्यक आश्रयमे जीवन-यापन करए लगलाह। एतए ई पुरादित्यक हेतु *लिखनावलीक* रचना कएल जाहिमे चिट्ठी-पत्री कोना लिखल जाए तकर नमूना सभ देल गेल अछि। एतए ई अपन जीवनक सभसँ उदास काल कटबाक हेतु श्रीमद्भागवतक प्रतिलिपि करैत रहलाह।

कालक्रमे मिथिलामे राजनैतिक बिहाड़ि शान्त भेल। ओइनिबार राजवंशक हाथमे सामन्तीय सत्ता आएल। शिवसिंहक बाद पद्मसिंह आदि तथाकथित राजा होइत गेलाह आ' विद्यापति समय बितबैत गेलाह। आब विद्यापति ओ विद्यापति नहि रहलाह। 'सुरतरुतर' रहनिहार विद्यापतिकेँ 'धतुरा तर' निर्वाह करए पड़लनि (देखू गीत 110)। शृंगारक स्थान लेलक भक्ति। राधा आ' कृष्णक स्थान लेलनि गौरी आ' महादेव। गीतक स्थान लेलक धर्मशास्त्र आ' पूजा-पाठक पोथी। विद्यापति ने कवि रहलाह, ने 'महाराजपण्डित'; रहि गेलाह केवल राजपुरोहित। जहिं-जहिं ओइनिबार लोकनिक राजसत्ता क्षीण होइत गेल तहिं-तहिं बिसइबार लोकनिक महत्ता बिलाइत गेल। खीसा खतम।

X X X X X

विद्यापति अपन कृतिसभमे अनेक ठाम तिथिक उल्लेख कएने छथि। अनेको समकालीन आ' उत्तरकालीन व्यक्तिसभक, विशेषतः ओइनिबार राजारानी लोकनिक, नामोल्लेख कएने छथि। एहि सभसँ विद्यापतिक कालक्रम ज्ञात होइत अछि। परन्तु एहि अवधिक कालनिर्देश अधिकतर लक्ष्मणसंवत् मे अछि जकर आरम्भ-बिन्दु बड़ विवादास्पद अछि। सौभाग्यवश विद्यापति अपन एक अपभ्रंश गाथामे (अनलरन्ध्र 786) लक्ष्मण-संवतक संग-संग शकसंवत् सेहो देल अछि। ताहिसँ सिद्ध होइत अछि जे विद्यापतिक समयमे लक्ष्मण संवत् आ' ईसवीय संवतक बीच 1109 वर्षक अन्तर छल। तदनुसार हिनकासँ सम्बद्ध मुख्य-मुख्य घटना-क्रम एक झलकमे देखल जाए :

1350 – बाल्य बिसफीमे; अध्ययन सरिसबमे।

1365 – कीर्तिसिंहक संग; कीर्तिलताक रचना; ओइनीमे।

1367 – देवसिंहक संग, ओइनी आ' नैमिषारण्यमे ; भूपरिक्रमणक रचना।

1377 – शिवसिंहकसंग, देकुली, गजरथपुरमे, मणिमञ्जरी नाटक, गोरक्षविजय नाटक, पुरुषपरीक्षा तथा हजारक लगभग शृंगार गीत ओ नचारीक रचना।

1402 – देवसिंहक स्वर्गवास, शिवसिंहक राज्यारोहण, बिसफी ग्रामदान तथा महाराजपण्डितक पद पर नियुक्ति।

1405 – यवनक आक्रमण, शिवसिंहक अलक्षित होएब, रानीक संग विद्यापतिक रजाबनौली प्रस्थान।

1406 – लिखनावलीक रचना; भागवतक प्रतिलिपिक आरम्भ।

1418 – भागवतक प्रतिलिपि सम्पन्न; रजाबनौलीसँ प्रत्यावर्तन। पद्मसिंह, विश्वासदेवी, नरसिंह आ' धीरमतिक संग। विश्वासदेवीक हेतु गङ्गावाक्यावली तथा शैवसर्वस्वसार, नरसिंहक हेतु विभागसार, हुनक पत्नी धीरमतिक हेतु दानवाक्यावली, तथा धीरसिंहक हेतु दुर्गाभक्तितरङ्गिणीक रचना।

टिप्पणी 1 -- जँ लक्ष्मणसंवतक आरम्भ बिन्दु 1109 ई. सँ आगाँ मानल जाए तँ तदनुसार उपर्युक्त तिथि अधिकसँ अधिक दस वर्ष आगाँ घुसकत।

टिप्पणी 2 – प्रस्तुत संग्रहमे गीतक भनितामे उल्लिखित व्यक्तिसभक सूची, आश्रित राजा-रानी सभक वंशावली तथा विद्यापतिक वंशावली परिशिष्टमे देखल जाए।

संकेतव्याख्या

गोर. गोरक्षविजय

त. तरौनी तालपत्र

तरौ. तरौनी पालपत्र

नगु. नगेन्द्रनाथ गुप्त

नाना. नानारागगीत

भाषा. भाषागीतसंग्रह

मजू. विमान विहारी मजूमदार

रमा. रमानाथ झा

राग. रागतरंगिणी

राप. राष्ट्रभाषापरिषद्

राम. रामभद्रपुर तालपत्र

शिव. शिवनन्दन ठाकुर

सुभ. सुभद्र झा

हर. हरगौरी विवाह

भाग एक : प्राचीन स्रोतक गीत

1. रामभद्रपुर-तालपत्रक गीत

[1]

लुबुधले नअने निरखि रहु ठाम। भरमहु कबहु लेब नहि नाम।।1।।
अपनेहि[1] अपन करब अवधान। जओ परचारिअ[2] तओ पर जाना।।2।।
ए रे नागरि मन दए सून। जे रस जान तकर बड़ पून।।3।।
जइअओ हृदय रह मिलिअ[3] समाजे तइअओं[4] रहब अओधि भए लाजे।।4।।
काचघटी अनुगत जलजेम। नागरे लखब हृदयगत पेम।।5।।
विद्यापति भन सुन बरनारि। कतन[5] रङ्गेरसे सुरङ्ग मुरारि।।6।।
रूपनराएन एहु रस जान। सिबसिंह[6] लखिमादेबि रमान।।7।।

1. अपने। 2. परिचारिअ। 3. मिलिए। 4. अबसओ। 5. कते। 6. राए सिबसिंह। 7. दो। [] नेपा. सँ।

सखी राधाकें शिक्षा दैत छथि -- (1) हे सखी, कान्हकें लुब्ध नयनसें निहारि अपन जगहपर टिकलि रहबह। धोखहुसें (सहायतार्थ) हमर नाम नहि लेबह। (2) अपन समस्याक समाधान अपनहि करबह। जँ प्रचार करबह तँ (गुप्त मिलन) आन जानि जाएत। (3) हे नागरी, मन दएकें सुनह। जे रस (कामकेलि) जनैत अछि से पुण्यवान् थिक। (4) जैओ मनमे होअहु जे संगम करी तैओ लाज कए मूड़ी गाड़ने रहबह। (5) तों जँ कोनो चेष्टा नहिओ करबह तैओ काचक पात्र मे भरल जलजकाँ नागर कृष्ण तोहर हृदयगत भाव (प्रेम) बूझि जएथुन। (6) विद्यापति कहैत छथि, हे सुन्दरी, सुनह। कृष्ण रस-रंग मे पारंगत छथि। (7) लखिमा देवीक पति रूपनारायण ई रस जनैत छथि।

[2]

कुल कुलबहु गगन चन्दा दुअओ करक उजोर।
तिमिर भए[1] तिरोहित करसि गरुअ साहस तोर।।1।।
साजनि मोहि पुछइतें लाज।
कि मञे बोलब कि तञे करब किदहु उतर काज।।2।।
कुन्दक कुसुम साजन हृदय बिमल चरित तोर[2]।

1.भञे। 2. मोर। 3. सनि।

सखी राधाकें कृष्णसँ गुप्त प्रेम करैत देखि वारण करैत छथि—(1) कुलकें कुलवधू ओहिना उज्ज्वल कौत छथि जेना आकाशकें चान। ताहि चानकें तों अन्धकार (राहु) भए तिरोहित (ग्रसित) करैत छह। बड़ साहसी छह तों। (2) हे सखी, हमरा तँ पुछबहुमे लाज होइत अछि। हम की कहिअहु आ' तों की कहबह। उत्तरक कोन काज (केहन कुकर्म करैत छह से के नहि जनैत अछि) । तोहर पतिक हृदय कुन्दक फूल-सन उज्ज्वल (निर्मल) छनि आ' तोहरो चरित निर्मल छहु। केलिविलास मे बहुत अपजस बजैत छह (?)। स्वामी कें कलंक नहि बाजह। टि. - अन्तिम पाँतीक अर्थ अस्पष्ट।]

[3]

हसि निहारल पलटि हैरि। लाजें कि बोलब साँझक बैरि।।1।।
आरति हठे हरल[1] चीर। सून पयोधर काम्प ससीर।।2।।
सखि कि कहब कहइते लाज। गोरु चिन्हब[2] गोपक काज।।3।।
नीबी निरासलि फोअल बास[3]। तइओं[4] देखि न आबए पास।।4।।
कतन कहलि मधुरि[5] बानि। काजर दूधें पखारल जानि।।5।।
सखि बुझाबए धरिए हाथ। गोप बोलाबथि गोपी साथ।।6।।
ओहे नहि चिन्हए[6] रसक भाब। बड़े पुनें पुनमति से[7] पाब।।7।।
[आबे कि कहह तन्हिकि बानि। कसि कसउटी अएलाहु जानि]।।8।।
भन वियापति तञे बरनारि[8]। पहुक दूखन दिअ बिचारि।।9।।
राजा रुपनराञेन जान। सिबसिंह लखिमादेबि रमान।।10।।

1. हरखें आएति हरल चीर। 2. चिन्हए। 3. फूजलि आस। 4. ततेओ। 5. मधुर। 6. तोहें नचीन्हह। 7. पुनमति पाब। 8. तञे नारि।

राधा कृष्णक गमरपन सखीसँ सुनबैत छथि—(1) हम मूड़ी घुमाए बिहुँसि कें ओकरा निहारल। लाजें साँझक बेर की कहबहु। (2) आतुर भए चीर हटाए लेल। छाती उघारि लेल। देह काँपए लागल। (3) हे सखी, की कहबहु। कहैत लाज होइत अछि। गोपक काज थिक गाएकें चिन्हब। (ओ नारीक मनोवेग की बूझत)। (4) चीरक कसनी खोलल, चीरो हटाओल। सेहो देखिकें ओ लग नहि आएल। (5) ओकरा कतेक मधुर वचन कहल से की कहिअहु। हम काजर (गमार) कें दूध (रसधार) सँ धोबाक प्रयास कएल। (6) लगक सखी ओकरा हाथ धए-धए कामकला सिखाबए लागलि तँ ओ गोपगमार गोपी सभकें बजाबए लागल। (7) हे सखी, रस की थिकैक से तों नहि जनैत छह। बड़ पुण्यें पुण्यवती रसिक पिआ पबैत अछि। (8) आब तों ओकर समाद की कहैत छह। ओकरा तँ हम कसौटी पर कसिकें चिन्हि गेलहुँ (9) वियापति कहैत छथि, हे सुन्दरी, पिआपर आरोप किछु सोचि-बिचारिकें लगाबह। (10) एहि गीतक रस जननिहार थिकाह लखिमा देवीक पति राजा रूपनारायण।

[4]

तोहरा पेम लागि धनि खिनि भेलि तोहें बड़ बोलछड कान्ह।
रुप लोभ भेल नेह दूर गेल से छाड़ल थिर ठान[1]।।1।।
माधब, सुन्दरि समन्दए रोए।
जदि तोहें चञ्चल सुनह सकन भए अपना धन्ध न कोए।।2।।
आस दइए परपेअसि आनलि कुल सञो कुलमति नारि।
से ततबाहि गेलि डाइनि सफल भेलि[2] तोहें[3] हल हृदय बिचारि।।3।।
दूती बोलइते कान्ह लजाएल वियापति कबि भाने।
राजा सिबसिंह रूपनराञेन लखिमा देबि रमाने।।4।।

1. से थिर छाड़ल भाव। 2. सकल भेल। 3. दुहु।

दूती वंचक प्रेमी कृष्ण कें गंजन करैत अछि — (1) हे कान्ह, राधा तोहर प्रेमक कारणें दूबरि भए गेलि। तों भारी वंचक (बोलछड़) छह। तोरा केवल रूपक लोभ छहु, प्रेम दूर भए गेलहु। राधा निराशं भए संकेतस्थल छाड़ि घुरि गेलि। (2) सुन्दरि कानि-कानि कें संवाद पठओलकहु अछि। तों चंचल छह। तैओ कनेक कान दए सुनि लेह। हमरा अपना लेल कोनो चिन्ता नहि अछि (तोरे हित लेल कहैत छिअहु)। (3) हम मिलनक आशा दए ओहि कुलवती परनारिकें घरसँ लए अनलहुँ। बेचारी ततबहिसँ गेलि। हाइनि सभ (कुदृष्टिबाली चुगिलाहि सभ) सफल भेलि (कलंक लगएबाक अवसर पओलक)। तों कनेक विचार करह। (4) दूतीक ई बात सुनिकें कृष्णा लजाए गेलाह। लखिमा देवीक पति राजा शिवसिंह रूपनारायणक आश्रयमे विद्यापति ई गीत रचल।

[5]

गुरुजन कहि दुरजन सञो बारि। कौतुकें फूटि चलसि[1] फुलबारि ।।1।।
कैतबे बारि सखीजन सङ्ग। अह अभिसार पूर[2] रतिरङ्ग ।।2।।
ए सखि वचन करहि अवधान[3] रातुक रति आरति समधान।।3।।
अन्धकूप सम रअनि बिलास। चोरक मन जञो बसए तरास।।4।।
हरखित हो लङ्का कें राए। नागरे कि करब नागरि पाए।।5।।

1. करसि। 2. दूर। 3. सुमुखि बचन अनुमान।

दूती राधाकें अभिसारार्थ चढ़बैत अछि—(1) गुरुजन सँ अनुमति लए, दुर्जन सभक नजरि बचबैत (2) कोनो लाथें सखी सभसँ फूटि फुलबाड़ी (संकेतस्थल) चलह। दिनक अभिसारमे रतिरंग करह गए। (2) हे सखी, हमर बात सुनह। रातुक रंगरभस केवल आर्तिक समाधान थिक (वासना-शान्तिक उपाय मात्र थिक)। रातिमे जे विलास होइत अछि से बूझह अन्हार कूपमे होइछ (जतए एक दोसराक हाव-भाव पूर्णतः देखि नहि

पबैत अछि)। ततबे नहि, रातिमे मन चोरक मन जकाँ त्रस्त रहैत अछि। (5) (जें चित्त चञ्चल रहए तँ)... (?) नागर नागरीकें पाबिअहु कें की करताह?

[6]

नब रितुपति[1] नब परिमल आगर[2] नब मलयानिल धाब।
नबि नागरि नब नागर बिलसए पुनफलें सबे सब[3] पाब।।1।।
मानिनि आब कि मान तोहार।
कुसुमबान धाबक भए[4] पइसल लूलए मदन-भण्डार।।2।।
एत दिन मान भलेहुँ तोहें राखल पञ्चबान छल थोल।
अबे अनङ्ग हे सरीरी देखिअ समय पाए कहु[5] बोल।।3।।
विद्यापति कह कै वसन्त सह मुनिहुँक मन हो लोभे।
लखिमादेवि पति रूपनराएन खटरितु सबे रस सोभे।।4।।

1. रतिपति। 2. लागर। 3. सबे। 4. अपन मान पाबक। 5. की।

कवि वसन्त ऋतुक वर्णन करैत छथि — (1) नब ऋतुराज वसन्त अएलाह। नब मलय-पवन आबि तुलाएल। नबि नागरि आ' नब नागर केलि-विलास करए लागल। पुण्यक बलें सब अपन-अपन प्रेमी/प्रेमिका पओलक। (2) मानिनी, आब तों की मान करैत छह। कामदेव धावक (पेआदा) भए आबि गेलहु आ' मान लूटि रहल छहु। (3) एतेक दिन (जा' वसन्त नहि आएल छल) तों मानकें बचओने रहलह, किएक तँ कामदेवक प्रभाव थोड़ छल (ओ अनङ्ग, अङ्गहीन छल)। आब ओ अनङ्ग अङ्गवान् (मूर्तिमान) देखि पड़ैत अछि। अवसर पओलक कि गरजए लागल। (4) विद्यापति कहैत छथि, वसन्त के सहि सकैत अछि। वसन्तमे मुनिओ सभक मन डोलए लगैत छनि। लखिमा देवीक पति रूपनारायण तँ वसन्तहुक प्रतीक्षा नहि करैत छथि, हुनका छबो ऋतु आ' सभ (नबो) रस सोहाओन लगैत छनि।

[7]

सहज सुन्दर लोचन सीमा। काजरें अञ्जने न कर भीमा।।1।।
तिलके दए मृगमद मसी। बदन सरिस न कर ससी।।2।।
चलहिँ सुन्दरि तेजि बेआज। सुकृतें मिल सुपहु समाज।।3।।
पसर सौरभ की अङ्गरागे। उभय मन जदि अनुरागे।।4।।
परिहर सखि भूखन अङ्ग। मुखर सुजन कहाँ सङ्ग।।5।।
सरस कवि विद्यापति गावे। मनक पाहुन मदन धावे।।6।।
रूपनराएन इ रस जाने। रानी लखिमा देवि रमाने।।7।।

1. केर रङ्ग।

अभिसार लेल तैआर होइत राधाकें सखी कहैत छथि — (1) तोहर आँखिक कोर स्वतः सुन्दर छहु। एकरा काजर-अंजन लगाए भड़कदार नहि बनावह। (2) तिलक (पसाहिन) मे कारी कस्तूरी लगाए अपन मुह कें चानक समान (दागबाला) नहि बनावह। (3) हे सुन्दरी, लाथ छाड़ि (सजबाक बहाना नहि कए) झट दए अभिसार करह। सुपहुसँ मिलन बड़ पुण्यें होइत अछि। (4) तोहर देहसँ सौरभ स्वयं पसरि रहल छहु। जँ दूनूक मनमे अनुराग हो तँ अंगराग केर कोन प्रयोजन। (5) अंगमे गहना पहिरब छाड़ह। मुखर आ' सुजनक बीच कतहु संगति हो (तों दूनू सुजन आ' सुनारि छह, गहना मुखर अर्थात् अनेर टनटन कएनिहार) अछि। (6) सरस कवि विद्यापति कहैत छथि, मनक पाहुन भए मदन पहुँचि गेल छथि। (7) रानी लखिमादेवीक पति रूपनारायण एकर रस जनैत छथि।

[8]

चिन्ताञे आसा कबललि मोरि। भेलि कानकटु[1] कहिनी तोरि।।1।।
मनञो फेदाएल अइसना काज। पाबनि दीप निझाएल आज।।2।।
साजनि कि कहब कहइतें[2] धन्ध। बन्धलौं बान्ध टुटल अनुबन्ध।।3।।
तञे जनितसि आओ दोसर कान। तेसर जानए[3] हमर परान।।4।।
कत[4] अनुराग राग कए[5] गेल। सहजे[6] गोप बधभाजन भेल।।5।।

विद्यापति भन बुझ रसमन्त। राए सिबसिंह लखिमादेवि कन्त।।6।।

1.कानकटु भेलि। 2. कह कत कहिनी। 3. जनइत। 4. जत। 5. कें । 6. सही।

कृष्णक व्यवहारसँ विखिन्न राधा दूती कें कहैत छथि - (1) हे दूती, तों जे कहलह ताहि सँ हम चिन्तामे पड़ि गेलहुँ आ' चिन्ता हमर आशाकें कवलित कए देलक। (2) एहन काजसँ (तों जे कृष्णक संग स्वयं रमण कएलह ताहिसँ) हमर मन विखिन्न भए गेल। पाबनिक दीप मिझाए गेल (मिलनमे अचानक विघ्न भए गेल)। (3) हे सखी, की कहबहु; कहए लगैत छी तँ चिन्ता आओर बढ़ि जाइत अछि। बान्हल बान्ह जकाँ प्रेम दूटि गेल। (4) यथार्थ बात की थिक से तों जनैत होएबह आओर कान्ह (दूनू खूब रमण कएलह)। तेसर हमर प्राण जनैत अछि। (5)... (?) । (6) विद्यापति ई रचल। एकर रस लखिमा देवीक पति राजा शिवसिंह जनैत छथि।

[9]

बड़ें मनोरथें साजु अभिसार पिसुन नयन बारि।
काज न सीझल ततेहि रहल[1] हमे अभागलि नारि।।2।।
साजनि हमर दिबस दोस।
गरुआ पुरुब पाप पराभव कञोन करब रोस।।2।।
न घर गेलुहुँ न पर भेलुहुँ न पूर हृदय साध।
आधाहि पथँ ससि हसि ऊगल तें भेल गमन बाध।।3।।
मोरि आसाञे पिआसल माधब होएत मो बड़ पाप।
सिब सिब सिब जाओ दुर जिब सहि[4] के पार सन्ताप।।4।।
आपदँ अधिक धैरज धरब धैरज सबँ उपाए।
भन विद्यापति होएत सङ्गति हरि रहु मन लाए।।5।।

1. ततै रहल। 2. कञोन कें। 3. मोरें आसें। 4. सहए। 5. मनोरथ।

राधा मिलनमे विघ्नक हाल सखी कें सुनबैत छथि—(1) हे सखी, बड़ मनोरथसँ, पिशुनक नजरिसँ बचैत अभिसारक तैआरी कएल। परन्तु से सफल नहि भेल। मनोरथ ततहि रहल। हम अभागलि नारि छी। (2) हे सखी, ई हमर दिनक दोष थिक। पूर्वजन्ममे जे भारी पाप कएल तहिँ एहन पराभव भेल। एहि लेल अनकापर तामस किएक करब। (3) ने घर गेलहुँ, ने संकेतस्थल पहुँचलहुँ। मनक मनोरथ नहि पूरल। बीचहि बाटमे चान हँसि कें ठगि गेल। यात्रा रुकि गेल। (4) हमर बाट तकैत कान्ह पिआसल रहि गेल। तकर पाप भागी हमही होएब। हाए, प्राण दूर जाओ। एतेक पैघ सन्ताप के सहए। (5) विद्यापति कहैत छथि, विपतिमे धैर्य धारण करी। धैर्य सभ विपत्तिक समाधान थिक। कृष्ण पर ध्यान लगओने रहू, मिलन अवश्य होएत।

[10]

जलद बरिस जलधार। सर जञो पकए पहार।।1।।
काजरें राङ्गलि राति। बाहर होइतें साति।।2।।
साजनि,
अइसनि निसि अभिसार। तोहि तेजि करए के पार।।3।।
भमए भुअङ्गम भीम। पङ्के पुरल चौसीम।4।।
जलधर बीजुउजोर। तखने गरज घन घोर।।5।।
सुकबि[1] विद्यापति गाब। महघ मदन परथाब।।6।।

1. भनइ।

दूती अभिसार लेल राधाकें प्रेरित करैत छथि—(1) हे सखी, मेघ धाराप्रवाह बरसि रहल अछि, जेना बाणक प्रहार पड़ैत हो। (2) राति काजरसँ रङल-सन लगैत अछि। बाहर होएबहुमे पराभव। (3) हे सखी, एहन रातिमे अभिसार तोरा छाड़ि आन के कए सकैत अछि। (4) भयानक साप सहसह करैत अछि। चतुर्दिक थाल भरल अछि। (5) मेघ मे बिजुली

चमकैत अछि कि मेघ तखनहि भयानक गर्जन कए उठैत अछि। (6) सुकवि विद्यापति कहैत छथि, काम-प्रसंग बड़ महघ (दुर्लभ आ' कष्टसाध्य) होइत अछि।

[11]

काजर रङ्ग बमए जनि राति। अइसना बाहर होइतहुँ साति।।1।।
तड़ितहु तेज गिलए[1] अन्धकार। आसात्रे संसअँ परु अभिसार।।2।।
भल न कएल मञे दए[2] बिसबास। बिकट[3] जोअन सत कान्हक बास।।3।।
जलद भुअङ्गम दुहु भेल सङ्ग। बिचर[4] निसाचर कर रसभङ्ग ।।4।।
मन अबगाहए मनमथ रोस। जीबओ देले न होए भरोस।।5।।
अगमन[5] गमन बुझए मतिमान। विद्यापति कवि एहु रस जान।।6।।

1. मिलए। 2. निकट। 3. देल। 4. निचर। 5. अपगम।

राधा अभिसार मे बाधा पाबि विलाप करैत छथि -- (1) राति मानू काजर-सन कारी रंग उगिलैत अछि। एहना मे घर सँ बाहरो होएब कठिन। (2) अन्धकार बिजुलिओक तेजकें मानू गिड़ि लैत अछि। अभिसार आशा आ' निराशाक बीच संशय मे पड़ि गेल। (3) कान्हकें जे विश्वास देल से नीक नहि कएल। कान्हक घरक बाट तेहन विकट अछि जेना सए योजन दूर हो। (4) वर्षा आ' साप दूनू संग लागल अछि। रतिचर सभ विचरण करैत अछि आ' रस (मिलन) मे विघटन करैत अछि। (5) मनमे कामदेवपर तामस उठैत अछि। प्राणो गमओने मिलनक भरोस नहि। (6) जे बुद्धिमान छथि से बुझैत छथि जे गमन सम्भव छैक कि नहि। विद्यापति एकर रस जनैत छथि।

[12]

हृदअ तोहर जानि न[1] भेला। आनक रतन आनि मञे देला।।1।।
कएल माधव हमे अकाज। हाथि मेलाउलि सिंह समाज।।2।।
राखह[2] माधव मोरि बिनती। देहे परिहरि पर जुबती।।3।।

चुम्बने नयन काजर गेला। दसने अधर खण्डित भेला।।4।।
पीन पयोधर नखरें मन्दा। जनि महेसर सेखर चन्दा।।5।।
न मुख बचन न चित थीरे। काम्प घनहन सबे सरीरे।।6।
घर गुरुजन दुजन सङ्का। लओलह माधव मोहि कलङ्का।।7।।
भन विद्यापति तजे दूति भोरि। चेतन गोपए बेकत चोरि।।8।।

1. न। 2. राख।

दूती राधाकें घर घुरएबाक अनुरोध कृष्णसँ करैत छथि — (1) तोहर हृदय केहन छहु से पहिने बुझबामे नहि आएल। तहिँ आनक पत्नी (परनारी) तोरा आनि देलिअहु। (2) हे कान्ह, ई काज हम नीक नहि कएल। हाथीकें सिंहसँ भिड़ाए देलहुँ। (3) हे कान्ह, हमर बिनती मानह। परनारीकें आब छाड़ि दहक। (4) चुम्बन करैत-करैत एकर आँखिक काजर मेटाए गेलैक। अधर दाँतसँ क्षत भए गेलैक। (5) पुष्ट स्तन नखक्षतसँ गन्दा भए गलैक, जेना शिवक (शिवलिंगक) शिखर पर चान उगि गेल हो। (6) ने मुहसँ बोल बहराइत छैक, ने चित शान्त होइत छैक। सगर शरीर जोरसँ काँपि रहलैक अछि। (7) घरमे गुरुजनक आ' (बाहर) दुर्जन सभक डर छैक। हे कान्ह, तों हमरा कलंक लगाए देलह। (8) विद्यापति कहैत छथि, हे दूती, तों भ्रममे छह। जे बुधिआरि होइत अछि से देखारो चोरि (बुद्धिक बलें कोनो लाथ कए) छिपाए लैत अछि।

[13]

प्रथम बएस अति भिति राही अभिमत पिअ मेला।
निविक सङ्गे लाज बिघटलि अधर पान कएला।।1।।
कामे संसार सिङ्गार सिरिजल सोनाक आङ्कुर जागु[1]।
आरति आकमें भाङ्गि से[2] गेले तोहर दूसन लागु।।2।।
माधव अबे कि बोलब तोहि।
केसरि जनि कुरङ्किनि आपलि भरम लागल मोहि।।3।।

गजे दमसलि दमनलता तैसन देखिअ देहे।
चापि चकोरे सुधारस पीउल निरसिए ससिरेहे।।4।।
काजेरि ठाम अठाम न गुनल अधर खण्डल जानी।
जुबति जीब करुना नहि कामदेव अगेआनी[3]।।5।।
मनमथ देवे सपथ मानल सुनि दङनेरि बानी।
कॉं लागि आनलि चान्दक कला राहु मेराउलि आनी।।6।।
कठिन आकम[5] की रीति सहति मालाञे बान्धलि हाथि।
निअँ अनुचिते सेबि समगुरु सेओ लघुता जाथि।।7।।

1. लागु। 2. न। 3. भाकी। 4. अहेरानी। 5. कोमल।

दूती संगम मे निष्ठुर कृष्णक निन्दा करैत अछि — (1) हे कान्ह, प्रथमयौवना राधाकें संगम करबामे तँ डर होइत छैक मुदा तैओ पिआसँ मिलए चाहैत अछि। नीवीक (चीरक कसनीक) संगहि ओकर लाज चलि गेलैक आ' तों अधरपान कएलह। (2) कामदेव संसारक शृंगार (संसारकें भूषित कएनिहारि सुन्दरी) सिरजल। ताहिमे सोनाक अंकुर (नवोद्गत स्तन) भेल। जँ आतुरतावश आलिंगन कएने ओ अंकुर टूटि जाएत तँ तकर अपराधी तोंही होएबह। (3) हे कान्ह। आब एहिसँ अधिक तोरा की कहिअहु। हम मने सिंहकें हरिनी सौंपि देलहुँ आ' आब चिन्तामे पड़लि छी। (4) एकर देह लगैत अछि जेना हाथीक धाङल दमनलता हो, जेना चकोर बलपूर्वक दाबि अमृत पीबिकें चानकें निसठ कए देने हो। (5) तों ई नहि बिचारलह जे कोन काज उचित, कोन अनुचित। जानि बूझिकें अधर चीरि देलहक। अज्ञानी कामदेवकें युवतीक प्राणहु पर दया नहि छैक। (6)... (?)। हम पछताबैत छी जे चानक कला (राधा) कें किएक राहु (कृष्ण) सँ मिलाओल। (7) माला (बाहुपाश) सँ बान्हलि ई हाथी (राधा) तोहर कठिन आलिंगन कोना सहि सकत।...(?)

[14]

अरुन[1] कमल कदली बिपरीत। हँसक कलाञे हरए से चीत[2] ।।1।।

के पतिआओब एहु परमान। चम्पके कएल पुहुवि निरमान।।2।।

ए रे माधब पलटि निहार। अपरुब देखिअ जुबति अबतार।।3।।

कूप गँभीर तरङ्गिनि तीर। जनमु सेमार लता बिनु नीर।।4।।

चहकि चहकि दुइ खञ्जन खेल। काम कमान चान्द हरि लेल[3]।।5।।

ऊपर हेरि तिमिरें करु बाद। धमिले कएल ताकर अबसाद।।6।।

विद्यापति भन बुझ रसमन्त। राए सिबसिंह लखिमादेबि कन्त।।7।।

1.चरन। 2. हासकला से हरए साँचीत। 3. ऊगि गेल। टि.--गीत 14 विद्यापतिक नहि।

सखी कृष्णकें राधाक सुन्दरता सुनबैत छथि—(1) हे कान्ह, लाल कमल (पाएर) पर केराक थम्ह (जाँघ) ऊनटा विराजमान अछि आओर से हंसक कला (चालि) सँ चित हरैत अछि। (2) के पतिआएत जे चम्पाक फूल सँ धरती (राधाक देह) बनल। (3) हे कान्ह, घुरिकें देखह। एकटा अपूर्व युवतीक अवतार देखि पड़ैत अछि। (4) नदीक (त्रिवलीक) कातमे गँहीर कूप (नाभि) अछि। बिनु जलहि सेमार (केश) लतरल अछि। (5) दुइ गोट खंजन (आँखि) चहकि-चहकि खेलाइत अछि। कामदेवक धनुष (भऊँह) चान (मुख) हरि लेलक। (6) ऊपर दिस ताकि (चानकें देखि) तिमिर (राहु/केश) विवाद ठानि देलक। (समेटि रखलक; केससँ मुह नहि झपाएल)। (7) विद्यापति कहैत छथि आ' तकर भाव बुझैत छथि लखिमादेवीक पति राजा शिवसिंह।

[15]

थिर पद परिहरिए जे जन अथिरँ मानस लाव।

सब चाहि हीन दिने दिने खीन बहु पराभव[1] पाव।।1।।

साजनि थिर मन कए थाक।

हठें जे जखने काम करिअ भल नहि परिपाक।।2।।

बुधजन मन बूझि निबेदए सबे संसारेरि भाव।

जखने जते विभव रहए तखने तते[2] गमाब।।3।।

भन विद्यापति सुन तञे जुबति चिते न झाँखहि आन।

[राजा सिबसिंह रूपनराएन लखिमा देवि रमान]।।4।।

1.परतर। 2. तेहिँ। [] अनुमित पाठ।

सखी राधाकें उपदेश दैत छथि जे परपुरुषक मोह छाड़ह — (1) हे सखी, जे स्थिर जगह (अपन पति) कें छाड़ि अस्थिर जगह (परपुरुष) दिस मन कें लगबैत अछि से सभसँ हीन (उपेक्षित) भए दिन दिन क्षीण भेलि जाइत अछि आ' बहुत पराभव पबैत अछि। (2) हे सखी, मनकें स्थिर कएने रहह। जँ हठात् (भावुकतावश) कोनो काज कएल जाए तँ ओकर परिणाम नीक नहि भए सकैत अछि। (3) बुधिआर लोक संसारक कोनहु भावदिस अपन मन सोचि-बिचारिकें लगबैत अछि। जखन जेह विभव रहए ताहीसँ निर्वाह करक थिक (अपन पति तोहर विभव थिकहु, तकरहिसँ प्रेम-निर्वाह करह)। (4) विद्यापति कहैत छथि, हे राधा, सुनह। मनमे आन (पुरुषक) चिन्ता नहि करह। एकर रस जनभिहार थिकाह लखिमादेवीक पति राजा शिवसिंह रूपनारायण।

[16]

कुसुम धूरि मलयानिल पूरित कोकिल कल सहकारे।

हारि पुरुब परिपाटि पराएल[1] आने चलल बेबहारे।।1।।

मानिनि[2] जानि ले ई[3] नब तन्त।

सिसिर महीपति दापें चापि कहुँ राजा भेल वसन्त।।2।।

मनमथ तन्त अन्त धरि पढ़ि कहुँ[4] अबसरें भेलिसि अआनी।

आजुक दिबस कालि नहि पाइअ जौबन बन्ध छुट पानी।।3।।

1. हराएल। 2. साजनि। 3. ले तन्त। 4. पढ़िकए।

नायक वसन्तक वर्णन नायिकाकें सुनबैत छथि—(1) मलयपवन फूलक परागसँ भरि गेल तेँ सहकार कोकिलक कू-कू ध्वनिसँ। पूर्वक (शिशिर ऋतुक) परिपाटी (रीति) नबका (वसन्तक) परिपाटीसँ हारि पडाए गेल। ओकरा स्थानमे आन परिपाटी चलल (जाहिमे मान करब वर्जित अछि तेँ)। (2) हे मानिनी, ई नब तन्त्र (शासन-व्यवस्था) जानि लेह। (3) तोँ तेँ राजा शिशिरकें अपन पराक्रमसँ दबाए वसन्त राजा भेलाह। (3) तोँ तेँ कामशास्त्र (रतिरहस्य) आद्योपान्त पढ़ने छह, तैओ अवसर पर अज्ञानी कोना भए गेलह? आजुक दिन काल्हि नहि भेटतहु। यौवनक बान्हसँ पानि बहैत रहैत अछि।

[17]

तन्हिकरि धसमसि बिरहक सोस। तञे दिढ कए कत कैतव[1] पोस॥1॥
सोलह सहस गोपि परिबार।[2] तन्हिकाहु कुल भेलसि बनिजार॥2॥
मञे कि बोलब सखि बोलइछ आन[3]। सब परिहरि नागर[4] तोहि मान॥3॥
समयक बसें रह[5] सब अनुराग। भलाहुक मन मन्देओ पए जाग॥4॥
पिअरी दरसने नागर भूल[6] घाण्टू गुने बनतुलसी फूल॥5॥
विद्यापति भन बुझ रसमन्त। राए सिबसिंह लखिमादेविकन्त॥6॥

1.कए कैतब। 2. परिहार। 3. कान्ह। 4. नागरि। 5. नहि। 6. दूल।

सखी रूसलि राधाकें बौंसैत छथि — (1) ओम्हर कान्ह विरहसँ व्याकुल अछि आ' एम्हर तोँ किदन-कहाँदन बात मनमे पोसने छह'। (2) कान्ह सोलह हजार गोपी सभक बीच रहैत अछि।... (?) (3) हम की कहबहु, आनो लोक बजैत अछि। नागर कान्ह आन सभकें छाडि तोरहि मानैत अछि। (4) समयानुसार सभ प्रेम समयक प्रभामे रहैत अछि। (5) पिअरी कखनहु भलो लोकक मन अधलाह दिस चलि जाइत अछि। बनतुलसी (भाँटि) घाँटोक (?) कें देखि नागरक मन लोभाए जाइत अछि। बनतुलसी (भाँटि) घाँटोक (?) कें देखि नागरक मन लोभाए जाइत अछि।

हेतु फुलाइत अछि। (6) विद्यापति कहैत छथि, ई रस लखिमादेवीक पति राजा शिवसिंह जनैत छथि।

+अर्थ अस्पष्टः केवल भाव अनुमान सँ लिखल।

[18]

ओ अति कोमल तञे अति चोखि। बड मतभेद बजइछसि रोखि॥1॥
कहलैंहि बूझिअ[1] किअ काँ लागि। जारन सरस जरए नहि आगि॥2॥
आनहु पठाओब न करह ओज। चेतन बूझि छड़ाओब गोज॥3॥
उचितओ बोलइते ओहि नहि लाज।फडिछे बचने सखि फडिछए[2] काज॥4॥
ओ आएल[3] कए तुअ परथाब। अबे अबसर भेलि लोहा भाव॥5॥
भनइ विद्यापति पुछिहिसि आन। चिमलि गिञ्जार नहि सरिस पिसान॥6॥

1. हुललें बुझिअहुँ। 2. बचने फरिअओ। 3. ओहे आइलि।

सखी रूसलि राधाकें बउँसैत छथि — (1) ओ कान्ह तेँ परम कोमल (क्रोधहीन) अछि, किन्तु तोँ क्रोधसँ बजैत छह जे बड मतभेद अछि (मेल असम्भव)। (2) तोँ कहबह तखन ने बूझब जे की मतभेद आ' किएक? जारन जा भीजल रहत ता ओ आगिमे नहि जरत। जा क्रोध रहतहु ता मेल काकन। (3)... (?) । ओज नहि करह। बुझनुक लोक सभ बात बूझि झगडा छोडाए देथुन्ह। (4) उचित कथा कहलहु पर ओकरा लाज नहि होइत छैक। साफ-साफ कहलहि पर झगडा फडिछाए सकैत अछि। (5) ओ मेलक प्रस्ताव लए आएल, मुदा तोँ अवसर अएलापर... (?)। (6) विद्यापति कहैत छथि, अनका पूछह।... (?)।

[19]

नाचिअ काछिअ[1] ई बडि लाज। नञ्चले बिनु न सीझए[2] काज॥1॥
नाचिअ जेहे कहाइअ[3] सेह। तबहि[4] मिलए दुलभ नेह॥2॥
साजनि झाटे कर अभिसार। चोरी पेम संसारेरि सार॥3॥
किछु न गुनब पथक सङ्का। सिनी पडल बैरि मयङ्का[5]॥4॥

तोर गतागत जीबन मोर। आसाञे पड़ल कन्हाइ तोर।।5।।
तन्हि पठओलाहुँ तोहर ठाम। दाहिन बचन बोलह बाम।।6।।
तइअओ तन्हिकि तञे पिआरि। दूति कएलह जनि सिआरि।।7।।
टूटल जो कब मञे कति बेरि। नागरि हसलि दूती हेरि।।8।।
भन विद्यापति इ रस जान। रानि लखिमादेवि रमान।।9।।

1. काछिउ/काछिड। 2. छुटए। 3. रहाइअ। 4. नबेसे। 5. कलङ्का। 6. तहिँ।

दूती रूसलि राधाकें मनबैत छथि—(1) नचबा-कछबा मे सभकें लाज होइत छैक, किन्तु बिनु नचलें काज नहि चलैत छैक (तें नाचि-काछिकें कृष्णकें रिझाबह)। (2) जेहने कछबह तेहने कहएबह (बूझलि जएबह)। तखनहि दुर्लभ प्रेम भेटतहु। (3) हे सखी, झट दए अभिसार करह। संसार मे गुप्त प्रेम करब बड़ पैघ वस्तु थिक। (4) बाटमे केओ देखि लेत से शंका नहि करह। तोहर वैरी मयङ्क (चान) अमावास्यक तर दबएलाह। (5) तोरा कान्हलग लए जाएब आ' लए आनब हमर जीवन भए गेल (कतेक दिन हम एना मेल करबैत रहबहु)। तोहर कान्ह आस लगओने छहु। (6) हमरा ओ तोरालग पठओलक आ' तों ओकर दाक्षिण्यपूर्ण (उदार) वचनकें प्रतिकूल बुझैत छह (उनटा अर्थ लगबैत छह।) (7) तैओ तों ओकर पिआरि छह, किन्तु दूती कें (हमरा) तो गिदरनी बनाए देलह। (8) टूटल प्रेमक तन्तुकें हम कतेक बेरं जोड़ैत रहब। राधा दूतीक मुह ताकि हँसि उठलीह (प्रसन्न भए गेलीह)। (9) विद्यापति कहैत छथि, रानी लखिमादेवीक रमण ई रस जनैत छथि।

[20]

मानिनि मान मौन मने साध[1]। माधब मन मथ मनसिज धाँध[2]।।1।।
बिधिबस भेलें[3] केलि रसबाध। तेसर माथेहि सबे अपराध।।2।।
दूती भए जनु जनमए नारि। बिनु भेलें सिधि भेलिहे गमारि[4]।।3।।
एत कए[5] कौसल भेलिहुँ मन्द। तरनिक उदय लखत[6] की चन्द।।4।
पर अनुरोधें शेष[7] दुर जाए। माधब राइ[8] दुअओ हलखाए।।5।।
विद्यापति भन बुझ रसमन्त। राए सिबसिंह लखिमादेवि कन्त।।6।

1.साजि। 2. मनसिज मन मथ झाँझ। 3. मेलि भेल। 4. गोआरि। 5. एतएक। 6. लहत। 7. बोध। (8) नाथ बराह।

दूती अपन काजक कठिनता राधा आ' कृष्णकें सुनबैत छथि—(1) मानिनी राधा मौन मनें मान साधि बैसलीह। ओम्हर कृष्णक मन कें कामवेदना मथि रहल छनि। (2) जँ संयोगवश केलि-रसमे (मिलनमे) कोनो बाधा होइत छनि तँ तकर सभटा दोष तेसराक (अर्थात् दूतीक) माथपर पटकि दैत छथि। (3) हे भगवान्, कोनो नारी दूती भए जनु जनमओ। हा दैव, हमर प्रयास जँ सिद्ध (सफल) नहि भेल तें हम अनेरे गमारि (अपटु) बनलहुँ। (4) एतेक कौशल (मेलक प्रयास) कएलहुपर निन्दनीच भेलहुँ। चान कतहु सूर्योदय देखए। (5) जखन आनक बुझओला-सुझओला पर दूनूक रोष शान्त भए जाइत अछि तखन राधा आ' कृष्ण हर्षित भए जाइत छथि। (6) विद्यापति कहैत... ।

[21]

सूखल सर सरसिज भेल झाल। तरुन तरनि तरु न रहल हाल।।1।।
दगधि धरनि[1] दरसाब पताल। अबहु धराधर धरसि न धार।।2।।
जलधर जलधन तोहि[2] असेखि। करए कृपा बड़ परदुख देखि।।3।।
पथिक पिआसल आब अनेक। दुख मानए देखि[3] तोहर बिबेक।।4।।
पलटए[4] आसा। निअर निहारि। कहदहु कओन होइति ई गारि।।5।।
कओन हृदय नहि उपजए रोस। ओर धरि धरिअ[5] एहे पए दोस।।6।

विद्यापति भन बुझ रसमन्त। राए सिबसिंह लखिमा देवि कन्त।।7।।

1. देखि दरनि। 2. गेल। 3. देखि दुख मानए। 4. पलटलि। 5. करिअ।

[22]

करह रङ्ग पररमनी साथ। ओकरि[1] अनाइति तोहें पए नाथ।।1।।
से सबे परसञो[2] कहहि न जाए। सूनहु चिन्ता सेज ओछाए।।2।।
माधब आओर कहब की[3] तोहि। धनि देखले मन धाधसि मोहि।।3।।
दिन दुइ चारि जिउति महिं लागि। सबतह खरि बिरहानल आगि।।4।।
से तनु जारि करति जदि छाए। पुछञो काहि तह हो पलटाए।।5।।

1. तकरि। 2. परकें। 3. किकहब। 4. जनि।

दूती कृष्ण कें कहैत अछि — (1) तों परकीया रमणीक संग रंग करैत छह। परन्तु ओकरा तँ पराधीनता छैक। ओकर नाथ (प्रभु) तोंही छह। (2) ओ सभ बात (गुप्त प्रेमप्रसंग) अनका कहल नहि जाए सकैत अछि।... (?) (3) हे कृष्ण, तोरा आओर की कहबहु। ओहि बेचारीकें दखैत छी तँ हमरा मनमे चिन्ता भए जाइत अछि। (4) ओ बेचारी माटि धए कोनहुना दुइ-चारि दिन जीबि सकैत अछि। विरहाग्नि सभसँ प्रखर होइत अछि। (5) ओ यदि अपन देहकें जराए छाउर कए लेअए तँ, हम पुछैत छिअहु, ककरासँ ओकरा पलटाए आनब सम्भव होएत?

[23]

बान्धल हीर अजर लए हेम। सागर तह है गरिर छल पेम।।1।।
ओ उभरल ई गेल सुखाए। नाह बलाहें मधें भरि जाए।।2।।
साजनि एतबा माङ्गञो तोहि। मोरेहु अएलें रखिहिसि मोहि।।3।।
आरति दरसहु बोलित राति। से सब सुमरि जीब का साति।।4।.
जलथल घर बाहर सम नेह। आरति कए मोर देखितह देह।।5।।
गत पएन भेलें जा लाज। भल नहि अनुबद अपन अकाज।।6।।

मालति मधु मधुकर ले पोछि। बाहु करत हरि अइसनि ओछि।।7।।
[भनइ विद्यापति कबिकण्ठहार। कबहु न होअए जाति बेभिचार]।।8।।

टि—सम्पूर्ण गीतक भाव आ' अर्थ अस्पष्ट अछि। पाठक विकृति बहुत प्रतीत होइछ। हमरा अर्थ नहि लागल। सुभ. तथा राप. पूर्ण सन्तुष्टिपूर्वक अर्थ लगओने वा छीचि-तीरिकें कोनहुना बैसओने छथि।

[24]

कमल कोस तनु कोमल हमारे। दिढ आलिङ्गन सहए के पारे।।1।।
चापि चिबुक है अधर मधु[1] पीबे। कओने जानल हमे उबरब जीबे।।2।।
पुरुख निठुर हिअ सहज सोभावे[2]। नोनुआ अङ्ग मोरा नखखत लाबे।।3।।
तखनुक बेदन कहहि न जाई। मञे मरितहुँ ताहि तिरिबध लाई।।4।।
ए कपटिनि सखि कि बोलिबों तोही। हाथ बान्धि कुअ मेललह मोही।।5।।
भनइ विद्यापति सुनह सुनारी[3]। पहु अबलेपिअ दोस बिचारी।।6।।

1.मधुर। 2. सहजक भावे। 3. मुरारी। 4. अबलेपए।

राधा सखीसँ कहैत छथि — (1) हमर देह कमलक कोंढ़ी-सन कोमल अछि। हम दृढ आलिंगन कोना सहब। (2) कान्ह दाढ़ी दबाएकें हमर अधरमधु पिबैत अछि तँ के जानए हमर प्राण बाचत कि नहि। (3) पुरुषक हृदय निष्ठुर-निर्दय होइत अछि। ई ओकर सहज स्वभाव थिक। ओ हमर तनुक अंग कें नहसँ क्षत कए दैत अछि। (4) तखनुक वेदना तोरा की कहिअहु। भल होइत जे मरि जइतहुँ आ' ओकरा स्त्रीवध लागि जाइत। (5) हे सखी, तों कपटिनी छह; परतारिकें हमरा एतए अनलह। तों तै हमरा मने हाथ दूनू बान्हि कूप मे धकेलि लेलह। (6) विद्यापति कहैत छथि, हे बुधिआरि सखी, सोचि-विचारि कें प्रियतम पर दोषारोपण करबाक चाही।

[25]

बिरलाकें भल खिरहर सोंम्पलह दूध बहल[1] अछ डाढ़ी।
दधि दुध घोर घीउ सबे[2] खएलक सगरि रअनि सुखे काढ़ी।।1।।
चेतन अबहु न चेतह अपने।
अपनुक कुगति अपने नहि जानह की उपदेसत आने।।2।।
बटइ गरॉमुर बान्धि पकओलह मानस तेलक माझे।
तेहि बिरलबाजे मुखसुखे खाएल राति दिबस दुहु साँझे।।3।।
मुन्दहर घर मुन्दहरिआ कएलह मूस मानुस[4] सबे छाड़ी।
काटि सँखारी खण्ड खण्ड कएलक सब धन धएलक गाड़ी।।4।।
धेड्गुड बान्धि पटोरॉ धएलह अइसनि तुअ परिपाटी।
पतरागी जञो खण्ड खण्ड कएलक मुखसुखे हललक काटी।।5।।
गोबरॅ बान्धि बीछ घर मेललह एकर होएत परिनामे।
राजा सिबसिंह रूपनराएन लखिमादेवि रमाने।।6।।

1.रहलि। 2. घीव सञो। 3. पठओलह। 4. मानु।

कवि मायामे फॅसबाक कुपरिणाम बिलाड़ि, मूस आदिकें कालक प्रतीक बनाए देखबैत छथि—(1) तों बिलाड़कें रखबार बनाए दूधक घर सौंपि देलह। ओ दही, दूध, घोर, घृत सभ किछु काढ़ि-कांढ़ि सगर राति खाइत रहल। गोरस नि:शेष भए गेल, केवल डाढ़ी (भाँड़मे लागल) रहि गेल। (2) हे चेतन मानव, आबहु अपन गति सोचह। अपन दुर्गति जँ अपने नहि बुझैत छह तँ आन की उपदेश देतहु। (3) मने, बटेरकें गराँमुर (?) बान्हि भनसाक घरक तेल बीच पकओलह। तकरा ओ बिलाड़ (काल) राति-दिन दूनू साँझ रूचिपूर्वक खएलक। (4) तों मुद्रागृह (खजाना) मे सभ मनुष्य कें (नीक भावनाकें) छाड़ि मूस (चोर) कें खजानची बनओलह। ओ खजानची सँखारी पेटी कें खंड-पखंड कए काटि सभ धन कें गाड़ि रखलक। (5) तों पटोरमे धॅगुर (सनकिरबा) कें बान्हि रखलह। तोहर एहने चालि छहु। ओ सनकिरबा पतरागी (झझौ पात?) जकाँ टुकड़ी-टुकड़ी कए काटि देलक। (6) तों बीछकें गोबरमे बान्हि घर ढुकओलह। एकर फल भोगबह। राजा शिवासिंह... ।

[26]

एकहि बेरि अनुराग बढ़ाओल पञ्चबान भेल मन्दा।
अधर बिम्बबत जोति न पलिछए जनि होअ[1] दिबसक चन्दा।।1।।
माधब तुअ गुने लुबुधलि राही।
पिअ बिसरन मरनहु तह आगर तोहें नागर सब चाही।।2।।
दुइ मन रहस[2] तेसर नहि जातए पर दए समन्दि न जाई।
चिन्ताञे चेत न अधिक बेआकुल सुमुखि रहलि सिर नाई[3]।।3।।
भनइ विधापति सुनह मधुरपति तोह[4] छाड़ि गति नहि आने।
बिसबास देविपति रस कोविन्दक नृपति पदुम सिंह जाने।।

1. न 2. लाई। 3. रभस। 4. तोहें।

दूती कृष्णकें उपराग दैत अछि—(1) तों प्रेमकें एकहि बेर (लगले) आगाँ बढ़ाए देलह आ' कामदेव मन्द भए गेलाह (तोहर प्रेम शिथिल भए गेल)। ओम्हर तोहर एहि उपेक्षा पर राधाक अधर मे तिलकोरक फड़-सन लाली नहि रहलैक। ओकर वदन दिनक चान-सन उदास भए गलैक। (2) हे माधव, राधा तोहर गुणपर मुग्ध छहु। प्रियजन जँ बिसरि दैक तँ से मरणहुसँ अधिक दुखद होइत अछि। तों सभसँ उत्कृष्ट नागर (प्रेममर्मज्ञ) छह (तें राधाक दशाक अनुमान कए सकैत छह)। (3) दुनूक मन मे की रहस्य (कोन बातक वैमनस्य) छहु से तेसल (दूती/सखी) नहि जानि सकैत अछि। एहन रहस्य अनका द्वारा सूचितो नहि कएल जाए सकैत अछि। चिन्तासँ ओ सुधि-बुधि हराए चुकलि अछि। ओकर (व्याकुलता) बढ़ि गेल छैक। ओ मूड़ी निहुडओने (झखैत) रहैत अछि। (4) विधापति कहैत छथि, हे मथुरामति कृष्ण, सुनह। तोरा छाड़ि ओकर आन कोनो

गति (उद्धारक उपाय) नहि अछि। एकर रस विश्वासदेवीक पति रसमर्मज्ञ राजा पद्मसिंह जनैत छथि।

[27]

करहि मिलल रह मुख नहि सुन्दर खिन जनि दिबसक[1] चन्दा।
प्रकृति न रह थिर नयनँ गलए निर कमलँ झरए मकरन्दा।।1।।
माधब तुअ गुने झामरि बामा।
दिन दिन खिन तनु पिड़ए कुसुमधनु हरि हरि लेअ पए नामा।।2।।
निन्दए चान्दन परिहर भूखन धान्द मानए जनि आगी।
से[2] धनि दसम दसा अबे[2] पाओल तोहें होएबह बधभागी[3]।।3।।
अबसर गेलें कि नेह बढ़ाओब विद्यापति कबि भाने।
[राजा सिवसिंह रूपनराएन लखिमा देबि रमाने] ।।4।।

1. जनि अबसिन दिन। 2. ते। 3. बधक होएबह तोहें भागी। [] नगुसँ।

सखी कृष्णकें राधाक विरहदशा सुनबैत छथि—(1) राधाक मुह सनत हाथ पर रहैत अछि। ओकर मुह ओहने (उदास) लगैत छैक जेहन दिनमे चान। ओकर चित स्थिर नहि रहैत छैक। आँखिसँ नोर झहरैत छैक जेना कमल सँ मकरन्द। (2) हे कान्ह, राधा तोरा कारणें झामरि भए गेलि। ओकर देह दिन-दिन दुबराएल जाइत छैक। कामदेव ओकरा सताए रहल छथिन। ओ केवल तोहर नाम हरि हरि जपैत रहैत अछि। (3) ओ चाननक निन्दा करैत अछि (चानन नहि सोहाइत छैक)। गहना नड़ाए देलक। चान आगि-सन लगैत छैक। ओ दसम दशा (मृत्यु) केर निकट पहुँचि गेलि अछि। जँ ओकरा किछु भेलैक तँ तों वधभागी (हत्याक अपराधी) होएबह। (4) अवसर (योवन) बितलापर प्रेम बढ़ाएब व्यर्थ। कवि विद्यापति कहैत छथि... ।

[28]

गाए चराबए[1] गोकुल बास। गोपक सङ्ग करए[2] परिहास।।1।।
अपनेहु गोप गरुअ की काज। गुपुतेहु बोलइते[3] मोहि बड़ि लाज।।2।।
दूती बोलसि कान्ह सञो केलि। गोपबधू सञो जन्हिका मेलि।।3।।
गामहि बसलें बोलिअ गमार। नगरेहु नागर बोलिअ असार।।4।।
बसए[4] बथान झाड़ि दुह गाए। से[5] की बिलसब नागरि पाए।।5।।
आदि अन्त दुहु देलक गारि। विद्यापति भन बुझथि मुरारि।।6।।

1. चराबह। 2. सङ्के जनिक। 3. गुपुतें बोलसि। 4. बसथि। 5. तैं।

राधा कृष्णक गमरपन दूती कें सुनबैत छथि - (1) जे गाए चराबए, गोकुल (गोअरगामा) मे बसए, गोआरि सभक संग हँसी-ठट्ठा करए आ' (2) अपनहु गोआर होअए तकरा लेल कोन काज भारी? एकान्त मे कहैत छिअहु, तैओ हमए बड़ लाज होइत अछि (जे हम एहनासँ प्रेम कएल)। (3) हे दूती, तों हमरा ओहि कान्हसँ केलि करए कहैत छह जकरा गोपवधू सभसँ मेल छैक? (4) गाममे बसनहि लोक गमार कहबैत अछि। किन्तु नगरहुमे बसनिहार नागर असार (धोंछ) होइत अछि। (5) जे बथान मे बसए आ' डाबा (झाड़ी) मे दूध दुहए से नागरी नायिका पाबि कें की रसरंग करत। (6) राधा आदि अन्त दूनू दिस (?) गारि दैत रहलीह। विद्यापति कहैत छथि, एकर मर्म कृष्णे जनैत छथि।

[29]

कुचजुग धरए कुम्भथल कान्ति। बाङ्क नखरखत आङ्कुस भान्ति।।1।।
रोमावली सुण्ड अनुरूप। पानि पिबए चल नाभी कूप।।2।.
देखह माधब कए निज साज। बाला चढ़लि[1] जौबन गजएज।।3।।
मदन महाउते कएल पसाह। लीला नागर हेरए चाह।।4।।
सैसब राजा भीतिँ पराउ। पुनु लोचन पथ सीम न आउ।।5।।
विद्यापति भन बुझ रसमन्त। राए सिबसिंह लखिमादेवि कन्त।।6।।

1. चलति।

दूती कृष्णकें जनबैत अछि जे राधा आब युवती भए गेलीह - (1) राधाक स्तन दूनू मानू हाथीक मस्तक थिक, स्तन पर भेल वक्र नखक्षत आँकुस थिक, (2) रोमावली सूँढ़ थिक जे नाभिरूपी कूपमे पानि पिबए चलल अछि। (3) हे कान्ह, देखह, अपन साज-सिङार कए बाला राधा यौवनरूपी हाथीपर सबार भेलि। (4) हाथीक पसाहिन (सिङार) मदनरूपी महाउत कएलक। नगरक लोक कौतुकपूर्वक देखए चाहैत अछि। (5) हाथीपर चढ़लि एहि बालाक डरें शैशवरूपी राजा लंक लेलक। पुनः आँखिक सीमाक भीतर पाएर नहि देलक। (6) विद्यापति क... ।

[30]

तुअ अनुराग लागि सकल रयनि जागि तरु तरँ तीन्तलि रामा रे।
अलकतिलक घोरि[1] केआ दल भरि लिहि गेलि[2] अपनुक नामा रे।।1।।
चल चल माधव बुझल सरुप सब बचन आन फल आने रे।
X X X X [3] ।।2।।
जे नहि फले निरबाहए पारिअ से बोलिअ कथि लागी रे।
से न करिअ जे पर उपहासए धाए मरिअ बरु आगी रे।।3।।

1. मेटि। 2. गेल। 3. एक चरण लुप्त।

दूती कृष्णकें उलहन्न दैत छनि - (1) हे कान्ह, तोहर प्रेमक कारणें रामा राधिका सगर राति जागि गाछतर तितैत-भिजैत रहलि। (मिलन नहि भेलैक तें) अपन पसाहिन कें मोसि बनाए केराक पात पर अपन नाम लिखि गेलि। (2) जाह, जाह हे माधव; तोहर सभ बात हम बूझि गेलहुँ। वचन दैत छह (बजैत छह) किछु आ' करैत छह किछु आने। .... (3) एहन काज नहि करक चाही जाहिसँ आन उपहास करए। एहि उपहाससँ नीक जे आगिमे कूदि प्राण त्यागि दी। (4) विद्यापति कहैत छथि राजा... जीबओ।

[31]

चल चल सुन्दरि कि बोलिबों तोहि। कइसन पेम जेअँओलह[1] मोहि।।1।।
जा भोजने हो अहनिस दन्द[2]। अमित्रधार जनि बरिसए[3] चन्द।।2।।
धाधि होए सब लोभक[4] सान्धि। बैरिहु आगिं न मेलिअ बान्धि।।3।।
कुलिस पहारें जीब हल मारि। ता पाछे की करह[5] गोहारि।।4।।
अनुनय दुजना बुझल न मोर। देखलें मन पतिआएल तोर।।5।।
तोहें पररमनि हमर दिन दोस। आन्तर भल रह पुर[6] परितोस।।6।।

1. अइसन पेम जेअओ लओलह। 2. अइसन मन्द 3. धरि। 4. लोमक। 5. करिअ 6. दूर।

राधा सखीकें उपराग दैत छथि — (1) हे सखी, जाह-जाह। तोरा की कहबहु। तों हमरा केहन प्रेम खोअओलह (2) जे खएने लगैत अछि जेना चन्द्रमा अमृतक धार बहबैत हो। (3) सभ चिन्ताक मूल थिक लोभक सन्धि (लोभवश मैत्री करब)। शत्रुअहुकें हाथ-पाएर बान्हि आगिमे नहि झोंकबाक चाही। (4) तों तँ वज्रप्रहार सँ हमरा मारि देलह। तकरा बाद गोहारि की करबह। (5) ओ दुर्जन कान्ह हमर अनुनय (प्रणय-निवेदन) नहि बुझलक। आब परिणाम देखलापर तोरा विश्वास भेल होएतहु। (6) तों परस्त्री थिकह, तोरा की कहिअहु। ई हमर अपने दिनक दोख थिक। जँ अन्तःकरण शुद्ध रहैक तखनहि परितुष्टि भए सकैत छैक।

[32]

कपट कोपें कए[1] माने, बाइक निहारि कएल समधाने।।1।।
तथिहु नाथ भेल[2] बामे, सिब-सिब कइसन होएत परिनामे।।2।।
दूती[3] कि कहब तोही, कत उपताप उपजु मन मोही।।3।।
सोझ दरस अब आसे[4], अपनहि कण्ठ कठिन भुजपासे।।4।।
पढब मत्रें[5] पामरि रीती, सेहे अधिक[6] गुनि जे पहु पिरीती।।5।।
विद्यापति कवि बानी, नाह अचेतन नारि सआनी।।6।।

1. कोपें कपटें कएल। 2. भेल अबे। 3. चलचल दूती। 4. हासे। 5. पढ़ाबञे। 6. किदहु अधिक गुन।

राधा कृष्णक गमरपन दूतीसँ सुनबैत छथि—(1) हम कपट कोप (कृत्रिम क्रोध) देखाए मान कएल आ' फेर कटाक्षसँ ओकरा दिस ताकि ओहि मानक समाधान (प्रतिकार) कएल। (2) ताहूपर ओ विमुखे भेल रहल। हाए, जानि नहि, केहन परिणाम होएत। (3) हे दूती, ओकर एहि उदासीनता (गमरपन) पर हमरा कतेक दुख भेल से तो की कहबहु। (4) आब साक्षात् दर्शनहुक आशा लागल अछि। अपने कण्ठ मे अपनहि भुजपाश लगबैत छी। (5) आब हमहू गमारि नायिकाक रीति सीखब। ओएह स्त्री गुणवती थिक जकरा प्रेमीक प्रीति प्राप्त होइक। (6) विद्यापति कहैत छथि, की विड़म्बना! पुरुष मूढ़ आ' नारी रसिका।

[33]

केतकि कुसुम आनि बिरचि बिबिध बानि चौदिसँ साजल साला।
घृत मधु दुध दए नेते बाति कए चौदिसँ देलक दिपमाला।।1।।
माधब सबे काज आइलि[1] साही।
घर[2] गुरुजन डरे पुछिओ न पुछलक संकेत कएल सुनें ताही।।2।।
तरनि अस्त[3] गेल चान्द उदित भेल अति ऊजरि निसा देखी।
गगन नखत लाये लिहलक निञ हाथे सरसञो[4] ससधर रेखी।।3।।

1. अइलुहुँ। 2. गुरु। 3.अन्त। 4. सरसङ्ग।

दूती कृष्ण कें कहैत अछि — (1) हे कान्ह, राधा तोहर मिलन हेतु केतकी (केओला)क फूल आनि आ' अनेक प्रकारक बानि (संरचना) कएकें अपन घर चारू दिस सजओलक। घृत, मधु आ' दूध दए, मलमलक बाती बनाए चारु दिस दीप-माला देलक। (2) हे माधव, तोहर मिलनक हम सभ व्यवस्था सम्पन्न कए अएलहुँ। किन्तु राधा अपन घरमे गुरुजनक डरें पुछिओ नहि सकलि (जे कान्ह कखन आओत)। तैऔ शून्य

मे तकर संकेत कए देलक। सूर्य डुबलाह। चान उगलाह। राति खूब उज्ज्वल भेल। से देखि राधा आकाश मे तारा देखबाक लाथें अपना हाथें शर सँ युक्त चान लिखलक (शर सँ सूचित कएलक जे चान जखन एतेक उपर आबए तखन कान्ह आबथु।)

[34]

कत कत कुसुम कतन[1] रस जाग। तकरा एक तोहर अनुराग।।1।।
मौललि मञ्जरि न करए पान। तोहि मानए जनि दोसर परान।।2।।
केतकि भमरा दे उपटाग। मधु माङगइते मुह पड़ए पराग।।3।।
जकराँ जे बिनु नहि परकार। से कैसे[3] करए तकर परिहार।।4।।
पातक कोटि छोटि मति मोरि। आओ कि कहबि मत्रे महिमा तोरि।।5।।

1. कत नहि कुसुम कतें। 2. तन्हिकाँ तोहर अइसन। 3. जञो।

दूती मालतीक व्याजें राधाकें कहैत अछि—(1) हे मालती, अनेक प्रकारक फूल अछि आ' तहिमे अनेक प्रकारक रस। किन्तु तकरा (भ्रमरकें) केवल तोहरासँ प्रेम छैक। (2) ओ फुलाएल मञ्जरीक रसपान नहि कौत अछि। तोरा तेना मानैत छहु जेना ओकर तों दोसर प्राण होअहु। (3) तोहर प्रेमी भ्रमर केतकी कें उपराग दैत अछि (ओकर निन्दा कौत अछि) — मधु मङैत। छिअहु तें तों मुह धूरा (पराग) सँ भरि दैत छह। हमर अनादर करैत छह)' (4) जकरा बिना जकर निर्वाह नहि छैक से तकरा कोना छोडि सकैत अछि। (5) हम बहुत पाप कएल (तें दूती भए जन्म लेल)। हमरा बड़ थोड़ बुद्धि अछि। तोहर महिमा आओर की कहबहु।

[35]

धाराधर जल बरिस अपार[1]। तँहि रअनि सम दिबस अन्धार।।1।।
निकटहु काहु केअओ नहि[2] देख। एखने कहाँ के करत बिबेक।।2।।
साजनि कर अभिसारक साज। दिनहि समागम सपरओ आज[3]।।3।।

गुरुजन दुरजन डर कर दूर। बिनु साहसें अभिमत नहि पूर।।4।।
एहि संसार सार बथु एह[4]। तिला एक मिलन जाब जिब नेह।।5।।

1. जत्रो बरिसओ सार। 2. नही केओ। 3. काज। 4. सेह।

सखी राधा कें अभिसार हेतु प्रेरित कौत छथि — (1) मेघ अपार जल बरिसाए रहल अछि। ताहिसँ दिनहुमे राति-सन अन्हार पसरल अछि। (2) लगहुमे केओ ककरहु नहि देखैत अछि। एहनामे के थिक से के बेकछाए सकतहु। (3) हे सखी, अभिसारक तैआरी करह। आइ दिनहिमे समागम सफल होअओ। (4) गुरुजनक आ' दुर्जनक डर दूर करह। बिनु साहस कएने आस नहि पुरैत छैक। (5) एहि संसार मे सार वस्तु इएह थिक -- पल भरि मिलन आ' जीवन भरि प्रेम।

[36]

एहि पुर पाटन के नहि सञ्चर के नहि मदनक दासे।
काहुक कहिनि कतहु[1] नहि सूनिअ हमरे पए उपहासे।।1।।
के जान कओोन बोल बोलए कुतुकिनी दुखन हमर पए लाबे।
X X X X ।।2।।
कतए ओकर उच कुचजुग सिरिफल कतए हमर नखरेखा।
कण्टक माझ कुसुम गए तोड़लक नबि नारि न बुझ बिसेखा।।3।।
गोपक नन्दन गाए चरबइते रहलहुँ पसुक समाजे।
नागरि जनि सओ मेलि न कएले उतर देब कओोन काजे।।4।।

1.कतओ। 2. कतएक तन्हिकर। 3. चरइतहुँ रहितहुँ। 4. लाजे।

कृष्ण अपनापर लागल आरोपक उत्तर दैत छथि — (1) एहि नगरमे के नहि बाट-घाट चलैत अछि; के नहि बाटे-घाटे कामदेवक दास (कामवासना बाला) अछि? (2) तैओ कहाँ कतहु आन ककरो कहिनी (अपवाद) सुनैत छिऐक। हमरे टा उपहास किएक? जानि नहि के कुतुकिनी (चुगिलाहि) की-कहाँ बजैत हमरा पर दोष लगबैत अछि।... (?)

(3) कतए राधाक बेल सन-सन ऊँच आ पुष्ट दूनू स्तन, आ' कतए हमरा नहक नछोर (दूनूमे कोनो सम्बन्ध नहि छैक)। राधा कँटाह झाड़मे पैसि फूल तोड़लक गए। ओ नवीना की जानए गेलि जे एहिसँ कलंक जोड़ल जाएत। हम तँ गोआरक बेटा थिकहुँ। पशु सभक बीच गाए चरबैत रहलहुँ। कखनहु नारी सभसँ हेम-छेम नहि कएलहुँ। हम उत्तर किएक देबैक (जे कलंक लगबैत अछि से लगबैत रहओ)।

[37]

की भेलि कामकला मोरि घाटि? की ओहे न बुझए रसपरिपाटि ? ।।1।।
की पर[1] वचन कन्ते दिहु कान? की[2] बिछि करु मोर समय निदान[3]।।2।।
भमर हमर किछु कहब सन्देस। कन्त वसन्त न रहु दुर देस[4]।।3।।
कीदहु भमर ततए नहि साद[6]? पिक पञ्चम धुनि मधुर न नाद।।4।।
की धनु बान मदन नहि साज? की बेधए नहि बिरहि समाज?।।5।।

1. ता खर। 2. तें। 3. बधान। 4. बधान। 5. रहब बिदेस। 6. नाद। 7. बिरह।

राधा भ्रमर द्वारा सन्देश पठबैत छथि — (1) (हे भ्रमर, तों कृष्ण कें कहबह) 'की हमर काम-कलामे किछु त्रुटि अछि? आकि कान्हे रस-रीति नहि बुझैत अछि? (2) की कान्ह कोनो दुष्टक (चुगिलाहक) बातपर कान देलनि? आकि विधाते हमर हाल एहन निदान कएलनि?' (3) हे भ्रमर, हमर किछु समाद तों कृष्ण कें कहह गए, हे कन्त, वसन्तमे दूर देशमे जनि रहू। (4) की ओतए भ्रमर गुञ्जन नहि करैत अछि? की ओतए कोकिल पञ्चम स्वरमे मधुर ध्वनि नहि कौत अछि? (5) की ओतए कामदेव धनुख-बान नहि चलबैत छथि? की हुनक बान विरही सभकें विद्ध नहि करैत अछि?

[38]

सगरिओ रअनि चान्दमय हेरि। मने मने धनि पुलकलि कत बेरि।।1।।
कालि दिबस सञो होएत अन्धार। अपनेहि[1] मने हे करब अभिसार[2]।।2।।
सखि मञे कि कइब हृदय हुलास[3]। अपनेहि निधि आइलि जनि पास।।3।।
एकरूप रह नहि जुग[4] बहि जाए। तेँ गुन गौरव एहे उपाए।।4।।
खण्डि निसाकर गरसओ राहु। हो नहि दुख बिरहीजन काहु।।5।।
विद्यापति भन सुन बरनारि। अबसर जानिए[5] मिलत मुरारि।।6।।
रूपनराएन ई रस जान[6]। सिबसिंह[7] लखिमा देविरमान।।7।।

1. अपने। 2. करब हे अभिसार। 3. जतरास। 4. रहजुग। 5. जानिजे। 6. राजा रूपनराएन जान। 7. राए सिंबसिंह। 8 दे।

राधा भावी मिलनक उल्लास व्यक्त करैत छथि — 1. सगर राति चन्द्रमय (चान्दनि) देखि राधा मनहि मन बेरि-बेरि हुलसैत छथि। 2. सोचैत छथि, काल्हिसँ कृष्णपक्ष आरम्भ होएत। तखन स्वच्छन्दतापूर्वक अभिसार करब। 3. हे सखी, हमरा हृदयमे कतेक उल्लास भए रहल अछि से की कहबहु? मानू निधि (खजाना) स्वयं लग आबि गेल। 4. समय एकरंग नहि रहैत छैक, ओ प्रवहमान वस्तु थिक। तेँ गुण-गौरव ढाहबाक इएह उपाए थिक। चानकेँ जे गौरव छैक से दूर भए जएतैक। 5. राहु आबथु आ' काटि खाथु एहि चानकेँ जाहिसँ विरही-विरहिणीकेँ सन्ताप नहि होइक। 6. विद्यापति कहैत छथि, हे ललना, सुनू। अवसर जानि कृष्ण अवश्य अओताह। 7.राजा... ।

[39]

बरख दोआदस अवधि न[1] जानि। कतौं जलासअँ पिउलन्हि पानि।।1।।
जानलेँ[2] हृदय भेल परिताप। से[3] नहि गनले पर सन्ताप।।2।।
साजनि कि कहब कहइते लाज। अनुदिन भेल चीन्हि तसु काज।।3।।
प्रथम समागम दरसन लागि। बारिस रअनि गमाउलि जागि।।4।।
पबनहु सञो कएलन्हि अवधान। प्रथम गतागत पञ्चसर जान।।5।।

1. लगलाह। 2. जानल 3. तेँ। 4. परतरपाप।

राधा सखीकेँ अपन विरह-व्यथा सुनबैत छथि -- कृष्ण बारह बरख पर्यन्त जानि नहि कतेक जलाशय मे पानि पीलनि (कतेक रमणीक संग विलास कएलनि)। (2) ई बात जखन जनलहुँ तँ बड़ दुख भेल। ओ आनक सन्ताप नहि बुझलनि। (3) हे सखी, की कहबहु, कहैत लाज होइत अछि। हुनक काज (कुचालि) दिन-दिन चिन्हैत गेलहुँ। (4) प्रथमे मिलनमे हुनक दर्शनक हेतु पानि पड़ैत बरसातक राति जागिकेँ गमाओल। (5)... (?) प्रथम मिलन केहन होइत छैक से कामदेवे जनैत छथि।

[40]

दमन किअरिआ आरिअहिँ मिरिगा गेल अतुराए।
मञे धनि देखए गेलाहुँ जनि (बन्धन) खोलि खाए।।1।।
साजनि कि कहब आहे[1] सखि अपरुब कहहि न जाए।।2।।
X X X X
चोर[2] गाछैँ चढ़ि बैसल धएलक सिरिफल जोर[3]।
X X पुछलौँ होलए मोर ।।3।।
भावक भरमल तञे सखि मिरिगा नहि ओ कान्ह।
रूपनएञेन नागरा लखिमा देवि रमान।।4।।

1. आब। 2. बौर गाछैँ चढ़ि। 3. सिरिफल धएलह चोर। 4. छिलौँ बोलहिँ बोर।

राधा अपन सपना सखीकेँ सुनबैत छथि -- 1. दमनाक गाछक किआरीक आरि पर (बेढ़पर) हरिण आतुर भए गेल। हम देखए गेलहुँ तँ लागल जेना ओ बेढ़ कैँ तोड़ि दमनाक पात खाए रहल हो। 2. हे सखी, की कहिअहु। ओ अद्भुत दृश्य कहल नहि जाए। 3. (एक आओर दृश्य देखल) एकटा चोर बेलक गाछपर चढ़ि बैसल आ' एक जोड़ा बेल पकड़ि लेलक।... ? पुछला पर कहए जे ई तँ हमर थिक। 4. (सखी उत्तर दैत

छथिन) हे सखी, तों अपन भावनाक फेरमे पड़लि छह। स्वप्न मे ओ ने हरिण छल (ने चोर), ओ छल कान्ह (आ' तों छलह दमनलता आओर (बेलक गाछ)। लखिमादेवीक रमण राजा रूपनारायण एकर रसज्ञ छथि।

[41]

पाएर आगु[1] पाछु गेलि लाज। पथ चलले बिसरलहुँ अकाज[2]।।1।।
जमुन तीर सत्रो समदल कान[3]। कैसन कए की बूझत आन[4]।।2।।
ए साखि आब बोलब की[5] जानि। कपटिहिं निकट तुलओलह आनि।।3।।
निज्र पिअ पेम हेम सम हारि। अड्गिरलि अपन दुअओ[6] कुल गारि।।4।।
पलटि जाइते घर बड मन हीन[6]। अबे सबे किछु भेल तोर अधीन।।5।।
विद्यापति भन सुन वरनारि। धैरजे तरुनि तिरोहित गारि।।6।।

1. दीप। 2. मकाज। 3. मान। 4. बुझल अआन। 5. हमे। 6. आड्किरिअ कामिक हुहु। 7. बलहीन।

विप्रलब्धा नायिका सखीसँ कहैत छथि — (1) जखनहि अभिसार हेतु डेग बढ़ाओल तखनहि लाज पड़ाए गेल। बाट चलैत अकाज (कुपरिणाम, अपवाद) बिसरि गेलहुँ। (2) यमुना तीरसँ कृष्ण समाद पठओलनि। जानि नहि, एकरा आन की बूझत। (3) परन्तु हे सखी, परिणाम जे भेल से जानि आब की कहिअहु (बड़ दुःख भेल)। तों हमरा वंचकक लग लए अनलह। (4) हम अपन पतिक सोन-सन प्रेम गमाए अपन दूनू कुलक कलंककें स्वीकार कएल। (5) घुरिकें घर जाइत मनमे बड़ ग्लानि होइत अछि। आब तँ सभ किछु तोरे हाथमे छहु। (6) विद्यापति कहैत छथि, हे ललना, सुनह। हे तरुणी, धैर्य रखनहि कलंक झाँपल रहि सकतहु।

[42]

तत्रे रसनागरि से[1] रससार। पसरओ बीथी पेम पसार।।1।।
जउबन नगरँ बेसाहल रूप। तते मोलइहह जते सरूप।।2।।
साजनि हे हरि रस बनिजार। गोप भरमे जनु बोलह गमार।।3।।
बिधिबसे अधिक[2] करब नहि मान। सोलह सहस गोपीपति[3] कान्ह ।।4।।
तन्हि-तोहँ अधिक रहत नहि[4] भेद। मनमथ मधथँ करब परिछेद।।5।।
भनइ विद्यापति एहु रस जान। सिबसिंह लखिमादेवि रमान।।6।।

1. से अति नागर तत्रे। 2. अबे। 3. जइअओ सोलह सहस। 4. उचित बहुत जे।

राधाकें सखी उपदेश दैत छथि — (1) तों रसवती नागरी थिकह; ओ रसग्राही। बजारमे प्रेमक दोकान पसरओ। (2) ओ योवनरूपी नगर मे रूप बेसाहए आओत। ओकरा सँ तों ओतबे मोलाइ करिहह जतबा चित हो। (3) हे सखी, कान्ह रसक व्यापारी (वणिक) थिक, गोप बूझि ओकरा गमार नहि कहिहह। (4) संयोगवश अधिक मान नहि कए बैसह, ओ कान्ह सोलह हजार गोपीक स्वामी अछि। अधिक मान करबह तँ तोरा पेखि देतहु। (5) तोरा-ओकरा बीच अधिक अन्तर नहि रहतहु। जे अन्तर रहतहु तकर फरिछोट कामदेव मध्यस्थ बनि कए देथुन। (6) भनइ... ।

[43]

बदर सरिस कुच परसब लहू[1] । कत सुख पाओब करति उहँ-उहूँ।।1।।
बाहुक बेढ़हि परस निबार। नीबी मोष करए के पार।।2।।
माधव अनुभव पहिलुक सङ्ग। नहि नहि करति एहे वधु रङ्ग।।3।।
अधरपाने से हरति गेआन। कमलकोस कए धरति परान।।4।।
बैरी दीठि निहारति तोहि। जनु भरमसि सबे पुछिहिसि मोहि।।5।।
नूतन रस संसारक सार। विद्यापति कह कवि कण्ठहार।।6।।

1. नहू। 2. भभरसि तबे

कृष्णकें सखी उपदेश दैत छथिन —1. बैरि-सन (नवोदित) स्तन कें नहु-नहु छूबह। राधा ऊँह्-ऊँह् करत। तों बड़ सुख पएबह। (2) ओ बाँहिसँ अपन स्तन कें बेढ़ि लेत जे तों छूबि नहि सकह। जखन स्तनो छूबए नहि देतहु तखन चीरक कसनी खोलबाक बाते की। (3) हे माधव, ओकर एहि प्रथम समागमक अनुभव करह। ओ 'नहि-नहि' करतहु—इएहतँ थिक प्रथम समागमक रसरंग। (4) अधरपान करबह, तकर सुखसँ ओकर ज्ञान (चेतन) हराए जएतैक। ओ अपन प्राणकें कमलक खोल मे जोगाए राखत। (5) तोरा शत्रुक दृष्टिसँ देखतहु। भ्रममे नहि पड़िहह। जँ सन्देह होअहु तँ हमरा पुछिहह। (6) कवि-कण्ठहार विद्यापति कहैत छथि, नव संगम-रसे संसारक सार वस्तु थिक।

[44]

गुरुजन दुरजन परिजन बारि। न गुनल निज लाघव कुलगारि[1]।।1।।
जीब कुसुम कए पूजल नेह। अरि डमकल अबे तोहर सिनेह।।2।।
X X X बास। सखि जानब जओ बड़ उपहास।।3।।
पुनु जनु आबह हमर समाज। मञे नहि रखबे आँखिक लाज।।4।।
मुनिहुक काजें पड़ए परमाद। हमराहु जनु से पड़ अपबाद।।5।।
जत अनुराग दूर सबे गेल। भीतिक पुतरी बिखधर भेल।।6।।
सुन्दरि बचने हलल सिर झाड़ि। नागर न सह कुगँआ गरि।।7।।
विद्यापति कह सुन बरनारि। पहु अबलेपिअ दोख बिचारि।।8।।
राजा रूपनराएन जान। सिबसिंह लखिमा देबि रमान।।9।।

1. न गुनल लाघब कुलकै गारि।

राधा कृष्ण पर उपेक्षाक आरोप लगबैत छथि — (1) हे कान्ह, हम गुरुजन, दुर्जन आ' पड़ोसी सभक नजरि सँ बँचैत तोरासँ प्रीति कएल। ने अपन मान-अपमान सोचल, ने कुलक कलंक। (2) प्राणकें फूल बनाए (प्राणपुष्प सँ) प्रीतिक पूजा कएल। किन्तु आब तोहर ओ प्रीति (खताक

पानि-जकाँ) डभकि गेलहु आ' ई (?) सुखाए गेल। (3)... (?)। हमर प्रीतिक एहन उपेसक्षा जँ सखी-बहिनपा जानत तँ बड़ उपहास करत। (4) कहि दैत छिअहु, तों फेर हमारा लग नहि आबह। हम आँखिक लाज नहि रखबहु (ई जनु बूझह जे सोझाँ अएला पर दृष्टिलज्जा वश सभ उपेक्षा बिसरि जएबहु)। (5) काजमे चूक मुनिअहु कें होइत छनि। तखन एहि काजमे (कान्हसँ संगममे) हमरा कलंक किएक लागत। (6) (कवि कहैत छथि-) राधा पूर्वक सभ टा प्रीति-प्रसंग कें बिसरि गेलीह। मानू भीतिपर बनाओल सापक मूर्ति (प्राण पाबि) बिखधर भए गेल हो। (7) राधाक एहन वचन सुनि कृष्ण सिर झाड़ि लेलनि। नागर कतहु गमारिक गारि सहए। (8) विद्यापति कहैत छथि, हे सुन्दरी, सुनह, प्रियतम पर दोषारोपण सोचि-बिचारिकें करह। (9) राजा... ।

[45]

चान्दक तेजें रअनि धर जोति। रजत सहित पहिरल[1] धनि मोति।।1।।
तनु अनुलेपल चान्दन सार[2]। धम्मिलें थेएल कुन्दक हार[3]।।2।।
हे हरि[4] कि कहब तखनुक[5] भान्ति। सखि अभिसार दिवस सम राति।।3।।
नयनक काजर दुर करु धोए। चान्दक उपर[6] कुमुद जनि होए।।4।।
नलिन[7] चान्द दुहु एकहि सङ्ग। जमुना जलें बिपरीत तरङ्ग।।5।।
जमुना तरि धनि आइलि राति। तुअ अनुरागें अङ्गिरि कत साति।।6।।
विद्यापति भन अभिनव कान्ह। सिबसिंह लखिमादेवि रमान।।7।।

1. पहिरल। 2. चान्दने तनु अनुलेप सिङ्गार। 3. भआर। 4. हरि। 5. अपनुक। 6. उदआँ। 7. एकत रङ्ग।

सखी कृष्णकें राधाक अभिसारक वर्णन सुनबैत छथि — (1) चन्द्रमाक तेज किरणसँ राति प्रकाशमय भए गेल। राधा चानीमे गाँथल मोतिक हार पहिरल। (2) घसल चानन देहमे लेपल। खोपामे कुन्द फूलक माला लेपटाओल। (3) हे कान्ह, राधाक एखनुक शोभा कहल नहि जाए।

दिन-सन उज्ज्वल रातिमे सखी राधा अभिसार मे चललि। (4) ओ आँखिक काजर धोए लेल। मानू चन्द्रमा (मुख) केर उपर कुमुद (आँखि) राखल हो। (5) मानू कमल आ चन्द्र दूनू एकठाम आबि गेल। मानू यमुनाक जलमे विपरीत तरङ्ग उठल (चाही तँ श्वेत-श्याम, किन्तु एतए श्वेते-श्वेत अछि)। (6) राधा तोहर प्रीतिक वशीभूतक भए रतिमे कतेक कष्ट सहैत यमुना नदी पार कए आइलि। विद्यापति कहैत छथि, लाखिमादेवीक पति शिवसिंह अभिनव कृष्ण थिकाह।

[46]

पहिलहि पेमक तरुअर बाढ़ल कारन किछु नहि भेला।
साखा पल्लव कुसुमे बेआपल सौरभे दिस भरि गेला।।1।।
सखि हे दुरजन दुरनए पाए।
मूरा जञो मूलहि सञो भाङ्गल अपदहि गेल सुखाए।।2।।
कुलक धरम पहिलेहि अड़िआतल कञोने देब पलटाए।
चोर जननि जञो मने मने झाँखञो रोअञो[1] बदन झम्पाए।।3।।
ऐसना देह गेह न सोहाबए बाहर बम जनि आगि।
विद्यापति भन अपनेहि आओत सिरि सिबसिंह रस लागि।।4।।

1. झाखिअ कान्दिअ।

राधा संखीसँ अपन वेदना सुनबैत छथि –1. प्रेमरूपी तरु स्वयं बढ़ैत गेल। कोनो टा कारण नहि भेल। ओ तरु शाखासँ, पल्लवसँ आ' फूलसँ व्यास भए गेल आओर ओकर सौरभसँ सभ दिशा भरि गेल। (2) परन्तु हे सखी, दुर्जनक कुचालि पाबि ओ तरु मूर जकाँ जड़िएसँ टूटि गेल आ' असमयहिमे सुखाए गेल। (3) कुल-मर्यादाकेँ तँ पहिनहि अरिआति बिदा कए देल। आब ओकरा के पलटाए आनत। आब तँ चोरक माए जकाँ मुह झाँपि मनहि मन झँखैत छी, मूक क्रन्दन करैत छी (जँ चिकरिकेँ कानब तै लोक कुलटा बूझि लेत) (4) एहना स्थितिमे ने देह सोहाइत अछि, ने

घर। बाहरो जाइत छी तँ लगैत अछि जेना आगि बरसि रहल हो। विद्यापति कहैत छथि, धैर्य धरह; रसक लोभेँ श्री शिवसिंह अपनहि अओताह।

[47]

काढ़ि जाए चलि बाढ़िक पानि[1]। ठाम रहए बान्धलँ निञ जानि[2]।।1।।
अइसनाहुँ सुमुखि करह तोहेँ रोस। पुरुसक की दिअ एतबाहि दोस।।2।।
दह दिसँ भमर करओ मधुपान। थिर भए चाहिअ अपन गेञान।।3।.
जातकि केतकि मालति सार। रमनी भए थिर[3] करए बिहार।।4।।
मधु लए के घुर मधुपक सङ्ग। थावर गौरव ई बड़ रङ्ग।।5।।
पर अनुराग रागेँ गेल मोहि। से मञे छड़लेँ समुझए तोहि।।6।।
भनइ विद्यापति बुझ रसमन्त। राए सिबसिह लखिमा देवि कन्त।।7।।

1.बाढ़िक पानि काढ़ि जा जानि। 2. ठाम रहल गए जे निज मानि। 3. जदि।

सखी नायिका केँ बुझबैत छथि—(1) बाढ़िक पानि काढ़ि (ससरिकेँ) चलि जाइत अछि। अपन बूझि छेकिकेँ रखलहिसँ ओ ठामपर टिकैत अछि (पुरुषकेँ बाढ़िक पानि बूझह)। (2) तैओ (एहनो स्थिति मे) हे सुन्दरी, तोँ जे तामस करैन छह से ठीक नहि। एतबहि लेल पुरुषकेँ दोस देब उचित नहि। (3) भ्रमर दसो दिस घूमि-घूमि मधुपान करओ। तोँ अपन ज्ञान (चित्त) केँ स्थिर कएने (सहनशील बनओने) रहह। (4) देखह, बेली, केतकी (केओला), मालती सभ सुदृढ अछि, सभ रमणी, स्थिर भए मधुपक संग विहार करैत अछि। (5) मधु लेल के मधुपक पाछाँ छुछुआइत अछि। अद्भुत बात जे ई गौरव स्थावर केँ प्राप्त छैक (स्थावर केँ छुछुआए नहि पड़ैत छैक, प्रेमी स्वयंभ् ओकरा लग अबैत छैक)। (6) ... (?)। (7) विद्यापति कहैत छथि... ।

[48]

बामा नअन फुरन आरम्भ। पुलक मुकुलें पूरल कुचकुम्भ।।1।।
नीवी निविड़ सँसर तें बीधि। सगुने सूचि हलु साहसें सीधि।।2।।
चल चल सुन्दरि न कर बेआज। मदन महासिधि पाउबि आज।।3।।
बिलम्ब न कर अङ्कगिरिहि अभिसार। हठें पए फाब अकामिक बार।।4।।
ताहि तरुनिकाँ कओन तरङ्ग। जकराँ मदन महीपति सङ्ग।।5।।
विद्यापति कबि कहए बिचारि। पुनमन्त पाबए गुनमन्ति नारि।।6।।

दूती राधाकें अभिसार लेल प्रेरित करैत छथि — (1) हे सखी, तोहर बामा आँखि पड़कैत छहु। स्तनमे रोमांच होइत छहु। (2) चीरक कसनी तेना ससरि रहल छहु जेना ई तीनू सगुन सूचित कए रहल अछि जे साहस कएने मनोरथ सिद्ध होएबे करतहु। (3) हे सुन्दरी, झट दए चलह। कोनो लाथ नहि करह। आइ मदन-महासिद्धि (संगमक महासुख) पएबह। (4) विलम्ब नहि करह। तैआर भए जाह अभिसार लेल। आकस्मिक मिलन कदाचिते फबैत छैक। (5) ओदि युवती कें कोन द्विविधा जकरा संग राजा कामदेव छथिन। (6) विद्यापति कवि सोचि-बिचारि कें कहैत छथि, गुणवती (चतुरा) कामिनीकें गुणवान् पुरुष भेटिए जाइत छथिन।

[49]

उधसि हलल[1] दखिन चीर। हीराधार हराएल हीर।।1।।
कइसन[2] नीलज देलए जोड़ि। बलअ भाङ्ल बाँह ममोड़ि।।2।।
भलि परिनति भैलि हमारि[3]। भल कए राखलि कुलक गारि।।3।।
बकुल माला गान्थल नाथे। मोहि पिन्धाउलुहुँ अपने हाथें।।4।।
सासु समारल फूजल बार। ननन्दे गान्थल टूटल हार।।5।।
सरसकवि विद्यापति गाब। मनक पाहुन मदन भाब।।6।।
राजा रूपनराञेन जान। सिबसिंह लखिमा देवि रमान।।7।।

1. ई दसि हालल। 2. अइसन। 3. सुरारि। 4. गान्तल।

नायिका दूतीकें उपराग दैत अछि — (1) ओ (नायक) हमर दक्षिण देशक रेशमी चीर कें अस्तव्यस्त कए देलक। हीराधार हीर (गहना) हराए देलक। (2) तों केहन निर्लज्ज पुरुष सँ हमरा मिलाए देलह जे हाथ ममोड़ि कें चूड़ि फोड़ि देलक। (3) बाह, हमर खूब दुर्दशा भेल। कुलक प्रतिष्ठा माटिमे मिलल। (4) स्वामी बकुल (भालसिरी) फूलक माला अपना हाथें गाँथि हमरा पहिरओने रहथि (से टूटि गेल) । (5) सासु जे केस बान्हि देने छलि से फूजि गेल। ननदि जे हार गाँथि कें देने छलि से टूटि गेल। (6) रसिक कवि विद्यापति मनक अतिथि कामदेवक प्रभाव गबैत छथि। (7) राजा... ।

[50]

न बुझए रस नहि बुझ परिहास। नहि आलिङ्गन भञुह बिलास।।1।।
सब रस एहि[1] खने चाहह ताहि। सागर कओने पएरें हो थाहि।।2।।
माधव सखि मोरि सहज अआनि। रस बूझति जबे[2] होइति सआनि।।3।।
अनुभबि बूझति जखने सम्भोग। तहिखने कोपहु करबाँ जोग।4।।
एखनुक आरति रह पए दन्द। मुन्दलाँ मुकुल कतए मकरन्द।।5।
विद्यापति कह नब अनुराग। बड़ पुनमन्त पाब पए भाग।।6।।
रूपनराएन बुझ रसमन्त। राए सिबसिंह लखिमादेवि कन्त।।7।।

1. तहि। 2.तञो।

सखी कृष्ण कें बुझबैत छनि — (1) एखन हमर सखी ने रस बुझैत अछि आ ने परिहास (मजाक)। ने आलिंगन जनैत अछि, ने भ्रूभंग। तों एखनहि ओकरासँ सभ प्रकारक रस (संगम-सुख) प्राप्त करए चाहैत छह। से नहि सम्भव। के पएरें समुद्र पार कए सकैत अछि? (3) हे माधव, हमर सखी एखन सहजहि अज्ञातयौवना (कामकलाक अनभिज्ञ) अछि। जखन बएस होएतैक तखन रस की थिक से बूझि पाओत। (4)

जखन ओकरा सम्भोग-सुखक अनुभव होएतैक तखनहि ओ (कोनो अप्रिय क्रियापर) कोपो करबाक (रूसबहुक) योग्य होएत। (5) एखन जँ तों आर्ति (आतुरता) देखएबह तँ केवल विरोध होएतहु। फूलक कोंढ़ीमे कतहु मकरन्द भेटए। (6) विद्यापति कहैत छथि, नब अनुराग (नवयौवनाक प्रेम) बड़ भाग्यें पुण्यवाने पुरुष पबैत छथि। (7) लखिमा देवीक पति रसिक राजा शिवसिंह रूपनारायण सेह ई रस जनैत छथि।

[51]

हरइते बसन[1] लाज दुर गेल। पिआक कलेबर अम्बर भेल।।1।।
अञोधेहि बअने[2] निझाबिअ दीब। मुन्दलहु[3] कमल भमर मधु पीब।।2।।
मनसिज तन्त सुनह[4] मन लाए। बड़ उनमुनिआ अबसर पाए।।3।।
सबे बिपरीत तन्हिक जत[5] काज। से सब सुमिरि मनहुकाँ लाज।।4।।
हृदयक धाधसि धसमसि मोहि। आओ कि कहबि मञे कहिनी[6] तोहि।।5।।
सँचलेओ रस नहि अनुभय नारि। वियापति कवि कहए बिचारि।।6।।

1. बसन हरइतें। 2. नअने। 3. मुकुलहुँ। 4. कहओ। 5. जत सबे बिपरित तन्हिकर। 6. आओर कहिनी कि कहबि।

नवोढ़ा नायिका सम्भोगक अनुभव सखींखें सुनबैत अछि — (1) जखन पिआ वस्त्र घीचि लेलनि तँ लाज कतहु नहि रहल। मानह पिआक देहे (लाजें अंग झपबाक) वस्त्र भए गेल। (2) मूड़ी निहुड़ाए दीप मिझाओल। तें की ? मुनलो (संकुचितो) कमलसँ भ्रमर मधु पीबि लैत अछि। (3) ध्यान दए कामलीला सुनह। अवसर पबितहिं पुरुष उन्मन (आतुर) भए जाइत अछि। (4) ओ जे-जे क्रिया करथि से सभ हमरा विपरीत (विचित्र) लागए। ओ सभ मन पाड़ैत छी तँ मनहुकें लाज होइत छैक। (5) ... (?)। (6) आओर की अंट-संट कएलक से तोरा की कहबहू। (7) विद्यापति बिचारि कें कहैत छथि, नारी मन मे संचितो रसक स्वाद (लज्जावश) पाबि नहि सकैत अछि।

[52]

पहु सञो उतरि बोलब बोल। अइसन मन न मानए मोर।।1।।
से जदि करम फलें[1] उदास। अपनि छाहरि तेज न पास।।2।।
सखि पचारसि[2] मन्दा साथ। हरत[3] आदर अपन नाथ।।3।।
कैरव सुरुज कमल चन्द। परपुरुसक सिनेह मन्द।।4।।
नाञरि भए जदि हठें विमान। एकहि जनमे इछब आन।।5।।
ई रस रूप नराएन जान। रानि लखिमा देवि रमान।।6।।

1. बचने फले। 2. पठाबसि। 3. हरओ।

परपुरुष (कृष्ण) सँ संग करबाक उपदेश देनिहारि दूतीकें नायिका उत्तर दैत अछि — (1) पतिसँ बढ़ि-चढ़िकें (?) बाजब से हमरा मन नहि मानैत अछि। (2) जैओ हमर पति करमक दोसें हमरासँ उदास होथि। तैओ हम हुनका नहि छोड़ब। अपन छाया कि ककरहुसँ दूर होइत छैक। (3) हे सखी, तों हमरा मन्द (अधम) पुरुष सँ संग करबाक हेतु उकसबैत छह। से कएने अपन पति हमरा अवश्ये त्यागि देत.। (4) कैरब (भेंट) के सूर्य आ' कमलकें चान कतहु सोहएलैक अछि ? पर-पुरुषसँ नेह जोड़ब अधलाह थिक। (5) नागरी भए यदि... (?)। एके जन्ममे आन पुरुषकक इच्छा कोना करब ? (6) सरस कवि कण्ठहार कहैत छथि, हे सुन्दरी अपन कुलक रीतिक (प्रतिष्ठाक) रक्षा करह। (7) ई रस लखिमा... जनैत छथि।

[53]

कोकिल गाबए मधुरिम बानि। रितु वसन्तें अमिञ रसे सानि।।1।।
पोसिअ पालिअ असमअ पाए[1]। चेञो-चेञो करए न काहु[2] साहाए।।2।।
साजनि अबे कत देह असोआस। की पुनि कान्ह आओब मोर[3] पास।।3।।
गुरु सुमेरु तह सुपुरस बोड़। कुलक धरम बुडले की मोर।।4।।
करमकक दोखें विघटि गेलि साटि। अगिलों जनम बुझबि परिपाटि।।5।।

विद्यापति भन न कर विराम। अवसर जानि पुरत तुअ काम।।6।।
रूपनराएन बुझ रसमन्त। राए सिवसिंह लखिमा देवि कन्त।।7।।

1. असमअ पोसिआ ललो पाए। 2. करिअ काहु न। 3. जाएब मोहि।

यौवन बितलापर कृष्णक उपेक्षासँ व्यभित नायिका सखीसं कहैत छथि — (1) जा' वसन्त ऋतु (=यौवन) रहैत अछि ताबतहि कोकिल (नायक) अमृत रसमे सानि मधुर बोल बोलैत अछि। (2) ओही कोकिलकेँ पालू-पोसू, ओ असमय पाबि चेऔं-चेऔं (कर्णकटु) ध्वनि करत जे ककरहु नहि सोहएतैक (यौवन बितालापर प्रेमी एहने कटुवचन बजैत रहैत अछि)। (3) हे सखी, आब तों हमरा कतेक आश्वासन देबह। की हमरासँ विरक्त भेल कान्ह फेर हमरा लग आओत ? (4) सुपुरुखक बोल सुमेरु पर्वतहुसँ अधिक भारी (अटल) होइत अछि। हमर कुल-मर्यादा की व्यर्थ टूटि गेल? (5) दुर्भाग्यवश प्रीति सेहो टूटि गेल। आब अगिले जन्ममे बूझब जे प्रीति करबाक ढंग की होइत अछि (एहि जन्ममे तँ तकर लूरि नहि भेल)। (6) विद्यापति कहैत छथि, प्रीतिक अन्त नहि करह। अवसर अएलापर तोहर मनोरथ पूर होएतहु। रूपनारायण... ।

[54]

XX हिनि XXX बाला। कत सह बिसम कुसुमसर धारा।।1।
नअन निरन्तर नोरे। बामाँ करतल मिलल कपोले।।2।।
अबधि समय लेखि-लेखी। रूप रहल अछ तनु अबसेखी।।3।।
दखिन पबन बह बङ्का[1]। हृदयक हार भुअङ्गक सङ्का।।4।।
विद्यापति कह आधी[2]। युवति अन्त भेल बिरह बेआधी।।5।।
रूपनराएन जाने। सिबसिह[3] लाखिमा देवि[4] रमाने।।6।।

1. सङ्का। 2. कवि विद्यापति। 3. राए सिबसिंह। 4. दे।

कवि नायिकाक विरहदशाक वर्णन करैत छथि — (1) ..... ई तरुणी कामदेबक शरक प्रहार कतेक सहत। (2) आँखि मे निरन्तर नोर रहैत छैक। गाल बामा हाथक तरहत्थी पर रखने रहैत अछि। (3) प्रेमी जे अवधि (समय-सीमा) दए गेलथिन तकर लेखा करैत-करैत शरीर क्षीण होइत गेलैक; आब रूप (आकृति) मात्र रहि गेलैक अछि। (4) वक्र (दुखदायी) दक्षिण पवन बहैत अछि (जे पीबि साप जीबैत अछि) तँ तरुणीकेँ अपन हृदयक हारहुमे सापक शङ्का होइत छैक। (5) विद्यापति विरहिणीक व्यथाक वर्णन करैत छथि। (6) युवति अन्त... बेआधी—अर्थ अस्पष्ट। (6) लिखिमा देवीक पति रूपनारायण... ।

[55]

सपने देखल हरि गेलाहुँ पुलकेँ पुरि जागल कुसुमक सरासन रे।
ताहि अवसरेँ गोरि नीन्द भाङ्गलि मोरि मनहि मलिन भेल बासन रे।।1।।
की सखि पओलह सुतलि जगओलह सपनेहुँ सङ्ग छडओलह रे।
X X X ।।2।।
सामर सुन्दर हरि रहल अञ्चर धरि फोअइते किङ्किनिमाला रे।
आओर कहब कत रस उपजल जत के बोल कान्ह गोआला रे।।3।।
ससरि सअन सिम हरि गहलिहुँ गिम मुखे मुख भमरे[1] कमल मिलु रे।
पुरलि सकल सिधि सहजे आइलि निधि तोरे दोखे दइबे अछोरि हलु[2] रे।।4।।
भनइ विद्यापति अरे रे वरजुबति अनुसर[3] पेम पुराना रे।
राजा सिबसिंह रूपनराएन लखिमा देवि रमाना रे।।5।।

1. कमले। 2. लिहु। 3. अनुसए।

राधा सखीकेँ स्वप्न-संगमक वर्णन सुनबैत छथि—(1) सपना देखल जे कृष्ण अएलाह। देह रोमांचित भए उठल। कामदेव जागि उठलाह। ताहि कालमे हे सखी, हमर नीन टूटि गेल।... (?) (2) हे सखी,

तों कोन एहन वस्तु पओलह जे सूतलिकें जगाए देलह? सपनहुमे जे संग भए रहल छल तकरहु भंग कए दोलह। (3) श्यामसुन्दर कान्ह हमर किङ्किणी माला (चीरक घुघरु बाला होरी) खोलैत आँचर पकड़ि लेलंक। तखन जे रसक उद्रेक भेल से बेसी की कहबहु। के कहैत अछिजे कान्ह गोप थिक। (4) तखन कृष्ण सेज पर आबि हमर ग्रीवा धए लेलक। मुखसँ मुख मिलल, मानू भ्रमर (कृष्ण) सँ कमल (राधा) मिलल। अभीष्ट पूरल। अनायास निधि लग आएल। एहन निधि तोहर दोखें दैव छीनि लेलक। (5) विद्यापति कहैत छथि, हे सुन्दरी, पूर्वक प्रेमक अनुसरण करैत रहह। (6) लखिमा... ।

[56]

कामिनि बदन[1] बेकत जनु करिहह चउदिस होएत उजोरे।
चान्दक भरमें अमिञरस लालस अञिह कए जाएत चकोरे।।1।।
सुन्दरि तुरित चलहिँ अभिसारे।
अवहि उगत ससि तिमिर तेजव निसि उसरत मदन पसारे।।2।।
मधुर बचन भरमहु जनि[2] बाजह सउरभे जानत आने।
पङ्कज भरमें भमर भमि आओब करब अधर मधु पाने।।3।।
तञे रसभाविनि मधुरितु जामिनि[3] गेल चाहिअ पिअ सेवा।
राजा सिबसिंह रुपनराएन कवि अभिनव जयदेवा।।4।।

1.बदन कामिनि रे। 2. जनु। 3. मधुक जामिनि।

कृष्णाभिसारिका नायिकाकें सखी कहैत छथि — (1) हे कामिनी, तों मुह नहि उधारह। से कएने चारू दिस इजोत भए जाएत (तखन अभिसार गुप्त नहि रहतहु)। ततबे नहि, अमृतरसक (चन्द्रकिरणक) लोभी चकोर तोरा मुहकें चान बूझि अइँठाए देतहु। (2) हे सुन्दरी, तों झट दए अभिसार करह। कारण, आब चान उगत। रातुक अन्धकार हटि जाएत। कामदेवक पसार (दोकान) उसरि जाएत (गुप्त संगम रुकि जाएत)। (3)

धोखहुसँ मधुर बोल मुहसँ नहि बहार करह, किएक तँ सौरभसँ आन तोहर गुप्त अभिसार जानि जएतहु। ततबे नहि, सौरभसँ भ्रमर तोहर मुहकें कमल बूझि उड़ैत-उड़ैत आबि जाएत आ' अधर-रस पीबए लगतहु। (4) तों सरवती रमणी थिकह आ 'ई वसन्त ऋतुक राति थिक। तोरा प्रियतम लग अवश्य जएबाक चाही। राजा... ।

[57]

X X X । हरिनि हतासलि केसरि कोरे।।1।।
धर धरखने हे धमिल मुख मन्दा। X X X ।।2।।
चम्पक कोरक कुच अभिरामे। सरबस साञ्चि धएल[1] अछ कामे।।3।।
सैसब सेख जउबन परबेसे। मनसिज गुरु देल हित उपदेसे।।4।।
अमिल मिलल कवि विद्यापति भाने। सिबसिंह लाखिमा देवि रमाने।।5।।

1. धएलह।

कवि वयःसन्धिक वर्णन करैत छथि — (1) ....। सिंहक कोरमे पड़लि हरिणी जकाँ मुग्धा नायिका रतिभय सँ हतास अछि। (2) नायक हठपूर्वक खोपा धरैत अछि तँ ओकर मुह मन्द (विवर्ण) भए जाइत छैक (जेना राहुक ग्रासमे पड़ल चान)। .... । (3) स्तन चम्पाक कली-सन सुन्दर छैक। मानू कामदेव अपन सर्वस्वक ढेर लगओने होथि। (4) शैशव समास भेलैक। यौवनक प्रवेश भेलैक। कामदेव गुरु भए हितकर उपदेश देअए लगलथिन जे कोना विलास कएल जाए। (5) नायिका कें अमिल (दुर्लभ वस्तु) भेटलैक। कवि विद्यापति... ।

[58]

जिब जञो हमे सिनेह लाओल तोहर[1] हृदअ जानि।
भल जन भए वचन[2] चूकह ई बड़ि लागए हानि।।1।।
माधव बूझल तोहर नेह।
निठूर पेम पराभव पाओल जीबहुँ भेल सन्देह।।2।।

अथिर जीवन जउबन थोड़ा जगत के नहि जान।
मन निकारुन हटल न रह तइअओ तोहिहि मान।।3।।

1. तोहरि। 2. वाचा।

कृष्ण राधाकें उपराग दैत छथि — (1) हे कान्ह, हम तोहर हृदय (हमरा प्रति अनुराग) जानिकें तोरासँ प्राणोपम प्रीति कएल। परन्तु तों भद्रपुरुष भए अपन वचनसँ चुकैत छह से बड़ कोना-दन लगैत अछि। (2) हे माधव, बूझि गेलहुँ जे तोहर प्रेम केहन छहु। निठुर लोकसँ प्रेम कए तेहन पराभव पाओल जे जीवनहुमे सन्देह। (3) जीवन अस्थिर होइत अछि (जानि नहि कखन एकर अन्त भए जाएत)। ताहूमे यौवन तँ आओर थोड़ (अल्पकालिक) होइत अछि। ई बात संसार मे के नहि जनैत अछि। मन बड निष्करुण (निर्दय) होइत अछि। ओ हटल नहि मानैत अछि। तोरहि दिस दौड़ैत अछि।

[59]

विकच कमल तेजे भमरी सेओल मधुरि फूल।
समय सम्पद देखि तुलाएल बडेओ बचन भूल।।1।।
साजनि भल तुअ अभिसार।
सुपहु एडिए जथाँ गेलिहे तकर पुन अपार।।2।।
गुनक बान्धल आएल मन्दिर न देखि तोहि।
मदनसरे बेआकुल मानस आएल चौंदिस जोहि।।3।।
सूनि सेज सूति रहल बापुर नयने तेजए नीर।
हरि हरि हरि हरि पुकारए देह न थाकए थीर।.4।।

1. भेल। 2. देखल। 3. मानए।

पतिकें छाड़ि कृष्ण लग गेनिहारि राधाकें सखी बुझबैत छथि — (1) भ्रमरी फुलाएल कमलकें छाडि मधुरी फूलकें से लक। कोनो समय सम्पत्तिकें तुलाएल (सम्प्रस) देखि (ओहिपर लोभाए) पैघो लोक अपन

बचन (प्रतिबद्धता) बिसरि जाइत अछि। (2) हे सखी, धन्य थिकहु ई तोहर अभिसार। अपन सुपहुकें छाड़ि जतए गेलह, से अपार पुण्यवान् थिक। (3) तोहर गुण (रस्सी/खूबी) सँ बन्हाएल तोहर पति घर आएल तँ तोरा घरमे नहि देखि कामवेदनासँ व्याकुल भए तोरा चारु दिस खोजलक आ (4) तोरा नहि पाबि बेचारा शून्य सेजपर सूति रहल। आँखिसँ नोर बहए लगलैक। ओ हा भगवान हा भगवान करैत छटपट करैत रहल।

[60]

मधुकर एक कुसुम[1] न रस, एके सङ्ग न रह नाह।
इ दुइ साजनि जतेओ[2] सम्भव सबे अनुभव चाह।।1।।
न बोल न बोल परुस वचन तोहें[3] सुबुधि सआनि।
ततेहि मान अनल जारिअ[4] जते[5] निझाइअ पानि।।2।।
पिअ अनुचित किछु न धरब मने न मानब दूर।
मुखरपन जइओ करए छाडिअ तैओ कि[6] नुपूर।।3।।

1. एक कुसुम मधुकर। 2. जगत। 3. तहिं। 4. पजारिअ। 5. जेहे। 6. सारिजञो सोभए तञो कि सौंपिअ नुपूर।

सखी राधाकें उपदेश दैत छथि — 1. भ्रमर एके फूल मे नहि रमैत अछि, तहिना पुरुष (पति) सदा एके नारीक संग नहि रहि सकैत अछि। भ्रमर आ' पुरुष ई दूनू जतेक सम्भव छैक ततेक केर संग रमण करए चाहैत अछि। (2) तों बुधिआरि चतुर ललना छह; प्रेमीक प्रति कटु वचन नहि बाजह। मानरूपी आगि ततबे पजारी जतबा पानि ढारि मिझाओल जाए सकए। (3) प्रियतम जँ किछु अनुचितो कहथि तँ तकरा अन्यथा नहि मानह। हुनका दूर (विरक्त) नहि बूझह। नूपुर मुखरपन (अवांछित ध्वनि) करैत रहैत अछि, तैओ कि ओकरा त्यागि देबह।

[61]

हरि रिपु तनुज[1] वास गए रीतल[2] दहए सरीर हमारा।
खटपद बन्धु बन्धु सुअ अरि धनि सोदर सुअ का घाला।।1।।
सखि है हरि न बुझावए कोई।
पावक सेख उदअकर[4] संपुट हेरि से चउगुन होई।।2।।
हिमगिरि सुता सुअ वाहन भोअन भोअन तासु[5] सुते रे।
ता पिअ वारक ता रिपु अतिसख हरि तिथि रअनि हते रे।।3।।

1. अनुज। 2. कोरातल दए। 3.धारा। 4. वर। 5. ता।

हरि कृष्ण, तनिक रिपु कंस, तनिक कन्या देवकी, तनिक वास मथुरा, ततए जाए कृष्ण रिझाए गेलाह, आ' एतए हमर देह जरि रहल अछि। खटपद भ्रमर, तकर बन्धु सूर्य, तनिक सोदर कृष्ण, तनिक पुत्र कामदेव (प्रद्युम्न), से हमरा घाइल कए रहल अछि। (2) सखी, कृष्ण कैं बुझओनिहार केओ नहि अछि। पावक अग्नि, तकर शेष (अन्त) कएनिहार जल, ताहिमे उत्पन्न कमलकें देखि काम चौगुन भए जाइत अछि। (3) हिमगिरि हिमालय पर्वत, तकर बेटी पार्वती, तनिक पुत्र कार्तिकेय, तनिक वाहन मयूर, तकर भोजन (भक्ष्य) साप, तकर भोजन वायु, तनिक बेटा हनुमान्, तनिक प्रिय रामचन्द्र, तनिक बालक कुश तकर शत्रु चाणक्य, तनिक मित्र चन्द्र (गुप्त), ...।

टि—ई गीत पिहानी थिक। किछु विद्वान् अर्थ लगएबाक प्रयास कएल, किन्तु पूर्ण सफल नहि भेलाह।

[62]

पबन सुआ पति अरि जे दसल मनि ता सुत चउतदिसे आब।
तासु तनअ सुअ मन मनसिज हुअ सब दिस धुनि कए गाब।।1।।
ए सखि मोर असन पति तनआ आइलि न आएल मझु पिआस।
X X X X X X X ।।2।।

सिखर सुखिणि चलि अनल करए धुनि अनल बमए तिमिरारी।
सबतहु सब पहु विपति आइलि सहु मनमथ गेल परचारी।।3।।
हेम समय गेल पिआ परबस भेल हिआ मअ न मअन तहि पास।
पत्रुअज अरि अरि ता सुअ मने धरि अबे हमे करब गएस।।4।।

टि.-पिहानी थिक। अर्थ लागब कठिन।

[63]

पावक सिखा नीच न धावए ऊँच न जा' जलधारा।
तत से पए अबस करए जाकर जे बेबहारा।।1।।
माधव गरुबि आरति तोरि।
नित्रँ मने जदि आगु न गुनसि गेलि बेबथा[1] मोरि।।2।।
कतन बासर पलटि आबिह कति न होइह राति।
पर दोस दए तिरिबध कर[2] कओन पुरुस जाति।।3।।
ओ नबि नागरि निसा सगरि सुरत अबधि गेला।
नाह निरदए अरुन उदअ उपसम नहि भेला।।4।।

1.कइलि रे बिधा। 2. लए।

सखी भोर भेलापर राधाकें छाड़ि देबाक अनुरोध कृष्णसँ करैत छथि — (1) आगिक धधरा नीचाँ दिस नहि जाइत अछि आ' पनिक धारा उपर नहि जाइत अछि। जकर जे व्यवहार (प्रकृति) थिकैक से तेना करबे करत। (2) हे माधव, तोहर आर्ति (आतुरता) बहुत छहु (संगममे सन्तोष नहि छहु)। अपना मनमे ई नहि सोचबह जे आगाँ की परिणाम होएत, तँ हमर व्यवस्था (करार) टूटि जाएत। (3) कतेको दिन फेर-फेर आओत, कतेको राति फेर होएत (आ'संगम करैतत रहबह)। कतहु एहन पुरुख देखल अछि जे दोष अनकां (दूतीकें) लगाए स्त्रीवध (राधाक दुर्गति) करए ? (कवि कहैत छथि, कृष्ण) भरि राति रमण कएल। आब संगमक अवधि बीति गेल। अरुणोदय भेलहु पर निठुर रमण कृष्ण विरत नहि भेलाह।

[64]

कति कति[1] भान्ति लता नहि थाक। तुलना करए न पारिअ[2] जाक।।1।।
बाहर कण्टक भितर पराग। तइअओ तोहरा तन्हिके अनुराग।।2।।
बुझलिहुँ[3] भमर जइसन तोहें रसी। जनम गमओलह केतकि बसी।।3।।
मालति माधवि[4] कुन्दलता। आओर रसमति अछए कता।।4।।
ताहि सबहु जदि कर[5] परिहार। ताके बोलब की सहज गमार।।5।।

1. कते कते। 2. पारए। 3. बुझि हल। 4.माधब। 5.ताहेरि सबहु जदि गुन।

कृष्ण कें एकमात्र राधा मे अनुरक्त देखि गोपी लोकनि उलहन दैत छथि — (1) कतेक-कतेक प्रकारक लता (गोपीसभ) अछि, जकर तुलना नहि कएल जाए सकैत अछि। हे माधव, हमसभ बूझि गेलहुँ जे तों केहुन रसिक छह। तों एकमात्र केतकी (राधा) क संग जनम गमाए देलह। केतकीकें पराग तँ भीतरमे नुकाओल रहैत अछि, आ' बाहर काँटे काँट, तैओ तों ओकरहिमे रिझल रहैत छह। (4) देखह, मालती, माधवी, कुन्दलता तथा आओरो कतेक रस-भरस लतासभ (गोपीसभ) अछि। (5) तकरा सभकें यदि तों त्यागि दैत छह तँ तोरा निपट गमार नहि तँ आओर की कहबहु।

[65]

दरसन लागि पुजए निते काम। अनुखन जपए तोहरि पए नाम।।1।।
अवधि समापलि मास अखाढ़। अबे दिने-दिने है जीवन भेल गाढ़।।2।।
कहब समाद बालभुँ सखि[1] मोर। सबतह् जलद समय पड़ घोर।।3।।
हमे[2] अबला हे कुपित पञ्चबान। मरम लखिए कर सर[4] सन्धान।।4।।
तुअ गुन बान्धल अछए परान। परक बेदन सखि[5] पर नहि जान।।5।।

1. कृष्णकें। 2. एके। 3. गुपुत। 4. सरस। 5. दुख।

राधा सखी द्वारा अपन विरहदशा नायककें सूचित करैत छथि — (1) तोहर दर्शन क कामनासँ नायिका नित्य कामदेवक पूजा करैत अछि आ' निरन्तर तोहरे नाम जपैत रहैत अछि। (2) तों जे अवधि दए गेलह से बीति गेल। अखाढ़ मास आबि गेल। आब दिन-दिन ओकरजीवन कष्टकर भेल जाइत अछि।' (3) हे सखी हमर ई संवाद तों हमर प्रियतमकें कहबहुन, 'वर्षाक समय सभसँ विकट होइत अछि। (4) एक तँ हम अबला छी, ताहिपर कामदेव हमरा पर कुपित छथि - मर्मस्थल टिकाकए तीर मारैत छथि। (5) हमर प्राण तोहर गुण (डरी / प्रेम) सँ बान्हल अछि (तें निकसैत नहि अछि)। (कहि कें की होएत), आनक वेदना आन नहि जानि सकैत अछि।'

[66]

कत अछ कानन केतकि[1] साहर पङ्कज कुमुद सहासे[2]।
तहुँ मकरन्द अछए तइअओ अलि[3] तोहि बिनु विकल पिआसे।।1।।
मालति तोहि सभ के जग आने।
जसु परिमल रसेँ परबस मधुकर कतहु न कर मधुपाने।।2।।
बासर कुमुद विकास न दरसए केतकि कण्टक भारे।
नव मधुमासहु तइसन न देखिअ जे अनुरञ्जए पारे।।3।।
सहज भमर[4] बर सब गुन आगर तहुँ पुनु ताहेरि सउभागे।
निज मन पिअतम ससि कुमुदिनि सम तसु अनुगत[5] अनुरागे।।4।।

1. कुसुमित। 2. परम साहसे। 3 x x x। 4. जुबति। 5.तसु अनुगत।

सखी मालतीक व्याजें राधाक सौभाग्यक प्रशंसा करैत छथि — (1) वनमे बहुतो मजरल आम, कमल, कुमुद प्रफुल्लित अछि। ताहि सभमे मकरन्द छैक। तैओ भ्रमर तोरा बिना पिआसल रहैत अछि। (2) हे मालती, संसारमे तोरा-सन सौभाग्यवती आन के अछि जकर सौरभसँ परवश भेल भ्रमर अन्यत्र कतहु मधुपान नहि करैत अछि? (3) कुमुद

दिनमे नहि फुलाइछ। केतकी काँटसँ भरल अछि। नव वसन्तहुमे एहन आन कोनो फूल नहि देखैत छी जे भ्रमर कें अनुरंजित कए सकए। (4) भ्रमर सहजहि सभ गुणमे अग्रगण्य अछि तँ तोंहू ओकर सौभाग्य थिकह। (ओ भाग्यवान् जे तोरा पओलक)। ओ तोरा अपन अन्तःकरणसँ परमप्रिय छहु आ' तोहूँ ओकर प्रेमपूर्वक अनुगत रहैत छह।

[67]

दरसने ससिमुखि मधुर हास देखि हेरहते हरए गेआने।[1]
करें धरि केसपास पिबइ अधर रस कतए मानिनिजन माने।।1।।
सुन्दरि,
तोयँ बोलञो पुनु जतन करह जनु मञे न जाएब तसु पासे।
X X X X X X ।।2।।
न दइन दाखिन मान न मोह ममत जान न रमए मनोरथ राखि।
सून सङ्केतन दीप अचेतन के धरब तखनुक साखि।।3।।
प्रमोद कपोत रव कुचकुल परिभव निधुवन कत कत भान्ति।
तखनुक सिब-सिब रे रे उबरल जिब भागे पोहाइलि राति।।4।।

1. पाठ बिगडल अछि। प्रसंग देखिकें कोनहुना अर्थ बैसाए देल।

नायिका अपन रतिभय सखीकें सुनबैत छथि —(1) हे सखी, हुनक चान-सन मुह देखितहि हमर ज्ञान हरन भए जाइत। जखन ओ हाथसँ खोपा (माथ) धए अधर-रस पिबैत अछि तँ मानिनी सभक मान निपत्ता भए जाइत अछि। (2) हे सखी, फेर तोरासँ नेहोरा करैत छिअहु, आग्रह नहि करह। हम ओकरा लग नहि जाएब। .... । (3) ओकरा ने दैन्य (दया) छैक, ने दाक्षिण्य (शिष्टता), ने मोह छैक ने ममता। ओ हमर मन देखिकें नहि, बलपूर्वक रमण करैत अछि। संकेत-स्थल सून रहैत अछि, दीप सेहो मन्द रहैत अछि; तखन हमर दुर्दशाक साक्षी के होएत? पोसा परबा-जकाँ घुटकैत छी। स्तन पीड़ित होइत अछि। ओ नाना प्रकारें

सम्भोग करैत अछि। तखनुक दशा हाए की कहिअहु। प्राण बाँचि गेल। अहोभाग्य जे राति कोनहुना बीति गेल।

[68]

अबिरल बिसरस बरिस ससी। दाहए देह[1] पवन परसी।।1।।
बिसम बिसमसर बेदन[2] देइ। सिब सिब जिबन सेहओ[3] नहि लेइ।।2।।
ए सखि ए सखि मोहि मन भास। मरन चाहि बड बिरह हुतास।।3।।
अबे मञे निञ मने दिढ कए जानु। कतहु सेस नहि कपट बिनु।।4।।
सहज पेम जदि बिरह न होइ। होइतहि बिरह जिबओ[4] जनु कोइ।।5।।

1. देहदाह कर। 2. बोधिन। 3. केओ। 4. जिबए।

नायिका सखीकें अपन बिरह-सन्ताप सुनबैत छथि — (1) चान (अमृत नहि) लगातार बिखक घोर बरसाए रहल अछि। बसात छुबितहिँ देह झरकाबए लगैत अछि। (2) कठोर कामदेव वेदना तँ दैत छथि, मुदा ओहो प्राण नहि लैत छथि। (3) हे सखी, हमरा मनमे होइत अछि जे विरह आगिअहुसँ अधिक सन्तापकारी होइत अछि। (4) आब हम अपना मनमे दृढ़ कए अवधारि लेल अछि जे कोनो टा स्थान कपटहीन नहि छैक। जँ सहजहि प्रेम होअए तँ बिरह नहि होएबाक चाही आ' विरह होइतहि केओ जीवओ नहि।

[69]

तुअ मुखे[1] अमिञ निवास। बीख बचन ककें[2] भास।।1।।
बरिसए हृदअ हमार[3]। हिमकर गलल तोहार।।2।।
परिहर दारुन मान। देहे अधर मधु पान।।3।।
रोसे दारुन मुह मन्द। निन्दह दिबसक चन्द।।4।।
कथि भेल सुललित हास। उचितेहु कमल बिकास।।5।।
पर मुखें सुनि अपबानी। रोस करब भल जानी।।6।।
किछु नहि दोस हमार। हिरदए करह बिचार[4]।।7।।

1. गुणे। 2. किके। 3. बाँरि सम हदय हमारि। हेम कर गलल तगारि।
4.किछु दोष नहिक हमारि। हृदयहु चाइड़ बिचारि।

कृष्ण रुसलि राधाकें बौंसैत छथि—(1) हे सुन्दरी, तोरा मुहमे तँ अमृत भरल छहु, तखन तों बिख-सन बोल किएक बजैत छह? (2) तोरक बरखा भए रहल अछि हमरा हृदय मे, आ' आश्चर्य जे तोहर चान(-सन मुह) गलल जाइत छहु। (3) ई दारुण मान छाड़ह। अधर मधु पीबए देह। (4) रोससँ तोहर मुखच्छवि परम मलिन छहु; लगैत अछि जेना दिवसक चान हो—(5) जखन कमल कें विकसित होएब उचित थिक तखिन तोहर सुललित हास कतए चलि गेलहु? (6) जँ आनक मुहेँ दोषारोप सुनह तँ कनेक सोचि-बिचारि क्रोध करह। हमर तँ कोनो दोख नहि अछि। तों मनमे विचार करह।

[70]

आनन देखि धन्ध[1] मोहि लागल किअ[2] सरसिज किअ[3] चन्दा।
सरसिज मलिन रअनि दिन ससधर ई दिन रअनि सानन्दा।।1।।
रूपे रूप हिनुकि रेखा।
एहि सभ दैवे आन नहि बिहले ऐसन बुझिअ बिरेखा।।2।।
अनुपम रूप घटइते सब निघटल[5] जत छल रूपक सारे।
से जानि दैवे आनि नम[6] निरमल कमिनि कुन्तल भारे।।3।।

1. भान। 2. जिनि। 3. जिनि, 5. बिघटल। 6. कए।

नायक नायिकाक रूपवर्णन करैत छथि — (1) मुह देखलापर हमरा लागल जेना कमल हो कि चान। किन्तु वास्तवमे ने चान छल, ने कमल। (2) किएक तँ कमल रातिमे मलिन भए जाइत अछि तँ चान दिनमे। ई मुह तँ दिन-राति दूनूमे सानन्द रहैत अछि।........ (?)। लगैत अछि जे विधाता एहि नायिकाक समान आन ककरो रचना नहि कएलनि। (3) विधाता ई अनुपम आकृति रचए लगलाह तँ जतेक उत्कृष्ठ रूपबाला

वस्तु छल से सभटा सधि गेल। से जानि ओ अन्धकारकें बटोरि नायिकाक कोस सिरजल।

टि—वेशेषिक दर्शन मे अन्धकार दशम द्रव्य मानल गेल अछि। गीतक अन्तिम चरण ताहि दिस इंगित करैत अछि।

[71]

पहिलहि अमिञ लोभाई, अबे बीन्धसि[1] बिषवचने कोहाई।।1।।
कइसनि भेलि तुअ रीती, आदि मधुर परिनामक तीती।।2।।
के तोके बोलए सआनी, कोप न कएलह अवसर जानी।।3।।
निधुबन लालस नाहे, पेम लुबुध परिरम्भन चाहे।।4।।
जदि खण्डसि तसु आसा, सुतसि समिध दए हृदअ[2] हुतासा।।5।।
वियापति कह जानी, हरि सञो कोप न करए सआनी।।6।।

1. सिनुबसि। 2. धहत।

सखी मनिनी राधाकें प्रबोधैत छथि — (1)पहिने तँ तों कान्हकें अमृत दए-दए लोभओलह आ' आब कुपित भए बिस-सन बोलें बिन्हैत छहुन। (2) केहन छहु तोहर चालि। आदिमे मीठ आ' अन्तमे तीत। (3) तोरा के बुधिआरि कहतहु। तों बिनु अवसरहि (बिनु उचित कारणहि) कोप कए बैसलह। (4) तोहर प्रेमी संगम लेल ललचाइत छहु, आ' तोहर प्रेमक हेतु लोभाएल तोरा हृदयसँ लगबए चाहैत छहु। (5) जँ तों ओकर आशा कें कटैत छह, तँ बुझह ओकर हदयक आगिमे घी ढारैत छह। (6) वियापति जानिकें (सोचि-बिचारिकें) कहैत छथि, बुधिआरि नारि कतहु कान्ह-सन प्रेमीसँ कोप करए।

[72]

दाहिन दिढ अनुरागे। पिआ पर यचन न लागे।।1।।
बूझह[1] सबे अवगाही। सूते सरोवर[2] थाही।।2।।
राधे, चिते जनु झाखह आने। तोके परसन पञ्चबाने।।3।।

सुपहु सुनारि सिनेहे। चान्द कुमुद सभ सेहे[3]।।4।।
दिबसे दिबसे धर जोति। सोनाँ मेलाउलि मोति।।5।।
सुकवि वियापति भान। पुने मिल पिआ गुनमान।।6।।

1. बूझल। 2. सरबर। 3. रेह।

रूसलि राधाकेँ सखी बाँसैत छथि — (1) तोहर पिआमे दाक्षिण्य (सदभाव) छनि आ' तोरा प्रति अटल प्रेम छनि। हुनका पर दुष्ट लोकक बातक कोनो प्रभाय नहि पड़ैत छनि। (2) सूतसँ सरोयरकेँ थाहि (भीतर पैसि) सभ बातक पता लगाबह, (तखन कोप शान्त भए जएतहु)। (3) हे राधा, मनमे अन्यथा नहि सोचह। तोरापर कामदेव प्रसन्न छथुन। सुपुरुख आ' सुनारिक बीच जे प्रेम होइत छैक से ओहने जेहन चान आ कुमुदक बीच। (4) एहि प्रकारक प्रेममे दिन-दिन चमक बढ़ैत रहैत अछि, जेना सोनमे गाँथल मोतिमे। वियापति कहैत छथि, गुणवान पिआ पुण्यहिसँ भेटैत छैक।

[73]

अभिमत दुहुक एकओ नहि[1] मिलले दूती के अपराधे।
आन आन खने सङ्केत भुलाएल दुहुक मनोरथ बाधे।।1।।
तरुनि कहञो कहा   X   X   X   X।
X   X   X   X   सफल न भेल अभिसार।।2।।
राधा नयन जरद जञो बरिसए कान्ह रहल सिर नाई[2]।
दूती अपन चतुरपन खोएल[3] चारिम कहहि न जाई।।3।।
दूअओ परम बेआकुल मानस जस राधा तस कान्ह।
एक मनोभव परिभव दाता दूअओ सर समधान।।4।।
भनइ वियापति एहु रस जानए रायनि मह रसमन्ता।
सिवसिंह राजा रूपनराञेन लखिमा[4] देयिक कन्ता।।5।।

1. दूहुक अभिमत एक न। 2. कन्हायी रहल लजाई। 3. खाएल। 4. राए सिबसिंह लखिमादेवि।

कवि मिलनमे विघटन पाबि दुखी राधासँ कहैत छथि — (1) दूनू मिलए चाहैत छलहुँ। दुनूमे कनिकहु मिलन नहि भेल। एहि विघटनमे अपराध छलैक दूतीक। (2) दूती कान्हकेँ आन कालक संकेत देलक आ' राधाकेँ आन कालक, ताहिसँ दूनू भोतिआएल, दूनूक मनोरथ भंग भेलैक। हे तरुणी राधा, तोरा की कहिअहु।... (?) अभिसार सफल नहि भेल। (3) राधाक आँखि मेघ जकाँ झहरए लागल आ' कान्ह मूड़ी गोंतने रहलाह। दूती अफन चतुरपन (चतुर होएबाक प्रतिष्ठा) गमओलक। ई बात चारिमकेँ कोना कहल जाए (ई तँ गुप्त प्रेमक व्यापार छल।) (4) दूनूक मन परम व्याकुल अछि। जेहने राधाक मन, तेहने कृष्णक। पीड़ा देनिहार एके कामदेव दूनूक उपर तीर चलबैत छथि। (5) वियापति कहैत छथि, राजा सबहुक बीच सभसँ अधिक रसिक लखिमादेवीक पति राजा शिवसिंह ई रस जनैत छथि।

[74]

नूपुर रसना परिहरि देह। नील[1] वसन हे जुबति पिन्धि लेह।।1।।
कएलें[2] बिलम्ब होएत उपहास। गए नहि होएते कान्हक पास।।2।।
गमन करह सखि बालभु[3] गेह। पूरत अभिमत सफल[4] सिनेह।।3।।
कुङ्कुमे तञे न पसाहहि देह। नअनजुगल कर[5] काजर रेह।।4।।
अबही अगत[6] तम,पिबि चन्द। जानि पिसुन जने बोलब मन्द।।5।।
भनइ विधापति सुन बरनारि। अभिनब नागर रूप मुरारि।।6।।
रूपनराएन एहु रस जान। सिबसिंह लखिमा देवि रमान।।7।।

1. पीत। 2. सिथिल। 3. वल्लभ। 4. सकल। 5. भय। 6. अबहि उदित होत।

सखी राधाकेँ अभिसार हेतु प्रेरित करैत छथि — (1) हे सखी, नूपुर आ' सरना (कमरकस) छाड़ि देह (ओकर अवाज गुप्तताक भंग कए देतहु)। कारी रंगक वस्त्र पहिरि लेह। (2) विलम्ब करबह तँ (चान उगि जाएत, लोक देखि जएतहु, लोकमध्य) उपहास होएतहु। कान्हक लग जाए नहि सकबह। (3) हे सखी प्रियतमक ओतए चलह। तोहर मनोरथ पुरतहु आ'प्रेम सफल होएतहु। (4) तों देहक प्रसाधन कुंकुमसँ नहि करह। दूनू आँखिमे काजरक रेखा कए लेह। (4) हे सखी, प्रियतमक ओतए चलह। तोहर मनोरथ पुरतहु आ' प्रेम सफल होएतहु। (5) एखनहि अन्धकारकेँ पिबि चान उगत, तँ दुर्जन गुप्त अभिसार देखि जाएत आ' निन्द। करए लगतहु। (6) विद्यापति कहैत छथि, हे सुन्दरी, सुनह। कृष्ण अभिनव नागर (रसिक) थिकाह। (7) लखिमा... ।

[75]

बरिस सघन घन पेमे पुरल मन पिआ परदेस हमारे।
ऐसनि पाउस राति पुरुष कमन जाति घर[1] परिहरइ गमारे।।1।।
सजनी दुर कर दुरजन नामे।
तोहहि सआनि धनि अपन परान सनि तें करिअ चित बिसरामे।।2।।
कमल फुल बिगसु केओ बोल काम[2] हसु भमरा भमरि विवादे।
मुइल कुसुमधनु से कैसे जिउल पुनु कि बोलब हर परमादे।।3।।
बिजुरि चमक घन बुल बिसहरगन[3] उनमुख नाच मजूरे।
कदम पवन बह से कैसे जुबति सह हृदय भमइ कत दूरे।।4।।

1. गृह। 2. मदन। 3. बिसहर बिसहरे।

राधा वर्षाकालीन विरह सखीसँ सुनबैत छथि — (1) हे सखी, मेघ जोरसँ बरसि रहल अछि हमर मन प्रेमसँ भरल (प्रेमातुर) अछि। एहना समयमे हमर पिआ परदेस अगोरने अछि। (2) हे सखी, ओहि दुर्जनक (निष्ठुर पुरुष कृष्णक) नाम नहि लेह। तों बुधिआरि छह, हमर अपन प्राण-

सन प्रिय छह, तें तोरहि पर चित-विश्राम करैत छी (तोरहि अपन वेदना कहि मनमे सन्तोष करैत छी।) (3) कमल फुलाएल। केओ कहैत अछि, कामदेव हँसलाह। एहि बात पर भमरा-भमरीमे विवाद बजरि गेल। भमरा कहैत अछि, कामदेव तँ शिवक नेत्राग्निमे जरि गेलाह, ओ फेर जीवि कोना सकैत छथि। भमरी कहैत अछि, की ई नहि कहि सकैत छी जे महादेव प्रमाद (चूक) कएलनि (कामदेव के जराए नहि सकलाह) ? (4) मेघमे बिजली चमकैत अछि। बिखधर सभ घुमैत अछि। मयूर मुह उपर कए नचैत अछि। कदम्ब-पवन बहैत अछि। से विरहिणी युवतीकेँ कोना सह्य होएतैक। ओकर हृदय तँ बहुत दूरमे (परदेसमे जतए पिआ गेल छथिन ततए) बौआइत अछि।

[76]

ओहु राहुभअ[1] एहु निसङ्क। ओहु कलङ्की एहु निकलङ्क।।1।।
सम बोलइते अनुचित मन भाव[2]। सोनाक तुलना काच कि पाव[3]।।2।।
ए सखि पिआ मोर बड़ अगेआन। बोलथि बदन तोर चान समान।।3।.
चान्दहु चाहि मोर कुटिल[4] कटाख। तजे कामिनि किङ्किरए राख।।4।।
उथि अछ सुधा इथी अछ हास। एतबा अछ किछु तुलना भास।।5।।
भनइ विद्यापति कवि कण्ठहार। तनिका दोसर काम प्रहार[5]।।6।।
राजा रूपनराएन जान। सिवसिंह लखिमा देवि रमान।।7।।

1.राहुभीत। 2. जाग। 3. काग की लाग। 4. चाहि कुटिल।

रूपगर्विता नायिका अपन सौन्दर्यक प्रशंसा सखीसँ कौत छथि — (1) चानकेँ राहुक शंका रहैत छैक, किन्तु हमर मुह निःशङ्क अछि। चानमे कलङ्क (कारी दाग।) छैक, हमर मुह निर्मल चकचक अछि। (2) जँ केओ हमर मुहकेँ चान-सन कहैत अछि तँ से हमरा अनुचित लगैत अछि। सोनाक परतर कतहु काच पाबए। (3) हे सखी, हमर पहु बड़ अज्ञानी अछि; कहैत अछि जे उमर मुह चान-सन अछि। (4) हमर कटाक्ष

द्वितीयाक चानहुसँ कुटिल अछि।......... ....(?) । (5) चानमे अमृत अछि तँ हमरा मुहमे हास। एही सँ दूनूमे किछु समानता प्रतीत होइत अछि। (6) कविकण्ठहार विद्यापति कहैत छथि,........... (?)। (7) लखिमा देवीक... ।

[77]

कतएक हमे धनि कतए गोआका। जल थक कुसुम कैसनि हो माला।।1।।
पबन सहए नहि दीपक[1] जोती। छुइलेहु काच मलिनि होअ मोती।।2।।
कि बोलिबों अरे सखि कि बोलिबों लाजे। जनु आबह पुनु ऐसना काजे।।3।।
कात्रि निबेदसि कुमति सआनी। सरबन मधुर तीन्ति बड़ि बानी।।4।।
परधन लोभ करए सब कोई। करिअ पेम जत्रो विरह न होई।।5।।
[ई सबे कहि कहु करिहह सेवा। अवसर पाए उतर हमे देबा]।।6।।
नागरिजन के बाड्क बिलासा। रुखेहु बचने राखि गेलि आसा।।7।।
भनइ विद्यापति एहु रस जाने। सिबसिंह लखिमा देवि रमाने।।8।।

1. पबन न सह। [] नेपा.सँ।

कृष्णसँ रूसलि राधा दूतीसँ कहैत छथि — कतए (कुल-शीलवती) हम आ' कतए ओ गोआर। पानिक फूल (कमल) कतहु स्थलपरक आन फूलक संग गाँथल जाए? (2) दीपक जोति कतहु पवन सहए (कुलीनाकें कतहु गमारसँ संग होइक)। काचक (कृष्णक) स्पर्शहुसँ मोति (राधा) मलिन भए जाएत। (3) की कहबहु तोरा, बजितहुँ लाज होइत अछि। एहन काज लए फेर हमरा लग नहि आबह। (4) हे बुधिआरि सखी, तों एहन कुमति (अधलाह विचार) किएक दैत छह। सुनबामे तँ तोहर बात मीठ लगैत अछि किन्तु छहु बड़ तीत। (5) सभ केओ आनक धनपर लोभाइत अछि। परन्तु प्रेम (लोभ) तखनहि करक थिक जखन विरहक शंका नहि हो। (6) हे सखी, ई सभ बात कहिकें तों हुनका कहुन जे राधा अवसर अएलापर उत्तर देतीह। (7) कामिनीक विलास उनटा रीतिएँ होइत

अछि। (ओकर) 'नहि' केर अर्थ 'हँ' बुझबाक चाही। । (8) विद्यापति कहैत छथि, एहि रसक ज्ञाता थिकाह लखिमा...।

[78]

चारि पहर राति सङ्कहि गमाओल अबहि[1] भेल भिनसारा।
चान्द मलिन भेल नखतमण्डल गेल हम देह मुकुति गोआरा।।1।।
माधव धनि समन्दह उठि जागी।
ऐसन कए परबोधि पठाबह[2] पुनु आबए तुअ लागी।।2।।
जे किछु ताहि[3] देल कञ्चुआ झापि लेल हृदय कएल आसोआसे[4]।
केस अरुझाएल[5] अधर सुखाएल सखिन्हि करब उपहासे।।3।।
भनइ विद्यापति सुन बरजौबति दण्ड निकट परमाने।
राजा सिबसिंह रूपनराएन लखिमा देवि रमाने।।4।।

1. अब पहु। 2. पठइह । 3. पिआ। 4. बिसबासे।

राति भरि संगम कएला पर दूती प्रातःकाल राधाकें घुरबैत छथि — (1) हे कान्ह, तों चारू पहर (सगर) राति राधाक संग बितओलह। आब परात भए गेल। चान मलान भेल। तारा सभ तिरोहित भेल। हे गोआर (अज्ञानी), आब राधाकें छुट्टी दहक। (2) हे माधव, आब धनि (राधा) कें बिदा करह। ओकरा तेना बुझाए-सुझाएकें घुराबह जे ओ फेर तोरा लग आबए। तों जे किछु (नखक्षत) राधाकें (बिदाइ रूपमे) देलहक, से ओ कंचुकमे झाँपि राखि लेलक। हृदयकें आश्वस्त कए लेलक। किन्तु केस जे ओझराएल आ' अधर जे सुखाएल रहि गेलैक, से देखि-देखि तँ सखी सभ उपहास करबे करतैक। (4) विद्यापति कहैत छथि, हे सुहरी, सुनह। प्रमाण जखन लगहि (देहहि) मे छैक तखन दण्ड तँ भोगहि पड़तैक। लखिमा... ।

[79]

पुरुख भमर सम कुसुमे कुसुमे रम पेअसि करए कि पारे।
ओर[1] न राखल पहु परतख भेल लहु ओर भरि भेल न बिचारे।।1।।
X X X X X X X ।
भल न कएल तोहें सुमुखि अलप[2] कोहें रोखलि[3] पिअ अपराधे।।2।।
सेहे सआनि नारि पिआगुन परचारि बेकतेओ दोस नुकावे।
निसिनिसि कुमुदिनि ससधर पेम जिनि अधिक अधिक रस पावे।।3।।
भनइ विद्यापति अरे रे वरजुबति अबहु करिअ अवधाने।
राजा सिबसिंह रूपनाराएन लखिमा देवि रमाने।।4।।

1. उर। 2. सरुप। 3. उलेपल।

कृष्णक चालिपर रुष्ट राधाकें दूती बुझबैत छथि — (1) हे राधा, पुरुष मानह भ्रमर थिक। ओ खन एहि फूलक संग, खन ओहि फूलक संग रमैत रहैत अछि। ओकर प्रेयसी की कए सकैत अछि (रोकब साध्य नहि छैक)। तोहर पहु मर्यादा नहि रखलक। तोहर नजरिमे प्रत्यक्षतः हलुक भए गेल। परिणाम नहि बिचारलक। (2) ....। तैओ हे सुन्दरी, तों जे पिआक छोट-सन अपराध पर रुष्ट भए गेलह से भल नहि कएलह। (3) चतुर नारी से थिक जे पिआक गुणक प्रचार करए (पुरुषक प्रशंसा करैत रहए) आ' ओकर देखारो दोखकें गुप्त राखए। कुमुदिनी कें देखह, (चान दिन भरि भागल रहैत छथि, तैओ) ओ प्रत्येक राति चानक प्रेम जितैत अछि आ' उत्तरोत्तर अधिक रस पबैत अछि। (4) विद्यापति कहैत छथि, हे सुन्दरी, आबहु चेतह। लखिमा देवीक पति राजा शिवसिंह रूपनारायण (एहि रसक ज्ञाता छथि)।

[80]

डरे न हेरए इन्दु निन्दए चान्दन बिन्दु मलयानिल बोल आगी।
तुअ गुन कहि कहि मुरुछि पड़ए महि रअनि गमाबए जागी।।1।।
सुन्दरि कि कहब अधिक सिनेहा।

तुअ दरसन बिनु अनुखने खिन तनु अबे तसु जिबन सन्देहा।।2।।
नोरे नअन भरि तुअ पथ हेरि हेरि अनुखन रोअए कन्हाई।
तोहरे बचन लए रहल आस धए[1] अबे न बचन पतिआई।।3।।
भनइ विद्यापति अरेरे कलामति न कर मनोरथ बाधे।
अधरसुधा दए ताहि बचाबहि[2] पूरओ मनमथ साधे।।4।।

1. धएल आस दए। 2. पीपि बढ़ाबहि।

दूती राधाकें कृष्णक विरहदशा सुनबैत छथि — (1) कान्ह डरसँ चान दिस नहि तकैत अछि। चाननक ठोपक निन्दा करैत अछि। मलयपवनकें आगि कहैत अछि। (2) तोहर गुणक चर्चा कए-कए मुरुछिकें माटिमे खसि पड़ैत अछि। सगर राति जागिकें बितबैत अछि। (2) हे राधा, कान्हकें कतेक प्रेम छैक से बेसी की कहिअहु। तोहर दर्शनक बिना ओकर देह निरन्तर क्षीण भए रहल छैक। आब तँ ओकर प्राणो बाचब कठिन। (3) आँखिमे नोर भरि-भरि तोहर बाट देखि-देखि ओ निरन्तर कनैत रहैत अछि। तोहर वचन पाबिकें एतेक दिन आस लगओने रहल, मुदा आब तोहर बात ओ नहि पतिआएत। (4) विद्यापति कहैत छथि, हे कलामती, ओकर मनोरथकें एना उपेखह नहि। अधरामृत दए ओकरा बचाबह। मदनक कामना पूर होअओ।

[81]

जामिनि दुर गेलि नुकि गेल चन्द। भेलिहु सिधि न बढ़ाबिअ दन्द।।1।।
तम्बचुल धुनि सुनि जिब मोर काम्प। मञे जाएब जमुना जल[1] झाम्प।।2।।
हठ तेज माधव जएवों देह। राखल चाहिअ गुपुत सिनेह।।3।।
जागि जाएत पुर परिजन मोर। फाब चोरि जञो चेतन चोर।।4।।
मञे जानल पिअहिअ जनि हेम। उसठ न कर हठे[2] बढ़ाओल पेम।।5।।
धनि परबोधलि हरि रस राखि। बोलिए[3] बचन सुधा मधु भाखि।।6।।
भनइ विद्यापति एहु रस जान। सिवसिंह लखिमा देवि रमान।।7।।

1. जोरि झाप। 2. सठ। 3. बोललिए।

राति कृष्णक संग बिताए राधा भोरमे छुट्टी मड़ैत छथि — (1) राति बीति गेल। चान डूबल। सिद्धि (संगम-सुखक पूर्ति) भेलाक बादो झंझट नहि करह। (2) मुरगाक ध्वनि सुनिकें हमर कलेजा कपैत अछि। आब हम यमुना-स्नान करए जाएब। (3) हे माधव, हठ छोड़ह। आब हमरा जाए देह। गुप्त प्रेम छिपएबाक चाही। (4) हमर गामघरक लोक जागि जाएत। चोर जँ चलाक हो तखनहि चोरि फबैत अछि। (5) हम एखन धरि इएह बुझैत रहलहुँ जे हमर पिआक हृदय सोन-सन अछि। हमरा दुनूक बढाओल प्रेमकें हठ कए उसठ (नीरस) नहि बनाबह। (6) एहि तरहें राधा रस राखि (सद्भावपूर्वक) मधुमिश्रित बचनामृत बाजि-बाजि कृष्णकें मनाओल। (7) विद्या... ।

[82]

सुरभि निकुञ्ज बेदि भलि भेलि। जनमगेँठि दुहु मानस मेलि।।1।।
कामदेव करु कनेआदान। विधि मधुपरक अधर मधु पान।।2।।
भल भेल राधे भल[1] निरबाह। पानिगहन विधि भेल बिबाह।।3।।
ऊजर एपन मुकुताहार। नयने निबेदल बन्दनेवार ।।4।।
पीन पयोधर पुरहर भेल। करस झाँपन कर[2] पल्लव देल।।5।।
भनइ विद्यापति रसमय रीति। राधा माधव उचित पिरीति।।6।।

1. भेल। 2. नव।

कवि राधाकें सम्बोधन कए राधा-माधवक रमणक वर्णन विवाहक रूपक बान्हि कौत छथि -- (1) हे राधा, सौरभसँ भरल लताकुंज सुन्दर वेदी बनल। दूनूक मन मिलब भेल जन्मग्रन्थिक बन्धन। (2) कन्यादाता भेलाह कामदेव। अधर मधुपान भेल मधुपर्क विधि। (3) हे राधा, काज नीक जकाँ सम्पन्न भेलहु। पाणिग्रह विधिसँ विवाह भेलहु (4) मोतिक हार उज्ज्वल ऐपन भेल। नयनक मिलन बन्दबबार भेल। (5) पुष्ट स्तन

पुरहर (मङ्गल-कलश) भेल। ताहि स्तन पर कृष्णक करपल्लव ओहि मङ्गल-कलशक झाँपन भेल। (6) विद्यापति कहैत छथि, राधा ओ माधवक प्रीतिक रीति रसमय अछि।

[83]

सहज सितल छल चन्द। सबतह से भेल मन्द।।1।।
बिरह सन्तावह[1] नारि। जिब कके न हलह[2] मारि।।2।।
सखि हे, पिआके कहब हम लागि। अबहु निझाइअ[3] आगि।।3।।
पर सञो पेम बढाए। धनि कुल धरम[4] छड़ाए।।4।।
जे[5] सभ कएल हमे मोहें[6]। इथि सब कारण तोहें[7]।।5।।
अनुसर मलय समीर। मनमथ छोभ[8] सरीरं।।6।।
भल जन मन्द बिचार। तथि न कओनो परकार।।7।।
सुकवि भनथि कण्ठहार। होएब बिरह नरि पार।।8।।
राए अरजुन रस जान। गूना देवि रमान।।9।।

1. सहाइअ। 2. हलिअ। 3. मिझाइअ। 4. कुलधम्म। 5. जे। 6. मोहि। 7. तोहि। 8. सोभ।

विरहिणी सखी द्वारा प्रेमीकें संवाद पठबैत छथि — (1) 'जे चान सहज शीतल छल से विरहावस्थामे मन्द (दुखदायी) भए गेल। (2) तों विरहसँ ओहि नारीकें सतबैत छह, जानि नहि किएक जान नहि मारैत छह।' (3) हे सखी, हमरा दिससँ पिआकें ई समाद कहिहह, आबहु आबिकें हमर विरहाग्नि मिझाबथु। (4) पर-पुरुषसँ नेह लगाए, नारीक कुलधर्मकें त्यागि (5) हम जे-जे काज अज्ञानवश कएल से सभ तोरहि कारणें कएल। (6) मलयपवन सन्ताप दैत अछि। कामदेव देहकें झकझोरैत अछि (?)। (7) जँ भद्रपुरुष कुविचारी भए जाए तँ तकर कोनो प्रतिकार नहि छैक। (8) कवि कण्ठहार कहैत छथि, हे धनि, तों शीघ्रे विरह-नदी पार कए जएबह। (9) एकर रस गुनादेवीक पति अर्जुन राए जनैत छथि।

[84]

कुसुम बोलि केस परिहल हार। काजरें रञ्जु पयोधर भार।।1।।
ऐसने भूखन परिहन लाग। आरति जानल अधिक अनुराग।।2।।
कान्ह हे आजु सकल सुखसार। आइलि राहि फलल अभिसार।।3।।
कुसुमसरासने साजलि केलि। दूलभ अछलि सुलभ भए गेलि।।4।।
पुनु पुनु कन्त कहओ कर जोलि। तत राखब जत आनिअ बोलि।।5।।
एक दिस जिबन अओका दिस पेम। गुञ्जाजे तोलि चढ़ाओल हेम।।6।।
हठे न धरब कर वचन हमार। धस दए के कर जउनि नरि पार[2]।।7।।
रस अनुराग बूझ केओ केव। अभिमत भन अभिनव जय देव।।8।।
रसमय रूपनएन जान। सिबसिंह लखिमा देवि रमान।।9।।

1. राधा। 2. आरति धस दए भेलिजौन पाए ।

राधा कृष्णकें सोंपैत दूती कहैत छनि — (1) राधा हारकें फूल बूझि केसमे खोंसि लेल। काजर (आँखिक बदला) स्तनमे लेपि लेल। (2) ओ जे एहि प्रकारें उनटा-पुनटा आभूषण (प्रसाधन) करए लागलि, ओकर एहि चेष्टासँ लक्षित होएतहु जे ओ कतेक प्रेमातुर (मिलन हेतु उत्कंठित) अछि। (3) हे कान्ह, आइ तोरा सभ सुख भेटि जएतहु। अभिसार सफल भेल। राधा आबि गेलथुन। (4) कामदेव कामकेलिक अवसर देलनि। जे दुर्लभ छल से सुलभ भए गेल। (5) हे कान्ह, तोरासँ बेरि-बेरि हाथ जोड़िकें कहैत छिअहु, राधाकें तेना कए रखिहह जाहिसँ ओ फेरि बजाए आनलि जाए। (6) ओकरी एक दिस (एक पल्लापर) जीवन छैक तँ दोसर दिस प्रेम। एक दिस गुंजा (तुच्छ जीवन) छैक तँ दोसर दिस सोन (ओ प्राणकें गुञ्जा-सन लुच्छ बुझैत अछि तँ प्रेमके सोन सन मूल्यवान्)। धसिकें यमुना पार नहि करह। (7) बलचोरी हाथ नहि धरबह। हमर बात मानह। प्रेम रस की थिक से केओ-केओ जनैत अछि। (8) अभिनव जयदेव अपन सरस विचार कहैत छथि। लखिमा देवीक पति रसज्ञ शिवसिंह ... ।

[85]

जाड़ल बाम्भन तेज सनान। जाड़लि मानिनि तेजए मान।।1।।
जाड़ल राड घौंकरी लाब। जाड़ल रसिक मलार[1] गाब।।2।।
जाड़ आएल कहब काही। बड़ पराभव पवन थाही।।3।।
[जाड़ल आगिक, सेवा][2] करथि। पिठिक जाड सेहओ न[3] हरथि।।4।।
अनल फुकिअ हेरिअ सूर। सिसिर पाबि सेहओ भेल दूर।।5।।
जूझि का X X X हर। जाड़ल बीर कैसे हो बहार[4] ए।।6।।
मनहि मन करिअ नेआर। जैसन[5] सिंह तहसन सिआर।।7।।
सरस कवि विद्यापति गाब। केओ नहि ऐसन जाड छड़ाब।।8।।
सकल जगत जाड़ हरण। कुमर अमर सिंह सरन।।9।।

1. .....ते ना। 2. अनुमित पाठ। 3. नहि। 4. होएत बाहर। 5. तैसन।

कवि जाड़क वर्णन करैत छथि — (1) जड़ाएल ब्राह्मण नहाएब छाड़ि दैत अछि। जड़ाइलि मानिनी मान छाड़ि दैत अछि। (2) जड़ाएल राड़ घौंकरी लगबैत अछि। जड़ाएल रसिक मलार गबैत अछि। (3) जाड़ आएल, तकर कष्ट ककरा सुनाएब। बसात बड़ पराभव दैत अछि। (4) जड़ाएल लोक आगिक सेवन करैत अछि। परन्तु पीठक जाड़ अग्निओ नहि हरैत छथि। (5) आगि फुकैत छी। सूर्यकें तकैत छी, मुदा शिशिर ऋतु अएलापर ओहो (पृथ्वीसँ) दूर भए जाइत छथि। (6).......... (?)। जड़ाएल वीर लड़बा लेल कोना बहरएताह। (7) मनहि मन नेआर करैत छी (जे ई करब तँ ओ करब, परन्तु जाड़ें रुकि जाइत छी)। जाड़क आगाँ जेहने सिंह, तेहने सिआर (सभ बएबरि) । (8) सरस कवि विद्यापति कहैत छथि, केओ एहन नहि अछि जे जाड़ छोड़ाए देअए। (9) सगर संसारक लोकक जाड़ (जड़ता) दूर कएनिहार कुमर अमर सिंह टा अवलम्ब छथि।

[86]

जखने संकेत चललिहुँ सखि[1] तखने छल अन्धार।
आन्तर पान्तर बाट उगि गेल चन्दा करम चण्डार।।1।।
परम पेम पराभव पाओल देखि गमनेरि बाध।
उतिम बचन जदि बिहुचर आओरकि अपराध।।2।।
साजनि मन्दिर भेल असार।
अपनि आरति आगु न गुनलि साजि लेल[2] अभिसार।।3।।
सुखम हेतु कओने बिचारब सबहु चिन्हब चोर।
आसा दइए सुपुरुष बञ्चल दूखन लागत मोर।।4।।
न पर पओलिहुँ न घर गेलिहुँ दुहु कुल भेलि हानि।
बिहि निकारुन परक दारुन अबे कि करब जानि।।5।।

1. चलु ससिमुखि। 2. हल। 3. कि।

राधा अपन अभिसारक विकलता सखीकेँ सुनबैत छथि — (1) हे सखी, जखन हम धरसँ संकेत स्थल, चललहु तखन अन्धकार रहए। बीचहि बाटमे कर्मचाण्डाल चान उगि गेल। (2) गमनमे बाधा देखि हम भारी प्रेम-पराभव (संकट) मे पड़ि गेलहुँ जाएब तँ चोरि प्रकट होएत, नहि जाएब तँ प्रेममे हानि। भल भानुस जँ अपन बचनमे चूकए तँ एहिसँ पैघ अपराध की ? (3) हे सखी, मन्दिर असार भए गेल (घरमे रहब नीक नहि लगैत अछि)। अपन आतुरतावश आगाँ की होएत से बिनु सोचनहि अभिसारमे चलि पड़लहुँ। (4) सूक्ष्म हेतु के बिचारत ? सभ केओ चोर बूझि लेत। आस दए पर-पुरुष कृष्णकेँ धोखा देल, तकर दोष, हमरहि लागत। (5) ने बहार जाए पओलहुँ, ने घरहि रहि सकलहुँ। दूनू कुलमे कलंक लागल। विधाता परम दारुण आ' निर्दय (निष्करुण) भेलाह। से सोचि आब की होएत ? (6) ने संकेतस्थल जाए सकैत छी, ने घर घुरि सकैत छी। कामदेव युवती सभक शिकारी भए गेलाह। ककरा की कहबैक।

(7) विद्यापति कहैत छथि, हे युवती, सुनह, लखिमा देवीक रमण राजा शिवसिंह रूपनारायण गुणक खजाना छथि।

[87]

जत जत तोहेँ कहलह मोहि[1] से सबे भेल सरूप।
माथुर जाइते आजे मञे देखल सुन्दरि[2] कान्हक रूप।।1।।
तखनहि सञो चित[3] बेआकुल मन थिर नहि मोर।
भल कए हरि हेरि न भेले ई बड़ लागल भोर।।2।।
साजनि नहि मनोरथ ओर।
अपन बेदन जाहि निबेदओ तैसन मेदिनि थोर।।3।.
हम नब बहु[4] से चेतन पहु राखए चाहिअ लाज।
कुलक धरम गोपए[5] चाहिअ भेल चाहिअ समाज।।4।.
से सबे कामिनि तोहतह सम्भय हैन मोर अनुमान।
की तञे मोहि झाटैं[6] मेराबह की मोर लेहे परान।।5।।
भन विद्यापति सुन तञे जुबति निअ मने अनुमान।
रतन जदि जतने गोपिअ तैअओ जानत[7] आन।।6।।

1. कहल सुन्दरि। 2. कते ओ। 3. रूपहि सञो मनसिज। 4. हमहु नव कुरबहु। 5. अपन। 6. छाटें। 7. न जानए।

राधा कृष्णक प्रथम दर्शनक अनुभव सखीकेँ सुनबैत छथि — (1) हे सुन्दरि, तोँ जतेक जे हमरा (कृष्णक रूपक विषय मे) कहलह से सभ टा सत्य भेल। आइ हम मथुरा जाइत काल कृष्णक रूप देखल। (2) से रूप जखन सँ देखल तखनहि सँ चित्त व्याकुल अछि। मन थिर नहि होइत अछि। व्यग्रता लगले रहल जे कृष्णकेँ भल कए देखि नहि सकलहुँ। (3) हे सखी, हमर एहि लालसा क अन्त नहि भए रहल अछि। अपन ई आतुरता जकरा कहब तेहन लोक धरती पर कमे अछि। (4) हम नववधू छी; हमर ओ अपन पति सचेत (चौकन्ना) रहैत छथि। कोनहुना लाज बचएबाक चाही। (5) कुल-मर्यादाक रक्षा करक चाही आ' संगहि मिलन

सेहो होएबाक चाही। ई सभ हे कामिनी, तोरे सहायतासँ भए सकैत अछि एहने हमर अनुमान अछि। की तों हमरा हुनकासँ मिलाबह, आकि हमर प्राण हरि लेह। (6) विद्यापति कहैत छथि, हे तरुणी, सुनह । अपना मनमे अनुमान करह, (प्रेमरूपी) रत्नकेँ कतबो लाथ कए छिपएबह तैओ आन जानिए जएतहु।

[88]

नगरक बानिनि ओ रे हरि पुछ हरि पुछा किए किए हाट बिकाए ?
X X X X X X ||1||
हीरा मनि मानिक ओ रे अनुपम अनुपमा नाना रतन पसार।
X X X X X X ||2||
एक नाल दुइ ओ रे सिरिफल सिरिफला सोनाक कलस समान[1]||3||
अधरा सिरिफल ओरे आञ्चर आञ्चरा अधरा अधिक बिकाए।
XX X X X X X ||4||
विद्यापति कवि ओ रे गाबिह गाबिहा झूमरि बुझ रसमन्त।
सिरि महेसरसुत ओ रे गुनीसर गुनीसरा[2] जूड़म देबि सुकन्त||5||

1. सोना के (रस) मान। 2. गुनीसर हे।

कृष्ण आ' राधा प्रेमालाप करैत छथि — कृष्ण पुछैत छथिन, (1) हे एहि नगरक बनिआइनि, एहि हाटपर की-की बिकाइत अछि ? राधा उत्तर दैत छथिन, (2) हीरा, मणि-माणिक्य इत्यादि नाना प्रकारक अनुपम रत्न सभक एतए दोकान सभ अछि। (3) सोनाक कलस-सन एक डंटीमे लागल दू गोट बेल (स्तन) सेहो बिकाइत अछि। (4) अद्भुत अछि ई बेल जे आधा मात्र अछि आ' आँचरमे राखल रहैत अछि। इएह आधा बेल अधिक बिकाइत अछि (सम्पूर्ण यथार्थ बेल एतए नहि भेटत)। (5) विद्यापति कवि ई झूमरि गीत गाओल। ई झूमरि बुझनिहार थिकार श्री महेश्वरक पुत्र जूड़म देवीक पति रसज्ञ गुणीश्वर।

[89]

अलक तिलक न कर राधे[1]। अङ्ग विलेपन करत[2] बाधे||1||
तञे अनुरागिनि से अनुरागी। भूखन होएत दूखन लागि||2||
चल चल तञे चेतन साई। आसे पिआसल अछ[3] कन्हाई||3||
समुद कुमुद रभस[4] रसी। अबहि उगत कुगत[5] ससी||4||
आएल चाहिअ तरुनि तोरा। पिसुन नयन भमए चोरा[6]||5||
चरन नूपुर उपर सारी। मुखर मेखल करे निबारी||6||
सामर अम्बर देह लुकाई। चलहि तिमिर पथ समाई||7||
भन विद्यापति सरस कवि। नृपति कुल सरोरुह रवि[7]||8||
राजा रूपनराएन जान। सुखे सुखमा देबि रमान||9||

1. करहि अलकतिलक राधे। 2. न कर। 3. जाबे। 4. लुबुध। 5. लुबुध। 6. भम चकोरा। 7. जुबति रीती, मधुर जानिए कर पिरीति।

अभिसारिका राधाकेँ सखी उपदेश दैत छथि — (1) हे सखी, तों अलकतिलक (पसाहिन) नहि करह। देहमे अङ्गरा नहि लगाबह। ई अभिसारमे बाधा करतहु। (2) तों अनुरागवती छह, ओहो अनुरागी अछि। तखन गहना तं केवल बलाए होएतहु। (3) हे सखी, चलह चलह,... कान्ह तोहर आशासँ पिआसल अछि। (4) विकसित कुमुद (भेंट) सँ रंग-रभस करबामे रसिक दुष्ट चान एखनहि उगबापर अछि। *पिशुनक* आँखि चोर जकाँ घूमि रहल अछि। (6) पाएरक नूपुरकेँ पकड़ि लेह जे अबाज नहि करए। (7) श्यामवर्ण वस्त्र सँ देह झाँपि लेह आ ' अन्धकारावृत बाट धए चलह। (1-7) सरस कवि विद्यापति कहैत छथि। सुखमादेवीक पति राजकुलकमलदिवाकर राजा रूपनारायण एकर रसज्ञ छथि।

[90]

बाङ्क कमान भौंह जुग चङ्गिम लोल विलोकन[1] बान।
मार चण्डार गमार न मारए छोपए छैल परान||1||
साजनि[2]

सेना आजे मनोभवे साजलि कामिनि तुअ अभिसार।

X X X X X X ।।2।।

कङ्कन किङ्किनि रिमिझिमि बाजए चरनहिं[1] रनए नुपुर।

ते नव रङ्ग X X X बए कत दूर।।3।।

कुच कुम्भ स्थरे गयथन साजल विद्यापति कवि गाब।

राजा सिबसिंह रुपनराएन लखिमादेवि परयाब।।

1.बङ्किम। लोला लोचन। 2. साई है। 3. चरन तञो।

कवि अभिसारक वर्णन करैत छथि — (1) हे सुन्दरि तोहर दुनू चंगिम बाँक भऊँह धनुष थिक आ ' चंचल दृष्टि बाण। कामदेव चण्डाल थिक जे गमारकें नहि मारैत अछि, केवल रसिकक शिकार करैत अछि। (2) हे सुन्दरी, तोहर अभिसारक रुपमे कामदेव सेना सजाओल। ....।। (3) कगना, घुघुरू आ' चरणमे नूपुर सँ रणवाय बजैछ।... ......(?)। (4) स्तनसँ हाथीक मस्तक साजल गेल। विद्यापति कवि ई गीत राजा शिवसिंह आ' लखिमा देवीक अनुरोध सँ गाओल।

[91]

प्रथमहि हाथ पयोधर लागु। पुलक प्रमोदे मनोभव जागु।।1।।

नीवीबन्ध के जान कि भेला। चेत न तन X X X ।।2।।

कि सखि कहब मञे कहल न जाई। हरिक चरित मञे रहञो[1] लजाई।।3।।

धम्मिल धरिए अधर मधु पीबे। र X X X जीबे।।4।।

दइन न मान रोष[2] नहि जाने। गह बड़[3] गाढ़ आलिङ्गन दाने।।5।।

अइसनि कहिनी न कहिअ आने। X X कह दोसर पराने।।6।।

भनइ विद्यापति एहु रस जाने। सिवसिंह लाखिमादेवि रमाने।।7।।

1.चरित कहइते रहञो। 2.दोष। 3. गहबर।

नायिका अपन संगमक कथा सखीकें सुनबैत छथि -- (1) पहिने स्तन पर हाथ देलनि। आनन्दसँ देह पुलकित भए गेल आ' कामदेव जागि उठलाह। (2) जानि नहि नीवी (कसनी) क बन्धन की भए गेल। चेतना................ । (3) सखी, की कहिअहु, कहि नहि होइत अछि। हरि जे-जे कएलनि से तोरहु कहबामे लाज होइत अछि। (4) खोपा पकड़ि बलपूर्वक अधरपान कएलनि।... ......(धन्यजे प्राण) बाँचि गेल। (5) दीनता देखाओल, तकरो कोनो प्रभाव नहि। रोष कएल तकरो परबाहि नहि। आलिंगन कएलनि तें बहुत जोर सँ दबाए देलनि। (6) एहन बात अनका कोना कहल जाए। तों हमर दोसर प्राण थिकह (तें तोरा कहालिअहु) । (7) विद्यापति कहैत........।

[92]

निसि निसिचर भम भीम भुअङ्कम जलधर बीजु उजोर।

तरुन तिमिर निसि तइअओ चललिजासि बड़ सखि साहस तोर।।1।।

सुन्दरि, ...।

कञोन पुरुख धन जे दोर हरल मन जाहेरि[1] उदेसे अभिसार।।2।।

आगे तञो जत्रनि नरि से कैसे जएबह तरि आरति देबह[2] झाम्प।

तोरा अछ पञ्चसर तें तोहि नहि हर मोर हृदअ बड़ काम्प।।3।।

भनइ विद्यापति ओ बर जउबति साहस कहहि न जाए।

अछए जुवतिगति कमलादेवि पति मन बस अरजुन राए।।4।।

1. ताहेरि। 2. न करिअ।

सखी राधाक साहसिक अभिसारक प्रशंसा करैत छथि — (1) रातुक समय, निशाचर जन्तु सभ घुमैत, भयानक साप, मेघमे बिजली चमकैत, घोर अन्हरिआ राति। तैओ तों चललि जाए रहलि छह। हे सखी, तों बड़ साहसी छह। (2) हे सुन्दरी..., तोहर मन हरनिहार ओ धन्य पुरुष

के थिक जकर उदेसमे तों अभिसार कएलह अछि ? (3) आगाँ बाटमे यमुना नदी पड़ैत अछि। से कोना पार होएबह ? लगैत अछि आर्तिवश तों ओहिमे कूदि पड़बह। तोरा संग कामदेव छथुन, तें तोरा डर नहि होइत छहु। हमरा तँ छाती धुकधुक करैत अछि। (4) विद्यापति कहैत छथि, हे श्रेष्ठ युवती, तोहर साहसक वर्णन नहि हो। कमलादेवीक पति अर्जुनराए जे युवती सभक मनमे बसैत छथि, युवती लोकनिक अवलम्ब थिकाह।

[93]

प्रथमहि हाथ पयोधर लागु। पुलक प्रमोदे मनोभव जागु।।1।।
नीबीबन्ध के जान कि भेला। चेत न तन X X X ।।2।।
कि सखि कहब मञे कहल न जाई। हरिक चरित मञे रहञो[1] लजाई।।3।।
धम्मिल धरिए अधर मधु पीबे। र X X X जीबे।।4।।
दइन न मान रोष[2] नहि जाने। गह बड़[3] गाढ़ आलिङ्गन दाने।।5।।
अइसनि कहिनी न कहिअ आने। X X कह दोसर पराने।।6।।
भनइ विद्यापति एहु रस जाने। सिवसिंह लाखिमादेवि रमाने।।7।।

1. चरित कहइते रहञो। 2. दोष। 3. गहबर।

नायिका अपन संगमक कथा सखीकें सुनबैत छथि -- (1) पहिने स्तन पर हाथ देलनि। आनन्दसँ देह पुलकित भए गेल आ' कामदेव जागि उठलाह। (2) जानि नहि नीवी (कसनी) क बन्धन की भए गेल। चेतना............... । (3) सखी, की कहिअहु, कहि नहि होइत अछि। हरि जे-जे कएलनि से तोरहु कहबामे लाज होइत अछि। (4) खोपा पकडि बलपूर्वक अधरपान कएलनि।... ...... (धन्यजे प्राण) बाँचि गेल। (5) दीनता देखाओल, तकरो कोनो प्रभाव नहि। रोष कएल तकरो परबाहि नहि। आलिंगन कएलनि तँ बहुत जोर सँ दबाए देलनि। (6) एहन बात अनका कोना कहल जाए। तों हमर दोसर प्राण थिकह (तें तोरा कहालिअहु) । (7) विद्यापति कहैत........।

[94]

निसि निसिचर भम भीम भुअङ्कम जलधर बीजु उजोर।
तरुन तिमिर निसि तइअओ चललिजासि बड़ सखि साहस तोर।।1।।
सुन्दरि, ...।
कओन पुरुख धन जे दोर हरल मन जाहेरि। उदेसे अभिसार।।2।।
आगे तञो जञनि नरि से कैसे जएबह तरि आरति देबह2 झाम्प।
तोरा अछ पञ्चसर तें तोहि नहि हर मोर हृदअ बड़ काम्प।।3।।
भनइ विद्यापति ओ बर जउबति साहस कहहि न जाए।
अछए जुवतिगति कमलादेवि पति मन बस अरजुन राए।।4।।

1. ताहेरि। 2. न करिअ।

सखी राधाक साहसिक अभिसारक प्रशंसा करैत छथि — (1) रातुक समय, निशाचर जन्तु सभ घुमैत, भयानक साप, मेघमे बिजली चमकैत, घोर अन्हरिआ राति। तैओ तों चललि जाए रहलि छह। हे सखी, तों बड़ साहसी छह। (2) हे सुन्दरी..., तोहर मन हरनिहार ओ धन्य पुरुष के थिक जकर उदेसमे तों अभिसार कएलह अछि ? (3) आगाँ बाटमे यमुना नदी पड़ैत अछि। से कोना पार होएबह? लगैत अछि आर्तिवश तों ओहिमे कूदि पड़बह। तोरा संग कामदेव छथुन, तें तोरा डर नहि होइत छहु। हमरा तँ छाती धुकधुक करैत अछि। (4) विद्यापति कहैत छथि, हे श्रेष्ठ युवती, तोहर साहसक वर्णन नहि हो। कमलादेवीक पति अर्जुनराए जे युवती सभक मनमे बसैत छथि, युवती लोकनिक अवलम्ब थिकाह।

(2) नेपाल-तालपत्रक गीत

(95)

बारिस जामिनि कोमलि कामिनि दारुन अति अन्धार[1]।
पथैं निसाचर सहसे सञ्चर घन पळ जलधार।।1।।
माधव, प्रथम नेहे से भीति।
गए अपनहि से अबलोकिअ करिअ तैसनि रीति।।2।।
अति भयाउनि आन्तर जउनि कइसे[2] आउति पार।
सुरत रस सुचेतन बालँभु ता पति सबे असार ।।3।।
एत गुनि मने विमुखि सुमुखि तोहि मने नहि लाज।
कतए देखल मधु अपनेहि जाए मधुप समाज।।4।।

1.अन्धकार। 2. कैसे कए।

दूती राधाकें अनबामे विफल भए कृष्णकें विफलताक कारण सुनबैत अछि — (1) वर्षा ऋतुक राति, रमणी राधा कोमलाङ्गी, अति दारुण अन्धकार, जोरदार वृष्टि, बाटमे हजार-हजार निशाचर जन्तु सभ बुलैत। (2) हे माधव, ताहिपर ओकर प्रथम प्रेम, तें उचिते डराइलि। बेचारी राधा, केहन कष्टमे पड़लि अछि से अपनहि जाएकें देखह आ' एहना स्थितिमे जेहन उचित बूझह से करह। (3) बाटमे परम भयंकर यमुना नदी पड़ैत छैक, से पार कए कोना आबि सकत? रसिक अपन पति उपस्थित छैक, परन्तु ओकरा लेल (तोहर प्रेमक आगाँ) ओहो असार (तुच्छ)। सुन्दरी राधा एही गुनधुनमे अएबासँ विमुख भए गेलि। तैओ तों जे ओकरा अनबा लेल आतुर छह तकर तोरा मनमे लाज नहि छहु? कतए देखलह मधुकें अपनहि मधुपक लग अबैत!'

[96]

कतहु साहर पसर सौरभ[1] कतहु नबि मञ्जरी।
कतहु कोकिल पञ्चम गाबए समय गुने सञ्चरि[2]।।1।।

कतहु भमर भमि भमि कर मधु मकरन्द पान।
कतहु सर सरासन[3] जोळए कुपित[4] कुसुमबान।।2।।
सुन्दरि, नहि मनोरथ ओर।
अपन बेदन जाहि निबेदओ तइसन मेदिनि थोर।।3।।
पिआ देसाँतर हृदअ आतुर[5] पर दुआरे समाद।
काज बिपरीत बुझए के पार अपद हो अपवाद।।4।।
पथिक दए समन्दए चाहिअ बाटे घाटे नहि पाब[6]।
खने बिसरिअ खने सुमरिअ थिर न थाकए भाव।।5।।

1. कतहु सुरभि। 2. गुजरी। 3. सारस बासर। 4. गुपुत। 5. आतर। 6. आब।

विरहिणी सखीकें अपन वेदना सुनबैत छथि – (1) कतहु सहकार अपन सौरभ पसारि रहल अछि। कतहु नब मञ्जर आबि रहल अछि। कतहु समयक अनुसार आबि-आबि कोकिल पञ्चम स्वरमे गबैछ। (2) कतहु भ्रमर घूमि-घूमि मधुर पुष्परसक पान करैत अछि। कतहु कुपित कामदेव धनुष पर बाण चढ़बैछ। (3) हे सुन्दरी, हमर मनोरथ ओर नहि लागि रहल अछि। अपन वेदना जकरा सुनाबी तेहन लोक संसारमे दुर्लभ अछि। (4) प्रियतम दूर छथि। हुनक विरहसँ हृदय व्याकुल अछि। समादो आने लोकक द्वारा पठाओल जाए सकैत अछि। (5) परन्तु काज भिन्न प्रकारक (परपुरुष विषयक) अछि। समदिआ से कोना बूझत। अनेर अपवाद लगाए देत। (6) बटोही द्वारा समाद पठबए चाहैत छी, परन्तु ओहो तँ बाट-घाटमे नहि भेटैत अछि। खन बिसरैत अछि, खन मन पड़ैत अछि; चित थीर नहि रहैत अछि।

[97]

जेहे अबयब पुरुब समए बिचर[1] बिनु बिकार।
से आबे जाहु ताहु देखि झाप भिन भेल[2] बेबहार।।1।।

कान्हा, तुरित सुनसि आए।
रूप देखइते नयन भुलल सरूप तोरि दोहाए।।2।।
सैसब बापुर हारि[3] फेदाएल जौबने गहल पास।
जेओ किछु धनि बिरुह बोलए सेओ सुधासम भास।।3।।
जौबन सैसब खेदए लागल छाड़ि देह मोर ठाम।
एत दिन रस तोहें बिरसल आबहु नहि विराम।।4।।

1. निचर। 2. चिन्हिमि न। 3. बापु बहीरि।

सखी कृष्णकें राधाक वयःसन्धिक वर्णन सुनबैत छनि – (1) पूर्व समयमे (शैशव-कालमे) जाहि अंगकें लए राधा निर्विकार घुमैत-फिरैत छलि, ताहि अंगकें जकरा-तकरा देखितहि झाँपि लैत अछि। ओकर चालि (व्यवहार, हाव-भाव) आब बदलि गेलैक अछि। (2) हे कान्ह, तों झट दए आबह आ' सुनह ओकर वर्णन। ओकर रूप देखितहि हमर आँखि मोहित भए गेल। तोहर सपत, सत्य कहैत छिअहु। (3) बेचारा शैशब हारिकें पड़ाएल। यौवन ओकर संग धएलक। आब ओ धनि जे किछु विरुद्धो (अप्रियो) बजैत अछि से सभ अमृत-सन मधुर लगैत अछि। (4) यौवन शैशवकें बैलाबए लागल अछि, हमर जगह (राधाक देह) छाड़ि देह; एतेक दिन तों रस सोखलह; आबहु विराम नहि?

[98]

तोहर बचन अमिअ ऐसन तें मति भूललि मोरि।
कतए देखल भल मन्द होअ साधु न फाबए चोरि।।1।।
साजनि, आबे कि बोलब आओ।
आगु गुनि जे काज न करए पाछे होअ पचताओ ।।2।।
अपनि हानि, कुलक[1] लाघब किछु न गुनल तबे।
मन मनोरथ बानी लागलि आओ[2] गमाओल सबे[3] ।।3।।
जतने रतन[4] के न बेसाहए गुन्जा केदहु कीन।
परक बचने कुअ धस देअ तैसन के मतिहीन।।4।।

नागर[5] भमर सब केओ बोल मजे धनि जानल मोर।
पढ़ि-गुनि हमे सबे बिसरल दोस नहि किछु तोर।।5।।

1. जे कुल के। 2. आओर। 3. हमे। 4. कतन। 5. भमर।

प्रेम कए पछतबैत राधा सखीसँ कहैत छथि – (1) हे सखी, तोहर बोल (कृष्णसँ प्रेम करबाक उपदेश) हमरा अमृत-सन लागल, तें हमर मति भुलि गेल। कतहु नहि देखने रही जे हितकर उपदेश अहितकर भए जाए। साधुकें कतहु चोरि कएल होइक (हम कृष्णसँ गुप्त प्रेम नहि निमाहि सकलहुँ)। (2) हे सखी, आब आओर की कहिअहु। आगाँ की परिणाम होएत से बिनु सोचनहि जे कोनो काज करए तकरा पाछाँ पश्चाताप होइतहिँ छैक। (3) तहिआ ने अपन हानि (उपेक्षा) सोचल, ने कुलक लाघव। मनक मनोरथमे आगि लागि गेल, आ' सभ किछु गमाए चुकलहुँ। (4) रत्न के नहि यत्नपूर्वक बेसाहैत अछि। गुंजा (करजनी) कहाँ केओ किनैत अछि (हम कृष्णकें रत्न बूझल, ठहरल गुंजा)। आनक कहने जे कूपमे कूदए तकरा सन अज्ञानी के? (5) सभ कहैत अछि जे नागर (पुरुष प्रेमी) भ्रमर थिक (ओ कोनो एक फूलसँ तृप्त भेनिहार नहि)। परन्तु हम भ्रममे रहलहुँ जे कृष्ण हमर थिक। हाए, हम पढ़ि-गुनिकें सभ किछु बिसरि गेलहुँ। हे सखी, तोहर कोनो दोख नहि।

[99]

अविरल नयन गलए जलधार। नव जल बिन्दु सहए के पार।।1।।
कि कहब माधव[1] ताहेरि कहिनी। कहहि न पारिअ देखलि जहिनी।।2।।
कुचजुग[2] ऊपर आनन हेरु। चान्द राहुडरे चढ़ल सुमेरु।।3।।
अनिल अनल बम मलयज बीख। जे छल सीतल से भेल तीख।।4।।
चान्द सन्तावए सविताहु जीनि। नहि जीवन एकमत भेल तीनि।।5।।
किछु उपचार न मानए आन। एहि बेआधि अधिक[3] पञ्चबान।।6।।

1. सुन्दरि। 2. दुहु। 3. अथिक।

सखी कृष्णकें राधाक विरहदशा सुनबैत अछि – (1) विरहिणी राधाक नयनसँ निरन्तर नोर बहैत रहैत अछि। वर्षा ऋतुक नब असार के विरहिणी सहि सकत। (2) हे कान्ह, ओकर दशा की कहिअहु। जेहनि देखल तकर वर्णन नहि कए सकैत छी। (3) मूड़ी दूनू स्तन पर झुकओने (सन्तापसँ मूड़ी गोंतने) रहैत अछि, जेना चान राहुक डरें सुमेरु पर्वत पर चढ़ल हो। (4) पवन आगि उगिलैत छैक। चानन बिख बुझाइत छैक। जे सभ शीतल होइछ सेहो सभ ओकरा झरकबैत छैक। (5) चान सूर्यहुकें जीति ओकरा सन्ताप दैत अछि। पवन, चानन आ' चान तीनू जेना एकमत भए गेल अछि। एहना स्थितिमे प्राण बाँचब कठिन। (6) ओकर सन्तापकें दूर करबामे आन कोनो उपचार असमर्थ अछि। कामदेव ओहि व्याधिकें तेज करैत छथि। (7) ओ सुन्दरी जँ अमृत पीउत तैओ तोहर दर्शनक बिना छनो भरि जीबि नहि सकत।

[100]

कण्टक माझ कुसुम परगास। भमर बिकल नहि पाबए पास।।1।।
रसमति मालति पुनु पुनु देखि। पिबए चाह मधु जीब उपेखि।।2।।
भमरा बिकल भमए सब ठाम। तोह बिनु मालति नहि बिसराम।।3।।
ओ मधुजीबी तजे मधुरासि। साँचि धरसि मधु तजे न लजासि।।4।।
अपनेहु मने गुनि[1] बुझ अबगाहि। तसु बध दूखन[2] लागत काहि।।5।।
[भनइ विद्यापति तजो पए जीब। अधर सुधा रस जजो पए पीब]।।6।।

1. अपने मने धनि। 2. तोहर दुषन बध। [ ] नगु.सँ।

मानिनी राधाकें सखी मनबैत अछि — (1) हे सखी, देखह, काँटक बीच (पतिक कड़ा पहरामे) एकटा फूल (यौवन) फुलाएल। (2) रससँ भरल ओहि फूलकें बेरि-बेरि निहारैत भ्रमर ओकर मधु पीबाक हेतु विकल अछि, किन्तु लग नहि आबि पबैत अछि। (3) ओ भ्रमर विकल भेल यत्र-तत्र बौआएल फिरैत अछि। हे सखी, तोरा बिनु ओकरा कल नहि छैक। (4)

ओ भ्रमर मधुजीवी (पुष्परसहि पर जिनिहार) थिक आ' तों मधुक खजाना थिकह। तैओ तों मधुकें साँचि रखने छह, से लाज नहि होइत छह? (5) तों अपनहु मनमे सोचि-बिचारिकें देखह। ओ जँ मधु बिना मरि जाएत तँ ओकर वध तोरहि लगतहु। (6) विद्यापति कहैत छथि, ओ भ्रमर तखनहि जीबि सकैत अछि जखन तोहर अधरामृत पीअत।

[101]

मजे सुधि पुरुब पेम भरे भोरि। भान अछल पिआ आइति मोरि।।1।।
जाइते पुछलन्हि भलेओ न मन्दा। मन बसि मनहि बढ़ओलन्हि दन्दा।।2।।
ए सखि सामि अकामिक गेला। जिबहु अराधलें अपन न भेला।।3।।
सुपुरुख जानि कइलि तसु[1] सेरी। पाओल पराभव अनुभय बेरी।।4।।
तिला एक लागि रहल अछ जीबे। सेस सिनेह[2] बरए जनि दीबे।।5।।
चान्द बदनि धनि झाँखह जनू। तुअ गुन लुबुधि आओत पुनु कान्हू।।6।।
भनइ विद्यापति [एहु रस जाने। सिबसिंह लखिमा देवि रमाने]।।7।।

1. तुअ। 2. ...से नेह। [ ] नगु. सँ।

राधा कृष्णक उपेक्षाजन्य व्यथा सखीसँ कहैत छथि — (1) हे सखी, सरलहृदय हम पूर्वक प्रेमवश मुग्ध (भ्रान्तिमे) रही। लगैत छल जे प्रियतम हमरा वशमे छथि। (2) किन्तु जएबाक काल भल वा मन्द किछु नहि कहलनि। हमरे मनमे बसि ओही मनमे व्यथा बढ़ाए गेलाह। (3) हे सखी, हमर प्रियतम अचानक चलि देलनि। हम हुनका प्राणपणसँ आराधना करैत रहलहुँ, मुदा तैओ ओ हमर अपन नहि भेलाह। (4) सुपुरुष बूझि हम हुनक शरण धएल, किन्तु अवसर अएलापर पराभवे पाओल। (5) प्राण छन भरि बाँचल अछि, जेना तेल समाप्त भेला पर दीप (छने भरि) जरैत अछि। विद्यापति कहैत छथि, हे चन्द्रवदनी, चिन्ता नहि करह। तोहर गुण पर लोभाए ओ पुनः अओथुन। लखिमा...।

[102]

कत अछ जुबति कलामति आने। तोहि मानए जनि दोसरि पराने।।1।।
तुअ दरसन बिनु तिलाओ न रहई[1]। दारुन मदन बेदन कत सहई।।2।।
सुन सुन गुनमति पुनमति सजनी[2]। न कर बिलम्ब छोटि मधु रजनी।।3।।
सामर अम्बर तुअ तनु रङ्गा[3]। तिमिर मिलए जनि तळित[4] तरङ्गा।।4।।
सम्पुन सुधाकर आनन तोरा। चान्द अमिञ हँसि पिबओ चकोरा[5]।।5।।

1. जिबई। 2. रमनी। 3. तनुक रङ्गा। 4. मिलओ ससि तुलित। 5. पिउत अमिञ हसि चान्द चकोरा।

रूसलि राधाकेँ सखी बुझबैत छथि — (1) हे सखी, कतेक ने आन-आन कलावती युवती अछि, किन्तु कान्ह तकरा सभकेँ छाड़ि तोरहि अपन प्राण-समान मानैत छहु। (2) तोहर परोछमे ओकरा छनो भरि रहि नहि होइत छैक। छने भरिक वियोगमे ओ कामपीड़ा भोगए लगैत अछि। (3) हे गुणवती पुण्यवती सखी, हमर बात सुनह। अभिसारमे विलम्ब नहि करह, किएक तँ वसन्तक राति बड़ छोट होइत छैक। (4) तोहर देहक रंग (गोर वर्ण) श्याम वर्णक चीरमे लगैत छहु जेना बिजुलीक चमक अन्धकारसँ मिलैत हो। (5) तोहर मुह पूर्णचन्द्र थिकहु। चकोर (कृष्ण) ओहि चन्द्रमाक किरणामृत आनन्दपूर्वक पीबओ।

[103]

सरदक चान्द सरिस तोर मुख[1] रे। छाड़ल बिरह अन्धारक दुख रे।।1।।
अमिल मिलल अछ सुदिढ समाज रे। पुरुबक पुन परिनत भेल आज रे।।2।।
हेरि हल सुन्दरि सुनहि वचन रे। परिहरि लाज पुरहि मोर मन[2] रे ।।3।।
रसमति मालति भल अवसर रे। पिबओ मधुर मधु भूखल भमर रे।।4।।
उपगत पाहोन रितुपति साह रे। अपनुक अङ्गिरल कर निरबाह रे।।5।।
सुपुरुख पाओल सुमुखि सुनारि रे। दैबे मेराओल उचित बिचारि रे।।6।।

1. मुख तोर। 2. सुनहि मन मोर।

कृष्ण प्रवाससँ आबि राधाकेँ कहैत छथि — (1) हे सखी, तोहर मुह शरद-पूर्णिमा-सन उल्लसित भए गेलहु। बिरहरूपी अन्धकारक वेदनाकेँ ओ मुख आब त्यागि देलक। (2) दुर्लभ सुदृढ मिलनक अवसर भेलहु। आइ तोहर पूर्वक पुण्य फलित भेलहु। (3) हे सुन्दरी, हमरा दिस ताकह आ' हमर बात सुनह। लाज त्यागि हमर मनक मनोरथ पुराबह। (4) हे रसवती मालती, नीक अवसर भेटलहु अछि। भूखल मधुकरकेँ मधुर मधु पीबए देह। (5) राजा वसन्त पाहुन भए उपस्थित छथुन। जे गछने छहुन से आब हुनका दए दहुन। (6) सुन्दरी रसवती नारी सुन्दर रसिक पुरुषकेँ पओलक। विधाता उचित विचार कए दूनूकेँ मिलओलनि।

[104]

जेहिखने निअर गमन होअ मोर। तेहि खने कान्ह कुसल पुछ तोर।।1।।
मन दए बुझल तोहर अनुराग। पुनफले गुनमति पिआ मन जाग।।2।।
पुनु पुछ पुनु पुछ मोर मुख हेरि। कहलिओ कहिनि कहब कत बेरि।।3।।
आन बेरि अवसर बोल[1] आन। अपने रभसे कर कहिनी कान।।4।।
लुबुधल भमरा कि देब उपाम। बाँधल हरिन न छाड़ए ठाम।।5।।
भनइ विद्यापति [एहु रस जान। सिबसिंह लखिमा देवि रमान]।।6।।

1. चाल। [ ] अनुमित पाठ।

सखी कृष्णक प्रेमातिशय राधाकेँ सुनबैत छथि – (1) हे सखी, जहाँ हम कृष्णक निकट जाइत छी कि ओ तोहर कुशल पूछए लगैत छथि। (2) ध्यान दए जानि पाओल जे तोरा प्रति कृष्णकेँ कतेक प्रेम छनि। गुणवती नारी पुण्यहिक प्रतापेँ पिआक मनमे जगैत छथि। (3) बेरि-बेरि ओ हमर मुह निहारि-निहारि तोहर गप पुछैत रहैत छथि। कहले कथा हुनका कतेक बेर दोहराए-दोहराए कहैत रहिऔन। (4) अवसर किछुओ रहए, ओ आने बात (तोरा सम्बन्धमे) बाजए लगैत छथि। अपने उमंगसँ (अपने रुचिक) कथा पर कान दैत छथि। (5) हुनक उपमा लोभाएल

भमरासँ नहि देल जाए सकैत अछि। ठीक उपमा होएत, बान्हल हरिन जे कखनहु अपन थान नहि छाड़ि सकैत अछि। (6) विद्यापति करैत छथि...।

[105]

कोकिल कुल कर[1] कलरब काहल बाहर बाजे।
मधुकर कुल मञ्जरि गुञ्जर[2] से जनि कुञ्जर साजे[3]।।1।।
मन मलान परान दिगन्तर भल न कएल काज[4]।
बिरहिनि जन मरन कारन[5] बेकत भउ रितुराज।।2।।
सुन्दरि, अबहु तेजिअ रोस।
तञे वर कामिनि इ मधुजामिनि अपद न दिअ दोस।।3।।
कमल चाहि कलेवर कोमल बेदन सहए न पार।
चान्द चान्दन तुअ तनु ताबए भाव न मोतिम हार।।4।।
सिरिस कुसुम सेज ओछाओल तहुँ न आबए नीन्द।
आकुल चिकुर चीर न समर सुमर देव गोविन्द।।5।।

1. कुल कलरव। 2. मञ्जरिकुल मधुकर गुजरए। 3. से सुनि कुज रगाब। 4. लग नुकाएल लाज। 5. कारन तउ। 6. चान्दन चन्द कुन्द। 7. ताबन।

सखी रूसलि राधाकें बुझबैत छथि – (1) कोकिल सभ कलरव करैत अछि, से मानू काहर बाजा बजैत हो। मञ्जरी पर मधुकरक झुंड गुञ्जन करैत अछि, से मानू हाथी (मञ्जरी) पसासिन (भ्रमर पंक्ति) सँ साजल गेल हो। (2) एहन समयमे उचिते तोहर मन म्लान छहु आ' प्राण उड़ल छहु। तें (मान जे कए बैसलह से तों) नीक काज नहि कएलह। देखह, विरहिणी सभकें मारबाक हेतु ऋतुराज वसन्त (सैना साजि) प्रत्यक्ष उपस्थित छथि। (3) हे सुन्दरी, आबहुँ तामस छाड़ह। तों श्रेष्ठ रमणी थिकह आ' ई वसन्तक राति थिक। अनेरे हुनका दोख नहि दहुन। (4) तोहर देह कमलहुसँ अधिक कोमल छहु; वेदना कोना सहतहु। चन्दन आ' चन्द्रमा तोहर देह जरबैत छहु; मोतिक हार नहि भबैत छहु। (5) शिरिषक

फूलक सेजहु पर नीन नहि होइत छहु। केस छिड़िआएल छहु आ' वस्त्र सम्हारल नहि छहु। गोविन्ददेवक ध्यान लगओने रहैत छह।

[106]

के मोरा जाइत[1] दुरहुक दूर। सहस सौतिनि बस माधुरपूर ।।1।।
अपनहि हाथ आइलि[2] अछ नीधि। जुग दस जपल आजे भेलि सीधि।।2।।
भल भेल माइ हे कुदिवस गेल। चान्द कुमुद दुहु दरसन भेल।।3।।
कतए दामोदर देब बनमारि। कतएक हमे धनि गौर गोआरि।।4।।
आजे अकामिक दुइ दिठि मेलि। दैब दाहिन भेल हृदय उबेलि।।5।।
भनइ विद्यापति सुन बरनारि। कुदिवस रहए दिवस दुइ चारि।।6।।

1. जाएत। 2. चललि।

कृष्ण राधासँ मिलए मथुरासँ अएलाह, तकर उल्लास राधा व्यक्त करैत छथि – (1) हमर समाद लए दूर, अति दूर मथुरा के जाइत, जतए हमर हजारक हजार सौतिनि रहैत अछि। (2) आइ निधि (सम्पत्ति, कृष्ण) स्वयम् हमरा हाथमे आबि गेल अछि। दस युग जे तपस्या कएल से आइ सिद्ध (फलदायक) भेल। (3) भल भेल। दुर्दिन बीतल। चान (कृष्ण) आ' कुमुदिनी (राधा) दूनूक मिलन भेल। (4) कतए ओ राजा वनमाली कृष्ण आ' कतए हम गोप गमारि। (5) आइ अकस्मात् दूनूक आँखिमे आँखि मिलल। विधाता हृदय खोलि अनुकूल भेलाह। (6) विद्यापति कहैत छथि, हे श्रेष्ठ ललना, सुनह। अधलाह समय दुइए-चारि दिन रहैत अछि।

[107]

सजल नलिनि दल[1] सोआइअ परसे जा' असिलाए।
चान्दन न[2] हित चान्द बिपरीत करब कओन उपाए।।1।।
साजनि सुदिढ़ कइए जान।
तोहि बिनु दिने दिने तनु खिन बिरहे बिखिन[3] कान्ह।।2।।
कारनि बइदे निरसि तेजल आन नहि उपचार।

एहि बेआधि औखध तोहर अधर अमिञ धार।।3।।

1. दल सेज। 2. नहि। 3. विमुख।

सखी राधाकें कृष्णक विरह-दशा सुनबैत छथि – (1) हे सखी, कृष्णकें भीजल पुरैनिक पात पर सुतबैत छिअनि तँ हुनक देहक स्पर्शसँ ओ मौलाए जाइत अछि। चन्दन हितकर नहि होइत छनि। चान उनटे सन्ताप दैत छनि। कोन उपाय करू? (2) हे सखी, पक्का-पक्का जानि लेह जे कृष्ण तोरा विरहमे विभिन्न छथि। हुनक शरीर तोरा बिना दिन-दिन क्षीण भेल जाइत छनि। (3) मानह जे वैद्य कारनी (मरीज) कें निराश भए छाड़ि देलक। आओर कोनो टा प्रतिकार देखि नहि पड़ैत अछि। एहि विरह व्याधिक औषध एकमात्र अछि—तोहर अधरक अमृत-धारा।

[108]

सुख जनमान्तर सुरत सपना। दुर[1] भेले नीन्द गुन दरसि अपना।।6।।
ताहि पुरुख[2]कै कि बोलिबो साई[3]। अनुसए पाओल पिरिति बढ़ाई[4] ।।7।।
वचन रभस नहि मुख नहि हासे। भागे न विरचए भञुहविलासे ।।8।।
हृदयन डरे रति हेतु जनाई। कञोने परि सेओब निठुर कन्हाई ।।9।।
[चान्दवदनि धनि न झाँखह आने। तुअ गुन सुमरि आओब पुनु कान्हे ।।10।।
भनइ विद्यापति एह रस जाने। सिबसिंह लखिमादेवि रमाने] ।।11।।

1. सुन। 2. सुपुरुस। 3. आइ। 4. बचन बड़ाई। 5. बिचर भञे। [] नगु.सँ।

(6) सुख जन्मान्तरहिमे सम्भव। संगम सपना भए गेल। निद्रा अपन गुन देखाए (?) दूर भए गेल। (7) हाए, ताहि पुरुषकें की कहल जाए। (8) प्रीति बढ़ाए केवल पश्चाताप पाओल। आब ने बोलमे ओ अनुराग भेटैत अछि, ने मुह पर ओ हास, आओर ने... भ्रू-विलासक रचना। (9) संगम करबाक हेतु अपन भावना डरें प्रकट नहि करैत छी। एहन स्थितिमे निठुर कृष्णक अनुगमन कोना करू। (10) विद्यापति कहैत छथि, हे चन्द्रवदनी, अन्यथा चिन्ता नहि करह। तोहर गुणक स्मरण कए

कृष्ण फेर अओताह। एहि गीतक रस जननिहार थिकाह लखिमा देवीक पति राजा शिवसिंह रूपनारायण।

टि. – ई गीत *मञे सुधि* [101] केर शेष भाग थिक।

[109]

कुसुमे रचलि[1] सेजा दीप बरल[2] तेजा परिमल अगर चन्दने।
जबे जबे तुअ मेरा निफले बहलि बेरा तबे तबे पीड़ति मदने।।1।।
हे माधव तोरि राही बासकसज्जा।
चरन सबद भाने चौँदिस आपए काने पिआ लोभे परिमित[3] लज्जा।।2।।
सुनिअ सुजन नामे अवधि न चूक ठामे जनि दिढ़ पसान रेह री[4]।
से तुअ गमन आसे निन्द न पाबए[5] पासे लोचन लागल देहरी।।3।।
[कवि भन विद्यापति महघि बसन्त राति गमन न करिअ बिलम्बे।
देवसिंहदेव सुत सब गुन संजुत सिरि सिवसिंह अवलम्बे]।।4।।

1. रचित। 2. रहल। 3. परिनति। 4. बन पसेर लहरी। 5. आबे। [] भाषा सँ।

राधा प्रिय-मिलनक हेतु साज-सिङार कए तैआर छथि से संवाद सखी कृष्णकें कहैत छथि – (1) पुष्पशय्या रचाए गेल। उज्ज्वल दीप बारि देल गेल। अगर आ' चाननक परिमल कएल गेल। जखन-जखन तोहर मिलनक समय निष्फल बीति जाइत अछि तखन-तखन राधा विरहसँ व्यथित भए जाइत अछि। (2) हे माधव, तोहर राधा वासकसज्जा (प्रिय-मिलन हेतु सुसज्जिता) छथुन। पाएरक सबद बुझाइत छैक तँ चारू दिस कान पथैत अछि। प्रिय-मिलनक लोभें ओकर लाजो सीमित भए जाइत छैक। (3) सुनैत छी सुजन निर्धारित समय पर नियत स्थान पहुँचबामे चुकैत नहि छथि; (हुनक वचन) जेना पाथर परक अमिट रेखा हो। राधा तोहर आगमनक आशामे नीन सेहो गमाए दैत अछि। ओकर आँखि सदा देहरि पर लागल रहैत अछि। (4) विद्यापति कवि कहैत छथि, वसन्तक

राति बड़ महग होइत अछि। अएबामे विलम्ब नहि करह। देवसिंहक पुत्र सर्वगुणसंयुक्त श्री शिवसिंह अवलम्ब छथि।

[110]

आसाञे मन्दिर निसि[1] गमाबए सुखे न सुत सयान।
जखन जतए[2] जाहि निहारए ताहि ताहि तुअ भान।।1।।
मालति सफल जीवन तोर।
तोहरे बिरहे भुवन भमए भेल मधुकर भोर।।2।।
जातकि केतकि कतन अछए सबहि[3] रस समान।
सपनेहु नहि काहु निहारए मधु कि करत पान।।3।।
वन उपवन कुञ्ज कुटीरहि सबहि तोहि[4] निरूप।
तोहि बिनु पुनु पुनु मुरुछए अइसन पेम सरूप।।4।।
[साहर न रह सौरभ न सह गुञ्जरि गीत न गाव।
चेत न बापुर चिन्ताञे बेआकुल हरखे सबे सोहाव[5]]।।5।।
जकर हृदय जतए रतल से धसि[6] ततहि जाए।
जइओ जतने बाँधि निरोधिअ निमन नीर थिराए[7]।।6।।
[ई रस राए सिबसिंह जान कवि विद्यापति भान।
रानि लखिमा देवि वल्लभ सकल गुन निधान]।।7।।

1. बैस निसि। 2. जतने। 4. तोर। 5 [ ]. राम. सँ। 6. जतए रहल धसि पए। 7. समाए। 8. [ ] नगु. सँ।

सखी मालतीक अन्योक्तिमे राधाकें कृष्णक प्रेमोत्कर्ष सुनबैत छथि - (1) हे सखी, कृष्ण तोहर आगमनक आशामे (बाट तकैत) घरमे बैसल राति बिताए दैत छथि। कखनहु सुखपूर्वक सेजपर सुतैत नहि छथि। जखन-जखन जतए कतहु ककरहु देखैत छथि ओकरामे तोरे भ्रम भए जाइत छनि। (2) हे मालती, तोहर जीवन धन्य थिकहु। तोहर विरहें व्याकुल भेल भ्रमर सगर भुवन बौआएल फिरैत अछि। (3) जातकी (जूही), केतकी (केओला) इत्यादि कतेक ने फूल अछि, सभमे समाने रस

छैक। तथापि ओ भ्रमर सपनहुमे ककरहु दिस तकितहु नहि अछि, मधुपान करबाक कोन कथा। (4) वन, उपवन, कुञ्ज, कुटीर सर्वत्र तोरे भान होइत छैक, परन्तु तोरा नहि पाबि बेरि-बेरि मूर्छित भए जाइत अछि। एहन पक्का प्रेम छैक ओकरा। (5) सहकार (आमक गाछ) पर नहि ठहरैत अछि। ओकर सौरभ असह्य लगैत छैक। गुनगुन कए गीत नहि गबैत अछि। अपनो देहक होस नहि रहैत छैक। चिन्तासँ व्याकुल रहैत अछि। सभ किछु तखनहि सोहाइत छैक जखन चित हर्षित हो। (6) जकर हृदय जकरामे रतल (अनुरक्त) रहैत छैक से हठात् ओतहि चलि जाइत छैक। कतबो यत्न करब जे पानिकें बान्हि राखी, तैओ पानि निम्न स्थलहिमे जाए अटकत। विद्यापति कहैत छथि, रानी लखिमादेवीक पति सर्वगुण सम्पन्न राजा शिवसिंहे ई रस जनैत छथि।

[111]

पुर परिजन पिसुन पुरल जामिनि आध अन्धार।
बाहु पैरि हरि पलटि जाएब पुनु मञे[1] जमुना पार।।1।।
जे कूले कुल कलङ्क डराइअ ओ कुले आरति तोरि।
पिरीति लागि पराभव सहिअ इथि अनुमति मोरि।।2।।
माधव तेज भुज गिम पास।
जानब कन्ते दुरन्त बाढ़ल होएत रे[2] उपहास।।3।।
एत बोलि मोर गोचर धरब राखबि दुअओ लाज।
कबहु[3] मुह मलान न करब होएत पुनु समाज।।4।।
जगत कतन अछ[4] जुबजन कतन लाबए पेम।
ताके[5] पुरुख-बिचेखन बोलिअ जे चीन्ह आएस हेम।।5।।
बालँभु समन्दि चलु ससिमुखि कवि विद्यापति भान।
निभृत[6] नेह निमेखेओ बहुत निछछ छैलेओ जान।।6।।
[इ रस रानि लखिमा वल्लभ राए सिवसिंह जान] ।।7।।

1. पुनु। 2. के जाएत अछि होएत। 3. मनाहु। 4. अछि। 5. बापु।
6. निकृत। 7. नइ छछ। [ ] मजु.सँ।

राधा राति भरि विलास कए भोरमे कृष्णसँ बिदा मडैत छथि — (1) नगरमे परिजन आ' पिशुन भरल अछि। रातिमे अन्हार आधा भए गेल (भोर होएबापर अछि)। बाँहिसँ हेलि फेर यमुनाक ओहि पार घुरि जाएब। (2) एक दिस कुल-कलङ्कक डर तँ दोसर दिस तोहर आर्ति। प्रीतिक कारणेँ पराभव सहबाक थिक, तेँ आब हमरा अनुमति देह। (3) हे माधव, आब गलबाहीं छोड़ह। जँ पति जानत तँ कलह मचि जाएत; बड़ उपहास होएत। (4) एतेक सोचि हमर प्रार्थना स्वीकार करह। दूनूक लाज बचावह। मुह कनेको म्लान नहि करबह। विश्वास करह, फेर मिलन होएत। (5) संसारमे बहुत युवक-युवती अछि, बहुत प्रेम करैत अछि। ताहिमे बुधिआर से थिक जे लोह आ' सोन चीन्हए। (6) चन्द्रवदनी राधा एहि प्रकारेँ प्रियतमसँ बिदा लए घर चललीह। विद्यापति कहैत छथि, ई रस रानी लखिमाक पति राजा शिवसिंह जनैत छथि। [अथवा, गुप्त प्रेम छनो भरि हो तँ बहुत बुझल जाए ई बात गमार प्रेमिओ जनैत अछि]।

[112]

मोरि अबिनए जत पळलि खेञुबि तत चिते सुमिरबि मोरि नामे।
अभागलि मोहि सनि होअ न दोसरि जनि[1] तन्हि-सन पहु मिलु कामे।।1।।
माधव, मोरि सखि समन्दलि सेवा।
जुबति सहस सङ्गे सुखे बिलसब रङ्गे हम जल आञ्जुरि देबा।।2।
पुरुब पेम जत निते सुमिरब तत सुमरि जत न होअ सेखे।
रहए सरीर जञो की न भुञ्जिअ तञो मिलए रमन सत संखे।।3।।
पेअसि समाद सुनि हरि बिसमए गुनि करु पआन तहिँ[2] बेरा।
कवि विद्यापति भन[3] रूपनराएन लखिमा देवि सुसेरा।।4।।

1. मोहि सनि अभागलि दोसर जनि होअ। 2. करु पाए ततहि। 3. कवि
भन विद्यापति।

सखी कृष्णकेँ विरहिणी राधाक संवाद कहैत छनि – (क) "हमरासँ जतेक जे अविनय (अपराध) भेल से सभ क्षमा कए दिअऽ। चित्तमे हमर नाम टा मन रखने रहब। भगवानसँ प्रार्थना करैत छी जे हमरा-सन अभागलि केओ दोसरि नारि नहि हो, आ' अहाँ सन पिआ सभकेँ यथेच्छ भेटौक।", (2) हे माधव, हमर सखी राधा ई संवाद अहाँक सेवामे पठओलक अछि, "अहाँ सहस्र युवतीक संग यथेच्छ केलि-विलास करैत रहू। हमरा तिलांजलि देबे करब (हम ततबहिसँ परितुष्ट छी)> (3) पूर्वमे जतेक प्रेम छल से मन पाड़ैत रहब....(?)। जँ शरीर रहए तँ की-की ने भोगी। बहुत, बहुत रमणी उपलब्ध अछि।" (4) सखीक मुहेँ प्रेयसी राधाक एतबा समाद सुनितहि कृष्ण विस्मित भए तत्काल प्रस्थान कए गेलाह। विद्यापति कहैत छथि, लखिमादेवीक आश्रय रूपनारायण (रसज्ञ छथि)।

[113]

लाखहु[1]लता कोटि[2] तरुअर जगत[3] कतन लेख।
सबहि फूलाँ मधुर मधु[4] मधुहु मधु बिसेख।।1।।
सुन्दरि अबहु बचन सून।
सबे परिहरि तोहि इछ हरि आपु सराहसि पून।।2।।
जे मधु भमर निन्दहु सुमर बिसरए नहि पार[5]।
एड़ि मधुकर जाहि उड़ि पळ सेहे संसारक सार।।3।।
तोरि सराहनि तोरिए चिन्ता सेजहु तोरिए ठाम।
सपनेहु तोहि देखि पुनु पुनु[6] लए उठ तोहरि नाम।।4।।
आलिङ्गन दए पाछु निहारए तोहि बिनु सून कोर।
पाछिलि कथा अकथ बेथा[7] लाजे न तेजए नोर।।5।।
[राहि राहि नाम जाहि मुह सुन ततहि आपए कान।
सिरि सिबसिंह एहु रस जान कवि विद्यापति भान]।।6।।

1.लाखे। 2. कोटीहि। 3. जुबति। 4. मधु मधुकर। 5. बासि बिसरए न पार। 6. पुनु कए। 7. कथा। [ ] नगु. सँ।

सखी रूसलि राधाकेँ बाँसैत छथि — (1) संसारमे लाख-लाख लता अछि, कोटि-कोटि तरु। कतेक से गनब असम्भव। सभ फूलमे मधुर मधु अछि; परन्तु मधुओ मधुमे किछु अन्तर होइत अछि। (2) हे सुन्दरी, आबहु हमर बात सुनह। कृष्ण सभकेँ छाड़ि तोरहि चाहैत छथुन। तों अपन पुण्यकेँ सराहह (तों बड भागमन्ति छह)। (3) ओएह मधु संसारमे सर्वश्रेष्ठ थिक जकरा भ्रमर निद्रहुमे (सपनहुमे) सुमिरैत रहैत अछि। जकरा कखनहु बिसरि नहि पबैत अछि, दौड़ि-दौड़ि जकरा पर उड़ि-उड़ि अबैत अछि। कृष्ण सतत तोरे प्रशंसा, तोरे चिन्ता करैत रहैत छथि। सेजहु पर तोरे ठाम धरैत छथि। सपनहुमे तोरा देखैत छथि तँ बेरि-बेरि तोहर नाम लए उठैत छथि। (5) स्वप्नमे तोरा छातीसँ लगबैत छथि, पाछु निहारैत छथि तँ तोरा बिना अपन कोरकेँ सून पबैत छथि। पूर्वक बात मन पड़ैत छनि तँ अवर्णनीय व्यथा होइत छनि। लाजेँ नोर नहि बहबैत छथि। (6) जकरा मुहसँ राधा राधा ई नाम सुनैत छथि तकरे दिस कान पाथि दैत छथि। श्री शिवसिंह....।

[114]

आदरे अधिक काज नहि बन्ध। माधव बुझल तोहर अनुबन्ध।।1।।
आसाञे राखह नएन बझाए[1]। कतिखन कौसले कपट नुकाए।।2।।
ए कान्ह ए कान्ह तोहेँ जे सआन। ताके बोलिअ जे उचित न जान।।3।।
कसिए[2] कसौटी चीन्हिअ हेम। प्रकृति परेखिअ सुपुरुख पेम।।4।।
सौरभे जानिअ कुसुम पराग। नअने निरेखिअ[3] नव अनुराग।।5।।
[भनइ विधापति नएनक लाज। आदरे जानिअ आगिल काज]।।6।।

1. पठाए। 2. कसिअ। 3. नीर दिअ। [ ] नगु.सँ।

राधा कृष्णकेँ उपालम्भ दैत छथि — (1) आदर तँ अधिक देखबैत छह, मुदा से कोनो काजक नहि। हे माधव, बूझि गेलहुँ तोहर प्रेम। (2) तों नयनसँ बझाए हमरा आशामे लटकओने रहलह। चलाकीसँ कतेक काल अपन कपट (वंचकपन) छिपएबह। (3) हे कान्ह, तोरा की कहिअहु, तों तँ अपनहि बुधिआर छह। तकरा कहए पड़त जे अपन कर्तव्य नहि बूझए। (4) कसौटी पर कसिकेँ सोन चीन्हल जाइत अछि। भलमानुसक प्रेम तँ ओकर रंगे-ढंगसँ प्रकट भए जाइत छैक। (5) फूलमे पराग छैक से जेना सौरभसँ बुझाए जाइत छैक तहिना हृदयमे नव अनुरागक उदय आँखिए जनाए दैत छैक। (6) विद्यापति कहैत छथि, सोझाँ भेलापर लजाएब स्वाभाविक। जँ आदर करए तँ बूझक चाही जे आगाँ काज सिद्ध होएत।

[115]

अगमने पेम गमने कुल जाएत चिन्ता पङ्क लागलि करिनी।
मञे अबला दस दिस भमि झाँखञो जनि बेआध डरेँ भित हरिनी।।1।।
चन्दा दुरजन गमन बिरोधी[1]।
उगल गगन भरि पसरि[2] बैरि मोर [कै पहु आन परबोधी][3]।।2।।
कुहू भरमे पथ पद आरोपल आए तुलाइलि पञ्चदसी।
हरि अभिसार मार उदबेजक कओने निबारब कुगत ससी।।3।।

1. विरोधक। 2. भरि बैरि। 3. अनुमित पाठ।

अभिसारिका राधा बाधाक व्यथा व्यक्त करैत छथि -- (1) जँ नहि जाएब तँ प्रेममे हानि आ' जँ जाएब तँ कुल-मर्यादा टूटत। मानू हथिनी चिन्तारूपी पाँकमे फँसि गेलि। (2) देखू तँ, ई दुष्ट चान कोना हमर अभिसारमे बाधक भए गेल अछि। हमर बैरी ई चान सगर अकासमे पसरि उगि गेल। आब हम तँ नहि जाए सकब, तखन हमर प्रियतमकेँ के बौँसि आनत? (3) अमावास्याक राति थिक एहि भ्रमेँ बाट पर पाएर देल। ई तँ

पूर्णिमा आबि तुलाएल। कृष्ण-सन प्रेमीक हेतु अभिसार कएल, आ' कामदेव उद्विग्न करैत रहलाह। मुदा एहि कुचालि चानकेँ के रोकत।

[116]

प्रथम प्रेम हरि कत[1] बोलल आदर ओर न भेल।
बूझल[2] जनम भरि से[3] रहत दिने दिने दूर गेल।।1।।
किदहु मोर अविनय पळ की मोर दिघर मान।
की परपेअसि पिसुन वचन तथी पिआजे देल कान।।2।।
साजनि माधव नहि गमार।
पेमे पराभव बहुत पाओल करम दोस हमार।।3।।
बड़ बोलि हरि जतने सेओल सुरतरुसम भानि[4]।
अनुभव भेल कपट मन्दिर आबे कि करब जानि[5]।।4।।
सुपहु वचन पखानक रेह[6] मोहि से अछल भान।
अपन भासाऽ बोलि बिसरए इथी कि[8] बोलत आन।।5।।

1. जत। 2. बोलल। 3. जे। 4. जानि। 5. आनि। 6. हाथि रद सम। 7. अखलल। 8. इथी बोलत।

राधा कृष्णसँ प्रेम कए अपन पश्चाताप सखीसँ सुनबैत छथि – (1) प्रेमक आरम्भमे कान्ह बड़-बड़ बात कहलनि। आदरक कतहु ओर नहि रहल। ताहिसँ बूझल जे ओ अनुराग भरि जन्म रहत। परन्तु ओ तँ दिन-दिन दूर होइत गेल। की हमरासँ कोनो अविनय (चूक) भेल? की हम उचितसँ बेसी मान कए बैसलहुँ? की कोनो आन स्त्री चुगली लाइलक आ' ताहि पर प्रियतम कान देलनि? हे सखी, कृष्ण गमार नहि छथि। हम जे प्रेममे एतेक पराभव पाओल ताहिमे हुनक दोख नहि, हमर अपने भाग्यक दोख। महान् बूझि हम कृष्णकेँ कल्पवृक्षक समान मानि यत्नपूर्वक सेबल, किन्तु अनुभवसँ ज्ञात भेल जे ओ तँ बड़का वंचक छथि। परन्तु आब से जानिकेँ की होएत! (5) हमरा विश्वास छल जे सुपहुक वचन पाथर परक

रेखा थिक। से यदि अपन बाजल वचन बिसरि जाए तँ एहिमे आन की बाजओ!

[117]

सेहे परदेस परजोखित रसिआ हमे धनि कुलमति नारि।
तन्हि पुनु कुसलेँ आओब निज आलए हम जीबे गेलाह मारि।।1।।
कहब पथिक पिआ मन दए रे जौबन बले चलि जाए।
X X X X ।।2।।
जओ आबिअ तओ अइसना आओब जाबे[1] विजयी रितुराज।
अवधि बहत हे रहत नहि जीवन पलटि न होएत समाज।।3।।
गेलाँ नीर निरोधक की फल अबसर बहला दान।
जओ अपने नहि जानिआ रे भल जन पूछब आन।।4।।

1. जाओ।

विरहिणी पथिक द्वारा प्रियतमकेँ समाद पठबैत छथि — (1) ओ परदेसमे पर-नारी सभक रसिआ बनल छथि; हम एक कुलशीलवती नारी छी। ओ कुशलपूर्वक अपन घर घुरि अओताह। हमर तँ मानू प्राणे हरि लेलनि। (2) हे बटोही, प्रियतमकेँ ध्यान दए कहबनि जे यौवन तीव्र गतिएँ बीतल जाए रहल अछि।... (3) जँ अएबाक हो तँ एहन समयमे आउ जा' वसन्त विराजमान अछि। अवधि बीतल तँ हमर प्राण नहि बाँचत, फेर घुरिकेँ कहिओ मिलन नहि होएत। (4) पानि बहि गेलाक बाद आरि बन्हबाक कोन प्रयोजन? अवसर बीति गेला पर दान (सहायता) व्यर्थ। जँ अपने नहि जानी तँ आन भद्रलोकसँ पूछू।

[118]

नव हरि तिलक बैरि सख जामिनि कामिनि कोमल कान्ती।
जमुना जनक तनय रिपु घरनी सोदर सुअकर साती।।
माधव तुअ गुने लुबुधलि रमनी।

अनुदिन खिन तनु दनुज दमन धनि भवनज वाहन गमनी।।
दाहिन हरितह पाव पराभव एत सबे सह तुअ लागी।
बेरि एक सर सागर गुनि खाइति बधक होएब तोहें भागी।।
सारङ्ग साद बिखाद बढ़ाबए पिकधुनि सुनि पचताबे।
अदिति तनअ भोअन रुचि सुन्दर दसमि दसा लग आबे।।
[वियापति भन गुनि अबला जन समुचित चलु निअ गेहा।
राजा सिबसिंह रूप नराएन लखिमा लखिमी देहा]।।

[ ] नगु. सँ।

सखी कृष्णसँ कहैत छथि—(1) नव हरि द्वितीयाक चान। नवहरि तिलक शिव। तनिक वैरी कामदेव। तनिक मित्र वसन्त। तकर ई राति थिक। ताहिमे कोमल कान्तिवाली कामिनी राधाकें [यमुनाक पिता सूर्य, तनिक पुत्र कर्ण, तनिक शत्रु अर्जुन, तनिक स्त्री सुभद्रा, तनिक सोदर कृष्ण, तनिक पुत्र प्रद्युम्न अर्थात्] कामदेव सताए रहल छथिन। (2) हे माधव, दनुज राक्षस, तकर दमन कएनिहार विष्णु, तनिक स्त्री लक्ष्मी, तनिक भवन कमल, ताहिमे उत्पन्न ब्रह्मा, तनिक वाहन हंस, तकरा सन गति वाली रमणी राधा तोहर गुण पर मुग्ध छथि। हुनक शरीर दिन-दिन क्षीण भेल जाइत छनि। (3) दक्षिण पवन मलयानिलसँ ओ पराभव पबैत छथि। ई सभ पराभव ओ तोरा लेल सहैत छथि। शर पाँच, सागर चारि, तकर गुणनफल बीस अर्थात्, विष से ने कदाचित् खाए लेथि। जँ से भेल तँ तोंही वधभागी होएबह। (4) भ्रमरक गुञ्जन हुनक विषाद बढ़बैछ। कोकिलक कूज सुनि ओ व्यथित होइछ। अदितिक पुत्र देवता, तनिक भोजन अमृत, तेहन सुन्दरि राधा आब दशम कामदशा मृत्युक समीप पहुँचि गेलीह। (5) विद्यापति कहैत छथि, कृष्ण अबलाक मनोदशा सोचि उचिते अपन घर चलि देलनि। एकर रस जनैत छथि राजा शिवसिंह रूपनारायण आ लक्ष्मी स्वरुपा लखिमा।

[120]

हरि रिपु वरद पत्र गृह [ता रिपु आएल ताहेरि][1] काल रे।
तासु भीमरुत बिरहे बेआकुल से धुनि हिरदए साल रे।।1।।
सुन सुन्दरि, तेजि मान करु गमने।
अनुदिने तनु खिनि तुहिन नलिनि जनि[2] तुअ दरसने ता जिवने।।2।।
हरि रिपु असन ऐसन वर गो जिम मुञ्चासि गोविजिम गोविना।
करे कपोल गहि सीदति सुन्दरि गौज मिलल ससिहि कला।।3।।
हरि रिपु नन्द प्रिया सहोदर देइ न ता सुअ कामिनी।।4।।

1. [रिपु ता हर] 2. जीनि।

सखी मानिनी राधाकें कृष्णक विरहदशा सुनबैत छथि — (1) हरि चन्द्रमा, तनिक रिपु राहु, तनिका वर देनिहार ब्रह्मा, तनिक गृह कमल, तकर शत्रु वर्षा, तकर काल आएल। तकर भयंकर ध्वनि (मेघक गर्जन) विरहव्याकुल कृष्णक हृदयकें विद्ध करैत अछि। (2) हे सुन्दरी, सुनह, मान त्यागि तुरन्त गमन करह। कृष्णक शरीर पाला पड़ल कमल जकाँ दिन-दिन क्षीण भेल जाइछ। (3) हरि चन्द्रमा, तनिक रिपु राहु, तनिक भोजन अमृत...............। हाथ पर गाल राखि सुन्दरी विखिन्न अछि मानू चान''।

टि. – आगाँ अर्थ नहि लागल।

[121]

चान्दबदनि धनि चान्द उगत जबे। दुहुक उजोरे लखत दुरसओं[1] सबे।।1।।
चल गजगामिनि जाबे तरुन तम। किंवा कर अभिसारहि उपसम।।2।।
चानबदनि धनि रयनि उजोरी। कओने परि गमन होएत सखि तोरी[2]।।3।।
तुअ[3] परिजन परिमल दुरबार। दुर सओं दुजने[4] लखब अभिसार।।4।।
चौदिस चकित नअन तोर देह। तोहि लए जाइते मोहि सन्देह।।5।।
ऑगिरि अएलाहुँ परआएत काज। बिफल भेले मोहि होएत[5] लाज।।6।।

1. दुरहि सओं लखत। 2. मोरी। 3. तोहे। 4. दुरजने। 5. जाइते।

कृष्णाभिसारिका राधाकें सखी कहैत छथि – (1) हे चन्द्रवदनी ललना, जखन चान उगि जाएत तँ चान आ' तोहर मुख दूनूक प्रकाशमे सभ केओ तोरा देखि जएतहु। (2) तें हे गजगामिनी, जा' गाढ़ अन्धकार अछि, अभिसार करह। नहि तँ अभिसार छाड़ि देह। (3) हे चन्द्रवदनी, ई इजोरिआ राति थिक। चान उगि जाएत तँ तोहर अभिसार कोना होएतहु। (4) तोहर परिजन सौरभ जकाँ दुर्वार छहु। दुर्जन दूरहिसँ तोहर अभिसर लक्षित कए लेतहु। (5) तोहर देह पर चारू दिस सभक नजरि चौकस रहैत अछि। तोरा लए जएबामे हम बड़ सशंक रहैत छी। (6) परायत काज गछि अएलहुँ। एहिमे जँ विफल भेलहुँ तँ बड़ लज्जित होएब।

[122]

जलओ जलधि जल मन्दा। जहाँ बस दारुन चन्दा।।1।।
बचनक नहि[1] परमाने। समय न सह पञ्चबाने।।2।।
कामिनि पिआ बिरहिनी। कैवल रहलि कहिनी।।3।।
अवधि समापित भेला। कइसे हरि बचन भूलेला[2]।।4।।
नीठुर पुरुख पिरीती। जिब दए सन्तर जुबती।।5।।
नीचल नअन चकोरा। ढरिए ढरिए पळ नोरा।।6।।
रहु धनि पथ[3] हेरि हेरी। पिआ गेल अवधि बिसरी।।7।।
विद्यापति कवि गाबे। पुनफले सुपरुख पाबे[4]।।8।।

1. बचन नहि के। 2. चुकला। 3. पथए रहञ। 4. की नहि पावे।

कवि राधाक विरह-वर्णन करैत छथि — (1) आगि लागओ ओहि दुष्ट समुद्रक जलमे जाहिमे चान उगैत (बसैत) अछि। (2) वचनक कोनो ठेकान नहि। कामदेव तँ काल-विलम्ब नहि सहि सकैत छथि। (3) कामिनी विरहिणी भेलि छथि। हुनक केवल चर्चा रहि गेल अछि (मानू ओ छथि, छथि, नहि छथि)। (4) अवधि बीति गेल। जानि नहि कोना कृष्ण अपन बचन बिसरि गेलाह। (5) निठुर पुरुखसँ प्रीति बड़ कठोर (कष्टकर)

होइत अछि। युवती प्राणो गमाए एकर निर्वाह करैत छथि। (6) सुन्दरी बाट ताकि-ताकि काल कटैत छथि। प्रियतम अवधि बिसरि गेलथिन। (7) विद्यापति कहैत छथि, पुण्यक प्रतापहिसँ कामिनी सुपुरुष प्राप्त करैत छथि।

[123]

पुरुब जत अपरुब भेला। समय बसे सेहओ दुर गेला।।1।।
काहि निबेदञो कुगत पहु। कुदिन[1] हो परबतओ लहु।।2।।
तोंहहु मानिनि ओ[2] अभिमानी। पर जनाओब उभय हानी।।3।।
हृदअ बेदन राखिअ गोए। जे किछु करिअ भुञ्जिअ सोए।।4।।
सबहि साजनि धैरज सार। सरस[3] कह कवि कण्ठहार।।5।।

1. परम। 2. मान बित 3. नीरसि।

विरहिणी विलाप करैत छथि — (1) पूर्वमे जतेक अपूर्व सुख भेल, से सभ समयवश (कुसमयमे) दूर भए गेल। (2) प्रियतमक कुचालि ककरा सुनबिऔक। दिन घटला पर पर्वतो छोट भए जाइत अछि। (3) (ई सुनि सखी कहैत छनि--) तों मानिनी छह आ' ओ (कृष्ण) सेहो अभिमानी छथि। अनका जनओने दूनूक हानि। (4) तें हृदयक वेदना हृदयहिमे छिपाए रखबाक चाही। अपन कर्मक फल लोक अपनहि भोगैत अछि। हे सखी, सभसँ पैघ वस्तु थिक धैर्य। सरस कवि-कण्ठहार विद्यापति ई कहैत छथि।

[124]

झाँटक[1] झाँटल छाड़ल ठाम। कएल महातरु तर बिसराम।।1।।
तें जानल जिब रहत हमार। सेष डार टुटि पळल कपार।।2।।
चल चल माधब कि कहब जानि। सागर अछल थाह भेल पानि।।3।।
हमरे[2] अनओले की भेल काज। गुरुजने परिजने होएतउहे लाज।।4।।
हमरे बचने जे तोहहि बिराम। फेकलेओ चेप पाब पुनु ठाम।।5।।

1. झटक। 2. हम जे।

राधा कृष्णकें कहैत छथि -- झंझावातक मारलि हम एक विशाल वृक्ष तर शरण लेल ई बूझिकें जे ताहिसँ प्राण बाँचत। परिणाम ई भेल जे डारि टूटि कपार पर खसि पड़ल। (3) जाह जाह हे माधव, आब जानिकें की कहिअहु। जे अथाह समुद्र छल तकर पानि आब थाह भए गेल। (4) हमरा जे अनओलह ताहिसँ कोन काज भेलहु? आब गुररुजन आ' परिजनक मध्य लज्जित टा होएबहु। तैओ..........(?) तों एकमात्र विराम (अवलम्ब) छह। फेकलो ढेप कतहु ठाम पाबिए जाइत अछि।

[125]

अवयव सबहि नयन पए भास। अहनिसि झाँखए पाओब पास।।1।।
लाजे न कहए हृदय अनुमान। पेम अधिक लघु जानत आन।।2।।
साजनि कि कहब तोहर गेञान। पानी पाए सीकर भेल कान्ह।।3।।
बहिर होइअ नहि कहिअ समाद। होएतऽहे सुमुखि पेम परमाद।।4।।
जञो तन्हिके जीवने तोहि काज। गुरुजन परिजन परिहर लाज।।5।।
दण्ड दिवस दिवसहि हो मास। मास पाब गए[1] वर्षक पास।।6।।
तोहर जुडाइ तोहरे पए मान[2]। गेल रुजाए कैओ आन परान।।7।।

1. गञे। 2. तोहरे मान।

सखी कृष्णक दशा राधाकें कहैत छथि – (1) तोहर अंग-अंगक झलक कृष्णक नयनमे अबैत रहैत अछि। ओ दिनराति तोहर संगति पएबाक ध्यान करैत रहैत छथि। (2) लाजें ओ बजैत नहि छथि। हुनक हृदयक भाव अनुमानहिसँ बुझबामे अबैत अछि। बजैत एहि हेतुएँ नहि छथि जे हुनक गहन प्रेमकें आन लोक छोट कए बूझि लेत। (3) हे सखी, तोहर ज्ञान की कहिअहु। प्रेम कृष्णक हेतु मानू हरी (पाद-शृंखल) भए गेल। (4) कहबी छैक, समाद नहि पहुँचाबी तँ बहिर होइ, तें कहलिअहु। हे सुन्दरी, नहि गेने प्रेममे त्रुटि भए जएतहु। (5) जँ तोरा कृष्णक जीवनक कामना होअहु तँ गुरुजन आ' परिजनक लाज छाड़ह। (6)

कृष्णकें एक घड़ी एक दिन सन लगैत छनि, दिन मास सन आ' मास बरख सन। (7) ....?

[126]

[हमे धनि कूटनि परिनति नारि। बएस बास नहि कहञो बिचारि।।1।।
काहु दिअ' पान काहु दिअ सान। कतन हकारि करिअ अपमान]।।2।।
आहा बएस कतए चलि गेल। बड़ उपताप देखि मोहि भेल।।3।।
भाङ्गल कपोल अलक भरि साजु[2] सङ्कुचल लोचन काजर आँजु[3]।।4।।
धवलों केस कुसुम करु बास। अधिक सिङ्गारें अधिक उपहास।।5।।
थोथक थैआ थन दुइ भेल। गरुअ नितम्ब सेहओ दुर गेल।।6।।
जौबन सेस सुखाएल अङ्ग। लुळए पाछु हेरि उमत अनङ्ग।।7।।
[खने खस घोघट निकट[4] समाज। खने खने आब हकारलि लाज।।8।।
भनइ विद्यापति रस नहि छेओ। हासिनि देवि पति देवसिंह देओ]।।9।।

1. काहु के। 2.लेल साजि। 3. काजरे लेल आँजि। 4. विकट। [ ] नगु.सँ।

कुट्टिनी अपन वर्णन स्वयं करैत अछि — (1) हम बूढ़ि भेलि नारी कुट्टिनी थिकहुँ। कतेक बएस आ' कतए बास से जानि-बूझिकें ककरहु नहि बतबैत छी। (2) ककरहु सान दैत छी (जे गुप्त आह्वानक संकेत थिक) तँ ककरहु इसारा। कतेककें बजाए अपमानित करैत छी। (3) हाए, कतए गेल हमर यौवन? अपन दशा देखि हमरा बड़ दुख होइत अछि। (4) सटकल-चोकटल गालकें पसाहिनसँ सजबैत छी। घोकचल आँखिमे काजर करैत छी। (5) पाकल केसकें फूलसँ सजबैत छी। जतेक अधिक सिङार करैत छी ततेक अधिक उपहास होइत अछि। (6) दूनू स्तन लारुबातू भए गेल। नितम्ब जे भारी छल सेहो नहि रहल। (7) यौवनक अन्त होइतहिँ देह सुखाए गेल। उन्मत्त कामदेव तैओ पछोड़ धएने अछि। (8) लोकक सोझहिमे छनहि घोघट (आँचर) खसैत रहैत अछि आ' छनहि लाज हकारलि जकाँ आबि जाइत अछि। विद्यापति कहैत छथि, रसक कहिओ

अन्त (छेओ – छेद → विच्छेद) नहि होइत अछि। (एकर रस जनैत छथि) हासिनि देवीक पति राजा देवसिंह।

[127]

तोहर हृदअ कुलिस कठिन बचन अमिञ धार।
पहिलहि नहि बूझए पारल कपट कै बेवहार॥1॥
जत जत मन छल मनोरथ बिपरीत सबे भेल।
आँखि देखइते कुँ धसलिहुँ आरति गौरव गेल॥2॥
माधव[2] हमे कि बोलब आओ।
आगु गुनि जदि काज न करए पाछे होअ पचताओ॥3॥
उतिम जन जञो बेबथा[3] छाड़ए अपन कथा[4] चूक।
कैसे कए से मुह देखाबए पैसि पतारल कूप॥4॥
अबे हमे तुअ सिनेह जानल कओने उपमा देब।
ए हरि चोचक खोन्धा ऐसन किछु नहि बानि खेब॥5॥

1. कुपथ। 2. साजनि। 3. जन बेबथा। 4. निञ बेथा।

राधा कृष्णकें उपराग दैत छथि – (1) तोहर बोल तँ अमृत-सन छहु, मुदा हृदय वज्र-सन कठोर। तोहर ई कपट व्यवहार (छल-प्रपंच) पहिने नहि बूझि सकलहुँ। (2) मन मे जतेक जे मनोरथ छल सभटा तकर विपरीत भेल। आँखिक अछैत कूपमे धसलहुँ आ' ततेक आर्त भए गेलहुँ जे गौरव गमाए देल। (3) हे माधव, हम आओर की कहिअहु। जे परिणाम बिनु सोचनहि कोनो काज करैत अछि से पाछाँ पछताइत अछि। (4) नीक लोक जँ व्यवस्था छोड़ि अपन वचनसँ विचलित होए तँ से मुह कोना देखाओत। (5) आब हम जानि गेलहुँ जे तोहर प्रेम केहन छहु। एहन प्रेमक उपमा कथीसँ देल जाए? हे कान्ह, एहन प्रेम मानू चोचक खोन्धा (?) थिक जाहिमे बाति-खेब (?) किछु नहि रहैत अछि।

[128]

एखने पाबञो ताहि विधाताहि बान्धि मेलञो अन्ध कूप।
जकर नाह सुचेतन नहि ताके कके दिअ रूप॥1॥
इ रूप हमर बैरी भए गेल देअ' बहु डिठि साल।
अनकाँ इ रूप हित पए होअए हमर इ भेल काल॥2॥
साजनि आबे कि पुछह सार।
परदेस पर रमनि रतल न आब कन्त हमार॥3॥

1. देह।

विरहिणी राधा सखीसँ कहैत छथि — (1) ओहि विधाताकें (जे हमर रूप गढ़लक) पबितहुँ तँ एखनहि बान्हिकें अन्धकूपमे खसाए दितहुँ। जकर पति सुचेतन (रसिक प्रेमी) नहि हो तकरा विधाता किएक रूप दैत छथिन? (2) ई रूप हमर वैरी भए गेल। आँखिमे बहुत गड़ैत अछि। भनहि अनका ई रूप हितकर होइक; हमरा लेल तँ ई काल भए गेल। (3) हे सखी, आब यथार्थ कथा की पुछैत छह। हमर कन्त तँ परदेस जाए पर-रमणी मे रति गेल।

[129]

हमरे बचने सखि निअर[1] न जएबे तहु परिहरिहह राति।
पढ़ल गुनल सुग बिराळे खाएब सब दिस होएब अकान्ति॥1॥
अलुरि हे[2] धरब, हमर उपदेस।
बिरळा नाम जते दुर सूनिअ हठे छाड़ब से देस॥2॥
सारी आनि सेचालकै सोम्पलह देखितहु आपनि आँखि।
सूध मासु हाड़हि सञो खएलक केवल पखिआ राखि॥3॥
भमि भमि बिरळा सबहि निहारए डरे नहि करए उकासी।
दधि दुध घोर घीउ सबे[3] खएलक गिरिहथ पळल उपासी॥4॥

1. सतत। 2. अलुरि धरब। 3. दही दुधहु सञो।

सखी राधाकें उपदेश दैत छथि जे कृष्णसँ बँचिकें रहिहह — (1) हे सखी, हमर बात सुनह। तों ओहि बिलाड़क (कृष्णक) लग नहि जइहह; ताहूमे रातिमे तँ कथमपि नहि जइहह। ओ बिलाड़ पढ़ल-गुनल सूगा (गुणवती राधा)कें खाए जाएत। सभ दिस अकौंति (?) होएत। (2) हे अलूरि अपटु, हमर उपदेश मन राखह। जतेक दूर बिलाड़क नाम सुनह, ताहि ठामसँ दूरे हटल रहह। (3) अपन आँखिसँ देखितहुँ तों मएना चिड़ै आनि बाझकें सौंपि देलह। ओ बाझ ओकर मासु हाड़हिसँ घीचि-घीचि खएलक, केवल पाँखि छाड़ि देलक। (4) ओ बिलाड़ घूमि-घूमिकें सभकें निहारैत अछि। डरें (एहि आशंकासँ जे केओ लक्षित नहि करए) उकासिओ नहि करैत अछि। दही, दूध, घोर, घी सभ किछु खाए लेलक। गृहस्थ (राधाक पति) उपासले रहि गेलाह।

[130]

सुजन बचन हे जतने परिपालए कुलमन्ति राखए गारि।
जञो[1] पहु बरिस बिदेस गमाओत तञो[2] कि होइति बर नारि।।1।।
कन्हाइ हे.............।
पुनु पुनु तुअ[3] धनि समन्दि पठाओल अबधि समापलि आए।।2।।
साहर मुकुलित कर कलरव[4] पिक भमर करए मधुपान।
मधु[5] जामिनि हे कैसे कए गमाउति तोह बिनु तेजति परान।।3।।
मुखरुचि[6] दुर गेल देह अति खिन भेल नयन गरए जलधार।
विरह पयोनिधि काम नाओ तहि आस धरए कड़हार।।4।।

1. से। 2. जञो। 3. सभ धनि। 4. करए कौलाहल। 5. ऋतु। 6. कुचरुचि।

सखी कृष्णकें विरहिणी राधाक दशा सुनबैत छथि – (1) नीक लोक अपन वचनक पालन यत्नपूर्वक करैत छथि। कुलकामिनी अपन प्रतिष्ठा बँचबैत छथि। परन्तु जँ कन्त वर्षक वर्ष विदेशहिमे बिता देथि तँ

कामिनीक की दशा होएतनि? (2) हे कान्ह, ...(?) तोहर प्रेयसी बेरि-बेरि समाद पठओलथुन जे अवधि बीति गेल (आबहु घर घूरथु)। (2) आम मजरि गेल। कोइली कुहकए लागल। भ्रमर मधुपान करए लागल। राधा वसन्त ऋतुक राति कोना खेपत। ओ तोरा बिना प्राण गमाए देत। (4) ओकर मुह उदास भए गेलैक। देह दुबराए गेलैक। आँखिसँ नोर बहैत रहैत छैक। ओ विरह रूपी समुद्र कामदेव रूपी जहाज पर चढ़ि आशा रूपी करुआरि धएने अछि।

[131]

सून संकेत निकेतन आइलि सुमुखि बिमुखि भेलि।
मन मनोरथ बानी लागलि रजनि निफलि गेलि।।1।।
सुन सुन हरि राही परिहरि की फल पाओल तोहें।
उचित छाड़ि अनुचित करसि अपद न कर[1] कोहे।।2।।
बारिस बसे नरि खर धारा बरिस जलद कोपे[2]।
तरुन तिमिर दिग न जानए अहि सिर पए रोपे[3]।।3।।

1. गेले न करिअ। 2. बसि नरी सर धारा धरि जलधर कोपि। 3. गए रोपि।

सखी कृष्णकें कहैत छथि — (1) राधा (बड़ कष्टें) संकेतस्थल पहुँचलि। तकरा शून्य पाबि ओ निराश भए घुरि आइलि। ओकर मनोरथमे वह्नि (आगि) लागि गेल। राति निष्फल बीति गेलैक। हे कान्ह, सुनह। राधाकें एना उपेखि तोरा कोन फल भेलहु? उचित छल आओर किछु काल प्रतीक्षा करब, से नहि कए तों अनुचित कएलह। क्रोध अनेर नहि करक थिक। (3) बरसातक कारण नदी तेज धारासँ बहैत रहए आ' मेघ क्रुद्ध जकाँ बरसैत रहए। अन्धकार तेहन तेज छल जे दिशा जानल नहि जाए। राधा कए बेरि सापक सिर पर पाएर रोपए।

[132]

रभसहि हरि हेरलन्हि[1] मुख कान्ति। पुलकित तनु मोर धर कत[2] भान्ति।।1।।
आनन्दे नोर नयन भरि गेल। पेमक आँकुर पल्लव[3] भेल।।2।।
भेटल मधुरपति सपन मो आग। तखनुक कहिनी कहइते लाज।।3।।
जखने हरल हरि आँचर मोर। रसभरेँ ससरल कसिनी डोर[4]।।4।।
करे कुचमण्डल रहलिहुँ गोए। कमलेँ कनकगिरि झाँपि न होए।।5।।

1. तह बोललन्हि। 2. कत धरं 3. पेम आकुर अङ्कुर। 4. भोर।

राधा स्वप्न-समागम सखीसँ सुनबैत छथि—(1) कृष्ण अएलाह आ' सहसा मुखक शोभा निहारए लगलाह। नाना तरहेँ हमर देह छूबए लगलाह। देहमे पुलक भरि गेल। (2) आनन्दक नोरसँ आँखि भरि गेल। प्रेमक अङ्कुरमे मानू पल्लव आबि गेल। (3) आइ सपनामे हमरा मथुरापति कृष्णसँ मिलन भेल। तखनुक कथा कहैत लाज होइत अछि। (4) जखन ओ हमर आँचर घीचि लेलनि तखन कामविह्वलतावश हमर चीरक डोरी ससरि गेल। (5) हाथसँ स्तन नुकाए लेल। मुदा कमलसँ कतहु स्वर्णपर्वत झाँपल होअए।

[133]

पहिलहि परस[1] पयोधर कुम्भ। आरति कतन करए परिरम्भ।।1।।
दंसल अधर सुधारस[2] लोभ। राङ्कक हाथ रतन नहि सोभ।।2।।
साजनि कि कहब कहइते लाज। कान्हक आइति पळलिहुँ आज।।3।।
नीवी ससरि कतए दहु गेलि। अपनाहु आङ्ग अनाइति भेलि।।4।।
करतल जाँति[3] धरिअ कुच गोए। परबत नलिने[4] झाँपि नहि होए।
भनइ विद्यापति न कर सन्देह। मधु तह सुन्दरि मधुर सिनेह।।5।।

1. सरस। 2. अधर सुधारस दरसए। 3. तले। 4. पळले तलित।

राधा अपन सङ्गमक वर्णन सखीकेँ सुनबैत छथि — (1) पहिने स्तन छूलनि आ' तखन आर्त भए बेरि-बेरि आलिंगन कएलनि। (2)

अमृतरसक लोभेँ अधर-दंशन कएलनि। रंकक हाथमे रत्न पड़ए तँ एहने चेष्टा करत। (3) है सखी, की कहबहु, कहबामे लाज होइत अछि। आइ हम कान्हक वशमे पड़ि गेलहुँ। (4) नीवी (चीरक कसनी) ससरिकेँ कतए दन चलि गेल। अपनो देह अपन सक नहि रहल। (5) तरहत्थीसँ स्तनकेँ जाँति नुकाए राखल। किन्तु व्यर्थ; पर्वत कतहु कमलसँ झापल होअए। विद्यापति कहैत छथि, कोनो शङ्का नहि करह। प्रेम मधुअहुसँ अधिक मधुर होइत अछि।

[134]

गगन मण्डल दुहुक भूखन एकसर उग चन्दा।
गए चकोरीऽ अमिअ पिबए कुमुदिनि सानन्दा।।1।।
मालति काञि करिअ रोस।
एकल भमर बहुत कुसुम कमन ताहेरि दोस।।2।।
जातकि केतकि नबि पदुमिनि सब सम अनुराग।
ताहि अवसर तोहि न बिसर एहे तोर बड़ भाग।।3।।
अभिनव रस रभस पओले कमन रह बिबेक।
भन विद्यापति पर हित कर ऐसन हरि पए एक।।4।।

मालतीक अन्योक्तिमे सखी राधाकेँ उपदेश दैत छथि जे कृष्णक बहुवल्लभत्व क्षम्य थिक — (1) चकोरी आ' कुमुदिनी दूनूक भूषण (प्रियतम) एके चन्द्रमा आकाशमे उगैत छथि (उच्च प्रतिष्ठा पबैत छथि)। चकोरी जाएकेँ (आकाशमे उड़िकेँ) अमृत पीबैत अछि; से देखितहुँ कुमुदिनी ईर्ष्यालु नहि भए आनन्दित रहैत अछि। (2) है मालती, तोँ रोस (तामस) किएक करैत छह? एकसरे भ्रमर बहुतो फूलसँ प्रेम करैत अछि, ताहिमे भ्रमरक कोन दोख। (3) ओ तँ जूही, चमेली, केतकी, कमलिनी सभसँ एक रंग प्रेम करैत अछि। (4) एहनहु स्थितिमे भ्रमर तोरा नहि बिसरैत छहु सेह तोँ बड गोट भाग्य बूझह। (4) काम-केलिक सामग्री पओने ककर

विवेक डिगैत नहि छैक। विद्यापति कहैत छथि – आनक हित कएनिहार (सभसँ समान प्रेम कएनिहार) कृष्ण-सन आन केओ नहि अछि।

[135]

बड़ि जुड़ि एहि तरुक छाहरि ठामे ठामे बस गाम।
हमे एकसरि पिआ देसान्तर नहि दुरजन नाम।।1।।
पथिक एथा लेह बिसराम।
जत बेसाहब किछु न महघ सबे मिल एहि ठाम।।2।।
सासु नहि घर दूर[1] परिजन ननन्द सहजे भोरि।
एतहु पथिक[2] विमुख जाएब तबे[3] अनाइति मोरि।।3।।
भन विद्यापति सुन तञे जुबति जे पुर परक आस
X X X X X ।।4।।

1. पर। 2. अथिक। 3. अबे।

कामातुर विरहिणी बटोहीकें रिझबैत छथि — (1) एहि गाछक छाहरि बड़ शीतल अछि। एहि गाममे घर दूर-दूर पर अछि। हम एकसरि छी। पिआ विदेस गेल छथि। एतए दुर्जनक नामो नहि अछि। (2) हे बटोही, एतए विश्राम करह। एतए जे किछु कीनए चाहबह सभ किछु भेटतहु, कोनो वस्तु महघ नहि। (3) घरमे सासु नहि छथि, पड़ोसी दूरमे अछि। ननदि बकलेल अछि। एहू स्थितिमे हे बटोही तों जँ विमुख भए चलि जएबह तँ हमर साध्य की ? (4) विद्यापति कहैत छथि, हे युवती, तों सुनह। जे आनक कामना पुराबए⋯(?)।

[136]

उगमग जग भम काहु न कुसुम रम परिमल कर परिहार।
जकरि जतए रीति ते बिनु नहि[1] थिति नेह न विखए बिचार।।1।।
मालति तोहि बिनु भमर सदन्द।
बहुत कुसुम बन सबहि बिरत मन कतहु न पिब मकरन्द।।2।।

बिमल कमल मधु सुधा सरिस सुध[2] नेह न मधुप बिसार।
हृदअसरिस जन न देखिअ जति खन तति खन सअर अन्धार।।3।।

1. नहीक। 2. विधु।

सखी मालतीक अन्योक्तिमे राधाकें कहैत छथि — (1) हे मालती, भ्रमर उद्विग्न भेल जग भरि (यत्र-तत्र) बौआइत अछि। कोनहु फूलसँ आकृष्ट नहि होइत अछि। ओकर सौरभसँ काते रहैत अछि। जे जकरामे अनुरक्त रहैत अछि तकरा ओकर बिना शान्ति नहि भेटैत छैक। प्रेम अपन लक्ष्य वस्तुक गुणावगुणक विचार नहि करैत अछि (प्रेम अन्ध होइत अछि)। (2) हे मालती, भ्रमर तोरा बिना विकल अछि। वनमे बहुत फूल अछि, ओकर मन सभसँ विरत छैक। कतहु रस-पान नहि करैत अछि। (3) निर्मल कमलमे अमृतक समान शुद्ध मधु रहैत अछि। किन्तु भ्रमर तोहर स्नेहकें बिसरैत नहि अछि। (3) जा धरि ओ अपन हृदयक अनुरूप पात्रकें नहि देखैत अछि ता धरि ओकरा सभ अन्हारे अन्हार लगैत छैक।

[137]

बसन्त रजनि रङ्गे पलटि खेपबि[1] सङ्गे परम रभस पिआ गेल कही।
कोकिल पञ्चम गाब तइअओ न सुबन्धु आब उतिम वचन बेभिचर नही।।1।।
साए साए, [ड़गलि बेबथा][2]। [पिआ किदहु भेला]।
अबधि न अएले कन्ता [नहि भल परजन्ता] मो पति पछिमे सुर उगिए गेला।।3।।
साहरे सुरभि[4] दिसा चान्दे उजरि निसा [तरु तरु मधुकर पसरि गेला[5]]।
इ रस हृदय धरि तइअओ न आब हरि के जान पुरुष पेम बिसरि गेला।।4।।
झँखैते झँखैते हेतु दगध मकर केतु हर मदनानलेँ धुअ हनू।
अहवा गमार पति मोहे मुगुधमति भरमे अपन कए मञे मानू।।5।।
कवि भन विद्यापति सुन वर जौबति मानिनि मनोरथ सुरतरु।
सिरि सिबसिंह देबा चरन कमल सेवा महादेवी लखिमा देवि बरु]।।6।।

1. खेपलि। 2. उगलिरे थेथा। 3. अनुमित पाठ। 4. मेंजरि। 5. पसरला। [ ]
भाषा. तथा नगु.सँ।

विरहिणी राधा विलाप करैत छथि – (1) प्रियतम कृष्ण निश्चयपूर्वक कहि गेलाह जे वसन्तक राति सङ्गहि रङ्ग-रभसमे बिताएब। कोइली पंचम स्वरमे कुहकल, मुदा तैओ बन्धु नहि अएलाह। आश्चर्य, भद्रलोकक वचन मे विघटन नहि होएबाक चाही। (2) हाए, हुनक देल वचन (व्यवस्था) डिगि गेल। .... पिआ की भेलाह। अवधि पर प्रियतम नहि अएलाह। नीक परिणाम नहि भेल। हमरा लेखें सूर्य पश्चिममे उगि गेलाह। (4) आमसँ दिशा सुरभित भेल। चानसँ राति चकमक भेल। तरु-तरु पर भ्रमर पसरि गेल। कृष्ण हृदयमे ई रस राखिओकें नहि अएलाह। के जानए, पूर्वक प्रेम बिसरि गेल होइन। (5) हेतुक चिन्तन करैत बूझि पड़ैत अछि जे शिवक नयनानलमे दग्ध कामदेवक शरीर (धुआ) नष्ट छनि अथवा ओ गमार भए गेलाह। मोहवश हमर मन मुग्ध (ज्ञानहीन) भए गेल, तें भ्रमवश हम हुनका अपन बूझि लेल। (6) विद्यापति कहैत छथि, हे युवती, सुनह। महादेवी लखिमा मानिनीक मनोरथ पुरएबामे कल्पवृक्षक समान श्री शिवसिंहदेवक चरणकमलक सेवामे लागलि छथि।

[138]

गुन अवगुन सम कए मान भेद न जानए पहु।
निअ चतुरिम कत सिखाउबि हमहु भेलिहुँ लहु।।1।।
साजनि हृदअ कहओ तोहि।
जगत भरल नागर अछए बिहि छललिहुँ मोहि।।2।।
काम कला रस कत सिखाउबि पूब पछिम न जान।
रभस बेरॉऽ निन्दे बेआकुल किछु न ताहि गेआन।।3।।

रसिकशिरोमणि राधा कृष्णक अरसिकता पर दुःख प्रकट करैत सखीकें कहैत छथि — (1) हे सखी, हमर गमार पिआ गुण आ अवगुण दूनूकें एक कए मानैत अछि। दूनूमे कोनो अन्तर नहि बुझाइत छैक। हम अपन चतुरता ओकरा कतेक सिखाउ। ओकरा आगाँ तँ हमहू छोटि (लघु) भए गेलहुँ। (2) हे सखी, तोरा मनक बात कहैत छिअहु। संसारमे कतेक ने नागर (रसिक प्रेमी) भरल अछि। विधाताकें एको नहि सुझलनि। एकटा गमार दए हमरा ठकि देलनि। (3) ओकरा सरस कामकला कतेक सिखाउ। ओ तँ पूब कि पछिम सेहो नहि जनैत अछि। रङ्ग-रभसक बेरमे ओ निद्रासँ व्याकुल भए जाइत अछि। ओकरा किछुओ ज्ञान नहि छैक।

[139]

सेओल सामि सबे गुन आगर सदय सुदिढ नेह।
पहु सेबि[1] सबे रतन पाबए निन्दहु मोहि सन्देह।।1।।
पुरुख बचन हो अवधान।
ऐसन नहि एहि महिमण्डल जे परवेदन जान।।2।।
नहि हित मित केओ बुझाबए लाख कोटि तोहें साईं[2]।
सभक आसा तोहें पुराबह हम बिसरह काञी।।3।।

1. तहु सबे। 2. सामी।

राधा कृष्ण पर उपेक्षाक आरोप लगबैत छथि – (1) हम सभ गुणमे अग्रगण्य, दयालु तथा दृढ प्रेम बाला स्वामीक सेवा कएल। आन सभ ललना पहुक सेवा कए रत्न (प्रीतिसुख) पबैत छथि, किन्तु हमरा तँ निन्द्रहुमे सन्देह। (2) हे पुरुष कान्ह, तों हमर उपराग ध्यान दए सुनह। संसारमे एहन लोक नहि (बड़ कम) अछि जे आनक वेदना बूझए। तों तँ लाख-लाख नारिक स्वामी छह। (3) हमरा एहन केओ हित-अपेक्षित नहि अछि जे तोरा बुझाओत। तों सभक आशा पुरबैत छह, तखन हमरा किएक बिसरैत छह?

[140]

सुखे न सुतसि[1] कुसुम सयन नयने मुञ्चसि बारि।
तहाँ की धरब पुरुख दूखन जहाँ असहनि नारि॥1॥
राही हठेन तोळिअ नेह।
कान्ह सरीर दिने दिने दूबर तोराहु जीव सन्देह॥2॥
परक बचन हित न मानसि बूझसि न रतितन्त।
मान कए[2] जञो मौन करिअ बोलि[3] आनए कन्त॥3॥
किछु किछु पिआ आसा दिहह अति न करब कोप।
अधिके जतने बचन बोलब सङ्गम करब गोप॥4॥
नब अनुरागे जे किछु होअए रह दिन दुइ चारि।
प्रथम पेम ओल धरि राखए सेहे कलामति नारि॥5॥

1. सुतलि। 2. मने तञो। 3. चोरि।

सखी मानवती राधाकें बँसैत छथि — (1) तों कोपजन्य विरहवश फूलक सेजहुपर सुखसँ सुतैत नहि छह। आँखिसँ नोर ढारैत छह। जतए नारी असहनशील (क्रोधी) हो ततए पुरुखकें किएक दोख देब। (2) हे राधिका, तों एना हठात् सिनेह तोड़ह नहि। कृष्णक देह दिन-दिन क्षीण भेल जाइत छनि। तोरहु प्राण-संकट उपस्थित छहु। (3) अनकर वचनकें हित नहि मानैत छह। तों रति-तन्त्र नहि जनैत छह (रतिरंगमे तें एना भंग होइतहिँ अछि)। मान कए जँ नारी मौन धारण करैत अछि तँ पहु ओकरा बाँसि अनैत छथि। (4) मान कएलहु पर पिआकें कनेक आशा दैत रहिहह (जे प्रीति टूटए नहि)। अधिक कोप नहि करबाक थिक। पहु बहुत प्रयास करथि तँ अवश्य मुह बाजब। कृष्ण प्रसन्न भए संगम करताह। (5) नब अनुरागमे किछु-ने-किछु खटपट होएब स्वाभाविक। ई खटपट दुइए-चारि दिन रहैत छैक। प्रथम प्रेमक निर्वाह जे अन्त धरि करए सेह नारी कलावती थिक।

[141]

पाउस निअर अबे[1] आएला रे से देखि सामि डराञो।
जखने गरजि घन बरिसता रे कञोन सेरि मञे जाञो[2]॥1॥
बचन मोरा[3] सुन साजना रे बारिस न तेजिअ देस[4]।
जकरा भरें घर जौबति रे से कैसे जाए बिदेस॥2॥
तोहें गुन आगरा नागरा रे सुन्दर सुपहु हमार।
XX X X X X॥3॥
सोन बरिस घर सुनिञा रे चौबड़हु तसु नाम।
XX X X X X॥4॥

1. निअर आएला। 2. पराञो। 3. मेरो। 4. गेह।

राधा पतिकें सम्बोधित कए अपन विरहव्यथा सुनबैत छथि — (1) आब वर्षा ऋतु लग आएल। से देखि हे पहु हम डराइलि छी। जखन मेघ गरजि-गरजि बरिसैत अछि, तखन हम ककर शरणमे जाउ ? (2) हे साजन, हमर बचन सुनह। वर्षा कालमे अपन देस तेजि बाहर नहि जएबाक थिक। जकर आश्रयमे घरमे युवती स्त्री रहए जानि नहि से कोना बिदेश जाइत अछि। (3) तों गुनमन्त नागर (रसिक) छह। हमर सुन्दर पिआ छह। ....। (4)...(?)।

[142]

दिने-दिने बाढ़ए सुपुरुख नेहा। अनुदिने जैसन चान्दक रेहा॥1॥
जे छल आदर सेहो रहु[1] आधे। आओर होएत की पछिलाहु बाधे॥2॥
विधिबसे जदि होअ अनुगति बाधे। तैअओ सुपहु नहि धर अपराधे॥3॥
पुरत मनोरथ कत छल साधे। आबे कि पुछह सखि सब भेल बाधे॥4॥
सुरतरु सेओल अमिञ फल[2] लागी। तसु दूखन नहि हमहि अभागी॥5॥
भनइ वियापति सुनह सयानी। आओत मधुरपति तुअ गुन जानी॥6॥

1. तें रहु। 2. अभि...।

राधा सखीकें अपन प्रणय-हानिक व्यथा सुनबैत छथि – (1) सुनैत छलहुँ भद्र पुरुषक प्रेम दिन-दिन ओहिना बढ़ैत अछि जेना चानक कला प्रति दिन कनेक कनेक बढ़ैत अछि। (2) परन्तु हमरा प्रति पहुक जतबा आदर छल आब तकरो आधे रहि गेल अछि। आओर बढ़त तकर आशा नहि, पूर्वहु जे छल तकरो ह्रास होइत गेल। (3) जँ दैवात् अनुगमन मे कतहु त्रुटि होइत छैक तँ सुपुरुख ओकरा अपराध नहि मानैत छथि। (4) बहुत आशा छल जे सभ मनोरथ पूरत, परन्तु हे सखी, आब की पुछैत छह, सभ आशा बिलाए गेल। (5) अमृतफल पएबाक आशासँ कल्पवृक्ष सेबल (परन्तु कोनो फल नहि भेल)। ताहिमे हुनक दोख नहि, हमही अभागलि छी। (6) विद्यापति कहैत छथि, धैर्य धरह, तोहर गुण स्मरण कए मथुरापति कृष्ण अवश्य घुरि अओताह।

[143]

बालि बिलासिनि जतने आनलि रमन करब राखि।
जैसे मधुकर कुसुम न तोल मधु पिब मुख माखि।।1।।
माधब करब तैसनि मेरा।
बिनु हकारेओ तुअ निकेतन[1] आबए दोसरि बेरा।।2।।
सिरिस कुसुम कोमलि ओ धनि तोहहु कोमल कान्ह।
इङ्गित उपर केलि से[2] करब जे न पराभव जान।।3।।
दिने दिने दून पेम बढ़ाओब जैसे बाढ़ सिसु ससी।
कौतुकहु किछु बाम न बोलब निअर जाउबि हसि।।4।।

1. सुनिकेतन। 2. जे।

सखी कृष्णकें उपदेश दैत छथि – (1) नवयौवना रमणीकें यत्नपूर्वक तोरा लग अनलिअहु अछि। तों एकर मन रखैत एकरा संग रमण करिहह – ओहिना जेना भ्रमर फूलकें तोड़ैत नहि अछि, केवल मुह मखाए मधु पीबैत अछि। (2) हे माधव, ताहि तरहें रसरङ्ग करिहह जाहिसँ ओ बिनु

बजओनहु दोसर बेर तोहर घर आबए। (3) ओ राधा सिरीसक फूल-सन कोमल अछि आ' तोंहू तेहने कोमल (व्यवहारबाला) छह। संगिनीक इंगित (अनुमतिसूचक संकेत) पाबि केलिविलास करबह, जाहिसँ ओकरा कष्ट नहि होइक। (4) प्रेम दिन-दिन दूना बढ़बैत जएबह, जेना बालचन्द्र बढ़ैत अछि। विनोदहुमे कोनो अप्रिय कथा नहि बजिहह। प्रसन्न मुद्रामे ओकरा लग जइहह।

[144]

जनम होअए जनु जञो पुनु होइ। जुबती भए जनमए जनु कोइ।।1।।
होइह जुवति जनु होअ रसमन्ती। रसओ बुझए जनु हो कुलमन्ती।।2।।
निधन माङगञो बिहि एक पए तोही। थिरता दिह अवसानहु मोही।।3।।
मिलिह सामि नागर रसधारा। परबस जनु होअ हमर पिआरा।।4।।
होइह परबस बुझिह बिचारी। पाए बिचार हार कओन नारी।।5।।
भनइ विद्यापति अछ परकारे। दन्द समुद होअ[1] जिब दए पारे।।6।।

1. होएत।

विरहिणी राधा विरहक दसम दशाक बरण करैत छथि – (1) नीक थिक जे जगत् मे जन्मे नहि होअए। जँ जन्म होअए तँ केओ युवती भए नहि जनमओ। (2) जँ युवती होअए तँ रसिक नागरी नहि होअओ। जँ रस बुझनिहारि होअए तँ कुलवन्ति नहि होअओ। (3) हे विधाता, आब तोरासँ एके टा वस्तु मङैत छिअहु – निधन अर्थात् मृत्यु। आओर प्राण जएबाक कालहुमे हमरा स्थिरता (स्थैर्य) दिहह (जे ककरो प्रति कोनो सिकाइत मनमे नहि आबए)। (4) परजन्ममे रसिक नागर स्वामी भेटए। हमर ओ स्वामी परवश (आन नारीमे आसक्त) नहि होअए। (5) जँ परवशो होअए तँ हमरा बिचारबाक बुद्धि रहए, किएक तँ विचारक्षमता रहला पर कोनो नारी पराभवमे नहि पड़ि सकैत अछि। (6) विद्यापति

कहैत छथि, द्वन्द्वक एहि समुद्रकें प्राणे दए पार कए सकैत छह (प्रेमी-प्रेमिकाक बीच ई द्वन्द्व जीवन भरि चलैत रहत)।

[145]

पञ्चवदन हर भसमे धवला। तीनि नएन एक बरए अनला।।1।।
दुखे बोलए भवानी। जगत भिखारि मिलल हम सामी।।2।।
बिखधर भूखन दिग परिधाना। बिनु बिते ईसर नाम उगना।।3।।
भनइ विद्यापति सुनह भवानी। हर नहि निरधन जगत गोसाईं।।4।।

गौरी महादेव-सन पति पाबि विलाप करैत छथि – (1) हरकें पाँचटा मुह छनि आ' देह भस्मसँ उज्जर दपदप। तीनि टा आँखि; एकमे आगि धधकैत। (2) भवानी दुःखसँ विलाप करैत छथि। हाए, हमरा जगत भिखारि स्वामी भेटलाह। (2) बिखधर भूषण छनि आ' दिशे वस्त्र। वित्त किछु नहि आ' नाम ईश्वर। ताहि पर नाम उग्रनाथ। (4) विद्यापति कहैत छथि, हे भवानी सुनह। महादेव निर्धन नहि छथि। ओ तँ संसार भरिक स्वामी थिकाह।

[146]

नरि[1] बह नयनक नीर। पळलि रहए तसु[2] तीर।।1।।
सबखन भरम गेञान। आन पुछिअ कह आन।।2।।
माधव, अनुदिने खिनि भेलि राही। चौदसि चान्दहु चाही।।3।।
केओ सखि रहलिहे पेखि[3]। केओ सिर धुन धनि देखि ।।4।।
केओ कर साँसक आस। मञे धउलिहुँ तुअ पास।।5।।
विद्यापति कबि बानि[4] एत सुनि सारङ्गपानि।।6।।
हरषि चलल निञ[5] गेह। सुमरिए पुरुब सिनेह।।7।।

1. नदी। 2. तहि। 3. रइलि उपेखि। 4. भान। 5. हरि।

सखी राधाक विरहदशा कृष्णकें सुनबैत छथि – (1) आँखिक नोरसँ नदी बहए लागल अछि आ' विरहिणी राधा तकर तटपर पड़लि रहैत

अछि। (2) ओकर ज्ञान सदा भरमैत रहैत छैक। पुछबैक किछु तँ कहत किछु आने। (3) हे माधव, राधा दिन-दिन चतुर्दशीक चानहुसँ अधिक क्षीण होइत गेलि अछि। (4) केओ सखी ओकरा पर्यवेक्षण कए रहलि अछि तँ केओ ओकर अवस्था देखि सिर धुनैत अछि। (5) केओ साँसक आस कए रहलि अछि। हम दौड़लि-दौड़लि तोहरा लग अएलहुँ। (6-7) विद्यापति कहैत छथि, एतबा वचन सुनि शाङ्र्गपाणि कृष्ण पूर्वक प्रेम सुमरि अपन घर वृन्दावन चलि देलनि।

[147]

बुझहि न पारलि परिनति मोरि[1]। अन्धरेओ लळए बाट टकटोरि।।1।।
फल पाओल कए तोह सञे सीट। कएलह हाँडी बाँसक बीट ।।2।।
मञे जानलि अनुरागिनि तोरि[2]। ओर धरि रहति हृदअगत[3] चोरि।।3।।
निरजन जानि कएल तुअ कान। गुपुत रहल नहि जानल[4] आन।।4।।
सबतहु भेटी कएलह बोल। दुरजन बचने बजओलह ढोल।।5।।
विद्यापति ता जीवन सार। जे परदोस लुकाबए पार।।6।।

1. तोरि। 2. मोरि। 3. हृदय सँग। 4. जानत।

राधा कृष्णकें उलहन दैत छथि --- (1) तोरासँ गुप्त प्रेम कए हमर की परिणति होएत से हम नहि जानि सकलहुँ। आन्हरो लोक बाट टकटोरिकें चलैत अछि (हम बिनु बुझनहि-सुझनहि तोरासँ प्रेम कए बैसलहुँ)। (2) तोरासँ संगति कए परिणाम भोगि रहलि छी। तों हमरा बाँसक बीटक हाँडी बनाए देलह (भानस भए गेलाक बाद हाँडी बाँसक बीटमे फेकि देल जाइत छल)। हम अपनाकें तोहर अनुरागिनी बुझैत रही आ' विश्वास कएल जे चोरि (गुप्त प्रेम) अन्त धरि हृदयगत (गुप्त) रहत। (4) निर्जन जानिकें प्रेम निवेदन तोरा कानमे देलिअहु। मुदा से गुप्त नहि रहल। आनो लोक जानि गेल। (5) तों सर्वत्र ई बात प्रकट कए देलह।

दुर्जनक कहला पर तों ढोल बजाबए लगलह। (6) विद्यापति कहैत छथि, तकर जीवन श्रेष्ठ थिक जे आनक दोखकें छिपाए सकए।

[148]

परतह परदेस परहिक आस। विमुख न करिअ अबस दिअ बास।।1।।
X X X । एतहि जानिअ सखि पिआनत कथा।।2।।
भल मन्द ननन्द हे मने अनुमानि। पथिकके न बोलिअ टूटलि बानि।।3।।
चरन पखालन आसन दान। मधुरेहु बचने करिअ समधान।।4।।
ए सखि अनुचित एते दुर जाइ। आओर करिअ जत अधिक बड़ाइ।।5।।

विरहिणी बटोहीसँ कामतृप्तिक इच्छा करैत ननदि कें बुझबैत छथि—(1) बटोही तँ प्रत्यह (सभ दिन) परदेसहिमे रहैत अछि। ओकरा अनके आस रहैत छैक। तँ बटोहीकें विमुख नहि करी। ओकरा बास अवश्य दिऐक। (2) ....। हे सखी पतिक उपदेश हम एतबे जनैत छी हे सखी। (3) की नीक (कर्तव्य) की अधलाह (अकर्तव्य) से मनमे बिचारि बटोहीकें टूटल बोल नहि कहबाक चाही। (4) पाएर धोबाक पानि, बैसक आ'मधुर वचन एहि तीनहुसँ ओकर सत्कार करबाक चाही। (5) हे सखी, एतबहुमे चूकब अनुचित होएत। एहि तीनू सँ अधिक जतेक सेवा कए सकी ततेक बड़ाइ।

[149]

जलद बरिस घन दिवस अन्धार। रयनि भरमे हमे साजु अभिसार।।1।।
पाछिल[1] करमे सफल भेल काज। जलदहि राखल दुहु दिस लाज।।2।।
मञे कि बोलब सखि अपन गेआन। हाथिक चोरि दिवस परमान।।3।।
मञे दूती मति मोरि हरास। दिवसहि के जा' नित्र पिअ पास।।4।।
आरति तोरि कुसुमसर सङ्ग[2]। अति जीवने देखि अति रङ्ग[3]।।5।।
दूती बचने सुमुखि भेलि लाज। दिवस अएलाहुँ परपुरुख समाज।।6।।

1. आसुर। 2. कुसुम रस रङ्क। 3. सङ्क।

दूती वर्षाभिसारका/दिवाभिसारिका राधाकें कहैत छथि — (1) मेघ जोरसँ बरसि रहल अछि। दिनहुमे अन्धकार पसरि गेल अछि। हम भ्रममे पड़ि गेलहुँ जे राति थिक, आ' तें तोहर अभिसार सजाओला। (2) पूर्वक पुण्यसँ काज (अभिसार) सफल भेल। मेघ दूनू दिस लाज रखलक (खूब अन्धकार कए)। (3) हे सखी, हम अपन ज्ञान (अज्ञान) की कहिअहु। दिन-देखार हम हाथीक चोरि कएल (तोरा कृष्णक ओतए पहुँचाओल)। (4) हम दूती थिकहुँ, हमर बुद्धि भासि गेल। दिन-देखार के कामिनी पिआक लग जाए सकैत अछि। (5) एक दिस तोहर आतुरता आ' दोसर दिस कामदेवक सहकार। जतेक जीबी ततेक रंग देखी। (6) दूतीक वचन सुनि सुन्दरी लजाए गेलीह जे कोना रातिक भ्रमे दिन-देखार प्रियतमक समीप अएलहुँ।

[150]

बाट भुड़कम ऊपर पानि। दुहु कुल अजस[1] अडगिरलहुँ आनि[2]।।1।।
परनिधि हरलए साहस तोर। के जान कओन गति करबए मोर।।2।।
तोरे बोले दुति तेजल नित्र गेह। जिब सञो तौलल गरुअ सिनेह।।3।।
लहु कए बोललह गुरु बड भार। दूतर जत्रुनि[3] दूर अभिसार।।4।।
दसमि दसा हे बोलब की तोहि। अमित्र बोलि बिख देलए मोहि।।5।।

1. अपजस। 2. जानि। 3. रजनि।

राधा दूतीकें उपराग दैत छथि — (1) बाटमे नीचाँ सापहि साप आ' ऊपर पानि पड़ैत। एहना समयमे तों हमरा कृष्णक लग आनि दूनू कुलमे कलंक लगओलह। (2) बड़ साहस कए आनक धन चोरओलह। जानि नहि हमर कोन दुर्दशा तों करबह। (3) हे दूती, हम तोरे कहने अपन घर छाड़ल। प्रेमकें प्राणहुसँ बढ़िकें मानल। (4) एतेक भारी (संकट भरल) काज (अभिसार) कें तों छोट कए बुझओलह। दुस्तर (अगम-अथाह)

यमुना नदी आ' दूर संकेतस्थल। (5) हम तँ दसम दशा (मरण) पर पहुँचि गेलहुँ। तों अमृत कहि हमरा विष दए देलह।

[151]

प्रथमहि अलक तिलक लेब साजि। काजरे चञ्चल लोचन आँजि।।1।।
जाएब पसने[1] आइग सबे गोए। दुरहि रहब[2] ते अरथित होए।।2।।
सुन्दरि प्रथमहि रहब लजाए। कुटिले नयने देब मदन जगाए।।3।।
झाँपब कुच दरसाओब आध। खने खने सुदिढ़ करब निबिबान्ध।।4।।
मान कइए दरसाओब भाव। रस राखब ते पुनु पुनु आब।।5।।
मञे कि सिखउबिसि आओ रसरङ्ग[4]। अपनहि गुरु भए कहत अनङ्ग।।6।।
विद्यापति कवि एह रस गाब। नागरि कामिनि भाव बुझाब[5]।।7।

1. बसने जाएब हे। 2. बर। 3. सुन्दरि मञे। 4. आओर रङ्क। [] नगु. सँ।

सखी नवयौवना नायिकाकें रतिरङ्गक रीति सिखबैत छथि — (1) पहिने अलक तिलक साजि लेबह (साज-सिङार कए लेबह।) चञ्चल आँखिमे काजर लगाए लेबह। (2) तखन बस्त्रसँ सम्पूर्ण अंगकें झाँपि पिआ लग जइहह। पहिने दूरहि रहिहह जाहिसँ पिआ उत्कण्ठित रहथि। (3) हे सुन्दरी, पहिने लजाइलि रहबह आ' कुटिल दृष्टिसँ पिआ दिस ताकि हुनकामे भाव जगएबह। (4) स्तन आधा झपने रहिहह आ' आधा उघार कए हुनका देखबिहह। अपन चीरक डोरी(कसनी)क गेंठकें बेरि-बेरि कसिहह। (5) मान कए अपन भाव (संगमक लालसा) प्रकट करिहह। रस (प्रीति) कें बचओने रहिहह (कोनो अप्रिय चेष्टा नहि करिहह), जाहिसँ पिआ बेरि-बेरि तोरा लग आबथि। (6) हम आओर रसरंग की सिखएबहु। कामदेव स्वयं गुरु भए कहतहु। (7) विद्यापति कवि ई सरस गीत रचलनि आ' ई बुझओलनि जे नागर ओ नागरिमे रससंचार कोना होइत अछि।

[152]

सगर संसारक सारे, अछए सुरत रस हमर पसारे।।1।।
छुइ जनु हलह कन्हाई, आरति मान न हलिअ नड़ाई।।2।।
दुरहि रहह[1] मोरि सेबा, पहिल पढ़ओक उधारि न देबा।।3।।
हृदय हार मोर देखी, लोभे निकट नहि होएब बिसेखी।।4।।
मिलत उचित परिपाटी, मधथ मनोज घरहि घर साटी।।5।।
विद्यापति कह नारी, हरि सञो कैसन रौक उधारी।।6।।

1. रहओ।

राधा लोभाएल कृष्णकें चेतबैत छथि -- (1) हमर दोकानमे संसारक सर्वश्रेष्ठ वस्तु सुरत-रस बिकाइत अछि। (2) आर्तिवश (बेगरतू भए) अपन मान-मर्यादा गमाए एकरा छूबह नहि। (3) हमर प्रार्थना जे दूरहि रहह। पहिल बोहनी उधार नहि देबहु। (4) हमरा गरामे हार देखिकें लोभाए अधिक लग नहि आबह। लेअए चाहह तँ व्यापारक परिपाटीक अनुसार भेटि सकैत छहु। (5) कामदेव दलाल होएताह जे घर-घर क्रेता-विक्रेताक बीच साटि (मेल, सहमति) करबैत छथि। (6) विद्यापति कहैत छथि, हे नारी (राधा), सुनह, हरिक संग सओदा करबामे नगद कि उधार तकर प्रश्ने नहि उठैत अछि।

[153]

सुपुरुस भासा चौमुख बेद। एत दिन बुझल अछए[1] नहि भेद।।1।।
से तठमहि[2] अछ सब मन जाग। तोहें बोलि बिसरह हमर अभाग।।2।।
चलचल माधब कि कहब[3] जानि। समयक दोसे आगि बम पानि।।3।।
रयनिक बान्धब दुर बस[4] चन्द। भल जन राखए तेजए मतिमन्द।।4।।
कलिजुग गति साधुक मन भङ्ग। सबे बिपरीत कराब अनङ्ग।।5।।

1. अछल। 2. तहि। 3. कहब 4. रयनिक ...व दुर जा। 5. हृदय तेजए नहि मन्द। (6) के साधु।

राधा कृष्णपर वचन-भंगक आरोप लगबैत छथि -- (1) एतेक दिन बुझैत रही जे भद्रपुरुषक वचन आ' ब्रह्माक वेद दूनूमे कोनो भेद नहि अर्थात् दूनू अटल होइत अछि। (2) से बात तँ तहिना ताही ठाम पूर्ववत् अटल अछि - मनमे एहने लगैत छैक। (3) परन्तु तों अपन बाजल वचन बिसरि गेलह से हमर अभाग्य; तोहर कोनो दोख नहि। (4) जाह है माधव, एनएसँ जाह। जानि गेलहुँ। कहबहु की? समयक दोखेँ पानिओ आगि उगिलए लगैत अछि। (5) रातिक बन्धु चन्द्रमा दूरमे रहैत छथि। नीक लोक अपन वचनक पालन करैत छथि, बुड़िबक ओकरा तेजि दैत अछि। (6) कलियुगक प्रभावेँ आब नीको लोकक मन (वचन) टूटए लागल अछि। कामदेव सभटा विपरीत काज कराए दैत छथिन्ह (कामवश भए आन रमणीमे फँसि लोक अपन वचनसँ डिगि जाइत अछि।)

[154]

अपनहि नागरि अपनहि दूत। स अभिसार न जान बहूत।।1।।
की फल तेसर कान जनाए। आनब नागर नयने बझाए।।2।।
ए सखि रखिहसि अपनुक लाज। परक दुआरें करिह जनु काज।।3।।
परख दुआरें करिअ जञो काज। अनुदिने अनुखने पाइअ लाज।।4।।
दुहु दिसि एक सञो होइक विरोध। तकरा बजइते कतए निरोध।।5।।

सखी राधाकें स्वयंदौत्यक शिक्षा दैत छथि — (1) हे सखी, जाहि अभिसारमे नायिका अपनहि नागरि सेहो बनए आ' दूती सेहो तकर भनक बहुतकें नहि लागि सकैत छैक (3) अपन गोपनीय बात (गुप्त अभिसार) तेसराक कानमे जनाएब व्यर्थ। एकसरिए अपनहि जाए नागरकें नयनसँ (आँकिक इशारासँ) बझाए लए आनह। (4) हे सखी, अपन लाज अपनहि राखह। एहन काज अनका द्वारा नहि कराबह। (5) जँ अनका द्वारा करएबह तँ दिन-दिन बेरि-बेरि लाज पबैत रहबह। जँ दूनूक बीच विरोध (झगड़ा) होएत तँ ओ उघार कए देत। ओकर मुह के बन्द करतैक?

[155]

दरसने लोचन दीघर धाब। दिनमणि तेजि कमल जनि आब[1]।।1।।
कुमुदिनि चान्द मिलल सहबास। कपटे नुकाबिअ मदन बिकास।।2।।
साजनि माधब देखल आज। महिमा छाड़ि पळाएल लाज।।3।।
नीवी ससरि भूमि पळि गेलि। देह नुकाबिअ देहक सेरि।।4।।
अपनेओ हृदय बुझाबए आन। एकसर सब दिस देखिअ कान्ह।।5।।

1. जाब।

राधा कृष्णकें देखि जे अनुभव कएल से सखीसँ सुनबैत छथि — (1) देखितहि हमर आँखि झट दए हुनका दिस दौड़ि गेल जेना कमल सूर्य दिस दौड़ए। (2) मानू कुमुदिनी आ' चान (राधा आ' कृष्ण) दुनूक मिलन भए गेल हो। कामजनित विकार (रोमांच आदि हाव-भाव) छलपूर्वक नुकाओल। (3) हे सखी, आइ हम कृष्णकें देखल। अपन गरिमा गमाए लाज पड़ाए गेल। (4) चीरक कसनी (डोरी) ससरिकें भूमिपर खसि पड़ल। अपन देह अपने देहक अओढ़मे नुकाबए लगलहुँ। (5) अपनो हृदय बुझाएल जेना आन भए गेल हो। सभ दिस एकसरे कान्हे-कान्ह देखाए लगलाह।

[156]

सरूप कथा कामिनि सुनु। परेरि आगे कहह जनु।।1।।
तञे अति नीठुरि ओ अनुरागी। सगरि निसि गमाबए जागि।।2।।
ए रे राधे जानि न जान। तोहरे बिरहें बिकल[1] कान्ह।।3।।
तोरिए चिन्ता तोरिए नाम। तोरिए कहिनी सबहु[2] ठाम।।4।।
आओ[3] कि कहब सिनेह तोर। सुमरि सुमरि नयन नोर।।5।।
निते से आबए निते से जाए। हेरइते हँसइते न[4] लजाए।।6।।
न पिन्ध कुसुम न बान्ध केस। सबहि सुधाब तोरे उदेस[5]।।7।।

1. विमुख। 2. कहसब। 3. आओर। 4. सेन। 5. सुनाब तोर उपदेस।

सखी राधाकें कृष्णक विरहदशा सुनबैत छथि—(1) हे कामिनी, सत्य बात कहैत छिअहु, सुनह। ई बात अनका आगाँ जनु बाजह। (2) तों बड़ि निष्ठुर छह, आ' ओ कृष्ण तोरापर प्रेमासभा भए गेल छथुन। ओ तोहर विरहमे सगर राति जागल रहैत छथि। हे राधा, तों से जानिओ कें अनजान बनलि छह जे कृष्ण तोरा विरहमे विकल छथि। (4) ओ सदा तोरे ध्यान करैत रहैत छथि, तोरे नाम रटैत रहैत छथि आ' तोरे गप सभ ठाम करैत रहैत छथि। (5) तोरा प्रति कतेक प्रेम छनि से बेसी की कहिअहु। तोहर स्मरण कए-कए ओ नोर ढारैत रहैत छथि। (6) ओ नित्य तोरा लग अबैत छथि आ' लग दए जाइत छथि, तोरा देखैत आ' हँसैत लाजो नहि होहत छनि। (7) ने फूलक माला पहिरैत छथि, ने केस बन्हैत छथि। जकरा तकरासें तोहर उदेस पुछैत रहैत छथि।

[157]

अपना मन्दिर बैसलि अछलिहुँ घर नहि दोसर केवा।
तहिखने पहिआ पाहोन आएल बरिसए लागल देवा।।1।।
के जान कि बोलति पिसुन परौसिनि वचनक मेल अवकासे।
X X X X X ।।2।।
मन्दिर' अन्धार निरन्तर धारा दिवसहि रजनी भाने।
कओन² कहब हमे के पतिआएत जगत विदित पञ्चबाने।।3।।

1. धर। 2. कओनक।

नायिका अतिथिसँ सम्भोग कए तकरा छिपएबाक प्रयास करैत अछि -- (1) अपना घरमे बैसलि रही। घरमे दोसर केओ नहि छल। तखनहि एक टा पाही (बाहरी, अनचिन्हार) पाहुन आएल आ' मेघ बरिसए लागल। ....। (2) जानि नहि चुगिलाहि पड़ोसिनि सभ की बाजत। एहनि पड़ोसिनि सभकें बजबाक (हमरा पर कलंक लगएबाक)

अवसर भेटि गेलैक। (3) ककरा की उत्तर देबैक। हमर बात के पतिआएत। कामदेव तँ जगत मे विदित छथिए।

[158]

दुरजन बचन लहए सब ठाम। बुझल न रहए जावे परिनाम।।1।।
तबहि¹ दूर जा' जबहि बिचार। दीप देले घर न रह² अन्धार।।2।।
मधुरे बचने सखि कहब मुरारि। सुपहु रोस कर दोस बिचारि।।3।।
से नागरि तोहें गुनक निधान³। अलपहि माने बहुत अभिमान।।4।।
कके बिसरलि हे पुरुब परिपाटि। लाउलि लतिका की फलकाटि।।5।।
भनइ विद्यापति एहु रस जान। सिबसिंह लखिमा देबि रमान।।6।।

1. ततहि। 2. नहि रह घर। 3. गुणनिधान। [] नगु. सँ।

राधा कृष्णकें मनएबाक हेतु सखीद्वारा संवाद पठबैत छथि -- (1) दुष्ट लोकक वचन (चुगिलपन) सभ ठाम ताबते फबैत छैक जा' ओकर परिणति बूझल नहि होइक। (2) विचार-विवेक जगैत छैक तखनहि ओहि वचनक कुपरिणाम दूर भए जाइत छैक ओहिना जेना दीप देलापर घर सँअन्धकार दूर भए जाइत अछि। (3) हे सखी, हमर ई विनती कृष्णकें कहबहुन्ह जे बुझनुक प्रेमी दोषक (सुनल सिकाइतक) जाँच कए लैत छथि, तखिनहि रुसैत छथि। (4) हे कृष्ण, राधा नागरि (चतुर नायिका) छथि आ' तोंहू गुणवान् छह। तखन ओ एक रती मान कएलक तँ तों एना अभिमान किएक कए बैसलह? (5) किएक तों पूर्वक रीति बिसरि गेलइ? रोपल प्रेम-लतिकाकें एना काटि किएक रहल छह? (6) विद्यापति..।

[159]

कूपक पानि अधिक होअ काढ़ि। नागर गुने नागरि रति बादि।।1।।
कोकिल कानन आनए¹ सार। बरखा दादुर करए बिहार।।2।।
असहनि² साजनि परिहर रोस। तञे नहि जानसि तोहरे दोस।।3।।
छओ रितु³ बारह मासक मेलि। नागर चाहए रङ्गहि केलि।।4।।

ते परि तकर करओ परिहार। कुरस[4] बोले जनु होअ बिकार।।5।।
हमरे बचने सखि[5] दुर कर रोस। हृदय फोलि[6] कर हरि परितोस।।6।।

1. अनित्र। 2. अहनिसि। 3. छव ओ। 4. करसु। 5. मोरे बोले दूर। 6. फुजी।

सखी रूसलि राधाकें बौंसैत छथि -- (1) उपछला पर कूपक पानि आओर बढ़ैत अछि (कनेक रूसाफूली भेलापर प्रीति बढ़ैत छैक)। नागरक (चतुर नायकक) गुणें (नीक प्रेमी भेटने) नागरिक प्रीति बढ़ैत छैक। (2) वसन्त ऋतुमे कोकिल काननकें सुन्दर बनबैत अछि तँ वर्षा ऋतुमे बेङ बिहार करैत अछि। (3) हे राधा, तों असहनि छह (तोरामे सहनशीलताक अभाव छहु)। तामस छाड़ह। तोरा अपना बुझबामे नहि अबैत छहु। वास्तव मे दोख तोरे छहु। (4) नागर सभ ऋतुमे सतत रंग-रभस चाहैत अछि। तों तकर प्रतिकार (परिहार) तेना करह जाहिसँ बिरस वचनक कारणें विकार (रस-भंग) नहि हो। (5) हमर बात मानि तामस हटाबह। हृदय खोलिकें कान्हकें परितुष्ट करह।

[160]

अभिसारिनि तजे कर सुभ साज[1]। ततमत करइते न होअए काज।।1।।
[गुरुजन परिजन डर कर दूर। बिनु साहस अभिमत नहि[2] पूर।।2।।
बिनु जपलें सिधि केअओ न पाव। बिनु गेलें घर निधि नहि आब]।।3।।
ओ परबालँभु तजे परनारि। हमे पए मधथ दुअओ दिस गारि[3]।।4।।
तोह हुनि दरसन एह मन लाग। तत कए देखिअ जैसन तोर भाग।।5।।
आनक कारने आगु के आह। अपन अपन भल सब कैओ चाह।।6।।
भनइ विद्यापति दूती सेह। दुइ मन मेलि कराबए जेह।।7।।
[भनइ विद्यापति सुन वरनारि। जे अङ्गिरिअ तों न गुनिअ गारि]

1. सुभ कर साज। 2. सिधि आस न। 3. दुहु दिस भेलिहु आरि। 4. ई हम। 5. सुमुखि। 6. काजक कारणें। [] नगु.सँ।

सखी राधाकें अभिसारक हेतु प्रेरित करैत छथि -- (1) हे अभिसारिणी, अभिसारक हेतु समुचित साज-सिङार करह। ततमत कएने काज नहि होएतहु। (2) गुरुजनक आ' पड़ो सी सभक डर नहि करह। बिनु साहस कएने मनोरथ पूर नहि होइत अछि। (3) बिनु जप तप कएने सिद्धि नहि भेटैत छैक। बिनु गेने लक्ष्मी स्वयं नहि अबैत छथिन। (4) ओ कृष्ण परपुरुष थिकाह आ' तों परस्त्री थिकह। दूनूक मिलन करओनिहारि मध्यस्थ भेलि हम दूनू दिससँ गारि (कुवचन) सुनैत छी। (5) हमरा तँ इएह इच्छा रहैत अछि जे दुनूकें परस्पर दर्शन (मिलन) हो।........ तोहर जेहन भाग्य होअहु। (6) आनक कारणें आन के आगु अबैत अछि। सभ अपने-अपने भल चाहैत अछि। (7) विद्यापति कहैत छथि, उत्तम दूती से थिक जे दूनूक मनमे मेल कराबए। [विद्यापति कहैत छथि, हे ललना, सुनह। जे गछि लेलह तकरा आब गारि नहि बूझह]।

[161]

उचित बएस मोर[1] मनमथ चोर[2]। चेलिआ बुढ़िआ करए अगोर।।1।।
बारह बरख अवधि कए गेल। चारि बरख तन्हि गेलाँ भेल।।2।।
बास चाहइते पथिकहु होअ लाज[3]। सासु ननन्द नहि अछए समाज।।3।।
सात पाँच घर पिअ[4] सजि देल। तन्हि[5] देसाँतर आँतर भेल।।4।।
पड़ेओस बास जोएन सत भेल। थाने थाने अवयव सबे गेल।।5।।
साँझ नुकाबिअ तिमिरक सान्धि। पड़ओसिनि देअए फळकी बान्धि।।6।।
मोरा मन हे खनहि खन भाँग। जोबन[6] गोपव कत मनमथ जाग।।7।।

1. मेरे। 2. चोर। 3. पथिकहु लाज। 4. तन्हि। 5. पिआ। 6. गमन।

युवती विरहणी द्वार पर आएल बटोहीसँ कहैत अछि -- (1) हे पथिक, हमरा आब उचित (तरुण) बएस भेल। काम प्रबल भए गेल अछि। एकटा बूढ़ि दासी अगोरैत अछि। (2) पिआ बारह बरखक अवधि दए परदेस गेलाह। तनिक गेना चारि बरख भए गेल। (3) एहनामे पथिकहुकें

बास मडबामे लाज होइत छैक। संगमे ने सासु रहैत अछि ने ननदि। (4) पिआ पाँच सात गोट घर बान्हि देलनि आ' परदेस चलि गेलाह। (5) पड़ोसी सभ योजन भरि दूरमे बसैत अछि............................ (?) (6) साँझहि अन्हारक सोन्हिमे नुकाए रहैत छी। पड़ोसिनि केबाड़ भिड़ाए दैत अछि। (7) हमर मन छन-छन उछटैत रहैत अछि। यौवनक रक्षा कोना करब? कामदेव जागृत रहैत छथि।

[162]

ततहि धाओल दुहु लोचन रे जेहि पथे गेलि बरनारि।
आसा लुबधल न तेजए रे कृपनक पाछु भिखारि।।1।।
सहजहि आनन सुन्दर रे भउहें सुरेखलि' आँखि।
पङ्कज मधु पिबि मधुकर[2] रे उड़ए पसारलि पाँखि।।2।।
आजे देखलि धनि जाइते रे रूप रहल मन लागि।
[तेहि खन सञो गुन गोरब रे धैरज सबे गेल भागि]।।3।।
रूप लागि मन धाओल रे कुच कञ्चन गिरि सान्धि।
तें अपराधें मनोभव रे ततहि धएल जनि बान्धि।।4।।
इङ्गित नअन तरङ्गित रे वाम भउह भेल भङ्ग।
तखने आन नहि जानल हे गुपुत मनोभव रङ्ग।।5।।
चन्दने चरचु पओधर रे गृम गजमुकुता हार।
भमसे धवल तनु सङ्कर रे सिर सुरसरि जलधार।।6।।
बाम चरन अगुसारल रे दाहिन तेजइते लाज।
तखन मदन सर पूरल रे गति गञ्जए गजराज]।।7।।
विद्यापति कवि गाबिहा रे गुन बुझ रसिक सुजान।
राजा रूपनराएन रे लखमादेवि रमान।।8।।

1. उनिरित। 2. मधुकर मधु पिबि। [] नगु-सँ

राधाक रूपपर मुग्ध कृष्ण अपन अनुभव सखीकें सुनबैत छथि -- (1) हमर दूनू आँखि ओम्हरहि दौड़ि गेल जेम्हर ओ सुन्दरी राधा गेलीह,

जेना आशासँ लोभाएल भिखारि कृपणक पाछु नहि छोड़ैत अछि। (2) हुनक सहज सुन्दर मुखमे कजराओल आँखि लागल जेना कमलक मधु पिबि भ्रमर उड़बा लेल पाँखि पसारने हो। (3) आइ राधाकें जाइत देखल तँ हुनक रूपपर मन आसक्त भए गेल आ' तखनहिसँ अपन गुण, गोरख आ' धैर्य सभ पड़ाए गेल। (4) रूप पर आकृष्ट मन हुनक स्तनरूपी पर्वतक खोहमे पैसि गेल, ताहि अपराधें कामदेव हमर मनकें मानू ततहि बान्हि रखलनि। (5) हुनक इङ्गितयुक्त नयन तरंगित (चञ्चल) छल आ' भौंहमे भंगिमा छलनि। तखनहि गुप्त कामदेव जे लीला कएल से आन नहि जानि सकैछ। (6) हुनक स्तन पर चन्दन लेप आ' गरामे मोतिक हार छल। से लागए जेना भस्मसँ उज्जर देह बाला शिवक माथ पर गंगाक धार हो। (7) राधाकें पएबाक हेतु बाम पाएर तँ आगाँ बढ़ाओल, परन्तु दहिना पाएर बढ़बैत लाज भए गेल। तखनहि कामदेव बाणसँ सगर देह भरि देलनि। राधा अपन गतिसँ गजराजकें जितैत चलि देलनि। (8) ई गीत विद्यापति रचल। एकर गुण बुझनिहार थिकाह लखि... ।

[163]

बोललि बोल उतिम पए राख। नीच सबद भल जन नहि[1] भाख।।1।।
हमे उत्तम कुल गुनमन्ति नारि। एतबा नित्र मने हलब विचारि।।2।।
सिनेह बढ़ाओल सुपुरुख जानि। दिने दिने कएलह आसा हानि।।3।।
कतन जग न अछ रसमय फूल। मधुकर मालति मधु[2] पए भूल।।4।।
गेल दिबस[3] पुनु पलटि न आब। अबसर बहलाँ रह पचताब।।5।।

1. जन की नहि। 2. मालनि मधु मधुका। 3. दीन।

राधा कृष्णसँ वचनभंगक सिकाइत करैत छथि -- (1) केवल उत्तम जन अपन वचनक पालन करैत छथि। भल जन कहिओ नीच शब्द नहि बजैत छथि। (2) हम उत्तम कुल बाली गुनमन्ति नारि थिकहुँ। एतबा विचार, हे कृष्ण तों अपना मनमे राखह। (3) हम सुपुरुख बूझि तोरासें

प्रेम कएल। तों तँ दिन-दिन हमर आशा भंग करैत रहलह। (4) संसारमे बहुतो सरस फूल अछि, किन्तु भ्रमर केवल मालतीक मधुपर मोहित होइत अछि (तों हमरा नहि चीन्हि आन-आन नारिक पाछाँ बौआइत छह)। (5) जे समय बीति जाइत अछि से फेर घुरिकें नहि अबैत अछि। अवसर बीति गेलापर पश्चातापे रहि जाइत छैक।

[164]

त्रिबली अछलि तरङ्गिनि भेलि। जनि बढ़िहाए उबटि[1] चलि गेलि।।1।।
नीचाँ[2]सञो हे ऊँच चल जाए। सोनक[3] भूधर गेल दहाए।।2।।
माधब सुन्दरि नयनक बारि। डूबल पीन पयोधर झारि[4]।।र3।।
सहजहि सङ्कट परबस पेम। पातक भीति परापति जेम।।4।।
तोहरि पिरीति रीति दुर गेलि। कुल सञो कुलमन्ति कुलटा भेलि।।5।।

1. उपटि। 2. नेआ। 3. कनक। 4. पीन पयोधर डूबल झारि।

दूती कृष्णकें उलहन दैत छनि -- (1) (विरहिणी राधक आँखिसँ ततेक नोर झहरल जे) ओकर त्रिवली मानू नदी भए गेल आओर ओ नदी बाढ़ि पाबि उत्पथ भए (अपन सहज बाट त्यागि) चलि पड़ल। (2) नीचाँ (त्रिवली) सँ ऊँच दिस दौड़ल। (बाढ़िसँ) स्वर्णपर्वत (स्तन) दहाए गेल। (3) हे माधव, सुन्दरी राधाक आँखिक नोरसँ ओकर पुष्ट स्तनरूपी झारी डूबि गेल। (4) परवश प्रेम स्वभावतः संकट बाला होइत अछि, जेना... ? (5) हे कृष्ण, तों प्रीतिक रीति (प्रेमपरिपाटी) तोड़लह। बेचारी कुलमन्ति नारि कुल (घर) सँ बहराए कुलटा भए गेलि।

[165]

आध नयन दए तहुकर आध। कत रे सहब मनसिज अपराध।।1।।
काँ लागि सुन्दरि दरसन भेल। जेओ छल जीवन सेओ दुर गेल।।2।।
हरि हरि कञोन कएल हमे पाप। जे सबे सुखद ताहि तह ताप।।3।।
सब दिसि कामिनि दरसन जाए। तइअओ बेआधि बिरह अधिकार।।4।।

कञोन कहब मेदिनि से थोळ। सिब सिब एहि जनम भेल ओळ।।5।।

राधाक प्रथम दर्शनसँ प्रेमातुर कृष्ण स्वयं वेदना प्रकट करैत छथि -- (1) आधाक आध दृष्टिएँ राधा कें देखल। कामदेवक हम एतबे अपराध कएल। तकर दण्ड जानि नहि कतेक सहए पड़त। (2) कथी लए ओहि सुन्हरीक दर्शन भेल। (3) जीवनमे जेहो सुखशान्ति छल सेहो लुप्त भए गेल। हाए, हम ई कोन पाप कएल। जे वस्तुसभ पहिने सुख दैत रहए सेहो आब सतबए लागल अछि। (4) ... . ? तैओ जानि नहि किएक विरह-सन्ताप बढ़ले जाइछ। (5) ककरा कहबैक? संसारमे एहन थोळ लोक अछि (जे आनक दुःखव्यथा सुनए)। हाए, लगैत अछि जे आब एहि जन्मक (जीवनक) अन्त भए रहल अछि।

[166]

एके मधुजामिनि सुपुरुख सङ्ग। आइति न करिअ आसा भङ्ग।।1।।
मञे कि सिखाउबि तोहहि सुबोध। अपन काज होअ पर अनुरोध।।2।।
चल चल सुन्दरि चल अभिसार। अवसरें लाख लहए उपहार।।3।।
तरतमे नहि किछु सम्भव काज। आसा दए तोर मने नहि लाज।।4।।
पिआ गुनगाहक तञे गुनगेह। सुपुरुख बचन पखानक रेह।।5।।

सखी राधा कें अभिसार हेतु प्रेरित करैत छथि -- (1) एक तँ ई वसन्तक राति थिक, ताहिपर सुपुरुष (उतम नागर) सँ मिलन। जँ साध्य हो, ककरो आशा तोड़बाक नहि चाही। (2) हे राधा, हम की सिखएबहु, तों तँ स्वयम् अभिज्ञ छह। अपन काजमे ककरो आनक अनुरोधक कोन आवश्यकता? (कृष्णसँ मिलन तोहर अपन काज थिकहु। एहिमे आवश्यक नहि जे कृष्ण एहि लेल तोहर प्रार्थना करए आबथि)। (3) हे सुन्दरी, अभिसार करह। अवसर पर कएल उपकार लाख गुन होइत अछि। (4) तारतम्य कएने काज सिद्ध नहि होइत अछि। आश दए पाछु हटबह तँ मनमे लाज नहि होएतहु? (5) तोहर प्रियतम गुणग्राहक छथि आ' तों

गुणक खजाना छह (ताहिपर मिलनक वचन सेहो देने छथुन)। भलमानुसक वचन मानह पाथर परक रेखा थिक।

[167]

प्रथम समागम भुखल अनङ्ग। धनि रस राखि करब रतिरङ्ग।।1।।
लोभ न करबे आइति पाए। बडेओ भुखल नहि दुहु करें खाए।।2।।
चेतन कान्ह ताहहि जदि आथि। के नहि जान महते लब हाथि।।3।।
आनलि जतने अधिक अनुरोधि। पहिलहि जतने' हलब परबोधि।।4।।
हठ नहि करबे रति परिपाटि। कोमलि कामिनि बिघटति साटि।।5।।
जाबे रभस रह ताबे बिलास। बिमति बुझिअ जबे' न जाएब पास।।6।।
परिहरि कबहु धरब नहि बाहु। उगिलल चान्द' गिलाए नहि राहु।।7।।
[भलइ बिद्यापति कोमल कान्ति। कौसल सिरिस कुसुम अलि भान्ति]।।8।।

1. सबहि। 2. जने। 3. उगिलि चान्द तम गीलए राहु। [ ] नगु. सँ।

सखी कृष्णकें नवयौवन राधाक संग रमणक शिक्षा दैत छथि -- (1) प्रथम मिलन मे कामदेव भूखल रहैत छथि (कामोत्तेजना अधिक रहैत छैक)। तें कहैत छी, राधाक रस (रुचि) देखैत संगम करबह। (2) वशमे पबि अधिक लोभ नहि करबह। जकरा बड भूख लागल रहैत छैक सेहो दूनू हाथें नहि खाइत अछि। (3) हे कान्ह, तों जें बुझनुक छह तँ अपनहि बुझबह, के नहि जनैत अछि जे महाउतक आगाँ हाथी झुकैत अछि। (4) बहुत आग्रह कए राधाकें अनलहुँ। प्रथमतः यत्नपूर्वक एकरा परबोधबह (मनएबह)। (5) हठपूर्वक विलास नहि करबह। राधा कोमल स्वभावक अछि। हठ कएने साटि (सहमति) भंग भए जांएत। (6) राधाकें जतबे मन होइक ततबे विलास करबह। जखन विमन भए जाए तखन एकरा लग नहि जएबह। (7) विलास पूरा कए छाड़ि देलाक बाद फेर एकर बाँहि नहि धरबह। राहु उगिलल चानकें फेर नहि गिड़ैत अछि। विद्यापति कहैत छथि, राधा कोमलांगी अछि। सिरीसक फूलक सँगे जेना भ्रमर रमण करैछ तहिना रमण करब कौशल थिक।

[168]

हमे जुबती पति गेलाह बिदेस। लग नहि बसए पडउसिहु लेस।।1।।
सासु ननन्द किछुओ नहि जान।. आँखि रतउन्धी सुनए न कान।।2।।
जागह पथिक जाह जनु भोर। राति अन्धार गाम बड चोर।।3।।
सपनहु भाओर न देअ कोटबार। पओलहु लोत न करए बिचार।।4।।
अधिप न कर अपराधहु' साति। पुरुख महते सब अपन सजाति।।5।।
[बिद्यापति कवि एहु रस गाब। उकुतिहि कामिनि भाव जनाब]।।6।।

1.नृप इथि काहु करए नहि। [ ] नगु.सँ।

प्रवासीक विरहिणी स्त्री अपना ओतए टिकल पथिककें रातिमे जगाए अपन वासनाक तृप्तिक प्रयास करैत छथि -- (1) हम युवती छी। पिआ बिदेस गेलाह। लगमे लेशमात्र पड़ोसिओ नहि अछि। (2) सासु आ' ननदि किछुओ नहि जनैत छथि। आँखिमे रतौन्ही छनि आ' कान बहीर। (3) हे पथिक, जागह। भोरे चल नहि जाह। राति अन्हरिआ थिक। एहि गाममे चोर बहुत अछि। (4) कोतवाल सपनहुमे (कहिओ) भाओर (गश्त) नहि दैत अछि। लोत (गुप्त सूचना) पओलहुपर कोतवाल ध्यान नहि दैत अछि। (5) राजा अपराधो कएलापर ककरहु दण्ड नहि दैत छथि। सभ रक्षक आ' अधिकारी हमर अपने जातिक लोक थिकाह। (6) विद्यापति एहि रसक गायक थिकाह जाहिमे कामपीड़िता नारी पथिककें उक्तिक चमत्कारसँ अपन मनक भाव (सम्भोगक इच्छा) प्रकट करैत छथि।

[169]

पछाँ सुनिअ भेलि महादेइ कनक नाब बोकान।
गगन पसरि' रह समीरन सूप भरि के आन।।1।।
सुन्दरि आबे कि देखह देह।

बिनु हटबइ अरथ बिहुन जैसन हाटक गेह।।2।।
अपथ पथ परिचय भेले बसि दिन दुइ चारि।
सुरत रस खनएक पाइअ जाब जीव रह गारि।।3।।

1. परसि।

गतयौवना नायिका सखीकें अपन व्यथा सुनबैत छथि -- (1) पूर्वमे सुनैत रही जे पटरानी बनाए बोरा-बोरा सोन नाओ पर लादि-लादि आओत। वायु तँ आकाश भरि पसरल अछि, मुदा ओकरा सूपमे भरिकें के आनि सकत? (2) हे सुन्दरी, आब हमर देह की देखैत छह। देह आब तेहन लगैत अछि जेहन माल आ' मालिकसँ रहित हाटक घर। (3) कुमार्गमे (अनुचित रीतिएँ) दुइए-चारि दिनक मिलनमे प्रमीसँ परिचय भए गेल। संगमक रस तँ धने भरि भोगल, परन्तु कलंक जीवन भरि लागल रहल।

टि. --अर्थ खूब बैसैत नहि अछि।

[170]

टाट टूटले आइगन बेकत सबे मरजाद। राख।
टुना चटक बाज सञो बेसन जनु अइसन भाख।।1।।
साजनि तेजहि[2] बचन-रोध।
टाकु सन हिअ सोझ करहि[3] मानहि[4] बाइक बिरोध।।2।।
टेना चटक[5] बकहुल[6] देखल अँधैअ पोसल आनि।
आबे दिने दिने तैसन कएलह बाघ मरिसा कानि।।3।।

1. परदा। 2. तेजसि। 3. करसि। 4. मानसि। 5. चढ़ल। 6. बकबहुल।

सखी रूसलि राधाकें बौसैत छथि -- (1) टाट टुटलापर आङन व्यक्त (बेपर्द) भए जाइत अछि। सभ कैओ अपन-अपन कुलमर्यादाक रक्षा करैत अछि। टुना नामक पक्षी कतहु बाज पक्षीसँ बैर करए? एना नहि बाजह। (2) हे सुन्दरी, मुह फुलाएब छोड़ह। अपन हृदय टाकुजकाँ सोझ

कए लेह। ई बात मानह जे वक्र रहने विरोध होएबे करतहु। (3) टेना नामक पक्षीकें बकहुल नामक गाछपर देखल। अन्हैं साप आनिकें पोसल। आब तँ दिन-दिन तेहन लीला करैत छह जेना बाघ आ' महिसाक बीच कानि रहैत अछि।

टि. - सम्पूर्ण गीतक भाव अस्पष्ट।

[171]

हिम सम चान्दन आनी। उरपर[1] पौरि उपचरिअ सञानी।।1।।
तइअओ न जा तसु आधी। बाहर औखध भितर बेआधी।।2।।
अबहु हेरह हरि ओहे[2]। जिउति जुबति जस पाउब तोहे।।3।।
अबधि अधिक दिन लेखी। मून्द नयन मुख बचन उपेखी।।4।।
कण्ठ ठमाएल जीबे। बाति नडाए[3] निझाएल[4] दीबे।।5।।

1. उपर। 2.मोहे। 3. नबसि। 4. मिझाएल।

सखी राधाक विरह-दशा कृष्णकें सुनबैत छथि -- (1) बरफ-सन शीतल चानन आनि राधाक हृदयपर लेपि ओकर शीतोपचार कएल गेल। (2) तैओ ओकर व्यथा (जलन) दूर नहि भेलैक। व्याधि भीतर आ' ओषध बाहर, तखन गुण कोना करओ। (3) हे कान्ह, तों आबहु आबि ओकरा देखह, तखनहि युवती राधा जीउति आ' तों ओकर प्राण बचएबाक जस पए बह। (4) अवधि बितला बहुत दिन भए गेल से लेखा कए राधा आँखि मूनि लेलक आ' मुहसँ बाजब छाड़ि देलक। (5) ओकर प्राण कण्ठगत भए गेल छैक (कोनहु क्षण प्राणान्त भए सकैत छैक)। मानह दीप केवल बाती नड़ाएकें मिझाए गेल।

[172]

हृदयक कपट भेल नहि जानि। पर पेअसि हे देलि हमे आनि।।1।।
सुपुरुख बचन समहि[1] बेबहार। खल खरिआ दए सींचासि खार।।2।।
आबे हमे कान्ह बोलब की बोल। हाथक रतन हराएल मोर।।3।।

कके परतारलि नागरि नारि। बचन कौसल छले देव मुरारि।।4।।
पलटि पठाबह तन्हिके ठाम। केओ नहि[2] माधब बसए कुगाम।।5।।
जदि[3] अनुरागी तठमा जाह। से आबे अपन मनोरथ चाह।।6।।
लघु कहिनी भल कहइते आन। देले पाइअ कै नहि जान।।7।।

1.समथ। 2. जनु। 3. हरि।

सखी दूती कृष्णकें गंजन करैत छथि -- (1) है कृष्ण, हम तोहर हृदयक कपट नहि जानि सकलहुँ तहिँ हम परनारी आनि देलिअहु। (2) भद्र पुरुषक वचन आ' व्यवहार दूनू समान होइत अछि। तों तँ क्षत (धाओ) कए ओहि पर नोन छिटैत छह। (3) हे कृष्ण, आब हम तोरा की कहिअहु। हमर तँ हाथक रतन हराए गेल (भेल काज बिगड़ि गेल) । (4) हे देव मुरारि, तों वचन-कौशलक छलें नागरी नारि राधाकें किएक परतारलह? (5) कृपा कएकें ओकरा अपना घर पठाए दहक। एतए केओ कुगाममे नहि रहैत अछि। एतए सभ शिष्ट नागर/नागरि अछि, तकरा संग अभद्र व्यवहार नहि करह। (6) जँ तों सत्ये ओकरासँ प्रेम करैत छह तँ ओकरा ओतए जाए ओकरासँ मिलह (आब ओ एतए नहि आउति)। आब ओ अपन इएउ मनोरथ चाहैत अछि।............ (?)। ई बात के नहि जनैत अछि जे प्रेम दिऔक तखन प्रेम पाएब।

[173]

बचन अमित्र सम मने अनुमानि। निअर[1] अएलाहु तसु[2] सुपुरुख जानि।।1।।
तसु परिनति किछु कहहि न जाए। सूति रहल पहु दीप निझाए।।2।।
ए सखि पहु अबलेप सही। कुलिस ऐसन हिअ फाट नही।।3।।
करजुगे परसि जगाओल भाव। तअओ न तेज पहु नीन्द सोभाब।।4।।
हाथ झपाए रहल मुह बाए[3]। जगइते नीन्द गैल न होअ जगाए।।5।।

1.निरव। 2. तुअ। 3. लाए।

नायकक उदासीनतासँ विखिन्न नायिका सखीसँ कहैत छथि -- (1) अमृत-सन बोल सुनि मनमे अनुमान कएलहुँ जे नीक लोक अछि, तें ओकरा लग गेलहुँ। (2) तकर जे परिणाम भेल से हे सखी, की कहिअहु। ओ तँ दीप मिझाए सूति रहल। (3) ओकर ई धृष्टता सहि लेलहुँ। वज्र सन कठोर हृदय फाटल नहि। (4) दूनू हाथें देह छूबिछूबिकें ओकर भावना जगएबाक प्रयास कएल। तैओ ओकर निद्रालु स्वभाव हटलैक नहि। (5) ओ हाथसँ झाँपि मुह बओने रहल। जगले जे नीन पड़ल हो तकरा के जगए सकैत अछि।

[174]

सुजन बचन खोटि न लाग। जनि दिढ़ आलत दाग।।1।।
झूठक बोल चमकक आभ। सुनिअ देखिअ[1] एते[2] लाभ।।2।।
मानिनि मने न गुनहि आन। बूझए गुन[3] जञो हो गुनबान।।3।।
कुपुरुस सञे की कए कोप। ओहओ कान्ह जदुकुल गोप।।4।।
अति पवितर अथिक गाए। सेहओ पुन बरदक माए।।5।।

1. झूठाक बोल चकमक आभ। देखिआ सुनिअ। 2. बुझइ गुण। 3. सुपुरुष।

सखी कृष्णसँ रुष्ट राधाकें बुझबैत छथि -- (1) भल लोकक बचन कहिओ अन्यथा नहि होइत अछि। जेना ....?. । (2) फुसिआहक बोल आ' बिजुलीक चमक क्रमशः सुनबाक आ' देखबाक वस्तु थिक। एहि दूनूसँ एतबे लाभ, आन किछु नहि। (3) हे मानिनी राधा, कान्हक प्रति तों अन्यथा भाव नहि राखह। गुण सएह बूझत जे गुणवान् हो। (4) कुपुरुख पर कोप कए कोनो फल नहि होएतहु। कान्ह यदुकुलक होइतहुँ थिक तँ गोपे। (5) गाए परम पवित्र थिकथि। तैओ थिकीह तँ बरदहिक माए।

[175]

अहनिसि बचने जुडओलह कान। सुचिर[1] रहत सुख ई छल भान।।1।।
आबे दिने-दिने हे बुझल बिपरीत। लाज गमाए बिकल भेल चीत।।2।।
बिधिक बिरोधे मन्द सञो भेट। भाँड छुइल नहि भरले पेट।।3।।
लोभें करिअ हे मन्द जत काम। से न सफल हो जञो बिधि बाम।।4।।

1. अचिर।

[176]

आकुल चिकुरे बेढ़ल मुख सोभ। राहु कएल ससिमण्डल लोभ।।1।।
उभरल चिकुर माल धर[1] रङ्ग। जनि जमुना जल गाङ्ग तरङ्ग।।2।।
बदने सोहाओन स्रमजलबिन्दु। मदने मोति दए पूजल इन्दु।।3।।
बड़ अपरुब दुहु चेतन मेलि। कामिनि कर बिपरित रति[2] केलि।।4।।
पिआ मुख सुमुखि चुम्ब तेजि ओज। चान्द अधोमुख पिबए सरोज।।5।।
कुच विपरीत विलम्बित हार। कनककलस बम[3] दूधक धार।।6।।
किङ्कनि रनित नितहि छाज। मदन महासिधि बादन बाज।।7।।
[भनइ विद्यापति मने अनुमानि। कामिनि रम पिआ अनुमति जानि।]

1. कर। 2. बिपरित रति कामिनि कर। 3. जनि। [ ] नगु सँ।

कवि विपरीत रतिक वर्णन करैत छथि -- (1) नायिकाक केस छिड़िआएल अछि, ताहि बीच मुह शोभायमान अछि, से मानू राहु (केस) शशि (मुह) पर लोभाए आबि गेल हो। (2) छिड़िआएल केशराशिमे माला लगैछ जेना यमुना आ' गङ्गाक संगम हो। (3) मुह पर घामक ठोप लगैछ जेना कामदेव मोतिसभ चढ़ाए चानक पूजा कएने होथि। (4) दूनू नागर-नागरीक मेल अपूर्व अछि। कामिनी विपरीत रति करैत छथि। (5) सुन्दरी संकोच त्यागि पिआक मुह चूमैत छथि, से जेना चान निहुड़िकेँ कमलक रस पिबैत हो। (6) स्तन पर हार विपरीत दिशामे (नीचाँ) लटकल अछि; से लगैछ जेना सोनाक कलस (स्तन) सँ दूध (हार) केर धार बहैत हो। (7) कटिमे घुघरू रूनझुन करैछ; जे लगैछ जेना कामदेवक

महान् उपलब्धि (विपरीत-रति केर उत्सवमे बाजा बजाओल जाइत हो। (8) विद्यापति मन मे अनुमान कए कहैत छथि, कामिनी पिआक अभिमत (अभिलाष) जानि ई विपरीत-रति ठानल।

[177]

बदन झपाबए अलकक[1] भार। चान्द मण्डल जनि मिलए अन्धार।।1।।
लम्बित सोभए हार बिलोल। मुदित मनोभब खेल हिंडोल।।2।।
पिअतम अभिमत मने अबधारि। रति विपरीत रचलि[2] बरनारि।।3।।
मनि किङ्किनि कर मधुर बिराब। जनि जएतूर[3] मनोभब बाज।।4।।
रभसे निहारि अधर मधु पीब। नाञी कुसुमसर ओकठ जीब।।5।।

1.अलकओ। 2. रतलि। 3. जयतुङ्ग।

कवि विपरीत-रतिक वर्णन करैत छथि -- (1) नायिकाक केशराशिसँ नायकक मुह झपाए गेल। से लगैछ जेना अन्धकार चन्द्रमण्डलसँ मिलि गेल हो। नायिका लटकल चंचल हार शोभा पाबि रहल अछि, से लगैछ जेना प्रसन्न कामदेव हिंडुला झूलि रहल होथि। (3) नायिका नायकक इच्छा मनहि मन जानि विपरीत रति ठातनि देलक। (4) मणिमय घुघरू मधुर रूनझुन-रूनझुन करए लागल, मानू कामदेवक विजयवाद्य बजैत हो। (5) नायिका नायकक मुह कामातुर भावें निहारि अधर-रस पीलक।........ (?)।

[178]

घटक विधि विधाता जानि। काच कञ्चन हलल सानि[1]।।1।।
दुइ[2] सिरिफल सञ्चा पौरि[3]। कुन्दि बैसाओल कुच कचोरि।।2।।
रूप कि कहब हमे[4] बिसेखि। गए निरूपिअ तोरित[5] देखि।।3।।
बदन[6] नलिन सम बिकास। चान्दहु तेजल बिरुह बास[7]।।4।।
दिन रजनी हेरए बाट। जनि हरिनी बिछुरलि साट[8]।।5।।

1. छाड़लि हानि। 2. कुच। 3. पूरि। 4. मत्रे। 5. झटित। 6. नयन। 7. भास। 8. ठाट।

सखी कृष्ण कें राधाक रूपक वर्णन सुनबैत छथि -- (1) ब्रह्मा (कुम्हारसँ) चैल ढबाक। विधि (प्रक्रिया) जानिकें काँच सोन सानि (2) तकरा दुइ बेलक साँचमे ढारि सानपर खराजि कुचरूपी दुइ कटोरी बनाओल। रूपक वर्ण अधिक की करबहु; हे कान्ह, झटदए जाए अपनहि देखि लेह। बदन (मुख) कमल-सन विकसित छैक। चान सेहो विरुद्ध वास त्यागि देल (कमल आ' चान दूनूक वास एक ठाम नहि, परन्तु एतए दूनू एक ठाम अछि।) राधा साट (दल) सँ बिछुडलि हरिणी जकाँ दिन राति तोहर बाट तकैत रहैत अछि।

[179]

आसा खण्डह दए बिसबास। के जग जीबए तीनि पचास।।1।।
आन के बोलिअ गोप गमार। तोहरा सहज कुलक[1] बेबहार।।2।।
तोहें जदुनन्दन कि बोलिबों जानि। धन्धहि सड्ग सरूप सह कानि।।3।।
सुपरुख पेम हेम अनुमानि। मन्दा कालहु हो नहि[2] हानि।।4।।
आओर बोलब कत बोलइते लाज। फल उपभोगिअ जैसन काज।।5।।
सुन्दरि बचने कान्ह उपताप। X X X ।।6।।

1. सहजक कुल। 2. क नहि मन्द

राधा कृष्ण कें उलहन दैत छथि -- (1) तों विश्वास दएकें आशाभंग करैत छह (काल बितओने जाए रहल छह)। संसारमे के सए-डेढ़ सए बरख जीबि सकैत अछि। (2) आन जँ एहन काज (आशाभंग) करैत अछि तँ ओ 'गोप गमार' कहबैत अछि। तोहर तँ सहज व्यवहारो कुलक अनुरूप (गोआर-सन) छहु। (3) तों यदुनन्द थिकह, तोरा की कहबहु। तोरा तँ द्वन्दहि सँ सड्ग छहु (झगड़े नीक लगैत छहु); सत्यसँ शत्रुता छहु। (4) भद्रलोकक प्रेम सोन-सन होइत अछि। अधलाह कालहुमे ओहिमे

ह्रास नहि होइत अछि। (5) आओर कतेक बाजू। बजबहु मे लाज होइत अछि। लोक जेहन काज करैत अछि तेहन फल पबैत अछि। (6) राधाक एहन बात सुनि कृष्णकें सन्ताप भेलनि। X X X X X ।

[180]

के बोल पेम अमिञ रसधार[1]। अनुभवि बूझल गरलक सार[2]।।1।।
खएले बिख सखि हो परकार। बड़ मारख ओ देखितहि मार।।2।।
एत सब सजलह हमरा लागि। तूरे बेढि घर खोसलि आगि।।3।।
तञे ओठपातरि कि बोलिबों तोहि। बळ कए कुपथ[3] चलओलह मोहि।।4।।
तोरा करम धरम पए साखि। मन्दिओं[4] खाए पळउसिनि राखि।।5।।

1. अमिञ के धार। 2. गबउ अड्गार। 3. अपथ। 4. मन्दिउ।

राधा कृष्णसँ मिलओनिहारि दूतीकें उलहन दैत छथि - -(1) के कहैत अछि जे प्रेम अमृत-रसक धार थिक ? अनुभवसँ प्रतीत भेल जे अमृत नहि, गरलक क्षार थिक। (2) बिख खएने कोनो प्रतिकार भए सकैत अछि, किन्तु प्रेम बड़ घातक होइत अछि, ओ तँ देखितहि मारि दैत अछि। (3) ई सभ काज (कृष्णसँ संगति आदि) तों हमर हित लेल कएलह। परन्तु वास्तवमे तों आगि (अंगार) कें तूरमे लेपटाए हमरा घरमे खोंसि देलह। तों ठोरक पातरि छह (पेटमे कोनो बात नहि अरघैत छह), तें तोरा की कहिअहु। तों हठपूर्वक हमरा कुबाट (परपरुषप्रेम) धराए देलह। एकर साक्षी अछि केवल तोहर कर्म आ धर्म। डाइनिओ पड़ोसिनिकें बकसिकें खाइत अछि।

[181]

हरि रव सुनि हरि गो भय गो भरि गोतम गोरि लोटाई रे।
हरि रिपु रिपु मुखि बिदिस बसन देअ गो दिसे बिदिसे बौराई।।1।।
ए हरि
जदि तोहें परबस पेम विरत रस बञ्जि राखलि काहे[1] राही रे।

XX X X X X X ||2||

कुम्भ तनय भोजन सुत सुन्दरि मुख बसि अबनत भेल रे।

साँस समीर बाज बनि भुजगी हरि बिनु मुहहु न बोल रे।।3।।

समन्दलि सुन्दरि सात बरन लिखि तेसरा पद दिढ जानी रे।

राजा सिबसिंह रूपनराएन बियापति कवि बानी रे।।4।।

1. बचन दए राखिअ।

सखी पिहानीक भाषामे कृष्णकें उलहन दैत छथि -- (1) विरहिणी राधा हरि (कोकिल)क शब्द सुनिकें गो (चन्द्रमा) केर भयें गो (आँखि) मे नोर भरि गौतमक स्त्री अहल्या अर्थात धरती पर लोटाइत अछि। सूर्यक शत्रु राहु, तनिक शत्रु चन्द्र, तादृश मुहबाली (चन्द्रमुखी) राधा अफन वस्त्र दिशाविदिशामे (यत्र-तत्र) दए अर्थात् वस्त्र अस्तव्यस्त कएने गो (दसो) दिशा मे बौआइत अछि। (2) हे कृष्ण, यदि तों परवश (दोसरि नारीमे आसक्त) छह, वा प्रेमसँ विरक्त भए गेल छह तँ राधाकें वंचनामे फँसओने किएक छह ? कुम्भक पुत्र अगस्त्य ऋषि, तनिक भोजन समुद्र, तकर पुत्र चन्द्र सुन्दरी राधाक मुहमे बसि अवनत भए गेलाह अर्थात् राधा मुह लटकओने अछि। औकर श्वास लगैत अछि जेना सापक फुफकार हो। हरि शब्द छाड़ि आर कोनो शब्द ओकरा मुहमे नहि अबैत छैक। (3) सुन्दरी सात आखर लिखि संवाद देलक अछि - बिख खाए मरब। एहिमे तेसर आखर 'मरब' निश्चित जानल जाए। राजा शिवसिंह रूपनारायण रसज्ञ छथि; आ' विद्यापति रचयिता थिकाह।

[182]

इन्दु से इन्दु, इन्दु हर इन्दुत आओर इन्दु जन परगासे।

एक इन्दु हमे गगनहि देखल, तीनि इन्दु तुअ पासे।।1।।

कालि देखल हमे अदबुद रङ्गे मझु मन लागल दन्दा।

कओन कहब हमे के पतिआएत एक ठाम अछ चन्दा।।2।।

कओने इन्दु तारा कओने इन्दु तरुनी कओने इन्दु चक्र (?) समाजे।

एक इन्दु माधब एक इन्दु राधा? एक इन्दु गगनेरि माझे।।3।।

1. सञो खेलए।

कवि राधा-कृष्णक शोभाक वर्णन करैत छथि -- (1) एक चन्द्रमा से थिक जे आकाशमे अछि, दोसर से थिक जे महादेवक माथपर अछि आओर तेसर से थिक जे लोक मे प्रकाश पसारैत अछि अर्थात् राधाक मुख। एक चन्द्रमा हम सभ आकाशमे देखल, किन्तु तीन चन्द्रमा तोरा लग छहु। (2) कािल्ह हम एक टा अद्भुत दृश्य देखल, से मनमे छगुनता लागल अछि। ककरा कहबैक, के पतिआएत, तीन (?) गोट चान एक ठाम अछि (राधाक मुह, कृष्णक मुह ओ आकाशमे)। (3) कोन चन्द्रमा ताराक लग अछि ? कोन चन्द्रमा तरुणीक लग आ' कोन चन्द्रमण्डल लोकक बीच अछि ? एक चान माधवक सङ्ग खेलाइत अछि आ एक आकाशक बीचमे अछि।

[183]

करतललीन सोभए मुखचन्द। किसलए मिलु अभिनव अरविन्द।।1।।

कि करति[1] ससिमुखि कि बोलब[2] आन। बिनु अपराधें बिमुख भेल कान्ह।।2।।

अहनिस नयन गलए जलधार। खञ्जने उगिलल[3] मोतिम हार।।3।।

बिरहे बिखिन तनु भेल हरास। फूल सुखाएल रहल सुबास[4]।।4।।

झंखइते संसए पळल परान। अबहु न उपसम कर पञ्चबान।।5।।

भनइ बियापति दूती गोए बिनु सहलें[5] (?) परहित नहि होए।।6।।

1.कहति। 2. पुछसि। 3. गिलि उ(गि)लल। 4. सुखाएल रहल अछ वास। 5. (त) रसे। [] नगु. सँ।

कवि विरहिणी नायिकाक वर्णन करैत छथि -- (1) विरहिणी राधा अपन चान-सन मुह तरहत्थी पर रोपने अछि। मानू नवपल्लव पर नव कमल राखल हो। (2) बेचारी चन्द्रवदनी राधा कोन उपाय करत, अनका

की कहत से फुरैत नहि छैक। कृष्ण बिनु अपराधहि विमुख भए गेलथिन। (3) दिनराति आँखिसँ नोर झहरैत छैक। मानू खञ्जन पक्षी मोतिक हार उगिलि रहल हो। (4) विरहसँ मन विखिन्न् छैक आ' देह दुबराए गेलैक अछि। मानू फूल सुखाए गेल, केवल सौरभ रहि गेल हो। (5) झँकैत-झँकैत प्राणसंकटो उपस्थित भए गेल छैक। विद्यापति कहैत छथि, दूती................ । बिनु सहने (?) आनक हित करब सम्भव नहि। विद्यापति कहैत छथि, हे श्रेष्ठ ललना राधा, सुनह। धैर्य धएने रहह, कृष्णसँ मिलन होएबे करतहु।

[184]

जावे न मालति हो[1] परगास। तावे न मधुप कर[2] बिलास।।1।।
लोभ परिहारि सुनहि राङ्क। धके कि कतहु डूबिअ[3] पाङ्क।।2।।
तेज मधुकर ए अनुबन्ध। कोमल कमल न[4] मकरन्द।।3।।
एखने इछसि तासओं[5] सङ्ग। ओ अति सैसवे न बुझ रङ्ग।।4।।
कर मधुकर दिढ गेओँन। अपने आरति न मिल आन।।5।।

1. कर। 2. न ता चाहि मधुप। 3. डूबबि। 4. लीन। 5. अहेन।

सखी, भ्रमर व्याजें कृष्णकें बुझबैत छथि -- (1) जा धरि मालती फुलाएल नहि अछि ता धरि हे भ्रमर, तों ओकरा सँ संगम नहि करह। (2) हे रंक-सन आतुर भ्रमर, लोभ छाड़ि हमर बात सुनह। हठात् पाँकमे नहि डूबह। (3) लोभ छाड़ि हमर बात सुनह। हठात् पाँकमे नहि डूबह। (4) हे भ्रमर, ई आग्रह छाड़ह। कोमल कमलमे मकरन्द नहि होइत छैक। (4) एखनहि तों ओकरा संगम करए चाहैत छह से नीक बात नहि। ओ एखन बहुत छोटि अछि, रंग-रभस की थिकैक से नहि जनैत अछि। (5) हे भ्रमर ज्ञान (मन) कें दृढ करह। अपने आतुर छह तें आनो ओहने आतुरतासँ आबि मिलतहु से आशा नहि करह।

[185]

जञो दिठिओलें ई मति तोरि पुनु हेरसि किए ए परि गोरि।।1।।
भेल के कर धए हठे पर-नाह। बाघ मिता न जीबे पए आह।।2।।
अइसना सुमुखि करिअ कके रोस। मञे कि बोलिबों सखि तोहरे दोस।।3।।
अइसने[2] अययवे ई बेबहार। पर पीड़ा जीवन थिक छार।।4।।
भल कए पुछलए घुरि संसार। ओर[3] सूते गढि काट कुम्हार।।5।।
गुन जञो रह गुननिधि सञो सङ्ग। विद्यापति कह ई बड रङ्ग।।6।।

1. हो खापरि मोरि। 2. अहेने। 3. तर।

सखी राधाकें सहसा कृष्णक प्रेममे फँसबासँ रोकैत छथि -- (1) यदि ओकरा आँखि सँ देखिने तोहर एहन हाल (मति) भए गेल छहु तँ फेर हे गोरि, ओकरा दिस एना तकैत किएक छह? हाथ धए के कोन पर-स्त्रीक पति बनल अछि? बाघ ककरो मित्र नहि......... ..(?)। एहना स्थितिमे हे सखी, तों क्रोध किएक करैत छह? हम की कहिअहु; दोख तोरे थिकहु। एहन देह-दशामे ई व्यवहार? अनका सतओनिहार जीवन बूझह छाउर थिक। संसार भरि घूमिकें सभसँ पूछि लेह। कुम्हार बरतन गढ़ि कें अन्तमे सूतसँ काटि दैत अछि (चाकसँ कात कए दैत अछि)। जँ गुण रहए तँ गुणवान् सँ संग होएबे करए। विद्यापति कहैत छथि, ई अद्भुत बात थिक।

[186]

चान्द गगन रह आओ[1] तारागन सूर उगए परचारि।
निचल सुमेरु अधिक कनकाचल आनब कओने परतारि[2]।।1।।
कन्हाई, नयना हलह निबारि।
जे अनुपम उपभोग न आबए की फल ताहि निहारि।।2।।
जे निञ चुरु[3] कए साअर सोखए। जिनए[4] सुरासुर मारि।
जल थल नाओं[5] समहि जें[6] पेलए से पावए ई नारि।।3।।
[भनइ विद्यापति जनु हरड़ाबह।] पाहन हीरा लाग।
दूती वचन हीत कए मानहु राए सिवसिंह बड भाग।।4।।

1.आओर। 2. परचारि। 3. चे चुरु। 4. जीबए। 5. पाए। 6. समहि। दूती बचने जाहि जे फाबए पाह्न हीरा लाग। [] नगु. सँ।

सखी राधा कें पएबाक हेतु उत्सुक कृष्णकें बुझबैत छथि -- (1) चन्द्रमा अकासमे छथि। तारा सभ सेहो ततहि छथि। सूर्य प्रकट रूपमे उदित होइत छथि। सोनाक पर्वत सुमेरु अचल छथि। हिनका सभकें परतारिकें (प्रसन्न कएकें) के आनि सकैत अछि? बहुतो अनुपम वस्तु अछि, किन्तु जे वस्तु उपभोग हेतु उपलभ्य नहि हो तकरा दिस टकटकी लगओने कोन फल? (अर्थात् राधा तोरा हेतु दुर्लभ छथि)। जे अपन चुरुमे लए समुद्रकें सोखि सकैत अछि; सुर आ' असुरकें मारि विजय प्राप्त कए सकैत अछि; तथा जे जल आ' स्थल दूनूमे नाओ समान रूपें चलाए सकए सेह एहि नारीकें प्राप्त कए सकैछ। विद्यापति कहैत छथि, हे राधा, भ्रममे नहि पड़ह। पाथरमे हीराक भ्रम भए सकैछ। दूतीक वचनकें हितकर बूझह। राजा शिवसिंह भाग्यवान् छथि।

[187]

पहिलहि परसए करे कुच कुम्भ। अधरपान पुनु कर[1] आरम्भ।।1।।
तखनहि मदन पुलक भरे[2] पूज। नीबिबान्ध बिनुफोएले फूज।।2।।
ए सखि लाजे कहब[3] की तोहि। कान्हक कथा पुछह जनु मोहि।।3।।
धम्मिल भार हार अरुझाब। पीन पओधर नख खत[4] लाब।।4।।
बाहुबलअ आइकम भरे भाङ्ग। अपनि आइति नहि अपना आङ्ग।।5।।

1. पिबए के कर। 2. पुलके भरि। 3. करब। 4. कत।

राधा कृष्णसँ सम्भोगक वर्णन सखीकें सुनबैत छथि -- (1) हे सखी, कृष्ण पहिने हमर स्तन छूलनि। तखन अधरपान आरम्भ कएल। (2) एतबहिमे कामदेव हमरा रोमांचसँ सगर देह भरि देलनि आ' चीरक बान्ह बिनु फोलनहि फूजि गेल। (3) हे सखी, तोरा की कहबहु, लाज होइत अछि। कान्हक कथा हमरा नहि पूछह। (4) खोपामे हार ओझराए गेल।

परिपुस्ट स्तनमे नह गड़ाए देलनि। (5) आलिंगन ततेक जोरसँ कएलनि जे बाँहिक कडना फूटि गेल। अपनो अंग अपना वशमे नहि रहल।

[188]

ताके निबेदिअ जे मतिमान। जनलहि गुन फल के नहि जान।।1।।
तोरेहि बचने कएल परिछेद। कौआ मुह नहि भनिअए बेद।।2।।
तोहें बहुबल्लभ हमहि अगानि। तकराहुँ कुलक धरम भेलि हानि।।3।।
कएल गतागत तोहरा लागि। सागरिओ रअनि गमाउलि जागि।।4।।
धन्ध बन्ध सफल भेल काज। मोहि अबे तन्हिकि कहिनि बड़ि[1] लाज।।5।।
दूती बचन सबहि भेल सार। विद्यापति कह कवि कण्ठहार।।6।।

1. आबे तन्हिकी कहिनी।

दूती कृष्णकें उपराग दैत अछि – (1) तोरा की कहबहु। कहिऐक तकरा जकरा बुझबाक शक्ति हो। जनलहिसँ फल भेटैत छैक (जेहन ज्ञान तेहन फल) ई बात के नहि जनैत अछि। (2) तोरे बात पर विश्वास कएल। कोआक मुहसँ कतहु वेद बहराए। तों फूसि बजलह। तों बहुवल्लभ (बहुत नारीसँ प्रेम कएनिहार) छह। हमही बकलेलि छी जे ई बात नहि बूझि सकलहुँ। ओ बेचारी व्यर्थ कुल-धर्म गमओलक। हम तोरे लेल दूनू दिस दौड़ैत रहलहुँ आ' सगर राति जागिकें गमाओलहुँ। कतेक धन्ध बन्ध (?) कएने काज सफल भेल। ओकर कहिनी कहबहुमे आब हमरा लाज होइत अछि। कवि कण्ठहार विद्यापति कहैत छथि, दूतीक कहब सर्वथा उचित छल।

[189]

अलस अरुन लोचन तोर। अमिजे मातल चान्दचकोर।।1।।
निचल भउह लें[1] बिसराम। रन जिनि धनु तेजल काम।।2।।
ए रे राधे न कर लथा। उकुति बेकत गुपुत[2] कथा।।3।।
कुचसिरिफल करज[3] सिरी। केसु बिकसित कनकगिरि।।4।।

तिलक[4] बहल उधसु केस। हँसि फलिछल[5] कामे सन्देस।।5।।

1. न ले। 2. गुपुत बेकत। 3. सहज। 4. अलक। 5. पलिछल।

सखी राधाक रमणोतर दशाक वर्णन हुनकहि सुनबैत छथि -- (1) हे सखी, तोहर आँखि लसाएल आ' ललाओन छहु, जेना चान (मुह) आ' चकोर (आँखि) अमृत पिबि मातल हो। (2) निश्चल भौंह विश्राम लए रहल अछि। मानू रणमे विजय पाबि कामदेव धनुष नड़ाए देने होथि। (3) हे राधा, तों लाथ नहि करह। तोहर गद्गद वचनहिसँ गुप्त बात (रमण) व्यक्त भए गेलहु। (4) स्तन पर नखक्षत शोभायमान छहु, जेना सोनाक पर्वतपर पलाश फुलाएल हो। (5) पसाहिन मेटाएल आ' केस उधसल छहु। कामदेव अपन सन्देश हँसिकें प्रकट कए देलनि।

[190]

जति जति बेरि[1] धमिअ अनल अधिक विमल हेम।
रभस कोप कए कहु नागर अधिक करए पेम।।1।।
साजनि, मने न करिअ रोस।
आरति जे किछु बोलए बालभु तें नहि तन्हिक दोस।।2।।
कतन तुअ अनाइति दरसि कतन कएल दीब[2]।
ओ नहि अनङ्ग न थिक[3] भुजङ्ग पवन पिबि जे जीब।।3।।
सरस कवि विद्यापति गाओल रस नहि अवसान।
राजा सिबसिंह रुपनराएन लखिमादेवि रमान।।4।।

1. जति धमिअ। 2. कत कएनहि दीब। 3. अधिक।

सखी रुसलि राधाकें बौंसैत छथि -- (1) सोनकें जतेक बेर आगिमे फूकब ओ ततेक निर्मल होएत। तहिना नागर जँ हठात् कोप कए बैसैत छथि तँ पाछाँ ओ आओर अधिक प्रेम करए लगैत छथि। (2) हे सखी, मनमे तामस नहि करह। प्रियतम जँ आतुरतावश किछु अप्रिय बात कहिओ देलथुन तँ ताहिमे हुनक दोख नहि मानह। (3) कतेको बेरि ओ

अपन विवशता देखओलनि, कतेक बेरि शपथ खएलनि (क्षमा कए दहुन) । ओ ने अंगहीन (दैहिक कामवासनासँ हीन) छथि ने साप थिकाह जे केवल बसात पीबि जीताह (कोहुना भूख मेटबहि पड़ैत छनि)। (4) सरस कवि विद्यापति कहैत छथि। रसक कतहु अन्त नहि अछि। राजा... ।

[191]

से बर[1] नागर गोकुल चान[2]। नगरहु नागरि तोहि सबे जान।।1।।
कत बेरि साजनि कहब[3] बुझाए। कएले धन्धे धरम दुरि जाए।।2।।
सुन्दरि रूप गुनहु सओ सार। आदि अन्त रह[4] महघ पसार।।3।।
सरूप निरुपि बुझउलिसि तोहि। जनु परतारि पठाबसि मोहि।।4।।
विद्यापति कह बुझ रसमन्त। सिरि सिबसिंह लखिमादेवि कन्त।।5।।

1. अति। 2. कान्ह। 3. की कहब। 4. लह।

सखी रुसलि राधाकें बौंसैत छथि -- (1) गोकुलचन्द्र कृष्ण श्रेष्ठ नागर छथि। नगर मे तोरहु सभ नागरि (रसज्ञा) बुझैत छहु। (2) हे सखी, कतेक बेरि तोरा बुझाए-बुझाए कें कहबहु जे झंझट कएने धर्म (प्रतिष्ठा) नष्ट होइत छैक। (3) हे सुन्दरी, रूप गुणहुसँ मूल्यवान् वस्तु थिक। हाट बजारमे वस्तु आदि आ' अन्तहिमे महघ रहैत अछि। (4) हम यथार्थ विवेचन कए तोरा बुझाए देलिअहु। आब हमरा परतारि कें फेर कृष्णक ओतए नहि पठाबह। (5) विद्यापति... ।

[192]

कोटि कोटि देल तुलना हेम। हीरा सओ हे हरदि भेल पेम।।1।।
अति परिमसने पिअर भेल रङ्ग। मुखमण्डन केवल रहु सङ्ग।।2।।
साजनि कि कहब कहहि न जाए। भलेओ मन्द होअ अवसर पाए।।3।।
नव नव ओं[1] छल पहिलुक मोह। किछु दिन गेलें भेल पनिसोह।।4।।
अब नहि रहले निछछेओ पानि। कारिनस हे कि करब जानि।।5।।
कपट बुझाए बढ़ओलनि दन्द। बड़ाक हृदय बड़ेओ होअ मन्द।।6।।

1. नबलबात।

राधा कृष्णक सिकाइत सखीकें सुनबैत छथि -- (1) कृष्णक प्रेमक तुलना पहिने हम बेरि-बेरि सोनसँ करैत छलहुँ परन्तु ओ प्रेम हीरासँ हरदि भए गेल। (2) अधिक घर्षण भेलापर ओहि हीराक रंग पीअर भए गेल (जेना हरदि हो)। कृष्णसँ मेल केवल मुह देखबाक हेतु रहि गेल (संकोचवश प्रेम देखबैत रहलहुँ)। (3) हे सखी, की कहिअहु। कहलो नहि होइत अछि। दुर्दिन अएला पर नीको लोक अधलाह भए जाइत अछि। (4) आरम्भ अवस्थाक ओ नव-नव प्रेम हमर मोह छल। किछु दिन बिततहिँ ओ प्रेम पनिसोह (नीरस) भए गेल। (5) आब तँ ओ निछछ पानिओ नहि रहल।............. ? जानिकें की होएत। (6) कपट द्वारा किछु-किछु बुझाए (ठकि-परतारि) हमर चिन्ता बढ़बैत गेलाह। पैघ लोक जँ मन्द (अधलाह) हो तँ भारी मन्द होएत।

[193]

मालति मधु मधुकर कर पान। सुपुरुख पए[1] हो गुनक निधान।।1।।
अबुझ न बुझए भलाहु बोल मन्द। भैंभ न पिबए कुसुम मकरन्द।।2।।
ए सखि कि कहब अपनुक रङ्ग[2]। सपनेहु जनु हो कुपुरुख सङ्ग।।3।।
दूधें पटाइअ सींचिअ नीत। सहज न तेज करइला तीत।।4।।
कतने जतने उपजाबिअ गून। कहल न बूझए हृदयक सून।।5।।
मन्दा रतन भेद नहि जान। बान्दर मुह नहि सोभए पान।।6।।

1. जञो। 2. दन्द।

राधा कृष्णक अरसिकता सखीकें सुनबैत छथि -- (1) मालती फूलक मधुक पान (गुणग्राही) भ्रमरे करैत अछि। सुपुरुखे गुणज्ञ होइत अछि। (2) बुद्धिहीन की बूझत। ओ तँ नीकहुकें अधलाह कहि देत। भेम्ह पुष्परस नहि पिबैत अछि। (3) हे सखी हम अपन हाल की कहिअहु। सपनहुमे कुपुरुखसँ सङ्ग नहि होअओ। (4) लाख दूधसँ पटबिऔक नित्य

सिँचिऔक, करैला अपन सहज स्वभाव तितपन नहि छाड़त। (5) कतबो यत्नपूर्वक गुणवान् बनएबाक प्रयास करू, हृदयहीन व्यक्ति कहल नहि बूझत। (6) मन्द जन रत्नक गुणावगुण नहि जानि सकैत अछि। बानरक मुहमे पानक शोभा नहि आबि सकैत छैक।

[194]

आसा दइए उपेखह आज। हृदअ बिचारह कञोनाक लाज।।1।।
हमे अबला थिक अलप गेआन। तोहर छइलपन निन्दत आन।।2।।
सुपहु जानि हमे सेओल पाओ। आबे मोर प्रान रहओ की जाओ।।3।।
कएल बिचारि अमिअ कै पान। होएत हलाहल ई केजान।।4।।
कतहु न सुनले अइसन बात। साङ्कर खाइते भाङ्गए दान्त।।5।।

राधा कृष्णकें उपराग दैत छथि -- (1) तों पहिने आशा दए आइ हमर उपेक्षा करैत छह। अपनहि मनमे बिचार करह जे एहि प्रकारक आचरणसँ लज्जित के होएत। (2) हम अबला थिकहुँ, ज्ञान अल्प अछि। हम की कहबहु; तोहर छइलपनक (लबड़पनक) निन्दा आन करतहु। (3) भल प्रेमी बूझि हम तोहर चरण धएल। आब हमर प्राण रहओ कि जाओ (से चिन्ता कए की होएत)। (4) हम तँ अमृत बूझि पीलहुँ। ई बड़का जहर भए जाएत से के जानए। (5) एहन बात कतहु नहि सुनल जे सक्कड़ (चीनी) खाइत दाँत टुटैत छैक।

[195]

प्रथमहि कएलह नयनक मेल। आस देलह कत[1] हँसिकहु हेरि।।1।।
तें हमे आज अएलाहु तुअ पास। बचनहु तोहें अति भेलिहे उदास।।2।।
साजनि तोहर सिनेह भल भेल। पहिलेहि चुम्बने से दुर गेल[2]।।3।।
आबहु करह[3] रस परिहरि लाज। अङ्गिरल रीन छड़ाबह आज।।4।।
अपना बचन न हो[4] परकार। जे अङ्गिरिअ से देलहि नितार।।5।।

1.आसा देलह। 2. पहिला चुम्बनाक दुर गेल। 3. करिअ। 4. नही।

कृष्ण विमुख भेलि राधाकें पोल्हबैत छथि -- (1) हे राधा, तों पहिने आँखिसँ आँखि मिलओलह आ' हँसिकें आशा देलह। (2) तें आइ हम तोरा लग अएलहुँ। परन्तु तों तें मुह बजबहुमे उदासीन भए गेलह। (3) हे सखी, अद्भुत भेल तोहर स्नेह। पहिले चुम्बनमे से दूर भए गेल। (4) लाज छाड़ि आबहु रसरङ्ग (प्रीति) करह। गछल कर्ज आइ चुकाबह। (5) अपन बचनसँ बिचलित होएबाक कोनो उपाय नहि। जे गछि लेलह से देलहिपर निस्तार पएबह।

[196]

तोरॉं अधर आमित्र लेल बास। भल जन नेओतल दए बिसबास।।1।।
अमर होइअ से[1] कएलें पान। की जीबन जञो खण्डित मान।।2।।
नागरि करबए कर गए झाट। दिबसक भोजने बरखन ऑंट।।3।।
बथु उपजाए करिअ भल[2] काज। जे नहि जेमए तकरा लाज।।4।।
तञे नहि कहिनी[3] परमुह सून। परउपकारें परम होअ पून।।5।।

1.जदि। 2. जे। 3. करबए।

कृष्ण राधासँ अनुनय करैत छथि -- (1) हे राधा, तोहर अधरमे अमृत बास लेने अछि। तों विश्वास दए एक भद्र पुरुषकें नेओतलह। (2) अमृतपान कएने अमर भए जाएब। परन्तु जँ मान खण्डित मानल जे ई अमृतपान कएने अमर भए जाएब। परन्तु जँ मान खण्डित भए जाए तें जीवने कोन काजक। (3)......... (?)। दोसर बात इहो जे एक दिन खएने बरख भरि कोना निमहब ? (4) हे राधा, वस्तु (अमृत) उपजबैत छह तें ओकर किछु सदुपयोग करह। जे भोगए नहि तकरा लाज होएबाक चाही। (5) की तों अनका मुहें ई कथा नहि सुनने छह जे आनक उपकार करब परम पुण्य थिक ?

[197]

जलधि न माइगए रतन भण्डार। चान्द अमित्र देअ सगर संसार[1]।।1।।
जकरा[2] जे होअ कि करत चाहि। जकरा जे रह से देअ ताहि।।2।।

साजनि कि कहब अपन गेआन। पर अनुरोधे कतए रह मान।।3।।
बिनु पओले देले[3] दुर जाए। दुहु दिस पए[4] अनुताप जनाए।।4।।
पओलेहु अमर होए दहु कोए। काठ कठिन कुलिसहु तह होए।।

1. सब रस सार। 2. नागर। 3. तकराहु। 4. पाए।

कृष्ण प्रणययाचनाक अस्वीकृति पर अपन वेदना सखीकें सुनबैत छथि -- (1) समुद्र ककरहुसँ रत्नभण्डार नहि मडैत अछि। चान सगर संसारकें अमृत बिलहैत अछि। (2) एहि उदाहरणसँ ई बहराइत अछि जे जकरा जे वस्तु स्वयं रहैत छैक से अनकासँ नहि मडैत अछि (जेना समुद्र)। तथा जकरा जे रहैत छैक से बिलहैत अछि (जेना चान)। (3) हे सखी, अपन ज्ञान की कहबहु। अनकासँ जँ याचना करी तें मान कतए रहत। (4) बिनु पओने वा देने, ओ वस्तु निरर्थक भए जाइत अछि। तथा दूनू पक्ष पछतबैत अछि। (5) पओलहु पर केओ अमर तें नहि भए जाइत अछि। काठ बज्रहुसँ कठोर होइत अछि (अर्थात् राधा कृष्णक अनुनयसँ टकसनिहारि नहि।)

[198]

कुचकोरीफल नखखत रेह। नब ससि छन्दें अङ्कुरल नब नेह[1]।।1।।
जनि निरधन जिब निधि पाए। खने हेरए खन राख झॉंपाए।।2।।
नबि अभिसारिनि पहिलुक[3] सङ्ग। पुलकित होए सुमिरि रति रङ्ग।।3।।
गुरुजन परिजन नयन निबारि। हाथ रतन रहु[4] बदन निहारि।।4।।
मुख अबनत कर परं जनु देख। अधर दसन[5] खत निळरि निरेख।।5।।

1. रेह। 2. जिब जञो जनि निरधने। 3. प्रथमक। 4. धरि। 5. दरस।

कवि संगम कए घूरलि नायिकाक वर्णन करैत छथि -- (1) नवयौवना नायिकाक बैरक फल सन (नवांकुरित) स्तन पर नखक्षतक रेखा भए गेल अछि जेना द्वितीयाक जानक व्याजें नब स्नेहांकुर जनमल हो। (2) नायिका ओहि नखक्षतकें खन देखैत छथि आ' खन प्राण जकां

छिपाएकें रखैत छथि -- ओहिना जेना निर्धन लोक निधि पाबिकें करैत अछि। (3) अभिसारिका नबि अछि आ' पहिल मिलन थिक। रतिरंगक स्मरण कए के पुलकित होइत अछि। (4) गुरुजन आ' पड़ोसी सभक आँखिसँ बँचैत दर्पण हाथमे लए अपन मुह देखैत अछि। (5) मूड़ी गोंतने अछि जाहिसँ केओ चीन्हए नहि। आँखि गड़ाए अधरक दन्तक्षत देखैत अछि।

[199]

तोहें कुलठाकुर हमे कुलनारि। अधिपक अनुचिते किछु न गोहारि।।1।।
पिसुने हँसब पुनु माथ डोलाए। बड़ाक कहिनी बड़ि दुर जाए।।2।।
सुन सुन साजन[1] बचन हमार। अपद न अङ्गिरिअ अपजस भार।।3।।
परतह परतिति आबिअ पास। बड़ बोलि हमहुँ कएल बिसबास।।4।।
अबे से गुनिअ मने[2] भल नहि काज। बड़ जन[3] राखए आँखिक लाज।।5।।

1. साजनि। 2. से आबे मने गुनि। 3. बाजू।

राधा कृष्णकें उलहन दैत छथि — (1) तों कुलक ठाकुर (प्रधान पुरुष) थिकह, हम कुलनारि थिकहुँ। अधिप (प्रभु; मालिक) जँ अनुचितो करए तँ तकर सुनबाहि कतहु नहि होइत अछि। (2) किन्तु दुष्ट लोक सभ माथ डोलाए-डोलाए उपहास तँ करबे करतहु। पैघ लोकक गप बहुत दूर धरि पहुँचैत अछि। (3) हे साजन, हमर बात सुनह। अनेरे अपना माथ पर अजस (बदनामी) नहि लेह। (4) प्रत्येक दिन विश्वास कए तोरा लग अबैत छी। हम पैघ लोक बूझि तोरा पर विश्वास कएल। आब मनमे बुझाइत अछि जे से नीक नहि कएल। भद्रलोक आँखिक लाज रखैत अछि (अधलाह काजसँ विरत रहैत अछि जे लोकक बीच मुह देखएबामे लाज नहि हो)।

सबे सबतहु कह सहले लहीअ। जिब जओ जतने जोगओले रहीअ।।1।।
परसि हलह जनु पिसुनक बोल। सुपुरुख पेम जीव रह ओल।।2।।
मञे सपनेहु नहि बिसरञो सेओ[1]। ऐसन पेम तोड़ि हल जनु केओ।।3।।
रहिअ लुकओले अपना गेह। खल[2] कौसले टुटि जाएत सिनेह।।4।।
पिसुन[3] बुझाए करिअ नहि घोल[4]। मुखसुखे घेङ्गुर काट पटोर।।5।।

1. सुमिरञो देओ। 2. खड़। 3. बिमुख। 4. बोल।

राधा अपन प्रेमक दशा सखीसँ कहैत छथि — (1) हे सखी, सभ सभ ठाम कहैत अछि प्रेम सहने (सहनशील बनने) भेटैत छैक। प्रेमकें प्राण जकाँ जोगओने रखबाक थिक। (2) दुर्जन सभक बात पर कान नहि देह। भलमानुसक प्रेम जीवनक अन्त धरि बनल रहैत छैक। (3) ई बात हम सपनहुमे नहि बिसरैत छी। हमर एहन प्रेमकें केओ जनु तोड़ओ। (4) तें प्रेमकें अपन घरमे नुकओने रहैत छी। आशंका रहैत अछि जे दुर्जन सभक कौशलें हमर प्रेम टूटि ने जाए। (5) पिशुनकें बुझाए घोल नहि करक थिक। किएक तँ पिशुन अकारण ओकरा तोड़ि देत, जेना घेङ्गुर (सनकिड़बा, स्वर्णकीट, तेलचट्टा) पटोरकें केवल मुह लाड़बाक लुतुकसँ कटैत अछि (पेट भरबाक हेतु नहि)।

[201]

प्रथम जौवन सिरि[1] गरबें गमओलह जे गुने गाहक[2] आबे।
गेल जौबन पुनु पलटि न आबए केवल रह पचताबे।।1।।
सुन्दरि बचन करह अबधाने।
तोह सनि नारि दिवस दस अछलिहु ऐसन उपजु मोहि भाने।।2।।
जउबन सिरी जाब रह सुन्दरि ताबे मदन अधिकारी।
दिन दस गेले सेओ छाड़ि पड़ाएत सकल जगत परचारी।।3।।
विद्यापति कह जुबति लाख लह पळल पओधर तूले।
दिने दिने आबे तोहें तड़सनि होएबह घोसिनि घोरक मूले।।4।।

1. सिरिफल। 2. गुण गाहक आबे।

सखी कृष्णसँ विमुख भेलि राधाकेँ बुझबैत छथि — (1) तों पहिने तें अपन ओ यौवनश्री गौरबहिमे (माने करैत) गमाए देलह, जकरा लोभें ग्राहक (प्रेमी) अबैत अछि। गेल यौवन फेर घुरिकें अबैत नहि अछि। केवल पश्चाताप रहि जाइत छैक। (2) हे सुन्दरी, हमर बात ध्यानसँ सुनह। दस दिन हमहूँ तोरे सन नारी छलहुँ। हमरा एहन-सन अनुभव अछि जे (3) जा धरि यौवनक शोभा रहैत छैक ताबे धरि मदन अधिकारी रहैत छथि (प्रेमी ओकरा पर आकृष्ट होइत छैक)। दस दिन बितितहिं मदन सेहो छोड़ि कें पड़ाए जाएत—ई बात सकल संसारमे विदित अछि। (4) विद्यापति कहैत छथि............(?)। दिन-दिन तोहूँ तेहने होएबह। तोहर मूल्य ओतबे रहतहु जतबा गोआरिक घोरक मूल्य।

[202]

जाबे सरस पिआ बोलए हँसी। ताबे से बालँभु तञे पेअसी।।1।।
जञो पए बोलए बोल निठूर। तञो पुनु सकल पेम जा दूर।।2।।
ए सखि तोर ई अपरुब[1] रीति। कतहु[2] न देखिअ ऐसनि पिरीति।।3।।
जे पिआ मानए दोसरि परान। तकराहु वचन ऐसन अभिमान।।4।।
सेहे[3] सिनेह जे सह[4] उपताप। कै नहि बस होअ मधुर अलाप।।5।।
हठ परिहरह दोस निञ जानि। हँसि कहु बोलह मधुरिम[5] बानि।।6।।
सुरत निठुरि मिलि भजसि न नाह। कॉ लागि[6] बढाबसि पिसुन उछाह।।7।।

1. सखि अपरुब। 2. काहु। 3. तैसन। 4. थिर। 5. हसि न बोलह मधुरिम दुइ। 6. हठे परिहर निञ दोसहि जानि ।

सखी रुसलि राधाकें बौसैत छथि – (1) जाधरि पिआ हँसिकें रसगर गप करए ता धरि ओ प्रियतम भेल आ' तों ओकर प्रेयसी। (2) आ' जँ कदाचित् निष्ठुर वचन बाजि देलक कि सभ प्रेम बिलाए गेल। (3) हे सखी, तोहर ई विचित्र रीति छहु। एहन प्रीति तें कतहु नहि देखल। (4)

जे पिआ दोसर प्राण तुल्य मानए तकरो बात पर एतेक अभिमान (तामस) किएक? (5) प्रेम से थिक जे उपताप (कचोट) सहए। मधुर-मधुर गप पर के नहि वशीभूत होइत अछि? (5) अपन दोख बूझिकें (सकारिकें) हठ (रुसाफूली) छोड़ह। हँसिकें मधुर वचन बाजह। (7) हे सुरतनिष्ठुरे (निठुर भए संगममे विमुख रहनिहारि), संग भए प्रियतमक अनुरंजन किएक नहि करैत छह? एना किएक पिशुन सभक उत्साह बढ़बैत छह ?

[203]

अवधि बहिए है अधिक दिन भेल[1]। बालँभु परत्त पर देस गेल[2]।।1।।
कञोन परि खेपब बसन्तक राति। जानल पुरुख निठुर थिक जाति।।2।।
साजनि आबे मोर अइसन गेआँन। जीवन चाहि मरन भल[3] भान।।3।।
कलिजुग एहे अधिक परमाद। दुरजन दुरनए[4] बोल अपबाद।।4।।
तें हमे एहे हलल अवधारि। पुरुख बिहुनि जीबए जनु नारि।।5।।
सुन्दर कह धनि[5] धैरज सार। तेज उपताप होएत परकार।।6।।

1. गेल। 2. भेल। 3. भेल। 4. दुर लए। 5. सब।

राधा अपन विरहव्यथा सखीकें सुनबैत छथि — (1) अवधि बितला बहुत दिन भए गेल। पहु आन रमणीमे अनुरक्त भए परदेस चलि गेलाह। (2) कोना ई वसन्तक राति खेपब? बूझि गेलहुँ जे पुरुष स्वभावतः निष्ठुर होइत अछि। (3) हे सखी, आब हमरा बुझाइत अछि जे एहि जीवनसँ मरने नीक। (4) कलियुगक इएह बड़का दोख थिक जे दुर्जन सभ दुर्भावनावश कलंक पसारैत रहैत अछि। (5) तें हम एहि निष्कर्ष पर पहुँचलहुँ जे पुरुषहीन भेलापर नारीकें जीबाक नहि चाही। (6) सुन्दर कवि कहैत छथि, हे सुन्दरी, धैर्य बड़ पैघ वस्तु थिक। सन्ताप छाड़ह। प्रतिकार (विरहक अन्त) होएबे करतहु।

टि.— भनितासँ प्रतीत होइत अछि जे ई गीत 'सुन्दर' नामक कोनो आन कविक थिक, विद्यापतिक नहि। जँ विद्यापतिक तँ 'भनइ विद्यापति धैरज सार' एहन पाठ होएबाक चाही।

[204]

सोलह सहस गोपि महरानि[1]। पाट महादेवि करबि हे आनि।।1।।
बोलि पठओलन्हि जत अतिरेक। उचितहु न रहल तन्हिक विबेक।।2।।
साजनि कि कहब कान्ह परोख। घोल[2] न करिअ बड़ाकाँ दोख।।3।।
अब चित[3] मति जदि हरलन्हि मोरि। जनला चोरे करब की चोरि।।4।।
पुरुबापरे नागर जन[4] बोल। दूती मति पाबए[5] गए ओल।।5।।

1.मह राबि। 2. बोलि। 3. नित। 4. का। 5. पाओल।

विरहिणी राधा सखीकें विरहव्यथा सुनबैत छथि – (1-2) कृष्ण बात बढ़ाए-चढ़ाए कहा पठओलनि, 'सोलह हजार गोपी महारानी लोकनिक बीच अहाँकें आनि पट्टमहादेवी (पटरानी) बनाएब।' परन्तु उचितो कर्तव्य पालन करबाक विवेक हुनका नहि रहलनि। (3) हे सखी, कृष्णक परोछमे हुनक सिकाइत की कहिअहु। पैघ लोकक दोख घोल नहि करबाक चाही। (4) आब तँ ओ हमर सुधिबुधि सेहो चोराए लेलनि। चोर जँ जनले (चिन्हारे) लोक हो तँ ओकरा चोरि कोना कहब। पूर्वकालहिसँ नागर लोकनि कहैत अएलाह अछि जे दूतीकें अन्तमे जाए बुद्धि होइत छैक।

[205]

चरित चातर चित बेआकुल मोर मोर अनुबन्धे।
पूत कलत्त सहोदर बान्धब सेस दसा सब धन्धे।।1।।
ए हर गोसत्रि नाथ मो जनु देह उपेखि।
जम अगाँ मुह बोल न आओत जबे बुझाओत लेखि।।2।।
अपथ पथ चरन लाओल भगति मति न देला।
पर धन धनि मानस लाओल जनम निफल[1] गेला।।3।।

कपट नरि पळु कलेबर गिळल मदन गोहे।
भल मन्द हमे किछु न गुनल जनम बहल मोहे।।4।।
कएल उचित[2] भेल अनुचित आबे मन पचतावे।
आबे कि करब सिर पए धुनब गेल दिन नहि आबे।।5।।
[भन विद्यापति सुनह सङ्कर कइलि तोहरि सेबा।
एतए जे बरु से बरु करब ओतए सरन देबा।।6।।]
भन विद्यापति सुन महेसर तैलोक आन न केवा[3]।
चन्दलदेइ पति बैदनाथ गति चरन सरन[4] देबा।।7।।

1. मिथ्या जनम दुर। 2. कएल मञे उचित। 3. देबा। 4. सरन मोहि देबा। [ ] नगु. सँ।

कवि महादेवसँ प्रार्थना करैत छथि — (1) चरित चातर (?) मे मन व्याकुल (व्यस्त) रहल। ई हमर, ई हमर एहन आसक्ति बनल रहल। बेटा, स्त्री, भाए-बन्धु ई सभ अन्त कालमे कष्टदायके होइत अछि। (2) हे महादेव, हमरा उपेखह नहि। यम जखन पाप-पुण्यक लेखा देखाओत तखन मुहमे बकार नहि फुटत। (3) कुमार्गहि पर पाएर राखल। तोहर भक्ति दिस मन नहि देल। आनक धन आ' स्त्रीमे मन लोभाएल रहल। जीवन व्यर्थ गेल। (4) देह कपटरूपी नदीमे भासि गेल। ओकरा मदनरूपी गोहि खएलक। (5) नीक बेजाए किछु नहि जानल। अज्ञानहिमे जीवन बीति गेल। कएल उचित, किन्तु भेल अनुचित। आब पछताइत छी। आब माथ पीटब छाड़ि आर कइए की सकैत छी। (6) विद्यापति कहैत छथि। हे शंकर, सुनह। तोहर सेवा कएल। एतए जे होअए से होअओ, ओतए शरण देबह। (7) विद्यापति कहैत छथि, हे महेश्वर, सुनह। तीनू लोकमे (हमरा शरण देनिहार) आन केओ नहि अछि। चन्दल देवीक पति वैद्यनाथक शरणमें छी। (अन्त मे) तों अपन चरणक शरण देबह।

[206]

ताल तळाग फुलल अरबिन्द। भूखल भमरा पिब मकरन्द।।1।।
बिरल नखत नभ[1]मण्डल भास। से गुनि कोकिल मने उठ[2] हास।।2।।
ए रे मानिनि पलटि निहार। अरुन पिबए लागल अन्धकार।।3।।
मानिनि मान महघ धन तोर। चोरबए अएलाहुँ अनुचित मोर।।4।।
तें अपराधें मार पञ्चबान। धनि धरहरि कए राख परान।।5।।

1. अबिरल खतनख। 2. भउ।

कृष्ण मानिनी राधाकें मनबैत छथि – (1) झील (चओर-चाँचर)मे आ' पोखरिमे कमल फुलाए गेल (भोर भए गेल)। भूखल मधुकर सभ पुष्परस पिबैत अछि। (2) से जानि कोकिलकें हँसी लगलैक (जे मानिनी आब कोना मान करतीह)। (3) हे मानिनी, घूमिकें सामने भए देखह। अरुणदेव अन्धकारकें पीबए लगलाह। (4) हे मानिनी, हम तोहर बहुमूल्य मानरूपी धन चोराबए अएलहुँ। हमरासँ ई अनुचित काज (अपराध) भेल। (5) तें एकर सजाए देबाक लेल कामदेव हमरा मारि रहल छथि। हे सुन्दरी, तों रोक-थाम्ह कए हमर प्राण बचाबह।

[207]

कत खन बचन बिलासे। सुपुरुख राखब आसा पासे।।1।।
आबे हमे गेलिहुँ फेदाई। अथिरक आँतर मधय लजाई।।2।।
बोलि बिसरलह रामा। सखि असतउलिहें[1] कहि कत ठामा।।3।।
पर चिते नहि रह रङ्गे[2]। कुसुमित कानन मधुकर सङ्गे।।4।।
समय खेपसि कति भाँती। बड़ि छोटि एहो[3] मधुमासक राती।।5।।

1. असचौंलिहे। 2. पर चिते पति न रह रङ्गे। 3. भेलि।

सखी दुबिधामे पड़लि राधाकें बुझबैत छथि — (1) कतेक काल बात बनाए-बनाए (ठकि-फुसिआए) सुपुरुख कृष्णकें एना आशा-पाशमे बझाए रखने रहबह? (2) आब हम अकछाए गेलहुँ। जखन कोनहु पक्षकें बातक

स्थिरता नहि, तखन मध्यस्थ (दूती) अनेरे दूनूक समक्ष लज्जित होइत अछि। (3) हे सुन्दरी, तों वचन दए बिसरि गेलह। कतेक संकेत स्थल कहि कृष्णकें फुसिअओलहुन। (4) चित आन दिस रहने रंग नहि जमैत अछि (?)। कानन जा कुसुमित अछि, ताबते मधुकर अबैत अछि। बहुत बहाना कए-कए तों समय खेपने जाइत छह। वसन्तक राति बड़ छोट होइत अछि।

[208]

तोहर साजनि पहिल पसार। हमरेहि[1] बचने करिअ बेबहार।।1।।
अमिअक सागर अधरक पास। पओलें नागरे करब गरास।।2।।
नहु-नहु कहिनी कहब बुझाए। पिउल कुगइञा गोमुख लाए।।3।।
पहिल पढ़ओक भलाकें हाथ। ते उपहस नहि गोपी साथ।।4।।
मन्दा पाए[2] मन्दे कर रोस। भल अलपहि पओलें[3] कर तोस।।5।।

1. हमरे। 2. काज। 3. पओलेहि अलपहि।

सखी राधाकें सिखबैत छथि जे कृष्णसँ कोना रस-रङ्ग करी — (1) हे सखी, ई तोहर पहिल पसार थिकहु (पहिल बेर तों दोकान पसारलह अछि)। हम जेना कहैत छिअहु तेना सओदा करिहह। (2) तोहर अधरमे अमृतक सागर अछि। रसिक नागर पाओत तँ ओ हठात् पीबि जएतहु (तें बचाएकें रखिहह)। (3) (झटपट सओदा पटाबह नहि), गाहकसँ धिरें-धिरें बुझाए-बुझाए गप करिहह। भदेसक गाहक तोहर अधरामृत हठात् ओहिना पीबि जएतहु जेना गाए नमैत अछि। (4) पहिल बोहनी भलमानुसक हाथ करिहह जाहिसँ संगक गोपीसभ उपहास नहि करहु। थोड लाभ पओने बकलेल बनिआ क्रोध करैत अछि। नीक बनिआ थोड़ो पओने सन्तुष्ट भए जाइत अछि।

[209]

अवधि बढ़ओलन्हि पुछिहह कान्ह। जीवहु तह हे गरुअ छल मान।।1।।
भलाहुक वचन मन्द आबे लाग। कुम्भी जल हे भेल अनुराग।।2।।
साजनि कि कहव टुटल समाद। परक दरब हो पर सत्रो वाद।।3।।
ओहि धन्ध भेलि आसा हानि। कत पतिआएव झूठी बानि।।4।।
बहलि पेन्द टेढ़ सम बोल। कतएक नागर आओ चौछोल।।5।।
विरहक वेदन[1] नागरि बोल। विद्यापति कवि[2] कहए अमोल।।5।।

1. बोलए। 2. विद्यापति कहए।

राधा सखीसँ कहैत छथि -- (1) हे सखी, कान्हकें पूछह गए। ओ अवधि (घुरि अएबाक दिन) बढ़बैत गेलाह। हमर मान प्राणहुसँ भारी भए गेल छल (प्राण जाए तँ जाए मान नहि जाए एहन हठ भए गेल छल)। (2) आब केओ नीको बात कहैत अछि तँ अधलाह लगैत अछि। पहिने तँ तेहन प्रेम भेल जेहन कुम्भी कें जलसँ होइत अछि। (3) परन्तु हे सखी, आब तँ संवादो टूटि गेल (मुहो बाजब बन्द भए गेल)। दरब (द्रव्य, सम्पत्ति, कान्ह) ककरो आनक आ' झगड़ा ककरहु अनकासँ। (4) ओही चिन्तामे आशा टूटि गेल। फूसि बात कतेक पतिआएब। (5)....................(?)। (6) नायिका अपन विरहक वर्णन करैत छथि। विद्यापति अमूल्य बात कहैत छथि।

[210]

खेत कएल रखबारे लूटल ठाकुर सेबा भोर।
बनिजा कएल लाभ नहि पओले अलप मूल[1] भेल थोळ।।1।।
रामधन बनिजहु लाभ[2] अनेक।
XX X X X X X।।2।।
मोति मजीठ कनक हमे बनिजल पोसल मनमथ चोर।
जोखि परेखि मनहि हमे निरसल धन्ध लागल मन मोर।।3।।
ई संसार हाट कए मानह सबहु लोक बनिजार[3]।

जे जस करए लाभ तस पाबए मूरुख मरए गमार।।4।।
विद्यापति कह सुनह महाजन, रामभगति अछ लाभ।
XX X X X X X X।।5।।

1. निकट। 2. बनिजहु बेज अछ। 3. सबो नेक बनिजेआर।

कवि सांसारिक सुखसँ विरक्त भए परलोक-चिन्तन करैत छथि – (1) ईश्वरक आराधना (ठाकुरसेवा) कें अनठाए खेती कएल, परन्तु ओकर लाभ रखबारे लूटि लेलक। वाणिज्य कएल तँ ताहूमे लाभ नहि भेल। थोड़ पूजी आओर थोड होइत गेल। (2) ....। (3) मोति, मजीठ, सोन एहि सभक वाणिज्य कएल। कामदेवरूपी चोरकें पोसलहुँ। जे किछु बेसाहल तकरा जोखल-परेखल तँ मनमे (कोनो काजक नहि बुझाएल तें) निरसि देलहुँ। तैआ चिन्ता रहले। (4) हे मन, तों एहि संसारकें हाट बूझह। एतए सभ लोक बनिजार थिक। जकर जेहन करनी से तेहन लाभ पबैत अछि। एहि हाटमे मूर्ख आ' गमार (विफल भए) मरैत अछि। (5) विद्यापति कहैत छथि, हे महाजन (व्यापारी), सुनह, लाभ व्यापारमे नहि, रामभजनमे अछि। ....।

[211]

सारङ्ग रुचि अम्बर[1] परिहाउलि सेत सारङ्ग कर बामा।
सारङ्ग वदन दहिन कर मण्डित सारङ्ग गति चलु रामा।।1।।
माधव तोरे बोलें आनलि राही।
सारङ्ग भास पास सत्रो आनलि तुरित पठाबह ताही।।2।।
सम्भु घरनि बेरि आनि मेराउलि हरि सुत सुत धुनि भेला।
अरुनक जोति तिमिर पिबि पसरलि[2] चान्द मलिन भए गेला।।3।।

1. जलधर। 2. पिड़ि उगल।

सखी कृष्णसँ राधाकें बिदा करबाक अनुरोध करैत छथि — (1) हे कृष्ण, (तोरहि कहने हम) राधाकें सारङ्गरुचि (मेघवर्णक) चीर

पहिराओल। हुनक बामा हाथमे श्वेत सारङ्ग (दीप) देल। राधाक दहिन हाथ सारङ्गवदन (छाता?) सँ विभूषित कएल। तखन ओ सुन्दरी सारङ्गक (हाथीक) गतिएँ चललि। (2) हे माधव, तोरे अनुरोधेँ हम राधाकेँ आनि देलिअहु। ओकरा हम सारङ्गभास (माता?) केर लगसँ अनलहुँ। आब ओकरा तुरन्त माए लग पठाए देह। (3) शम्भुक स्त्री सन्ध्या, तनिक बेरमे (अर्थात् साँझहि खन) ओकरा आनि तोरासँ मिलओलहुँ। आब हरिक (इन्द्रक) बेटाक (जयन्तक) बेटाक (कौआक) ध्वनि भेल (कौआ बाजल, भोर भए गेल)। अरुणक प्रकाश अन्धकारकेँ पीबि पसरि गेल। चान मलिन भए गेल।

[212]

जौबन रतन अछल दिन चारि। तावे से आदर कएल मुरारि।।1।।
आवे भेल झाल कुसुम रस छूछ। बारि बिहुन सर केओ नहि पूछ।।2।।
हमरि ए[1] बिनति कहबि सखि रोए।[2] सुपुरुख नेह अनत[3] नहि होए।।3।।
जावे से धन रह अपना हाथ। तावे से आदर कर सङ्ग साथ।।4।।
धनिकक आदर सब तह[4] होए। निरधन बापुर पुछए न कोए।।5।।
[भनइ विद्यापति राखब सील। जञो जग जिबिअ नबओ निधि मील]।।6।।

1. हमरिओ। 2. गोए। 3. सिनेह अन्त। 4. सबका। [] राग.सँ।

बंचिता राधा सखीद्वारा कृष्णकेँ उपराग दैत छथि — (1) हे सखी, जा' दिन-चारिएक यौवनरूपी रत्न छल ता' धरि से देखि मुरारि हमर आदर करैत रहलाह। (2) आब ओ यौवनरूपी फूल शुष्क आ' रसहीन भए गेल। जलहीन पोखरिकेँ केओ नहि पुछैत अछि। (3) हे सखी, हमर ई बिनती कानि-कानि (करुण स्वरमे) कृष्णकेँ सुनएबहुन जे सुपुरुखक वचन कहिओ अनत (अनृत, मिथ्या) नहि होइत अछि। (4) जा' धरि हाथमे धन रहए ता' धरि बन्धु आदर करैत रहैछ। (5) धनिकक आदर सभ ठाम होइत अछि। बेचारा निर्धनकेँ केओ नहि पुछैत अछि। (6) विद्यापति

कहैत छथि, शील बचओने रहह। संसारमे जँ जिबैत रही तँ नबो निधि (सभ टा दुर्लभ वस्तु) भेटि सकैत अछि।

[213]

जावे रहिअ तुअ लोचन आगे। तावे बुझाबह दिढ अनुरागे।।1।।
नयन ओत भेले सब किछु आन। कपट हेम धर कतिखन बान।।2।।
बुझल मधुरपति भलि तुअ रीति। हृदय कपट मुखे करह पिरीति।।3।।
विनय वचन जत सरस विलास।[1] अनुभबि बूझल[2] सेओ परिहास।।4।।
हसि हसि करह कि सब परिहार। मधु माखल बिख[3]सर परहार।।5।।

1. जत रस परिहास। 2. अनुभबे बुझल हमे। 3. मधु विषे माखल।

राधा कृष्णकेँ उपराग दैत छथि — (1) हे कान्ह, जा धरि हम तोहर आँखिक आगु रहैत छी ता धरि तोँ अटल प्रेम देखबैत छह। (2) परन्तु आँखिक परोछ होइतहिँ सभ किछु आन भए जाइत छहु (बदलि जाइत छहु)। नकली सोन अपन वर्ण (रंग) कतेक काल धएने रहत। (3) हे मथुरापति, तोहर चालि बड़ सुन्दर छहु। हृदयमे कपट आ' मुखमे प्रेम। (4) तोँ जतेक बिनती सुनओलह आ' सरस बिलास कएलह से अनुभवसँ बुझाए गेल जे केवल परिहास (मजाक) छल। (5) तोँ हमर सभ आरोपकेँ हँसि-हँसि उड़ाए रहल छह। मानू बिखबाला बाण मधुमे मखाए छोड़ि रहल छह।

[214]

बारिस निसाँ मञे चलि अइलिहुँ सुन्दर मन्दिर तोर।
कत महि अहि[1] देह दमसल चरने तिमिर घोर।।1।।
निज सखि मुखे सुनि सुनि कहु सरस[2] पेम तोहार।
हमे अबला सहि न पारल पञ्चसर परहार।।2।।
नागर मोहि मने अनुताप।
कएलाहु साहस सिधि न पाबिअ अइसन हमर पाप।।3।।

तोह सन पहु गुन निकेतन कएल मोर निकार।
सबहु नागरि हमे[3] सिखाउबि जनु कर अभिसार।।4।।
[कतन नागर सुनिअ नगर[4] सबे न गुनक गेह।
तोह सन नहि जगत दोसर[5] तें मञे लाओल नेह]।।5।।
केलि कुतूहल दूरहि रहओ दरसनहु सन्देह।
जामिनि चारिम पहर पाओल आबे[6] जाञो निज गेह।।6।।
मोरि सबें[7] सहचरि जानति होइति ई बड़ि साति।।
बिहि निकारुन परम दारुन मरञो इदअ फाटि।।7।।
[भन विद्यापति सुनह जुबति आसा नहि[8] अबसान।।
सुचिरे जीबओ राए सिबसिंह लखिमादेबि रमान]।।8।।

1. अहि मही। 2. बसि। 3. हमहु नागरि सबे। 4. गुनक सागर। 5. जग दोसर नाही। 6 मोरिओ सह। 8. न। [ ] तरौ. सँ।

राधा कृष्णसँ उपेक्षा पाबि हुनका अपन व्यथा सुनबैत छथि — (1) हे सुन्दर, हम वर्षाक रातिमे तोहर घर चलि अएलहुँ। घनघोर अन्हारमे धरती पर ससरैत कतेको सापक देह पाएरसँ पीचल। (2) अपन सखी-बहिनपाक मुहें तोहर सरस प्रेमक गप सुनि-सुनि हम अबला कामदेवक प्रहार नहि सहि सकलहुँ। (3) हे नागर, हमरा मनमे पश्चाताप होइत अछि जे एहन काज किएक कएल। केहन छल हमर पूर्व जन्मक पाप जे साहस कएलहु पर अभीष्ट सिद्ध नहि भेल। (4) तोहर-सन गुणवान् सुपुरुख हमरा अनादर कए देलक। आब हम नागरि सभकें इएह सिखाएब जे केओ अभिसार नहि करओ। (5) नगरमे सुनैत छी बहुत नागर अछि, किन्तु सभ (तोरा-सन) गुणवान् कहाँ अछि। तें हम नेह लगाओल। परन्तु रंगरभस तँ दूर जाओ, दर्शनो पएबामे सन्देह। (6) रातिक चारिम पहर आबि गेल। आब हम अपना घर चललहुँ। ओतए हमर सखीसभ जँ ई बात जानि जाएत तँ बड़ पराभव होएत। (7) हमरा हेतु निर्दय विधाता बड़ क्रूर

छथि। एहिसँ नीक जे हृदय विदीर्ण भए जाए आ' मरि जाइ। (8) विद्यापति कहैत छथि, हे युवती, सुनह। आशाक अन्त नहि होइत छैक। आशा करैत रहह। लखिमादेवीक पति राजा शिवसिंह चिरजीवी होथु।

[215]

दहोदिस बुलि बुलि[1] भमरि करुना कर आहा दैआ ई की भेल।
कोर सुतल पिआ आन्तरो न देल हिआ के जान कओन दिग गेल।।1।।
अबे कैसे जीउबि मञे रे सुमरि बालभु नब नेह।
XX X X X X X ।।2।।
एकहि मन्दिर बसि पिआ न पुछए हसि मोर लेखें समुदक पार।
ई दुइ जउबना तरुन लाखे लह से आबे परस गमार।।3।।
पट सुत बुनि-बुनि मोतिसरि किनि-किनि पिआ लेल[2] गान्थल हार।
लाख लेखि हमे हरबा गान्थल से आबे तोलत गमार।।4।।
अरे रे पथिक भैआ, जाहि देस बस पिआ हमर समाद लए जाह[3]।
हमर से दुखसुख तहि पिआ कहिहह सुन्दरि पड़लि अथाह[4]।।5।।
भनइ विद्यापति अरे बर जौबति[5] अबे चिते करह उछाह।
राजा सिबसिंह रुपनराएन लखिमा देवि बर नाह।।6।।

1. दहए बुलिए बुलि। 2. मोरे पिआञे। 3. अरे रे पथिक भइआ समाद लए जइहह जाहि देस बस मोर नाह। 4. समाइलि बाह। 5. अरे रे जुबति।

विरहिणी राधा पथिक द्वारा कृष्णकें संवाद पठबैत छथि — (1) भमरी (राधा) दसो दिस बुलि-बुलि (पिआक खोज करैत) करुणा करैत अछि, हा दैव, ई की भेल। पिआ कोरमे सूतल छल। हृदयसँ सटओने छलहुँ। जानि नहि, कोन दिस चलि गेल। (2) आब पहुक नब नेह सुमरि-सुमरि कोना जीअब। (3) एकहि घरमे रहैत पिआ हँसिकें बजैत नहि अछि। हमरा लेखें समुद्रक पार चलि गेल। ई दूनू स्तन जे तरुण सभ लाख खर्च कए प्राप्त करैत अछि से आब गमार छूअत। (4) पट्टसूत्र (रेशमी ताग) मे बुनि-बुनिकें आ' मोतीक छड़ कीनि-कीनिकें हम पिआक हेतु हार गाँथल।

लाख-लाख खर्च कए (?) हम जे ई हार गाँथल से आब गमार पहिरत। (5) हे भैआ बटोही, जाहि देसमे पिआ अछि, ततए हमर समाद लेने जाह। हमर दुख-सुख पिआकें कहिहह। आओर कहिहह जे राधा अथाह समुद्रमे पड़लि अछि। (6) विद्यापति कहैत छथि, अरे वर युवती, आब मनमे खुसी मनाबह। राजा...।

[216]

सरोवर घाट बिकट[1] कण्टक तरु हेरहि न पारले आगु।
साङ्कळि बाट उबटि चलि भेलिहु तें कुच कण्टक लागु।।1।।
ननन्द हे सरुप निरुपिअ दोसे[2]।
बिनु बिचारे बिहुचार[3] बुझओलह सासु करओलह रोसे।।2।।
कौतुके कमल नाल सओ तोळल करए चाहल अबतंसे।
रोखे कोख सओ मधुकर धाओल तेहि अधर करु दंसे।।3।।
गरुअ कुम्भ सिर थिर नहि थाकए तें उधसल केसपासे।
आतप दोसे रोसे चलि अइलिहुँ, खरतर भेल निसासे।।4।।
[पथ अपवाद पिसुने परचारल तथिहु उतर हमे देला।
अमरख तहइ धैरज नहि रहले तें गदगद सर भेला]।।5।।
बेकत बिलास कओने तुअ झाँपब[4] विद्यापति कबि भाने।
राजा सिबसिंह रुपरनराएन लखिमा देवि रमाने।।6।।
[भनइ विद्यापति सुन बर जौबति ई सबे राखह गोई।
ननन्द सङ्ग[5] रसरीति बढाउबि गुपुत बेकत नहि होई]।।7।।

1. रोस। 2. निकट 3. बिहुचार। 4. तव छापब। 5. ननदी सओ। [ ] नगु.सँ।

परपुरुषसँ संगम कए घुरलि नायिका ननदिक शंका पर उत्तर दैत अछि – (1) नदीक घाट लग कँटाह गाछ छल। से पहिने देखि नहि पड़ल। बाट साँकर छल, तें उबटिकें चलहुँ। तें स्तनमे काँट गड़ि गेल (एकरा नखक्षत नहि बूझह)। (2) हे ननदि, आरोप लगएबासँ पहिने

सत्यताक विचार कए लेबाक चाही। बिनु विवेचन कएनहि तों हमरा पर व्यभिचारक आरोप लगाए सासुकें हमरा पर तामस कराए देलहुन। (3) हम कौतुकवश डाँटसँ कमल तोड़ि केस सजाबए चाहल कि कमल-कोषसँ रोसाए भऔंरा दौड़ि आएल आ' ठोरमे डँसि लेलक (एकरा दन्तक्षत नहि बूझह)। (4) भारी घैल माथ पर थीर नहि रहए तें खोपा खुजि गेल। रौद तेज भेल जाइत छल ताहि कारणें तेज चललहुँ। तें श्वास तेज भेल। (5) बाटमे दुष्ट पड़ोसी सभ अपवाद लगबए लागल। तकर हम उचित उत्तर देल। क्रोधवश धैर्य नहि रहल तें स्वर गदगद भए गेल। (6) विद्यापति कहैत छथि, तोहर पर पुरुष संगम देखार छहु, एकरा कोना झाँपबह। राजा शिव....। (7) विद्यापति कहैत छथि, हे श्रेष्ठ युवती, ई सम्भोग-चिह्न सभ नुकओने रहह आओर ननदिसँ प्रीति बढ़ाबह। गुप्त कर्म प्रकट नहि होएतहु।

[217]

सुरत सिथिलतन[1] सरोबर तीर। अरुन उदए बह[2] सिसिर समीर।।1।।
मधु रजनी[3] बैरिनि भेलि नीन्द। पुछिओ न गेल मोहि निठुर गोबिन्द।।2।।
जाए खने दितहुँ आलिङ्गन गाढ। जनि जुआर पउरुसे गह[4] पाढ।।3।।
तत तत[5] करितहुँ जत[6] मन जाग। अनुसए अन्त[7] भेल अनुराग।।4।।

1. परिश्रम। 2. अरु अरुणोदय। 3. मधुनिसा रे। 4. परुसे खेल पाढ़। 5. जतजत। 6. तत। 7. हीन।

कृष्ण राधाकें छाड़ि सहसा चलि गेलाह। राधा विलाप करैत छथि — (1) नदीक तट पर रातुक संगमसँ देह शिथिल भए गेल छल। अरुणोदयक समय छल, शीतल पवन बहैत रहए (तें आँखि नहि खुजल)। तीन बैरिनि भए गेलि। निठुर कृष्ण बिनु किछु कहनहि (चुपेचाप) चल गेल। कहिकें जाइत तँ जएबाक काल कसिकें छाती लगबितहुँ, जेना जुआरी पाढ (?) कें कसिकें गहैछ। अन्तमे प्रेमक परिणाम भेल कचोट।

[218]

सहजहि आनन अछल अमूल। अलक तिलकें भेल ससधर¹ तूल।।1।।
कॉं लागि अइसन पसाहन देल। जे छल रूप सेहओ दुर गेल।।2।।
अछल सोहाओन की भए गेल। भूखन कएलें दूखन भेल।।3।।
दरसि जगाबिअ² मुनि जन आधि। नागरकाँ होअ सहज बेआधि।।4।।
लिहले उखळल अओछा भार²। भेटले मेटत अछ परकार।।5।।

1. तिलकें ससधर। 2. जगाबए।

रूपगर्विता नायिका सखीसँ कहैत छथि -- (1) हे सखी, हमर मुख तँ सहजहि (स्वतः) अपूर्व सुन्दर छल। अलकतिलक (पसाहिन) कएलासँ ई चान-सन (दाग युक्त) भए गेल। (2) एहन पसाहिन किएक कए देलह? जे रूप स्वतः छल सेहो एहि पसाहिनसँ चल गेल। (3) केहन सोहाओन तँ छले; तों ई की कए देलह। कएलह भूषण आ' भए गेल दूषण। (4) हम अपन रूप देखाए मुनिओ सभक मनमे आकुलता जगाए दैत छी। सामान्य नागर (रसिक) सभकें तँ हमर रूप सहजहि व्याधि भए जाइत छनि। (5) लिखलासँ (पसाहिन कएलासँ) जे-जे (कुरूपता) उखड़ल (प्रकट भेल) से तखनहि मेटाएत जखन पिआसँ भेट होएत।

[219]

केस कुसुम छिड़िआएल फूजि। ताराञे तिमिर छाडि हलु पूजि।।1।।
हेरि पओधर मनसिज आधि। सम्भु अधोगति धएल समाधि।।2।।
बिपरित रमन रमए बर नारि। रतिरसलालसें मुगुध मुरारि।।3।।
चुम्बने करए कलाबति केलि। नाह निमीलित लोचने हेरि¹।।4।।
ता दुहु रूप ताहि परथाब। उदयबान दुहु जैसन सभाब।।5।।

1. लोचन नाह निमीलित हेरि।

कवि विपरीत रतिक वर्णन करैत छथि — (1) केस (खोपा) मे लगाओल फूलक माला फूजिकें छिड़िआए गेल। से लगैत अछि जेना केओ अन्धकार (केस) कें तारा (फूलसभ) सँ पूजि छाड़ि देने हो। (2) स्तन देखिकें कामदेवकें लगैत छनि जेना (लिंगस्वरूप) शिव मूड़ी नीचाँ कएने समाधि लगओने होथि। (3) श्रेष्ठ रमणी राधा विपरीत रति कए रहलीह अछि आ' कृष्ण संगमजन्य आनन्दक लालसामे मुग्ध छथि। (4) कलावती राधा केलिपूर्वक चुम्बन करैत छथि आ' कृष्ण अर्धनिमीलित नेत्रसँ ओ चुम्बनकेलि देखि रहल छथि। (5)....................(?)।

[220]

नागर हो से हेरितहि जान। चाँसठि कलाक जाहि गेआन।।1।।
सरुप निरुपिअ कए अनुबन्ध। काठेओ रस दे नाना बन्ध।।2।।
केओ बोल माधव केओ बोल कान्ह। मञे अनुमापल निछछ पखान।।3।।
बरख दोआदस तसु¹ अनुराग। दूती पए² तकरा मन जाग।।4।।

1. तुअ। 2. तह।

प्रीतिमे उपेक्षिता राधा कृष्णकें उपराग दैत छथि — (1) जे चौंसठि कलाक ज्ञान बाला नागर होएत से देखितहिं जानि जाएत (जे के केहन लोक)। (2) यथार्थ परिचय सम्पर्क कएलहि पर होइत छैक। नाना चेष्टा कएने काठहुसँ रस बहराए सकैत अछि (किन्तु कृष्णसँ नहि)। (3) केओ हिनका माधव कहैत छथि तँ केओ कान्ह; परन्तु हमर अनुमान (अनुभव) अछि जे ई निछछ पाथर थिकाह। बारह बरख धरि हिनकासँ (कृष्णसँ) प्रेम करैत रहलहुँ, तैओ हिनका मनमे दूतिए समाइलि अछि।

[221]

हृदय कुसुम सम मधुरिम बानि। निअर अएलाहुँ तसु¹ सुपुरुष जानि।।1।।
चल चल दूती कि² बोलियों लाजे। पुनु³ जनु आबह अइसना काजे।।2।।
अबे कके जतन करह इथि लागि। कञोन मुगुधि आलिड्गति आगि।।3।।
नयन तरङ्गे अनङ्ग जगाई। अबला मारन जान उपाई।।4।।
दिढ़ आसा दए मन बिघटाबे। गेले अचिरहि लाघब पाबे।।5।।
भनइ विद्यापति सुनह सयानी। नागर लाघब न करिअ जानी।।6।।

1. तुअ। 2. को। 3. पुनु पुनु।

उपेक्षिता राधा दूतीकें गंजन करैत छथि — (1) ओकर (कृष्णक) हृदय फूल-सन कोमल आ' वचन (अमृत-सन) मधुर पाबिकें सुपुरुख जानि ओकरा लग अएलहुँ (परन्तु भ्रममे पड़लहुँ)। (2) हे दूती, आब हटह हमरा लगसँ। तोरा (हुनक सिकाइत) कतेक की कहबहु। एहन काजें फेर कहिओ हमरा लग नहि आबह। (3) आब एहि हेतु (हमरा कृष्णसँ मिलान करएबाक हेतु) किएक प्रयास करैत छह ? के अजानी आगिक आलिंगन करत। (4) ओ तँ आँखिक तरंगसँ काम प्रज्वलित कए-कए अबलाकें जराए-जराए मारए जनैत अछि। (5) दृढ आशा जगाए तुरन्त मन मोहि लैत अछि। जे केओ ओकरा लग जाइत अछि, लगले अपमानित-उपेक्षित होअए लगैत अछि। (6) विद्यापति कहैत छथि, हे बुधिआरि, सुनह। जानि-बूझिकें नागर (सुपुरुख) केर एना अपमान नहि करबाक थिक।

[222]

तोहें कुलमति अति गुनमति[1] नारि। बाङ्क विलोकने[2] भुलल मुरारि।।1।।
उचितहु बोलइते अबे अवधान। संसय भेललह तन्हिक परान।।2।।
सुन्दरि कि कहब कहइते लाज। तोरहि नामे परहु सञो बाज।।3।।
थाबर जङ्गम नहि अनुमान। सबहिक बिखए तोहर होअ भान।।4।।
आओर कहि कि बुझओबिसि तोहि। जनु उधमति उमताबए मोहि।।5।।

1. रतिकुलमति। 2. दरसने।

दूती राधाकें कृष्णक विरहदशा सुनबैत छनि — (1) तों कुलीना आ' परम गुनमन्ति नारी छह। तोहर कुटिल विलोकन पर कृष्ण मुग्ध भए गेल छथि। (2) आब तोरा उचितो कहबामे किछु संकोच होइत अछि। (तैओ कहए पड़ैत अछि जे) तों कृष्णक प्राणकें संकटमे दए देलह। (3) हे सुन्दरी, की कहिअहु, कहबहुमे लाज होइत अछि जे कृष्ण जकरा-तकरा तोरे नामे सम्बोधन कए बतिआए लगैत छथि। (4) स्थावर थिक कि

जंगम सेहो होस नहि रहैत छनि। सभमे तोरे भान होइत छनि। (5) तोरा आओर की-की कहि बुझबिअहु। हे 'उधमति' (?), हमरा बताहि नहि बनाबह।

[223]

सयन रचाबहि आबे[1]। दुर कर सैसब सकल सोभावे[2]।।1।।
मुख अबनत कए[3] लाजे। चरने लिखसि महि कतन बेआजे[4]।।2।।
रह निसङ्क पिआ[5] पासे। अभिनव संगम तेजहि तरासे।।3।।
पिआ सञो पहिलुकि मेली। होअओ[6] कमलकोरक अलि केली।।4।।
तरतम तञे कर दूरे। छैल इछहि छाडहि मोर चीरे।।5।।
विद्यापति कवि भासा। अभिनव सङ्गम तेजहि तरासा।।6।।

1. चराबहि पारे। 2. सभारे। 3. तेज। 4. कत महि लिखसि चरन महि के आगे। 5. रह पिआ। 6. होउ।

सखी मुग्धा नायिकाकें प्रथम संगमक उपदेश दैत छथि — (1) आब सेज रचाबह (सेज पर जाह)। बाल्यावस्थाक स्वभाव हटाबह। (2) लाजें मूड़ी झुकाए एना नहसँ माटिमे रेखा करबाक व्याज कतेक करबह। (3) हे सुन्दरी, पिआक लग निःशङ्क भए रहह। नव संगमक भय छाड़ह। (4) पिआसँ प्रथम संगम तेना करह जेना भ्रमर आ' कमलक कलीक बीच होइत अछि। (5) तलमत नहि करह। पिआ संगम चाहैत छहु। हमर चीर छाड़ह। विद्यापति कहैत छथि, नव संगमक त्रास नहि करह।

[224]

कतन[1] कोटि कुसुम कानन भमर भोगए जान।
सहस सहस गोपी मधुमुखि[2] मधुप एक पए कान्ह।।1।।
चम्पक जनि[3] भमर न भाव मो सञो कान्हक कोप।
आन्तर कार गमार मधुकर गमले गोविन्द गोप।।2।।
साजनि आबहु कान्ह बुझाओ।

बिरहि बध बेआध[4] पञ्चसर जानि न जम जुडाओ।।3।।

कओन कुलवहु पञ्चबान सह[5] जाबेसे बालभु बाम।

X X X X X ।।4।।

1. परिमल। 2. सहस गोपी मधु मधुमुख। 3. चीन्हि। 4. बेआधि। 5. बान हो अनङ्ग।

कृष्णसँ रुष्ट राधा सखीसँ अपन व्यथा कहैत छथि — (1) भ्रमर जनैत अछि जे वनमे पसरल कोटि-कोटि फूलक सौरभ कोना भोगल जाए। मधुमुखी गोपी तँ हजार-हजार छथि, किन्तु मधुपान कएनिहार एकमात्र कृष्ण छथि। (2) भ्रमर जेना चम्पक लग नहि अबैत अछि तहिना कान्हकें हमरासँ कोप (विरक्ति) छैक। ई बात गमले-बुझले अछि जे गोविन्द गोप गमार थिक आ' भ्रमरे जकाँ एकर हृदय कारी छैक। (3) हे सखी, आबहुँ कान्हकें बुझाबह। ई जनैत जे कामदेव विरही सभक वध कएनिहार व्याध थिकथि, कान्ह कृपया यमके जुडाबओ नहि। जा' प्रियतम वाम रहथिन ता' कोन कुलवधू कामदेवक बाण सहि सकैत अछि ?

[225]

दारुन कन्त निठुर हिअ रे सखि रटल[1] बिदेस।

केओ नहि हित पथ[2] सञ्चर रे जे कहत उदेस[3]।।1।।

ए सखि हरि परिहरि गेल रे निञ न बुझिअ दोस।

करम लिखलि गति पाइअ रे[4] काहि करब मञे[5] रोस।।2।।

मोहि छल दिने दिने बाढ़त रे गोविन्द[6] सञो नेह।

अब निञ मने अवधारल रे पहु कपटक गेह।।3।।

1. रहल। 2. मझु। 3. कह उपदेस। 4. बिगति गति माइ है। 5. करबो रोस। 6. देव हरि।

विरहिणी राधा सखीसँ विरहव्यथा सुनबैत छथि — (1) हे सखी, हमर पिआ बड़ निठुर हृदय बाला छथि। ओ हमरा छाड़ि विदेस चल

गेलाह। केओ हित-मित्र बाट-घाटमे नहि चलैत अछि जे हुनक उदेस कहए। (2) हे सखी, कृष्ण छाड़िकें चल गेलाह। जानि नहि हमर कोन अपराध। जे दशा भाग्यमे लिखल रहैत छैक से भोगहि पड़ैत छैक। तामस ककरा पर करब। (3) हमरा विश्वास छल जे कृष्णसँ प्रेम दिन-दिन बढ़ैत जाएत। आब मनमे पक्का धारणा भए गेल जे पिआ महाकपटी छथि।

[226]

प्रथमहि नेह[1] बढ़ाओल जे विधि उपजाए।

से आबे हठे बिघटाओल दूखन कओन पाए[2]।।1।।

ए सखि हरि समुझाओब कए मोर परथाब।

तन्हिके बिरहे मरि जाएब तिरिबध कओन पाब[3]।।2।।

जीवन थिर नहि अथिकए जौबन तहु थोळ।

बचन अपन निरबाहिअ नहि करिअए ओळ।।3।।

1. सिनेह। 2. दुषन कओन मोर पाए। 3. आब।

उपेक्षिता राधा सखीक मुहें कृष्णकें संवाद पठबैत छथि — (1) कान्ह जाहि प्रकारें पहिने प्रेम आरम्भ कए ओकरा क्रमशः बढ़बैत गेल ताहि प्रेमकें पाछाँ तोड़ि देलक। जानि नहि हमर कोन अपराध पओलक। (2) हे सखी, हमर चर्चा कए तों ओकरा बुझएबह जे हम ओकर विरहसँ जँ मरि जाएब तँ स्त्रीवध ककरा लगतैक? (3) जीवन स्थिर रहनिहार नहि थिक। ताहूमे यौवन तँ थोड़े काल रहैत अछि। अपन वचनक पालन करक थिक, ओकर अन्त नहि करबाक थिक।

[227]

तोहें जलधर सहजहि जलराज[1]। हमे चातक जलबिन्दुक काज।।1।।

धरञो परान आस कए तोर। समय न बरिससि असमय मोर।।2।।

जल दए जलद जीब मोर राख। अवसरें देले सहस हो लाख[2]।।3।।

जखने कलानिधि निञ तनु पाब। तहिखने राहु पिआसल आब।।4।।

ओहओ देअ तन से कर पान। तैअओ सराहिअ न होअ मलान।।5।।
वैभव गेलाँ रहत विवेक। तैसन पुरुख लाख मह एक।।6।।
[भनइ विद्यापति दूती सेह। दुइ मन मेलि करावए जेह]।।7।।

1. सभ जलधर राज। 2. देले सहस अवसर हो लाख। [ ] नगु. सँ।

कवि मेघक अन्योक्ति द्वारा उदारताक प्रशंसा करैत छथि — (1) तोँ सहजहि जलक राजा जलधर थिकह। हम चातक थिकहुँ, सदा एक ठोप जलक प्रयोजन रहैत अछि। (2) तोरे आस कए प्राण रखने छी। जँ तोँ समय पर बरसैत नहि छह तँ से हमर दिनक दोख थिक। (3) हे मेघ, तोँ पानि दए हमर प्राण बचाबह। अवसर पर हजार देब एक लाख देबाक बराबरि होइत अछि। (4) (उदाहरण छथि चन्द्रमा।) चन्द्रमा जखनहि अपन सर्वांगपूर्ण शरीर पबैत छथि, तखनहि पिआसल राहु हुनका लग आबि जाइत अछि। (5) ओहो अपन तन दैत छथिन, आ राहु तकरा पीबि जाइत अछि। प्रशंसा करक थिक जे तैओ चन्द्रमाक मुह म्लान नहि होइत छनि। (6) वैभव गेलहु पर विवेक रहैक एहन पुरुष लाखमे एक भेटत। विद्यापति कहैत छथि, दूती सेह थिक जे दूलूक मन मिलाबए।

[228]

आजे मजे हरि समागम जाएब कत मनोरथ भेल।
घर गुरुजन नीन्द निरुपैते चन्दाजे उदय देल ।।1।।
चन्दा, कठिन तोहरि रीति।
जेहि मति तोहि कलङ्क लागल तैअओ न मानसि भीति ।।2।।
जगत नागरि मुह जिनइते गेलाहे गगन हारि।
ततहु राहु गरास पळलाहे देब तोहि की गारि ।।3।।
एकें मासे तोहि बिहि सिरिजए कतन जतन बले।
दोसर दिना रहए न पारह ताही पापक फले ।।4।।
[भन विद्यापति सुन तजे जुबति चान्दक न कर साति।
दिना सोळह चान्दक आइति ताहि पर भलि राति] ।।5।।

[ ] नगु. सँ।

नायिका अभिसारमे विघ्न कएनिहार चन्द्रमाक भर्त्सना करैत छथि — (1) कतेक मनोरथ छल जे आइ राति कान्हसँ मिलए जाएब। घरमे गुरुजनक नीन पड़बाक प्रतीक्षा करैत-करैत चन्द्रमाक उदय भए गेल। (2) हे चान, तोहर चालि बड़ दुखदायी छहु। एही चालि पर तोरा कलङ्क लगलहु। तैओ तोँ ओहि कलङ्कसँ डरएलह (लजएलह) नहि। (3) संसार भरिक नागरीलोकनिक मुखकेँ जितए चललह आ' हारिकेँ आकाशमे पड़एलह। ततहु राहुक ग्रासमे पड़लह। तोरा कोन गारि दिअहु। (4) तोरा विधाता कतेक यत्न कए एक मासमे सिरजैत छथुन, किन्तु तोँ दोसरे दिन (तकरा पराते) ताही पापक परिणाम स्वरूप टिकि नहि पबैत छह (क्षीण होअए लगैत छह)। (5) विद्यापति कहैत छथि, हे युवती, तोँ सुनह। चानकेँ कोसह नहि। केवल सोलह दिन चानक हाथमे छैक। तकरा बाद तँ भल (अनुकूल) राति भेटबे करतहु।

[229]

जमुना नीर केलि कए सुन्दरि जबे उगलिहे सानन्दा[1]।
चिकुर सैमार हार अरुझाएल जूथे जूथे उग चन्दा।।1।।
माननि अपरुब तुअ निरमाने।
पञ्चबाने जनि सेना साजलि अइसन उपजु मोहि भाने।।2।।
आनि पुनिम ससि कनक थोए कसि सिरिजल तुअ मुख सारा।
जे सबे उबरल काटि नड़ाओल से सबे उपजल तारा।।3।।
उबरल कनक ऑटि बटुराओल सिरिजल दुइ आरम्भा।
सीतल छाह छैले छुइ छाड़ल छाड़ि गैल सबे दम्भा।।4।।

1. तीर युवति केलि कर ऊठि उगल।

नायक नायिकाकेँ प्रसन्न करबाक हेतु ओकर रूपक वर्णन करैत छथि (जे चाटुवचन कहबैत अछि) — (1) यमुना नदीक जलमे क्रीड़ा कए

हे सुन्दरी, जखन तों आनन्दपूर्वक डूब दए-दए उपर उठलह तँ तोहर केश-राशि, सेमार आ' हार ई तीनू अपनामे ओझराए गेल। जनु झुण्डक झुण्ड चान उगि गेल हो। (2) हे मानिनी, तोहर रचना (छवि) अपूर्व अछि। हमरा एहन-सन लगैत अछि जेना कामदेव अपन सेना सजओने होथि। (3) विधाता पूर्णिमाक चान आनि आओर स्वर्णपिण्डकें कसि-कसि (काटि-छाँटि) तोहर मुह बनओलनि। ओहिमे जे फाजिल अंश काटिकें नड़ाए (छिड़िआए) देल सेह सभ मानू तारा भए गेल। (4) ताहूसँ जे अंश उबरल तकरा औंटि विधाता वर्तुलाकार बनाए तोहर दूनू स्तनक निर्माण कएल। रसिक शीतल छायाकें छूबिकें छाड़ि देल; सभ दम्भ छाडि गेल (आशय अस्पष्ट, अप्रासंगिक)।

[230]

मधु रजनी सङ्गहि खेपबि कति कति छलि आस।
बिहि बिपरीते सबे बिघटल रहु रिपुजन हास।।1।।
हे सुन्दरि कान्ह न बुझ बिसेख।
पिसुन बचने उचित बिसरि अपद हो निरपेख।।2।।
कत गुरुजन कत परिजन कत पहरी जाग।
एतहु साहसे मञे चलि अइलिहुँ हेन छल अनुराग।।3।।

कृष्णसँ वंचिता राधा सखीकें अपन व्यथा-कथा सुनबैत छथि — (1) बड़-बड़ आस लगओने छलहुँ जे वसन्तक राति कान्हक संग बिताएब। किन्तु विधाता विपरीत भए गेल। सभ योजना गड़बड़ाए गेल। शत्रु (दुष्ट) सभकें उपहासक अवसर भेटलैक। (2) हे सुन्दरी, कृष्ण यथार्थ स्थिति (हमर विवशता) नहि बुझलनि। दुष्ट लोकक बात सुनिकें अपन उचित कर्तव्य (संकेतस्थल पर आएब) बिसरि अनेरे निरपेक्ष (उदासीन, विमुख) भए गेलाह। (3) बहुतो गुरुजन, बहुतो परिजन आ' बहुतो प्रहरी सभ जगैत छल। तैओ हम साहस कए चलि अएलहुँ। एहन छल हमर प्रेम।

[231]

बिधिबसे तुअ सङ्गम तेजल दरसन भेल साध।
समय बसे मधु न मिलए सौरभ के कर बाध।।1।।
माधब कठिन तोहर नेह।
तुअ बिरह बेआधि मुरुछलि जीवन तासु सन्देह।।2।।
जगत नागरि कतन दुलहि[1] तथुहु गुपुत पेम।
से रस बएस पुनु न पाइअ[2] देलहु सहस हेम।।3।।

1. आगरि। 2. पुनु पाबिअ।

सखी कृष्णसँ कहैत छथि — (1) राधाकें दुर्भाग्यवश तोहर संग छोड़ए पड़लैक। तैओ दर्शनक लालसा तँ लगले रहलैक। दिनक दोखें मधु नहि भेटए तँ नहि भेटओ, सौरभ के रोकत। (2) हे माधव, तोरासँ प्रेम करब सोझ नहि। राधा तोहर विरह-व्यथासँ मूर्छित अछि; प्राणो बचतैक कि नहि। (3) एक तँ संसारमे नागरी (रसज्ञा) ललना दुर्लभ अछि; आ' तकरा संग गुप्त प्रेम तँ आओरो दुर्लभ। ताहूमे सरस बएस तँ सहस स्वर्णमुद्रा देलहुपर नहि पाओल जाए सकैत अछि।

[232]

द्विज आहर आहर सुत नन्दन सुत आहर सुत कामा।
वनजबन्धु सुत सुत दए सुन्दरि चललि सङ्केतक ठामा।।
माधब बूझल कला बिसेखी।
तुअ गुने लुबुधलि पेम पिआसलि आइलि उपेखी।।
हरि अरि अरि पति तातक बाहन जुबति नामे से होई।
गोपति पति अरि वाहन दस मिलि बिरमति कबहुन सोई।।
साअक जोगे नाम तरु नाअक हरि अरि अरि पति जाने।
नउमि दसा हे एके मिलु कामिनि सुकवि विद्यापति भाने।।
टि—पिहानी थिक। अर्थ बूझब कठिन।

[233]

हरि रिपु रिपु प्रभु तनय से घरनी तुलना रूप रमनी।
विबुधासन सम वचन सोहाओन कमलासन सम गमनी।।
साए साए X X X X।
देखलि जाइते मग जिनए आइलि जग विबुधाधिपपुर गोरी।।
घटज असन सुत देखिअ तैसन मुख चञ्चल नअन चकोरा।
हेरितहि सुन्दरि हरि जनि लए गेलि हर रिपु वाहन मोरा।।
उदधि तनय सुत सिन्दुर लोटाओल हासे देखलि रज कान्ती।
खदपद बाहन कोख बइसाओल बिहि लिहु सिखरक पान्ती।।
रवि सुत तनअ दइए गेलि सुन्दरि विद्यापति कवि भाने।
राजा सिवसिंह रूपनराएन लखिमा देवि रमाने।।
टि—पिहानी थिक। अर्थ बूझब कठिन।

[234]

पहिलुकि परिचए पेमक सञ्चय रजनी आध[1] समाजे।
सकल केलिरस[2] सँभारि न भेले[3] बैरिनि भेलि मोरि लाजे।।1।।
[साए साए, अनुसए रहलि बहूते]।
तन्हिहि[4] सुबन्धुकें कहिअ पठइतहुँ[5] भमरा जओ होअ दूते।।2।।
कबहु हार धर[6] कबहु चिकुर गह करए चाह कुच भङ्गे[7]।
एकलि नारि हमे कत अनुरञ्जब एकहि बेरि सबे रङ्गे।।3।।
आओर बिनय जत से सबे कहब कत बोलए चाहल[8] कर जोरी।
नब रसरङ्ग भङ्ग भए गेल सखि[9] ओळ धरि नहि भेल बोली।।4।।
ओ नब नागर सुपहु सुचेतन विद्यापति कवि भाने।
[राजा सिवसिंह रूपनराएन लखिमा देवि रमाने]।।5।।

1. अधिक। 2. कलारस। 3. हलबे। 4. हुनिहि। 5. लिखिए पठाओब। 6. कर। 7. कबहु हृदय कुच सङ्गे। 8. चाहिअ। 9. नबए रङ्ग सबे भङ्ग भैए गेल। [ ] नगु. सँ।

मुग्धा राधा अपन प्रथम संगमक अनुभव सखीकें सुनबैत छथि — (1) परिचय पहिले-पहिल भेल छल। प्रेम उमड़ि आएल छल। आधा राति बितला पर संगम भेल। सभ रतिरंग सम्हारि नहि सकलहुँ किएक तँ लाज बैरिनि भए गेल। हाए, बहुत पश्चाताप रहि गेल। (2) मन होइत अछि, जँ भमरा दूतक काज करैत तँ हुनका ओकरा द्वारा अपन ई पश्चाताप कहा पठबितिअनि। (3) ओ कखनहु हार छूबथि, कखनहु केस पकड़थि, कखनहु स्तनमर्दन करए चाहथि। एकसरिए हम एकहि बेर हुनका नाना प्रकारक कामकेलि द्वारा कतेक सन्तुष्ट कए सकब। (4) तखन हाथ जोड़ि हुनकासँ कतेक की बिनती करए चाहलहुँ से की कहिअहु। नब रस-रंग भंग भए गेल। अन्त धरि एको बेर मुहो नहि बाजि सकलहुँ। (5) हम अचेतन रहलहुँ आ' ओ सुचेतन।

[235]

अछलि[1] पुरुब भोरे न जाएब पिआ मोरे पालङ्क सुतलि धनि कल हई।
खने एके जागलि रोअए लागलि पिआ गेल निज कर मुन्दरी दई।।1।।
दिने-दिने तनु सेख दिबस बरिस लेख सुन कान्ह तोह बिनु जैसनि गती[2]।
परक बेदन दुख न बुझए अमरुख पुरुख निकारुन[3] चपलमती।।2।।
रसभ पळलि बोल सत कए तोहें[4] लेल कि करति अनाइति पहु[5] जुबती।
XX X X X X X X X ।।3।।

1. छलिहु। 2. रमनी। 3. निरापन। 4. तन्हि। 5. पललि।

सखी कृष्णकें राधाक विरह-दशा सुनबैत छथि — (1) राधा पहिने एहि भ्रममे छलि जे पिआ छोड़िकें नहि जाएत। तें निश्चिन्त भए ओ पलंग पर सूतलि रहए। छनमे जागलि तँ कानए लागलि, हाए पिआ तँ अपना हाथक औँठी दए चलि गेल। (2) तहिआसँ राधाक देह दिन-दिन क्षीण होइत गेलैक। ओकरा एक-एक दिन बरख जकाँ लगैत छैक। हे कान्ह, तोहर विरहमे ओकर जे दशा भए गेल अछि से सुनह। (3) मूढ लोक

आनक दुख-दर्द नहि बूझैत अछि (तों मूढ नहि छह, तें बुझैत होएबह)। पुरुख निष्करुण (दयाहीन) आ' चंचल चित्त बाला होइत अछि। राधा जे कोनो तेहन बात रंगरभसमे बाजलि तकरा तों सत्य बूझि तमसाए गेलह। आब ओ की करत। विवशतामे पड़लि अछि।

[236]

अछलि[1] भरमे राहि पिआञे जाएब कहि कोप कइए नीन्द गेली।
जागि उठलि धनि देखि सेज सुनि हरि हरि मुरुछित भेली[2]।।1।।
माधव, ई तोर कञोन गेआने।
सबे सबलहु बोल जे सह से बड़ पर बुझबहि अगेआने।।2।।
भल न कएल तोहें तेजलि[3] अलप कोहें दुर कए[4] छड़लक रीति।
ओछा सञो हरि न करिअ सरिपरि ते कर बड़ अनुचीती[5]।।3।।

1. छलि। 2. हरि बोलइते निन्द गेली। 3. पेअसि। 4. करु। 5. अनिसाति।

राधाकें सूतलि छाड़ि चल गेल कृष्णकें सखी कहैत छथि — (1) हे कान्ह, राधा एहि भ्रममे छलि जे तों जँ जएबह तँ कहिकें जएबह। एहि भ्रममे पड़ि ओ कोप कए निद्रित भए गेलि। जागिकें उठलि तँ सेज सून देखि हरि हरि कए मूर्छित भए गेलि। (2) हे कान्ह, तों कोन ज्ञाने एना कएलह ? सभ सभ ठाम कहैत अछि जे आनक अपराध सहए सेह महान् थिक। अपन क्रोध अनका लग प्रकट करब अज्ञान (अनुचित) थिक। (3) तों जे रसिक जनक परिपाटीकें छाड़ि अल्पमात्र क्रोध पर प्रेमी जनकें तेजलह से नीक नहि कएलह। हे कान्ह, ओछ लोकसँ सरिपरि (संगति) नहि करी। ओहन लोक बड़ अनुचित करैत अछि (व्यर्थ झगड़ा लगबैत रहैत अछि)।

[237]

नयनक ओत होइते होए[1] भाने। बिरह होएत नहि रहत पराने।।1।।
से आब देसान्तर आन्तर भेला। मनमथ मदन रसातल गेला।।2।।

कञोन देस बसल रतल कञोन नारी। सपनेहु[2] न देखए निठुर मुरारी।।3।।
अमित्र[3] सिचलि सनि बोललन्हि बानी। मन पतिआएल मधुरपति जानी।।4।।
हम छल टुटत न ई नब[4] नेहा। दिने दिने बूझल[5] कपट सिनेहा।।5।।

1. होएत। 2. सपने। 3. अमृत। 4. जाएत। 5. बुझलक।

राधा सखीकें अपन विरह-व्यथा सुनबैत छथि — (1) पहिने एहन धारणा छल जे कान्ह जखनहि आँखिक परोछ भए जाएत तखनहि प्राण छूटि जाएत। (2) परन्तु ओ कान्ह आब देशान्तर जाए हमरासँ दूर भए गेल (तैओ हम जीबैत छी। (ताहिसँ लगैत अछि जे) मनकें मथनिहार कामदेय रसातल चलि गेलाह। (3) जानि नहि कान्ह कोन देसमे टिकल आ' कोन नारीमे अनुरक्त भेल। आब लगैत अछि जे ओ निष्ठुर कान्ह हमरा सपनहुमे नहि देखैत होएत। (4) ओ अमृत सींचल बोल बाजए। मथुरापति बूझि मनमे विश्वास भेल। (5) हमरा धारणा छल जे ई नब नेह कहिओ नहि टूटत। मुदा जँ-जँ दिन बितैत गेल तँ-तँ बुझाइत गेल जे ओ नेह वंचना छल।

[238]

अरुन लोचन घुमे घुमाओल। जनि रातोपल पवन पाओल।।1।।
आकुल चिकुर आनन झापल। जनि तमचत्रे चान्द चापल।।2।।
माधब कइसे जाइति बासा। देखि सखीजन हो उपहासा।।3।।
कुच नखरेख गोप[1] करतल। कमलें झाँपि कि हो कनकाचल।।4।।
फूजलि नीबी आनि मेराउलि। जनि सुरसरि उपर धाउलि।।5।।
कवि विद्यापति कौतुक[2] गाओल। ई रस राए सिवसिंह पाओल।।6।।

1. नख दोख देषल कुच। 2. सुकवि भने विद्यापति।

दूती राधाक सम्भोगोत्तर-दशा कृष्णकें सुनबैत छथि — (1) राधाक लाल आँखि निद्रासँ घूर्णायित अछि, जेना लाल कमलकें बसात लागल हो। (2) छिड़िआएल केस मुहकें झपने अछि, जेना चानकें अन्धकार दबओने

हो। (3) हे कान्ह, राधा अपन घर कोना जाएत? ओकर देहदशा देखिकें सखी सभ उपहास करतैक। (4) स्तन पर जे नखक्षत छैक तकरा ओ हाथसँ झँपबाक प्रयास तँ करैत अछि किन्तु स्वर्णपर्वत (उच्च स्तन) कतहु कमल (हाथ) सँ झाँपल हो। (5) चीरक कसनी कें ओ यथास्थान आनि सरिअओलक, जेना गंगा उपर दिस चललि हो। (5) विद्यापति कवि कामलीलाक वर्णन कएल। एकर रस पओलनि राजा शिवसिंह।

[239]

नारङ्गि छोलङ्गि कोरि कि बेलि। कामे पसाहलि आञ्चर फेलि।।1।।
आबे से भेलि ताल फल तूले। कहाँ लए जाइति अलप मूले।।2।।
से कान्ह से हमे से धनि राधा। पुरुब पेम न करिअ बाधा।।3।।
मालति जाही-जूही कचनारा[2] तुअ गुने गहि गाँथए हारा।।4।।
सरस निरस के बुझ आने[3]। कहाँ लए बूलति भेलि बिमाने।।5।।
सरस कवि विद्यापति गाबे। नागरि नेह पुनमत पाबे।।6।।

1. जातकि केतकि सरसिजमाला। 2. निरसि तोह के बुझाबे।

सखी कृष्णसँ कहैत छथि — (1) कामदेव सुन्दरी राधाक आँचरमे नेबो, छोहारा आ' बेल फेकि ओकर सिङार कएल। (2) आब से (स्तन) ताड़क फड़क बराबरि (स्थूल) भए गेल। ओ अल्पमूल्य फल लए ई कतए-कतए बेचए जाएत? (3) ओएह कान्ह (तों), ओएह सखी हम आ' ओएह बेचारी राधा (सभ ओहनाक ओहिना), तखन पूर्वक प्रेममे बाधा किएक? (4) बेचारी राधा जाही, जूही मालती आ' कचनारक फूलकें तोहर गुण (अर्थान्तर ताग) लए हार गँथलक। (5) से हार ओकर सरस छैक कि नीरस (बहुमूल्य कि अल्पमूल्य) से तोरा छाड़ि आन के बूझत। ओ ई हार लए विखिन्न भेलि कतए-कतए बौआएत? (6) सरस कवि विद्यापति कहैत छथि, नागरिक नेह पुण्यवाने पुरुष पबैत अछि।

[240]

हिमकर हेरि अवनत कर आनन कर[1] करुना पथ हेरी।
नयन काजर लए लिखए बिधुन्तुद कए रहु ताहेरि सेरी।।1।।
माधव कठिन हृदअ परबासी।
तुअ पेअसि मञे देखलि बराकिनि[2] अबहु पलटि घर जासी।।2।।
मीनकेतन भञे सिब सिब सिब कए धरनि लोटाबए देहा।
कर पङ्कज[3] लए कुच सिरिफल दए सिब पूजए निज गेहा।।3।।
दाहिन पबन बह से कैसे जुबति सह कर कबलित तसु अङ्गे।
गेल परान आस दए राखए घस नख लिखिए[4] भुजङ्गे।।4।।
दुतर पओधि फेने नहि सन्तर विद्यापति कवि भाने।
राजा सिबसिंह रूपनराएन लखिमा देबि रमाने।।5।।

1. कए। 2. बराकी। 3. करज कमल। 4. दस नखे लिहए।

सखी कृष्णकें राधाक विरहवर्णन सुनबैत छथि — (1) राधा तोहर विरहमे चानकें देखि मूड़ी गोंति लैत अछि। तोहर बाट देखैत करुणा करैत (कलपैत) रहैत अछि। आँखिक काजरसँ राहु लिखैत अछि (जे चानकें गीड़थि) आ' तकर आश्रय धएने रहैत अछि। (2) हे माधव, प्रवासीक हृदय बड़ कठोर होइत अछि। हम तोहर प्रेयसीकें दीन अवस्थामे देखलहुँ। आबहु तों घुरिकें घर जाह। (3) ओ कामदेवक डरें हा-हा करैत भूमिमे लोटाइत रहैत अछि। घरमे हाथ रूपी कमलक फूल दए आ' स्तन रूपी बेल चढाए शिवक पूजा करैत अछि (जे कामदेव डरें पड़ाए)। (4) मलय-पवन बहैत अछि। से युवती राधा कोना सहत। ओ राधाक अंगकें झरकाए दैत अछि। छुटबा पर उद्यत प्राणकें आशाक बलें बचओने अछि। साप मलय पवनकें पीबओ एहि आशासँ साप लिखैत-लिखैत नह खिआए गेलैक। (5) विद्यापति कहैत छथि, हे राधा, दुस्तर (दुर्गम) नदी फेन धए के पार कए सकैत अछि? राजा शिव...।

[241]

प्रथमहि रङ्ग-रभस[1] उपजाए। पेमक आङ्कुर गेलाह बढ़ाए।।1।।
आबे से तरुअरे सिरिफल भास। तों तर[2] बलें मनमथ लेल बास।।2।।
माधब कके बिसरलि बरनारि। बड़ परिहर गुन दोख बिचारि।।3।।
नयन सरोज दुअओ[3] बह नीर। काजर पखरि पखरि पळ चीर।।4।।
तेहि तिमित भेल उरज सुबेस। मृगमदे पूजल कनक महेस।।5।।
चान्द पबन पिक मदन तरास। सर गदगद घन छाड़ निसास।।6।।
काजरे राहु उरग लिख काक। बिस मानए धनि[4] मलयज पाँक।।7।।
[भनइ विद्यापति सुन बर नारि। धर मन धैरज मिलत मुरारि]।।8।।

1. हृदय पेम। 2. तहि तल। 3. दुहू। 4. बिस मलयज पुनु। [ ] नगुसँ।

सखी कृष्णकें राधाक उपेक्षा करबाक उलहन दैत छथि — (1) हे कान्ह, तों पहिने रंगरभस (सरस विलास) कएलह आ' पाछाँ राधामे प्रेमक अङ्कुर बढ़ओलह। (2) आब ओहि गाछमे श्रीफल देखाइत अछि आ' ओहि गाछक छाहरिमे कामदेव डेरा खसाए देलनि अछि। (3) एहन स्थितिमे तों नागरी राधाकें बिसरि किएक गेलहुन? श्रेष्ठ पुरुष गुण-दोषक विचार कए ककरो त्याग करैत अछि (तों से नहि कएलह)। (4) ओकर दूनू आँखिसँ दहो-बहो नोर बहैत छैक। काजर धोखरि धोखरि चीर पर पड़ैत छैक। (5) ताहिसँ ओकर स्तन भीजि गेल छैक। से लगैत अछि जेना कस्तूरीक लेप लगाए स्वर्णमय शिवलिंगक पूजा कएल गेल हो। (6) ओ चान, मलय पवन, कोकिल आ' मदनसँ त्रस्त अछि। स्वर गद्गरित भए गेल छैक। तेज निसास छोड़ैत रहैत अछि। (7) ओ चानक डरें काजरसँ राहु लिखैत अछि, पवनक डरें साप आ' कोकिलक डरें कौआ। घसल चानन ओकरा बिख-सन लगैत छैक। (8) विद्यापति कहैत छथि, हे श्रेष्ठ ललना, सुनह। मनमे धैर्य धरह; मुरारि आबि मिलथुन।

[242]

कुसुमे रचित सेज मलयज परिमल[1] पेअसि सुमुखि समाजे।
कत मधुमास बिलासे गमाओल आबे पर कहइते[2] लाजे।।1।।
माधब काहु जनु दिन अबगाहे।
सुरतरु तर सुखे जनम गमाओल धुथुरा तर निरबाहे।।2।।
दखिन पबन सौरभ उपभोगल पिउल अमिअ रस सारे।
कोकिल कलरबे उपबन पूरल तहु कत कएल बिहारे[3]।।3।।
[पातहि सओ फुल भमर अगोरल तरुतर लेल निबासे।
ले फुल काटि कीट उपभोगल भमरा भेल उदासे।।4।।
भनइ विद्यापति कलिजुग परिनति चिन्ता जनु कर कोइ।
अपन करम अपने पए भुञ्जिअ जओ जनमान्तर होइ]।।5।।

1. पङ्कज। 2. कहितहु पर। 3. बिकारे। [ ] नगु. सँ।

कवि कृष्णकें सम्बोधित कए अपन वैराग्य भाव व्यक्त करैत छथि – (1) पुष्प-शय्या, चाननक सौरभ, प्रिय सुन्दरीक संग कतेक वसन्त केलिविलास (रंगरभस) मे बिताओल। आब से सभ कहितहुँ (ताहि सभक चर्चा करितहुँ) लाज होइत अछि। (2) हे माधव, ककरो दिन अवग्रह (दुखद) नहि होअओ। कल्पवृक्षक तर सुखपूर्वक जीवन बिताओल आ' आब धुथुरक गाछहि तर निर्वाह कए रहल छी। (3) एक दिन मलयानिलक सुगन्धि भोगल; अमृतरस पीलहुँ। कोकिलक कलरवसँ उपवन मुखरित छल आ' ताहि ठाम खूब विहार (रसरंग) कएल। (4) जहिआ पती बहरएलैक ताही दिनसँ भमरा फूलकें अगोरने ओहि गाछ तर बास करैत रहल। परन्तु ओ फूल कीड़ा खाए गेल। बेचारा भमरा उदास भए गेल। (5) विद्यापति कहैत छथि, ई कलियुगक परिणाम थिक; केओ चिन्ता नहि करओ। जँ पुनर्जन्म सत्य थिक तँ अपन कर्मक फल अपनहि भोगबाक थिक।

[243]

हमे एकसरि पिअतम नहि गाम। तें तरतम मोहि देइते[1] ठाम।।1।।
अनतहु कतहु करैतहु बास। दोसर न देखिअ पड़ओसिओ पास।।2।।
चल चल पथिक करिअ हमे काह। बास नगर भमि अनतह चाह।।3।।
सात पाँच घर तन्हि सजि देल। पिआ देसान्तर आन्तर भेल।।4।।
बारह बरख अबधि कए गेल। चारि बरख तन्हि गेलाँ भेल।।5।।
मोरा मन हे खनहि खन भाङ्ग। मन गोपब[2] कत मनसिज जाग।।6।।
[आँतर पाँतर साँझक बेरि। पर घर बसिअ अनाइति हेरि।।7।।
घोर पओधर जामिनि भेद। जे करबह तों कर परिछेद।।8।।
भनइ विद्यापति नागरि रीति। व्याज बचने उपजाब पिरीति]।।9।।

1. अछइते एहि। 2. गमन गोब। [ ] नगु.सँ।

विरहिणी बास चाहनिहार पथिककें कहैत छथि — (1) हम एकसरि छी। प्रियतम गाममे नहि छथि। तें तोरा एहि ठाम बास देबामे हमरा तारतम्य होइत अछि। (2) आनो ठाम कतहु तोरा बास देआए दितहुँ, परन्तु दोसर कोनो पड़ोसिअहुकें लगमे नहि देखैत छी। (3) हे पथिक, आगाँ बढ़ह; हम की करू। नगरमे बुलि कतहु आन ठाम बास ताकह। (4) ओ पाँच-सात टा घर बान्हि गेलाह आ' परदेस जाए दूर भए गेलाह। (5) बारह वर्षक अवधि कए गेलाह। तनिका गेना चारि वर्ष भए गेल। (6) हमर मन छन-छन विचलित भए उठैत अछि। मनकें कतेक दबाएब, कामदेव जागि उठैत छथि। (ढीठ पथिक उत्तर दैत छनि--) (7) देखह, बीचमे पाँतर पड़ैत अछि। साँझ से पड़ि गेल। विवश छी, तें आनक घरमे बास लेअए पड़ैत अछि। (8) बड़ जोर मेघ लागल अछि। राति अन्हारगुज (भेद?) अछि। जे करबाक होअहु से निर्णय करह। (9) विद्यापति कहैत छथि, नागरि कामिनीक इएह रीति थिक : व्याज (विपरीत लक्षणा) बाला वचनसँ आन्तरिक प्रीति प्रकट करब।

[244]

रसिकक सरबस नागरि बानि। भल परिहर नहि आदरि आनि।।1।।
हृदयक कपटी बचने पिआर। अपनेहि रसे ऊकठ कुसिआर।।2।।
आबे कि बोलब सखि बिसरल जेओ। तुअ रूपे लुबुध मही नहि केओ।।3।।
पएर पखालले रुसल न' खाए। अन्धरा हाथ भेटल दुर जाए।।4।।
तञे जे कलामति ओ अबिबेक। न पिब सरोज अमिअ रस भेक।।5।।
अकुलिन सञो जदि कर[2] सदभाव। तकराँ[3] कतए चतुरपन फाब।।6।।
ओकरा हृदअ रहए नहि लागि। सुनलछ कतहु जूड़ होअ आगि।।7।।

1. पखाल रोखे नहि। 2. कए। 3. तत कए।

सखी राधाकें सान्त्वना दैत छथि – (1) नागरीक वचन मानू रसिकक सर्वस्व होइत अछि (प्रेयसीक कटुओ वचन प्रेमीकें मधुर लगैत छैक)। सुपुरुख कोनो नागरीकें आदरपूर्वक आनिकें छाड़ि नहि दैत अछि। (2) ओ हृदयसँ कपटी आ' वचनसँ प्रेमी प्रतीत होइत अछि। कुसिआर अपने रससँ अपनहि फाटि जाइत अछि (ओ घमण्डी भए गेल अछि)। (3) हे सखी, जे बात सभ बिसरि देलहुँ से फेर की बाजब। संसारमे एहन के अछि जे तोहर रूप पर मुग्ध नहि होअए? (4) रूसल लोक पाएर धो देने खाए नहि लागत (हुनक अनुनय-विनय करब छाड़ि देह)। आन्हर लोक हाथमे अएलो वस्तु गमाए दैत अछि (तों अन्हराक हाथमे पड़लि छलह)। (5) तों कलावती छह आ' ओ विवेकहीन अछि। बेड कमलक अमृतरस नहि पिबैत अछि। (6) जे अकुलीन पुरुषसँ मैत्री करए से अपन कौशल की देखाए पाओत। (7) एहन लोकक हृदयमे कहिओ प्रेम नहि रहि सकैत छैक। आगि कतहु शीतल होअए।

[245]

जलधि सुमेरु दुअओ थिक सार। सबतह सार अथिक[1] बेवहार।।1।।
मालति तोहें जदि अधिक उदास। भमर जाएत गए[2] कमलिनि पास।।2।।
लाथ करसि कत अवसर पाए। देउर[3] न होअए हाथें झपाए।।3।।

कुचजुग कञ्चन कलस समान। मुनिजन दरसने डगए[4] गेआन।।4।।
तञे वरनागरि अपनेहि गून। कञोनके देलें हो बड़ पून।।5।।

1. गुनिअ अधिक। 2. भमर गञो सञो आबे। 3. देउब। 4. ठगए।

कृष्ण राधाकें पोल्हबैत छथि — (1) समुद्र आ' सुमेरु महत्वपूर्ण वस्तु थिक। सभसँ महत्वपूर्ण मानल जाइत अछि व्यवहार। (2) हे मालती (राधा), तों यदि भ्रमरकें अधिक उदास करबह तँ ओ कमलिनीक लग चलि जाएत। (3) मिलनक अवसर (सुयोग) अएलहुपर तों लाथ कए छिटकि जाइत छह (जे एखन बएस नहि भेल अछि)। देयमन्दिर (स्तन) कें केओ हाथसँ झाँपि सकैत अछि? (तों पूर्णयौवना भए गेलह)। (4) तोहर दूनू स्तन मानू सोनाक कलश थिकहु। देखिकें मुनिओ लोकनिक मति डगए लगैत छनि। (5) तों श्रेष्ठ नागरी थिकह, अपने मनमे विचारह जे ई स्वर्णकलश ककरा दान देने अधिक पुण्य होएतहु।

[246]

साकर सूध दूधे परिपूरल सानल अमिञक सारे।
सेहे बदन तोर ऐसन करम मोर खतपर बरिसए खारे[1]।।1।।
साजनि पिसुन बचन देहे काने।
देह बिभीन बिधाता आइति तोरा मोरा एके पराने।।2।।
कोपहु सञो जदि समन्दि पठाबह बचन न बोलह मन्दा।
तोर बदन सन तोरे बदन पए खार न बरिसए चन्दा।।3।।
चौंदिस लोचन चमकि चलाबसि, न मानसि राहुक[2] सङ्का।
तोरा मुह सञो किछु भेद कराओब तें देल चान्द कलङ्का।।4।।

1. खारे पए बरिसए धारे। 2. काहुक।

कृष्ण राधाकें पोल्हबैत छथि—(1) तोहर जे मुख मिसरी सहित दूधसँ भरल आ' अमृतरससँ सानल छहु सेह मुख हमर करमक दोखें घाओ पर क्षार बरिसाए रहल अछि। (2) हे सङ्गिनी, तों दुष्ट लोकक

वचन पतिअएलह। हमर आ' तोहर देह तँ भिन्न-भिन्न अछि, से विधाताक हाथमे छनि, किन्तु प्राण एक अछि। (3) यदि तामसहुसँ किछु समाद पठाबह तँ अधलाह वचन मुहसँ नहि बहार करह। तोहर वदन तोरे वदन-सन छहु (एकर कोनो उपमा नहि हो)। चान कतहु क्षार-वर्षण करए। (4) तों चेहाइलि जकाँ चारु दिस सशङ्क तकैत छह (जे राहु ने गरसए, परन्तु तकर कोनो आशङ्का नहि), तोहर मुह तोरे मुह-सन छहु (चान सन नहि)। विधाता चान आ' तोरा मुहमे भेद करबाक हेतु चानमे कारी दाग लगाए देलनि।

[247]

आएल पाउस निबिड़ अन्धार। घन नीरद[1] बरिसए जलधार।।1।।
घनहन देखिअ तड़ित तरङ्ग। पथ चलइते पथिकहु मन भङ्ग।।2।।
कञोन परि आओत बालभुँ हमार[2]। आगु न चलि अभिसारिनि पार।।3।।
गुरुगृह तेजि सयनगृह जाथि। तथिहु बधूजन सङ्का आथि[3]।।4।।
नरि नारा भउ अगम[4] अथाह। भीम भुअङ्गम चरइते आह[5]।।

1. सघन नीर। 2. मोर। 3. याथि। 4. नदिआ जोरा भअउ। 5. पथ चललाह।

विरहिणी नायिका वर्षा ऋतुमे अपन विरहवेदना व्यक्त करैत छथि — (1) पाबस (वर्षा ऋतु) आबि गेल। गाढ़ अन्धकार पसरल। मेघ जोरसँ बरसि रहल अछि। (2) मेघमे बिजुलीक तरंग देखाइत अछि। बटोहिअहुकें बाट चलबाक साहस टूटि जाइछ। (3) एहनामे हमर पिआ कोना आओत? अभिसारिणी आगाँ डेगो नहि उठाए सकैत अछि। (4) जँ गुरूजनक घरसँ बहराए केओ कामिनी पतिक शयनगृह जएबाक साहस करथि तँ ताहूमे संकट। (5) नदी-नाला सभ अगम-अथाह भए गेल। भयानक साप सभ बुलि रहल अछि।

[248]

प्रथमहि हृदय बुझओलह मोहि। बड़े पुने बड़े तपें पओलिसि तोहि।।1।।
कामकला रस दैव अधीन। मञे बिकाएब तञे वचनहु कीन।।2।।
दूति दयायति कहहि बिसेखि। पुनु बेरा एक कैसे होएत देखि।।3।।
दुरे दुरे देखलि जाइते आज। मन छल मदने साहि देब काज।।4।।
ताहि लए गेल विधाता बाम। पलटलि डीठि सून भेल ठाम।।5।।

कृष्ण दूतीकें कहैत छथि — (1) राधा पहिने हमर मनकें मोहि ई बुझओलक जे "हे कान्ह, हम बड़ पुण्य, बड़ तप कए तोरा पओलहुँ। (2) हमरामे कामकलाक रस कतेक पएबह से तँ दैवक अधीन अछि, किन्तु हम बिकाए चाहैत छी; तों मूल्य-स्वरूप वचन दए (सदा प्रेम करैत रहबहु'ई कहि) हमरा कीनि लेह। (3) हे दयालु दूती, हमरा बुझाएकें कहह, राधाकें एक बेर फेर कोना देखि सकब? (4) आइ दूरहिसँ ओकरा जाइत देखल। मनमे आशा जागल जे विधाता मनोरथ पुराए देत। किन्तु वाम विधाता ओकरा दूर लए गेल। स्थान शून्य भए गेल तँ हमर आँखि घुरि आएल।

[249]

दिवस मन्द भल न रहए सव खन बिहि खन दाहिम[1] बाम लो।
सेहे पुरुख वर जेहे धैरज धर[2] सम्पद विपदक ठाम लो।।1।।
माधव बूझल सबे अवधारि लो।
जग जस अपजस पए[3] चिरे थाकए आओर दिवस दुइ चारि लो।।2।।
अपन करम फल[4] अपनहि भुञ्जिअ बिहिक चरित नहि बाध लो।
काएर पूरुख हृदय हारि मर सुपुरुख सह अवसाद लो।।3।।
तीनि भुवन महि ऐसन दोसर नहि विद्यापति कवि भान लो।
राजा सिबसिंह रूपनराएन लखिमा देवि रमान लो।।4।।

1. न दाहिन रह। 2. कर। 3. जस अपजस दुअओ 4. करम।

कवि कृष्णकें सम्बोधन कए संकट-कालमे अपनाकें अपनहि सान्त्वना दैत छथि —(1) ककरो दिन सदा नीक कि अधलाह नहि रहैत छैक। विधाता खन दहिन, खन वाम होइत रहैत छथिन। उत्तम पुरुष से थिक जे सम्पत्ति आ विपति दूनू अवस्थामे धैर्य धारण कएने रहए। (2) हे माधव, आब परिपक्व अवस्थामे सभ किछु सोचि-बिचारि ई बात बूझल। संसारमे केवल जस आ' अजस इएह दूनू चिर काल धरि टिकैत छैक, आन बात तँ लोक दुइए-चारि दिनमे बिसरि जाइत अछि। (2) अपन कर्मक फल अपनहि भोगए पड़ैत छैक। विधाताक काज (इच्छा) मे कोनो बाधा नहि पड़ि सकैत अछि। काएर पुरुख हिआ हारि मरि जाइत अछि, किन्तु सुपुरुख सभ कष्ट सहि लैत अछि। (3) विद्यापति कहैत छथि, तीन भुवन मध्य एहन केओ नहि अछि जेहन राजा शिव...।

[250]

खने सन्ताप सीत जर जाड़। की उपचरब सन्देह न छाड़।।1।।
उचितेओ भूखन मानए भार। देह रहल अछ सोभा सार।।2।।
ए हरि[1] तुरित सुनहि[2] अवधारि। जे किछु समन्दलि से[3] बरनारि।।3।।
भेद न मानए चान्दन आगि। बाट हेरए तुअ[4] अहनिस जागि।।4।।
जीनल इन्दु बदनें तें ताब। होएत कीदहु एहि परथाब।।5।।
नव आखर गदगद सरें रोए। जे किछु सुन्दरि समन्दल गोए।।6।।
कहहि न पारिअ तसु अवसाद। दोसरों पद अछ सकल समाद।।7।।
[सुकवि[5] विद्यापति एहो रस भान। अबुझ न बुझए बुझए मतिमान।।8।।
राजा सिबसिंह परतख देओ। लखिमादेइ पति पुनमत सेओ]।।9।।

1. सखि। 2. कहहि। 3. ते। 4. ओ। 5. भनइ। [ ] नगु.सँ।

सखी कृष्णकें राधाक संवाद आ' विरहदशा सुनबैत छथि — (1) हे कान्ह, तोहर विरहमे राधाकें खन ताप लगैत छैक, खन ज्वर तँ खन जाड़। संशयमे पड़लि छी जे कोन प्रकारक उपचार करिऐक। (2)

आवश्यको गहनाकें भार बुझैत अछि। देह गलल गेलैक, केवल शोभा रहि गेलैक। (3) हे कान्ह, राधा जे किछु कहलक अछि से ध्यान दए सुनह। (4) ओकरा चानन आ' आगिमे भेद नहि बुझाइत छैक। ओ दिन राति जागि तोहर बाट तकैत रहैत अछि। (5) चान ओकरा सन्ताप दैत छैक किएक तँ मुहसँ ओ चानकें परास्त कएलक। के जानए जे एहना स्थितिमे ओकरा की-ने-की भए जएतैक। (6) राधा कानि-कानि गद्‌गद स्वरें चुपेचाप नओ अक्षरक संवाद कहलकहु अछि—*आब मरब बिख खाए*। (7) ओकर विषाद कहल नहि जाए। द्वितीय शब्द *मरब* मे सम्पूर्ण संवादक सार अछि। (8) विद्यापति कहैत छथि, अज लोक नहि बुझैछ, केवल विज्ञ लोक बुझैछ। (9) शिवसिंह प्रत्यक्ष देवता थिकाह आ' पुण्यमती लखिमा देवी तनिक सेवा करैत छथि।

[251]

उधसल[1] केसपास लाजे गुपुत हास रयनि उजागरे मुख उजला[2]।
पीन पयोधर नखखत सुन्दर कनक सम्भु[3] जनि केसु पुजला।।1।।
न न न न कर सखि सारद ससि मुखि सकल चरित तुअ बुझल लखी[4]।
XX X X X X X X X ।।2।।
बास पिन्धु बिपरित तिलक तिरोहित अधर काजर मिलु कमने परी।
एत सब लक्खन सङ्ग विचक्खन कपट रहत कतखन जे धरी।।3।।
अलस गमन तोर बचन बोलसि भोर मदन मनोरथ[5] मोह गता।
जम्भसि पुनु पुनु जासि अबस तनु आतपे छुइल मृनाल लता।।4।।
[भन कवि विद्यापति आरे बरजौवति मधुकरे पाउलि मालति फुलली।।
हासिनि देवि पति देवसिंह नरपति गरुड़ नराएन रङ्गे भुलली।।5।।

1. उधकल। 2. मुख न उजरा। 3. कलस। 4. बिसेखी। 5. मनोहर। [] नगु.सँ।

(1) हे सखी, तोहर केस उधसल छहु। लज्जावश गुप्त रूपें बिहुँसैत छह। रातिमे जगलासँ तोहर मुह उजर भए गेल छहु। तोहर उन्नत स्तन पर सुन्दर नखक्षत छहु, जेना सोनाक शिवलिंग पलाशक फूलसँ पूजल गेल हो। हे शरदक पूर्णिमाक चान सन मुहबाली सखी, (2) तों नहि-नहि करैत छह, परन्तु हम तोहर सभ चरित (करनी) तोहर रूपे देखि बूझि गेलहुँ। ....। (3) तों उनटा कपड़ा पहिरने छह (भ्रमवश कृष्णक वस्त्र तों पहिरि लेलह)। पसाहिन मेटाएल छहु। ठोरमे काजर कोना लागि गेलहु ? ई सभ लक्षण संगम-सूचक थिक। कपट कतेक काल झाँपल रहतहु? (4) तोहर डेग अलसाएल-सन छहु। भरमल बोल बजैत छह। कामवासनासँ बेसुधि छह। बेरि-बेरि हाफी करैत छह। लटपटाइत चलैत छह, जेना रौदमे पड़लि कमललता हो। (5) विद्यापति कहैत छथि, हे श्रेष्ठ युवती, भ्रमरकें फुलाएल मालती भेटि गेलैक। हासिनि देवी अपन पति राजा देवसिंह गरुडनारायणक संग केलिमे बिभोर भए गेलीह।

[252]

बरिसए लागल गरजि पयोधर धरनि दन्तुरित[1] भेलि।
पर[2] नागरि रत परदेस बालभुँ आओत आसा गेलि।।1।।
साजनि आबे हम कओन अधार[3]।
सून मन्दिर पाउसके जामिनि कामिनि की परकार।।2।।
लहु नरि गुरु भए[4] पए भरे बाढलि[5] नीचेओ भअउ[6] अगाधे।
कओन परि पथिक अपन घर आओब सहजहि सबकाँ बाधे।।3।।
एहे बेआज कइए पिआ गेला आओब समय समाजे।
मोहि बरु अतनु अतनु कए छाड़थु से सुखे भुञ्जथु राजे।।4।।
तुअ गुन सुमरि कान्ह पुनु आओब विद्यापति कवि भाने।
[राजा सिबसिंह रुपनराएन लखिमादेबि रमाने]।।5।।

1. धरनि...दि। 2. नबि। 3. मदन असार। 4. गुरु भए सरि। 5. लागलि। 6. निचिन्त भयो। [ ] नगु.सँ

विरहिणी राधा सखीकें विलाप सुनबैत छथि - (1) मेघ गरजि-गरजि बरिसए लागल। धरणी पंकिल भए गेल। पिआ परदेसमे परकीयाक प्रेममे रतल छथि। अओताह से आशा नहि रहल। (2) हे सखी आब हमरा कतए अवलम्ब भेटत? सून घरमे बरसातक राति कामिनी कोन उपाए करओ? (3) छोटो नदी सभ जलसँ भरि उमड़िकें बड़का नदी भए गेल। जे उत्थर छल सेहो अथाह भए गेल। कोना प्रवासी अपन घर आओत? सभकें उचिते ई बाधा छैक। (4) पिआ इएह छल कएकें गेलाह जे समय पर फेर मिलन होएत। अतनु (अनंग, कामदेव) हमरा वरु अतनु (अंगहीन, मृत) कए देथु: ओ सुखसँ राज भोगयु। (5) विद्यापति कहैत छथि, हे सुन्दरी, तोहर गुणक स्मरण कए कान्ह फेर आबि जएताह। राजा शिव...।

[253]

नयनक काजर अधरे चोराओल नयने चोराओल रागे।
आनन[1] बसने नुकाओब कतिखन तिलाएक कैतब लागे।।1।.
माधव आबे कि बोलह[2] असताहे।
जाहि रमनि सङ्गे रयनि गमओलह ततहि पलटि पुनि जाहे।।2।।
सकल गोकुल जनि[3] से पुनमति धनि कि कहब ताहेरि भागे[4]।
पदजाबक रस तोहर[5] हृदय बस आओ कि कहब अनुरागे।।3।।
[बड़ अपराध उतर नहि सम्भव विद्यापति कवि भाने।
राजा सिबसिंह रूपनराएन सकल कला रस जाने]।।4।।

1. बदन। 2. बोलब। 3. जिनि। 4. बिभागे। 5. जाहेरि। [ ] नगु.सँ।

राधा आन रमणीसँ संग कए घुरल कृष्णकें गंजन करैत छथि — (1) तोहर अधर ओहि रमणीक आँखिक काजर चोराए लेलक आ' तोहर आँखि ओकर राग (अनुराग/लाली) चोराए लेलक। कतेक काल मुह वस्त्रसँ झँपने रहबह? छल छने भरि फबैत छैक। (2) हे माधव, आब फूसि

किएक बजैत छह? जाहि रमणीक संग राति बितओलह पुनः घुरिकें ओकरे लग जाह। (3) ओ रमणी गोकुलक सकल रमणीक बीच अधिक पुण्यवती (भागमन्ति) अछि। ओकर भाग्य की कहल जाए। ओकर पाएरक आरतक दाग तोहर छाती पर लागल छहु एहिसँ अधिक अनुरागक बखान की करब? (4) विद्यापति कहैत छथि, तोरापर लगाओल आरोप गम्भीर छहु। एकर उत्तर सम्भव नहि। राजा शिवसिंह रूपनारायण सकल कलाक रसज्ञ छथि।

[254]

अबनत आनन फूजलि कबरी[1] कुच परसए परचारि।
कामे कमल लए कनक सम्भु जनि पूजल चामर ढारि।।1।।
पिठ पिठ.....(?)।
पलटि हेरि हल पेअसि बयना मदन सपथ थिक[2] तोही।
X X X X X X X ।।2।।
सामर रोमलता कालिन्दी हारा सुरसरि धारा।
मज्जन कए माधव वर माङ्गल पुनु दरसन एक बारा[3]।।3।।

1. फूजलि कबरि अबनत आनन। 2. सपथ तोही। 3. बेरा।

दूती कृष्णकें राधाक विरह-दशा सुनबैत छथि — (1) राधा मूड़ी झुकओने रहैछ। फूजल केस स्तन पर पसरल छैक, जेना कामदेव कमलक फूल (मुह) लए सोनाक शिव (स्तन) क पूजा चामर (केस) डोलाए करैत होथि। (2) हे कान्ह, तोरा कामदेवक सपत। एक बेर घुरिकें राधाक मुह ताकह। ....। (3) कारी रोमावली यमुना नदी थिक आ' हार गंगाक धार। राधा एहि संगममे स्नान कए वर मङलक जे कान्ह पति होअए आ' एक बेर फेर मुह देखाबए।

[255]

की पर बचने कन्ते देल कान। की मन पळलि कलावति आन।।1।।
की दिन दोसे दैब भेल बाम। कओने कारने पिआ नहि लेअ नाम।।2।।
ए सखि ए सखि देह उपदेस। एक पुर कान्ह बस मो पति बिदेस।।3।।
आसा पासे मदन करु बन्ध। जिबइते जुवति न तेज अनुबन्ध।।4।।
अवधि दिबस नहि पबिअ ओर। अनिअत जीवन जौवन[1] थोळ।।5।।

1. जौवन जीवन।

कृष्णसँ उपेक्षिता राधा सखीकें कहैत छथि — (1) जानि नहि पिआ आनक बात पर कान देलनि (केओ चुगलिपन कएलक) आकि आन कलावती (कामकलामे चतुर) रमणी मन पड़लनि। (2) आकि दिनक दोखें विधाता वाम भए गेलाह। जानि नहि कोन कारणें पिआ हमर नामो नहि लैत छथि। (3) हे सखी, हुनका बुझबहुन। कान्ह एकहि नगरमे छथि, किन्तु हमरा लेखें मानू बिदेसमे छथि। (4) कामदेव आशा-पाशमे बान्हि रखने छथि। जा' प्राण रहतैक ता' युवती प्रेम तोड़ि नहि सकैत अछि। (5) अबधिक दिनक अन्त नहि पबैत छी। जीवन स्थायी नहि थिक, ताहूमे यौवन तँ थोड़बे दिन रहैत अछि।

[256]

काहु दिस साहर[1] कोकिल राबे। मातल मधुकर काहु दिस[2] धाबे।।1।।
केओ नहि छुअए धएल धन आने। भमि भमि लुनए कुसुमसर[3] माने।।2।।
कि कहिबों आगे सखि अपनेरि भाला। बिनु कारने मनमथे कर घाला।।3।।
किसलय सोभित नब नब चूते। धरनि मदन धज[4] देखिअ बहूते।।4।।
कसि कसि अनङ्ग[5] कुसुमसर लेइ। प्रान न हरए विरह पए देइ।।5।।
दाहिन पवन कओने धरु नामे। अबसर[6] पाए सेहओ भेल बामे।।6।।
मलय[7] समीर विरहिवध लागी। विकच पलास[8] पजारए आगी।।7।।

1. काहल। 2. दह दिस। 3. मानिनिजन। 4. ध्वजका धोरणि। 5. रङ्ग। 6. अनुभव। 7. मन्द। 8. पराग।

राधा सखीकें विरह व्यथा सुनबैत छथि — (1) कोनो दिस सहकार वृक्षपर कोइली कुहकैत अछि तँ कोनो दिस मातल भमरा मड़राइत अछि। (2) जोगाएकें राखल आन-आन धन तँ केओ नहि छुबैत अछि। किन्तु कामदेव घूमि-घूमिकें मान-धन लुटने जाए रहल अछि। (3) हे सखी, अपन भाग्य की कहिअहु। बिनु कारणहि कामदेव घाइल कए देलनि। (4) आमक गाछ नब-नब किसलयसँ शोभित अछि; जेना धरती पर कामदेवक बहुत रास ध्वजा फड़राइत हो। (5) कामदेव कसि-कसि कुसुमक सर चलबैत छथि, जे प्राण नहि हरैत अछि, केवल विरह-व्यथा दैत अछि। (6) मलयानिलक नाम दक्षिण पवन के रखलक? अवसर पाबि (दुर्दिन अएलापर) ओहो वाम भए गेल। (7) ओ मलय पवन विरहीक प्राण हरबालेल पलासक फूल रुपी आगिकें पजारैत अछि।

[257]

बाढलि पिरिति हठहि दुर गेलि। नयनक काजर मुह मसि भेलि।।1।।
तेँ अवसादे अबसिन भेल देह। खढ़कुम्हरा(?) सन बुझल सिनेह।।2।।
साजनि आबे कि पूछसि मोहि। अपद पेम अपदहि पिड़ मोहि।।3।।
जओ अबधारिअ[1] पर जनु जान। कण्टक सम भेल रहत परान।।4।।
बिरहानल कोइला कर जारि। दाढलि[2] हबि जनु[3] सीचिअ पानि।।5।।

1. अवधानिअ। 2. बढ़िलि। 3. जनि।

उपेक्षिता राधा सखीकें अपन व्यथा सुनबैत छथि — (1) बढ़ल प्रेम अकस्मात् समाप्त भए गेल। (2) ताहि व्यथासँ देह गलि गेल। आब ओ प्रेम खडकुमडा (?) सन बूझि पड़ैत अछि। (3) हे सखी, आब तों हमरा की पूछैत छह। असमयक प्रेम असमयहिमे हमरा सताए रहल अछि। (4) जँ ई निश्चय करी जे ई प्रेम आन नहि जानए तँ ई बात हमरा हृदयमे

काँट जकाँ भेल रहत। विरहाग्नि हमरा जराए कोइला कए देलक। आब जरल देह (हवि) पर पानि नहि ढारह।

[258]

तोह हुनि लागल उचित सिनेह। हम अपमानि पठओलह गेह।।1।।
हमरिओ मति अपदहि चलि गेलि। दूधक माछी दूती भेलि।।2।।
माधब कि कहब ई भल भेल। हमर गतागत ई दुर गेल।।3।।
पहिलेहि बोललह मधुरिम बानि। तोहहि सुचेतनि तोहहि सेआनि।।4।।
भेलाँ काज बुझओलह रोस। कहि कि बुझाओब आपन दोस।।5।।

दूती राधाकें नहि आनि सकलि तें कृष्ण ओकरासँ रुष्ट भेलाह। तकर उत्तर मे दूती कृष्णकें कहैत अछि — (1) हे कान्ह, तोरा दूनूमे तँ उचिते मेल भए गेलहु। तखन अनेरे हमरा अपमानित कए घर घुराए देलह। (2) हमरो मति भासि गेल (तें बीचमे पड़लहुँ)। दूती दूधक माछी भए गेलि। (3) हे कान्ह, मेल भए गेलहु से नीक बात। हमरहु खन एम्हर खन ओम्हर दौड़बासँ छुट्टी भेटि गेल। (4) पहिने तों मधुर स्वरमे अनुरोध करैत छलह, तों बड़ि चतुर, बड़ि बुधिआरि छह। परन्तु जखन काज (राधासँ मेल) भए गेलहु तखन अनेरे हमरासँ रुष्ट भए गेलह। (5) तोरा सफाइ दए की होएत। हमर अपने दोष थिक जे तोरा दूनूक बीचमे पड़लहुँ।

[259]

कमलिनि एड़ि केतकि गेल हे सौरभे रहु घूरि।
कण्टके कबलु कलेबर हे मुख माखल धूरि।।1।।
अबे सखि भमरा बिबस भेल[1] हे रतिरभस सुजान।
XX X X X X X।।2।।
परिमल के लोभे धाओल हे पाओल नहि पास।
मधु पुनु डिठिओ न देखल हे आबे जन उपहास।।3।।
भल भेल भमि-भमि[2] आबओ[3] हे पाबओं[4] मन खेद।

एकरस पुरुखा न बुझए हे गुन दूसन-भेद।।4।।

1. भमरा भेल। 2. भमि। 3. आबथु। 4. पाबथु।

राधा मधुकरक व्याजें कृष्णक लम्पटताक उपहास करैत छथि — (1) भ्रमर कमलिनीकें उपेखि केतकी लग गेल। ओकर सौरभ पर मुग्ध भए भाउरि दैत रहल। ओ जखन केतकीसँ सटल तँ अंग-अंगमे काँट गड़ए लगलैक। (2) हे सखी, कामकेलिमे चतुर ओ भमरा विकल भए गेल। ....। (3) दौड़ल तँ सौरभक लोभें मुदा लग पहुँचि नहि सकल। मधुक तँ दर्शनो नहि कए पओलक। पओलक केवल लोक बीच उपहास। (4) भल भेल। एहिना कान्ह सेहो सभ ठामसँ बौआए आबथु आ' विषाद पबैत रहथु। एके नारीमे रीझल पुरुष गुणदोषक विवेचन नहि कए सकैत अछि।

[260]

तारापति रिपु खण्डन कामिनि गृह वर वदन सुसोहे।
राजमराल ललित गति सुन्दर से देखि मुनि मन मोहे।।
पिअतम समन्दह सजनी।
सारङ्गवदन तात रिपु अतिसख तातह महगि रजनी।।
दिति सुत रति सुत अति बड दारुन तातह वेदन होई।
पर पीडा जे बूझए पारए[1] तैसन न देखिअ कोई।।

1. परक पीड़ाए जे जन पारिअ।

टि – पिहानी थिक। अर्थ लगाएब कठिन।

[261]

हाथिक दसन पुरुख बचन कठिने बाहर होए।
ओ नहि लुकए ई नहि[1] चुकए कतन[2] करओ कोए।।1।।
साजनि अपद गौरव गेल।

पुरुब करमे दिबस दूखने सबे बिपरीत भेल।।2।।
जानल सुजन[3] ओ नहि कुजन तें हमे लाउलि रीति।
XX X X X X।।3।।

1.वचन। 2. कतो। 3.सुनल।

वंचिता राधा सखीकें अपन व्यथा सुनबैत छथि — (1) हाथीक दाँत आ' पुरुखक बात हठे मुहसँ बहराएत नहि। आ' जखन बहराएत तखन दाँत फेर नुकाएत नहि आ' बात फेर चूकत नहि, केओ कतबो किछु करओ। (2) हे सखी, व्यर्थ हमर गौरव चल गेल। पूर्वक कर्मवश वा दिनक दोषवश सभटा विपरीत भए गेल। (3) जानल जे कृष्ण सुजन छथि, कुजन नहि, तें हुनकासँ प्रीति कएल...।

[262]

हरि पति हित रिपु नन्दन वैरी वाहन ललित गमनी।
दिति नन्दन रिपु नन्दन नन्दन नागरि रूपे से अधिक रमनी।।
सिब सिब तम रिपु बान्धव जनी।
रितु पति मित बैरि चूड़ामणि मित्र समान रजनी।।
हरि रिपु रिपु प्रभु तसु रजनी तात सरिस कुच सिरी।
सिन्धु तनय रिपु रिपु रिपु बैरिनि वाहन माझ उदरी।।
पन्थ तनय हित सुत पुने पाबिअ विद्यापति कवि भाने।
[राजा सिब...रमाने]।।
टि. -- पिहानी थिक। अर्थ बूझब कठिन।

[263]

सपनेहु मनक पुरल नहि[1] साधे। नयने देखल हरि एत अपराधे।।1।।
बाड़क मनोभव मन जर आगी। दुलभ लोभ भेल परिभव लागी[2]।।2।।
चान्दबदनि धनि चकोरनयनी। बिरहवेदने भेलि चौगुन मलिनी[3]।।3।।
कि करत[4] चान्दन की अरबिन्द। विरह बिसर जओ सूतए[5] निन्द।।4।।
अबुझ सखीजन न बुझए आधी। आन औखध कर आन बेआधी।।5।।

मदनबान के मन्दि बेबथा। छाड़ि कलेवर मानस बेथा।।6।।
चिन्ताजे बिकल हृदय नहि धीरे। बदन निहारि नयन बह नीरे।।7।।

1. न पुरले मनके। 2. भागी। 3. भेल चकोरनयनी। 4. मोरा। 5. सूतिअ।

सखी राधाक विरह-दशाक वर्णन करैत छथि – (1) बेचारी राधाकें मनक मनोरथ सपनहु नहि पुरलैक। ओकर अपराध एतबे छैक जे आँखिसँ कान्हकें देखलक। (2) कामदेव वाम भए गेलथिन। मन आगिसँ जरैत छैक। दुर्लभ वस्तुक लोभ कएलक। तकरे पराभव भोगि रहलि अछि। (3) चन्द्रवदनी चकोरनयनी राधा विरह-वेदनासँ चौगुन मलिन भए गेलि। (4) चानन की करतैक? कमल की करतैक? जँ निद्रा होइक तखनहि विरह बिसरत, (किन्तु नीन कहाँ होइत छैक)। (5) अबुझ सखी सभ ओकर दुख नहि बुझैत अछि। व्याधि (रोग) किछु छैक आ' औषध किछु आने दैत अछि। (6) कामबाणक रीति विचित्र छैक : देहमे नहि, केवल मनमे व्यथा देत। (7) राधा चिन्तासँ विकल रहैत अछि। चित्त थीर नहि रहैत छैक। सखीक मुह देखि-देखि नोर ढारैत रहैत अछि।

[264]

निसि निसिअर भम भीम भुअङ्गम गगन गरज घन मेह।
दुतर जमुनि नरि से आइलि बाहु पैरि एत बड़[1] तोहर सिनेह।।1।।
XX X X X X X X ।
हेरि हलह हसि समुह उगओ ससि बरिसओ अमिअक धारा।।2।।
कत कत[2] दुरजन कत जामिक जन कत परिजन पथ जागे[3]।
किछु न काहुक डर गुनल जुबतिवर एहि पर कि ओ अभागे।।3।।

1. एतबाए। 2. कत नहि। 3. परिपन्तिअ अनुरागे।

दूती कान्हकें राधाक विफल अभिसारक कथा सुनबैत अछि — (1) निसी राति भयानक साप सभ बुलैत। आकाशमे गाढ़ मेघ गरजैत। एहनो

समयमे राधा दुस्तर (अथाह) यमुना नदी बाहिँसँ हेलि संकेतस्थल आइलि। एतेक प्रबल ओकर प्रेम छैक। (2) ....। आब हे कान्ह, तों हँसिकें (प्रसन्न भए) ओकरा दिस ताकह। सम्मुख भए चान उगओ। अमृतक धार बरसओ। (3) बाटमे अनेकानेक दुष्ट लोकसभ, अनेकानेक पहरू सभ आ' कतेको घरक लोक जागल छल। तैओ एकरा ककरो कोनो डर नहि भेलैक।..................................(?)।

[265]

जञो पहु कतहु जनम हमें[1] लेब। मोहि सुजन दोसराइत देब।।1।।
सुभ हो सामि कहब की रोए। परतह तिल लए हम देब तोए।।2।।
अइसनि[2] जगत जुबति के अन्ध। सामि समीहित कर प्रतिबन्ध।।3।।
दिन दस चातर हलिअ बिचारि। तत होएत जत लिहल कमाल।।4।।

1. प्रभु हम पाए वेदा। 2. आइलि।

विरहक दशम दशा (मरणावस्था) पर पहुँचलि राधा कृष्णसँ प्रार्थना करैत छथि —(1) हे पहु, जँ हम कतहु जन्म लेब तँ कृपा कए हमरा कोनो सुपुरुख दोसराइत होथि। (2) हे स्वामी, शुभ हो (हम प्रस्थान कएल)। आब कानि-कानि की कहब। प्रत्येक दिन हमरा तिल दए जलांजलि देब। (3) संसारमे एहनि के आन्हरि युवती होएत जे स्वामीक इच्छाक पूर्तिमे बाधा करए। (4)............(?)। फल ततबे होएत जतबा कपारमे लिखल हो।

[266]

दुइ मन मेलि सिनेहक आङ्कुर दोपत तेपत भेला।
साखा पल्लव फूले बेआपल सौरभ दह दिस गेला।।1।।
सखि हे आबे कि आओत कन्हाई।
पेम मनोरथ हठे बिघटाओल[1] कपटिहि के पतिआई।।2।।
जानि सुपहु तोहें आनि मेराओल सोनाँ गान्थलि मोती।

कैतव कञ्चन कएल[2] बिधाता छुअइते छाड़लि जोती।।3।।

1. बिघटओलन्हि। 2. अन्ध। 3. छायाहु छाड़लि मोन्ति।

राधा अपन व्यथा सखीसँ कहैत छथि — (1) दू मनक मेलसँ अंकुरित प्रेम दोपत-तेपत भेल। क्रमशः डारि-पात आ' फूल व्याप्त भेल। सौरभ दसो दिशामे पसरि गेल। (2) हे सखी, (एहने अवस्थामे प्रेममे विघटन भए गेल)। आब की कान्ह आओत! ओ तँ हठात् प्रेमक मनोरथ भंग कए देलक। ओहि कपटी पर के विश्वास करत? (3) तों तँ कान्हकें सुपहु (आदर्श प्रेमी) बूझि हमरासँ मिलओलह। सोनमे मोति गँथलह। परन्तु विधाता ओहि सोनकें नकली बनाए देलक; छुबितहि ओकर जोति बिलाए गेलैक।

[267]

दारून सुनिअ दुजन[1] बोल। जनि कबकब[2] लागए ओल[3]।।1।।
के जान कओने सिखाओल गोप। तें नहि हृदय बिसर[4] कोप।।2।।
ए सखि ऐसन मोर अभाग। परक कान्ह कहला लाग।।3।।
एत दिन छल[5] अइसन भान। हम छाहि नहि पेअसि आन।।4।।
जगत भमि सुपुरुख जोहि। आसा दए तोहें सोम्पलह ओहि[6]।।5।।
दिबस दूखने ओहे[7] उदास। पिसुन बचने भलाहु भास[8]।।5।।

1. सुनिदुरजन। 2. कमकम। 3. गून। 4. बिसरए। 5. अछल। 6. आसा साहसे भजलि तोही। 7. तोहे। 8. तात तरास।

राधा सखीक समक्ष अपन व्यथा व्यक्त करैत छथि — (1) सुनैत छी दुर्जनक बोल बड़ दारुण होइत अछि, जेना ओल कब-कब लगैत अछि। (2) जानि नहि गोपाल कान्हकें के सिखओलक जे ओकरा हृदयमे कोप शान्त नहि होइत छैक। (3) है सखी, केहन हमर अभाग भेल जे कान्ह आनक कथा पर विश्वास कए लेलक। (4) एतेक दिन हमरा लगैत छल जे कान्हकें हमरा छाड़ि आन कोनो प्रेयसी नहि छैक। (5) हे सखी, तों संसार

भरि घूमि-घूमि सुपुरुखक खोज कएलह। आशापूर्वक साहस कए ओ सुपुरुष हमरा सोंपलह। दिनक दोखें ओ हमरासँ विमुख भए गेल। पिशुनक वचनसँ ....(?)। नीको लोक भासि जाइत अछि।

[268]

जातकि केतकि कुन्द सहार। पुन ताहेरि अलि जाहि निहार[1]।।1।।
सब फुलाँ परिमल सब मकरन्द। अनुभव बिनु न बुझिअ भल मन्द।।2।।
तुअ सखि वचनअमित्र अबगाह। भमर बेआजे बुझाओब नाह।।3।।
एतबा बिनति सुनाइबि[2] मोरि। निरस कुसुम नहि रहिअ अगोरि।।4।।
वैभव गेले भलाहु मति भास। अपन पराभव पर उपहास।।5।।

1. गरुअ ताहेरि पुन जाहि निहार। 2. अनाइति।

राधा सखीसँ कहैत छथि — (1) जातकी, केतकी, कुन्द, सहकार इत्यादि अनेक प्रकारक फूल अछि। ताहि मध्य भ्रमर जकरा निहारए तकरा पुण्यवती बूझू। (2) सभ फूलमे सौरभ छैक, सभमे मधु छैक। ताहिमे कोन नीक कोन बेजाए से अनुभवे द्वारा बूझल जाए सकैत अछि। (3) हे सखी, तोहर बोल अमृतमे बोरल होइत छहु। तों भ्रमरक व्याजें पिआ कान्हकें बुझबहुन। (4) हमर एतबा बिनती हुनका सुनएबहुन जे रसहीन फूलकें अगोरने नहि रहथि। (5) वैभव चल गेने नीको लोकक मति भासि जाइत छैक। अपने पराभव तँ पबितहि अछि, आनक उपहास सेहो सहए पड़ैत छैक।

[269]

कोमल तनु पराभव पाओब तेजि न हलबे तेहु।
भमर भरे कि माञ्जरि भाङ्गए देखल कतहु केहु।।1।।
माधब बचन धरब मोर।
नहि नहि कथा[1] न पतिआओब अपद लागत भोर।।2।।
अधर निरसि धूसर करब भाव उपजत भला।
खने खने रति रभस अधिक दिने दिने ससि कला।।3।

1. कए।

सखी कृष्णकें संगम-रीति (कामशास्त्र) पढ़बैत छथि — (1) हे कान्ह, ई सोचि जे राधाक कोमल शरीरमे पीड़ा होएतैक, ओकरा छाड़ि नहि दहक। भमराक भारसँ मंजरीकें टूटैत कि कतहु केओ देखलक अछि? (2) हे माधब, हमर बात मन रखिहह। ओ जँ नहि नहि करए तँ से पतिआह नहि। व्यर्थ भ्रममे पड़ि जएबह। (3) चुम्बन द्वारा अधरक रसकें निःशेष कए ओकरा धूसर कए दिहह। एहिसँ नीक भाव (रसावेश) जगतैक। कामकेलि छन-छन (क्रमशः) बढ़ैत जएतहु, जेना दिन-दिन चानक कला बढ़ैत अछि।

[270]

प्रणमि मनमथ करहि पाएत। मनक पाछे देह जाएत।।1।।
भूमि कमलिनि गगन सूरे। पेम पन्था कतए दूरे।।2।।
केलि-बाध[1] न करहि रामा। पुर विलासिनि पहुक[2] कामा।।3।।
बदन जिनि कहु करसि मन्दा। लग न आओत लाजे चन्दा।।4।।
तेहि सङ्किअ पथ उजोरे। गमन तिमिरहि होएत तोरे।।5।।
काज संसए हृदए बङ्का। कतन उपजए बिरह सङ्का।।6।।
सबहि सुन्दरि साहस सारे। तोहि तेजि के करए पारे।।7।।
सकल अभिमत सिद्धिदायक। रूपे अभिनव कुसुम सायक।।8।।
राए सिबसिंह रस अधारे। सरस कह कवि कण्ठहारे।।9।।

1. बाध। 2. पिअतम।

सखी राधाकें संगमकला सिखबैत छथि — (1) हे राधा, ...(?) पहिने प्रेमी तोहर मन आकृष्ट करतहु। पाछाँ देह सेहो ओकरा वशमे चलि जएतहु। (2) कमलिनी भूमि पर रहैछ आ' ओकर प्रेमी सूर्य आकाशमे। प्रेमक मार्गमे दूरत्व बाधक नहि होइत अछि। (3) हे राधा, केलिमे बाधा नहि करिहह। विलासिनी अपन पहुक कामना

अवश्य पुरबैत छथि। (4) राधाक मुह वशमे कए मलिन कए देबहुन, एहिसँ चान लाजेँ लग नहि आओत। (5) जँ लग आओत तँ बाटमे इजोत भए जाएत। तोहर गमन तँ अन्हारहिमे सम्भव। (6) जँ तोँ अपन हृदयकेँ बक्र करबह तँ काज बिगड़तहु। विरह होएबाक सम्भावना बहुत भए जएतहु। (7) हे सुन्दरी, साहस सभसँ आवश्यक वस्तु। से साहस तोरा छाड़ि आन के कए सकत? (8-9) कवि कण्ठहार कहैत छथि, रसक आधार राजा शिवसिंह, जे रूपमे अभिनव कामदेवक सदृश छथि, सभक मनोरथ पुरओनिहार थिकाह।

[271]

[तिन तूल दुहु तह[1] भए लहु मानिअ गरुबि आहि।
अछइते जे बोल न अछए से लहु सबहु चाहि]।।1।।
साजनि कैसन तोर गेआन।
जौवन रतन तोर सोआधीन ककें न करसि दान।।2।।
[जावे से जौंबन तोर सोआधीन तावे पर बस होए।
जौंबन गेले बिपद भेले पुछि न पुछत कोए]।।3।।
एहि मही अति[2] अथिर जीवन जौंबन अलप काल।
इथीँ जे जतने[3] न बिलहिअ[4] से रह हृदए साल।।4।।
तोर धन धनि तोराहि रहत निधन होएत आन।
दानक धरम तोराहि होएत कवि विद्यापति भान।।5।।

1. अरु तातह। 2. आध। 3. जनजत। 4. बिलसिअ। [ ] नगु.सँ।

सखी मानिनी राधाकेँ उपदेश दैत छथि — (1) हे सखी, तोँ खढ़ आ' तूरहुसँ बेसी हलुक भए अपनाकेँ गौरवशालिनी बुझैत छह (मूल अस्पष्ट)। बांछित वस्तु रहलहु पर जे कहए नहि अछि, से सभसँ हलुक थिक। (2) हे सजनी, तोहर ज्ञान केहन भेलहु। यौवनरत्न तोरा हाथमे छहु, तैओ तोँ तकर दान नहि करैत छह। (3) जा धरि ई यौवन तोरा उपलब्ध

छहु तावते आन वशमे रहतहु। यौवन बितला पर आ' करम घटलापर केओ नहि पुछतहु। एहि संसारमे जीवन परम अस्थिर बूझह। ताहूमे यौवन तँ बड़ थोड़ काल रहैत अछि। एहना स्थितिमे जँ यत्नपूर्वक बिलहा नहि करी तँ हृदयमे पश्चाताप रहि जाएत। (5) हे सुन्दरी, तोहर धन तोरहि रहि जएतहु। निर्धन आने होएत। कवि विद्यापति कहैत छथि, दानक पुण्य तोरहि भेटतहु।

[272]

सामर सुन्दर ञे बाटेँ आएल तेँ मोरि लागलि आँखि।
आरति आँचर साजि न भेले सबे सखी जन साखि ।।1।।
कहहि मो सखि कहहि मो सखि[1] कथा ताहेरि बासा।
दूरहु दुगम एड़ि मञे धाबञो[2] पुनु दरसन आसा ।।2।।
की मोरा जीबने की मोरा जौंबने की मोरा चतुरपने।
मदनबाने मुरुछलि अछञो सहञो जीब अपने ।।3।।
आध पओधर से[3] मोर देखल नागर जन समाजे।
कठिन हृदय भेदि न भेले जाञो[4] रसातल लाजे ।।4।।
सुरपति पाएँ लोचन माङ्गञो गरुड माङ्गञो पाँखि ।।5।।
नान्देरि नन्दन देखि मञे आबञो मन मनोरथ राखि ।।6।।

1. मो। 2. आबओ। 3. ते। 4. जाओ।

कृष्णकेँ देखि मोहित राधा पुनः देखबाक अकण्ठा व्यक्त करैत छथि—(1) श्याम सुन्दर एहि बाटेँ अएलाह तेँ हमर आँखि आकृष्ट भए गेल। सभ सखीलोक़निक समक्ष ततेक विह्वल भए गेलहुँ जे आँचरो नहि सम्हारि भेल। (2) कहह से सखी, कतए छनि हुनक घर? बरु कतबो दूर-दुर्गम हो हुनक दर्शन पुनः पएबा लेल दौड़ि जाएब। (3) हुनक बिना जीवन, यौवन आ' चतुरता सभ व्यर्थ। कामक बाणसँ आहत छी। प्राण छटपटाए रहल अछि। (4) ओ कृष्ण रसिक मित्र सभक सङ्ग हमर आधा

स्तन देखि लेलनि। कठोर हृदय चीरि नहि भेल। लागल जेना लाजें पताल पैसि जाइ। (5) इन्द्रसँ आँखि मङैत छी आ' गरुड़सँ पाँखि जे नन्दक नन्दनके देखि मनक साध पुराबी।

[273]

[सामरि हे झामर तोर देह। कह कह का सत्रो लाओल[1] नेह]।।1।।
नीन्दे भरल अछ लोचन तोर। लोनुअ बदन कमल रुचि चोर।।2।।
कओने लुळल सखि मदन भण्डार। निरसि धुसर करु[2] अधर पबार।।3।।
कओने कुबुधि कुच नखखत देल। हा हा सम्भु भगन भए गेल।।4।।
[दमनलता सम तनु सुकुमार। फूटल बलय टुटल गिमहार]।।5।।
केस कुसुम झळु सिरक सिन्दूर। अलक तिलक हे सेहओ गेल दूर।।6।।
भनइ विद्यापति [रति अवसान। राजा सिबसिंह ई रस जान[3]]।।7।।

1. की कह कइसे लावलि। 2. भेल। 3. रसमति नारि। करए पेम पुनि पलटि निहारि। [ ] नगु.सँ।

सखी संगम कए आइलि राधाकें कहैत छथि — (1) हे श्यामा, तोहर देह झामर लगैत छहु। कहह-कहह, ककरासँ नेह लगओलह? (2) तोहर आँखि ओंघाएल छहु। ललित आनन कमलक शोभा चोरबैत अछि। (3) के तोहर मूँगा सन अधरकें (चुम्बनसँ) फीका कए देलकहु? के तोहर मदन-भण्डार लुटलकहु? (4) के कुविचारी तोहर स्तनपर नह गड़ओलकहु? हाए, लगैछ जेना शम्भु (शिवलिंग) भग्न भए गेल हो। (5) तोहर कोमल देह दऔनाक लती जकाँ अलसाएल लगैछ। कगना फूटि गेलहु, गराक हार टूटि गेलहु। (6) केसमे खोसल फूल आ' सिरक सिन्दूर झड़ि गेलहुँ। पसाहिन सेहो मेटाए गेलहु। (7) विद्यापति कहैत छथि, ई संगमोत्तर दशाक वर्णन थिक। ई रस राजा शिवसिंह जनैत छथि।

[274]

कामिनि करए सनाने। हेरइते हृदअ हनए[1] पञ्च बाने।।1।।
चिकुर गलए जलधारा। मुखससि डरेँ जनि रोअए अन्धारा।।2।।
तितल बसन तनु लागू। मुनिहुक मानस मनमथ जागू।।3।।
कुचजुग चारु चकेबा। निज कुल मिलत आनि कओने देबा।।4।।
तेँ सङ्काञे भुजपासे। बान्धि धरिअ पुनु उडत अकासे[2]।।5।।
[विद्यापति कबि गाबे। गुनमति धनि पुनमत जन पाबे]।।6।।

1. हरए। 2. ऊड़ तरासे। [ ] नगु.सँ।

कवि सद्यःस्नाता नायिकाक वर्णन करैत छथि — (1) कामिनी स्नान करैत छथि। देखितहि कामदेव हृदय पर प्रहार करए लगैत छथि। (2) केशराशिसँ जलधारा गरैत अछि, जेना मुखचन्द्रक डरें अन्धकार (राहु) कनैत हो। (3) तीतल वस्त्र देहमे सटल छैक। से देखि ऋषिओ-मुनिक मनमे कामदेव जागि उठैत छथि। (4) दूनू स्तन मानू मनोहर चकबा-चकबी थिक। जँ ई दूनू एतएसँ उड़ि चकबा समक अपन दलमे मिलि जाए तँ फेर आनि के देत? (5) एही आशंकासँ दूनूकें अपन बाहुपाशमे बान्हि रखने छथि जे फेर अकासमे उड़ि ने जाए। (6) विद्यापति कहैत छथि, पुण्यवाने पुरुष गुनमन्ति नारि पाबि सकैत छथि।

[275]

भउह भाङ्गि-लोचन भेल आड़। तैअओ न सैसब सीमा छाड़।।1।।
आबे हँसि हृदअ चीर लए थोए। कुच कञ्चन अङ्कुर धर[1] गोए।।2।।
हेरि हल माधब कए अबधान। जौबन परसे सुमुखि आबे आन।।3।।
मधुर हासे मुख मण्डित भेल। अमित्र कलोल कुसेसय खेल[2]।।4।।
सखि पुछइते आब दरसए लाज। सीञ्चि सुधाञे अधबोली बाज।।5।।
एत दिन सैसबे लाओल साठ। आबे सबे मदने पढ़ाओब[3] पाठ।।6।।

1. अङ्कुरए। 2. अमित्रक लोले कुशेशय....। 3. पढ़ाउलि।

सखी कृष्णकें राधाक वयःसन्धिक वर्णन सुनबैत छथि – (1) भौंहमे भंगिमा आबि गेल आ' आँखिमे वक्रता (जे क्रोधक प्रतीक थिक, क्रोध अपन शैशवक प्रति)। तैओ (भ्रूभंग कएलहु पर) शैशव अपन सीमा (मोरचा) नहि छाड़ि रहल अछि। (2) आब बिहुँसि-बिहुँसि अपन छाती चीर लए झँपैत अछि आ' स्तनरूपी सोनाक अंकुरकें नुकाए रखैत अछि। (3) हे कृष्ण, ध्यान दए देखह, यौवनक स्पर्श होइतहि सुन्दरी कतेक बदलि गेलि। (4) मधुर हाससँ ओकर मुखमे शोभा आबि गेल, जेना अमृतक लहरी पर कमल खेलाइत हो। (5) सखीसँ कोनो बात पुछबामे आब ओकरा लाज होइत छैक (रसकथा पुछबाक इच्छा रहितहुँ लाजें पूछि नहि होइत छैक)। अमृतसँ सींचि आधा बजैत अछि, आधा मुहहि रहैत छैक। (5) एतेक दिन शैशब संग लागल रहलैक। आब कामदेव सभटा नब पाठ पढ़ाए देलकैक।

[276]

लम्बित अलकें बेढल मुखकमल सोभे।
राहु कि बाहु पसारला ससि मण्डल लोभे।।1।।
कुच-कलस लोटाइलि घन सामरि बेनी।
कनय पबय[1] सुतलि जनि कारि सापिनी।।2।।
मदन सरे मुरुछलि चिर चेत न[2] बाला।
[देखलि से धनि जनि हे[3] बासि मालति माला।।3।।
भन विद्यापति भाबिनि चिर थाक न माने।
राजा रूपनराएना[4] लखिमा दे रमाने]।।4।।

1. कनय पर। 2. चेतहि। 3. धनि हे। 4. राजाहु सिबसिंह रूपनराएन [ ] नगु. सँ।

सखी विरहिणी राधाक वर्णन करैत छथि — (1) ओकरा मुख पर लट लटकल छैक जे लगैछ जेना चानक लोभें राहु बाँहि पसारने हो। (2)

स्तन पर घन कारी केशपाश (जुट्टी, चोटी), लोटाइत छैक, से लगैछ जेना स्वर्णपर्वत पर कारी नागिनि सूतलि हो। (3) कामदेवक बाणसँ राधा मूर्छित अछि। बड़ी कालसँ होस नहि आबि रहल छैक। ओकरा तेना लटुआइलि देखलिऐक जेना बासि मालती-माला हो। (4) विद्यापति कहैत छथि, हे सुन्दरी, मान अधिक समय धरि टिकि नहि सकैत अछि। राजा.....।

[277]

हासे बिलासिनि दसन देखल[1] जनि तडितेरि[2] जोति।
सार बिनि बिनि हार मञे गान्थल[3] चान्दे परिहल[4] मोति।।1।।
दए गेलि सखि दए गेलि सखि, दए गेलि[5] दिठि मेरा।
पुनु मन कर ततहि जाइअ देखिअ दोसरि बेरा।।2।।
दिबस भमर कमल सुतल सिसिरे भीनलि पाँखि।
खञ्जन जनि ताहि पर रह तैसनि लोनुमि आँखि।।3।।
भन विद्यापति जे जन नागर तापर रतए[6] नारि।
हासिनिदेबी पति देवसिंह[7] परसन होअ[8] मुरारि।।

1. देखिअ। 2. तललित। 3. गाथब। 4. परिहब। 5. दए गेलि दए गेलि दुइ। 6. रतलि। 7. देवसिंह नरपति। 8. होथु।

राधाकें देखि मुग्ध भेल कृष्ण सखीसँ कहैत छथि — (1) हँसि-हँसि विलास करैत राधाक दाँत देखल, जेना बिजुलीक चमक हो। मानू चान उत्तम बिछि-बिछि गाँथल मोतिक हार पहिरने हो (चान=मुख; मोतिक माला=दाँत)। (2) हे सखी, राधा आँखि मिलाए चलि गेलि। फेर मन होइत अछि जे दोसर बेर देखी। (3) आँखि देखि लागल जेना दिनमे (फुलाएल) कमल (=मुख) पर भ्रमर (=आँखि) सूतल हो आ' ओससँ ओकर पाँखि भीजल हो। (4) विद्यापति कहैत छथि, जे पुरुष नागर (रसिक) छथि नारी

तनिकामे अनुरक्त होइतहिँ छथि (कृष्ण सुनागर छथि तें राधा भेटबे करथिन)। हासिनि देवीक पति देवसिंह पर कृष्ण प्रसन्न होथु।

[278]

हृदयक हार भुअङ्गंम भेल। दारुन दाढ़ मदन बिख[1] देल।।1।।
नखसिख लहरि पसर बिख धाधि। तुअ पाहि मञे[2] अइलिहुँ कल बान्धि।।2।।
केओ सखि जल[3] दए चरन पखार। केओ सखि चिकुर चीर सम्भार।।3।।
केओ सखि ऊठि निहारए साँस। मञे धाए अइलिहुँ[4] कहए तुअ पास।।4।।
ए हरि चलहि तञे करहि गोहारि। संसय पड़लि अछए बरनारि।।5।।

1. मदनेरि स। 2. पए पङ्कज। 3. मन। 4. सखि अएलाहु।

सखी कृष्णकें राधाक विरहदशा सूचित करैत छथि — (1) राधाक छातीक हार साप भए गेल। ओ दारुण दाढ़ कए मदन-विष भरि देलक। (2) ओहि विषक लहरि सगर देह पसरि गेलैक। हम कल जोड़ि तोरा लग अएलहुँ अछि। (3) केओ सखी जल लए पाएर धोइत अछि, केओ केस आ' चीर सम्हारैत अछि। (4) केओ सखी उठिकें साँस निहारैत अछि। हम दौड़लि तोरा लग अएलहुँ। (5) हे हरि, चलह; तों गोहारि करह। सुन्दरी प्राण-संकटमे पड़लि अछि।

[279]

भञुह लता धनु[1] देखिअ कठोर। अञ्जने आँजि आँखि[2] गुन जोळ।।1।।
सायक तोर नयन[3] अति चोख। व्याध मदन बध ई बड़ दोख।।2।।
सुन्दरि सुनह बचन मन लाए। मदन हाथ मोहि लेह छड़ाए।।3।।
सहए के पार काम परहार। कत अभिभव की हो परकार।।4।।
कुच जुग सम्भु सरन मोहि देह। एहि जग[4] तिनिहु बिमल जस लेह।।5।।

1. बड़। 2. फासि। 3. तीष मदन। 4. युग।

कृष्ण राधाक अनुनय करैत छथि — (1) हे सुन्दरी, तोहर भ्रूलतारूपी धनुष कड़गर लगैत अछि। ताहि पर तों आँखिमे काजर लगाए जनु गुन (प्रत्यंचा, डोरी) सँ जोड़ि देलह। (2) तोहर नयनरूपी बाण बड़ चोख अछि। से सभ तँ बेस, परन्तु ओहि धनुष-बाणसँ मदनरूपी व्याध हमरा मारैत अछि, से नीक नहि। (3) हे सुन्दरी, हमर निवेदन मन दए सुनह। एहि मदनक हाथसँ हमरा उबारि लेह। (4) कामदेवक प्रहार के सहि सकैत अछि। भारी पराभवमे छी। कोनो प्रतिकार नहि फुरैत अछि। (5) तों अपन दूनू स्तनरूपी शिव लग (जे कामकें मारि सकैत छथि) हमरा शरण देह आ' तीनू लोकमे विमल यशक भागी बनह।

[280]

लोनुअ बदन सिरी धनि तोरि। जनु लागओ तोहि[1] चान्दक चोरि।।1।।
[कतए नुकाओब चान्दक चोर। जतहि नुकाओब ततहि उजोर]।।2।।
घरहि रहह[2] जनु हेरह काहु। चान्द भरमे मुख गरसत राहु।।3।।
धवल नयन तोर काजरें कार। तीख तरल X X X X धार।।4।।
निरळि अहेड़ि[3] फास गुन जोळि। बान्धि हलत तहि[4] खञ्जन बोलि।।5।।
सागर सार चोराओल चन्द। तोँ लागि राहु करए बड़ दन्द।।6।।
भनइ विद्यापति होउ निसङ्क। चान्दहु कों किछु लागु कलङ्क।।7।।

1. जस लागि मोहि। 2. दरसि हलह। 3. निहारि। 4. तोहि।

कृष्ण राधाक रूपक बड़ाइ करैत छथि — (1) हे राधा, तोहर मुखक शोभा बड़ दिब छहु। कदाचित् तोरा पर चान चोरएबाक आरोप ने लागहु। (2) चानक चोर अपन माल कतहु नुकाए नहि सकैत अछि। जतहि नुकाओत ततहि इजोत भए जएतैक। (3) तें हे सुन्दरी, तों घरहिमे रहह; ककरहु दिस ताकह नहि। कदाचित् राहु चान बूझि तोहर मुखकें गरसि लेतहु। (4) कारी काजर बाला तोहर उज्जर आँखि तेज आ' चंचल (खंजन-सन लगैत छहु)। (5) जँ अहेड़ि (आखेटक) देखि लेतहु तँ खंजन

बूझिकें फाँसमे बझाए लेतहु। (6) राहुसँ बँचिकें रहिहह, किएक तँ चान समुद्रमथनमे अमृत चोराए लेलक तें चानकें राहुसँ बड़ विरोध। (7) विद्यापति कहैत छथि, निःशङ्क रहह। चानहुकें किछु कलंक (कारी दाग) लागल छैक (तें तोरा मुखमे चानक भ्रम नहि भए सकैत छैक)।

[281]

छलिहु एकाकिनि गँथइते हार। ससरि खसल कुच चीर हमार।।1।।
तखने अकामिक आएल कन्त। कुच की झाँपब निबिहुक अन्त।।2।।
कि कहब सुन्दरि कौतुक आज। पहु राखल मोर जाइते लाज।।3।।
भेल भावभरे सिथिल[1] सरीर। कतन जतन बले राखिअ थीर।।4।।
धसमस करिअ[2] धरिअ कुच जाँति। सगर सरीर धएल[3] कत भान्ति।।5।।
गोपहि न पारिअ हृदअ हुलास। मुदलौं अधिक[4] बेकत होअ हास।।6।।

1. सकल। 2. करए। 3. धरए। 4. कमल।

राधा कृष्णसँ आकस्मिक भेटक गप सखीसँ कहैत छथि — (1) हे सखी, हम एकसरि हार गँथैत छलहुँ। संयोगवश स्तनसँ आँचर ससरिकें खसि पड़ल। (2) ताही कालमे अकस्मात् कान्त (कान्ह) आबि गेल। स्तन की झाँपब, हमर साड़िओ फुजि गेल। (3) आजुक कौतुक की कहिअहु। हमर बुड़ैत लाज कान्ह बचाए देलक (साड़ी सम्हारि देलक)। (4) कामोद्रेकवश देह शिथिल भए गेल। कतेक यत्नें अपनाकें स्थिर राखल। (5) हम थत- मलाए लगलहुँ। स्तनकें जाँति रखलहुँ। कान्ह हमर सगर शरीरकें नाना प्रकारें छूलक-छपलक। (6) तखन हम अपन उल्लासकें छिपाए नहि सकलहुँ। हँसीकें जतेक दबएबाक चेष्टा करब, ओ ततेक प्रबल होइत जाएत।

[282]

परक पेअसि आनलि चोरि। साति अङ्गिरलि आरति तोरि।।
तोहि नहि डर ओहि नहि लाज। चाहसि सगरि निसि समाज।।

राखहि माधव राखहि मोहि। तोरित घर पठाबह ओहि।।
तोहें न मानह हमर बाध। पुनु दरसन होएत[1] साध।।
ओहओ मुगुधि जानि न जान। संसय पळल मोर[2] परान।।
तोहँहु नागर अति गमार। हठे कि होइअ समुद पार।।

1. होइत। 2. पेम।

सखी कृष्णकें उपराग दैत छथि — (1) हे कान्ह, हम आनक प्रेयसीकें चोराए आनि देलिअहु। तोरा बड़ आर्त देखल तें ई कष्ट (खतरा) उठाओल। (2) ने तोरा डर छहु, ने ओकरा (राधाकें) लाजबीज छैक। तों दूनू सगर राति संगम करए चाहैत छह की? (3) हे माधव, तों हमरा बचाबह। ओकरा तुरन्त अपन घर घुराए दहक। (4) तों हमर मना (वर्जन) नहि मानैत छह। एना कएने फेर ओकरा देखबा लेल मन लगले रहि जएतहु। (5) जेहने तों छह ओहो तेहने अबुझ अछि। बीचमे संशयमे पड़ल अछि हमर प्राण। (6) तोंहूँ नागर भए परम गमार भए गेलह। एतबो नहि बुझैत छह जे हठात् समुद्र पार नहि कएल जाए सकैत अछि।

[283]

आदरि आनलि परेरि नारी। कठिने दुतरि जमुनि[1] तारि।।1।।
गेल चाहिअ[2] तोहहुँ तहाँ। एखने पलटि जाइति[3] कहाँ।।2।।
न कर माधव हेनि उकुति। पुनि पठाबए चाहिअ दूती।।3।।
आनि बिसारिअ[4] आधक भोरा। गरुअ नीलज मानस तोरा।।4।।
हाथक रतन तेजह कोहे। के बोल नगर नागर तोहे।।5।।

1. कता कठिन दुतर। 2. सम्भव। 3. जाएब। 4. बिसरिअ।

राधाकें लए आइलि दूती दोसरि नारीमे रत कृष्णकें गंजन करैत अछि — (1) बड़ कष्टें दुस्तर (दुर्गम) नदी पार कए पर-नारीकें आनल। (2) आब ओहि संकेतस्थल पर तोरा अवश्य जएबाक चाही। तों नहि जएबह तँ ओ बेचारी घुरिकें कतए जाएत? (3) हे माधव, जँ फेर हमरा

दूती बनाए पठबए चाहैत छह तँ एहन बात नहि बाजह। (4) तों हृदयहीन मूर्ख छह। ओकरा आनिकें घुराए कोना दिऐक? भारी निर्लज्ज छहु तोहर मन। (5) कोपवश हाथ आएल रत्नकें त्यागैत छह। नगरमे तोरा कें नागर (भद्रपुरुष) कहैत छहु?

[284]

कामिनि तोहें उपदेस धरब हे सुनिए मोर हित[1] बानी।
नागरिपन[2] किछु कहबाँ चाहजो[3] कहलेंओ बुझए सयानी।।1।।
कुन्द भमर सङ्गम जञो भाखब[4] नयने जगाए अनङ्गे।
आसा दए अनुराग बढ़ाओब चङ्गिम[5] अङ्ग विभङ्गे।।2।।
कैतब कए कातरता दरसबि[6] गाढ़ आलिङ्गन दाने।
कोप कइए परबोधन[7] मानब अधिक न करबे माने।।3।।
कोकिल कूजित कण्ठ बैसाओब[8] [अनुरञ्जब रितुराजे]।
मधुर हासे मुखमण्डल मण्डब तिला एक तेजब लाजे।।4।।
सम पसेद नीसह[9] तनु दरसब मुकुलित लोचने हेरी।
नखे हनि[10] पिआ मनिधाम[11] छड़ाओब सुरत बढ़ाओब बेरी।।5।।
जूझल मनमथ पुनु जे जुझाबए[12] केलि रभस परचारी।
गेल भाव जे पुनु पलटाबए सेहे कलावति नारी।।6।।
रस सिंगार सरस कवि गाओल रस बूझए रसवन्ता[13]।
राजा सिबसिंह रूपनराएन लखिमादेविक कन्ता[14]।।7।।

1. जे सुन सुन सुललित। 2. नागरपन। 3. चाहिअ। 4. कुन्द भरम सम्भ्रम सम्मार। 5. लङ्गिम। 6. दरसब। 7. कएला पर रोष न। 8. बढ़ाओब। 9. समय से मनि सह। 10. हरि। 11. मन ठाम। 12. पूनु जूझाओब। 13. सुखसम्भोग सरस कवि गाबए बूझ समय पचबाने। 14. विद्यापति कवि भाने।

सखी नायिकाकें रमणक रीति सिखबैत छथि – (2) हे सुन्दरी, पिआसँ तेना बजबह (मिलबह) जेना कुन्दसँ भमर। नजरि चलाए

कामवासना जगएबह। रमणक भरोस दए-दए ललित अंग-भंगिमा द्वारा पिआक अनुराग बढ़एबह। (3) जखन पिआ कसिकें आलिंगन करथि तखन व्याजपूर्वक कातरता (कृत्रिम भय) देखएबह। कोप करबह, मुदा बौंसथि तँ अनुकूल भए जएबह। अधिक मान नहि करबह। (1) हे कामिनी, हित वचन सुनि-सुनि हमर उपदेश मन रखने रहिहह। तोरा हम नागरी नायिकाक किछु लक्षण कहए चाहैत छिअहु किएक तँ किछु बात चतुरो नारी कहलहि पर बूझि सकैत अछि। (4) कोकिलक कूजन कण्ठमे आनि ऋतुराज वसन्तक अनुरञ्जन करबह (जेना कोकिल वसन्तकें सरस बनबैत अछि तहिना तों पिआकें अपन मधुर बोलसँ सरस बनबिहह)। मधुर हाससँ अपन मुह सुशोभित करबह। छन भरि (रतिक्रियाक समय) लाज छाड़ि देबह। (5) रतिश्रमसँ प्रस्वेद (घाम) चलतहु तँ देह निस्सह (संचारहीन) कए संकुचित दृष्टिसँ निहारबहुन। सम्भोगक बाद पिआकें नह गड़ाए-गड़ाए हुनक गुह्यांग हटएबह आ' रतिक्रियामे अधिक काल लगएबह। (6) जे एक बेर रति कए थाकल पिआकें रंगरभस द्वारा पुनः रति करबाक हेतु तैआर करए, समाप्त भेल कामवासनाकें पुनः पलटाबए सेह नारी कलावती (कामकलाविज्ञ) थिक। (7) सरस कवि विद्यापति ई शृंगार रसक गीत रचल। एकर रस लखिमा देवीक पति रसज्ञ राजा शिवसिंह रूपनारायणे बुझैत छथि।

[285]

कतन गुञ्जा कतन[1] फूल। कतन काच[2] रतन तूल।।1।।
जे पुनु जानए मरम साँच। रतन तेजि न किनए काच।।2।।
अरे रे सुन्दर उतर देह। कञोने कञोन गुन परेखि लेह।।3।।
अनेकै दिबसे कएल मान। मधु छाड़ि आन माङ्गए[3] दान।।4।।
ऐसन मुगुध तोंहि[4] मुरारि। गरळ भखए[5] अमिञ छाड़ि।।5।।

1. कतए गुजा कतए। 2. कतए गुजा। 3. न मागए। 4. थीक। 5. गबउ भषए।

राधा आन गोपीमे आसक्त कृष्णक भर्त्सना करैत छथि — (1) बहुतो गुंजा अछि आ' बहुतो फूल। बहुतो काच रत्न-सन लगैत अछि। (2) किन्तु जे वास्तव मर्म (अन्तर) जनैत अछि से रत्न छाड़ि काच नहि किनैत अछि। (3) हे श्यामसुन्दर, उत्तर देह। कोनमे कोन गुण छैक से परेखिकें कीनह। (4) हम बहुत दिन धरि मान कएने रहलहुँ (तैओ तों पसिजलह नहि)। तों मधुकें छाड़ि आन वस्तुक दान (भीख) मङैत छह। (5) हे माधव, तों केहन बकलेल छह जे अमृत छाड़ि विष खाइत छह।

[286]

जखने जाइअ सएन पासे। मुख परेखए दरसि हासे।।1।।
तखने उपजु ऐसन भान। जगत भरल कुसुमबान।।2।।
कि सखि कहब केलि बिलासे। नित्र अनाइति पिआ हुलासे।।3।।
नीबी बिघटए गहए हारे। सीमा लाङ्घए मन बिकारे।।4।।
सिनेह जाल बझाबए[1] जीबे। सङ्गहि सुधा अधर पीबे।।5।।
हरखि हृदय हरए[2] चीरे। परसे अबस कर सरीरे ।।6।।
तखने उपजु ऐसन साधे। न दिअ समत न दिअ बाधे।।7।।
भन विद्यापति तोहें[3] सयानी। अमित्र मिसलि नागरि बानी।।8।।

1. बढाबए। 2. गहए। 3. ओहे।

राधा संगमक अनुभव सखीकें सुनबैत छथि — (1) जखन हम सेज लग पहुँची आ' पहु हास देखाए हमर मुह निहारए लागथि (2) तखन एहन भान होअए जेना सगर संसार कामदेव भरल होथि। (3) हे सखी, केलि-विलास की कहिअहु, हम विवश (समर्पित) भए जाइ आ' पहु उल्लसित। (4) ओ जखन चीर खोलथि आ' हार (स्तन) धरथि तखन हमर मनक विकार (कामवासना) सीमा टपि जाए। (5) प्रेमक जालमे

हमर प्राण बझाए लेथि आ' तकरा संगहि अधरामृत पीबए लागथि। (6) जखन हर्षित भए स्तनसँ आँचर हटाबथि तँ हुनक स्पर्शसँ शरीर शिथिल भए जाए। (7) तखन मनमे एहन इच्छा जागए जे ने सहमति व्यक्त करी, ने रोकबे करिअनि (ने हँ कही ने नहि)। (8) विद्यापति कहैत छथि, तों बुधिआरि छह। नागरीक वाणी अमृतमिश्रित रहैत अछि।

[287]

कुटिल बिलोक तन्त नहि जान। मधुरेहु बचने देइ नहि कान।।1।।
मनसिज भङ्ग रचिअ[1] मञे जेओ। हलिअ[2] बुझाए बुझए नहि सेओ।।2।।
की सखि करब कओन परकार। मिलल कन्त मोहि गोप गमार।।3।।
कपट गमन लाउलि कत[3] बेरि। बाहुमूल दरसल हँसि हेरि।।4।।
कुचजुग बसन सम्हरि कहु देल। तइअओ न मन तन्हिकर हरि भेल।।5।।
बिमुख होइते आब पर उपहास। तन्हिकाँ सङ्गे कइसे[4] सहबास।।6।।
कि मञे[5] करब दिन[6] झँखइते जाए। कीदहु[7] आबे सखि जिबन उपाए।।7।।

1. रचल। 2. हृदय 3. हमे । 4. कओना। 5. कए। 6. हमे। 7. कहदहु।

राधा कृष्णक गमरपन (अरसिकता) सखीकें सुनबैत छथि — (1) हे सखी, कान्ह कुटिल दृष्टिक मर्म नहि जनैत अछि। मधुरो बोल (चाटुवचन) पर कान नहि दैत अछि। (2) हम कामोत्तेजक जे-जे भंगी रचैत छी, से बुझओलहु पर ओ नहि बुझैत अछि। (3) हे सखी, की कएल जाए, कोन उपाय करू से नहि फुरैत अछि। हमरा गोप-गमार पिआ भेटल। (4) हम कए बेरि कात चलि जएबाक नाटक कएल (ओकरा कोनो परबाहि नहि)। बिहुँसि-बिहुँसि ओकरा काँख देखाओल। (5) स्तन परक आँचर सम्हारलहुँ। तैओ ओकर मन आकृष्ट नहि कए सकलहुँ। (6) आब जँ ओकरासँ नेह तोड़ि विमुख भए जाइ तँ आन उपहास करत। मुदा एहना लोकक संग कोना सहवास कएल जाए। (7) की करू, किछुओ नहि फुरैत अछि। दिन

झँखैत बीतल जाए रहल अछि। हे सखी, कहह, आब जीबाक कोन उपाय होएत?

[288]

जौबन चाहि रूप नहि ऊन। धनि तुअ बिखए देखिअ सब गून।।1।।
एके पए भेल बिधाता भोर। सम कए सामि न सिरजल तोर।।2।।
कि कहब सुन्दरि कहइते लाज। से कहले बिनु तोहर अकाज[1]।।3।।
मन्दाहु काज उकुति भलि भेलि। तें मञे किछु अनुमति तोहि देलि।।4।।
जञो तोहें बोलह करञो इथि अङ्ग। चोरी पेम चारि गुन रङ्ग।।5।।
दुर कर अगे सखि अइसनि बानि। अमिञ्र खोअउबिसि साङ्करे सानि।।6।।
छैलक उकुति कहइते नहि ओर। अरथक गरुअ बचन के थोळ।।7।।
जीवन सार जौबने जञो[2] रङ्ग। जौबन तञो जञो सुपुरुख सङ्ग।।8।।
सुपुरुख पेम कबहु नहि छाड। दिने दिने चान्द कला जञो बाढ़।।9।।

1. तोह हो काज। 2. जग।

दूती राधाकें पर-पुरुषसँ संगम हेतु प्रेरित करैत अछि — (1) हे सखी, तोहर रूप यौवनसँ दब नहि छहु (जेहने यौवन आकर्षक, तेहने सौन्दर्य)। तोरामे सभटा गुणे गुण देखैत छी। (2) किन्तु एके बातमे विधाता भ्रान्त (अबुझ) भए गेलाह जे तोहर स्वामीक रचना तोहर समान नहि कएलनि। (3) हे सुन्दरी, की कहबहु, कहैत लाज होइत अछि (जे अपन तुल्य दोसर पुरुषकें गहह)। आ' से जँ नहि कहबहु तँ तोरे अकाज (हानि) होएतहु। (4) काज अधलाह थिक तथापि ओकर बात (प्रस्ताव) भल भेलैक (जे ओ पर-पुरुष तोहर प्रीति चाहैत अछि)। इएह सोचि हम तोरा ई विचार देलिअहु। (5) जँ तों स्वीकृति देबह तँ हम ई काज करी। गुप्त प्रेममे चारि गुन आनन्द होइत छैक। (6) हे सखी, एहन बात (?) नहि बाजह (जे ई कुकर्म थिक)। हम तँ तोरा मिसरीमे सानि (घोरि) कें अमृत पिअबैत छिअहु (प्रेम अमृत आ' ताहिमे चोरि मिसरी द्विगुण माधुर्य)। (7) रसिकक उक्ति कतेक कहबहु। बूझह अर्थ बेसी आ' शब्द

थोड़। (8) जीवन तखनहि सफल होइछ जखन यौवनमे रतिरङ्ग हो, आ' यौवन तखनहि सफल जखन सुपुरुखसँ संग हो। (9) सुपुरुख कहिओ प्रीति नहि छोड़ैत अछि। ओकर प्रीति दिनदिन बढ़ले जाइत अछि जेना चानक कला।

[289]

सुन सुन सुन्दरि हित उपदेस। सपनेहु जनु होअ बिपद कलेस।।1।।
अम्बरे बदन झपाबह गोरि। आज[1] सुनइ छिअ चान्दक चोरि।।2।।
घरे घरे पहरि गेल अछ जोहि। अबही दूखन लागत तोहि।।3।।
[कतए नुकाओब चान्दक चोर। जतहि नुकाओत ततहि उजोर।।4।।
बाहर होइए हेरह जनु काहु। चान्द भरमे मुख गरसत राहु।।5।।
निळरि निहारि फाँस गुन तोलि। बान्धि हलत तहि खञ्जन बोलि]।।6।।
अधर समीप दसन कर जोति। सीन्दुर सीप[2] बैसाउलि मोति।।7।।
हास सुधारस न कर उजोर। धनिक बनिके धन बोलब मोर।।8।।
[भनहि विघापति होहु निसङ्क। चान्दहु कौं किछु लागु कलङ्क]।।9।।

1. राज। 2. सीम। [ ] राग/नगु.सॅ।

नायक नायिकाक रूपक प्रशंसा करैत छथि — (1) हे सुन्दरी, सुनह हमर हित उपदेश जाहिसँ तोरा कोनो विपत्ति वा क्लेश सपनहुमे नहि होएतहु। (3) आँचरसँ मुह झाँपि लेह किएक तँ सुनैत छी, आइ चानक चोरि भेल अछि। (3) प्रहरी सभ घर-घरमे तलासी लए रहल अछि। एखनहि तोरा पर चोरिक आरोप लागि जाएत। (4) चानक चोर कतए नुकाओत अपन माल? जतहि नुकाओत ततहि इजोत भए जएतैक। (5) तों बाहर भए ककरहु ताकह नहि। राहु चानक भरमें तोहर मुहकें गरसि लेतहु। (6) ....। तोहर आँखिकें खंजन बूझि बझाए लेतहु। (7) अधर लग दाँत चमकैत छहु जेना सिन्दूरक सीपमे मोति बैसाओल हो। (8) तकरा हासरूपी अमृतसँ प्रकाशित नहि करह। धनवान् बनिआ कहतहु

जे ई हमरे माल थिक। (9) विद्यापति कहैत छथि, कोनो शंका नहि करह। चानमे किछु कारी दाग लागल छनि (तें ककरहु भ्रम नहि होएतैक)।

[290]

कतन दिवस लए अछल मनोरथ हरि सञो लाओब नेहा।
से सबे सुफल भेल बिहि अभिमत देल सहजे आएल हरि[1] गेहा।।1।।
सखि है जनम कृतारथ भेला।
बदन निहारि अधर रस पिबि कहु[2] हरि परिरम्भन देला।।2।।
पीन पओधर हरखि परसि कहु[3] निबिबन्ध फोएलन्हि पानी।
तखने उपजु रस भेलिहुँ परबस बोललन्हि सुमधुर बानी।।3।।
[तोहें धनि पुनमति सबे गुने गुनमति बिद्यापति कवि भाने।
राजा सिबसिंह रूपनराएन लखिमादेवि रमाने][1]।।4।।

1. मोर। 2. पिउलन्हि। 3. दरसि परसलन्हि। [ ] नरौ.सँ।

राधा कृष्णसँ संगमक उल्लास सखीसँ कहैत छथि — (1) कतेक दिनसँ मनोरथ छल जे कृष्णसँ नेह लगाएब। से आब सिद्ध भेल। विधाता मनोरथ पुरओलनि। कृष्ण अपनहि अनायास आबि गेलाह। (2) हे सखी, जीवन कृतार्थ भए गेल। कृष्ण मुह निहारि अधर-रस पीबि छातीसँ लगाए लेलनि। (3) पुष्ट स्तन हर्षपूर्वक छूबि-छूबि अपना हाथें हमर चीर फोलि देलनि। तखन जे रसोद्रेक भेल ताहिमे हम भासि गेलहुँ आ' ओ मधुर-मधुर वचन सुनबए लगलाह। (4) कवि विद्यापति कहैत छथि, तों सभ दृष्टिएँ गुनमन्ति आ' पुनमन्ति छह। राजा..........।

[291]

बचनक रचने दन्द पए बाढ़ल कोप ओर धरि[1] गेला।
अबला गोप कओने की बोलब झीसी कादब भेला।।1।।
सजनी नारि पुरुख हठसील।
दिन दिन पेम आबे तन्हि बिसरल बिनु बहलें पड़[2] खील।।2।।
की[3] बोलब कत मञे जे सिखाउलि कत पड़लाहुँ मञे पाओ।

दैबा बाङ्क कओने सरिआओब तेसरि कि मेल[4] कराओ।।3।।

1. ... . धरि। 2. पह। 3. कत। 4. तेतरि न मील।

दूती मेल करएबाक प्रयासमे विफल भए सखीकें अपन अनुभव सुनबैत छथि — (1) दूनू गढ़ि-गढ़ि बात बनबैत रहल। दूनूमे झगड़ा बढ़ैत गेल। दूनूमे कोप ओर धरि (पराकाष्ठा पर) पहुँचि गेल। एक दिस अबला आ' दोसर दिस गोप गमार। के की बुझाओत। झीसी पड़ैत-पड़ैत थाल पसरि गेल (झगड़ा क्रमशः तेज होइत गेल)। (2) नारी आ' पुरुष दूनू सहजहि हठी। आब ओ दूनू दिन-दिन प्रेम बिसरैत गेल। घाओ बहल नहि तें खील पड़ि गेल (प्रेममे ग्रन्थि पड़ि गेलैक)। (3) दूनूकें हम कतेक सिखाओल, पाएर पड़ि कतेक नेहोरा कएल से की कहबहु। दैब जँ बाँक होए तँ झगड़ा के सोझराए सकत। तेसरि (दूती) कथमपि मेल नहि कराए सकत।

[292]

सौरभ लोभे भमर भमि आएल पुरुब पेम बिसबासे।
बहुत कुसुम मधुपान पिआसल आओत ओ तुअ पासे[1]।।1।।
मालति करिअ हृदअ परगासे।
कत दिन भमरे पराभव पाओब भल नहि अधिक उदासे।।2।।
आनक[2] अभिमत के नहि राखए जीबो दए जग हेरी।
कि करब से नित्र जीवन जौवने[3] जे नहि बिलसए बेरी।।3।।
सबहि कुसुम मधुपान भमर कर कवि विद्यापति भाने।
[राजा सिबसिंह रूपनराएन लखिमादेबि रमाने]।।4।।

1.जाएत तुअउ पासे। 2. कओनाक। 3. की करब तें धन अध जीबने। [ ] नगु.सँ।

सखी कृष्णक उपेक्षा कएनिहारि राधाकें मालतीक ब्याजें बुझबैत छथि - (1) पूर्वक प्रेम पर विश्वास कए भ्रमर सौरभक लोभें घुमैत-घुमैत

तोहरा लग आएल। फूल तँ बहुत भेटलैक (मुदा कतहु तृप्ति नहि भेलैक)। आब मधुपान हेतु तृषित ओ भ्रमर तोहरा लग आओत। (2) हे मालती, तों हृदयकें प्रफुल्लित करह। भ्रमर आओर कतेक दिन पराभव पबैत रहत? ओकरा आओर अधिक उदास (निरास) करब नीक नहि। (3) एहि संसारमे देखैत छी जे आनक इच्छाक पूर्ति प्राणो दए लोक करैत अछि। जे बेर पर (यौवन-कालमे) केलिविलास नहि करए से अपन जौवन आ' जीवन लएकें की करत? (4) विद्यापति कहैत छथि, भ्रमर तँ स्वभावतः सभ कुसुमक रस लेबे करत। राजा............।

[293]

अघट हठें[1] घटाबए चाहसि वचन बोलसि हँसी।
आनहि आनहि पेम रचना तञे सखि रतल रसी।।1।।
सुन्दर देहा बीजुरि रेहा गगन मण्डल सोभे।
जतने रतन जे नहि पाबिअ तँ कके करिअ लोभे।।2।।
सुन्दरि, तोकें बोलञो पुनु-पुनु।
बेरा एक परिहासे मञे खँओल ओ बोल बोलह जनु।।3।।
कथा अमी कथा तुमी पाबओं आबिए वासा।
जे निबाह न करए[2] पारिअ तों कके दिअए आसा।।4।।
कामिनि कुलक धरम निआञे कैसे अँगिरति पास।
सुरत सुख निमिख बेरा जावे जीव उपहास।।5।।

1. घट। 2. करए नहि।

मिलन हेतु उत्कंठित राधाकें दूती बुझबैत छथि – (1) हे सखी, जे घटित नहि भए सकैत अछि तकरहि तों हठें घटित करए चाहैत छह। आ' हँसि-हँसिकें बजैत छह। ....(?) (2) आकाशमे विद्युत्-रेखाक सुन्दर आकृति सोभैत अछि। किन्तु जे रत्न यत्न कएलहुसँ प्राप्त नहि भए सकैत अछि तकरा पएबाक लोभ किएक करैत छह? (3) हे सुन्दरी, तोरा

बेरि-बेरि कहैत छिअहु। एक बेर जे कहलह तकरा हम परिहास (मजाक) बूझि सहि लेल। ओ बात फेर नहि बाजह। (बात ई छल जे राधा सखी पर आरोप लगओने रहथि जे तों स्वयं कृष्णमे अनुरक्त छह। सखी तकरे उत्तर कहैत अछि) कतए हम आ' कतए तों (अर्थात् हम केवल दूती थिकहुँ, भोक्त्री तँ तोंही थिकह)। ....(?)। जे निमाहि (पूरा कएल) नहि हो तकर आशा किएक देल जाए। जे कामिनी कुल-धर्मकें गहने अछि से सङ्ग (सङ्गम) करब कोना स्वीकार करत। रति-सुख छन भरि भेटतैक; कलंक जीवन भरि लागल रहि जएतैक।

[294]

माधवे आए कबाळ उबेकलि जाहि मन्दिर बसु[1] राधा।
लालसे[2] कोपे आध[3] हसि हेरलन्हि चान्द उगल जनि आधा।।1।।
माधव बिलखि बचन बोल राही।
जौबन रूप कला गुन आगरि कै नागरि हम चाही।।2।।
[खीर कपूर पान हमे साजल पाएस अओ पकमाने।
सगरि रजनि हमे जागि गमाउलि खण्डित भेल मोर माने]।।3।।
माथुरनगर बिलम्ब हम लागल कके न पठओलह दूती।
जन दुइचारि बनिक हम भेटल तठमाहि रहलहुँ सूती।।4।।
तुअ चञ्चल चित नहि थपना थित[4] महिमा धार न धीरे।
कुटिल कटाख मन्द हसि हेरह[5] भितरहु स्याम सरीरे।।5।।
[भनइ विद्यापति सुन बर जौबति चिते जनु मानह आने।
राजा सिबसिंह रूपनराएन लखिमा देबि रमाने]।।6।।

1. छलि। 2. आइ। 3. आलस। 4. थिर। 5. हेरलन्हि। [ ] नगु.सँ।

कवि राधा-कृष्णक एक प्रणय-लीलाक वर्णन करैत छथि – (1) जाहि घरमे राधा छलीह कृष्ण आबिकें तकर केबाड़ खोललनि। राधा एक दिस मिलनक लालसा आ' दोसर दिस कोप, तें कनेक ओढ़हिसँ कृष्णक दिस

तकैत अध हँसी हँसलीह; से मानू आधा चान उगलाह। (2) राधा विखिन्न भए कृष्णकें कहलथिन, 'हे माधव, यौवन, रूप, कला एहि सभ गुणमे के ललना हमरासँ उपर छथि (जे तोहरा बझाए रखलथुन)? (3) तोहरा लेल हम दूध, कर्पूर, पान, खीर आ' पकमान तैआर कए राखल (मुदा तों अएलह नहि)। हम सगर राति जागिकें बिताओल। हमरा जे अभिमान छल (जे तों हमर वशमे छह) से आइ टूटि गेल।' कृष्ण उत्तर दैत छथिन -- (4) मथुरापुरीमे हमरा विलम्ब लागल तैं तों दूती किएक नहि पठओलह? ओतए दुइ-चारि गोट बनिआ सभसँ भेट भए गेल। ततहि सूति रहलहुँ।' राधा एकर प्रतिवाद करैत छथिन – (5) तोहर चित चञ्चल छहु (खन एहि सुन्दरीपर, खन ओहि सुन्दरीपर दौड़ैत छहु)। तोहरा बातक स्थिरता नहि छहु। ....(?)। तों कुटिल कटाक्षसँ मन्द-मन्द बिहुँसैत हमरा दिस तकैत छह; तोहर शरीरे नहि, भीतर हृदय सेहो कारी छहु। (6) वियापति कहैत छथि, हे सुन्दरी, मनमे अन्यथा नहि मानह (कृष्ण तोरे थिकथुन)। राजा...............।

[295]

सुनि सिरिखण्ड तरु तें मञे गमन कर तेजत बिरहक तापे।
आरति अएलाहुँ मञे कुम्भिलएलाहुँ के जान पुरुब कओन पापे।।1।।
माधब तुअ मुख दरसन लागी।
बेरि बेरि आबञो उत्तर न पाबञो भेलाहुँ बिरह दुख[1]भागी।।2।।
जबहि[2] तेजल गेह सुमरि तोहर नेह गुरुजने जानल भावे[3]।
एतए निठुर हरि जाएब कमने परि ततहु अनादर आवे।।

1. रस। 2. जतहि। 3. तावे।

राधा कृष्णकें उपराग दैत छथि – (1) हे कान्ह, हम चाननक गाछ सुनिकें चललहुँ जे विरह-सन्ताप दूर होएत। आर्त भए अएलहुँ तँ जानि नहि पूर्वमे कोन पाप कएल, ताप दूर की होएत, उनटे तापसँ कुम्हलाए

गेलहुँ। (2) हे माधव, तोहर मुह देखक लेल बेर-बेर अबैत रहलहुँ, उत्तरो नहि पाबि विरह-व्यथा पबैत रहलहुँ। (3) तोहर प्रेम मन पाड़ि जहाँ घरसँ बिदा भेलहुँ कि गुरुजन हमर आशय जानि गेल। एतए हे हरि, तोंहू निष्ठुर भए गेलह। आब घुरिकें घरो कोना जाएब? ओतहु तँ दुर्वचने सुनब।

[296]

गुञ्जा आनि मुकुता तोंहि[1] गान्थल बूझलि तुअ परिपाटी।
कञ्चन चाहि[2] अधिक कए कहलह काचहु तह भेल घाटी।।1।।
दूती अइसन तोहर बेबहारे।
सगर नगर[3] भमि जोहलह नागर भेटल निछछ गमारे।।2।।
बड सुपुरुख बोलि सिनेह बढ़ाओल दिने-दिने होइति बड़ाई।
तेलिक[4] बलद थान भल देखिअ पालब नहि उजिआई।।3।।
सब गुन आगर सबतहु सूनिअ तें मञे लाओल नेहे।
फल कारने तरुअर अवलम्बल छाहरि भेल सन्देहे।।4।।

1. हमे। 2 ताहि। 3. नगर सगर। 4. तेली।

कृष्णसँ उपेक्षिता राधा दूतीकें उपराग दैत छथि — (1) तों गुंजा (करजनी) आनिकें मोतिक संग गाँथि देलह। बूझि गेलहुँ तोहर चालि। तों सोनहुसँ अधिक मूल्यवान् कहलह, किन्तु भेल काचहुसँ हीन। (2) हे दूती, तोहर एहने व्यवहार? सगर नगर घूमि-घूमि नागर खोजलह, किन्तु भेटलहु निछछ गमार। (3) सुनागर बूझि कान्हसँ प्रीति बढ़ाओल। आशा छल जे दिन-दिन ई प्रीति बड़ होएत (बढ़त), किन्तु ओ सिद्ध भेल तेलिक (कोल्हुक) बरद। थान पर देखब तँ बड़ नीक बुझाएत, मुदा पालोमे नहि सकत (एकसरमे बेस, कान्हमे कान्ह मिलाए दोसराक संग बहि नहि सकत)। (4) सर्वत्र सुनैत रही जे कान्ह सर्वगुण सम्पन्न अछि; सेह बूझि ओकरासँ नेह लगाओल। फलक आशासँ गाछक आसरा धएल, किन्तु फलक कोन कथा छाहरिअहुमे सन्देह।

[297]

प्रथमहि कतन नेह[1] उपजओलह तें आनलि पररामा।
बोललह आन आन परिनति भेलि आबे परजन्तक ठामा।।1।।
माधव आबे बूझलि तुअ रीती।
जे वेरि भल मजे[2] चेतन भेलिहुँ पुनु न करब परतीती।।2।।
बाट हेरि वरनागरि रहलिए[3] सून सङ्केत निसि जागी।
जे नहि फले निरबाहए पारिअ सेहे अङ्गिरिअ[4] कों लागी।।3।।

1. जतन। 2. बले। 3. रहलि। 4. करिअ।

दूती कृष्णकें उपराग दैत छथि — (1) पहिने बड यत्नसँ तों प्रेम उपजओलह (नेह बढ़ओलह) तें परनारी राधा आनि देलिअहु। तों कहलह किछु आ' परिणाम किछु आने भेल। आब से हद पर पहुँचि गेल। (2) हे माधव, आब तोहर चालि बूझल। एहि बेर हम नीक जकाँ सचेत भए गेलहुँ। फेर तोहरापर कहिओ विश्वास नहि करब। (3) शून्य संकेत-स्थलमे भरि राति जागि ओ सुन्दरी तोहर बाट तकैत रहलि। जे फल देखाए निमाहि नहि सकी, से गछबाक नहि चाही।

[298]

हरि रिपु रिपु सुअ अरि बल भूषण तसु भोअण अछ ठामा।
पञ्चयदन अरि वाहन रिपु तसु तसु अरि पए लेअ नामा।।1।।
माधव कत परबोधबि रामा।
सुरभि तनय पति सिरोमणि दूषण रहत जनम भरि ठामा।।2।।
खचर चरण नयनानल पैसति राषबि कत दिन आसे।
कि हर बान वेद गुनि खाइति जदि न आओब तोहें पासे।।3।।
रवि सुअ तनय दैए परबोधलि बाढ़ति कओन बड़ाई।
अम्बर सेष लेख कए आसिष विहि हलु झगळ छड़ाई।।4।।
[भनइ वियापति सुन वर जौबति तोहें अछ जिबन अधारे।
राजा शिवसिंह रूपनराएन एकादस अवतारे]।।5।।

टि – पिहानी थिक। अर्थ लगाएब कठिन।

[299]

गगन तील हे तिलक अरि जुबती तसु सम नागरि बाली।
सिन्धु बन्धु अरि बाहन गन सरि हरि हरि सुमर गोआली।।1।।
माधव निरमति भुज गिम खाइ।
अब्ज बन्धु तनया सहोदर तसु पुर देति बसाइ।।2।।
अचेतनि जुबति बन्धु नहि देहरि हरि तह धरणि लोटाइ।
हरि आरूढ़ि सेहओ नहि परसए दाहिन हरि न सोहाइ।।3।।
हरि निधि अबनत आओर कहति कत चारि दुआर रच राही।
तीनि दोस अपने तोहे कएलह चारिम भेल उपाई।।4।।
टि – पिहानी थिक। अर्थ लगाएब कठिन।

[300]

दखिन पबल बह मदन धनुखि गह तेजल सखिजन मेली।
हरि रिपु तसु रिपु तासु तनय रिपु कए रहु ताहेरि सेरी।।1।।
माधब तुअ बिनु धनि बड़ खीनी।
बचन न मन धर बहुत खेद कर अदबुद ताहेरि कहिनी।।2।।
मलयानील हार तसु पीबए मनमथ ताहि डराई।
आओर भए जत भबहि निबारब तुअ बिनु बिरह न जाई।।3।

मलयानिल बहैत अछि। मदन धनुख तनने छथि। सखी सभक संग छाडि देल। ....कैर शरण धएल। हे कृष्ण, राधा तोरा बिनु बड विखिन्न अछि। कोनो हित वचन नहि सुनैत अछि। बहुत विषाद करैत रहैत अछि। विचित्र अछि तकर दशा। शेष अस्पष्ट।

[301]

त्रिबलि तरङ्गिनि पुर दुग्गम जिनि[1] मनमथे पाठ पढाऊ[2]।
जौवन दलपति गमए[3] तोहर मति रितुपति[4] दूत बढाऊ[5]।।1।।
माधव आबे साजिअ दह बाला।

तस सैसबे तोहें जे सन्तापलि सरिआउति एहि काला[6]।।2।।
कुण्डल चक्क तिलक अङ्कुस कए चन्दन कवच अभिरामा।
बान कटाख भजुह धनु गुन[7] दए साजि रहलि अछ रामा।।3।।
सुन्दरि साजि खेत चलि[8] आइलि विद्यापति कवि भाने।
राजा सिबसिंह रूप नराएन लखिमा देवि रमाने।।4।।

1. जनि। 2. पत्र पठाउ। 3. समय। 4. रतिपति। 5. पठाऊ। 6. से सरिआउति बाला। 7. नयन कटाख बान गुन धनु। 8. चलि।

सखी कृष्णकें राधाक यौवनक वर्णन सुनबैत छथि — (1) कामदेव पहिने त्रिवलि रूपी तीन नदीसँ घेरल दुर्गपर विजय पओलनि, तखन सुन्दरी राधाकें (युद्ध-विधाक) पाठ पढ़ओलनि। राधाक यौवनकें सेनापति बनओलनि आओर ऋतुपति वसन्तकें दूत बनाए आगाँ पठओलनि। (2) हे माधव, मुग्धा राधाकें तों जतेक सतओलहुन, तकर बदला ओ एहि यौवन-कालमे लेथुन। (3) हुनक कुण्डलकें चक्र बूझह, तिलक (पसाहिन) कें अङ्कुश। चन्दनकें कवच, कुटिल कटाक्षकें बाण आ' भौंहकें तकर डोरी बूझह। (4) एहि सभसँ राधा सुसज्जित भए रहलि छथि। ओ सज्जित भए रणभूमिमे पहुँचि गेलीह। विद्यापति कवि कहैत छथि, राजा.......।

[302]

सहजहि तनु खिनि माझ बेबि सनि सिरिस कुसुम सम काया।
तोहें मधुरिपु पति कइसे सहति[1] रति अपरुब मनमथ माया।।1।।
माधब परिहर दिढ परिरम्भा।
भाङ्गि जाएत धनि धएल जीब जओ मदन बिटपि आरम्भा।।2।।
सैसब अछल से डरेहि पळाएल जौवन नूतनबासी।
कामिनि कोमल पाँहोन पँचसर भए जनु जाह उदासी।।3।।
तोहर चतुरपन जखने धरति मन रस बूझति अबसेखी।
एखने अलपबुधि न बुझ अधिक सुधि केलि करब जिब राखी।।4।।
तोहें जे नागरमनि ओ धनि जिव सनि कोमल काँच सरीरा।

तें परि करब केलि जे पुनु होअ मेलि मूल राख बनिजारा।।5।।
भनहि विद्यापति हमरि ऐसनि मति[3] दुर कर सबे अनुतापे।
जओ अति कोमल तइअओ न सतदल कबहु भमर भरे काँपे।।6।।

1. कैसे कए धरति। 2. मन जीव सन। 3. हमरि ऐसनि मति मन दए सुन दुति।

सखी कृष्णकें कहैत छथि — (1) राधाक शरीर सहजहि दुबर अछि, कटि बेबि (दू खण्ड) सन आओर अंग सिरिसक फूल सन कोमल। मधु नामक राक्षसक संहार कएनिहार तों हुनक पति। तखन ओ राधा तोरा संग रमण कोना कए सकत। अद्भुत अछि कामदेवक माया। (2) हे कान्ह, जोरसँ आलिंगन नहि करह। मदन-तरुक अंकुर (ओकर नवोदित स्तन) जकरा सुन्दरी प्राण जकाँ जोगओने अछि भग्न भए जाएत। (3) राधाक देहमे जे शैशव छल से तोहर डरें पड़ाए गेल। ओकरा जगह पर नब वास लेलक यौवन। कामिनी दुर्बल अछि, आ' कामदेव सन पाहुन पहुँचल छथिन; से हे कान्ह, तों उदास नहि भए जाह (कामिनीक ध्यान राखह)। (4) राधा तोहर चतुरपन (कामकेलिक अभिज्ञता) जखन सीखत तखनहि ओहो पूरा रसज्ञ भए जाएत। एखन ओ अल्पज्ञ अछि, अधिक ज्ञान नहि छैक, सुघड़ अछि। तें ओकर मन-प्राण रखैत रंग-रभस करबह। (5) तों श्रेष्ठ नागर छह। राधा जीव (प्राण) सन तनुक अछि। ओकर शरीर काँच छैक। अतः तेना केलि करिहह जाहिसँ फेर मिलन होअहु। चतुर बनिआ मूलधन बँचबैत व्यापार करैत अछि। (6) विद्यापति कहैत छथि, हमर तँ एहने विचार अछि, सभ चिन्ता दूर करह, कमल बड़ कोमल होइत अछि तैओ ओ भ्रमरक भारसँ कँपैत कहाँ अछि।

[303]

हरि बिसरल बाहर गेह। वसु (त)ह मिलल सुन्दर देह।।1।।
साने कोने आबे बुझए बोल। मदने पाओल अपन तोल।।2।।

कि सखि कहब कहैते धाष। खखन्दे ओरा कतए राख।।3।।
अपथ पथ परिचय भेल। जनम आँतर बेडा देल।।4।।
गमने कैतबे करसि ओज। परेओ परक करए षोज।।5।।
ओछेओ जाति जोलहा जेओ। ओळ धरि नहि बुनए सेओ।।6।।
देखल सुनल कहब तोहि। पुनु कि बोलि पठाउति मोहि।।7।।
सङ्गहि गमन सरस भान। ई रस रूपनराएन जान।।8।।

टि – सम्पूर्ण गीतक मूल भाव अस्पष्ट। रा. भा. परिषद् अपन असाधारण बुद्धिक बलें जे अर्थ देल अछि तकर मैथिली रूपान्तर देखल जाए:-

"(1) कृष्ण घर आ' बाहर दूनू बिसरि गेलाह। (हुनक) सुन्दर शरीर माटिमे मिलि गेल। (2) आब कोन-कोनमे तोहर बोल बुझैत छथि। कामदेव अपन तौल पाबि गेलाह। (3) हे सखी, की कहिअहु। कहबामे लाज होइत अछि। नेहोरा कएने अन्त नहि भेटैत अछि। (4) (हुनकासँ तोरा) अधलाह बाटमे परिचय भेलहु। तें तों हुनक बेड़ा जन्मान्तर पहुँचाए देलह। (5) बहाना बनाए जएबामे (तों) ओज करैत छह। आनो अनकर खोज करैत अछि। (6) जोलहा, जे ओछ जाति थिक, सेहो ओर धरि नहि बिनैत अछि। (7) (हम जे किछु) देखल-सुनल से तोरा कहलिअहु। ओ हमर समाद लए पठओताह। (8) सरस कवि विद्यापति कहैत छथि, संग जाएब (उचित थिक)। रूपनारायण ई रस बुझैत छथि।"

[304]

कुलकामिनि भए कुलटा भेलिहुँ किछु नहि गुनले आगू।
सबे परिहरि तुअ अनुगत[1] भेलिहुँ आबे तुअ आइति लागू।।1।।
माधव जनु होअ पेम पुराने।
नब अनुराग ओर धरि राखब जे न विघट मोर माने।।2।।
सुमुखि बचन सुनि माधवे मने गुनि अङ्गिरल निज[2] अपराधे।
सुपुरुख सञो नेह विद्यापति कह ओर धरि रह निरबाधे[3]।।3।।

1. तुअ अधीनि। 2. कए। 3. हो निरबाहे।

राधा कृष्णसँ कहैत छथि — (1) हम कुलकामिनी छलहुँ, किन्तु तोहर प्रेममे पड़ि कुलटा भए गेलहुँ। आगाँ की हाल होएत से नहि सोचलहुँ। सभकें छाड़ि तोहर पाछु लगलहुँ। आब तँ तोहर आइति (वश) मे पड़ि गेलि छी। (2) हे माधव, प्रेम पुरान नहि होअओ। एहि नब प्रेमकें अन्त धरि सुदृढ़ रखिहह जाहिसँ हमर मान-मर्यादा बाँचल रहए। (3) कृष्ण राधाक एतबा वचन सुनि आ' मनमे सोच-बिचार कए अपन अपराध सकारि लेलनि। विद्यापति कहैत छथि, सुपुरुषसँ कएल प्रेम अन्त धरि निर्बाध रहैत अछि।

[305]

की कान्ह निरेखह भउह विभङ्ग। धनु मोहि सोम्पि गेल अपन अनङ्ग।।1।।
कञ्चनें कामे गढ़ल कुचकुम्भ। भाङ्गत माधब[1] देइते परिरम्भ।।2।।
चतुर सखीजन लाबिए[2] नेह। देलि[3] पसाहि बाङ्क ससिरेह।।3।।
राहु तरास चान्द सञो आनि। अधर सुधा मनमथे धरु जानि।।4।।
जिब जञो राखञो रहञो अगोरि। पिबि जनु हलह लागत मोहि चोरि।।5।।
कैतव करथि कलाबति नारि। गुनगाहक पहु बुझथि बिचारि।।6।।

1. भगइते मलब। 2. लाबथि। 3. आसे।

राधा कृष्णसँ कौतुकालाप करैत छथि — (1) हे कान्ह, तों हमर भउँह की देखैत छह। ई भउँह नहि, ई थिक कामदेवक अपन धनुष जे ओ हमरा दए गेलाह। (2) कामदेव सोनसँ हमर स्तनरूपी घैल बनओलनि। आलिङ्गन करबह तँ ई घैल फूटि जाएत। (3) चतुर सखी लोकनि हमरासँ बड़ प्रेम करैत छथि, ओ सभ बाँक चान-सन पसाहिन कए देलनि अछि। (4) कामदेव, राहु पिबि ने जाए ताहि डरें, चानसँ अमृत आनि हमरा अधरमे रखलनि। हम ओकरा अपन प्राण जकाँ ओगरने रहैत छी। (5) तों पिबि नहि लेह। जँ से करबह तँ चोरिक आरोप हमरहि लागत। (6) एहि

प्रकारें कलाकुशल कामिनी व्याज-कौतुक करैत छथि आ' गुणक ग्राहक पिआ ओकर आशय बुझैत छथि।

[306]

प्रथमहि गिरिसम गौरव भेल। इदय हार आन्तर नहि देल।।1।।
सुपुरुख बचन कएल अबधान। भल मन्द दुअओ बुझल[1] अवसान।।2।।
चल चल माधब भलि तुअ रीति। पिसुन बचने परिहरलि पिरीति।।3।।
परक बचने तोहें[2] आपल कान। जानल तखने समय भेल आन[3]।।4।।
आबे अपद[4] हरि तेज अनुरोध। काहुकाँ जनु हो बिहिक बिरोध।।5।।
नहि भेल[5] रङ्ग रभस दुर गेल। इथि हमे खेद एकओ नहि भेल।।6।।
एके पए खेद जे मन्दा समाज। भलेहु तेजल आब आँखिक लाज।।7।।
भनइ बियापति हरि मन लाज। काहुकाँ जनु हो मन्दा समाज।।8।।

1. बुझब। 2. पहु। 3. समय समान। 4. अपदहु। 5. न भेले।

राधा कृष्णकें उपराग दैत छथि — (1) पूर्वमे पर्वत समान गौरव भेल (जे तोरा सन पिआ भेटल)। इदय पर हारहुक व्यवधान नहि होअए दिऐक। (2) सुपुरुखक वचनमे आस्था राखल। भल कि अनभल से अन्तमे बूझल। (3) जाह हे माधव, खूब छहु तोहर रीति। तों दुष्ट सभक बात पतिआए नेह तोड़ि लेलह। (4) जखनहि तों आनक बात पर कान देलह तखनहि बूझल जे दिन बदलि गेल। (5) आब हे हरि, अनवसरमे अनुरोध (बँसबाक प्रयास) छोड़ह। ककरो विधाता एना वाम नहि होथु। (6) रंग नहि भेल, रभस नहि भेल, ताहिसँ हमरा किछुओ खेद नहि अछि। (7) खेद एके बातक अछि जे अधम पुरुषसँ संग भेल। आब नीको लोक आँखिक लाज छाड़ि देलक (लोक-लज्जा नहि रहलैक)।

[307]

रयनि समापलि फुलल सरोज। भमि भमि भमरी भमरा खोज।।1।।
दीप मन्दरुचि अम्बर रात। जुगुतिहि जानह भेल[1] परात।।2।।
अबहु तेजह पहु मोहि न सोहाए। पुनु दरसन होअ मदन[2] दोहाए।।3।।

नागर राख नारि मने रङ्ग। हठ कएले पहु हो रस-भङ्ग।।4।।
तत करिअए जत फाबए चोरि। पर धन लए नहि रहिअ अगोरि।।5।।

1. जानल भए गेल। 2. होत मोहि मदन।

राधा भोर भेला पर छुट्टी देबाक अनुरोध कृष्णसँ करैत छथि — (1) राति बीतल। कमल फुलाएल। भमर घूमि-घूमि भमरीक खोज करैत अछि। (2) दीपक प्रकाश मन्द भेल। आकाशमे लाली पसरल। एहि युक्ति (लक्षण) सभसँ जानह जे परात भए गेल। (3) हे पहु, आबहु हमरा छोड़ह। आब हमरा ई रंगरभस नीक नहि लगैत अछि। फेर भेट होअओ। दोहाइ कामदेवक। (4) नागर (रसज्ञ पुरुष) नारीक मन रखैत (सहमति पबैत) रमण करैत अछि। हे पहु, हठ कएने रंगमे भंग भए जाइत अछि। (5) चोरि ततबे करी जतबा फाबए। आनक धन लएकें ओकरा ओगरने नहि रही (नहि तँ पकड़ल जाएब)।

[308]

अधर मँगइते अओध कर माथ। सहए न पार पयोधर हाथ।।1।।
बिघटलि नीवी करें धर जान्ति। अङ्कुरल मदन धरए कत भान्ति।।2।।
कोमलि कामिनि नागर नाह। कओने परि होएत केलि निरबाह।।3।।
कुच कोरक जबे[1] कर गहि लेल। काँच बदर अरुनिम[2] रुचि भेल।।4।।
लाबए चाह जबे[3] नखर बिसेख। भऋुह न आटए चान्दक रेख।।5।।
धनि[4] मुखसोभ लोभे रह हेरि। चान्द बदन झापए[5] कति बेरि।।6।।

1. तबे। 2. अरुण। 3. चाहिअ। 4. तुअ। 5. चान्द झपाब वसन।

कवि मुग्धा नायिकाक संगमक वर्णन करैत छथि — (1) कृष्ण अधर-पानक याचना करैत छथि तँ राधा मूड़ी गोंति लैत छथि। स्तन पर हाथ देब राधाकें असह्य भए जाइत छनि। (2) खुजल नीवीकें हाथसँ जाँति रखैत छथि। जागल काम नाना लीला देखबैत अछि। (3) कामिनी राधा नव-यौवना (वाला) छथि तँ कृष्ण कामकेलिमे परायण नागर छथि। एहन

विषमताक अछैत जानि नहि कामकेलि कोना सम्पन्न होएत। (4) कृष्ण जखन राधाक नवोदित स्तन हाथसँ धरैत छथि तखन मानू काँच बैरमे लाली आबि जाइत अछि (कोमल स्तन लाल भए जाइछ)। (5) जखन कृष्ण नखक्षत करए चाहैत छथि तखन हुनक भौंहक परतर द्वितीयाक चानो नहि पाबि सकैत अछि। (6) कृष्ण राधाक मुह देखबालए लोभाएल छथि आ' राधा अपन चन्द्रवदन बेरि-बेरि झपैत रहैत छथि।

[309]

माधव मास तीथि भउ माधव अबधि कइए पिआ गेला।
कुचजुग सम्भु परसि करे बोललन्हि तें परतिति मोहि भेला।।1।।
सखि हे कतहु न देखिअ मधाई।
काम्प सरीर थीर नहि मानस अबधि निअर भेल आई।।2।।
चान्दन अगर मृगमद रस कुङ्कुम[1] के बोल सीतल चन्दा।
पिआ बिसलेखे अनल जओ बरिसए बिपति चिन्हिअ भल मन्दा।।3।।
भनइ विद्यापति ओ रे कलामति अबधि समापल आजे।
लखिमादेवि पति पुरिह मनोरथ आबिह सिबसिंह राजे।।4।।

1. मृगमद कुङ्कुम।

राधा सखीके विरहव्यथा सुनबैत छथि — (1) आइ वैशाख मासक एकादशी तिथि भए गेल। पिआ इएह अवधि कहि गेल छलाह। स्तनरूपी शिवलिंगकें छूबि शपथ कएलनि, तें विश्वास भेल। (2) हे सखी, कान्हकें कतहु नहि देखैत छिअनि। देह कंपैत अछि। मन कतहु थिर नहि रहैत अछि। अवधि निकट आबि गेल। (3) के कहैत अछि जे चन्दन, अगर, कस्तूरी, कुङ्कुम, चान ई सभ शीतल होइत अछि? इहो सभ प्रियतमक विरहावस्थामे जनु आगि बरिसबैत अछि। विपत्तिक क्षणहिमे नीक-अधलाह चीन्हल जाइत अछि। (4) विद्यापति कहैत छथि, हे सुन्दरी, अवधि तँ

आइए बीतल अछि। शिवसिंह अवश्य अओताह आ' लखिमा देवीक मनोरथ पूरत।

[310]

आएल वसन्त सकल वन रञ्जक कुसुमबान सानन्दा।
फूलति मालति[1] भूखल भमरा पिबि गेल सबे मकरन्दा[2]।।1।।
मानिनि आबे कि करह समधाने[3]।
नहि नहि कए परिजन परिबोधह लखन देखिअ आने-आने।।2।।
[नखपद केसु पओधर पूजल परतेख भए गेल लोते।
उगल सुमेह सिखर चढ़ि ससधर दह दिस भेल उजोते]।।3।।
बिनु कारने कुन्तल कैसे आकुल करह[5] जुगुति किछु ओछी।
कुम्हड़ाक चोरि भलेहिं[6] तोहि फाउलि कान्ध न अएलाहे पोछी।।4।।
[भनइ विद्यापति अरे बर जौबति एहु परतख पञ्चबाने।
राजा सिबसिंह रूपनराएन लखिमादेवि रमाने]।।5।।

1. मालि। 2. गेल मकरन्दा। 3. करिअ अबधाने। 4. जुगुति देखओ तोरि। 5. करओ। 6. कुमढ़ा केरि चोरि भलि। [...] नगु.सँ।

कृष्णसँ गुप्त संगम कए घूरलि राधाकें सखी उपहास करैत छथि — (1) सगर वनकें रंगीन बनओनिहार वसन्त आएल। कामदेव आनन्दित भेलाह। मालती फुलाएल आ' भमरा तकर पूरा रस पिबि गेल (अर्थात् तों कृष्णसँ संगम कए अएलह)। (2) हे मानिनी राधा, आब (तोहर चोरि) फुजि गेलहु, समाधान (सफाइ) की देबह। 'नहि-नहि' कहि घरक लोककें भनहि परतारि देबह, परन्तु लक्षण देखि तँ आने बात प्रकट होइत अछि। (3) तोहर स्तनरूपी शिव नखक्षतरूपी पलाशक फूलसँ पूजित छथि, एहिसँ रहस्य खुजि गेलहु। स्तनरूपी सुमेरुक शिखर पर चढ़ि द्वितीयाक चान (नखचिह्न) उगि गेलाह आ' ताहिसँ सर्वत्र प्रकाश भए गेल (किछु छिपल नहि रहलहु)। (4) बिनु कारणहि खोपा कोना फुजलहु? छिपएबाक हेतु किछु तुच्छ युक्ति (लाथ) करैत छह। कुम्हड़क चोरि तँ फबि गेलहु, मुदा

कान्ह पोछलह नहि, उजरी लगले रहलहु। (5) विद्यापति कहैत छथि, हे सुन्दरी, सुनह। लखिमादेवीक पति राजा शिवसिंह प्रत्यक्ष कामदेव थिकाह।

[311]

रयनि काजर बम भीम भुअङ्गम भम[1] कुलिस पड़ए दुरबार।
गरजें तरस मन रोसें बरिस घन संसय पळु अभिसार।।1।।
सजनी बचन छाड़ैते मोहि लाज।
जे होअ से[2] होअ बरु सबे हमे अङ्गीकरु[3] साहसँ मन देल आज।।2।।
ठामहि रहिअ घुमि परसें चिन्हिअ भुमि दिगमग उपजु सन्देह।
हरि हरि सिब सिब तावे जाइह जिब जावे न उपजु सिनेह।।3।।
[अपन अहित लेख कहइते परतेख न पाइअ पेमक ओर।
चान्द हरिन बह राहुकबल सह पेम पराभव थोर।।4।।
चरन बेढल फनि हित मानह धनि नेपुर न करत रोर।
सुमुखि पुछओ तोहि सरुप कहसि मोहि पेमक कत एक ओर[4]।।5।
भनइ विद्यापति सुनह सचेतनि गमन न करह विलम्बे।
राजा सिबसिंह रुपनराएन सकल कला अबलम्बे]।।6।।

1. भुअङ्गम। 2. से जानि जे। 3. सबे अगिरु। 4. सिनेह कत दुर ओर। [..]राग.सँ।

अभिसारमे चलति राधा विघ्नबाधाक कथा सखीसँ सुनबैत छथि — (1) राति काजर बोकरैछ। भयंकर साप बुलैछ। ठनका खसैछ। गर्जनसँ मन त्रस्त होइछ। मेघ जोरसँ बरिसैछ। अभिसार संकटमे पड़ल। (2) हे सखी, बचन छोड़ैत हमरा लाज होइछ। जे होएत से बरु होअओ, हम सभ सहि लेब। आइ साहसिक काज ठानल। (3) बाट नहि सुझैछ तें घूमि-घूमि ठामहि (पूर्वस्थानहि पर) आबि जाइत छी। केवल स्पर्शसँ जगह चिन्हैत छी। दिशा आ' मार्गमे सन्देह होअए लगैछ। हाए, नीक होएत जे प्राण ताबते काल रहए जाबत प्रेम नहि भेल रहए। (4) आगाँ सखी कहैत छथिन — प्रेमक अन्त पाएब कठिन। चान हरिणकें कोर कएने अछि आ'

राहुक ग्रास सहैत अछि। प्रेममे कतबो पराभव हो, थोड़े बूझक चाही। (5) साप पाएरमे लेपटाए गेल तकरा तों नीक बुझह, नूपुर ध्वनि नहि करतहु। हे सुन्दरी, तोरा पुछैत छिअहु, सत्य सत्य कहह, प्रेमक कतहु अन्त छैक? (6) विद्यापति कहैत छथि, हे बुधिआरि, सुनह; गमनमे विलम्ब नहि करह। राजा शिवसिंह रुपनारायण सकल कलाक आश्रय छथि।

[312]

सुरुज सिन्दुर बिन्दु चान्दने लिहिए इन्दु कहिए गेलि तिथि[1] तिलके।
बिपरित अभिसार गलए अमित्रधार[2] अङ्कुस कएलक[3] अलके।।1।।
माधब भेटलि पसाहिन बेरी।
आदर हरलक पुछिओ न पुछलक चतुर सखीजन मेरी।।2।।
कैतकि दल लए चम्पक फुल[4] दए कबरी थोएलक आनी।
चान्दने कुङ्कुमे अङ्गरुचि कएलक समय निबेद सआनी।।3।.
[भनइ विद्यापति सुनु बर जौबति कुहू निकट परमाने।
राजा सिबसिंह रुपनराएन लखिमा देबि रमाने]।।4।।

1. तिथि कहि गेलि। 2. अमित्र गलए धार। 3. कएल। 4. दल। [ ] तरौ. राग.सँ।

सखी कृष्णकें कहैत छथि जे राधा अपन पसाहिनसँ मिलनक समय आ' स्थान सूचित कएल अछि — (1) सिन्दूरक बिन्दुसँ सूर्य आ' चाननक ठोपसँ चान लिखि मिलनक तिथि अमावास्या जनओलक। विपरीत अभिसारमे (नायिकाक लग नायकक आगमनमे) अमृतक धार बहैछ, तें लट केर अंकुश बनओलक (आङुरसँ बजएबाक संकेत)। (2) हे कान्ह, राधा पसाहिन क़रैत काल भेटलि। ओ चतुर सखी सभक बीचमे छलि तें ने आदर कएलक, ने किछु पुछलक (से कएने सखी सभ गुप्त अभिसार बूझि जइतैक)। (3) संकेत द्वारा मिलनक समय प्रकट करबामे राधा चतुर केसमे केओलाक आ' चम्पाक फूल लगओलक (केतकी आ'

चम्पाक गाछ तर अन्धकारमे मिलन)। चानन आ' कुंकुम अंगमे औंसलक (पहिल साँझक समय)। (4) विद्यापति कहैत छथि। हे सुन्दरी, सुनह। अमावास्या (सूर्य = कृष्ण आ' चन्द्र = राधा, दूनूक मिलन) निकट अछि। लखिमा........।

[313]

प्रथमहि कएलह हृदयक हार। बोललह तञे मोर जिबन अधार।।1।।
हठे बिघटओलह ऐसनओ पेम[1]। जइसे[2] चतुरिआ हाथक हेम।।2।।
ए हरि तोह सञो नेह बढाए[3]। जत अनुसए तत कहहि न जाए।।3।।
दुरजनि दूती तें ई भेल। गिरिसम गौरब सेओ दुर गेल।।4।।
[अबे कि कहब हरि दूखन मोर। चिन्हल चटाइल बोलि परोर]।।5।।

1. ऐसनेओ हठे बिघटओलह पेम। 2. जइसन। 3. जे धरहरि सञो सिनेह बढाए। [ ] नगु.सँ।

राधा कृष्णकें उपराग दैत छथिन्ह – (1) पहिने तों हमरा हृदयक हार बनओलह आ' कहलह, 'तों हमर जीवनक आधार थिकह।' (2) एहनो प्रेम तों सहसा विलुप्त कए देलह, जेना जादूगर हाथक सोन गायब करैत अछि। (3) हे कान्ह, तोरासँ प्रेम बढ़ओने कतेक परिताप होइत छैक से कहब कठिन। (4) दूती दुर्जन छलि; ई तकरे परिणाम भेल। पर्वत-सन जे गौरव छल, सेहो समाप्त भए गेल। (5) हे कान्ह, आब तोरा की कहिअहु। हमर अपने दोख थिक। हम चठैलकें पड़ोर बूझि लेलहुँ।

[314]

रिपु पञ्चसर जनि अबसर मन गुनि कुसुम[1] सरासन साजे।
हेरि सून पथ बिघटु[2] मनोरथ के जान कि होएत आजे।।1।।
नीफल भेलि जुगूती।
हरि हरि हरि राति सेख धरि पलटलि नहि ओ दूती[3]।।2।।
साजु अभिसारा पडु अन्धकारा उगि जनु जा' ससि भोरा[4]।
आरति बेरा जञो हो मेरा लाखहु जुग होअ[5] थोरा।।3।।

1. मोहि। 2. घटी। 3. नहि दूती। 4. जा बोरा। 5. लो सुअ।

राधा विलाप करैत छथि — (1) हमर शत्रु कामदेव जेना मनमे उपयुक्त अवसर सोचि फूलक बाण सजाए लेल (प्रहार कए रहल छथि)। कान्हक बाट सून देखि-देखि निराश होइत छी। जानि नहि आइ मिलन होएत कि नहि (2) युक्ति (दूती पठाएब) विफल भए गेल। हाए, राति बीति गेल तैओ हमर दूती (कोनो संवाद लए) घूरलि नहि। (3) अन्धकार छल तें अभिसारक तैआरी कएल। आब कहुँ अजानी चान उगि ने जाए। आतुरताक क्षणमे जें मिलन होइछ तें लाखो युग थोड़ बुझाइछ।

[315]

झाँखि झाँखि खिन न करह[1] तनू। भमर न रह मालति बिनू।।1।।
ताहि तोहि रति[2] बाढ़ति पुनु। टूटल बचन बोलह जनु।।2।।
एहे राधे धैरज धरु। बालभुँ आओत[3] उछाह करु।।3।।
पिसुन बचने बाढ़ल[4] रोस। बारि[5] न पारिअ दिबस दोस।।4।।
दुजन[6] बचने टुट न नेहा। हाथे नहि[7] मेट पखान रेहा।।5।।

1. न खिन कर। 2. रिति। 3. अओताह। 4. बाढ़त। 5. बारए। 6. सुजन। 7. न।

सखी राधाकें सान्त्वना दैत छथि – (1) हे सखी, झाँखि-झाँखि देह क्षीण नहि करह। भ्रमर मालतीक बिना नहि रहि सकैत अछि। (2) फेर तोरा दूनूक बीच प्रीति बढ़तहु। टूटल (निराशाव्यंजक) वचन नहि बाजह। (3) हे राधा, धैर्य धरह। पिआ अओथुन, मन प्रसन्न करह। (4) दुर्जनक चुगिलपनीसँ ओ जे तमसाए गेल तकरा दिनक दोख बूझह। एकरा के रोकि सकैत अछि। (5) दुर्जनक बात पर प्रेम टूटि नहि सकैत अछि। हाथ घसने पाथर परक रेखा मेटाए नहि सकैत अछि।

[316]

जे छल से नहि रहले भाव। बोलल बोल पलटि नहि आव।।1।।
रोस छडाए बढाओल हास। रूसल बओसब बड परेआस।।2।।
कओने परि से हरि बहुरत माइ हे कओन परि।।3।।
नारि सोभाव कएल हमे मान। पुरुख बिचेखन के नहि जान।।4।।
आदरे मोरा हानि पए भेल। बचनक दोसे पेम टुटि गेल।।5।।
अनुनए मोरि बुझाउबि रोए। बचनक कौसले की नहि होए।।6।।
नागर-नागरि होएत मेलि। पञ्चबान बले बहुत केलि।।7।।

कृष्णसँ उपेक्षिता राधा सखीसँ कहैत छथि – (1) पहिने जे भाव (तामस) छल से आब नहि रहल। मुहसँ जे कटुवचन बहराए गेल से आब घुरि नहि आबि सकैत अछि। (2) हम रोष (तामस) कें त्यागि मुहपर हँसी अनलहुँ जे कृष्ण प्रसन्न होथि। किन्तु रूसलकें बौंसब बड़ प्रयास-साध्य। (3) हाए, कृष्ण आब कोना घुरताह? (4) मान करब नारीक स्वभाव थिक, तें हम मान कएल। से अभिज्ञ पुरुषकें अवश्य जनबाक चाही। (5) हम आदरभाव देखाओल, मुदा ताहिसँ लाभ नहि, हानिए भेल। मुहसँ जे वचन बहराए गेल तकरे कारणें प्रेम टूटि गेल। (6) हे सखी, हमर ई निवेदन कृष्णकें कलपि-कलपि बुझाबह गए। बजबाक कौशलसँ कोन काज नहि सिद्ध भए सकैत अछि। (7) (सखी आश्वासन दैत छथिन) धैर्य धरह, तों नागरि छह, ओ नागर छथि, तखन दूनूमे मेल किएक नहि होएत। कामदेवक कृपासँ रंगरभस पुनः घुरि आओत।

[317]

नहि किछु पुछल[1] रहलि धनि बैसलि[2] लग सओ गेलि बाहरे[3]।
परम बिरुहि भए नहि नहि नहि कए गेलि दुर कए मोर करे।।1।।
माधव कह ककै रूसलि रमनी।
कतने जतने पेअसि परबोधलि नहि[4] भेलि निअरेओ आनी।।2।।

गोर कलेबर तसु मुख ससधर रोसे अरुन रुचि भेला।
रुप दरसन छले जनि नब रतोपले कामे कनक बेलि देला।।3।।
नयन नीर धारे जनि टूटल हारे कुच गिरि ऊपर चढ़ला[5]।
कनक कलस करु मदने अमित्र भरु अधिक कि उभरि पड़ला।।4।।

1. पुछलि। 2. बैसि। 3. आइलि बहारे। 4. न। 5. कुच सिलि हपहरि पलला।

सखी कृष्णकें पूछैत छथि — (1) हम जखन रूसलि राधाक लग गेलहुँ तखन ओ किछुओ नहि पुछलक; चूपे बैसलि छलि। हमरा लगसँ बहार चलि गेलि। बहुत रोसाइलि 'नहि-नहि' करैत हाथ झमारि दूर भए गेलि। (2) हे कान्ह, कहह, राधा किएक रूसलि? हम तोहर प्रेयसी राधाकें कतेक प्रयत्नें बौंसल, किन्तु ओकरा तोहर लग आनल नहि भेल। (3) ओकर गोर देह आ' चान-सन मुह क्रोधसँ लाल भए गेल छल, मानू कामदेव रूप देखबाक हेतु कनक-लतामे लाल कमल फुलाए देने होथि। (4) आँखिक नोरक प्रवाहमे हार टूटि स्तन पर खसलैक। जेना कामदेव सोनाक घैलमे अमृत भरलनि, जे नहि अँटलैक से (हार रूपमे) ढरकि गेल।

[318]

पहिलहि चोरिए[1] आएल पास। आइगहि आङ्ग नुकाव तरास।।1।।
बाहर भेलें देखिअ देह। जैसन सीनी चान्दक रेह।।2।।
साजनि कि कहब पुरुखक काज[2]। कौसल करइतें तन्हि नहि लाज।।3।।
एहि तह अधिक पाप[3] थिक नारि। जे न गनए पर पुरुखक गारि।।4।।
खन एक सङ्ग रङ्ग[4] सब भान्ति। से से करत जकरि जे जाति।।5।।
भनइ विद्यापति न कर बिराम। अवसर पाए पुरत तुअ काम।।6।।

1. चोरि। 2. पुरुख काज। 3. पाप अधिक। 4. रङ्ग सङ्ग।

राधा कृष्णक चालिक निन्दा सखीकें सुनबैत छथि — (1) हे सखी, कान्ह पहिने डरसँ अपन अंगकें अपन अंगहिमे नुकबैत चोराएकें (चोर जकाँ) हमरा लग आएल तँ (2) बाहर भेला पर ओकर देह देखाएल जेना अमावास्याक चान (अति खीन) हो। (3) हे सखी, पुरुखक करनी तोरा की कहिअहु। ओकरा चलाकी करबामे लाज नहि होइत छैक। (4) एहन पुरुखहुसँ अधिक पापिनी ओ नारी थिक जे पर-पुरुषक गारि (कुकर्म) सहि लैत अछि। (5) एके छनक मिलनमे सभ प्रकारक रंग-रभस कए लेतहु। जकर जे जाति से तदनुरूप काज करबे करत। (6) विद्यापति कहैत छथि, हे राधा, एहि कारणें कृष्णक प्रेमसँ विरत नहि होअह। अवसर अएला पर तोहर मनोरथ पूर होएतहु (कृष्ण चोर जकाँ नहि, पहु जकाँ अओथुन)।

[319]

साँझक बेरि उगल नब ससधर भरमे बिदित सब तहू।
कुण्डल चक्र तरासे लुकाएल दुर भेल हेरथि राहू।।1।।
जनु बैससि रे बदना हाथ चढ़ाई।
तुअ मुख चड़िगम अधिक चपल भेल कति खन धरब लुकाई।।2।।
रातोपल जनि कमल बैसाओल नील नलिन जुग[1] तहू।
तिलक कुसुम तहु माझ देखि कहु भमर आबथि लहु लहू।।3।।
पानि पल्लव तल[2] अधर बिम्बफल[3] दसन दालिम्ब बिज तोरे।
कीर दूर भेल पास न आबए भउहि धनुख के भोरे।।4।।

1. दल। 2. गत। 3. बिम्बरत।

कृष्ण राधाकें प्रसन्न करबाक हेतु हुनक रूपक प्रशंसा करैत छथि — (1) तोहर मुह देखि साँझ खन सभ भ्रमवश बूझि गेल जे आइ नब चान उगल अछि। राहु तोहर कुण्डलरूपी चक्रक डरे दूरहिसँ (लुब्ध दृष्टिएँ) ताकि रहल अछि। (2) हे सुन्दरी, हाथ पर मुह राखि बैसह नहि। तोहर मुखक दीप्ति बहुत छिटकि रहल छहु। एकरा तों कतेक काल नुकओने रहबह।

(3) (तोहर हाथ पर राखल मुख लगैत अछि जेना) मलकोकाक फूल (हाथ) पर कमल (मुह) बैसाओल हो, ताहिपर दू गोट नील कमल (आँखि) आ' कमलक बीचमे तिलक फूल (नाक)। से देखिकें भमर (भउँह) दौड़ि आएल हो। (4) तोहर हाथरूपी पल्लव लग अधररूपी बिम्बफल (तिलकोरक फड़) आ' दाँतरूपी दाड़िमक दाना देखितहुँ सूगा दूरे रहैछ, लग नहि अबैछ, किएक तँ ओकरा तोहर भउँहमे धनुषक भ्रान्ति होइत छैक।

[320]

जकर नयन जतहि लागल ततहि सिथिल भेला।
तकर रुप सरुप निरूपए काहु देखि नहि भेला।।1।।
कमलबदनि राही।
जगत तकर पून सराहिअ सुन्दरि मिलति जाही।।2।।
पीन पओधर चिबुक चुम्बए किए पटतर देबा[1]।
बदन चान्द तरासे नुकाएल पलटि हेर चकेबा[2]।।

1. देला। 2. चकोरा।

राधाक रुप पर मुग्ध कृष्ण कहैत छथि — (1) राधाक देह पर जकर नजरि जाही अंग पर पड़लैक से नजरि ताही अंग पर अटकि गेल। अतः राधाक सम्पूर्ण स्वरूपक यथार्थ झलक पएबाक हेतु ओकरा केओ देखि नहि सकल। (2) अहा, की अद्भुत अछि कमलमुखी राधा। संसारमे तकर पुण्य प्रशंसनीय थिक जकरा ई सुन्दरी भेटतैक। (3) एकर पुष्ट-पुष्ट स्तन चिबुक (थुथून) कें चूमैत छैक। एकर उपमा कथीसँ देल जाए? जेना मुखरूपी चानक डरें नुकाएल (स्तनरूपी) चकेबा घूरि-घूरि (चान दिस) तकैत हो।

[321]

प्रथम समागम के नहि जान। सम कए तोलल हेम परान।।1।।
कि पुछह आगे सखि कि कहबों आन। बुझए न पारल हरिक गेआन।।2।।
बिकनए आनल रतन अमोल। चिन्हि कहु बनिके घटाओल मोल।।3।।
मधथहु न बुझल तसु' परिपाटि। बाउल बनिक घरहि घर साटि।।4।।
सुलभ भेलेहुँ हरि[2] न लहए हार। काच तुला दए गहए गमार।।5।।
गुरुतर बासर रजनी[3] छोटि। पासङ्ग दूति बुझए[4] नहि खोटि।।6।।
कसल कसौटी भेल[5] मलान। बिनु हुतास भेल बाहर[6] बान।।7।।
भनइ विद्यापति थिर रहु बानि। लाभ न घटए मुलहु होअ हानि।।8।।

1. तुअ। 2. भेल पहु। 3. रजनी बासर। 4. विषए। 5. न भेल। 6. बारह।

राधा सखीकें कृष्णक अरसिकता सुनबैत छथि – (1) हे सखी, प्रथम मिलन केहन होइछ से के नहि जनैछ। ताहि समय हम प्रेमकें प्राणक तुल्य बूझल। (2) हे सखी, की पुछैत छह, आओर बात की कहबहु। बूझि नहि सकलहुँ जे कान्हकें केहन बोध छैक। (3) हम अमूल्य रत्न बेचए अनलहुँ, किन्तु बुड़िबक बनिआ चिन्हिओ कें ओहि रत्नक मूल्य घटाए देलक। (4) दलालो (दूतिओ) ओकर चालि नहि बूझि पओलक। बाउर बनिआ, घर-घर सट्टा। (5) सुलभ (सस्त) भेलहु पर कान्ह हार नहि लेलक। गमार निकती पर भरिगर पाबि काच तें लए लेत, किन्तु हलुक जानि रत्न नहि लेत। (6) दिन पैघ होइत अछि आ' राति छोट (?)। दूती नहि जनैत अछि जे पासंग आ' खोट (मालक तौल आ' शुद्धता) की थिक। (7) हम तें कसौटी पर कसि देखि लेल, ओ मलान भए गेल। बिनु आगिमे देनहु ओकर वर्ण (कसौटी पर) प्रकट भए गेलैक (कान्ह गमार सिद्ध भेल)। (8) विद्यापति कहैत छथि, हे राधा, अपन बानि पर स्थिर रहह। एहन कोन सओदा जाहिमे लाभ नहि हो, प्रत्युत मूलधनहुमे घाटा होअए?

[322]

पाहुन आएल भवानी। बाघ छाल बइसक दिअ आनी।।1।।
बसह चढ़ल बुढ आबे। धुथुर गजाए भोजन हुनि भाबे।।2।।
भसम बिलेपित आङ्गे। जटा बसथि सिर सुरसरि गाङ्गे।।3।।
हाड़माल फनिमाल सोभे। डँबरु बजाब हर जुबतिक लोभे।।4।।
विद्यापति कवि भाने। ओ नहि बुढ़बा जगत किसाने।।5।।

कवि गौरीकें कहैत छथि – (1) हे भवानी, अहाँक ओतए एक टा पाहुन आएल छथि। झट दए बाघछाल आनि हिनका बैसक दिऔन। (2) ई बूढ़ा अतिथि बसहा चढ़ि आएल छथि। हिनका धुथुर आ' भाङक भोजन रुचैत छनि। (3) देहमे छाउर लेपने छथि। माथक जटा पर गंगा नदी विराजमान छथिन। (4) ई हाड़क आ' सापक हारसँ सुशोभित छथि आ' युवतीक लोभें (अहाँकें आकृष्ट करबाक हेतु) डमरू बजबैत छथि। (5) कवि विद्यापति कहैत छथि, ओ बुढ़बा नहि, संसारक उत्पादक (स्रष्टा) थिकाह।

1. धारे।

[323]

साँझहि निञ मकरन्द पिआए। कमलिनि भमरा धएल नुकाए।।1।।
भमि भमि भमरी बालँभु खोज। मधु पिबि भमरा सुतल सरोज।।2।।
केओ न कहए मझु बालँभु बात। रयनि समापलि भेल[1] परात।।3।।
लता विलासिनि खण्डित भेलि। जामिनि सगरिओ जागरे[2] गेलि।।4।।
न फुल कुसेसय नहि[3] उग सूरे। नेह[4] न जाए जीब सञो दूरे।।5।।
[भनइ विद्यापति सुन तञे भमरी। बालँभु अछ तोर अपनेहि नगरी]।।6।।

1. भए गेल। 2. सगरि उजागरि। 3. न। 4. सिनेह। [ ] नगु.सँ।

भमरीक व्याजें राधा अपन विरह व्यक्त करैत छथि — (1) साँझहि खन कमलिनी भमराकें अपन मकरन्द पिआए अपन कोरमे नुकाए रखलक। (2) भमरी घूमि-घूमि अपन पिआ भमराक खोज करैत रहलि

आ' भमरा मधु पिबि कमलिनीक कोरमे सूतल रहल। (3) (भमरी विलाप करैत अछि) राति बीति गेल। परात भए गेल। (4) लतारूपी नागरी प्रतीक्षा कए निराश (खण्डिता) भए गेलि। सम्पूर्ण राति जागरणहिमे बीति गेल। (5) हाए, आबहु ने कमल फुलाइत अछि आ' ने सूर्य उगैत छथि (जे पिआ परनारीक भुजपाशसँ मुक्त होइक)। प्रेम प्राणसँ दूर नहि जाए सकैत अछि (जा' प्राण रहत ता' प्रेम रहबे करत, भनहि मिलन नहि हो)। (6) विद्यापति कहैत छथि, हे भमरी, सुनह। तोहर पिआ तोहर अपने नगरमे छहु (खोजह, भेटि जएतहु)।

[324]

आजे अकामिक आएल भेखधारी। भीखि भुगुति लए चललि कुमारी।।1।।
भिखिआ न लेइ बढ़ाबए रिसी। बदन निहारए बिहुँसि बिहुँसी[1]।।2।।
ए उमा सखि सङ्गे निकेहि अछली। ओहि जोगिआ देखि मुरुछि पळली।।3।।
दुर कर गुनपन अरे भेखधारी। कों डिठिअओलए राजकुमारी।।4।।
केओ बोल देखए देहे जनु काहू। केओ बोल ओझा आनए चाहू[2]।।5।।
केओ बोल जोगिआहि देहे दहु आनी। हुलिकिओ भए बरु जिबओ भवानी।।6।।
भनइ विद्यापति अभिमत सेवा। चन्दलदेवि पति बैजल देवा।।7।।

1. बिहुँसी हँसी। 2. आनि (न) चाहू।

कवि शिवलीलाक वर्णन करैत छथि — (1) आइ अकस्मात् एकटा भेखधारी (बहुरुपिआ भिखारि) आएल। कुमारी उमा ओकरा लेल भीख लए चललीह। (2) ओ भीख नहि लए क्रोध बढबए लागल। बिहुँसि-बिहुँसि उमाक मुह निहारए लागल। (अरे, ई की भए गेल) (3) उमा तँ सखी सभक सङ्ग केहन दिब छलि। कोना ओहि जोगिआकें देखि मुरुछि पड़लि। (केओ सखी कहए), (4) 'अरे बहुरुपिआ, तों अपन गुनपन (जादूटोना) हटाए ले। हमर राजकुमारीकें किएक नजरि लगओलें?' (5) केओ कहए, 'एहि रूपवती कन्याकें ककरहु देखए नहि दिऔक (दुष्ट नजरिसँ बचाएकें

रखिऔक)। (6) केओ कहए, 'ओझागुनीकें बजएबाक चाही।' (7) केओ कहए, 'कुमारीकें आनि एहि जोगिअहिकें दए दिऔक। बरु हुनको (गृहिणी) भए भवानी जीबओ।' विद्यापति कहैत छथि जे भवानी दए देबे एहि जोगिआक समुचित सेवा होएत। (कविक आश्रयदाता थिकाह) चन्दल देवीक पति बैजल देव।

[325]

प्रथमहि सङ्कर सासुर गेला। बिनु परिचए उपहास पळला।।1।।
पुछिओ न पुछलक बैसलाह जहाँ। निरधन आदर के कर कहाँ।।2।।
हिमगिरि मण्डप कौतुकरसी। हेरि हसल सबे बुढ तपसी।।3।।
से सुनि गौरि रहलि सिर नाए। के कहत माएकें तोहर जमाए।।4।।
साप सरीर सोह काँख बोकाने। प्रकृतिक औखध केदहु जाने।।5।।
भनइ विद्यापति सहज कहू। आडम्बरे आदर हो सबतहू।।6।।

कवि महादेवक लीलाक वर्णन करैत छथि — (1) पहिले-पहिल महादेव सासुर गेलाह। केओ चिन्हलकनि नहि, तें उपहासमे पड़ि गेलाह। (2) जहाँ बैसलाह, केओ किछु पुछबो नहि कएलक। निर्धनक आदर कहाँ केओ करैत अछि। (3) हिमालयक मण्डप पर जतेक कौतुकरसिक लोक छल, से सभ एहि बूढ तापसकें देखि-देखि हँसी-ठट्ठा करए लागल। (4) से सुनि गौरी लाजें माथ झुकाए लेलनि आ' मनहि मन कहलनि, हमर माएकें के कहतनि जे तोहर जमाए आएल छथुन? (5) देहमे साप छनि आ' काँख तर भाङक झोरा। प्रकृतिक औषध केओ नहि जनैत अछि (जकर जे चालि छैक से छूटि नहि सकैत अछि)। (6) विद्यापति कहैत छथि, ई बात सहज स्वाभाविक थिक जे सर्वत्र आडम्बरहिसँ आदर होइत छैक।

[326]

केहु देखल नगना, भिखिआ मङ्गइते बुल आङ्गने आङ्गना।।1।।
नगन उमत केहु देखल बिधाता। तैलोक नाह अभए वर दाता।।2।।
बिभूति भूखन कर बीख अहारे। कण्ठ बासुकि सिर सुरसरि धारे।।3।।
कैलि भूत सङ्गे रहए मसाने। तैलोक इसर हर के नहि जाने।।4।।

पार्वती शिवक अन्वेषण करैत छथि — (1) केओ एकटा नगना (नग्न व्यक्ति)कें कतहु देखलहुँ अछि? ओ अडने-अडने भीख मगैत फिरैत छथि। (2) केओ नग्न आ' उन्मत्त विधाताकें देखल अछि? ओ त्रिलोकक स्वामी आओर अभय वर देनिहार थिकाह। (3) हुनक भूषण छनि भस्म आ' आहार छनि विष। कण्ठमे वासुकी नाग आ' सिर पर गंगाक धार छनि। (4) भूत-प्रेतक संग क्रीडा करैत श्मशानमे रहैत छथि। तीनू लोकक स्वामी हरकें के नहि जनैत अछि।

टि.— ई गीत राप. मे नहि अछि। सुभ. (गीत सं. 255) देखू।

[327]

मोर बउरा देखल केहु कतहु जाइते[1]। बसह चढ़ल बिस भाङ्ग खाइते[2]।।1।।
आँखि निळर मुह चुअइ लार। पथक चलल बउरा बिसम्भार।।2।।
बाट जाइते केहु हलब ठेलि। अब ओहि बउरा[3] बिनु मञे अकेलि।।3।।
हाथ डँबरु कर लौअ साँख[4]। जोग जुगुति गिम गरल भाख[5]।।4।।
[अरगज चढ़ाए आठहु अङ्ग। सिर सुरसरि जटा बोलइ गाङ्ग]।।5।।

1. जात। 2. मान खात। 3. बौरे। 4. संख। 5. भरल माथ। [ ] पाठ गडबड।

गौरी महादेवक चिन्ता करैत छथि — (1) केओ हमर बउरा (पागल पति) कें कतहु जाइत देखिलहुँ? ओ बसहा पर चढ़ल बिख आ' भाङ खाए कतहु बौआइत छथि। (2) आँखि निड़ारल छनि। मुहसँ लेर चुवैत छनि। (3) बाटमे जाइत हमर बउराह विश्वम्भरकें कतहु देखलहुँ? (4) बाट चलैत

हुनका केओ ठेलि देने होएतनि। आब तँ ओहि बौराहाक बिना हम एकसरि भए गेलहुँ। (5) हुनक एक हाथमे डमरू आ' दोसर हाथमे लौका (कमण्डलु) छनि। ओ आठो पहर अरगज चढ़ओने रहैत छथि। सिर पर जटाजूटमे गंगा विराजमान छथिन।

[328]

कुबलय कुमुदिनि चौदिस फूल। कए रव कोकिल दह दिस बूल।।
खने कर साद खनहि कर खेद। बैसल बिखधर पढ जनि बेद।।
आएल रे वसन्त रितुराज। भमर बिकल' चलु भमरि समाज।।
उरि उरि परेवासरे गोपि मेलि[1]। कान्ह पैसल बन जनि कर केलि।।
गोपी हसलि अपन मुख हेरि। चान्द पळाएल हरिनक सेरि।।

1. विरहे।

कवि वसन्तक वर्णन करैत छथि — (1) चारु दिस कमल आ' कुमुद फुलाएल अछि। कू-कू शब्द कए-कए कोकिल एम्हर-ओम्हर बुलैत अछि। (2) कखनहु शब्द करैत अछि आ' कखनहु खेद (?), जेना बैसल बिखधर वेदपाठ करैत हो। (3) ऋतुराज वसन्त आबि गेल। व्याकुल भ्रमर भ्रमरीसँ मिलए चलल। ....(?)। कृष्ण वनमे पैसल जेना केलि करैत होथि। (4) गोपी अपन मुख निहारि हँसि उठलि। चान हरिणक आश्रयमे पड़ाएल।

टि. – आशय स्पष्ट नहि।

[329]

औतएक तन्त उदन्त न जानिअ एतए अनल बम चन्दा।
सौरभ सार भार अरुझाएल दुइ पङ्कज मिलु मन्दा।।1।।
कोकिल, कात्रि सन्ताबह काहू।
ताबे तोहें[1] जनु पञ्चम गाबह जाबे दिगन्तर नाहू।।2।।
मदनक तन्त अन्त धरि पढ़ि कहु[2] बुझितहु होसि अज्ञानी।

आजुक कालि कालि नहि बुझसि जीबन बन्ध छुट पानी।।3।।
तोहें[1] अनुरागी मञे[2] अनुरागिनि दुहु दिस बाढ़ु दुरन्ता।
मञे बरु दसमि दसा गए अङ्गिरिअ कुसलें बसथु[5] मोर कन्ता।।4।।
पाँड़रि परिमल आसा पूरओं[6] मधुकर गाबओं[7] गीते।

1. ताओ धरि। 2. पलटए। 3. पिआ। 4. तञे। 5. आबथु। 6. पूरथु। 7. गाबथु।

विरहिणी राधा विलाप करैत छथि —(1) ओहि ठामक हाल-चाल जानि नहि, एतए तँ चान आगि बरसाए रहल अछि।................(?)। (2) हे कोकिल, तों ककरहु किएक सतबैत छह? तों ता धरि पंचम स्वरमे कुहकह नहि, जाधरि कन्त परदेसमे छथि। (3) (राधा कृष्णसँ कहैत छथि)—तों मदनक तन्त्र (कामकला) अन्त धरि (पूर्णतः) पढ़ने छह, तैओ अज्ञानी बनैत छह। आजुक बाद काल्हि आ' काल्हिक बाद पुनः काल्हि की थिकैक (काल कोना बीतल जाइत अछि) से तों नहि बुझैत छह। यौवन रूपी बान्हसँ नित्य पानि बहैत रहैत अछि। (4) तों अनुरागी छह। हमहूँ अनुरागिनी छी, दूनू दिस संकट बढ़ल जाए रहल अछि। हे भगवान्, हम तँ विरहक दशम दशा (मृत्यु)कें अंगीकार कए लेल, हमर कन्त कतहु रहथु, कुशल रहथु। (5) पाँड़रि फूलक सौरभ दिग्दिगन्तमे भरओ; भ्रमर गीत गाबओ; चान आ' राति दूनू अधिकाधिक सोहाओन होअओ, किन्तु हमरा लेखें तँ सभ विपरीते (सतओनिहारे)।

[330]

कतन झोरी सिन्दूरे भरलि भसमे भरु बोकान।
बसह केसरि मजूर मुसा चारुहु पळु पलान।।1।।
डिमिकि डिमिकि डमरु बाजए इसर खेलए फागु।
भसमे सिन्दूरे दुअओ खेड़ा एकहि दिवसे लागु।।2।।
सञ्झाञे सिन्दूरे भरु सरुसति लाछीहि भरलि गौरी।

इसरे भसमे भरु नराएन पिअर[1] वसन बोरी।।3।।
एके तञो नाइगट अओके उमत इसर धुथुर खाए।
अओके उमति खेडि खेलाबए किछु न बोलल[2] जाए।।
गरुड़वाहन देव नराएन बसह चढ़ु महेस।
कवि[3] विद्यापति कौतुके गाओल सङ्गहि फिरथि देस।।

1. पीत। 2. बोलए। 3. भने।

कवि होरीक वर्णन करैत छथि — (1) कतेको झोरी सिन्दूरसँ भरल अछि तँ कतेको बोरा भस्मसँ। बसहा, सिंह, मयूर आ' मूस चारू पर पलान (जिन) पड़ल। (2) डिमिक डिमिक डमरू बजैत अछि। महादेव फागु (होरी) खेलाइत छथि। भस्म-क्रीड़ा (जे पडिब दिन होइत अछि) आओर सिन्दूर-क्रीड़ा (जे पूर्णिमा दिन होइछ) दूनू एकहि दिन चलल। (3) भगवती सन्ध्या सरस्वतीकें सिन्दूरसँ भरि देलनि तँ गौरी लक्ष्मीकें। महादेव नारायणकें भस्मसँ तोपि देल आ' पीअर वस्त्रकें भस्ममे बोरि देल। (4) एक नाङट, ताहि पर धुथुर खाए मातल, आ' ताहू पर उन्मति (मातलि) गौरी खेल खेलबैत छथिन—तखन कहले की जाए। (5) नारायण गरुड़ पर चढ़ल छथि तँ महादेव बसहा पर। सभ एकत्र भए देश भरि घूमि रहल छथि। विद्यापति एहि कौतुकक (खेल-तमासाक) वर्णन करैत छथि।

[331]

तरुअर बल्ली[1] धर डारे जाँति। सखि गाढ़ आलिङ्गन तेहि भाँति।।1।।
मञे नीन्दे निन्दारुधि करञो काह। सगरि रयनि कान्ह केलि चाह।।2।।
मालति रस बिलसए भमर जान। तेहि भाँति कान्ह कर अधर पान।।3।।
कानन फुलि गेल कुन्द फूल। मधुकर मालति मधु पीबि[2] जूळ।।4।।
परिठबइ सरस कवि कण्ठहार। मधुसूदन राधा बन-विहार।।5।।

1. बलि। 2. मालति मधु मधुकर पए जूल।

राधा कृष्णक संग वन-विहारक वर्णन करैत छथि — (1) जेना गाछ लताकें अपन डारिमे जाँतिकें रखने रहैत अछि, हे सखी, कृष्ण तहिना गाढ़ आलिंगन कएलनि। (2) हम निद्रासँ मातलि (औंघाइलि) रही, करितहुँ की। कृष्ण राति भरि केलि करए चाहैत छथि। (3) जेना भ्रमर मालतीक रस विलासपूर्वक चूसए जनैत अछि तहिना कृष्ण हमर अधर-पान कएल। (4) वनमे कुन्द फूल फुलाए गेल। भ्रमर मालतीक रस पीबि जुड़ाएल। (5) सारस कवि कण्ठहार राधाकृष्णक वन-विहारक वर्णन कएल।

[332]

जाहि देस कोकिल नहि कूजए[1] कुसुमित नहि कानने।
छओ रितु मास भेद नहि बूझए[2] सहजहि अबल मदने।।1।।
सखि हे सेहे देस पिआ गेल मोरा
समति बानी जतए न जानिअ सुनिअ पेम बड थोळा।।2।।
हलिओ कहिनि जतए नहि बूझए कि करत इङ्गित[3] काजे।
कोन परि ततए रतल अछ बालभ गुनि भए[4] निगुन समाजे।।3।।
की अपना कें लघु कए मानब[5] की कहु तनिक बडाई।
हमे गरुबि गमारि सबहु तह की रतिबिरह कन्ही।।4।।

1. बिक मधुकर नहि गूजर। 2. कहिनी जतए न। 3. करति हिंगत। 4. निभए। 5. थिक कए मानल।

राधा सखीकें विरहव्यथा सुनबैत छथि – जाहि देशमे कोकिल पंचम स्वरमे गबैत नहि अछि, वन कुसुमित नहि होइत अछि, छओ ऋतु आ बारह मासक भेद लोक नहि जनैत अछि आ स्वभावतः मदन दुर्बल होइत छथि, हे सखी, हमर पिआ तेहने देश चल गेलाह। जाहि देशमे रसमय वाणी (प्रीतिवचन) नहि जानल जाइत अछि प्रेमक नाम बड़ थोड़ सुनल जाइत अछि, जतए रसगर कथा कहलहु पर केओ नहि बुझैत अछि, इंगित तँ सहजहि निरर्थक, तेहन देशमे हे सखी, गुणवान् होइतहु गुणहीन

समाजमे रति-रमि गेलाह। (4) की हम अपनाकें छोट (हीन, उपेक्षणीय) बूझि लिअ कि आकि ओएह हमरा लेल बहुत पैघ छथि? की हम गमारि छी कि कृष्णे अनुरागहीन भए गेलाह?

(3) तरौनी तालपत्रक गीत

[333]

पीन पयोधर दूबर गता। मेरु उपजल कनकलता।।1।।
ए कान्ह ए कन्ह तोरि दोहाई। अति अपुरुब देखलि राई[1]।।2।।
मुख मनोहर अधर रङ्गे। फुलति मधुरि कमल सङ्गे।।3।।
लोचनजुगल भृङ्ग अकारे। मधुक मातल उड़ए न पारे।।4।।
भऊहेरि कथा पूछह जनु। मदने साजल[2] काजर धनु।।5।।
भन बिद्यापति दूति बचने। एत सुनि कान्ह करु गमने[3]।।6।।

1. साई। 2. जोड़लि

दूती कृष्णकेँ राधाक सौन्दर्यक वर्णन सुनबैत अछि -- (1) पुष्ट स्तन आ' पातर देह लगैछ जेना सोनक लता (देह) मे मेरु पर्वत फड़ल हो। (2) हे कान्ह, बधाइ, बधाइ तोरा। राधाक अपूर्व रूप देखल। (3) सुन्दर मुह आ' लाल टुहटुह अधर, जेना कमल आ' मधुरी दूनू संगहि फुलाएल हो। (4) दूनू आँखि भ्रमर-सन, जेना मधु (कमलक रस) पीबि मातल हो, तेँ उड़ि नहि होइत छैक। (5) भहुँक कथा नहि पूछह, जेना काजरसँ रङल कामदेवक धनुष हो। (6) विद्यापति कहैत छथि, दूतीक एतबा बात सुनितहिँ कृष्ण राधासँ मिलए चलि पड़लाह।

[334]

कि अरे नव जौवन अभिरामा।
जत देखल तत कहहि न पारिअ छओ अनुपम एक ठामा।।1।।
हरिन इन्दु अरविन्द करिनि हेम[1] पिक बूझल अनुमानी।
नयन बयन परिमल गति तनुरुचि अओ अति सुललित बानी।।2।।
कुचजुग उपर चिकुर फुजि पसरल ता' अरुझाए ल हारा।
जनि रे[2] सुमेरु उपर मिलि ऊगल चान्द बिहुन सबे तारा।।3।।
[लोल कपोल ललित भल कुण्डल अधर बिम्ब अधजाई।

भौँह धनुष[3] नासापुट सुन्दर से देखि कीर लजाई।।4।।]
भनइ विद्यापति से वरनागरि आन न पाबए कोई।
कंसदलन नाराएन सुन्दर तसु रङ्गिनि पए होई।।

1.हिम। 2. जनि... । 3. भमर।

कवि राधाक रूपवर्णन करैत छथि -- (1) अहा, राधाक नव यौवन कतेक सुन्दर अछि ! जतेक देखल ततेक कहल नहि जाए। एतए छओ गोट अनुपम वस्तु एक ठाम उपस्थित अछि। (2) हरिण, चन्द्रमा, कमल, हाथी आ' कोकिल। अनुमान सँ बूझल जे ई थिक क्रमशः राधाक नयन, मुख, देहसौरभ, गति, देहक वर्ण आओर परम ललित वचन। (3) खोपा फूजि छातीपर पसरल अछि आ' ताहिमे मुक्ताहार ओझराएल अछि। से लगैछ जेना सुमेरु (स्तन) पर बिनु चन्द्रमाक (अन्हरिआ रतिमे) तारासभ (मोति) उगल हो। (4) गालपर सुन्दर कुण्डल डोलैत अछि। अधर बिम्बफलहुसँ अधिक सुन्दर अछि। सूगा बिम्बफल पर लोभाइत तँ अछि किन्तु भौँहरूपी धनुषकेँ देखि डराइत अछि, आ नाकक सुन्दरता देखि लजाइत अछि। (5) विद्यापति कहैत छथि, एहन श्रेष्ठ नारी आन केओ नहि पाबि सकैत अछि। ई कंसदलन नारायणहिक रङ्गिणी थिकीह।

[335]

अधर सुसोभित वदन सुछन्द। मधुरि फूल बिकसित अरबिन्द[1]।।1।।
तहु दुहु सुललित नयन सामरा। विमल कमल दल बइसल भमरा।।2।।
बिसेखि न देखलिए निरमलि रमनी। सुरपुर सञो आइलि गजगमनी।।3।।
गिम सञो लम्बित[2] मुकुता हारे। कुचजुग चकबा चर गङ्गा धारे।।4।।
भनइ विद्यापति कविकण्ठहार। रसबुझ सिवसिंह नृप महोदार।।5।।

1. मधुरी फूले पूजू अरबिन्द। 2. लाबल।

कवि राधाक सौन्दर्यक वर्णन करैत छथि -- (1) नायिकाक सुन्दर वदन पर अधर सुशोभित अछि, जेना कमल (मुख) पर मधुरीक फूल

(=अधर) फुलाएल हो। (2) ओहि मुखमण्डल पर दुइ कारी-कारी नयन सुशोभित अछि जेना स्वच्छ कमल (मुखमण्डल) पर दुइ गोट भऔंरा (नयन) बैसल हो। (3) एहि नायिकासँ बढ़ि कोनो आन रमणी रचलि गेलि हो से कतहु नहि देखल। मानू ई गजगामिनी नायिका स्वर्गसँ आइलि हो। (4) कंठ मे मोतिक हार लटकल छैक। मानू स्तनरूपी चकबाक जोड़ा गङ्गाक धारमे चरैत हो। (5) कवि कण्ठहार विद्यापति रचैत छथि आ' परम उदार राजा शिवसिंह एकर रस बुझैत छथि।

[336]

चान्द सार लए मुख घटना करु लोचन चकित चकोरे।
अमिञे धोए आञ्चरे धनि' पोछल दहदिस भेल उजोरे।।1।।
कामिनि कञोने गढ़ली।
रूप सरूप मोहि कहइते असम्भव लोचन लागलि[2] रहली।।2।।
गुरु नितम्ब भरे चलए न पारए माझ खीनि अधिकाई[3]।
भाङ्गि जाइति मनसिजे धरि राखलि त्रिबलि लता अरुझाई।।3।।
भनइ विद्यापति अद्भुत कैतब ई सब बचन सरूपे।
रुपनाराएन ई रह जानथि सिबसिंह मिथिला भूपे[4]।।4।।

1. जनि। 2. लागि। 3. खीनिम निमाई।

कवि नायिकाक रूपक वर्णन करैत छथि -- (1) नायिकाक मुख चन्द्रमाक सार लए निर्मित अछि आ' आँखि चकित चकोर लए। सुन्दरी अपन मुह अमृतसँ धोए आँचरसँ पोछलनि तँ दशो दिशा इजोत भए गेल। (2) जानि नहि एहि कामिनीक रचना के कएल। एकर रूपक सत्य-सत्य (ठीक-ठीक) वर्णन करब हमर साध्य नहि। देखलहुँ तँ जेना ई हमर आँखिमे लगले रहि गेलीह (हिनक छवि आँखिसँ हटितहि नहि अछि)। (3) नितम्ब ततेक भारी छनि जे ठीकसँ चलि नहि पबैत छथि। कटि ततेक पातर छनि जे कामदेवकें आशंका भेलनि, कदाचित टूटि ने जाए तें

त्रिवलीरूपी लतामे बझाए (बान्हि) रखलनि। (4) विद्यापति कहैत छथि, अद्भुत दृश्य अछि। जे कहलहुँ अछि से सभ बात सत्य बूझू। मिथिलाक राजा शिवसिंह रूपनारायण एकर रस बुझैत छथि।

[337]

भल भेल राहिक' सैसब गेल। चरनक चापल[2] लोचन लेले।।1।।
दुअओ[3] नएन कर दूतक काज। भूखन भए परिनत भेलि लाज।।2।।
आबे अनुखन देअ आँचर हाथ। बाज सखी सञो नत कए माथ।।3।।
हमे अबधारल सुन सुन कान्ह। नागर करथु अपन अवधान।।4।।
भऊह धनुखि गुन काजररेख। मारति रहत न जिब[4] अवसेख।।5।।
रसमय विद्यापति कवि गाब। राजा सिबसिंह बूझ रस भाब।।6।।

1.दम्पति। 2. चरन चपलता। 3. दुअओ। 4. पोख।

कवि राधाक वयःसन्धिक वर्णन करैत छथि - -(1) नीक भेल जे राधा शैशव पार कएल। चरणक चञ्चलता आँखि लेलक (पहिने चरण चञ्चल छल, आब आँखि)। (2) दूनू आँखि दूतक काज करैछ (तुल आनब नागर नएने बझाए)। लाज भूषणक काज करैत अछि (लाज शोभा बढ़बैत छैक) । (3) आब सतत आँचर पर हाथ दैत अछि (स्तन झपैत रहैत अछि)। सखीसभक संग रसालाप काल माथ झुकाए लैत अछि। (4) हे कान्ह, सुनह। हमरा बुझबामे आबि गेल। आब नागर (रसिकसभ) सतर्क होथु। (5) किएक तँ राधाक भऊँह धनुष थिक; काजर ओकर प्रत्यंचा (डोरी) थिक। एहिसँ प्रहार करत तँ प्राण नहि बाँचत। (6) रससँ भरल गीत विद्यापति रचलनि। एकर रस आ' भाव राजा शिवसिंह बुझैत छथि।

[338]

चिकुर निकर तम आनन' सम्पुन पुनिम ससी।
नअन पङ्कज के पतिआओब एक ठाम रहु बसी।।1।।
लुबुध मानस चालक मदन कर कि परकारा।।

सहज सुन्दर गोर कलेबर पीन पयोधर सिरी।
कनअलताँ अति बिपरित फळल जुगल गिरी।।3।।
भन विद्यापति बिहिक घटन के न अदबुद जान।
राए सिबसिंह रूपनराएन लखिमादेबि रमान।।4।।

1.सम पुनु आनन।

कृष्ण राधाक रूपक वर्णन करैत छथि -- (1) केस थिक अन्धकार, मुख थिक पूर्णिमाक चान आ' आँखि थिक कमल। के पतिआएत जे राधाक रूप मे ई तीनू एक ठाम टिकल अछि ? (अन्धकार तँ चान नहि, चान तँ कमल नहि)। (2) आइ हम सुन्दरी राधाकें देखल। मन लोभाएल। मदन प्रेरक भेल। आब कोन उपाए कएल जाए? (3) ओकर सहज सुन्दर देहमे पुष्ट-पुष्ट स्तन सुशोभित अछि। सोनाक लतामे, अद्भुत बात जे दूटा पहाड़ फड़ि गेल। (4) विद्यापति कहैत छथि, के नहि जनैत अछि जे विधाताक निर्माण अद्भुत होइत अछि। लखिमा देवीक रमण राजा शिवसिंह रूपनारायण एकर रस बुझैत छथि।

[339]

अभिअक लहरी बम अरविन्द। विद्रुम पल्लव फूलल कुन्द।।1।।
निळरि निळरि' मोञे पुनुपुनु हेरु। दमनलता पर देखल सुमेरु।।2।।
साँच कहओ मोञे साखि अनङ्ग। चान्दक मण्डल जञुनि[2] तरङ्ग।।3।।
कोमल कनक केआसुति पात। मसि लए मदने लिखल निज बात।।4।।
पढ़हि न पारिअ आखर पान्ति। हेरइते पुलकित हो तनु कान्ति।।5।।
भनइ विद्यापति कहओ बुझाइ। अरथ असम्भव के पतिआइ।।6।।

1. निरबि निरबि। 2. यमुना।

कृष्ण राधाक रूपक वर्णन करैत छथि -- 1) कमलक फूल (मुख) अमृत-लहरी (मधुर वाणी) उगलैत अछि। मूँगाक पल्लव (ठोर) मे कुन्द (दाँत) फुलाएल। (2) हम आँखि पसारि-पसारि बेरि-बेरि देखल। दमनलता

(देह) मे सुमेरु पर्वत (स्तन) फड़ल देखल। (3) हम सत्य कहैत छी, कामदेव साक्षी छथि। चन्द्रमण्डलक (कपारक) उपर यमुनाक धार (केस) बहैत अछि। (4) केआसुतिक कोमल पात (उदर) पर मदन मोसि लए अपन बातक लेख (त्रिवली) कएलनि। (5) ओ (अक्षर-पंक्ति) (रोमावली) पढ़ब कोना? देखितहि देह सिहरि उठता। (6) विद्यापति कहैत छथि, सुनू, बुझाएकें कहैत छी। (नहि तँ) असम्भव (अनटोटल) बात के पतिआएत?

[340]

लोचन चपल बदन सानन्द। नील नलिन दलें पूजल चन्द।।1।।
पीन पयोधर रुचि उजरी। सिरिफले फळलि कनक मंजरी।।2।।
गुनमति धनि[1] गजराजगती। देखलि मोञे जाइते बर जुबती।।3।।
गरुअ नितम्ब उपर कुचभार। भाङ्गिबा[2] चाहए थेघिबा के पार।।4।।
तनु रोमावलि देखि मन भेल[3] निञ धनु मनमथे थेघन देल।।5।।
सँभरम सकल सखीजन बारि। पेम बुझओलक पलटि निहारि।।6।।
आओर चतुरपन कहहि न जाए। नयने नयने मेरि[4] रहलि नुकाए।।7।।
तखनहि सञो चान्द चान्दन न भाय[5]। अबस[6] नयन पुनु तठमहि धाव।।8।

1.रमणी। 2. भाँगिबाके। 3. देखिए न भेलि। 4. मिलि। 5. तखन सञो चाँद चँदन न सोहाव। 6. अबोध।

कृष्ण राधाक रूपक वर्णन करैत छथि – (1) ओकर प्रसन्न मुखमे चंचल लोचन लगैछ जेना चानक पूजा नील कमलसँ कएल गेल हो। (2) पुष्ट स्तनक गोर वर्ण लगैछ जेना बेलमे सोनाक मजर आएल हो। (3) आइ हम गजगामिनी गुणवती युवती राधाकें जाइत देखल। (4) भारी नितम्ब उपरसँ पड़ैत स्तनक भारसँ टूटए चाहैत हो। (चिन्ता भेल जे) के अवलम्बन (स्थैर्य) दए सकत? (5) परन्तु जखन देहमे रोमावली देखलिऐक तखन बूझल जे कामदेव अपन धनुषक अवलम्बन (थेघन) दए देने छथिन। (6) अचानक सभ सखीसँ कात जाए राधा हमर आँखिमे

आँखि मिलाए सहसा नुकाए रहलि (अलक्षित भए गेलि।) (7) तखनहिसँ हमरा ने चान सोहाइत अछि, ने चन्दन। विवश भेल आँखि बेर-बेर ओही ठाम दौड़ैत अछि (जतएसँ ओ अलक्षित भेलि)।

[341]

अलखिते हम हेरि बिहुसलि थोर। जनि[1] रजनी भेल चान्द चजोर।।1।।
कुटिल कटाख लाट पड़ि गेल। अम्बरे मधुकर डम्बर[2] देल।।2।।
काहिकि सुन्दरि के तहि जान। आकुल कए गेलि हमर परान।।3।।
लीला कमले भमर दल[3] बारि। चमकि चललि गोरि चकित निहारि।।4।।
तें भेल बेकत पयोधर सोभ। कनय कमल हेरि काहि न लोभ।।5।।
आध नुकाएल आध उगास[4]। कुचकुम्भे कहि गेलि अपनुक आस।।6।।
से सबे अमिल निधि दए गेलि सन्देस। किछु नहि रखलन्हि रसपरिसेस।।
भनइ विद्यापति दुहु मन जाग। बिसम कुसुमसर काहि न लाग।।8।।

1. रयनि। 2. मधुकर डम्बरे अम्बर। 3. धरु। 4. उदास।

राधाकें देखि कृष्ण मनहि मन सोचैत छथि -- (1) राधा परोछहिसँ हमरा देखि कनेक बिहुँसि देलक। मानू रातिमे इजोरिआ पसरि गेल। (2) कुटिल कटाक्ष चलए लागल। मानू आकाश भ्रमरक झुंड पसरि गेल। (3) जानि नहि ओ सुन्दरी कतएक थिक, ओकरा के चिन्हैत अछि। ओ हमर प्राणकें आकुल कए देलक (4) हाथक लीलाकमलसँ ओ भ्रमरक झुंडकें भगाए, चंचल नयनें हमरा दिस ताकि चमकि कें चलि गेलि। (5) एहि क्रममे ओकर स्तन उघार भए गेलैक। सोनाक कमल देखिकें ककरा लोभ नहि होएतैक। (6) आधा झाँपल आ' आधा उघार स्तन देखाए ओ अपन आस (मिलनक अभिलाषा) सूचित कए गेलि। (7) ओ मानू अपन सभ दुर्लभ निधि अर्पित कए गेलि। किछु रस बाँकी नहि रखलक। विद्यापति कहैत छथि। कृष्णओ राधा दूनूक मन (मे कामवाचना) जागल। कामदेवक विषम बाण ककरा नहि लगैत छैक।

[342]

अम्बर विघटु अकामिक कामिनि करें कुच झाँपु सुछन्दा।
कनक सम्भु पर[1] अनुपम सुन्दर दुइ पङ्कज दस चन्दा।।1।।
कत रूप कहब बुझाई।
मन मोर चञ्चल लोचन अविचल औतहि अनाइति[2] जाई।।2।।
आड़ वदन कए मधुर हास दए सुन्दरि रहु सिर नाई[3]।
अऔंधा कमल कान्ति नहि पूरए हेरइते जुग बहि जाई।।3।।
भनइ विद्यापति सुन वरजौंबति पुहबी नब प्रञ्चबाने।
राजा सिबसिंह रूपनराएन लखिमादेवि रमाने।।4।।

1.सम। 2.विकले ओओ अनइते। 3. लाई।

कृष्ण राधाक रूपक वर्णन मित्रकें सुनबैत छथि -- (1) कामिनीक (राधाक) आँचर अचानक खसि पड़ल। ओ अपन सुललित स्तनकें हाथसँ झाँपि लेलक। बुझाएल जेना सोनाक शिवलिंग (स्तन) पर दुइ गोट कमलक फूल (हाथ) आ' दस गोट चान (हाथक नह) राखल हो। (2) राधाक रूपक वर्णन कतेक करू। ओकरा देखि हमर मन चञ्चल भए गेल आ' नयन (ओकर रूप पर) स्थिर आ' अनायत (विवश) भए बेरि-बेरि चल जाए। (3) सुन्दरी मुह घुमाए आ' मधुर मुसकी छोड़ि मूड़ी झुकाए लेलक। औन्हल कमल (लटकाओल मुह) कामना पुराए नहि सकल। देखए लगलहुँ तँ लागल जे देखैत-देखैत युग बिताए दी। (4) विद्यापति कहैत छथि, हे श्रेष्ठ युवती, सुनह। लखिमा देवीक पति राजा शिवसिंह एहि धरतीपर नब कामदेवक रूपमे (कृष्णक रूपमे) अवतार लेलनि अछि।

[343]

आजे कन्हाइ ऐं बाटें आओब बुझए न पारलि बेला।
विधिक घटने भेल अकामिक लोचने-लोचने मेला।।1।।
नव कलेवर निज पराभय थम्भ भेल बिनु काजे।
दरसन रस रभस लीला लोभें गरासलि लाजे।।2।।

X X X X सुन्दरि मन्दिर बाहर भेलि।
बीजुरि रेह जलधर जञो कइसे नुकिए गेलि।।3।।

राधा कृष्णक आकस्मिक दर्शनक हाल सखीसँ सुनबैत छथि -- (1) कान्ह आइ एहि बाटें आओत तकर समय बूझि नहि सकलहुँ (बुझितहुँ तँ ओम्हर नहि जइतहुँ)। (2) तँ संयोगवश अकस्मात् ओकर आँखिसँ आँखि मिलि गेल। ओकर नब देह देखि स्वयं पराभवमे पड़लहुँ। देखिकेँ अनेरे स्तब्ध भए गेलहुँ। दर्शन आ' सरस लीलाक लोभेँ लाज बिलाए गेल। (3) ....। सुन्दरी राधा घरसँ बहराइलीह आ तेना अलक्षित भए गेलीह जेना मेघमे बिजुलीक रेखा।

टि- -- तेसर चरण कोनो आन गीतक खण्ड थिक।

[344]

जमुनाक तिरे-तिरे साँकड़ि बाटी। उबटि भेलिहुँ तजि सङ्ग परिपाटी।।1।।
तरुतर भेटल तरुन कन्हाई। नयन तरङ्गेँ जनि गेलिहुँ लजाई।।2।।
के पतिआएत नगर भरला। दखैते-सुनैते मोर हृदय हरला।।3।।
पलटि न हेरल गुरुजन लाजे। बचन मञे चुकलिहुँ सखिन्हि समाजे।।4।।
एत दिन अछलिहुँ अपने गेआने। आबे मोरा मरम लागल पञ्चबाने।।5।।
निठुर सखी असोअस न[2] देई। परक बेदन पर बाँटि न लेई।।6।।
भनइ विधापति एहु रस जाने। सिबसिंह लखिमादेबि रमाने।।7।।

1.सनाई। 2.बिसबास न।

कृष्णकेँ देखि मुग्ध भेलि राधा अपन मनोदशा व्यक्त करैत छथि -- (1) यमुनाक काते-कात साँकड़ बाटेँ चलैत-चलैत हम बाट छाड़ि सखीसभक मंडलीसँ फूटि गेलहुँ। (2) गाछ तर कान्ह भेटल। ओकर नजरिक प्रवाह (प्रभाव) मे हम नहाए गेलहुँ। (3) नगर भरि मे के विश्वास करत जे एना होइत छैक। कान्ह देखितहिँ-सुनितहिँ (छन भरि भेट होइतहि।) हमर मन हरि लेलक। (4) घुरि कें घर गेलहुँ तँ लाजें

गुरुजनक सोझाँ नहि भेलहुँ। सखी सभक बीच वचनमे चूक होअए लागल (बजबाक किछु, बजाए जाए किछु आने)। (5) एतेक दिन अपन ज्ञानमे छलहुँ (मनपर वश छल), आब हमर अन्तरमे मदन पैसि गेलाह। (6) निष्ठुर सखी सभ आश्वासन (सान्त्वना) तँ दैछ किन्तु आनक दुख आन बाँटि नहि लैत छैक। (7) विधापति कहैत छथि, ई रस जनैत छथि लखिमा देवीक रमण शिवसिंह।

[345]

अवनत मुह कए[1] रहलिहुँ बारल लोचन जोर[2]।
पिआ मुख रुचि पिबए धाओल जइसे[3] चान्द चकोर।।1।।
ततहु सञो हठे हरि मोञे आनल धएल चरन राखि।।2।।
मधुप[4] मातल उड़ए न पार तइअओ पसारए पाँखि।।3।।
माधवे बोलिल मधुर बानी से सुनि मुँदु मोञे कान।।4।।
ताहि अवसर काम बाम भेल धरि धनु पञ्चबान।।5।।
तनु पसेबे पसाहनि भासलि तइसन पुलक जागु।
चुनि-चुनि भए काञ्चुअ फाटलि बाहुबलआ भाङ्गु।।6।।
भन विधापति कम्पित कर हो बोलल बोल न जाए।
राजा सिवसिंह रुपनराएन सामसुन्दर काए।।7।।

1.आनने कए हमे। 2. जनि से। 3. मधुक।

राधा कृष्णक प्रति अपन पूर्वरागक (आरम्भिक प्रेमक) वर्णन सखीकेँ सुनबैत छथि -- (1) कृष्णकेँ देखल तँ (लाजेँ) मूड़ी गोँति लेलहुँ। दूनू आँखिकेँ रोकल, मुदा ओ रोक नहि मानि कृष्णक मुखक शोभा पीबाक हेतु दौड़ि गेल जेना ओ मुख चान हो आ' हमर नयन चकोर। (2) ओतएसँ नजरिकेँ बलपूर्वक हटाए आनल आ' पाएर पर आनि राखल (लाजेँ नयन झुकाए (पाएर दिस कए लेल), तैओ नयन बेरि-बेरि कृष्णकेँ निहारबाक प्रयास करए, मानू प्रेमरूप मधु पीबि मातल (मादकतावश शिथिल भेल)

नयनरूपी भ्रमर उड़ि नहि सकैत हो, तैओ पाँखि पसारए। (4) कृष्ण जे मधुर वचन बजलाह से सुनि हम दूनू कान मूनि लेल। ताही अवसरमे ठामहि कामदेव वाम (शत्रु) भए गेलाह (प्रहार करए लगलाह।) (5) देहमे ततेक घाम चलल जे पसाहिन दहाए गेल। रोमांच ततेक भेल जे चोली मसकि गेल आ हाथक कँगना फूटि गेल। हाथ कापए लागल। बकार बन्द भए गेल। विद्यापति कहैत छथि, ई श्याम सुन्दर आन नहि, राजा रूपनारायणे थिकाह।

[346]

बिकनए गेलिहुँ मधुरपुर[1] मधुरिपु भेटल साथे।
तहिखने पञ्चसर लागल बिधिबसे के करु बाधे।।1।।
हार भार भेल तहिखने चान्द[2] चान्दन भेल आगी।
दखिनओ पबन दुसह भेल मोहि पापिनि बध लागी।।2।।
कतने जतने घर अएलाहुँ के कर दहि दुध काजे।
मनाहु[3] न मधुरिपु बिसरिअ तेजल गुरुजन लाजे।।3।।
भनइ विद्यापति सुबदनि दुइ दिठि होएल समाजे।
मनक मनोरथ पूरत मधुरिपु आओब आजे।।4।।

1.बिकिनए गेलिहुँ मधुरपुर। 2. चीर 3. मनहु।

कृष्णकें देखि मुग्ध भेलि राधा मनक भाव व्यक्त करैत छथि -- (1) दही दूध बेचए मथुरा नगर गेलहुँ। कान्ह लगमे भेटि गेल। तखनहिसँ मदन पाछु लागि गेलाह। विधाताक इच्छामे के बाधा कए सकैत अछि। (2) तखनसँ हार भार भए गेल, चान आ' चानन आगि भए गेल। दक्षिण पवन (जे सुखद होइछ) सेहो हमरा एहि पापिनीकें सतएबाक हेतु दुःसह भए गेल। (3) कतेक यत्नें (सतर्क भए) घर अएलहुँ। दही-दूधक काज के करओ (काजसँ मन उछटि गेल), एको रती (मनाहु) कान्ह नहि बिसरैत अछि। गुरुजनक लाज त्यागि देल। (4) विद्यापति कहैत छथि, हे सुमुखी,

फेर दूनूक आँखि मिलत आ मनक मनोरथ पूर होएत। आइए कान्ह फेर आओत।

[347]

कतन बेदन मोहि देसि मदना। हर बाला मञे जुबति जना।।1।।
बिभुति भूखन नहि चान्दनक रेनु। बाघछाल नहि मोर नेतक बसनु।।2।।
नहि मोरा जटाजूट चिकुरक बेनी। सुरसरि नहि मोर कुसुमक सेनी।।3।।
चान्दनक बिन्दु मोरा नहि इन्दु छोटा।[1] ललाट पाबक नहि सिन्दुरक फोटा।।
नहि मोरा कालकूट मृगमद चारु। कनिपति नहि मोरा मुकुता हारु।।5।।
भनइ विद्यापति सुन देब कामा। एक पए दूखन अछ नाम मोर[2] बामा।।6।।

1. गोटा। 2. ओहिनामक।

विरहिणी नायिका कामदेवसँ सिकाइत करैत छथि -- (1) हे कामदेव, तों हमरा कतेक वेदना दैत छह। हम (तोहर शत्रु) महादेव नहि थिकहु, हम थिकहुँ एक षोड़शी युवती। (2) हमरा देहमे विभूतिक लेप नहि, ई थिक चाननक बुकनी। ई बाघछाल नहि, नेतक (रेसमी) चीर थिक। (3) जटाजूट नहि, केसक जुट्टी (वेणी) थिक। सुरसरि धार नहि, फूलक माला थिक। (4) बालचन्द्र नहि, चाननक ठोप थिक। कपार पर आगि नहि, सिन्दूर-बिन्दु थिक। (5) कालकूट (विष) नहि, कस्तूरीक लेप थिक। साप नहि, मोतिक हार थिक। (6) हे कामदेव, सुनह। (कुलक्षण, शिवसँ समानता) एकेटा अछि--ओ वाम (देव) आ' हम वामा।

[348]

एहि बाटे माधव गेल रे। मोहि किछु पुछिओ न भेल रे।।1।।
माधुर जाइते नरि[1] तीर रे। आन्तर भेटल अहीर हे।।2।।
नयनहि[2] नयन जुझाए रे। हृदय न भेल बुझाए रे।।3।।
कइसे[3] होएत रतिरङ्ग रे। मधुर मधुर पति सङ्ग रे।।4।।
अञ्चस[4] न भेल सँभारि रे। बूझलि कान्ह गोआरि रे।।5।।

1. माथुर जाइते जमुना तीर रे। 2. नअनहु। 3. मोहिछल। 4. चिकुर।

प्रेमविह्वल राधा मनोभाव व्यक्त करैत छथि -- (1) कान्ह एही बाटें गेल। देखितहि हम ततेक मोहित (विह्वल) भए गेलहुँ जे किछु पुछिओ नहि सकलहुँ। (2) यमुना नदीक तट धएने जाइत रही कि बीचहिमे कान्ह भेटि गेल। (3) आँखिसँ आँखि तँ मिलल, किन्तु हृदयकेँ बुझाओल (सम्हारल) नहि भेल। (4) जानि नहि सरस कान्हक संग रतिरंग कोना सम्हारि सकब। (5) आँचरो सम्हारबाक होस नहि रहल। कान्ह हमरा गोआरि-गमारि (रसबोधहीन) बूझि लेलक, (किएक तँ हम कोनो अनुक्रिया नहि देखाए सकलहुँ)।

[349]

जखने दुहुक दीठि बिछुड़लि दुहु मने दुख लागु।
दुहुक आसा-दीप निझाएल[1] मदन आङ्कुर भाँगु।।1।।
बिरह बेदन दुहु सन्तावए दुहु समीहए मेलि।
एकक हृदए अओकै न पाब तैं नहि पाउलि फैलि।।2।।
बाम नयना जओ भेल दूते दाहिन रहु लजाइ।
गुपुति पिरिति चेतन गोपए[2] पर कहहि न जाइ।।3।।
जइ नबचन्द पुरन्तर अन्तर चन्दन लागु समाने।
दसमि दसा पथ अङ्गिरओ न करओ तेसर काने।।4।।
मोहन सर मनोभवे साजल तनु पजारल आगि[3] ।
बिनु अबसरे कि सखि बोलति पुनु दरसन लागि।।5।।
सीतलि उकुति जेहो जुगुति समन्दल छल आने।
अब सआँना जानि कन्हाइ तेजि हल धनि माने[4]।।6।।
दप्पन मुख प्रतिबिम्ब नाओ बेकत भेल बिकारे।
दुहुक[5] आसा काम पुराओल[6] भन कवि कण्ठहारे।।7।।
हरि सरूप ई जगत जानिअ रुपनराएन रन्ता।
राए सिबसिंह सुचिरे जीबओ लखिमादेवि सुकन्ता।।8।।

1. मिझाएल। 2.चेतन चेतन गुपुति पिरित। 3. ससाहल। 4. मानिहल छनि छाने। 5. पुनुच। 6. पुराबओ। 7. सरीर।

कवि राधा आओर कृष्ण दुनूक केलिकलह जन्य विरह-दशाक वर्णन करैत छथि --(1) जखनहि दूनूक दृष्टि दू दिस भए गेल तखनहिसँ दूनूक मन दुखी रहए लागल। दूनूक मिलनक आशारूपी दीप मिझाए गेल आ' काम-वेदना अंकुरित होअए लागल। (2) विरहवेदनासँ दूनू सन्तप्त। दूनू मेल चाहथि। परन्तु एकक हृदयक भाव दोसर नहि बूझथि, तेँ मेल नहि होअए। (*तुलनीय* --- दुहुमन मेलि, कओने बेकताओब, दारुन प्रथम निबेदन रे)। (3) वाम नयन (राधाक नयन) जँ दूत भए मेलक हेतु आगाँ बढ़ए तँ दक्षिण नयन (कृष्णक आँखि) लजाए पाछु हटि जाए। गुप्त (अवैध) प्रीतिकेँ चतुर लोक छिपबए चाहैत अछि, तेँ अनका कहि मिलानक उपाए करब सेहो सम्भव नहि। (4) दूनू सोचैत अछि दशम दशाक (मृत्युक) बाट बरु धरब, किन्तु अनका कहबैक नहि। (5) कामदेव अपन पाँच शरमे सँ मोहन नामक शर छोड़ल। दूनूक देहमे मानू आगि लागि गेल।। बिनु अवसरहि सखीकेँ कोना कहत जे फेर दर्शन कराए देह। (6) जे-जे शीतल वचन, जे-जे युक्ति कान्ह कहलक, से सभ अन्यथा (विफल) भए गेल। तखन राधा कृष्णकेँ बुझनुक (अनुकूल) पाबि मान त्यागि देल। (7) दर्पणमे जेना मुख साफ-सफ देखाइत अछि तहिना दूनूक विकार (कामविह्वल मनोभाव) व्यक्त भए गेल। कामदेव दूनूक कामना पुराओल। (8) कवि कण्ठहार कहैत छथि, ई संसार हरि-स्वरूप थिक आ' रूपनारायण रमण कएनिहार (संसारक स्वामी) थिकाह। लखिमा देवी पति राजा शिवसिंह चिरजीवी होथु।

[350]

आइलि बिकट[1] बाटे पटलि[2] मदन साटे दिढ़ बान्धि दरसिल केस।
भवन-गमन[3] बेरि पलटि पाछु हेरि आड़ि दिठि दए गेलि सन्देस।।1।।
आओ कि करति सखि परिनत ससिमुखि कान्ह जदि न बुझ बिसेस।

X X X X X X X X X X X ||2||
आञ्चर धरैते करे नउलि[1] लाजभरे नमइते मुखेरि उपाम।
न जानञो कजोन, जञो कमलनाल सञो कमल ममोलल काम।।3।।
कवि भन विद्यापति अभिनव रतिपति सकल कला रस जान।
राजबलभ जिबओ मन्ति सिरि महेसर रेनुकादेवि रमान।।4।।

1. निकट। 2. धुइलि। 3. रमन भबन। 4. लउलि।

कवि राधा-कृष्णक कामकेलिक वर्णन करैत छथि -- (1) राधा विकट बाट देने कष्ट उठाए अइलीह। मदन प्रेरक भेलथिन। शिथिल केसकें दृढ़ कए बान्हि अपन भाव देखओलनि। घर जएबाक काल पाछाँ उनटि कें कुटिल दृष्टिएँ तकलनि आ' ताहिसँ सन्देश (सूचना) दए गेलीह जे ओ संगम चाहैत छथि। (2) ई सन्देश कृष्ण जँ नहि बूझि पाबथि तँ पूर्णचन्द्रमुखी बेचारी राधा की करतीह? X X X X X X X X X X X। (3) कृष्ण जखन हाथसँ आँचर पकड़ए लगलथिन, तँ राधा लज्जावश वदन झुकाए लेलनि। जानि नहि, एहि झुकैत वदनक उपमा कथीसँ देब--मानू कामदेव डाँटसँ कमलक फूल ममोड़ि लेलनि। (4) कवि विद्यापति कहैत छथि, रेणुकादेवीक रमण सकल कलाक मर्मज्ञ अभिनव कामदेव राजवल्लभ मन्त्री श्री महेश्वर जीबथु।

[351]

जुबति चरित बड़ बिपरीत बुझए केदहु पार।
बुझए चेतन गुननिकेतन भूलल रह गमार।।1।।
सजनि नागरि नागर रङ्ग।
सङ्गहि रहिअ तेसर न बुझ लोचन लोल तरङ्ग।।2।।
बलित बदन बाङ्क बिलोकन कपटे गमन मन्दा।
दुइ मन मिलि ठामे अङ्कुरल पेम तरुअर कन्दा।।3।।

एक सखी दोसरि सखीकें प्रीति-रीतिक वर्णन सुनबैत छथि -- (1) हे सखी, युवतीक चरित्र बड़ विचित्र (असामान्य) होइत अछि। ई के बूझि सकैत अछि? सैह बूझि सकैत अछि जे रसज्ञ आ' गुणवान होएत। गमार (अरसिक) भ्रमहिमे रहि जाइत अछि। (2) हे सजनी, अपूर्व अछि नागर आ' नागरीक लीला। संगहि रहितहुँ ओहि दूनूक चंचल आँखिक चालि तेसर नहि बूझि पाओत। (3) पाछु घुरल मुह, बाँक नजरि, कपट-भरल मन्द-मन्द गमन एहू सभक अर्थ नहि बूझि पाओत। जहाँ दूनूक मन मिलल कि ठामहि प्रेमरूपी गाछक कन्द अंकुरित भए जाएत।

[352]

कर किसलय वदन रहलि[1] गगन मण्डल देखि।
जनि सरोरुह सूतल ससी[2] सबे बिरोध उपेखि।।1।।
नवघन जञो नीर बरिसए नयन ऊजर तोरा।
जनि सुधाकर कए[3] कवलित अमित्र बम चकोरा।।2।।
कह कमलवदनी।
कञोने पुरुखे हर अराधल जसु कारनें तञे खीनी।।3।।
उत्तङ्ग पीन पञोधर उपर लखिअ अधरछाया।
कनकगिरि पवाल उपजल बड़[4] मनोभव माया।।4।।
घनघन निससि[5] बिरहें झामरि पलटि पळलि बेनी।
साँस समीरन पीबए धाउलि जनि रे कारि नागिनी।।5।।
भन विद्यापति सुनह जुवति सरूप तोर बअला।
अपन मन थिर पए चाहिअ पर विवेचन कञोना।।6।।

1. सयन रचित। 2. अरुन सूतल। 3. करे। 4. बापु। 5. तौँ पुनु से नारि।

सखी राधाक विरहदशा हुनकहि सुनबैत अछि -- (1) तों हाथ पर मुह रखने आकाश दिस तकैत रहैत छह, जेना कमल पर चान सभ विरोधकें उपेखि सूतल हो। (2) तोहर उजर आँखिसँ नव मेघ-जकाँ नोर झहरि रहल छहु, जेना चकोर चानकें कवलित कए अमृत बरिसबैत हो।

(3) हे कमल-मुखी, कहहह, कोन पुरुष महादेवक आराधना कएलक, जकरा लेल तों एना क्षीण भेलि छह? (4) तोहर ऊँच आ' पुष्ट स्तन पर अधरक छाया (लाली) देखि पड़ैत अछि, मानू सोनाक पर्वत (स्तन) पर प्रवाल (मूँगा) उत्पन्न भेल हो। कामदेवक माया बड़ पैघ अछि। (5) तों बेरि-बेरि साँस लैत छह आ' विरहसँ झामरि भए गेलि छह आओर वेणी (चोटी) उनटि कें छाती पर आबि गेल छहु, जेना कारी नागिनी तोहर साँसक बसात पीबि रहलि हो।

[353]

ए सकि ए सखि न बोलह आन। तिअ गुने लुबुधल निते आब कान।।1।।
निते निते निअर आब बिनु काज। बेकतेओ हृदय नुकाबए लाज।।2।।
अनतहु जाइते एतहि निहार। लुबुधल नअन हटए के पार।।3।।
से अति नागर तोञे तसु तूल। एक नले गान्थल जनि दुइ फूल।।4।।
भनइ विद्यापति कविकण्ठहार। एक सरे मनमथ दुइ जिब मार।।5।।

1.गाँथूँ दुइ जनि फूल।

सखी राधाकें कृष्णक अनुरक्ति सुनबैत छथि -- (1) हे सखी, एना अन्यथा नहि बाजह। तोहर गुणपर लोभाएल कृष्ण नित दिन तोरा लग अबैत छथि। (2) नित्य दिन बिनु कोनो काजहु तोहरा लग पहुँचि जाइत छथि। अपन व्यक्तो मनोभाव ओ लाजें नुकबैत छथि। (3) आनहु ठाम जाइत काल तोरहि दिस तकैत जाइत छथि। लोभाएल आँखिकें के रोकि सकैत अछि। (4) ओ श्रेष्ठ नागर छथि आ तोंहू तनिक तुल्य श्रेष्ठ नागरी। एक डाँट मे जेना दू गोट फूल गाँथल हो। (5) कवि कण्ठहार विद्यापति कहैत छथि, कामदेव एके सरमे दू प्राणीकें आहत करैत छथि (जेना तोरा प्रेम, छहु तहिना हुनकहु।)

[354]

अपना काज कञोने नहि धन्ध[1]। के न करए निज पति अनुबन्ध।।1।।
अपन अपन हित सब केओ चाह। से सुपुरुख जे परहि निबाह[2]।।2।।
साजनि ताक जीवन थिक सार। जे मन दए कर पर उपकार।।3।।
आरति अरतल आबए पास। अछइते बथु नहि करिअ उदास।।4।।
भनइ विद्यापति दैन न भाख। पर[3] अनुरोध बड़े पए राख।।5।।

1. बन्ध। 2. कर निरबाह। 3. बड़।

सखी राधाकें उपदेश दैत छथि -- (1) हे सजनी, अपन काजक बेगारता ककरा नहि रहैत छैक। अपन पतिसँ अनुराग के नहि करैत अछि। (2) सभ अपन-अपन हित चाहैत अछि। सुपुरुष (भलमानुस) से थिक जे अनका निबाहए। (3) तकर जीवन सफल थिक जे मन दए आनक उपकार करए। (4) जँ केओ खगल लोक कोनो बेगरतासँ ककरो ओतए आबए तँ ओ वस्तु रहला पर ओकरा निराश नहि करबाक चाही। (5) ओ तँ अन्यत्रो गेला पर इष्ट वस्तु पाबि सकत, परन्तु तोरा मनमे तँ याचककें निराश करबाक पश्चाताप रहिए जएतहु। (5) विद्यापति कहैत छथि, दीनताक बात मुहसँ नहि बहार करबाक चाही। भलमानुसे आनक अनुरोधकें स्वीकार करैत अछि।

[355]

हेरितहि दीठि बिन्धसि हसि[1] गोरी। चान्द किरन जइसे लुबुधि चोकरी।।1।।
हरि बड़ चेतन तोरि बड़ि कला। तेसर न जानए दुइ मन मेला।।2।।
मोञे तञो भाव लागि भल दुजना। मनसिज सर सन्धानल तरुना।।3।।
जीवन माह जउबन दिन चारी। तथिहि सकल रस अनुभव नारी।।4।।
भनइ बिद्यापति बुझ रसमन्ता। राए अरजुन कमलादेवि कन्ता।।5।।

1. चिन्हसि हरि।

सखी राधाकें कृष्णसँ प्रेम करैत देखि कहैत छनि -- (1) हे सखी, तों कृष्णकें देखितहिँ हँसिकें हुनका अपना दृष्टिसँ विद्ध करए लगैत छह ओहिना जेना लोबइलि चकोरी चन्द्र किरणकें। (2) कृष्ण बड़ चतुर छथि, आ तोरहु बड़ कला (कौशल) छहु। तें तोरा दूनूक मनक मेल तेसर नहि जानि सकैत अछि। (3).................... । कामदेव तरुण(?) तीर चलाओल। (4) जीवनमे यौवन दुइए-चारि दिन रहैत अछि। ताहीमे नारी सभ रस भोगि लैत अछि। (5) विद्यापति कहैत छथि, एकर भाव कमलादेवीक पति राए अर्जुन बुझैत छथि।

[356]

जदि अबकास रहए[1] नहि तोहि। कों लागि ततए पठओलह मोहि।।1।।
तोहरा हृदय बचन नहि थीर। नलिनी पात जइसन बह नीर।।2।।
आबे कि कहब सखि कहइते लाज[2]। अथिरक मधथ सपरु नहि काज[3]।।3।।
आसा लागि सहल कत साठ। गरुअ न हो अमडाकाँ काठ।।4।।
तोहें नागरि गुन रुपक गेह। अनुदिने बुझल कठिन तुअ नेह।।5।।
तन्हिकाँ सतत तोहर परथाब। जनि निरधन मन कतए न धाब।।6।।
विद्यापति कवि[4] ई रस गाब। मङ्गले लाघव[5] के नहि पाब।।7।।

1.कइए। 2. अकाज। 3. भेल सम। 4. भनइ विद्यापति। 5. कानट।

राधा गछिकें कृष्णक ओतए नहि गेलीह ताहि लेल सखी हुनका उपराग दैत छनि -(1) हे सखी, जँ तोरा फुरसति नहि छलहु तँ हमरा किएक कृष्णक लग पठओलह? (2) तोहर ने मन थिर छहु ने वचन। कमलक पात पर जेना पानि तहिना तोहर मन एम्हर-ओम्हर करैत रहैत छहु। (3) हे सखी, आब की कहबहु; कहितहुँ लाज होइत अछि। अस्थिर चितबालाक मध्यस्थ होइ तँ काज मे सफलता नहिए भेटए। (4) आशामे पड़ि कृष्ण कतेक शाठ्य (उपेक्षा) सहताह? अमड़ाक काठ कहिओ गुरु (भारी) नहि होइत अछि (ओही काठ-सन हलुक छह तों)। (5) तों नागरि

(भद्रमहिला) छह, गुणवती आ' रूपवती छह। परन्तु दिने-दिने बुझबामे आबि गेल जे तोरासँ प्रेम करब बड़ कठिन। (6) हुनक (कृष्णक) ध्यानमे, सतत तोंही रहैत छहुन ओहिना जेना निर्धनक मन औनाइत रहैत छैक। विद्यापति ई सरस गीत रचलनि। याचना कएलापर के नहि लाघव (उपेक्षा) पबैत अछि।

[357]

अनहु तोरहि नाम बजाब। तोरि कहिनी दिन गमाब।।1।।
सपनेहु तोर सङ्गम पाए। कखने की नहि की बिसनाए।।2।।
कि सखि पूछसि ताहेरि कथा। ताहि तह भलि तोरि अबथा।।3।।
होअ तुअ सङ्ग मेरि जाहि जाहि। चकित लोचने हेरए ताहि[1]।।4।।
उठि आलिङ्गए अपनि छाआ। एतेहु पापिनि तोहिन दाआ।।5।।

1.जाहि-जाहि (होअ) सङ्ग मेरी, चकित लोचन चउदिस हेरि।

सखी कृष्णक विरहदशा राधाकें सुनबैत छथि -- (1) हे सखी, कृष्ण (विरहजन्य प्रान्तिवश) आनहुकें तोरहि नामे 'राधा' कहि-कहि सम्बोधित करए लगैत छथि। तोहरे कथामे सगर दिन डूबल रहैत छथि। (2) सपनहुमे तोरहिसँ संगम होइत छनि आ की ने की बिसुनाइत (स्वप्नमे बजैत) रहैत छथि। (3) हे सखी, हुनक हाल की पुछैत छह। हुनक अवस्थासँ नीक तोरे अवस्था छहु। (4) जकरा जकरासँ तोहर संगति देखैत छथि, तकरा-तकरा दिस चकित दृष्टिएँ ताकए लगैत छथि। (5) उठि-उठि अपने छायाकें (राधा बूझि) पँजिआबए लगैत छथि। हे पापिनी (क्रूरहृदया), एतबहु पर तोरा दया नहि होइत छहु ?

[358]

सहज प्रसन मुख दरस हृदय सुख लोचन तरल तरङ्ग।
अकास पताल बस सेओ कइसे भेल अस चान्द सरोसह सङ्ग।।1।।
X X X X X X X X X X X।

बिधि निरमलि रामा दोसरि लाछि समा भल तुलाएल निरमान।।2।।
कुचमण्डल सिरि हेरि कनकगिरि लाजे दिगन्तर गेल।
केओ अइसन कह सेओ न जुगुति सह अचल सचल कइसे भेल।।3।।
माझ खीन तनु भरे भाङ्गि जाए जनु बिधि अनुसए भेल साजि।
नील पटोर आनि अति से सुदिढ जानि जतने सिरिजु रोमराजि।।4।।
भन कबि बिद्यापति काम रमनिरति कउतुक बुझ रसमन्त।
सिरि सिवसिंह राउ पुरुब सुकृते पाउ लखिमादेवि रानि कन्त।।5।।

कवि नायिकाक रूपक वर्णन करैत छथि -- (1) नायिकाक मुखमे सहज प्रसन्नता छैक, जे देखिकें हृदय जुड़ाइत अछि, आओर आँखिमे चंचलता छैक। आश्चर्य! एक (चान) आकाशमे रहनिहार आ' दोसर (कमल) पाताल (पोखरि) मे; तखन दूनू एक ठाम कोना आएल? (2) X X X X X X। ब्रह्मा द्वितीय लक्ष्मीक समान एक ललनाक रचना कएल। तुलना सटीक भेल। (3) केओ कहैत अछि जे स्तनक शोभा देखि सुमेरु लाजें देशान्तर चल गेल; परन्तु से युक्तिसंगत नहि; अचल सचल कोना होएत? (4) विधाताकें गढ़लाक बाद चिन्ता भेलनि क्षीण कटि स्तनक भारसँ टूटि ने जाए तें नील वर्णक रेशमी सूत आनि ओकरा खूब सकत जानि कें ओहिसँ रोमावली रचलनि। (5) विद्यापति कहैत छथि, रसज्ञलोकनि ई कौतुक जनैत छथि जे लखिमा देवीक पति राजा श्री शिवसिंह पूर्वजन्मक पुण्यक बलें कामदेवक स्त्री रतिक समान स्त्री पओलनि।

[359]

रामा अधिक चङ्गिमि भेलि।
कतने जतने कत अदबुद बिहि निहि ताहि' देलि ।।1।।
सुन्दर बदन सिन्दूर बिन्दु सामर चिकुर भार।
जनि ससि रबि सङ्गहि उगल पाछु कए अन्धकार।।2।।
चञ्चल लोचन बाङ्ग निहारए अञ्जन सोभा पाए।

जनि इन्दीवर पवन पेलल अलि भरे उलटाए।।3।।
उनत उरोज चीरे झपाबए पुनु पुनु दरसाए।
जइअओ जतने गोअए चाहए हिम गिरि न नुकाए।।4।।
एहनि सुन्दरि गुनक आगरि पूने पुनमत पाब।
ई रस बिन्दक रुपनराएन कवि बिद्यापति गाब।।5।।

1.तोहि। 2. रबिससि।

कवि नायिकाक रूपक वर्णन करैत छथि -- (1) नायिका (साज-सिङार कएलापर) अधिक सुन्दरि भए गेलि अछि। एकरा सुन्दर बनएबाक लेल विधाता कतेक यत्नसँ कतेक अद्भुत निधि (शोभा-सामग्री) देलनि। (2) सुन्दर मुख, सिन्दूरक ठोप आ' सूर्य (सिन्दूर-बिन्दु) दूनू लगैत अछि जेना अन्धकार (केशराशि) कें पाछु कए संगहि उगल हो। (3) काजरक शोभा पाबि चंचल दृष्टिएँ बाँक तकैत अछि से लगैछ जेना बसातसँ ठेलाइत कमलक फूल भ्रमरक भारसँ उनटल जाइत हो। (4) सुन्दरी ऊँच-ऊँच स्तन बेरि-बेरि चीर सँ झपैत अछि आ' ओ बेरि-बेरि उघार होइत अछि। हिमालयकें कतबो यत्नसँ नुकबए चाहब, तैओ ओ नुकाए नहि सकत। (5) एहन रूपवती आ' गुणवती संगिनी पुण्यवाने लोक पुण्यक बलें पबैत अछि। कवि विद्यापति कहैत छथि, एकर रस जननिहार थिकाह रूपनारायण।

[360]

सुन्दरि गरुआ तोर विवेक।
बिनु परिचय पेमक आङ्कुरे पल्लव भेल अनेक।।1।।
कखने होएत सुफल दिबस बदन देखब तोर।
बहुत दिबस भूखल भमर पिउत चान्द चकोर।।2।।
भन विद्यापति सुन रमापति सकल गुन निधान।
चिर जिबे जीबओ राए दामोदर दसासए अवधान।।3।।

नायक नायिकाकें ओकर रूपवर्णन सुनबैत छथि -- (1) हे सुन्दरी, तोहर विचार-विवेक महान् छह, तहिँ ने बिनु परिचयहि प्रेमक अङ्कुरमे अनेक पात भए गेल। (2) जानि नहि कखन शुभ दिन होएत जे तोहर मुह देखब। बहुत दिनसँ भूखल भ्रमर (तोहर मुखरूपी कमलक मधु) पीअत चकोर (तोहर मुखरूपी) चन्द्रमा (केर किरण) पीअत। (3) विद्यापति कहैत छथि, हे रमापति कृष्ण, सुनह। दशावधान (तेज बुद्धिबाला) दामोदर राय दीर्घायु होथु।

[361]

कुल गुन गौरव सील सोभाओ। सबे देखि[1] चढलिहुँ तोहरि नाओ।।1।।
हमे अबला कत कहब अनेक। आइति पहलों बुझिअ बिबेक।।2।।
आइलि सखि जत[2] साथ रुमार। से सबे भेलि निकहि बिधि पार।।3।।
हठ न करिअ कान्ह कर मोहि पार। सबतह बड़ थिक पर उपकार।।4।।
हमरा भेलि कान्ह तोहरि आस। से न करिअ जे हो उपहास।।5।।
तोहें पर नागर हमे पर नारि। हृदय काम्प तुअ रीति बिचारि।।6।।
भल मन्द जानि करिअ परिनाम। जस अपजस पए[3] रह गए ठाम।।7।।
भनइ विद्यापति तोहें गुनमान। हाथि महतें नब के नहि जान।।8।।

1. सेहे लए। 2. सब। 3. दुर।

नाविक कृष्णसँ राधा अनुनय करैत छथि -- (1) कुलक गुण-गौरव आ' अपन शील स्वभाव सभ किछु लए तोहर नाओपर चढलहुँ। (2) हम अबला थिकहुँ; बेसी की कहबहु। वशमे पड़लहि पर विवेक देखल जाइत छैक। (3) हमरा संग जे-जे सखीसभ आइलि रहए से सभ निकहिना पार भए गेलि। (4) हे कान्ह, हठ छाड़ह। हमरा पार कए दैह। परोपकार सभसँ पैघ वस्तु थिक। (5) हमरा आब तोरे भरोस रहि गेल अछि। एहन काज नहि करह जाहिसँ उपहास होअए। (6) तों पर-पुरुष थिकह आ' हम पर-नारि। तें तोहर रंग-ढंग देखि हमर कलेजा कँपैत अछि। (7) परिणाम

नीक होएत कि अधलाह से सोचि काज करक थिक। अन्ततः जस कि अजस सेह टा टिकल रहि जाइत छैक। (8) विद्यापति कहैत छथि, तों गुणवान् छह। के नहि जनैत अछि जे हाथी महाउतक आगाँ झुकितहिँ अछि।

[362]

कुचनख लागत सखिजन देख। कइसे नुकाएत गिरि[1] ससिरेह।।1।।
आरति अधिक करिअ नहि[2] लोभ। सबे राखए पहिलहि मुखसोभ।।2।।
न हर न हर हरि हृदयक हार। दुहु कुल अपजस पहिल पसार।।3।।
भल[3] कए खेबि लेह निअ दान। रसिक पए राख रसिकजन[4] मान।।4।।
तोहें जदुबर[5] हमे कुलिन गोआलि। अनुचित बाट न कर बनमालि।।5।।
भनइ विद्यापति ओरे गोआरि। बड़े पुने सम्भव आदर मुरारी।।6।।
राजा रूपनराएन जान। सिबसिंह सुखमादेवि रमान।।7।।

1. गिरि कइसे नुकाएत नब। 2. न करिये। 3. भर। 4. गोपिजन। 5. यदुकुल।

राधा कृष्णसँ अनुनय करैत छथि -- (1) एना नहि करह। स्तनमे नह गड़ि जाएत तँ सखीसभ देखत। पर्वतपर द्वितीयाक चान उगि जाएत तँ ओ नुकाओल कोना होएत? (2) आतुर (बेगरतू) भए अधिक लोभ नहि करबाक चाही। सभ पहिने अपन छवि (प्रतिष्ठा) बचबैत अछि। (3) हे कान्ह, तों हमर हृदयक हार नहि छीनह। एहिसँ दूनू कुलमे अपजस (निन्दा) होएत। हम पहिले-पहिल बिकनए चललहुँ अछि। (4) भल कए (निकेना) खेबिकें पार उतारहु आ' अपन दान (खेबा) लेह। रसिक (दही-दूध बेचनिहार) सभक मान रसिके (रसज्ञे) रखैत अछि। (5) तों यदुवर (यदुकुलक श्रेष्ठ सन्तान) थिकह आ' हम कुलीन गोआरि थिकहुँ। हे वनमाली, बाटमे अनुचित व्यवहार नहि करह। (6) विद्यापति कहैत छथि, हे गोआरि, कान्ह बड़ पुण्यें भेटलथुन अछि; हिनक आदर करह।

सुखमादेवीक पति (राजा) शिवसिंह रुपनारायण एकर रस जननिहार थिकाह।

[363]

प्रथमहि सुन्दरि कुटिल कटाख। जिब जोखि नागर देब[1] दस लाख।।1।।
केओ देब[2] हास सुधासभ नीक। जइसन परहोंक तइसन बीक।।2।।
सुनह सुन्दरि[3] नब मदन पसार। जनु गोपह आओब बनिजार।।3।।
रोस दरसि रस राखब गोए। धएलें रतन अधिक मुल होए।।4।।
भलहि न हृदय बुझाओब थाह[4]। आतुर[5] गाहक महग बेसाह।।5।।
भनइ विद्यापति सुनह सयानि। सुहित बचन राखब हिअ आनि।।6।।

1. दे। 2. दे। 3. सुनु सुन्दरि हे। 4. नाह। 5. आरति।

कवि गोरस बेचए चललि राधाकें उपदेश दैत छथि -- (1) हे सुन्दरी, पहिने कुटिल कटाक्षसँ ग्राहककें निहारह। नागर ग्राहक अपन प्राणहुकें तौलि दस लाख दाम दए देतहु। (2) केओ अमृत सन सरस हास देतहु। जेहन बोहनी तेहन बिकरी। (3) हे सुन्दरी, सुनह। ई तोहर नब मदन-पसार (कामरूप मालक दोकानदारी) थिकहु। ई माल छिपावह नहि, पसारिकें राखह। जखन देखतहु तखन ने ग्राहक अओतहु। (4) रोष देखाए (भौंह टेढ़ कए) अपन रस (दूध-दही= शृंगार) बचओने (बिकरी रोकने) रहह। जोगाए कें (दबाए कें।) रखने दानाक मूल्य बढ़ैत अछि। (5) अपन हृदयक थाह (आशय) सहजहि प्रकट नहि करिहह। ग्राहक जतेक आर्त (आतुर) रहत बेसाह ततेक महघ होएत (ग्राहककें आतुर बनओने रहह)। (6) विद्यापति कहैत छथि, हे बुधिआरि गोआरि, सुनह। हम जे हितकर उपदेश देलिअहु तकरा मन रखिहह।

[364]

कते अनुनये अनुगति अनुरोधि। पतिगृह सखिन्हि सोआउलि बोधि।।1।।
विमुखि सुतलि धनि समुखि न होए। भाङ्गल दल बहुलाबए कोए।।2।।

बालँभु बेसनि बिलासिनि छोटि। मेलि न मिलए देलहु हेम कोटि।।3।।
बसन झपाए बदन धर गोए। बादरतर ससि बेकत न होए।।4।।
भुज जुगें चापि जीब जञो साँच। कुच कञ्जन कोरी फल काँच।।5।।
लग नहि सरए करैत[1] कसि कोर। करें कर बार[2] करहि कर जोर।।6।।
एत दिन सैसबे लाओल साठ। अब गए मदने पढ़ाओब पाठ।।7।।
गुरुजन परिजन दुअओ निबार। मोहरे मुन्दल अछ मदन भण्डार।।8।।
भनहि विद्यापति एहु रस जान। सिवसिंह लखिमा देवि रमान।।9।।

1. करए। 2. बाँहि।

कवि नवयौवनाक रतिभयक वर्णन करैत छथि -- (1) सखी लोकनि कतेक अनुनय विनय कए, बुझए-सुझाए कें पतिक घरमे सुतओलनि। (2) बेचारी विमुख भए (मुह घुमाए) सूति रहलि। प्रयास कएनहु सम्मुख नहि होअए। डरें पड़ाएल सेनाकें के घुराए सकत। (3) नायक प्रौढ़ावस्थाक छैक आ' नायिका अल्पबयसी। कोटि-कोटि स्वर्णमुद्रा देलहु पर मिलान (समानता) नहि अओतैक। (8) नायिका वस्त्रसँ मुह झाँपि लैछ। मेघक तरमे मानू चान अव्यक्त भए जाइछ।' (5) काँच बैरक बराबरि नवोद्गत सोनसन स्तन दूनू बाँहिसँ दाबि प्राण जकाँ जोगाए रखलक। (6) ओ लगो नहि अबैछ। कसिकें कोर करैत काल हाथसँ हाथ रोकैत अछि, आ कर जोड़ैत अछि। (7) एतेक दिन शैशवक संगति छलैक। आब मदन अपन पाठ (कामकला) पढ़ओतैक। (8) घरक लोक आ' पड़ोसी दूनू रोकैत छैक (जे काँच बएसमे प्रेम नहि करह)। एखन मदन-भण्डार (कामवासना) मोहर लगाए मूनल अछि। विद्यापति ....।

[365]

बामाँ बयन नयन बह नोर। काम्प कुरङ्गिनि केसरि कोर।।1।।
एकें गह चिकुर दोसरे गह गीम। तेसरे चिबुक चउठहि कुचसीम।।2।।
निबिबन्ध फोएक नहि अबकास। पानि पञ्चम के बाढ़लि आस।।3।।

राधा माधव प्रथमक मेलि। न पुरल काम मनोरथ केलि।।4।।
भनइ विद्यापति प्रथमक रीति। दिने दिने बाला बुझति पिरीति।।5।

कवि चतुर्भुज कृष्णक संग नवयौवना राधक संगमक वर्णन करैत छथि -- (1) राधा मुख वाम (विपरीत) दिस कएने छथि। आँखिसँ नोर बहैत छनि। जेना सिंहक कोर मे हरिणी तहिना कँपैत छथि। (2) चतुर्भुज कृष्ण एक हाथसँ खोपा पकड़ने छथि, तोसर सँ गरदनि, तेसरसँ दाढी आ' चारिमसँ स्तन। (3) चीर खोलबाक उपाय नहि भेटैत छनि तँ पाँचमो हाथ होएबाक कामना करैत छथि। (4) राधा आ' कृष्णक ई पहिलुक संगम थिक। तेँ काम-केलि करबाक मनोरथ नहि पुरलनि। (5) विद्यापति कहैत छथि प्रथम संगमक इएह रीति थिक। नवयौवना राधा दिनानुदिन प्रीतिक रीति बुझैत जाएत।

[366]

एके अबला अओके सहजहि[1] छोटि। कर धरइते करुना कर कोटि।।1।।
ऑकम नामे रहए हिअ हारि। जनि करिवर कर पळलि[2] पञोनारि।।2।
नअन नीर भरि नहि-नहि बोल। हरि डरे हरिनि जइसे जिब डोल।।3।।
कउसलें कुचकोरक करे लेल। मुख देखि तिरिबध संसअ भेल।।4।।
बारि बिलासिनि बेसनि कान्ह। मदन कौतुकिआ हटल न मान।।5।।
भनइ विद्यापति सुनइ मुरारि। अति रति हठे नहि जीउति[3] राइ।।6।।

1. सहजक। 2. तर खसलि। 3. जीअए।

कवि मुग्धा नायिकाक यौन आतंकक वर्णन करैत छथि -- (1) एक तँ अबला आ' तहिपर छोटि (नवयौवना)। कृष्ण हाथ धरए लगैत छथि तँ राधा लाख करुणा (दया-याचना) करए लगै छथि। (2) आलिंगनक नाम सुनितहि तेना हताश भए जाइ छथि जेना हाथीक हाथमे पड़ल कमलिनी। (3) आँखिमे नोर भरि नहि-नहि करैत छथि। छाती तेना धुकधुक करए लगैत छैन जेना सिंहक डरेँ हरिणीक। (4) कृष्ण

कौशलपूर्वक राधाक स्तनपर हाथ देलनि कि हुनक मुह देखि लगलनि जेना आब हुनक प्राण छूटि जाएत। (5) राधा अल्पवयसी आ' कृष्ण व्यसनी (कामुक) ई अन्तरक रहितहुँ पक्का खेलाड़ी कामदेव मना नहि मानैत छथिन। (6) विद्यापति कहैत छथि, हे कृष्ण, सुनह। रति करबाक हेतु अति हठ करबह तँ राधाक प्राण चलि जएतैक।

[367]

जखने लेल हरि कञ्चुअ अछोरि। कत परि जुगुति[1] कएल अङ्ग मोरि।।1।।
तखनुकि कहिनी कहहि न जाए। लाजे बिमुखि रहलिँहु सिर नाए[2]।।2।।
करें न मिझाए दूर बर दीब। लाजे न मरए नारि कठजीब।।3।।
ऑकम कठिन सहए के पार। कोमल हृदय उखड़ि गेल हार।।4।।
भनइ विद्यापति तखनुक भान। कओमे कहब[3] सखि होएत बिहान।।5।।

1.कत परजुगुति। 2. सुमुखि धनि रहलि वजाए। 3. कहल।

राधा अपन संगमक पराभव सखीकेँ सुनबैत छथि -- (1) जखन कान्ह हमर चोली खोलि छीनि लेलक, तखन हम अङ्ग मोड़ि मोड़ि कतेक तरहेँ (लाज बचएबाक) चेष्टा कएलहुँ। (2) ओहि कालक कथा कहल नहि जाए। लज्जावश विमुख भए मूड़ी गोंति लेल। (3) दीप जे बरैत छल तकरा मिझबए चाहल मुदा ओ दूरमे छल, हाथे नहि पहुँचल। नारि कठजीब होइत अछि, कतबो लाज होउक, ओ मरत नहि। (4) कान्हक दृढ आलिंगन के सहि सकैत अछि। कोमल छातीपर हार उखड़ि गेल। (5) विद्यापति कहैत छथि, ताहि समयमे राधाकेँ भान भेलैक, केओ कहए जे परात भए गेल।

[368]

अबला अंशुक बालभु लेला। पानि पल्लव धनि आँतर देला।।1।।
हठ न करह कान्ह[1] न पुरत कामे। प्रथमक रभस बिचारक ठामे।।2।।
मदन भण्डार सुरतरस आनी। मोहरे मुन्दल अछ असमय जानी।।3।।
मुकुलित लोचन नहि परगासे। काम्प कलेबर हृदय तरासे।।4।।

आबे नव जौबन समय निहारी। अपनेहि बेकत होएत परचारी।।5।।
भनइ वियापति नव अनुरागी। सहिअ पराभव पिअ हित लागी।।6।।

1. पहु।

कवि स्थितिक वर्णन करैत छथि -- (1) वल्लभ कृष्ण अबला राधाक आँचर कात कएलनि तँ राधा करकमलसँ अन्तर देलनि (स्तन झाँपि लेलनि)। (2) एहि स्थितिमे हुनक सखी कहैत छथिन -- हे कान्ह, हठ नहि करह। हठ कएने तोहर इच्छाक पूर्ति नहि होएत। ई थिकहु पहिल संगत। एहिमे कनेक विवेक चाही। सुरत-रस आनि कामदेवक भंडारमे सीलबन्द कए राखल अछि किएक तँ भोगबाक समय एखन नहि भेल अछि। (4) देखह, आँखि (लाज आ' भयसँ) मुकुलित (संकुचित) कएने अछि। खोलि नहि पबैत अछि। देह कँपैत छैक आ' छाती धुकधुक करैत छैक। (5) नव यौवन (नवोदित स्तन) आब समुचित समय देखि स्वयं परचारि व्यक्त (उन्नत) होएत। (6) विद्यापति कहैत छथि, हे नवीना प्रेमिका, प्रियतम पर कृपा कए किछु पराभव सहबाक चाही।

[369]

हमे अबला तोहें बलमन्त नाह। जिब दए न होअ[1] पेम निरबाह।।1।।
पढ़ि मनसिज तन्त[2] दरसह भाब। कौतुके करिवर करिनि खेलाब।।2।।
परिहर कन्त देह जिब दान। आजे होएत नहि निसि अवसान।।3।।
दइन दया न निकारुन तोहें[3]। नहि तिरिबध डर हृदअ न मोहें[4]।।4।।
रमनक सुख[5] जञो रमनी जीब। मधुकर कुसुम राखि मधु पीब।।5।।
भनइ वियापति पहु रसमन्त। रतिरस रभस होएत नहि अन्त।।6।।

1. जीबक बदले। 2. मत। 3. नहि दारुन तोहि। 4. मोहि। 5. रमन सुखे।

राधा संगममे कठोर व्यवहार करबाक आरोप कृष्ण पर लगबैत छथि -- (1) हम अबला (कमजोर) छी, हे स्वामी, तों बलमन्त छह। प्रेमक निर्वाह केओ प्राण गमाए नहि कए सकैत अछि। (2) कामशास्त्र पढ़ह आ'

ताहि अनुसार अपन भाव (व्यवहार) देखाबह। देखह, हाथी कोना हाथिनीकें खेलबैत अछि। (3) हे स्वामी, हमरा प्राणदान देह (हमर प्राण नहि हरह)। लगैत अछि जेना आइ एहि रातिक अन्त नहि होएत। (4) तों निष्करुण (निर्दय) छह। तोरा ककरो दीनता पर दया नहि होइत छहु। तोरा ने स्त्रीवधक डर छहु, ने हृदयमे एको रती मोह-ममता छहु। (5) रमणक सुख तखनहि सम्भव जखन रमणीक प्राण सुरक्षित हो। देखह, भ्रमर फूलकें बचबैत मधुपान करैत अछि। (6) विद्यापति कहैत छथि, हे राधा, तोहर पिआ रसिक छथि। कामकेलिमे रभसक (केलिविलासक) कतहु अन्त नहि होएत (तों कतबो प्रतिरोध करैत रहबह)।

[370]

ए कि आरे,
अनलहु न आबए पासे। कोरहु करइत काम्प तरासे।।1।।
नहि नहि नहि पए भाखे। जइअओ जतन करिअ पए लाखे।।2।।
सुमुखि विमुखि रह सोई। पअ पळलहु नहि परसनि होई।।3।।
सेज चकित रह जागी। छटपट कर जनि परसलि आगी।।4।।

कवि मुग्धा राधाक रतिभयक वर्णन करैत छथि -- (1) अरे, ई की? पहुक अनलहु पर राधा लग नहि अबैत अछि। कोरमे लेबहु काल डरें काँपए लगैत अछि। (2) पिआ लाख यत्न करैत छथिन तैओ ओ सभ प्रस्तावमे केवल नहि नहि बजैत अछि। (3) सुन्दरी विमुख भए (दोसर दिस मुह घुमाए) सूति रहैत अछि। पाएर पड़लहु पर प्रसन्न नहि होइत अछि। (4) सेज पर चकित भेलि जागलिए छटपट करैत रहि जाइत अछि जेना आगि भिड़ल होइक।

[371]

परसें बुझल तनु सिरिसक फूल। बदनक सौरभ[1] सरसिज तूल।।1।।
मधुर बानि जनि[2] कोकिल साद। पिउलें अधर मुखें अमिअ सोआद[3]।।2।।

सुन्दरि बूझल तोहर बिबेक। चारि जेओल भल[4] भूखल एक।।3।।
बासर देखहि न पारल पूर[5]। दूतिक बचने अएलाहुँ एत दूर।।4।।
पओलह सीतल पानि बिसेखि। हरह पिआस कि करबह देखि।।5।।
भनइ विद्यापति सुन बरनारि। नअनक आतुर रहल मुरारि।।6।।

1. बदन सुसौरभ। 2. सुरे। 3. सवाद। 4. भरि। 5. पारिअ सूर।

कृष्ण राधाक संग केलि-विलास करैत छथि -- (1) हे राधा, स्पर्शसँ बूझल जे तोहर शरीर सिरीसक फूल-सन कोमल छह्। मुहक सौरभ कमलक फूल-सन लागल। (2) तोहर बोल कोइलीक कुहकब-सन लागल। हमर रसना तोहर अधरामृतक स्वाद पओलक। (3) हे सुन्दरी, तों विवेक (न्याय) करबामे चुकलह। हम चारि इन्द्रिय त्वचा, नाक, कान आ' जिह्वाकें तों तृप्त कएलह, परन्तु एक आँखि भुखले रहि गेल (तोहर रूप देखि नहि सकलहुँ)। (4) दिनमे पूरा-पूरा देखि नहि पओलहु, तें दूतीक कहने फेर रातिमे तोहर रूप देखए एतेक दूर अएलहुँ। (5) तों विशिष्ट प्रकारक शीतल पानि (पाणि/जल) पओने छह। ओहिसँ हमर पिआस हरह। देखिकें की करबह? विद्यापति कहैत छथि, हे सुन्दरी सुनह। कृष्ण ठीके तोरा नयन भरि देखबा लेल आतुर छथुन।

[372]

आबे न लहति आइति मोरि। परे परतेख लखबि चोरि।।1।।
बेरा एक जीब राख कन्हाइ। परक पेअसि देह पठाइ।।2।।
चुम्बने लेपित[1] काजर कार[2]। अधर निरसि तोड़लह हार।।3।।
नखेरि खत कुचजुग लागु। कैसे होइत गुरुजन आगु।।4।।
भन विद्यापति रस सिङ्गार। सङ्केत आइलि तेजि के पार।।5।।

1.लेपि। 2. धार।

दूती कृष्णसँ राधाकें मुक्त करबाक अनुरोध करैत छथि -- (1) हे कान्ह, आब एहिसँ आगाँ हमर वश नहि चलत। लोकसभ ई चोरि (गुप्त

मिलत) अपना आँखिएँ देखि लेत (किएक तें परात होएबापर अछि)। (2) एक बेर राधाक प्राण (प्रतिष्ठा) बचाबह। आब परस्त्रीकें अपन पति लग पठाए दहक। (3) चुम्बनसँ तों कारी काजर लेपि अधरकें नीरस कए देलहक आ' हार तोड़ि देलहक। (4) स्तन दूनूपर नखक्षत कए देलहक। से सभ लए ओ गुरुजनक सोझाँ कोना होएत। (5) शृंगाररसक गीतक रचयिता विद्यापति कहैत छथि, संकेतस्थलमे आइलि रमणीकें के छोड़ि सकैत अछि।

[373]

साजनि, अकथ कहि न जाए।
नबल[1] असन ससिक मण्डल भीतर रह नुकाए।।1।।
कदलि उपर केसरि देखल केसरि मेरु चढ़ला।
ताहि उपर निसाकर देखल कीर ता पर बैसला।।2।।
कीर उपर कुरङ्गिनि देखलि चकित भमए जनि।
कीर कुरङ्गिनि उपर देखल भमर उपर फनी।।3।।
एक असम्भव आओर देखल जल बिना अरबिन्दा।
बेबि सरोरुह उपर देखल जैसन दुतिआ चन्दा।।4।।
भन विद्यापति अकथ कथा ई रस एक पए[2] जान।
राजा सिबसिंह रुपनराएन लखिमादेबि रमान।।5।।

1. अबल। 2. केओ केओ।

सखी राधाक रूपक वर्णन करैत छथि -- (1) हे सखी, एहन अनटोटल (असंगत बात) कहल नहि जाए। नवोदित अरुण देवता (पाएरक तरबा) चानक दल (पाँच नह) केर तरमे नुकाएल छथि। (2) कड़रिक थम्ह (जाँघ) केर उपर सिंह (कटि) देखल आ' ओहि सिंह पर मेरु (स्तन) चढ़ल अछि। मेरुक उपर चान (मुख) देखल आओर तकरा उपर सूगा (नाक) बैसल देखल। (3) सूगाक उपर हरिन (आँखि) देखल जे अकचकाइत घूमि रहल छल। ओहि सूगा आ' हरिन दूनूक उपर भ्रमर

(भऊँह) देखल आ' तकरा उपर साप (वेणी)। (4) एक आओर अकथ देखल - बिनु पानिक कमल फुलाएल (हाथ) आ' दूनू कमलक उपर द्वितीयाक चान (नख) देखल। (5) विद्यापति ई अकथ कथा कहल। एकर रस जनैत छथि लखिमा... ।

[374]

प्रथम दरस रस रभस न जानए कि करति पहु सञो केली।
नवि नलिनी जञो कुञ्जरे गञ्जलि दमने दमन तनु भेली।।1।।
कि आरे देखिअ X X अनूपे।
मधुलोभे कुसुम मुकुल दल कलपए आरति भुखल मधूपे।।

कवि नवयौवनासँ नायकक संगमक वर्णन करैत छथि -- (1) नायिकाक प्रथम दर्शन (संगम) थिकैक। ओ रंगरभस नहि जनैत अछि, तखन पिआक संग काम-केलि कोना करत। (2) ओकर दशा ओहने छैक जेहन हाथी सँ उधेसल कमल-लताक।... (?) अहा, अद्भुत देखि रहलि छी- -आर्तिवश भूखल भ्रमर फूलक कली लग कलपि रहल अछि।

[375]

आजे देखलिसि कालि देखलिसि आज कालि कत भेद।
सैसबे बापुरे सीमा छाडलि जउबने बान्धल फेद।।1।।
सुन्दरि कनक केआसुनति गोरी।
दिने-दिने चान्द कला जाञो[1] बाढलि जउबन सोभा तोरी।।2।।
बाल पओधार बदर[2] सहोदर अनुमापिअ अनुरागे।
कञोने पुरुख करे परसए पाओल जे तनु जितल परागे।3।।
मन्द हास बङ्किम कए दरससि[3] चङ्गिम भउह बिभङ्गे।
लाजे बेआकुलि समूह न हेरसि[4] आउल नयन तरङ्गे।।4।।
विद्यापति कविवर एहु गाबए नब जउबन नब रन्ता[5]।
सिबसिंह राजा एहु रस जानए मधुमतिदेवि सुकन्ता।।5।।

1. सञो। 2. बदन। 3. दरसए। 4. हेरए। 5. कन्ता।

नायक नवयौवनाक वर्णन करैत छथि -- (1) हे सुन्दरी, तोरा आइ देखलिअहु आ' काल्हि देखलिअहु। आइ आ' काल्हिमे कतेक भेद भए गेल अछि। बेचारा शैशव सीमा छाड़ि पड़ाएल आ' यौवन गढ़ बन्हलक। (2) हे स्वर्णकदली-सन गोरि सुन्दरी, तोहर यौवनक शोभा चानक कला जकां दिन-दिन बढ़ि रहल छहु। (3) तोहर नव उठल स्तन जे बैर सन छहु, ताहिसँ तोहर, रागोदयक (काम-बोधक) अनुमान होइत अछि। के पुरुष तोहर ओहि स्तनकें छूलक जे ओ परागकें जीति लेलक (?)। (4) सुन्दर भऊँहकें टेढ़ कए मन्दहास तँ देखबैत छह, किन्तु आकुल नयनकें तरंगित कए सम्मुख तकैत नहि छह। (5) ई गीत कविवर विद्यापति रचलनि। नव यौवनमे नव रमण केनिहार (रन्ता) मधुमती देवीक पति राजा शिवसिंहक ई रस जनैत छथि।

[376]

दिढ परिरम्भनें पीडलि कान्हे[1]। उबरि अएलाहुँ सखि पुरुबक पुने।।1।।
टुटि छिडिआएल मोतिम हारे। सिन्दुरे लोटाएल सुरङ्ग पवारे।।2।।
सुन्दर कुचजुग नखखत भरी। जनि गजकुम्भ बिदारल हरी।।3।।
अधर दसन देखि जिब मोर काँपे। चान्दमण्डल जनि राहुक झाँपे।।4।।
समुद ऐसनि निसि न पाबिअ ओरे।[2] कखन उगत रवि हित भए मोरे[3]।।5।।
मोञे नहि जाएब सखि तन्हि ठामे[4]। बरु जिबे मारि नडाबथु कामे।।6।।
भनइ विद्यापति तेज भय लाजे। आगि जारिअ पुनु आगिक काजे।।7।।

1. मदने। 2. ऊरे। 3. मोर हितकर सूरे। 4. तन्हि पिआ ठामे।

राधा अपन संगम-वेदना सखीकें सुनबैत छथि -- (1) हे सखी, कान्ह हमरा ततेक जोरसँ पँजिअओलक जे पिचाए गेलहुँ। पूर्व कालक पुण्यक बलें उबरि अएलहुँ। (2) मोतिक हार टूटिकें छिडिआए गेल जेना सिन्दूर पर सुन्दर प्रवाल लोटाएल तो। (सिन्दूर=देह, प्रवाल= मोति)। (3)

सुन्दर स्तन पर नखक्षत भरि देलक जेना हाथीक मस्तककें सिंह क्षत कए देने हो। (4) अधरक दंशन देखि हमर ह्रदय कापए लागल, जेना राहुक आक्रमणसँ चान। (5) राति मानइ समुद्र भए गेल, कतहु ओर नहि पाबी। मन-मन सोची जे कखन सूर्य हमर भए उगताह। (6) आब फेर हम पिआ लग नहि जाएब, बरु कामदेव प्राण हरि नड़ाए देथु। (7) विद्यापति कहैत छथि, हे सुन्दरी, भय आ' लाज छाड़ह। आगि जरबैत अछि, तैओ तँ आगिक काज होइतहिँ छैक।

[377]

कि करति अबला हठ कर[1] नाह। निरदए भए उपभोगए चाह।।1।।
परम प्रबल पहु कोमलि नारि। हाथि हाथ जनि पड़लि पत्नोनारि।।2।।
कि कहब हे सखि नाह विवेक। एकहि बेरि रस माङ्ग अनेक।।3।।
कएल कात[2] कत करजुग लाए। तइअओ लुबुध रच रतिक उपाए[3]।।4।।
बिनु अबसर हठे रस नहि आब। फुलला फुल मधुकर मधु पाब।।5।।
भनइ विद्यापति गुनक निधान। जे बुझ ताहि लाग पञ्चबान।।6।।

1. कए। 2. कात काकु। 3. मुगुध रति रचए उपाए।

कवि नवयौवनाक सम्भोगक वर्णन करैत छथि -- (1) अबला की करओ? ओ विवश अछि। पिआ हठ करैत छथिन। ओ निर्दय भए ओकर उपभोग करए चाहैत छथि। (2) पिआ परम प्रबल छथिन आ' नारी कोमलांगी (नवयौवना) अछि। मानू कमललता हाथीक हाथ मे पड़ि गेल। आगाँ नायिका सखीसँ कहैत छथि -- (3) हे सखी, पहुक विवेक की कहिअहु। ओ तँ एकहि बेर सभ रस (सभ प्रकारक संभोग) चाहैत अछि। (4) दूनू हाथ सँ ओकरा कात करबाक (टारबाक) बहुत प्रयास कएल, तैओ ओ लोभी रतिक उपाय रचैत रहल। (5) किन्तु अनुकूल अवसर (उचित बएस आदि) नहि रहला पर हठ कएने रस नहि भेटि सकैत अछि। फूल फूलएलहिपर भ्रमर मधुपान कए सकैत अछि। (6) विद्यापति कहैत छथि,

जे गुणवान् व्यक्ति रस बूझैत अछि कामदेव तकरहि पर प्रहार करैत छथिन।

[378]

रामा तोरि बढाउलि केलि।
कतए देखल नबि नलिनी मत मतङ्गज मेलि।।1।।
गोर सरीर पयोधर कोरी परसे अरुन भेलि।
कनक बलरि जनि रतोपल मुकुल उदय देल।।2।।
छइल जन जदि दैन न भावए[1] ताहेर ह्रदय मन्दा।
खने खने रति रभस आगर दिने दिने नव चन्दा।।3।।
मञे नबीना पिआ सआना कुपित कुसुम बान।
केसरिकरे करिनि पड़लि तासु महते छोड़ान।।4।।
से जे अवसर मन न बिसर नयन ढलए[2] नोर।
सिरिस कुसुम खडगे खेलौलन्हि भमर भरे जे भोर।।5।।
भन बिद्यापति सुनह जौबति पेमक गाहक कन्त।
राजा शिवसिंह रूपनराएन सुरस बिन्द सुतन्त।।6।।

1.पाइअ। 2. चलए।

मुग्ध नायिका दूतीकें उपराग दैत छथि -- (1) हे सखी, ई केलि (रंग-रभस) तोरे बढाओल थिक (तोँही एकर संचालिका थिकह)। नव कमललता आ' मत्त हाथीक बीच मेल कतए देखल गेल अछि। (2) हमर गोर देहमे जे बैरक फड़-सन स्तन आबि रहल अछि से ओहि निर्दयक हाथेँ मर्दित भए लाल भए गेल आ' लगैछ जेना सोनाक लता (नायिकाक देह) मे लाल कमल फूलाएल हो। (3) छइल (रसिक) लोक जँ ककरो दैन्य (व्यथा) नहि बूझए तँ बूझी ओकर ह्रदय कुत्सित अछि, जेना दिन-दिन शुक्ल पक्षक चान। (4) हम नबि छी, पिआ प्रौढ़, आ' कामदेव क्रुद्ध छथि। हथिनी सिंहक पाला पड़लि। सिरीसक फूल पर खड्ग चलओलनि जे भ्रमरहुक भार नहि सहि सकैत अछि (?)। (5) ओ जे रतिरंगक क्षण छल

से बिसरि नहि पबैत छी, आँखिसँ नोर बहए लगैत अछि। (?)। (6) विद्यापति कहैत छथि, हे युवती सुनह, पहु तोहर प्रेमक गाहक छथुन। राजा शिवसिंह रूपनारायण...।

[379]

कह गजगामिनि जत मन जागे। अपन नागरिपन पिअ अनुरागे।।1।।
पिआ रसपेसल प्रथम समाजे। कत खन राखब अखण्डित लाजे।।2।।
आँचर चीर धरए हसि हेरी। नहि-नहि बचन भनब कत बेरी।।3।।
दुहु मन पुरल उभर रतिरङ्गे। तइअओ से धनुगुन न छाड़ अनङ्गे।।4।।
भनइ विद्यापति एहु रस जाने। सिबसिंह लखिमा देवि रमाने।।5।।

राधा सखीक संग रतिरंगक गप करैत छथि। पहिने सखी पुछैत छनि -- (1) हे गजगामिनी, जतेक जे मन पड़ैत छह, अपन रसिकता आओर पिआक अनुराग सुनाबह तँ। राधा उत्तर दैत छथिन -- (2) हमर पिआ रसिकशिरोमणि छथि, आ' ताहिपर प्रथम संगम। कतेक काल लाज बचओने रहब। (3) पिआ बिहुँसिकेँ मुह ताकि आँचर आ' चीर घीचए लगलाह। कतेक बेर नहि-नहि रटैत रहब। (4) रतिरंगमे दूनूक मन पूरल, तैओ ओ कामदेव धनुख चलाएब नहि छोड़लनि। (5) विद्यापति कहैत छथि, एकर रस जननिहार थिकाह लखिमादेवीक पति शिवसिंह।

[380]

निधनकाँ जञो धन किछु होअ करए चाह उछाह।
सिआरकाँ जञो सींघ जनमए गिरि उपाड़ए चाह।।1।।
दूती, बूझलि तोहरि मति।
छाड़रे चन्दा भरइते बुलह कि हरह ताहे विपती।।2।।
पिपड़ी काँ जञो पाँखि जनमए अनल कर झम्पान।
थोड़े पानि चहचह कर पोठी जगत के नहि[2] जान।।3।।
जइअओ जकर मुह पेच सन दूसए चाहए आन।
हम तह के बिखहु आगर ढोँढहुकाँ थिक भान।।4।।

झरक पानि डोभक कोइ गरब उपजु जाहि।
भन विद्यापति दहक कमल दूसए चाहए ताहि।।5।।

1. छोटा। 2. पोटी के नहि।

राधा कृष्णक घमंडक निन्दा करैत छथि -- (1) निर्धनकेँ जँ धन होइक तँ ओ छहर-महर करए लागत। सिआरकेँ जँ सींध होइक ओ पर्वतकेँ उपाड़ए लागत। (2) हे दूती, तोहर बुद्धि गमि लेलिअहु।........... (?) चुट्टीकेँ जँ पाँखि जनमैक तँ ओ आगिमे कूदए लागत। थोड़ पानिमे पोठी चहचह करैत अछि से बात संसारमे के नहि जनैत अछि। (4) जकर अपन मुह उल्लू सन होइत छैक सेहो अनका दूसए चाहैत अछि। ढोँढ़हुकेँ होइत छैक जे बिखहुमे (फुफकारे कटबामे नहि) हमरासँ उपर के अछि। (5) विद्यापति कहैत छथि जे जकरा झड़ (लघुवृष्टि) केर पानि आ' डबराक मलकोका पर गर्व होइत छैक से झीलक कमलकेँ दूसए चाहैत अछि।

[381]

कउड़ि पठओलेँ पाब नहि घोर। घीय उधार माङ्ग मतिभोर।।1।।
बास न पाबए माङ्ग उपाति। लोभ रासि थिक पुरुखक जाति[1]।।2।।
कि कहब आजे कि कउतुक भेल। अपदहि कान्हक गौरव गेल।।3।।
अएलें बइसक[2] पाब पोआर। सेजक कहिनी पुछए गोआर[3]।।4।।
ओछाओन खण्डतरि पलिआ चाह। आओर कहब कत अहिरिनि नाह।।5।।
भनइ बिद्यापति पहु गुनमन्त। सिरि सिबसिंह लखिमा देबि कन्त।।6।।

1. लोभक रासि पुरुख थिक जाति। 2. बइसए। 3. बिआर।

राधा कृष्णक लोभ आ' मिथ्या गौरवक निन्दा सखीकेँ सुनबैत छथि -- (1) कौड़ी पठओने घोरो नहि भेटि सकैत छैक (घीबक कोन कथा)। मूर्ख घृत उधार माङत। भेटतैक बासो नहि आ माङत उपाति। पुरुख स्वभावतः बड़ लोभी होइत अछि। (2) हे सखी, की कहिअहु। आइ एकटा अपूर्व कौतुक (मनोरंजक घटना) भेल। अनेरे कान्ह गौरव गमओलक। (4)

आएल तँ बैसकमे देल गेलैक पोआर, तैओ ओ गोआर पूछए लागल जे सेज कतए अछि? (5) ओछाओनमे चाहैत छल पलंग आ'भटलैक खरतर। बेसी की कहबहु, कान्ह गोआरिक साएँ थिक (एतबहिसँ बूझि जाह)। (6) विद्यापति कहैत छथि, हए राधा, तोहर पहु एहन अधम नहि, गुणवान् छहु (ओकर आदर करह)। लखिमादेवीक पति श्री शिवसिंह एकर रस जनैत छथि।

[382]

हठे न हलब मोर भुजजुग जाँनि। भाङ्गि, जाएत किसलय बिस भाँति[1] ।।
हठ न करिअ हरि न करिअ लोभ। आरति अधिक न रह मुखसोभ।।2।।
हटिए हलिअ नित्र नयन चकोर। पीवि हलत धासि ससिमुख भोर।।3।।
परसि न हलब पयोधर मोर। भाङ्गि जाएत मोर कनक कटोर[2]।।4।।
भनइ विद्यापति एहु रस जान[3]। सिवसिंह लखिमादेवि रमान।।5।।

1.बिस किसलय काँति। 2. गिरिनक कचोर। 3.भान।

राधा काम-केलिमे कृष्णक रभस केर प्रतिरोध करैत छथि -- (1) हे कान्ह, तों हमर बाँहिकें हठपूर्वक दबाबह नहि। हमर बाँहि कमलक फूलक डाँट (मृणाल) सँ कोमल अछि, दबएबह तँ ठामहि टूटि जाएत। (2) हे कान्ह, हठ नहि करह। बेसी लोभ नहि करह। अधिक आर्ति (आतुरता) देखओने मुखसोभ (प्रतिष्ठा, छवि) नहि रहि जाइत छैक। (3) हे, अपन चकोररूपी आँखिकें हटाए लेह, ओ हमर मुखरूपी चान (केर अमृत) पीबि जाएत। (4) हमर स्तन छूबह नहि, हमर सोनाक कटोरा फूटि जाएत। (5) विद्यापति कहैत छथि, लखिमा देवीक पति शिवसिंह ई रस जनैत छथि।

[383]

पहिल पसार संसार सार रस परहोंक पहिल तोहार हे।
हठे आँचर मोर फेरि न हलबे रस भए जाएत उधार हे।।1।।

ए हरि ए हरि आरति परिहर हठ नहि कर बिच[1] बाट हे।
जेहे बेसाहल से कि बेसाहब उचित मनोभव हाट हे।।2।।
कञ्चने गढ़ल पयोधर सुन्दर नागर जिबन अधार हे।
छुएैते रतन तुल न रह अधिक मुल किनहि न पार गमार हे।।3।।
भनइ बिद्यापति सुनह सुचेतनि हरि सञो कइसन मान[2] हे।
कपट तेजि कहु भजह जे हरिसजो अन्त काल होअ ठान हे।।4।।

1. परिहरि हठ न करिअ पहु। 2. समान।

राधा कृष्णक हठकारिताक प्रति रोष करैत छथि -- (1) हे कान्ह, ई हमर संसारमे सभसँ मूल्यवान वस्तु रस (शृंगाररस) केर पहिल दोकान थिक। एकर पहिल बिकरी (बोहनी) तोरहिसँ होएत। हठपूर्वक हमर आँचर नहि हटाबह। से कएने रस उधार भए जाएत। (2) हे कान्ह, आतुरता छोड़ह। बाट-घाटमे एना हठ (बलजोरी) नहि करक चाही। मदनक हाट पर जे एक बेर बेसाहि चुकल छह सेह फेर बेसाहब उचित नहि होएतहु। (3) हमर ई सुन्दर पयोधर सोनसँ गढ़ल थिक। इएह थिक नागर लोकक जीवनाधार। रत्नतुल्य एहि पयोधर कें जँ छूबह तँ एकर मूल्य घटि जाएत। ई गमार नहि कीनि सकैत अछि। (4) विद्यापति कहैत छथि, हे बुधिआरि गोपी, सुनह। कान्हसँ मान केहन। कपट छाड़िकें कान्हकें भजह जाहिसँ अन्त कालमे सद्गति होअहु।

[384]

बड़ कौसल तुअ राधे। किनल कान्ह तोहें[1] लोचन आधे।।1।।
रितुपति हटबइ नहि परमादी। मनमथ मधथ उचित मुलवादी।।2।।
द्विज पिक लेखक मसि मकरन्दा। काप भमर पद साखी चन्दा।।3।।
बहि रतिरङ्ग लिखापन माने। सिरि सिवसिंह सरस कवि भाने।।4।।

1. कन्हाई।

सखी राधाक प्रेमक प्रशंसा करैत छथि -- (1) हे राधा, तोहर कौशल प्रशंसनीय अछि। तौं आधे नजरिमे (एतबे दाममे) कान्ह-सन दासकें कीनि लेलह। (2) एहि दासक खरीद-बिकरीमे हाटक मालिक छल न्याय करबामे अचूक ऋतुराज वसन्त। मध्यस्थ (दलाल) छल उचित मूल्य निर्धारित कएनिहार कामदेव। (3) दास किनबाक दस्तावेज लिखनिहार छल द्विज (दू अर्थ, पक्षी आ ब्राह्मण) कोकिल। मोसि भेल मकरन्द। काप (कलम) भेल भ्रमर। साक्षी भेलाह चान। (4) बहि (दासक कर्तव्य) भेल रतिरङ्ग करब। लेखन-शुल्क भेल मान। सरस कवि विद्यापति ई रचल श्री शिवसिंहक हेतु।

[385]

कञ्चन गढ़ल हृदअ हथिसार। तौं[1] थिर थम्भ पयोधर भार।।1।।
लाज सिकर धर दिढ कए गोए। आनक बचने हलह जनु फोए।।2।।
दुर कर आगे सखि चिन्ता आन। जउबन हाथि करिअ अबधान।।3।।
मनसिज मदजलें जञो उमताए। धरिहसि पिअतभ ऑंकुस लाए।।4।।
जाबे न सुमत होअ ताबे[2] अगोर। मुसइते बन्धिहिसि[3] मानस चोर।।5।।
भनइ विद्यापति सुन मतिमान। हाथि महते नब के नहि जान।।6।।

1. तहि। 2. ततनि। 3. मनिहिसि।

सखी नायिकाकें ओकर यौवनक वर्णन सुनबैत अछि -- (1) हे सखी, तोहर ई यौवन हाथी थिकहु। सोनसँ गढ़ल तोहर हृदय हथिसार थिक। दूनू स्तन तकर खाम्ह थिक। (2) एकरा लाजरुपी कड़ीसँ कसि कें बान्हि सुरक्षित राखह। अनका कहने खोलह नहि। (3) आन चिन्ता छाड़ह। एहि यौवनरूपी हाथीपर ध्यान राखह। (4) ई जँ काम-मदक जलें उन्मत भए जाए तँ पतिरुपी अंकुशसँ वशमे करिहह। (5) जा धरि सुमत (उन्मादहीन) नहि होउक ताधरि अगोरने रइहह। मनरूपी चोर जँ चोरबए

आबए तँ ओकरा बान्हि रखिहह। (6) विद्यापति कहैत छथि, हे बुधिआरि, सुनह। के नहि जनैत अछि जे हाथी महाउलक आगाँ झुकैत अछि।

[386]

उठ उठ माधव कि सुतसि मन्द। गहन लागु देख पुनिमक चन्द।।1।।
हार रौमाबलि जमुना गङ्ग। त्रिवलि तरङ्गिनि विप्र अनङ्ग।।2।।
सीन्दूर तिलक तरनि सम भास। धूसर मुखससि नहि परगास।।3।।
एहन समय पूजह प्रञ्चबान। होअ उगरास देह रतिदान।।4।।
पिक मधुकर पुर कहइते बूल। अलपेओ अबसरें दान अतूल।।5।।
विद्यापति कवि एहु रस भान। राए सिबसिंह सब रसक निधान।।6।।

राधा कृष्णसँ संगम करबाक अनुरोध करैत छथि -- (1) हे कान्ह, उठह-उठह। आब अलसाएल सुतैत की छह। देखह, पूर्णिमाक चानमे गहन लागल अछि। (2) हार गङ्गा थिक, रोमावली यमुना आ' त्रिवली सरस्वती नदी। (एहि त्रिवेणी-संगम मे) कामदेव ब्राम्हण (पुरोहित-पंडा) थिकाह। (3) सिन्दूरक ठोप (उदय-कालक लाल) सूर्य थिकाह। मुखरुपी चान मे प्रकाश (जोति) नहि रहल। (4) एइन (स्थान आ') समय मे ब्राह्मण कामदेवक पूजा (संगम) करह। उगरास होअओ। रति-दान करह। (5) कोकिल आ' भ्रमर घोषणा करैत फिरैत अछि जे अवसर पर (पुण्यकालमे, खगताक बेर) थोड़बो दान (वा सहायता) अतुलनीय होइत अछि। (6) विद्यापति कवि ई रसपूर्ण गीत रचल। राजा शिवसिंह सभ रसक खजाना थिकाह।

[387]

बारि बिलासिनि आनबि काहाँ। तोँहहि[1] कान्ह बरु जासि ताहाँ ।।1।।
प्रथम नेहे अति भिति राही। कत जतने मेराउबि ताही।।2।।
जा पति सुरत मने असार। से कइसे आउति जमुना पार।।3।।
पथहुँ कण्टक जाह बिसूर। चरन कोमल पथ विदूर।।4।।

अति भआउनि निबिळि राति। कइसे अङ्गिरति जीवन साति।।5।।
एत गुनि मने ताहि तरास। मधु न आब मधुकर पास।।6।।
पाइअ ठाम बैसले न निधि। जे कर साहस ताहि[2] हो सीधि।।7।।
भन वियापति सुन मुरारि। बिबस[3] पळलि अछ से नारि।।8।।
नृप सिवसिंह ई रस जान। रानि लखिमा देवि रमान।।9।।

1. तोहिं। 2. ता। 3. बेरस।

दूती कृष्णकें कहैत अछि -- (1) बाला विलासिनी राधाकें एतए कतए आनब? हे कान्ह बरु तोंही ओतए चलह। (2) राधा पहिल बेर प्रेम कएलक अछि; बड़ डेराइलि अछि। बहुत प्रयासें ओकरा एतए आनि मिलन कराओल। (3) जकरा लेखें सुरत सोचबो निरर्थक से यमुना पार कए तोरा लग कोना अओतहु। (4) बाटमे कॉंट छैक।... (?) ओकर पाएर कोमल छैक आ' बाट दूर। (5) राति बड़ भयानक आ' घन अन्धकार बाला अछि। ओ प्राण-संकट कोना उठाओत। (6) ई सभ सोचि ओकर मन त्रस्त भए जाइत छैक। मधु मधुकरक (भ्रमरक) लग नहि अबैत अछि (भ्रमरे मधु लग जाइत अछि)। (7) ठामहि बैसल केओ धनसम्पत्ति नहि पबैत अछि। जे साहस करैत अछि तकरहि सिद्धि (वांछित फल) भेटैत छैक। (8) वियापति कहैत छथि, हे कान्ह, सुनह। ओ बेचरी नारी विवशता मे पड़लि अछि। (9) रानी लखिमादेवीक पति राजा शिवसिंह ई रस जनैत छथि।

[388]

प्रथम पहर निसि जाऊ। पुरजन नित्र नित्र मन्दिर समाऊ[1]।।1।।
तम मदिरा पिबि मन्दा। अबहि माति उगि जाएत चन्दा।।2।।
सुन्दरि चल अभिसारे। रस सिङ्गार संसारक सारे।।3।।
ओतए अछए पिआ आसे। एतए बेढल गिम मनमथ पासे।।4।।
साहसे साधिअ असाधे। तिला एक कठिन पहिल अपराधे।।5।।

से सामर तोत्रे गोरी। बिजुरि बलाहक लागल जोरी।।6।।
हँसि आलिङ्गन देसी। मन भरि जुबति जनम सुख लेसी।।7।।
सबे सङ्का कर दूरे। कामिनि कन्त मनोरथ पूरे।।8।।
कवि[2] वियापति भाने। सिबसिंह[3] लखिमा देवि रमाने।।9।।

1. निअ निअ मन्दिर सुजन समाऊ। 2. भनइ। 3. राए सिबसिंह।

सखी/दूती राधाकें अभिसार हेतु प्रेरित करैत अछि -- (1) रातिक पहिल पहर बीति गेल। गामक लोक अपन-अपन घर पैसि गेल। (2) अन्धकार रूपी मदिरा पिबि दुष्ट चान आब लगले उगबा पर अछि। (3) तें हे सुन्दरी, झट दए अभिसारमे चलह। शृंगार रस (कामजन्य आनन्द) संसारमे सभसँ बढ़ि थिक। (4) ओतए पिआ तोहर आस लगओने (बाट तकैत) छहु आ' एतए तोरो गरदनिमे कामदेव अपन फाँस लगओने छथुन् (दूनू पक्ष आतुर)। (5) असाध्यो काज साहस कए पूरा कए लेबाक थिक। छनो भरि विलम्ब पहिल अपराध होएत जे कष्टकर होइछ। (6) ओ कान्ह कारी अछि आ' तों गोरि। मेघ आ' बिजलीक मिलन होअओ। (7) बिहुँसिकें आलिंगन दहक आ' युवावस्थाक आनन्द भरि पोख लेह। (8) कवि वियापपति कहैत छथि, एकर रस जननिहार छथि लखिमा देवीक पति शिवसिंह

[389]

मृगमद पङ्ग अलका। मुखे जनु करह तिलका।।1।।
सम्पुन पुनिमक चन्दा[1]। कलङ्के होएत गए मन्दा।।2।।
सहजें सुन्दरि बड़ि राही। कि करति अधिक पसाही।।3।।
ऊजर नयन नलीना। काजरें न कर मलीना।।4।।
दूधक धोएल भमरा। मसि बुड़ि होएत[2] समरा।।5।।
पीन पयोधर गोरा। उलटल कनअ कचोरा[3]।।6।।
चान्दने धवल न करू। हिमे बुड़ि जाएत सुमेरू।।7।।
भनइ वियापति कवी। कतए तिमिर जहाँ रवी।।8।।

रूपनराएन पहू। तौलि हलत गुरु लहू।।9।।

1. निपुन पुनिमके चन्दा। 2. जाएत। 3. कटोरा।

राधाकें सिङार करए बैसलि एक सखी कें दोसरि सखी उपदेश देत छनि -- (1) कस्तूरीक लेप आ' लट लए मुहमे तिलक नहि करह। से कएने पूर्णिमाक चान कलंक (दाग) सँ कुरूप भए जाएत। (2) राधा अपनहि बड़ि सुन्दरि अछि। ई अधिक सिङार कथी लए करत। (3) एकर आँखि श्वेतकमल-सन उज्जर छैक, तकरा काजरसँ मलिन नहि करह। (4) एकर आँखि मानह दूधसँ धोएल भ्रमर (उजर पर कारी) थिक। एकरा जँ मोसिमे बोरि देबहक तँ कारी खटखट भए जाएत। (5) एकर गोरवर्ण पुष्ट-पुष्ट स्तन जे उतटल कटोरा-सन अछि (6) तकरा चानन लगाए उजर नहि करह। से कएने मानह सुमेरू बरफसँ झपाए जाएल (ओकर अपन उत्कृष्ट वर्ण तिरोहित भए जएतैक)। (7) विद्यापति कहैत छथि, जतए सूर्य (सहज उज्ज्वल वर्ण) ततए अन्धकार (कृत्रिम कारी रंग) कहाँ टिकत। राजा रूपनारायण तौलताह जे कोन भारी, कोन हलुक।

[390]

अरुने किरन किछु अम्बर देल। दीपक सिखा मलिन भए गेल।।1।।
हठ तेज माधब जएबाँ देह। राखए चाहिअ गुपुत सिनेह।।2।।
दुरजने जाएत परिजन कान। सगर चतुरपन होएत मलान।।3।।
भमर कुसुम रतमि न रह अगोरि। केओ नहि बेकत करए निज चोरि।।4।।
अपनेओ धन है धनिक धर गोए। परक रतन परगट कर कोए।।5।।
फाब चोरि जओ चेतन चोर। जागि जाएत पुर परिजन मोर।।6।।
भनइ विद्यापति सखि कह सार। से जीवन जे पर उपकार।।7।।

राधा भोर भेलापर कृष्णसँ छुट्टी चाहैत छथि -- (1) हे कान्ह, अरुणदेव आकाशमे अपन किरण किछु-किछु पसारलनि। दीपक जोति मलान भेल। (2) आब हठ छाड़ह, हमरा जाए देह। गुप्त स्नेह छिपाए कें

राखक थिक। (3) जँ दुष्ट लोक देखि लेत तँ हमर घरक लोकक कान लग पहुँचि जाएत। हमर सभटा चतुरपन घोसरि जाएत। (4) भ्रमर फूलक सम्भोग कए (लगले घसकि जाइत अछि), ओकरा अगोरि कें बैसल नहि रहैत अछि। केओ अपन चोरि अपनहि देखार नहि करैत अछि। (5) धनवान लोक अपनो धन नुकाए कें रखैत अछि। आनक रत्न परस्त्री केओ कोना प्रकट करत। (6) चोरि तखनहि सुतरैत छैक जखन चोर चतुर हो। (आब देरी करबह तँ) हमर धरक लोक जागि जाएत। (7) विद्यापति कहैत छथि, हे कान्ह, सखी राधा ठीक कहैत छथुन। श्रेष्ठ जीवन से थिक जे आनक उपकार करए (अनका संकटसँ बचाबए)।

[391]

परक विलासिनि तुअ अनुबन्धे। आनलि कतन ब्रञ्चन[1] कए धन्धे।।1।।
कइसें[2] जाइति निअ मन्दिर रामा। अतिसए चिन्ता भेलि एहि ठामा।।2।।
निकटहु बाहर डरे न निहार। जतने आनति एत दुर अभिसार।।3।।
तिलाएक जासओ महघ समाज। बहलि बिभावरि मने नहि लाज।।4।।
तोहर मनोरथ तन्हिक पराने। नागर से जे हिताहित जान।।5।।
नखत मलिन बेकताएत बिहान। पथ सञ्चरइते लखत केउ आन।।6।।
पास पिसुन बस कि करत लाथ। कोन परि सन्तरति गुरुजन हाथ।।7।।
भनइ विद्यापति तखनुक भान। आदरि आनि न खण्डिअ मान।।8।।

1. बचने। 2. कोनेपरि।

दूती कृष्णसँ राधाकें घुरएबाक अनुरोध करैत अछि -- (1) तोरा लेल कतेक लन्दफन्द कए परनारीकें आनल। (2) आब एतए चिन्तामे पड़लि छी जे ई सुन्दरी अपना घर कोना घूरत। (3) जे लगो-पासमे डरें बाहर दिस तकैत नहि अछि तकरा अभिसारमे यत्नपूर्वक एतेक दूर आनल। (4) जकरासँ छनो भरि मिलन दुर्लभ तकरा संग तों सौंसे राति गमओलह। मनमे लाजो नहि भेलहु। (5) तों तँ अपन लालसा पुरबैत छह, मुदा

ओकर प्राण अवग्रहमे छैक। नागर (भद्रपुरुष) से थिक जे आनक हिताहित बूझए। (6) नक्षत्र मलिन भेल। भोर देखार भेल। बाट चलैत केओ आन देखि लेतैक। (7) पड़ोसमे दुर्जन सभ बसैत अछि। ओ सभ पुछतैक तँ कोन लाथ करत? (8) विद्यापति कहैत छथि... (?) आदारपूर्वक आनिकें ओकर प्रतिष्ठा नष्ट नहि करह।

[392]

छल मनोरथ जौवन भेलें कतन करब रङ्ग।
सेहे सबे ओर[1] धरि न रहल भेल हिरदए भङ्ग।।1।।
तथुहु उपर छल मनोरथ आबे कि करब साध।
अइसनि अपराधिनि[2] भेलहुँ जे छल तथिहु बाध।।2।।
माधब आबे तञो इ बड़ दोस।
जते जे किछु बोलए चाहिअ तथीं गुरुजन रोस।।3।।
अबस निकट आएब जाएब बिनअ कर ई नारि।
दिने साते पाँचे बाटहु घाटहु दिठिहु हलु निहारि।।4।।

1. से सबे पेम ओळ। 2. अइसनि भए अपराधिनि।

राधा प्रेमक मार्गमे बाधा पाबि अपन व्यथा कृष्णसँ कहैत छथि -- (1) मनोरथ छल जे यौवन भेलापर खूब प्रेमविलास करब। किन्तु से अन्त धरि नहि कए सकलहुँ। मन टूटि गेल। (2) आगाँ आओर अभिलाषा करब व्यर्थ। (3) तेहन अपराधिनी भेलहुँ जे जतबो अनुबन्ध (संगति) छल ताहूपर प्रतिबन्ध लागि गेल। (4) हे कान्ह, आब तँ हमर ई अनुबन्ध बड़का अपराध बूझल जाइत अछि। जँ कतहु गपोसप करैत छी तँ ताहूपर गुरुजनकें क्रोध होइत छनि। (5) हे कान्ह, ई बेचारी नारी (हम) बिनती करैत छहु, कृपा कए लग अबैत-जाइत रहबह। पाँचो सात दिनपर बाटो घाटमे एक नजरि निहारिओ लिहह।

[393]

दुर सञो नेह[1] बचने बाढ़ल मनक पिरिति जानि।
अलपेहि काले[2] बड़ि दुर आन्तर करमे लाओल आनि।।1।।
चरन नूपुर घन सबदए चान्दनि[3] राति उजोरि।
ननन्दि बैरिनि निन्दे न सोअए आबे अनाइति मोरि।।2।।
दूती, बोलि बुझाबह कान्हू।
आजुक रअनि आए न होएत हृदये कोपथि जनु।।3।।
चरन नूपुर करे उतारब सामर बसन तनु।
खेळहु कौतुके ननन्द बोधबि बिलम्ब लागए जनु।।4।।
ओ भरे लागल नब सिनेहा एँ भरे कुलक गारि।
सकल पेम सम्भारि न होएते हठे बिनसति नारि।।5।।
भन बिद्यापति उगन्त सेबिअ मदन चिन्तथु आओ[4]।
पिरिति कारने जिब उपेखब एँ बेरि होअ कि जाओ।।5।।

1.दुर सिनेहा। 2. अललपे काजे। 3. चान्दहु। 4. आठ। 5. जाओ।

राधा दूतीद्वारा समाद पठबैत छथि -- (1) हे कान्ह, तोरा मनमे प्रीति छहु से जानि तोरासँ वचन द्वारा दूरहिसँ नेह बढ़ाओल। परन्तु हमर कर्म (दुर्भाग्य) ताहि नेह बीच थोड़हि कालमे बहुत व्यवधान कए देलक। (2) पाएरक नूपुर बड़ अबाज करैत अछि। शुक्ल पक्षक चकमक राति। बैरित्रि ननदिकें नीन नहि। हम विवश भेलि छी। (3) हे दूती, कान्हकें हमर उपर्युक्त समाद कहिकें बुझाबह जे आजुक राति हमरा आबि नहि होएत। मनमे तामस नहि करथु। (4) पाएरक नूपुरकें हाथसँ रोकि लेब। कारी वस्त्र पहिरि लेब। खेलो-कौतुक कए ननदिकें परतारि देब, जाहिसँ अभिसारमे विलम्ब नहि हो। (5) ओम्हर (एक दिस) नब सिनेह आ' एम्हर (दोसर दिस) कुल-कलंक। प्रीतिक सभ अपेक्षा हम पुराए नहि सकब। तैओ जँ तों हठ करबह तँ मारलि जाइति ई नारी। (6) विद्यापति कहैत छथि, उगन्तक सेवा करी (भविष्य प्रेमक चिन्ता करी।) आओर

बातक चिन्ता कामदेव करथु। प्रीतिक कारणें प्राणहुक उपेक्षा कएल जाइत अछि। एहि बेर प्राण रहओ कि जाओ।

[394]

कह-कह सुन्दरि न कर बेआज। देखिअ आजे अपरुब सबे साज।।1।।
मृगमद पङ्के करसि अङ्गराग। कजोन नागर परिनत भेल भाग।।2।।
पुनु पुनु उठसि पछिम दिस हेरि। कखन जाएत दिन कत अछ बेरि।।3।।
नेपुर उपर करसि कसि थीर। दिढ कए परिहसि तम सम चीर।।4।।
उठसि बिहुँसि सबे[1] तेजिअ सार। तोर[2] मन भाब सघन अँधिआर।।5।।
भनइ विद्यापति सुन बरनारि। धैरज धर[3] मने मिलत मुरारि।।6।।

1.हसि। 2. मोर। 3. कर।

कृष्णाभिसारिका राधाकें सखी कहैत छथि -- (1) हे सुन्दरी, कहह-कहह, लाथ नहि करह। आइ सभ साज-सिङार अपूर्व (असाधारण) लगैत अछि। (2) देहमे चानन नहि, कस्तूरीक लेप लगबैत छह। (गोरिसँ कारी करबाक हेतु)। कोन नागरक पुण्य आइ फलित भेलैक? (3) बेरि-बेरि ऊठि पश्चिम दिस निहारैत छह जे कखन दिन बीतत, कतेक बेर भेल अछि। (4) नूपुरकें कसि-कसि उपर कए स्थिर करैत छह (जे अबाज नहि करए)। (5) अन्धकार-सन गाढ़ कारी रंगक चीर पहिरैत छह। गम्भीरताकें पूर्णतः त्यागि बिहुँसि उठैत छह। तोरा अन्धकार अधिक प्रिय लगैत छहु। (6) विद्यापति कहैत छथि, हे सुन्दरी, सुनह, मनमे धैर्य धरह, होएतहु कृष्णसँ मिलन।

[395]

घर गुरुजन पुर परिजन जाग। काहुक लोचन निन्दओ न लाग।।1।।
कजोन परि जुगुति गमन होए[1] मोर। तम पिबि बाढल चान्द उजोर।।2।।
साहसे साहिअ पेम सञ्चार[2]। अबहु न आएल[3] करम चण्डाल।।3।।
दुहु निरमान[4] कएल बिहि जोर। पाँखि न देलक बिधाता भोर।।4।।
भनइ विद्यापति दुहु[5] मन जाग। बड़े पुने पाबिअ नब अनुराग।।5।।

1. होएत। 2. भँड़ार। 3. आबओ। 4. अनुमान। 5. जदि।

अभिसार लेल उत्सुक राधा दुख व्यक्त करैत छथि -- (1) घरमे गुरुजन आ' नगर मे पुरजन (पड़ोसी सभ) जागल अछि। हाए, ककरहु आँखिमे नीन नहि अबैत छैक। (2) कोन उपायें हम अभिसार कए सकब? अन्धकारकें पिबि चान इजोत बढाए देलक। (3) साइसहिसँ प्रेम-सञ्चार (अभिसार) सम्पन्न कएल जाए सकैत अछि। निठुरहृदय कान्ह एखनहु धरि नहि आएल। (4) विधाता दूनूक निर्माण जोड़ा लगाए कएलनि, किन्तु भोर (मतिहीन) विधाता दूनूकें पांखि नहि देलनि। (5) विद्यापति कहैत छथि, दुहुक मनमे प्रेम जागृत अछि। बड़ पुण्यक बलें नव अनुराग प्राप्त होइत अछि।

[396]

गुरुजन नयन पगार पवन जञो सुन्दरि सन्तरि चलली।
जनि अनुरागे पाछु धरि पेललि करे धरि कामे तिळली।।1।।
कि आरे नवि अभिसारक रीती।
के जान कञोने विधि कामे पढाउलि कामिनि तिहुअन जीती।।2।।
अम्बरे सँवरु[1] विभूखन सुन्दर घनतर तिमिर सामरी।
केहु कतहु पथ लखहि न पारलि जनि मसि बूड़लि भमरी।।3।।
चेतन आगु चतुरपन कइसन विद्यापति कवि भाने।
राजा सिबसिंह रूपनराएन लखिमादेवि रमाने।।4।।

1. सकल।

कवि राधाक अभिसारक वर्णन करैत छथि -- (1) सुन्दरी राधा गुरुजनक नयनरूपी प्राकार (छहरदेवाली) कें पवन जकाँ लाँघि अभिसारमे चलि पड़लि। मानू प्रेम पाछाँसँ ठेललकैक आ' कामदेव आगु दिससँ घिचलथिन। (2) अहा, की अद्भुत अछि अभिसारक रीति। जानि नहि कामदेव त्रिभुवनकें जीति कामिनीकें कोना ई रीति पढओलनि। (3) गाढ़

मेघ सन श्यामवर्णा राधा चमकैत गहना सभकें कारी वस्त्रसँ आवृत कए लेल। बाटमे कतहु केओ देखि नहि पओलक, जेना मोसि मे डूबलि भ्रमरी हो। (4) विद्यापति कहैत छथि, जे होसिआर आ चलाक अछि तकरा आगाँ तोहर ई चतुरपन (गोपन) नहि चलतहु। एकर रस जनैत छथि राजा शिव... ।

[397]

चन्दा जनु उग आजुक राती। पिआकें लिखिए पठाउबि पाँती।।1।।
साओन सञो हमे करबि पिरीती। जत अभिमत अभिसारक रीती।।2।।
अथवा राहु बुझाओब हँसी। पिबि जनु उगिलह सितल ससी।।3।।
कोटि रतन जलधर तोहें लेह। आजुकि रअनि घन तम कए देह।।4।।
भनइ विद्यापति सुभ अभिसार। भल जन करथि परक उपकार।।5।।

कवि राधाक उक्तिमे अभिसारक वर्णन करैत छथि -- (1) हे चान, आजुक राति तों नहि उगह। हम पिआकें पत्र लिखि पठाएब। (2) हम साओनसँ प्रीति करब, किएक तँ एहि मसमे (मेघाच्छन्न रातिक गाढ़ अन्धकारमे) यथेष्ट अभिसार चलैत अछि। (3) अथवा राहुसँ प्रसन्नतापूर्वक अनुनय करब जे कृपा कए तों शीतल चानकें खाए पुनः उगिलि नहि देह। (4) हे मेघ, हमरासँ लाख-लाख रत्न लेह आ' तकर बदलामे आजुक राति गहन अन्धकार कए देह। (5) विद्यापति कहैत छथि, अभिसार शुभ हो। भद्र लोक सदा आनक उपकार करैत छथि (साओन, राहु आ' मेघ सभ तोहर सहायता करतहु)।

[398]

प्रथम जौबन नब गरुअ मनोभव छोटि मधुमास रजनी।
जाग गुरुजन गेहा राखिअ चाहिअ नेहा संसअ पडलि सजनी।।1।।
साए साए केओ न ' बेदन तसु जाने।
संकेत निकेत[2] हरि जाएत कञोन परि अनुखन बिकल पराने[3]।।2।।

पथँ पुरजन[4] सङ्का पअ पअ घन पङ्का कि करति ओ नबि करिनी।
चलए चाह धसि[5] पुनु पुनु जाए खसि जालक छेकलि हरिनी।।3।।
बिहि मोर बड मन्दा उगि जनु जाए चन्दा उठि उठि[6] गगन निहारे।
नलिनी दल निर चित न रहए थिर तत घर तत हो बहारे।।4।।
कवि विद्यापति भन अनुखन[7] गुरुजन नीन्द निरूपए लागी।
कपटे निकट गए बदन कान दए[8] रअनि गमाबए जागी।।5।।

1. कमन। 2. निकुञ्जवन जे। 3. हन पचबाने। 4. पथहु पथुक। 5. पुनु पड खसि खसि। 6. सुति उठि। 7. कि करत। 8. बअनि नीर भरि धीरे झपाबए।

कवि राधाक अभिसार हैतु विकलताक वर्णन करैत छथि – (1) राधा नव यौवनक प्रथम चरण मे प्रवेश कएलक अछि। कामदेवक भारी दबाब (मिलनक आतुरता) छैक। बसन्तक राति छोट होइत अछि। घर मे गुरुजन जागल छैक। प्रेम राखए चाहैत अछि। एहि सभ कारणेँ राधा संशय मे पडलि अछि। (2) हाए, के जनतैक ओकर वेदना। कान्ह संकेतस्थल मे बाट तकैत छथिन, मुदा ओ जाए कोना सकत। ओकर प्राण निरन्त व्याकुल छैक। (3) बाट मे नगरक लोक देखतैक तकर डर छैक। बाट मे डेग-डेग पर भारी पाँक छैक। हथिनी-सन राधा की करओ (कोना टपओ) । जोर लगाए चलए चाहैत अछि आ बेर-बेर खसि पडैत अछि. जेना जाल मे बझाउलि हरिनी। (4) भाग्य हमर बड अधलाह अछि, कदाचित् चान ने उगि जाए एहि प्रकारक गुनधुन मे ओ बेर-बेर उठि-उठि अकास दिस तकैत अछि। ओकर चित्त पुरइनिक पात परक पानि जकाँ चंचल छैक। लगले घर जाइत अछि , लगले बहार। विद्यापति कहैत छथि, छन-छन मे ई देखबाक हेतु जे गुरुजन जागल छथि कि सूतल कोनो लाथेँ लग जाए गुरुजनक मुह लग कान पथने जागलि सगर राति बिताए दैत अछि।

[399]

काजरे भीजलि राती। घन भए बरिसए चलधर पाँती।।1।।
बरिस पयोधर धारे। दुर पथ गमन कठिन अभिसारे।।2।।
जउनि भयाउनि नीरे। आरति धँसति पाउति नहि तीरे।।3।।
बिजुरि तरङ्गे डराई। तओ भल जबहि पलटि घर जाई।।4।।
झाँखथि देव बनमाली। एहि निसि कओन परि आउति गोआली।।5।।
भनइ विद्यापति बानी। कान्ह तोंहहु तह नारि सआनी।।6।।

1. साजलि।

कृष्ण राधाक बाट तकैत छथि -- (1) राति लगैछ जेना काजरसँ भीजल हो। मेघ मण्डली सुपामए बरखा कए रहल अछि। (2) मेघ धाराप्रवाह बरसि रहल अछि। जएबाक बाट दूर छैक। अभिसार सोझ नहि। यमुना नदी भयानक रूपें उमड़ल अछि। राधा आतुरतावश जें हेलि जाएत तँ फेर तीर नहि पावि सकत। (4) बिजुलीक चमकसँ ओकरा डर होइत छैक। कल्याण एहीमे छैक जे ओ कुशलपूर्वक अपन घर घुरि जाए। (5) एहि रूपें वनमाली झँखैत छथि जे एहन रातिमे गोपी राधा कोना आओत। (6) विद्यापति कहैत छथि, हे कान्ह, राधा तोरहुसँ अधिक चतुर अछि (तों चिन्ता नहि करह)।

[400]

बाट बिकट फनिमाला। चउदिस बरिसए जलधरजाला।।1।।
हे माधव,
बाहु तरिअ नरि भागे। कतए भीति जओ दिढ़ अनुरागे।।2।।
बन छलि एकलि हरिनी। ब्याध कुसुमरे पाउलि रजनी।।3।।
विद्यापति कबि भाने। रूपनराएन नृप रस जाने।।4।।

सखी कृष्णकें राधाक अभिसार सुनबैत छथि -- (1) हे कान्ह, बाटमे भयानक साप सभ रहैक। चारुदिस मेघ बरसैत रहए। (2) एहनामे राधा बाँहिक बलें यमुना नदी पार कएलक। भाग्य जे प्राण बचलैक। जतए दृढ़

प्रेम ततए डर पड़ाए जाइत छैक। (3) मानू वनमे ओ एकसरि हरिणी छलि जकरा कामदेवरूपी व्याध रातिमे बझाए अनलक। (4) कवि विद्यापति ई रचल आ' राजा रूपनारायण एकर रस जनैत छथि।

[401]

निअ मन्दिर सओं पअ दुइ चारि। घनहन बरिस मही भर बारि।।1।।
पथ पीछर बड गरुअ नितम्ब। खस कत बेरि मही अबलम्ब।।2।।
बिजुरि छटा दरसावए मेघ। उठए चाह जल' धारक थेघ।।3।।
एक गुन तिमिर लाख गुन भेल। उतरहु दखिल भान दुर गेल।।4।।
ए हरि मोके करि जनि[2] रोस। आजुक बिलम्ब दैव दिअ दोस।।5।।

1.नही। 2. जानि करिअ मोके।

दूती राधाक विलम्बसँ पहुँचबाक सफाइ कृष्णकें दैत अछि -- (1) राधा अपना घर सँ दुइए-चारि डेग (चललि) कि मेघ जोरसँ बरसए लागल। धरती पानिसँ भरि गेल। (2) बाट पीछर भए गेल। ताहि पर बड़ भारी नितम्ब। कए बेरि खसए आ' धरतीक अबलम्बे उठए। (3) मेघ बिजुलीक चमक देखाबए (तँ बाट सुझैक)। जलधाराकें डोरी बूझि ओकरा पकड़ि उठए चाहए। (4) एक बर अन्धकार (वर्षाक कारणें) लाख बर भए गेल छल। उत्तर कि दच्छिन तकरो बोध नहि होइक। (5) हे कान्ह, हमरा पर क्रोध नहि करह। आइ अएबा मे जे विलम्ब भेल तकर दोख हमरा नहि, दैवकें देह।

[402]

जागए[1] जामिक जन सञ्चर परिजन सासुहि न[2] तेजए गेहा रे।
तइओ चललि छले[3] बुधि बल कउसले एत बड़ तोहर सिनेहा रे।।1।।
ए हरि X X X X X X X X X ।।
तोहर धैरज जत से सबे कहब कत धनि गेलि सून सङ्केता रे।।2।।
सगरि रउनि जागि तुअ दरसन लागि तरुतर तीन्तलि बाला रे।

जवे[4] न अएलाहे तोहें धनि पलटलि[5] कोहे
थोइआ गेलि मालति माला रे।।3।।
भनइ वियापति सुन वरजैयति नीन्द जगैत सन्देहा रे।
X X X X X X X X X ।।4।।

1. जागल। 2. जउदिस गरज घन सासु नहि। 3. तइओ से चलले। 4. जदि। 5. से कहलि।

दूती कृष्णकें उलहन्न दैत छनि -- (1) पहरू सभ जागल रहए। नगरक लोक चलैत बुलैत रहए। सासु घरसँ बहराइत नहि रहए। तैओ राधा अपन बुधिआरी आ' कौशलक बलें कोनो लाथ कए चलि पड़लि। एतेक अधिक छैक राधाकें तोहर स्नेह। (2) है कान्ह, तोरा कतेक स्थैर्य (अपन बातपर दृढ़ता) छहु से सभ की कहिअहु। राधा संकेत-स्थल गेलि, जे सून छल। (3) तें ओ तोहर अएबाक प्रतीक्षामे राति भरि गाछतर तीतैत रहलि। जखन तों नहि अएलह तखन ओ तमसाए कें घुरि गेलि आ' (अपन अएबाक प्रमाणमे) मालती-माला, जे तोरा पहिरएबा लेल अनने छलि, फेकि गेलि। (4) वियापति कहैत छथि, जे जगितहिँ नीन रहए से जागत कोना।

[403]
राहु मेघ भए गरसल सूर। पथ परिचय दिवसहि भेल दूर।।1।।
घन[1] बरिसए अवसर नहि होए। पुर परिजन सञ्चर नहि कोए।।2।।
चलचल सुन्दरि कर गए साज। दिवस समागम सपरत आज।।3।।
गुरुजन परिजन डर कर दूर। बिनु साहसें अभिमत नहि पूर।।4।।
एहि संसार सार बथु एह। तिला एक सङ्ग[2] जाव जिब नेह।।4।।
भनइ वियापति कवि कण्ठहार। कोटिहु न घट दिवस अभिसार।।5।।

1. नहि। 2. सङ्गम।

दूती राधाकें दिवाभिसारक हेतु प्रेरित करैत अछि -- (1) राहु मेघ बनि कें सूर्यकें ग्रसित कए लेलक। (ततेक अन्हार भए गेल अछि जे) दिनहिमे बाट नहि चिन्हाइत अछि। मेघ लगातार बरिसि रहल अछि। वर्षाक कखनहु अवकाश (विराम) नहि होइत अछि। नगर मे आ' घर-आङनमे केओ चलैत-बुलैत नहि अछि। (2) हे सुन्दरी, चलह, अभिसारक तैआरी करह। आइ दिवा-संगम सफल होएतहु। गुरुजन आ' परिजनक डर त्यागह। बिनु साहस कएने कामना सिद्ध नहि होइत अछि। (3) एहि संसारमे सभसँ महत्वपूर्ण वस्तु थिक छन भरि प्रेमीसँ मिलन आ' जीवन भरि प्रेमक निर्वाह। कविकण्ठहार वियापति कहैत छथि, लाखो चेष्टा कएने दिवाभिसार (दिनमे गुप्त मिलन) सम्भव नहि होइत अछि।

[404]
गगन मगन होअ तारा। तइअओ न कान्ह तेजए अभिसारा।।1।।
अपना सरबस लाथे। आनक निधि[1] लूळए दुहु हाथे।।2।।
टूटल गिम मोतिहारा। बेकत भेल अछ नखखत धारा।।3।।
नहि नहि नहि पए भाखे। तइअओ कोटि जतन कए राखे[2]।।4।।
भनहि बियापति बानी। एहि तीनहु मह दूति सआनी।।5।।

1. बोलि। 2. कर लाखे।

कवि कृष्णक अतृसिक निन्दा करैत छथि -- (1) आकाशमे तारा डूबि गेल, तैओ कृष्ण संगम छाड़ैत नहि छथि। (2) ई इमर अपन सम्पति थिक एहि लाथें आनक सम्पतिकें दूनू हाथें लुटैत छथि। (3) गराक मुक्ताहार टूटि गेलैक। स्तन पर नखक्षतक पाँति निखरि गेलैक। (4) राधा केवल नहि-न्हि (आब अधिक विलास नहि) बजैत अछि। कृष्ण तैओ ओकरा रोकने रहए चाहैत छथि। (5) वियापति ई रचल। (नायक, नायिका आ' दूती) एहि तीनूमे दूती अधिक चतुर अछि।

[405]

खरि नरि बेगे भासलि नाइ। धरए न पार नाओ[1] कन्हाइ।।1।।
तें धसि जउनि भेलाहुँ पार। फुटल बलआ टूटल हार।।2।।
ए सखि ए सखि न बोल मन्द। बिरुह[2] बचने बाढ़ल दन्द।।3।।
कुण्डल[3] खसल जउनि माझ। ताहि जोहइते पड़लि साँझ।।4।।
अलक तिलक तें बहि गेल। सुध सुधाकर बदन भेल।।5।।
तटिनि तट न पाइअ बाट। तें कुछ गड़ल[4] कठिन काँट।6।।
भन विद्यापति न[5] अबसाद। बचन कौसले जिनिअ बाद।।7।।

1. पारथि बाल। 2. बिरह। 3. कुन्तल। 4. गाड़ल। 5. निअ।

राधा गुप्त संगमकें छिपएबाक लाथ करैत छथि -- (1)नदीमे वेग बड तेज छल। नाओ भासि गेल। नवयुवक कान्ह ओकरा सम्हारि नहि सकल। (2) तें यमुनाक धारमे पैसि पार भेलहुँ, लहठी फूटि गेल, आ' हार टूटि गेल। (3) हे सखी, कलंक नहि लगाबह। गपसपमे विवाद करैत झगड़ा भए गेल। (4) कानक कुण्डल यमुनाक धारमे खसि पड़ल। तकरा तकैत-तकैत साँझ पड़ि गेल। (5) पानिक प्रवाहमे पसाहिन मेटाए गेल। मुह अकलंक चान-सन भए गेल। (6) धारक कात बाट साँकड छल तें स्तनमे काँटक चाँछ लागि गेल। विद्यापति कहैत छथि, चिन्ता नहि करह, बजबाक कौशल हो तँ वाद (मोकदमा) जीतल जाए सकैत अछि।

[406]

कुसुम तोरए गेलहुँ जाहाँ। भमरे अधर खण्डल ताहाँ।।1।।
तें चलि अएलाहुँ जमुना तीर। पबने हरल हृदअ चीर।।2।।
ए सखि सरूप कहल तोहि। आन किछु जनि बोलसि मोहि।।3।।
हार मनोहर बेकत भेल। उजर उरग संसअ गेल।।4।।
तें धसि मजूरे जोड़ल झाम्प। नखर गाड़ल हृदअ काम्प।।5।।
भन विद्यापति उचित भाब[1]। बचन पाटबें कपट फाब[2]।।6।।

1. भाग। 2. लाग।

राधा लाथ कए गुप्त संगमकें छिपबैत छथि -- (1) जतए फूल तोड़ए गेलहुँ ततए भ्रमर ठोर पर काटि लेलक। (2) तें जमुनाक कात पड़ाए अएलहुँ। ओतए बसात आँचर उघारि देलक। (3) हे सखी, तोरा सत्य-सत्य कहैत छिअहु, हमरा आन किछु नहि कहह। (4) आँचर हटलासँ हार देखार भए गेल, से देखि मयूरकें सन्देह भैलैक जे ओ उजरा साप थिक। (5) तें मयूर झपट मारलक आ' ओकर चाङुरक नह गड़ि गेल। (6) विद्यापति कहैत छथि, हँ, तों जे कहैत छह से उचित (विश्वसनीय) लगैत अछि। वचनक पटुता हो तँ लाथ करब सफल होइत अछि।

[407]

जाहि लागि गेलिहे ताहि कहाँ लइलिहे ता पति बैरि पितु काहाँ।
अछलिहे दुखेसुखे कहह अपन मुखे भूखन गमओलह काहाँ।।1।।
सुन्दरि कि कए बुझाओब कन्ते।
जन्हिका जनम होइते तोहें गेलिहे अइलिहे तनिकर अन्ते।।2।।
जाहि लागि गेलाहुँ से चलि आएल तें मजे धएलाहुँ नुकाई।।3।।
से चलि गेलें ताहि लए चललाहुँ तें पथे भेल अनेआई।।3।।
सङ्कर बाहन पाछु[1] खेलाइते मेदिनि बाहन आगे।
जे सबे अछलि सङ्गे से सबे चललि भङ्गे उबरि अएलाहुँ बड़भागे।।4।।
जाहि दुइ खोज करइछह सासुड़ि[2] से मिलु अपना सङ्गे।
भनइ विद्यापति सुनु बर जउबति गुपुत न रह[3] रतिरङ्गे।।5।।

1.खेड़ि 2. सासुन्हि। 3. नेह।

सासु गुप्त संगमक लक्षण देखि शंका करैत छथि आ' पुतोहु लाथ करैत छथि --(1) हे सुन्दरी, तों जाहि लेल (जे आनए) गेलि छलह से कहाँ अनलह (पानि कहाँ अनलह)? आओर (पानिक) पति (समुद्र) केर शत्रु (अगस्त्य) केर पिता (घैल) कतए छहु? अपना मुहें कहह, कोन सुख-दुखमे पड़ि तों कतए भूषण (हार) गमओलह? (2) तों अपन पतिकें एहि

प्रश्नक की उत्तर देबहुन जे तों जन्मक समय (सूर्योदय कालमे) गेलह आ' तनिक अन्त भेलापर (सूर्यास्त भेलापर) घुरलह? (एतेक काल कतए छलह?)। राधा उत्तर दैत छथिन--(3) जाहि लेल गेलहुँ (पानि आनए गेलहुँ) से चलि आएल (पानि आबि गेल, वर्षा होअए लागल), तें हम दौड़िकें एक सुरक्षित स्थानमे नुकाए रहलहुँ। जखन से (पानि) चलि गेल (वरखा खतम भेल) तखन पानि भरि घुरलहुँ। (4) बाटमे किछु अन्याय (संकट) भए गेल। शंकरक वाहन साँढ़ पाछु दिस खेलाइत छल। जे सभ संग छलि से सभ एम्हर-ओम्हर भागलि। हम बड़ भागें उबरि अएलहुँ। (5) तों हे सासु, जाहि दू वस्तुक (पानि आ घैलक) पुछारि करैत छह से दूनू अपन-अपन संगमे मिलि गेल (पानि पानिमे मिलल आ' घैल माटिमे। विद्यापति कहैत छथि, हे युवती, सुनह; रति-रंग छिपल नहि रहि सकैत अछि (लाथ करब व्यर्थ)।

[408]

खनहि खन महघि भइ किछु अरुन नयन कइ
कपटे धरि मान सम्मान लेही।
कनक जञो पेम कसि पुनु पलटि बाइक हसि
आधि सञो अधर मधुपान देही।।1।।
XX X X X
XX X X X।
इन्दुमुख[1] अढ न कर पिअ हृदय खेद हर
कुसुमसर रङ्ग संसार सारा।।2।।
बचने बस होसि जनु ससरि कात करह[2] तनु
सहजे बरु छाड़ि देब सअन सीमा।
प्रथम रसभङ्ग भेले लोभे मुखसोभ गेले
बान्धि भुजपासे पिअ धरब गीमा।।3।।
जदि नयन-कमलवर कमल कलि[3] कान्ति धर

खर नखर घात कर सेहे वेला।
परम पद लाभ सम भोदे चिर हृदय रम
नागरी सुरत सुख अमित्र मेला।।4।।
सरस कवि सुरस भने चारुतर चतुरपने
नारि आराहिअइ पञ्चबाना।
सकल जन सुजन गति रानि लखिमाक पति
रूपनारायण सिवसिंह जाना।।5।।

1. इन्दुमुखि। 2. भिन होइह। 3. मुकुल केर।

सखी नायिकाकें काम-कला (संगमक रीति) सिखबैत छथि -- (1) हे सुन्दरी, खन् महग भए, खन मिथ्या कोप देखाए मान कए पिआसँ सम्मान पाबह (एहन चेष्टा करह जे सहज सुलभ बूझि उपेक्षित नहि होअह)। पतिसँ कनेक मुह केरि प्रेमक परीक्षा करह जेना सोनक परीक्षा होइत अछि, आ' परीक्षामे सफल भेलापर फेर घुरि कें बाँक विलोकन करह।............ सँ अधर मधु पीबए दहुन। ....। (2) अपन चान-सन मुहकें झाँपह नहि। एहिसँ पिआक मनमे खेद होएतनि, तें ई बात कहैत छिअहु। संसारमे कामोपभोगे सभसँ पैघ वस्तु थिक। (3) पिआक वश नहि होअह (ओ जे जे कहथुन से सभटा मानहुन नहि।) हुनक कोनो चेष्टा अप्रिय लागहु तें ससरि कें अपन देह कात कए लेह। तैओ सटथुन तें शय्यो छाड़ि देह। आरम्भहिमे जखन हुनका रसभोगमे बाधा होएतनि तखन ओ भुजपाशमे बान्हि तोहर गरदनि धरथुन। (4) जखन हुनक आँखि दीनतासँ कमलक कली जकाँ सँकुचि जाए तखन ओही काल नखक्षत करबह। परम पद (मुक्ति) पओने जेहन आनन्द होइत अछि तेहने आनन्द नागरीक संग रमणक समय होइत अछि। (5) सरस नामक कवि रसमय बात कहैत छथि जे परम चतुरताक संग कामदेवक प्रेरणासँ नारीक आराधना कर्तव्य थिक। एकर रस जनैत छथि रानी लखिमाक पति शिवसिंह रूपनारायण जे सकल शिष्ट जनक आश्रयदाता थिकाह।

[409]

कोप करए चाह नयने निहारि रह धरिबा न पारए हासे।
न बोल परुख बाक न मुख अरुन थाक चान्द कि जलइ हुतासे।।1।।
ए सखि मान करिबा नहि जाने।
X X X X X कति खन सिखउबि आने।।2।।
न न न न न न भन पिअकें नखरे ह्न जेओ जान तथिहु लजाई।
न कर औंहभङ्ग न धरि मोड़ए अङ्ग खनहि सुलभ भए जाई।।3।।
अपने अधिक सुधि न धर परेरि बुधि बिसम कुसुम सर माया।
बिरह सेस भेले भल हो अधर देले रौंद सोहाउनि छाया।।4।।
भनइ विद्यापति होइह दून रति पूजब ते पञ्चबाने।
रुपिनिदेविपति मन्त्रि सिरि रति धर सकल कला रस जाने।।5।।

1. पिअरे।

सखी दोसरि सखीसँ कहैत छथि जे राधा मान करए नहि जनैत छथि -- (1) कोप करए चाहैत अछि, तैओ पिआकँ निहारैत रहैत अछि (आँखि विवश भए जाइत छैक) आ' मुहपर अबैत मन्दहासकेँ रोकि नहि पबैत अछि। ने अप्रिय वचन बाजि सकैत अछि, आ' ने मुह लाल कए पबैत अछि। चानमे कतहु आगि बरए। (2) हे सखी, राधा मान करए नहि जनैत अछि। ....। आन कतेक काल सिखबैत रहतैक। (3) न न करब, पिआपर तमसाए नखक्षत करब इत्यादि जे सभ जनितहुँ अछि सेहो करबामे लजाए जाइत अछि। ने भऊँह टेढ़ करैत अछि, ने आड मोड़ैत अछि, छन भरिमे सुलभ (सहमत, अनुकूल) भए जाइत अछि। (4) अपने बड सुद्धा (सरल मतिबाली) अछि, आ' अनकर बुद्धिपर चलैत अछि। विचित्र माया अछि कामदेवक। जँ किछु काल विरहक बेदना दए पछाति अधरपान करए देल जाए तँ ओ अधिक आनन्ददायक होइत अछि, जेना रौदसँ व्याकुल भेलापर छाया। (5) विद्यापति कहैत छथि, कामदेवक पूजा

करह, संगमक आनन्द दूना होएतहु। सकल कलाक रस जननिहार थिकाह रुपिनि देवीक पति मन्त्री श्री रतिधर।

[410]

मनसिज बाने मोर हरल गेआने। बोललह तोहें मोरि दोसरि पराने।।1।।
बचनेहु चुकलासि आबे कि छडा। समुह निहारसि साहस बडा।।2।।
कि तोहि बोलिबों कान्ह कि बोलिबों तोही। बेरि बेरि कत परिबञ्चसि[1] मोही
भाङ्गिले भासा तोळिले आसा। आबे करसि कके[2] मुख परगासा।।4।।
लाजक अपगमे चीन्हलि जाती। पेम करह अनतह गए[3] राती।।5।।
खण्डिता युवति कवि विद्यापति भाने। पेअसि बचने लजाएल कान्हे।।6।।
रूपनराएन एहु रस जाने। सिबसिंह लखिमादेइ रमाने।।7।।

1. परमञ्चसि। 2. आबे कके करसि तञे। 3. गेलि।

वंचित (खंडिता) राधा कृष्णकेँ गंजन करैत छथि -- (1) कामदेवक बाण (प्रेमक उद्रेक) हमर जान हरि लेलक। तों कहैत रहलह, तों हमर दोसर प्राण थिकह। (2) परन्तु आब की छल करैत छह। वचन दैओ कें ठकि देलह। तैओ सम्मुख भए हमर मुह निहारबाक साहस कोना भेलहु? (3) हे कान्ह, की कहिअहु तोरा। हमरासँ तों बेरि-बेरि एहिना वंचना करैत रहलह। (4) अपवन वचन छोड़ल आ' हमर आशा तोड़लह। आब किएक हमरा एहन मुह देखबैत छह। (5) लाज पीबि गेलह, ताहीसँ तोहर प्रकृति हम चीन्हि गेलहुँ। रातिमे आन ठाम जाए प्रीति करह गए। (6) कवि विद्यापति कहैत छथि, राधा वंचिता (खण्डिता) भेलीह आ' तनिक वचन (गंजन) सँ कान्ह लजएलाह। (7) एकर रसकक जाता छथि लखिमा... ।

[411]

परिजन पुरजन बचनक रीति। पेम लुबुध मन भेलि परनीति।।1।।
निञ अपराध बोलत की आने। कुमुदहि भेल कमल कै भाने।।2।।
आबे[1] अनुभवि मञे बुझल सरूपे। नअने अछइते निमजलहुँ कूपे।।3।।

जदि तोहें माधब सहज बिरागी। लोचन सीम[2] कएलह कथि लागी।।4।।
पुनु जनि बोलह अइसनि भासा। काहुक कउतुके काहु निरासा।।5।।
नहि नहि बोलह दरसह कोपे। जतने जनाए करइ छह गोपे।।6।।
परतख गोपन के पतिआऊ। बरु मनमथ सरे जीबन जाऊ।।7।।
कवि[3] विद्यापति एहु रस भाने। पुहुबिहि अबतरु नब पञ्चबाने।।8।।
रूपनराएन पहु[4] रसमन्ता। गुननिधास लखिमादेइ कन्ता।।9।।

1. एहि। 2. गीम। 3. भनइ। 4. एहु।

वंचिता राधा कृष्णकें गंजन करैत छथि -- (1) गाम घरक लोकक बोलक ढंगसँ हमर प्रेम-लुब्ध मनमे विश्वास भए गेल (जे तों नीक लोक छह आ तें तोरासँ प्रेम कएल) । (2) ई प्रेम करब हमर अपने अपराध थिक। आन की कहत। हम भेंटक फूलकें कमल बूझि लेलहुँ। (3) आब अनुभव भेल जे की यथार्थ थिक। भ्रान्ति हटल। आँखिक अछैत कूपमे धसलहुँ। (4) जँ हे कान्ह, हमरासँ सहजहि विरक्ति छलहु तँ हमरा अपना आँखिसँ निहारलह किएक? (5) फेर एहन वचन नहि बाजह। ककरो लेल खेलबाड आ' ककरो लेल निराशा। (6) आरोप लगओलापर नहि नहि करैत छह आ' तमसाए उठैत छह। यत्नपूर्वक बुझाए-बुझाए अपन करनीकें छिपबैत छह। (7) प्रत्यक्षकें छिपाएब के पतिअएतहु, भनहि कामदेवक शरक प्रहारसँ प्राण चलि जाए। (8) विद्यापति कवि ई गीत रचलनि। गुणक खजाना रानी लखिमादेवीक पति रसिक प्रभु (राजा) रूपनारायणक रूपमे कामदेव नब जन्म लेलनि अछि।

[412]

सरदक ससधर सम मुखमण्डल काञि झम्पाबह बासे।
अलपओ हास सुधारस बरिसओ छाडओ अमिअ पिआसे।।1।।
कि आरे मानिनि, अपनेहु मने अनुमान।
X X X X रुसइते आनहु बोलब अगेआन।।2।।

हाटक घटन सिरीफल सुन्दर कुच करु काटिए आधे[1]।
पानि परस रस अनुभव सुन्दरि न कर मनोरथ बाधे।।3।।
नागरि अङ्ग विभङ्गक आगरि विद्यापति कवि भाने।
राजा सिबसिंह रूपनाराएन लखिमादेवि रमाने।।4।।

1. कुचयुग कोटि करु आधे।

कृष्ण मानिनी राधाकें मनबैत छथि -- (1) हे सुन्दरी, शरदक चान सन मुह आँचर सँ किएक झँपैत छह? अल्प-मात्रो हासरूपी अमृत बरसाहब जाहिसँ पिआस दूर जाए। (2) हे मानिनी, अपनहि मनमे कने बिचार करह। जँ ....रुसबह तँ आनो तोरा बकलेल कहतहु। (3) सोनाक गढ़ल श्रीफल (बेल) कें आधा काटि विधाता तोहर स्तन बनओलनि। एहन सुन्दर स्तन हमर हाथक स्पर्शसुखक अनुभव करह। हमर कामनामे बाधक नहि बनह। (4) विद्यापति कहैत छथि, तोहर प्रेयसी राधा अंग-विभंग (ताल) करबामे चतुर छथुन। राजा... ।

[413]

बदन चान्द तोर नयन चकोर मोर रूप अमिअरस पीबे।
अधर मधुरि फुल पिअ मधुकर तुल मधु बिनु कति खन जीबे।।1।।
हे मानिनि मन तोर गढ़ल पखाने।
कके न रभसे हँसि किछुओ उतर देसि सुखे जाओ निसि अबसाने।।2।।
निअ मने न गुनसि पर मुखे न सुनसि न बुझसि चइलेरि बानी।
अपन अपन काज कहैते अधिक लाज अरथित आदर हानी।।3।।
भनइ विद्यापति सुन बर जौबति सब खने न करिअ माने।
लखिमादेवि पति सिबसिंह नरपति रूपनराएन जाने।।4।।

कृष्ण मानिनी राधाकें मनबैत छथि -- (1) हे सुन्दरी तोहर मुह चान थिकहु, हमर आँखि चकोर जे तोहर सौन्दर्यरूपी अमृत पीबि जिबैत अछि। तोहर अधर मधुरी फूल थिकहु आ' तोहर पिआ भ्रमर। ओ मधु

बिना कतेक काल जीबि सकैछ? (2) हे मानिनी, तोहर मन लगैछ जेना पाथरसँ गढ़ल हो। तों किएक नहि विलासपूर्वक हँसि-हँसि किछुओ उत्तर दैत छह जे रातिक अन्त सुखमे हो? (3) ने अपना मनमे सोचैत छह, ने अनकर बात सुनैत छह आ ' रसिकक परिपाटिओ नहि बुझैत छह। अपन काज बेरि-बेरि कहबहु मे हमरा लाज होइत अछि। अरथित (बेगरतू) याचक बनने आदरमे कमी आबि जाइत छैक। (तें हम आब बेसी अनुनय-अनुरोध नहि करबहु)। (4) विद्यापति कहैत छथि, हे सुन्दरी, सुनह। हरदम मान नहि करबाक चाही। एकर रस लखिमा देवीक पति राजा शिवसिंह जनैत छथि।

[414]

बदन सरोरुह हास नुकओलह तें आकुल मन मोरा।
उदितेओ चान्द अमिअ नहि मुञ्चए की पिबि जिउत चकोरा।।1।।
मानिनि देह पलटि दिठि मेला।
सगरि रअनि जदि कोपहि गमओबह केलि रभस कओने बेला।।3।।
तोर नअन एँ पथहु नहि सञ्चर अजगुत कहल न जाई।
अरुन कमलके कान्ति चोरओलह तें मने रहलि लजाई।।3।।
कामिनि कोपें मनोभय जागए' विद्यापति कवि गावे।
जएमतिदेइ बर सनगहि सङ्कर बुझए सकल रस भावे।।4।।

1. मनोरथ जागल।

कृष्ण मानिनी राधाकें बउँसैत छथि -- (1) हे मानिनी राधा, तों अपन मुखकमलक हास नुकाए लेलह (तों जे हँसैत नहि छह), ताहिसँ हमर मन विखिन्न अछि। उगलो चान जँ अमृतवृष्टि नहि करए तँ चकोर की पिबिकें जिअत। (2) हे मानिनी, आबहु घुरि कें हमरा दिस ताकह। जँ सगर राति मानहिमे बिताए देबह तँ रंगरभस कखन होएत? (3) तोहर नयन आब एहि बाटहुपर नहि पड़ैत छहु। ई कतेक आश्चर्यक बात से कहि

नहि सकैत छिअहु। तों लाल कमलक शोभा चोरओलह ताही लाजें मुह नहि देखबैत छह की? (4) कवि विद्यापति कहैत छथि, कामिनी जँ कोप (मान) करैत अछि तँ कामदेव जागि उठैत छथि (मानसँ विराग नहि, अनुराग बढ़ैत अछि)। जयमतीदेवीक पति सान्धि विग्रहिक शङ्कर एकर सभ रस आ भाव बुझैत छथि।

[415]

चउदिस जलदें जामिनि भरि गेलि। धाराञे धरनि बेआपिति भेलि।।1।।
गगन गरजें जागल पञ्चबान। एहनों सुमुखि उचित नहि मान।।2।।
नागरि पिसुनबचने करुरोस। पअ पड़लेहु नहि कर परितोस।।3।।
बिहि समुचित धरु बामा नाम। हमे अनुमापि हलल भल ठाम।।4।।
नागरि बचन अमिअ परतीति। हृदअ गढ़ल हे एखानहु जीति।।5।।

कृष्ण मानिनी राधाकें मनबैत छथि -- (1) चारू दिशा ई राति मेघसँ भरि गेल। जलधारासँ धरती व्याप्त भए गेल। (2) मेघक गर्जनसँ कामदेव जागि-उठलाह अछि। एहन समयमे हे सुन्दरी, मान करब उचित नहि। (3) हे नागरी, तों पिशुनक बात सुनि क्रोध कएलह (से उचित नहि)। पाएर धएनहुँ प्रसन्न नहि होइत छह (से हमर दुर्भाग्य)। (4) विधाता जे नारीक नाम वामा रखलनि से हमरा जनैत एकदम ठीक । विधाता नारीकें बोल तँ अमृत-सन मीठ देलनि परन्तु ओकर हृदय पाथरहुसँ कठोर बनओलनि।

[416]

मानिनि मान अबहु कर ओर। रअनि बहलि है रहलि अछ थोळ।।1।।
गुनमन्ति भए गुन न धरिअ गोए। सुपुरुख दाने अधिक फल होए।।2।।
बेरा एक हेरह हरह मन ताप। पेमलता तोड़लें बड़ पाप।।3।।
लोचन भमर हमर कर[1] आस। तुअ मुखपङ्कज करओ विलास।।4।।
कवि[2] विद्यापति मने गुनि भान। सिबसिंह राए रसिक रस जान।।5।।

1. कह। 2. भनइ।

कृष्ण मानिन राधाकें मनबैत छथि -- (1) हे मानवती राधा, आवहु मानक अन्त करह। राति बीति गेल, थोड़े शेष रहि गेल अछि। (2) गुणवती भएकें गुण नुकाए कें राखक नहि थिक। सुपुरुखकें देल दान अधिक फलप्रद होइत अछि। (3) एक बेर हमरा दिस ताकह आ' हमर मनक ताप हरह। प्रेमक लताकें तोड़लासँ पाप होएतहु। (4) हमर नयन रूपी भ्रमर आस लगओने अछि, कखन तोहर मुखकमल विकसित होएत जे ओकरा संग विलास करी। (5) कवि विद्यापति मनमे ई सोचि ई रचल जे रसिक राजा शिवसिंह एकर रस जानथि।

[417]

कुसुमे रचलि सेज मान महघ तेज जीबन जौवन छने[1]।
आजुकि रअनि जदि बिफल जाइति पुनु कालि भेले के जान जीबने[2]।।1।।
मन्द पवन बह दिप न थीर रह नखत मलिन नभ[3] भरे।
तोर बदन देखि भान उपजु मोहि कैसु फुल उपर भमरे।।2।।

1.धने। 2. जिबने। 3. नखतर मलिन गगन।

कृष्ण राधाक मान दूर करबाक प्रयास करैत छथि -- (1) हे मानिनी राधा, हम मिलन हेतु फूलक शय्या रचल। आब तों एकरा सुशोभित करबाक हेतु अपन महग मान त्यागह। जीवनमे यौवन छने भरि रहैत अछि। आजुक राति यदि व्यर्थ बीति जाएत तँ काल्हि भेने ई जौवन रहत कि नहि से के जनैत अछि। (2) हे मानिनी, मन्द मन्द पवन बहैत अछि। दीप थिर नहि रहैत अछि। सगर आकाशमे नक्षत्र मलिन भए गेल। तोहर मुह देखि हमरा लगैत अछि जेना पलासक फूल पर भमरा बैसल हो (जेना रोस सँ तोहर बदन एखनहु लाल हो)।

[418]

आरे आरे भमरा तोहें हित हमश बउँसि आनह गजगामिनि रे।
आजुक रूसलि कालि जञो बउँसिबि तीति हाइति मधुजामिनि रे।।1।।
तीति रजनिआ तिनि जुग जनिआँ दिठिहुक ओत देसाँतर रे।
सरोबर सोसे कमल असिलाएल नगर उजळि भेल पाँतर रे।।2।।
एके सरे मनमथ दुइ जिब मारए अपन अपन भिन बेदन रे।।
दुहु मन मेलि कओने बेकताओब दारुन प्रथम निवेदन रे।।3।।
मानक भञ्जन जसु मनरञ्जन विद्यापति कवि गाओल रे।
लखिमा देवि पति सिबसिंह नरपति पुरुबजनम तपे पाओल रे।।4।।

कृष्ण भ्रमरसँ राधाकें बौंसि अनबाक अनुरोध करैत छथि -- (1) हे भ्रमर तों हमर हित थिकह। कृपा कए गजगामिनी राधाकें बौंसि आनह। आजुक रूसलि राधाकें जँ काल्हि बौंसबह (तुरन्त नहि बौंसि अनबह) तँ ई वसन्तक राति हमरा तीत लागत। (2) तीत राति बूझि पड़त जेना तीन युग हो। राधा जँ दृष्टिअहुसँ हटि जाइत अछि तँ हमरा लगैत अछि दूर देश चलि गेलि हो, जेना पोखरि सुखाए गेलें कमल मौलाए गेल हो, जेना नगर उजड़ि पाँतर भए गेल हो। आगाँ कवि कहैत छथि -- (3) कामदेव एके तीरसँ दू प्राणीकें मारैत छथि परन्तु दूनूक वेदना फराक-फराक होइत छैक। भीतर-भीतर दूनूक मनमे मिलनक हेतु आतुरता रहैत छैक, परन्तु समस्या रहैत छैक जे ई आतुरता आग बढ़ि कें व्यक्त करए। प्रथम निवेदन (आगु बढ़ि मेलक प्रस्ताव राखब) दारूण (कष्टकर) होइत अछि। (4) लखिमादेवी पूर्व जन्मक पुण्यक फलें राजा शिवसिंह-सन पति पओलनि। जनिका मानवतीक मान-भंजन करब बड़ मनोरंजक लगैत छनि।

[419]

ओतए[1] अरुन उदयाचल उगल एतए[2] पछिमे गेल चन्दा।
ओतए[1] भमर कोलाहलें जागल एतए[2] सुतल अरविन्दा।।1।।

कामिनि जामिनि ई चलि[3] गेलि।
चिरसमयागत हरि भेल पाहुन आधेओ केलि न भेलि।।2।।
पउत्रक पात आतपें नहि तओले[4] झामर नहि भेल देहा।
कृपन सञ्चित धन रहल अखण्डित काजर सिन्दुर रेहा।।3।।
अरुनिम जोति अधरे नहि छाड़लि[5] पलटि न गान्थल हारा।
आनहु बोलब सखि कि तोहे अचेतनि[6] की तोर नाह गमारा।।4।।
विद्यापति भन नहि मन परसन चित[7] चिन्ता विस्तारा।
पलटि रचह केलि पिअ सङ्ग पुनु मेलि दम्पति उचित बिहारा।।5।।

1. कतए। 2. एतए। 3. काहाँ। 4. अतापे न पओले। 5. अरुनक जोति अधरे नहि छड़ले। 6. हिया। 7. हिला।

मानहिमे राति बितओनिहारि राधाकें सखी कहैत छथिन -- (1) एक दिस उदयाचल पर अरुणक उदय भेल आ' दोसर दिस चान पश्चिममे अस्त भेल। एक दिस कोलाहल करैत भ्रमर जागल आ' दोसर दिस कमल सूतल। (2) हे कामिनी, ई राति मानहिमे बीति गेलहु। बहुत दिनपर आएल कान्ह पाहुन भेलहु तैओ आश्चर्य जे ओकरा संग आधो रंग रभस नहि भेलहु। (3) कमलक पात रौदसँ भौलाएल नहि, (अर्थात्) तोहर देह झमर नहि भेलहु (जे संगमोत्तर होएबाक चाही)। तोहर काजर आ' सिन्दूरक प्रसाधन कृपणक संचित धन-जकाँ जहिनाक तहिना अखण्डित रहलहु। (4) अधर अपन लाली नहि गमओलक। तों टूटल हार फेर गँथलह नहि। एहि सभ लक्षणसँ, हे सखी, आनो कहतहु जे की तँ तों अपनहि अचेतन (यौनसंवेगशून्य) छह आकि तोहरक पिआ सेह गमार छहु। (5) विद्यापति कहैत छथि, तोहर मन प्रसन्न नहि छहु। चित्तमे चिन्ता छहु। फेर पिआसँ मिलि रंगरभस रचह। दम्पतिक हेतु केलि करब उचित थिक।

[420]
आरति अपन आन[1] न चिन्हह करह कत उबानि।
अपनि रमनि ऐसे[2] सन्तावह परक पैअति आनि।।1।।
कान्हा तोहें बड़ लोक निसङ्क।
हसि हसि सेहे करम करासि जे होअ कुल कलङ्क।।2।।
जाहि जाहि तोहि गुरु निबाए ताहि तोरा निरबन्ध।
आँखि देखि जे काज न करए ताहि तह[3] के अन्ध।।3।।
तथिहु चिर समागम माङ्गह एत बड़ तोर लोभ।
परक भूखन परक बैभव कत खन दहु सोभ।।4।।
दूतिक बचने कान्ह लजाएल कवि विद्यापति भाने।
जे भेल से भेल जेहि तेहि गेल आगें[4] कर अबधाने।।5।।

1. आपु पवार। 2. रागे। 3. पारे। 4. आबे।

सखी परनारीमे निरत कृष्णकें गंजन करैत छथि -- (1) तों आतुरतावश कें आन, के अपन सेहो नहि चिन्हैत छह। बहुत अंटसंट काज करैत छह। हे कान्ह, तों बड़ निःशङ्क (ढीठ) छह। हँसि-हँसि कें सेह काज करैत छह जाहिसँ कुलमे कलंक लागए। (2) जे-जे करबामे गुरजन मना करैत छहु तोरा सेह-सेह करबाक जिद रहैत छहु। जे आँखि देखि (उचित-अनुचित बिचारि) काज नहि करैत अछि तकरासँ पैघ आन्हर के? (3) ताहूमे तों ओहि परकीयाक संग अधिकसँ अधिक काल रमए चाहैत छह। एतेक पैघ अछि तोहर लोभ। अनकर गहना आ' अनकर वैभव पर ककरो शोभा (प्रतिष्ठा) कतेक काल रहत? (4) दूतीक ई बात सुखन कृष्ण लजएलाह। विद्यापति कहैत छथि, जे भेल से भेल, एम्हर आएल, ओम्हर गेल। आगाँ ध्यान राखल करह।

[421]
गगन मण्डल उग कलानिधि कत निबारबि दीठि।
जखने जे रह तँहि गमाइअ जे बह ता दिअ पीठि।।1।।

साजनि बड़ बथु उपकार।
जाहेरि बचने पर हित हो ताहेरि जीवन सार।।2।।
साधु जन सखि[1] परहित लागि न गुन धन परान।
राहु पिआसल चान्द गरासए न होअ खीन मलान।।3।।
न थिर जीवन न थिर जौबन न थिर एहे संसार।
गेल अवसर पुनु न पाइअ किरिति अमर सार।।4।।
कतए राघवराए घरिनी कतए लङ्कापुर बास।
कतए हनुमते साअर लाँघल किछु न गुनु तरास।।5।।
जखने जकर बाङ्क विधाता सभ कला आने आन[2]।
अधिक आपदँ धैरज करब कवि विद्यापति भान।।6।।

1.जन काँ 2. अनुमान।

सखी परोपकारक महिमा देखाए व्यंजना द्वारा राधाकें कृष्णक उपकार करबाक प्रेरणा दैत छथि -- (1) आकशमे चान उगैत अछि तँ आँखिकें कतेक रोकब ? (कृष्ण चान जकाँ उगलाह, तौं देखह हुनका, लोकक लाजें डराइ नहि)। जखन जे उपलब्ध रहए तखन तकरहि संग रहक थिक। बसात देखि डेग उठएबाक थिक। (2) हे सखी, उपकार (परोपकार) बड पैघ वस्तु थिक। जकर वचनसँ आनक उपकार हो तकरे जीवन सार्थक बूझह। साधु जन आनक हित लेल अपन धन आ' प्राणहुकें किछु नहि बुझैत छथि। पिआसल राहु चानकें पीबि जाइछ तैओ चान ने खिन्न होइत छथि ने क्षीण। (4) ने जीवन स्थिर थिक, ने यौवन, आ' ने ई संसार। बीतल काल फेर नहि भेटैछ। केवल कीर्ति अमर होइछ। (5) कतए रघुकुल-गृहणी सीता, कतए लंकावास, कतए हनुमानक समुद्रलंघन तैओ त्रासक परबाहि नहि कएलनि। । (6) जखन ककरो भाग्य प्रतिकूल भए जाइत छैक तखन ओकर कौशल अन्यथा भए जाइत छैक। विद्यापति कहैत छथि, संकटमे धैर्य रखबाक थिक।

[422]

चान्द सुधा सम बचन बिलास। भल जन ततहि जाएत बिसबास।।1।।
मन्दा मन्द बोलहि सबे कोए। पिबइते नीम बाँक मुह होए।।2।।
ए सखि सुमुखि वचन सुन सार। से कि होइति भलि जे मुहखार।।3।।
जे जन जैसन इद धर गोए। तकर तैसन तत गौरब होए।।4।।
गौरब ए सखि धैरज साध। पहु नहि धरए सतओ अपराध।।5।।
जइअओ हदअ रह मिलिअ समाज[1]। तइअओ रहब अञुधि भए लाज[2]।।6।।
काचघटी अनुगत जल जेम। नागर लखब हदअगत पेम।।7।।
मधुरवचन है सबहुलह सार। विद्यापति भन कबि कण्ठहार।।8।।

1. जौं अछ हृदया मिलत समाज! 2. अबसओ रहब।

सखी राधाकें बउँसैत छथि -- (1) जतए बोल चानक अमृत सन मधुर सुनैत अछि, भल जन ततहि विश्वासपूर्वक सटत। (2) सभ केओ मन्द (अप्रिय) बोलहिसँ (कटुभाषी होएबाक कारणहिँ) मन्द (अधम) बूझल जाइत अछि। नीम पिबितहिँ मुह बिजुकि जाइत अछि। (3) हे सखी, (हमर बात सुनह। जकरा मुहमे खार (कटुवचन) छैक से कथमपि सुनारि नहि भए सकैत अछि। (4) जे अपना हृदयक भावकें जतेक छिपाएकें रखैत अछि (मनक कटुता प्रकट नहि करैत अछि) से ततेक आदर पबैत अछि। (5) हे सखी, धैर्यसँ गौरव प्राप्त होइत अछि। जँ धैर्य रहए तँ पहु सए-सए अपराध कएलहु पर ओकरा अपराध नहि मानत। (6) जँ मनमे मिलबाक उत्कण्ठा रहहु, तैओ लाज कए मूड़ी गोंतने (अधोमुख भए) रहिहह। (7) नागर पहु काचक धैल (बोतल) मे राखल पानि-जकाँ हृदयस्थ प्रेम देखि लेतहु। (8) कवि कण्ठहार विद्यापति कहैत छथि, मधुर वचन सभसँ पैघ वस्तु थिक।

[423]

दुरजन दुरनए परिनति मन्द। ता लागि अबस करिअ नहि दन्द।।1।।
हठे नहि करिअ[1] सिनेहक ओर। फूटल फटिक बलअ के जोळ।।2।।

साजनि अपनेहि मने अवधार। नखछेदन के लाब कुठार।।3।।
जतने रतन निज राखिअ[1] गोए। तें परि जे परबस नहि होए।।4।।
परगाट करब न सुपहुक दोस। राखब अनुनअ अपन भरोस।।5।।
भनइ विद्यापति परिहर धन्ध। अनुखन न रह पहुक[3] अनुबन्ध।।6।।

1.जञो करबह। 2. पए राखब। 3. न रह पहुक।

सखी राधाकें सहनशील होएबाक उपदेश दैत छथि -- (1) दुष्ट लोकक दुर्नीति (दुष्टता) केर परिणाम अधलाह होइत अछि। ताहि लेल पहुसँ झगड़ा नहि करक थिक। (2) हठात् स्नेह समास नहि करक थिक। प्रेम मानह स्फटिकक कगना थिक, ओ जँ फूटल तँ ओकरा के जोड़ि सकत? (3) हे सखी, अपनहि मनमे विचार करह। जे नहसँ टूटि सकैत अछि तकरा पर कुड़हरि के बजारत? (प्रेम बड़ तनुक होइछ, कनेको आघातसँ टूटि सकैछ, तकत बचाबइ)। (4) यत्नपूर्वक अपन रत्न जोगाए कें राखह, जाहिसँ ओ अनका हाथमे नहि चलि जाए। (5) अपन प्रियतमक दोष प्रकट नहि करबह (मनहि मे जाँति रखिहह)। अपन अनुनय-विनय पर भरोस रखिहह (जँ तोरासँ कोनो अपराध होअहु तँ क्षमा माड़ि लिहह)। (6) विद्यापति कहैत छथि, पहुसँ विरोध नहि करिहह, किएक तँ पहुसँ अनुबन्ध (मधुर सम्बन्ध) सदा नहि रहैत अछि (कखनहु टूटि सकैत अछि)।

[424]

सखि है बूझल कान्ह गोआरे।
पितड़क टार काज कीदहु[1] लह ऊपर चकमक सारे।।1।।
हमे कएलाहुँ[2] मन गेलेंहि होएत भल हम छल सुपुरुख भाने।
तोहरे बचने सखि कएल आँखि देखि अमिञ भरमे बिखपाने।।2।।
पसुक सङ्ग जे[3] जनम गमाओल से कि बुझत[4] रतिरङगे।
मधुजामिनि मोरि आजे निफलि गेलि गोप गमारक सङ्गे।।3।।

तोहर बचन सखि हित कए मानल[5] तें हमे गेलिहुँ अबाटे।
चन्दन भरमे सिमर आलिङ्गल सालि रहल हिअ काँटे।।4।।
भनइ विद्यापति हरि बहुबल्लभ कएल बहुत अपमाने।
राजा सिवसिंह रूपनराएन लखिमापति रस जाने।।5।।

1. दहु कञोन। 2. हम तौ कएल। 3. सङ्गे हुनि। 4. बुझथि। 5. तोहरे बचने कूप धस जोरल।

राधा दूतीकें उलहन दैत छथि -- (1) हे सखी, आइ बुझबामे आएल जे कान्ह वास्तवमे गोआर थिक। पितड़िक टार कोन काज देत? केवल ऊपरसँ चकमक। (2) हमरा मनमे भेल जे जएबे नीक होएत, किएक तँ हमरा धारणा छल, ओ कान्ह नीक लोक अछि। तोरा कहने हम अमृतक भ्रमें विषपान कएल। जे पशुक संग जीवन बितओलक से कोना बूझत जे रतिरङ्ग की थिकैक। (4) हे सखी, तोहर बातकें हितकर बूझल, तें हम कुमार्ग धएल। चन्दन बूझि सिमरक गाछकें धएल, तें हृदयमे काँट भोंकाए रहल अछि। (5) विद्यापति कहैत छथि, कान्ह बहुवल्लभ थिकाह, तें ओ तोहर बहुत अपमान कएलथुन। एकर रस जननिहार थिकाह लखिमाक पति राजा शिवसिंह रूपनारायण।

[425]

मधुसम वचन कुलिस स मानस प्रथमहि जानि न भेला।
अपन चतुरपन पिसुन हाथ देल गरुअ गरब दुर गेला।।1।।
सखि है मन्द पेम परिनामा।
बल कए जीवन कएल पराधिन नहि उपचर एक ठामा।।2।।
झँगल कूप देखहि नहि पारल आरति चललाहुँ धाई।
अपनुक1 लघु गुरु किछु नहि गुनले आबे पचताबे कि जाई।।3।।
एत दिन अछलाहुँ आन भाने हमे आबे बूझल अबगाही।
अपन मूड़ अपनेहि हमे चाँछल दोख देब गए काही।।4।।
भनइ विद्यापति सुन बरजाउबति चितेनहि मानब2।

पेमक कारन जीव उपेखिअ जग जन के नहि जाने।।5।।

1.तखनुक। 2. गनब।

कृष्णक वंचनासँ दुखी राधा सखीकेँ कहैत छथि--(1) कान्हक बोल तँ मधु सन छैक आ' मन बज्र सन से बात पहिने नहि जानि सकलहुँ। अपन चतुर पन दुष्टक हाथ दए देलहुँ (ठक पाला पड़िगेलहुँ)। अपन प्रबल गर्व छल से गमाए लेलहुँ। (2) हे सखी, प्रेम करबाक परिणाम नीकनहि भेल। हठात् अपन जीवन आनक अधीन कए लेलहुँ। आब कतहु शान्ति नहि भेचऐत अछि। (3) झाँपल कूप देखि नहि पओलहुँ। आतुरता वश दौड़ि चललहुँ (आ' कूपमे खसि पड़लहुँ)। अपन मान-अपमान किछु नहि सोचल। आब जाएकेँ पश्चाताप कएने की होएत? (4) एतेक दिन हम मिथ्या धारणा छलहुँ। आब भीतर पैसि कैं सत्य जानि गेलहुँ। अपन मूड़ हम अपनहि मुड़लहुँ, तखन अनका ककरा दोख देबैक गए। (5) विद्यापति कहैत छथि, हे सुन्दरी, सुनह। चितमे आन बात नहि आनह। संसार मे के नहि जनैत अछि जे प्रेमक आगाँ प्राणहुक उपेक्षा करक थिक।

[426]

बिमल कमलमुखि न करिअ माने। होएत[1] बदन तुअ चान्द समाने।।1।।
कामे कपट कनकाचल आनी। हृदअ बैसाओल दुइ निअ पानी[2]।
तैं पातकेँ तोहेँ माझहि खीनी। लघु गति हंसहु तह अति हीनी।।3।।
एँ धने सुखित होएत युवराजे। बसने झपाबह की तोर काजे।।4।।
देह[4] परिरम्भि अधरमधु दाने। कखने फुजति[5] निबि केओ नहिजाने।।5।।
भनइ विद्यापति रसिक सुजाने। रुकुमिनिदेबि पति सुन्दर कान्हे(?)।।6।।

1. पाओत। 2. करेजानी। 3. तोहि। 4. हसि। 5. फुजलि।

दूती राधाकेँ संगम शिक्षा दैत छथि --(1) हे निर्मल चान सन मुहबाली राधा, एना मान नहि करबाक थिक। मान कएने तोहर मुह (निर्मल चान-सन नहि रहि मलिन चान-(सकलंक) भए जाएत। (2)

कामदेव छलपूर्वक स्वर्णपर्वत (सुमेरु) आनिकेँ तोहर छाती पर अपना हाथेँ बेसाओल। (3) ताहि छलक पापेँ तोहर हंसहुसँ हीन (मन्द) भए गेलहु। (4) एहि स्तनरूपी सोनसँ युवराज (युवकसमाट्) कान्ह सुखित (धनाढ्य) होएत। एकरा तोँ वस्त्रसँ झपैत छह? ई तोँ केहन-दन काज करैत छह। (5) आलिंगन कए अधरमधु दहक। के जनैत अछि जे तोहर नीवी (चीर) कखन फुजि जएतहु। (6) विद्यापति कहैत छथि, रुक्मिणीदेवीक पति रसिक सुविज्ञ सुन्दर।

[427]

की कुच अञ्चले रखिह गोए। उपचित कतए तिरोहित होए।।1।।
उपजलि पिरिति हठहि गेलि। नयनक काजरेँ मुखमसि भेलि।।2।।
तैं अबसादे अबस भेल देह। खतखरिआ सन भेल सिनेह।।3।।
जओ बाजलि तओ संसअ गेलि। आनि नबओ निधि बिहि जनि देलि।।4।।
भनइ विद्यापति एहु रस जान। सिबसिंह[1] लखिमा देवि रमा।।5।।

1. राजा सिबसिंह रूपनरायन।

रूसलि राधा कैं बौंसि कृष्ण कहैत छथिन्ह -- (1) हे राधा, अपन स्तनकेँ आँचरमे नुकाए किएक रखने छह। उन्नतिशील वस्तु कतहु दबि सकैत अछि। (2) पूर्वमे तोरासँ जे प्रेम उपजल से (ककरो दुष्टतासँ) हठात् टूटि गेल। जे नयनक काजर छल से मुहक दाग भए गेल। (3) ताही व् सँ हमर देह दुबराए गेल। प्रेम खतखरिआ (क्षतपरक क्षार) भए गेल। (4)... (?)। तोँ आबि गेलह तँ लागल जेना विधाता नबो निधि आनि कैं दए देलनि। (5) विद्यापति कहैत छथि, लखिमा देवीक पति शिवसिंह ई रस जनैत छथि।

[428]

प्रथमक आदरेँ फुलक भेल कत न गुनल दाहिन बामे।
मधुर बचन मधु भरमहि पीउल बिस सम भेल परिनामे।।1।।

कतन मनारथें अछलिहुँ सुन्दरि नागर भमर हमारे।
रभसक अवसर की नहि अङ्गिरए कतन करए परबन्धे।
अबसर गेले हेरि नहि हेरए फल पाबिअ[1] सब धन्धे।

1.जानिअ।

कृष्णसँ उपेक्षिता राधा अपन सन्ताप सखी सुनबैत छथि -- (1) आरम्भ आदर पाबि ततेक ने पुलकित भए गेलहुँ जे बाम-दहिन किछु नहि सोचि पओलहुँ। कान्हक मधुर वचन अमृत बूझि पिबैत गेलहुँ आ' तकर परिणाम भेल विषक समान। (2) हे सखी, मनमे कतेक मनोरथ कएने छलहुँ परन्तु हमर नागर (रसिक पिआ) भ्रमर तुल्य सिद्ध भेल। जा धरि रस पबैत रहल ता धरि वशमे रहल। रस समाप्त होइतहि बिनु दोखहि छाड़ि कें चलि देलक। (3) संगक समय की-की नहि गछए, कतेक ने आबेस करए। अवसर बितितहि ताकिओ कें नहि ताकए। परिणाम मे केवल चिन्ता हाथ लागए।

[429]

प्रथम जौवन नव गरु मनोभव छोटि मधुमास रजनी।
जाग गुरुजन गेहा राखए चाह नेहा संसअ पड़लि सजनी।।1।।
साए साए कैओ न' बेदन तसु जाने।
संकेत निकेत[2] हरि जाइति कञोन परि अनुखन बिकल पराने[3]।2।।
पथँ पुरजन[4] सङ्का पअ पअ घन पङ्का कि करति ओ नबि करिनी।
चलए चाह धसि पुनुपुनु पड़ खसि[5] जालक छेकलि हरिनी।।3।।
बिहि मोर बड़ मन्दा उगि जनु जाए चन्दा उठि उठि[6] गगन निहारे।
नलिनी दल निर चित न रहए थिर तत घर तत हो बहारे।।4।।
कवि विद्यापति भन अनुखन[7] गुरुजन नीन्द निरूपए लागी।
कपटे निकट गए बदन कान दए[8] रअनि गमाबए जागी।।5।।

1. कमन। 2. निकुञ्जवन जे। 3. हन पचबाने। 4. पथहु पथुक। 5. पुनु पड़ खसि खसि। 6. सुति उठि। 7. कि करत। 8. बअनि नीर भरि धीरे झपाबए।

कवि अभिसारक हेतु नवयौवना राधाक विकलताक वर्णन करैत छथि -- (1) राधा नव यौवनक प्रथम चरणमे प्रवेश कएलक अछि। कामदेवक भारी दबाब (मिलनक आतुरता) छैक। वसन्तक राति छोट होइत अछि। घरमे गुरुजन जागल छैक। प्रेम राखए चाहैत अछि। एहि सभ कारणें राधा संकेतस्थलमे कृष्ण बाट तकैत छथिन। मुदा ओ जाए कोना सकत। ओकर प्राण निरन्तर व्याकुल छैक। (3) बाटमे नगरक लोक देखतैक तकर डर छैक। डेग-डेग पर भारी पाँक छैक। हस्तिनी राधा की करए (पाँक कोन पार करत)? जोर लगाए चलए चाहैत अछि आ' बेरि-बेरि खसि पड़ैत अछि जेना जालमे बझलि हरिनी। (4) भाग्य हमर बड़ अधलाह अछि, कदाचित् चान ने उगि जाए एहि प्रकारक गुनधुनमे ओ बेरि-बेरि उठि-उठि अकास दिस तकैत अछि। ओकर चित्त पुरइनिक पात परक पानि जकाँ चंचल छैक। लगले घर जाइत अछि, लगले बहार। (5) विद्यापति कहैत छथि, छन-छनमे ई देखबाक हेतु जे गुरुजन जागल छथि कि सूतल। कोनो लाथें लग जाए गुरुजनक मुह लग कान दए-दए जागि कें राति बितबैत अछि।

[430]

सजनी अपद न मोहि परबोध।
तोड़ि जोड़िअ जहाँ गैंठि पड़ए तहाँ तेज तम परम विरोध।।1।।
सलिल सिनेह सहज थिक सीतल ई जानए सबे कोई।
से जदि तपत कए जतने जुड़ाइअ तइअओ विरतरस होइ।।2।।
गेलि पिरीति कि पुनि[1] उपजाइअ कुलससि नीली रङ्ग।
अनुभवि पुनु अनुभवए अचेतन पड़ए हुतास पतङ्ग।।3।।

1. गेल सहज हे कि रिति।

कृष्णक अपराधसँ दुखी राधा सखीकें कहैत छथि -- (1) हे सखी, अनेरे हमरा परतारह नहि। जतए तोड़ि कें जोड़बह ततए गेंठ पड़बे करतहु। प्रकाश आ'अन्धकार (राधा गोरि, कृष्ण कारी) कें सहज विरोध छैक। (2) पानि आ' प्रेम दूनू स्वभावतः शीतल होइत अछि ई बात सभ जनैत अछि। तकरा जँ तों तस कए आयासपूर्वक सराए देबह, तैओ ओ कुरस रहिए जाएत। जे प्रेम एक बेर चल गेल से कि फेर बहुरत। (3) कुलरूपी चानमे दाग लागि गेल अछि (ओकरा के मेटाओत?)। बुद्धिहीन लोक एकबेर कटु अनुभव भेलहु पर बेरि-बेरि अनुभव करैत अछि (मूर्ख बेरि ठेसैत अछि) जेना पतङ्ग बेरि बेरि आगिमे खसैत अछि (हम फेर एहन भ्रममे नहि पड़ब।)।

[431]

दहो दिस सुन सन अधिक पिआसल भमइते[1] बुल सब ठाने[2]।
भागविहुन जन[3] आदर नहिलह अनुभव धनिजन मान[4]।।1।।
हे साजनि, जनि लेह कान्हक नामे[5]।
बिहिक दोख सन्तोष उचित थिक जगत बिदित परिनामे।।2।।
आतपें तापित सितल जानि कहु सेऔल मलय गिरि छाहे।
ऐसन करम मोर सेहओ दूर गेल भेटल[6] दवानल दाहे।।3।।
कते दुखे आज समुद तट[7] पाओल तकरओ[8] जल भेल खारे।
एहना अवसर धैरज पए हित सुकवि भनथि कण्ठहारे।।4।।

1.भरमैते। 2. ठाने। 3. नर। 4. शमे। 5. भमिकरि ठामे। 6. कएल। 7. तिर। 8. सगरेओ।

कृष्णपर रुष्ट राधा सखीसँ कहैत छथि -- (1) भाग्यहीन लोककें दसो दिशा सून-सन लगैत छैक। ओ भूखल-पिआसल यत्र-तत्र बौआइत रहैत अछि; कतहु आदर नहि भेटैत छैक। केवल धनवान् सम्मान पबैत अछि।

साध्य की।(2) हे सखी, कान्हक नाम नहि लेह। भाग्यक दोख। सन्तोषे करब उचित। परिणाम की होइत अछि से संसार भरिक लोक जनैत अछि। (3) रौदसँ व्याकुल भेलि शीतल बूझि मलय-पर्वतक छाहरिमे अएलहुँ। परन्तु दुर्भाग्य एहने जे ओहो दूर (अलभ्य) भए गेल, भेटल केवल दावानल (वनाग्नि) केर धाह। फेर आइ कतेक कष्टें समुद्रक कात अएलहुँ, मुदा तकरो पानि खार भए गेल। एहन परिस्थितिमे, सुकावि कण्ठहार कहैत छथि, धैर्य धरबे हितकर होइछ।

[432]

अपद समथ कह कत फूसि। खने मोह खने रहए रुसि।।1।।
मञे न जाएब दुजन सङ्ग। नहि सरलासए सामर रङ्ग।।2।।
नहि अबलोकब तन्हिक रुप। अछैते आँखि न धसब कूप।।3।।
विद्यापति कवि रभस गाब। मलिक बहारदिन बुझ भाब।।4।।

कृष्णपर तमसाइलि राधा सखीसँ कहैत छथि -- (1) ओ दुर्जन कान्ह जखन-तखन शपथ कए-कए बेरि-बेरि फूसि कहैत (ठकैत) रहैत अछि। खन मोहैत अछि आ' खन रुसि रहैत अछि। (2) हम ओहि दुर्जनक लग नहि जाएब। कारी पुरुषक हृदय कहिओ शुद्ध नहि भए सकैत छैक। (3) हम फेर ओकर मुह नहि देखब। आँखिक अछैत कूपमे नहि धसब। (4) विद्यापति कवि ई रंगरभस गाओल। एकर भाव बुझनिहार थिकाह मलिक बहारुद्दीन।

टि.1--प्रतीत होइत अछि जे मूलतः पर्णवृत्त (एकादशाक्षरी) मे निबद्ध एहि गीतकें केओ मात्रिक (चौपाइ।) छन्दमे परिणत कए देने हो। तरौ. पाठ -

अपथ समथ कए कह कत फूसि। खन मोहें तखने रइत रुसि।।
मोञे न जाएबे माइ दुरजन सङग। नहि सरलासय सामर रङ्ग।।
अवलोकव नहि तनिकर रुप। आँखि अछइते कइ से खसब कूप।।

विद्यापति कवि रभसे गाव। मलिक बहारदिन बुझ इ भाव।।

टि.2--बहारदीनक नाम, तें सम्भवतः विद्यापतिक नहि।

[433]

कमल भमर जग अछए अनेक। सबतह से बड़ जाहि विवेक।।1।।
मानिनि तोरित करह अभिसार। अवसर थोड़हु बहुत उपकार।।2।।
मध नहि देलह रहल की खागि। से सम्पति जे परहित लागि।।3।।
अकुलिन[1] लए तुलना तुअ देल। जाव जीव अनुतापक भेल।।4।।
तञे नहि मन्द मन्द तुअ काज। भलेओ मन्द हो मन्दा समाज।।5।।
भनइ विद्यापति दुति कह गोए। निञ खति बिनु परहित नहि होए।।6।।

1. अपुजित।

दूती राधाकें अभिसारक हेतु प्रेरित करैत अछि -- (1) संसारमे बहुत कमल आ' भ्रमर अछि। ताहिमे उत्कृष्ट ओ थिक जकरा विवेक होइक। (2) हे मानिनी, तों झट दए अभिसार करह, किएक तँ अवसर पर थोड़ो उपकार बहुत बूझल जाइछ। (3) तोरा कोन खकता (अभाव) छलहु जे मड़लहु पर मधु नहि देलहक? सम्पति से थिक जाहिसँ आनक उपकार हो। (4) तोहर तुलना कान्ह अकुलीनसँ देलथुन। तकर अनुताप नहि छहु? तोहर ई काज (कृष्णक उपेक्षा) अधलाह भेलहु। अधलाह लोकक संगतिमे नीको लोक अधलाह भए जाइत अछि। (5) तों अधलाह नहि छह। तोहर ई काज (कृष्णक उपेक्षा) अधलाह भेलहु। (6) विद्यापति कहैत छथि, हे दूती, राधाकें चुपेचाप कहुन जे अपन हानिक बिना आनक हित नहि कएल जाए सकैत अछि (अपन मान, गमाए कृष्णक हित करह गए)।

[434]

थिर नहि जउबन थिर नहि देह। थिर नहि रहए बालँभु सञो नेह।।1।।
थिर जनु जानह ई संसार। एक पए थिर रह पर उपकार।।2।।
सुन सुन सुन्दरि कएलह मान। के परसंसब[1] तोहर गेआन।।3।।

कउसल[2] कए हरि आनल गेह। मुर जसञो भङ्गलह कएल सिनेह[3]।।4।।
आदरि आनल बिघटल रङ्ग। सुतरिक राब सरिस भेल सङ्ग।।5।।
विमुख चलल हरि बुझि बेबहार। आबे कि गाओत कवि कण्ठहार।।6।।

1. की परसंसह। 2. कउलति। 3. मुर भाँगल सन कएलह।

दूती मानिनी राधाक गंजन करैत छथि--(1) ने ककरो यौवन स्थिर रहलैक अछि, ने देह, आ' ने पिआक प्रेम। (2) एहि संसारहुकें स्थिर नहि बूझह। स्थिर रहनिहार एकमात्र वस्तु थिक पर-उपकार। (3) हे सुन्दरी, सुनह। तोहर एहन मतिक के प्रशंसा करतहु। (4) कौशल कए कान्हकें तोरा घर अनलहुँ, आ' तों ओकर प्रेमकें जड़िअहिसँ तोड़ि देलह। (5) कान्हकें आदरपूर्वक अनलहुँ किन्तु रंगमे भंग भए गेल। ओकर अभिलषित मिलन सुतरीक राब सन भए गेलैक (ज्ञातव्य जे गुड़ बनएबामे सुतरीक सेजपर राब पौरल जाइत अछि तँ राब आ' सुतरीकें संग होइत छैक, किन्तु गुड़ जमितहि सुतरी कात कए देल जाइत अछि।) (6) कान्ह तोहर व्यवहार (मान) देखि विमुख (निराश) भए चलि गेल। आब कवि कण्ठहार की गओताह।

[435]

चाहइते अधर निअर नहि लओलए धरइते मोड़लए बाँही।
सुपहु सिनेह केलि रति[1] भङ्गलए तोहि सनि पापिनि नाही।।1।।
मानिनि, X X X X X X ।
अबहु पलटि चल पिआक पाअ पड भेटब[2] सब अपराधे।।2।।
कैलयँ हास गोप कके कएलए[3] कके तोरि भञुह चढ़ली।
पिआसञो परुख बचन कके[4] बोललए जिह तोर टुटि न पड़लि।।3।।
सौरस लागि पिअ हिअ आराहिअ बैरस बास न करिआ।
बैरस[5] बिखतरु पल्लब मेलब आँकुर भाङ्गि न हलिआ।।4।।
भनइ विद्यापति सुन सुन गुनमति ओर धरि कै कर माने।
राजा सिबसिंघ रुपनाराएन लखिमादेबि रमाने।।5।।

1. लिसि। 2. मेटओ तोत्रे। 3.कएलए कके। 4. पउरुख कके तोत्रे। 5. अछिकहु।

दूती मानवती राधाकें गंजन करैत छथि -- (1) पहु अधर-पान करए चाहलकहु तँ तों अपन अधर लग नहि अनलह। ओ बाँहि धरए लगलहु तँ तों बाँहि मोड़ि (छिपि) लेलह। पिआ स्नेहपूर्वक संगम करए चाहलकहु तँ तों पड़ाए गेलह। तोरा-सन पापिनी केओ नहि। (2) हे मानिनी, ...। आबहु घुरिकें पिआ लग जाह, ओकर पाएर धरह, सभ अपराध दूर भए जएतहु। (3) मुहपर (रसोद्रोकवश) हास आबए लगलहु तँ ओकरा छलपूर्वक छिपओलह किएक? तोहर भउँह चढलहु किएक? पिआकें कटु वचन किएक कहलह? से बजैत तोहर जीह टूटिकें किएक ने खसि पड़लहु? (4) पिआक हृदय (मन) कें सन्तुष्ट रखबाक थिक जाहिसँ सौरस्य सौमनस्य (मेल) बनल रहए। वैरस्यकें स्थान नहि देबाक थिक। वैमनस्यरूप विष वृक्षक अंकुरहकें तोड़ि नहि देल जाए तँ ओ पल्लवित होइत जाएत। (5) विद्यापति कहैत छथि, हे गुनमन्ति राधा, सुनह। मान कें अन्त धरि नहि ठेकाबह।

[436]

कण्टक दोसें कैतकिसओ रूसल हठे आएल तुअ पासे।
भल न कएल तोहें अपद अधिक कोहें भमरकें कएल[1] उदासे।।1।।
जातकि, अनुचित एक बड़ भेला।
निअ मधुसार साँचि तोहें राखल भमर पिआसल गेला।।2।।
ओहओ भमर मधुसार विवेचक गुरु अभिमानक गेहा।
गुरु मद[2] छाड़ि पलटि[3] नहि आओत देखबाहु पुनु[4] सन्देहा।।3।।
सेहओ सुचेतन गुनक निकेतन सबहि कुसुम रस लेई।
जेहे नागरि बुझ तकर चतुरपन से नहि[5] परिहरि देई।।4।।

1. बोलन। 2. पद। 3. पुनु। 4. भेल। 5. सेहेन।

सखी मानिनी राधाकें उपदेश दैत छनि -- (1) भ्रमर केतकी (केओला) फूलक लग गेल तँ काँट गड़लैक (किछु कटुता भए गेलैक) तें ओकरासँ रूसि कें तोरा लग आएल। तों कोपवश ओकरा जे अनेरे उदास कएलह से नीक काज नहि। (2) हे जातकी (राधा), ई बड़ अनुचित भेलहु। तों अपन मधुरसकें जेगओने रहि गेलह आ' भ्रमर पिआसले चलि गेल। (3) ओ भ्रमर जनैत अछि जे कोन मधु कतेक मीठ, आओर ओ भारी स्वाभिमानी अछि। ओ स्वाभिमान छाड़ि घुरि कें नहि अओतहु। फेर ओकर दर्शनहुमे सन्देह। (4) सुचेतन (प्रबुद्ध) अछि आ' सूब गुणवान् अछि। सभ कुसुमक रस चूसैत अछि। जे नागरी ओकर चतुरपन (रसिकता) बूझैत अछि से ओकरा कहिओ छोड़त नहि।

[437]

भमइते भमर भरमे जओ भुललाहे आन लता लहि पासे।
एतबा दोस रोसबस[1] भए रहु जनु[2] कर हृदअ उदासे।।1।।
जइअओ हिमकर निअ करें परसए सरसिज[3] सबहु समाने।
कुमुदिनिकाँ ससि ससिकाँ कुमुदिनि जीवन के नहि जाने।।2।।
जइसन तोहर तन्हिको तइसन मन[4] कत पतिआउबि भाखी।
जगत बिदित थिक सबकाँ सबतहु मनकाँ मन थिक साखी।।3।।

1. रोस दोस। 2. दुर। 3. सरोवर हिमकर निअ कों परसए सबहु। 4. जइसन तोहर मन तन्हिको तइसन।

कृष्णक दूती राधाकें परतारैत अछि -- (1) भ्रमर घुसैत-फिरैत लगमे आन लताकें पाबि भ्रमवश ओकरा पर आकृष्ट भए गेल। ओकर एतबे दोषपर तों क्रोध कए बैसलह? तों एना मन उदास नहि करह। (2) यद्यपि चान अपन कर (दू अर्थ, किरण आ' हाथ) सँ पोखरिमे भेनिहार सभ फूलकें समान रूपें छुबैत अछि, तइओ कुमुदिनीक जीवन थिक चान आ' चानक जीवन थिक कुमुदिनी से के नहि जनैत अछि। (3) जेहने तोहर

मन छहु तेहने हुनको मन छनि, से कहि-कहि कें कतेक विश्वास करएबहु। ई बात जगजाहिर अछि जे अपन मनक साक्षी अपने मन होइत अछि (विवेक अनका कइने नहि, स्वयं मनमे जगैत छैक)।

[438]

पुनु चलि आबसि पुनु चलि जासि। बोले चाहसि किछु बोलैते लजासि।।1।।
आस दइए कहु हरि[1] किए लेसि। अधराओ बचने उतर नहि[2] देसि।।2।।
सुन तञे दूति[3] सरूप कह मोहि। सङ्ग सञो कपट हृदअ[4] भेल तोहि।।3।।
तन्हिकरि कथा कहसि कों लागि। जूड़ेओ हृदअ पजारसि आगि।।4।।
तन्हिकर कउसल मोर पए दोस। कहलेंओ कहिनी बाढ़ए रोस।।5।।
भनइ विद्यापति एहु रस जान[5]। सिबसिंह लखिमा देवि रमान।।6।।

1. हरि कहु। 2. उतरोन। 3. तञे दूति। 4. हमर। 5. भान।

राधा दूतीपर सन्देह करैत ओकरा गंजन करैत छथि -- (1) तों बेरि-बेरि अबैत छह आ' चलि जाइत छह, किछु बाजए चाहैत छह किन्तु लाजें बजैत नहि छह। (2) एना आस दए कें हरि किएक लैत छह? आधो वाक्यमे उत्तर किएक नहि दैत छह? (3) हे दूती, सुनह सत्य सत्य कइह जे बात की थिकैक। लगैत अछि कपटी कृष्णक संगतिसँ तोहर मनमे कपट आबि गेलहु। (4) तनिक कथा हमरा किएक सुनबैत छह? तों हमर शीतलो हृदयमे आगि पजारि दैत छह। (5) हुनक चतुरपन आ' हमरे दोस (से की कहैत छह?) एहन कथा कहलहुसँ तामस बढ़ैत अछि (नहि कहह एहन कथा)। (6) विद्यापति कहैत छथि, एकर रस जननिहार थिकाह लखिमादेवीक पति शिवसिंह।

[439]

कि कहब अगे सखि मोर अगेआने। सगरिओ रयनि गमाउलि माने।।1।।
जखने मोर मन परसन भेला। दारुन अरुन तखने उगि गेला।।2।।
गुरुजन जागल कि करब केली। तनु झपइते हमे आकुलि भेली।।3।।

अधिक चतुरपने भेलाहुँ अयानी। लाभक लोभें मुलहु भेलि हानी।।4।।
भनइ विद्यापति निअ मति दोसे। अबसर काल उचित नहि रोसे।।5।।

मान कए पछतबैत राधा सखीकें कहैत छथि -- (1) हे सखी, की कहिअहु अपन अज्ञान (दुर्मति)। सगर राति मानहिमे गमाए देलहुँ (2) जखन मन प्रसन्न भेल तखनहि चण्डलबा अरुण उगि गेल। (3) गुरुजन जागि गेल। तखन केलि की करब, देहे झपबामे व्यस्त भए गेलहुँ। (4) अधिक चतुरपनक फेरमे मूर्ख भए गेलहुँ। लोभ कएल लाभ लेल, मुदा मूलधनहुमे हानि भए गेल। (5) विद्यापति कहैत छथि, ई तोहर अपने दुर्मतिक फल थिकहु। मिलनक बेरिमे रोस करब उचित नहि भेलहु।

[440]

एतदिन छल पिआ तोह हम एक[1] हिआ सीतल सील कलापे।
तोहें से दूर कर तोहर कान भरु[2] दुरजन दुरित अलापे।।1।।
मो पति भल भेल ओतहि ओहओ गेल कि फल विकल कए देहे।
करिअ जतन पए जञो पुनि जोड़ि होए टूटल सरस सिनेहे।।2।।
सुन कान्ह हे X X X ।
जतन केदहु परिहर X X X X X ।।3।।
दिन दस जउबन सेहओ[3] अनाएत मन तहु पुछ परकारे।
तुअ परसाद बिखाद नयन जल कएल[4] मोर उपकारे।।4।।
ते तञो करबि मसि मयन पास बैसि लिखिए पठाएब[5] तोही।
तार हार घनसार सार रे सेओ सब सन्तावए मोही।।5।।
कमलिनि केलि भानुसञो निरवह[6] आओ कुमुदिनि सञो चन्दे।
दुरहु दुरहु रह बुझए देह पहुँ दरसने कत आनन्दे।।6।।
भनइ विद्यापति अरे बरजौबति मेदिनि कलप समाने।
लखिमादेवि पति रूपनराएन सुखमादेखि रमाने।।7।।

1. जेहे। 2. तोहें न कान छह विनति दूर करु 3. तेहि। 4. काजरे। 5. लिखिलिखि देखवासि। 6. कामिनि केलि भान थिक माधव। 7. तोहें पहु नञो बुझह दहु।

उपेक्षिता राधा कृष्णकें उलहन दैत छथि -- (1) हे पिआ, एतेक दिन बुझाइत छल जे तोहर आ' हमर परस्पर शीतल व्यवहार अछि। परन्तु अपन हृदयसँ तों हमर हृदयकें हटाए देलह। (हमरा बिसरि देलह) किएक तँ दुर्जनक दुष्ट वचन तोहर कानमे भरि गेल। (2) हमरा लेखें नीक भेल। ओहो (हमरो मन) ओतहि चलि गेल। देहकें विकल कएने कोनो फल नहि। मेलक प्रयास तखनहि करी जखन टूटल स्नेह जोडल होअए। (3) हे कान्ह, सुनह। ....(4) यौवन दसे पाँच दिन रहैछ, सेहो विवश आ' ततहु... (?) तोहर कृपासँ हमरा आँखिमे जे नोर बहल से हमरा हेंतु उपयोगी भेल। (5) ओहिसँ मोसि बनाएब आ' कामदेवक लग बैसि पत्र लिखि लिखि तोरा पठाएब जे तारा, हार, कर्पूर आदि जे शीतल होइछ सेहो सभ हमरा सतबैत अछि। (6) कमलिनी सूर्यक संग केलि करैछ आ' कुमुदिनी चानक संग। तहिना दूरहि रहैत हमरा बुझाए देह जे दूरहुक दर्शनसँ कतेक आनन्द होइत छैक। (7) विद्यापति कहैत छथि, हे युवती, लखिमादेवीक पति आ' सुखमादेवीक रमण रूपनारायण पृथ्वीपर मदनक तुल्य (रसिक आ सुन्दर) छथि।।

[441]

जतहि पेम रह[1] ततहि दुरन्त। पुनु कर पिरिति पलटि गुनमन्त।।1।।
सबतहु सुनिअ ऐसन बेबहार। पुनु टूटए पुनु गाँथिअ[2] हार।।2।।
ए कान्हु ए कान्हु तोहहि सआन। बिसरिअ कोप करिअ समधान।।3।।
पेमक आँकुर तोहें जल देल। दिने-दिने बादि महातरु भेल।।4।।
तुअ गुने न गुनल सउतिनि आछ। रोपि न काटिअ बिखहुक गाछ।।5।।
जे नेह उपजल प्रानक ओळ। से न करिअ दुर दुरजन बोल।।6।।

जगत बिदित भेल तोह हम नेह। एक परान कएल दुइ देह।।7।।
भनइ विद्यापति न कर[3] उदास। बड़ाक बचने करिअ बिसबास।।8।।

1.रस। 2. गाँथए। 3. करब।

राधा रूसल कृष्णकें बउँसैत छथि -- (1) जतए प्रेम रहैत अछि ततहि झगड़ो होइत छैक। झगड़ा भेला पर गुणवान् (विवेकशील) व्यक्ति फेर नेह जोड़ि लैत अछि। (2) सभ ठाम इएह व्यवहार सुनल (देखल) जाइत अछि, हार बेरि-बेरि टुटैत अछि आ बेरि-बेरि गँथाइत अछि। (3) हे कान्ह, तों बुधिआर लोक छह। आब तामस बिसरि झगड़ाक समाधान करह। (4) तों प्रेमक अंकुरकें पटबैत रहलह आ' से दिन-दिन बढ़ैत-बढ़ैत विशाल गाछ भए गेल। (5) तोहर गुणपर मुग्ध भए इहो नहि सोचल जे सौतिनि अछि। बिखहुक गाछ रोपिकें कटबाक नहि थिक। (6) जे प्रेम प्राणार्पणसँ उपजल से दुर्जनक वचन सुनि समाप्त नहि करक थिक। (7) हमर-तोहर प्रेम संसारमे विख्यात भेल अछि जेना एक प्राण दू देह। (8) विद्यापति कहैत छथि, राधाकें उदास नहि करह। पैघ लोकक बातपर विश्वास करबाक थिक।

[442]

सबे परिहारि अएलाहुँ तुअ पास। बिसरि न हलबे दए बिसबास।।1।।
अपने सुचेतन कि कहब कोए[1] । तैसन करब उपहास न होए।।2।।
ए कान्हु[2] तोहर बचन अनमोल[3]। जाब जीब प्रतिपालब बोल।।3।।
भल जन रतन[4] दुअओ समतूल। सबहु[5] न जानए रतनक मूल।।4।।
हमे अबला तुअ[6] हृदअ अगाध। बड़ भए खेमिअ सकल अपराध।।5।।
भनइ विद्यापति गोचर तोए। सुपुरुख नेह अनत नहि होए।।6।।

1.गोए। 2. कन्हाइ। 3. अमोल। 4. बचन। 5. बहुलहु। 6. तोए। 7. सिनेह।

राधा रूसल कृष्णकें बउँसैत छथि -- हे कान्ह, हम सभ किछु छाड़ि तोरा लग अएलहुँ। विश्वास दए बिसरि नहि जाह। (2) तों स्वयं विज्ञ छह, आन केओ तोरा की कहतहु। से करह जाहिसँ उपहास (निन्दा) नहि होअहु। (3) हे कान्ह, तोहर वचन अनमोल होइत अछि। तोहर वचनक हम जा जीब ता धरि पालन करैत रहब। (4) भद्र पुरुष आ' रत्न दूनूक मूल्य समान होइत अछि। रत्नक मूल्य सभ नहि (केवल जौहरी) जनैत अछि। (5) हम अबला छी। तोहर हृदय अगाध छहु। महान् भए सकल अपराध क्षमा करक थिक। (6) विद्यापति कहैत छथि, तोरासँ प्रार्थना जे भद्रजनक प्रेम टूटए नहि पाबए।

[443]

कुन्तल कुसुम निमाल न भेल। नयनक काजर अधर न गेल।।1।।
कनक धराधर नहि ससिरेह। कओने परि काम प्रकासल नेह।।2।।
ए खखि ए सखि पुरुख अआन। भुजङ्ग भनाबथि रङ्ग न जान।।3।।
दुर सञो सुनिअ उमत[1] पञ्चबान। परतख चाहि न बड़[2] अनुमान।।4।।
उपगति भेलिहुँ ई भेलि साति। अनुसय चितहि[3] पोहाइलि राति।।5।।
भनइ विद्यापति एहु रस जान[4] । सिबसिंह लखिमादेवि रमान।।6।।

1. समय। 2. नहि के 3. छितहि। 4. भान।

सखी संगममे विफल भेलि राधासँ पुछैत छथि -- (1) हे सखी, तोहर केसक फूल निरमाल नहि भेलहु। आँखिक काजर अधरमे नहि लगलहु। (2) स्वर्णपर्वत (स्तन) पर नखक्षत नहि भेलहु। तखन जानि नहि मदन तोहर प्रीतिकें कोना प्रकट कएलनि? कोना रंगरभसक कोनो चेन्ह नहि भेलहु? राधा उत्तर दैत छथिन -- (3) हे सखी, पुरुख अज्ञ होइत अछि। कहबैत तँ अछि भुजङ्ग (प्रेमी, रसिक, कामुक) किन्तु रंगरभस नहि जनैत अछि। (4) दूरसँ सुनैत रही जे मदन उन्मत (सनकल) रहैत छथि, परन्तु प्रत्यक्षक आगाँ अनुमान की? (ओ कृष्ण पर

कोनो प्रभाव नहि देखाए सकलाह)। (5) कोन पाप लागल जे हुनका लग गेलहुँ। पछतबितहिँ राति बीति गेल। विद्यापति कहैत छथि, एकर रस जननिहार थिकाह लखिमादेवीक पति शिवसिंह।

[444]

आदरि अनलह धएलह टारि[1]। आञ्चर न छुइलह[2] बदन निहारि।।1।।
सुदिढ़ेओ केस न बन्धलह फोए। सबे रस सुन्दरि धएलह गोए।।2।।
आबे कि पुछसि राहि भल नहि भेल। जतने आनल कान्ह तोरे दोसे गेल।।
गुनिगन पथ सह लगउलहे भोर। आञ्चर हीर हरा एल तोर[3]।।4।।
सखिजन सोम्पइते भेलउहे राग। गेल पाइअ जञो हो बड़ भाग।।5।।

1.बारि। 2. छड़लह। 3. मोर।

सखी रंगरभसमे विफल भेलि राधाकें गंजन करैत छथि -- (1) तों कान्हकें आदर पूर्वक अनलह, किन्तु टारिकें (बारिकें) काते रखलहुन। हुनक मुह तकैत अपन आँचर नहि छूलह। (2) सैंतलो केस (खोपा) कें खोलि फेर सम्हारिकें नहि बन्हलह। हे सुन्दरी, तों सभ टा रस (कामोद्रेक) छिपाए रखलह। (3) आब की पुछैत छह। नीक नहि भेल। यत्नपूर्वक आनल कान्ह तोहर दोखें चलि गेल। (4) .... (?)। आँचर आएल तोहर हीरा हराए गेलहु। (5) सखी सभ जखन तोरा पकड़ि कृष्णकें सौंपए लागलि तखन तोरा क्रोध भए गेलहु। गेल वस्तु बड़ भाग्यें फेर भेटैत छैक।

[445]

करञो बिनय जत जत मन लाइ। पिआ परिठब पचताबके पाइ।।1।।
धए[1] धइरज तेजल[2] पथ साच। करम दोसे कनकेओ भेल काच।।2।।
निठुर बालँभु सञो लाओल सिनेह। न पुर मनोरथ न छाड़ु सन्देह।।3।।
सुपुरुख भाने मान धन गेल। हिरदए मलिन मनोरथ भेल।।4।।
जदि गुन दूखन पहु न बिचार। बड़ भए पसरत[3] पिसुन पसार।।5।।

परिजन चित नहि हित परथाव। धरखने जीव कतए नहि धाव॥6॥
हमे अवधारि हलल परकार। बिरह सिन्धु जिब दए करु पार॥7॥
भनइ विद्यापति सुन बरनारि। धइरज धए रह मिलत मुरारि॥8॥

1.धन। 2. परिहरि। 3. पसरओ।

उपेक्षिता राधा अपन व्यथा व्यक्त करैत छथि -- (1) मन लगाए कान्हसँ जतेक अनुनय-विनय करैत छी ततेक ओकर व्यवहार पर पश्चातापे पबैत छी। (2) धैर्य धारण कए, सत्पथ छाडल। अभाग्यवश सोनो हमरा लेल काच भए गेल। (3) निठुर पिआसँ नेह लगाओल। ने मनोरथ पूरल, ने मनक शंका दूर गेल (प्रीति तोड़ि देल जाए कि नहि एहि गुनधुनमे रहि गेलहुँ)। (4) सुपुरुख बुझाएल, तेँ ओकरा आगाँ मानरूपी धन सेहो गमाओल। मनमे जे मनोरथ छल से मलिन भए गेल। (5) पिआ गुण-दोषक विचार नहि करैत अछि तेँ निश्चय पिशुन सभक बजार खूब पसरि गेल अछि। (6) घरक लोकक मनमे कोनो नीक विचार नहि अबैत अछि। धरखने (कामनाक उद्रेक भेने) लोक कतए नहि दौड़ैत अछि। (7) हम एहि दुखद स्थितिक प्रतिकार सोचि लेलहुँ। विरहरूपी समुद्र प्राण दए पार करब। (8) विद्यापति कहैत छथि, हे सुन्दरी, सुनह। धैर्य धएने रहह, कान्हसँ मिलन होएतहु।

[446]

पहुक बचन छल पाथर रेख। हृदय धएल न होएत बिसलेख[1]॥1॥
नागर भमर दुहुक[2] एक रीति। रस लए निरसि फिरए कए[3] तीति॥2॥
ओ पहिलहि बोल तोहेँहि परान। पथ परिचय नहि राख निदान॥3॥
जौबन अबधि राख अनुबन्ध। अगिला बिखए अधिक परबन्ध॥4॥
ओ बैसइते कत कर अवधान। अति आनद भए कर मधुपान॥5॥
उड़इते भर देअ न कर सम्भाख। अगिला कुसुम अधिक अभिलाख॥6॥
कि कइब माइ के[4] बुझत अनेक। नागर भमर दुअओ अबिबेक॥7॥
भनइ विद्यापति सुन बरनारि। पेमक रसे बस होअ मुरारि॥8॥

1.नहि हएत विशेख। 2. दुहु। 3. करए फिरि। 4. है।

राधा कृष्णक चपलता सखीकेँ सुनबैत छथि -- (1) पहिने कान्हक वचनकेँ पाथरक रेखा बूझल। हृदयमे एहन धारणा भेल जे कहिओ वियोग नहि होएत। (2) परन्तु आब बूझल जे नागर (रसिक पुरुष) आ भ्रमर दूनूक रीति (चरित्र) एके अछि। निःशेष कए रस लए लेत आ' तीति (नीरस) कए फिरि जाएत। (3) ओ पहिने कहत, तोँही हमर प्राण थिकह, परन्तु अन्ततः बाटो-घाटक परिचय नहि राखत। (4) जा यौवन तावे धरि सम्बन्ध राखत। आगाँ दिस अधिक ध्यान रहतैक। (5) बैसबाक बेर ओ बड़ ध्यान देत (ओरिआएकेँ बैसत) आ' आनन्दपूर्वक रस चूसत। (6) परन्तु उड़बाक काल दोमि देत आ' किछु पूछहु ने लागत। ओकर मन अगिला फूल पर बेसी रहतैक। (7) हे सखी, की कहिअहु, एतेक के बूझत। नागर आ भ्रमर दूनू विवेकहीन होइत अछि। (8) विद्यापति कहैत छथि, हे वरनारि, सुनह। कृष्ण प्रेमक रस देने वशमे आबि सकैत छथि।

[447]

की हमे साँझक एकसरि तारा भादव चौठिक ससी।
इथि दुहु माझ कओन मोर आनन जे पहु हँसि न हेरसी॥1॥
साए साए, X X X X X X ।
कहह कहह कान्हु कपट करह जनु कि मोर पड़ल अपराधे॥2॥
न मोञे कबहु तुअ अनुगति चुकलिहुँ बचन न बोलल मन्दा।
सामि समाज पेमे अनुरञ्जल कुमुदिनि सन्निधि चन्दा॥3॥
भनइ विद्यापति सुनु वर जौवति मँदिनि मदन समाने।
राजा सिबसिंह रूपनराएन लखिमादेवि रमाने॥4॥

राधा कृष्णकेँ उलहन दैत छथि -- (1) की हम सन्ध्या काल एकसरे उगल पहिल तारा थिकहुँ आकि भादब मासक चतुर्थी? हे कान्ह कहह, एहि दूनूमे हमर मुह की थिक जे तोँ हँसि कँ निहारैत नहि छह? (3) हाए,

हाए, ...। हे कान्ह, कहह, कपट नहि करह, कहह जे हमरासँ कोन अपराध भेल? (3) हम तँ तोहर बात मानबामे कखनहु चुकलहुँ नहि। कखनहु रोडाह बोलो नहि बजलहुँ। तोहर सामने हम ओहिना रहलहुँ जेना चानक सामने कुमुदिनी। (8) विद्यापति कहैत छथि, लखिमादेवीक पति राजा शिवसिंह रूपनारायण पृथ्वीपर अवतार लेने कामदेवक तुल्य छथि।

[448]

जइअओ जलद रुचि हरए' कलानिधि तइअओ कुमुद मुद देई।
सुपुरुख बचन कबहु नहि बिचलए जओ बिहि बामओ होई।।1।।
मलति ककें तोजे होसि मलानी।
आन कुसुम मधुपान विरत कए भमर देब मञे आनी।।2।।
दिन दुइ-चारि आने अनुरञ्जब सुमरत सौरभ तोरा।
आनक बचन अनाइति पड़लाहे से नहि सहजक भोरा।।3।।

1.धरए।

सखी मालतीक व्याजेँ विरहिणी राधाकेँ आश्वासन दैत छथि -- (1) जैओ मेघ चानक रुचि (दू अर्थ, शोभा आ' अनुराग) हरि लैत अछि तैओ चान कुमुदकेँ आनन्द दैत छथि। (परदेसमे अलक्षित रहितहुँ कृष्ण तोहर अनुरागी छथि) विधाता लाख वाम भए जाथु सुपुरुष अपन वचनसँ कहिओ नहि हटत। (2) हे मालती, तौं मलान किएक होइत छह! विश्वास करह, भ्रमर जे आन फूलक रस पीबामे निरत अछि तकरा ओहिसँ विरत कए हम आनि देबहु। (3) भनहि दू-चारि दिन ओ आन फूलमे अनुरक्त रहओ, ओकरा तोहर सौरभ कहिओ नहि बिसरतैक। आनक मीठ-मीठ बोल सुनि विवश भए गेल होएत, किन्तु ओ एहन अज्ञानी नहि अछि जे तोरा बिसरि जाए।

[449]

से भल जे बरु बसए बिदेसे। पुछिअ पथुक जन ताक उदेसे।।1।।
पिआ निकटहि बस पुछिओ न पुछई। अइसन विरहदुख केदहु सहई।।2।।
मधुरओ बचन सुनए नहि काने। अबे अबसेओ हमे तेजब पराने।।3।।
धनि धैरज धर पिआ तोर रसिआ। अबसेओ दिन एक देत हुसिआ।।4।।
भनइ विद्यापति एहु रस जाने। सिबसिंह लखिमादेवि रमाने।।5।।

विरहिणी (कलहान्तरिता) राधा विलाप करैत छथि -- (1) जे विदेश मे रहए से बरु नीक, किएक तँ ओकर उदेस (कुशलक्षेम) बटोहिओ सभसँ पूछि बूझि सकैत छी। (2) परन्तु लगहिमे अछि, तैओ पुछबो नहि करैत अछि। के सहि सकैत अछि एहन विरहवेदना। (3) हमर मधुरो बचन कान नहि दैत अछि। आब हम अवश्य प्राण त्यागि देब। (4) विद्यापति आश्वासन दैत छथिन, हे सुन्दरि धैर्य धरह। तोहर पिआ रसिक अछि, निश्चय आइ-ने-काल्हि बिहुँसि देतहु। एकर रस जनैत छथि लखिमादेवीक पति शिवसिंह।

[450]

धन जउबन रस रङगे। दिन दस देखिअ तडितरङगे।।1।।
सुघटेओ बिहि बिघटाबे। बाङ्क बिधाता की न कराबे।।2।।
ई तुअ भलि नहि रीती। हठे न करिअ दुर पुरुब पिरीती।।3।।
सचकित हेरए आसा। सुमरि समागत सुपहुक पासा।।4।।
नयन तेजए जलधारा। न चेतए चीर न परिहए हारा।।5।।
लाख जोजन बस चन्दा। तइअओ कुमुदिनि करए आनन्द।।6।।
जकरा जा सञो रीती। दुरहुक दुर गेले दोगुन पिरीती।।7।।
विद्यापति कबि गाहे। बोलल बोल सुपहु निरबाहे।।8।।
रूपनराएन जाने। सिबसिंह लखिमा देबि रमाने।।9।।

विरहिणी राधा विलाप करैत छथि -- (1) धन, यौवन आ' रंगरभस ई सभ बिजुलीक तरंग जकाँ दुइए चारि दिन देखि पड़ैत अछि। (2)

विधाता बनलो काज विगाड़ि दैत छथि। ओ यदि वाम (प्रतिकूल) होथि तँ की सँ की भए सकैत अछि। (3) हे कान्ह, तोहर ई ढंग नीक नहि छहु। सहसा पूर्वक प्रीति एना खतम करब ठीक नहि। (4) कवि कहैत छथि - राधा पहुक संग पूर्वमे कएल केलि विलासकेँ मन पारि-पारि चकित दृष्टिएँ दिशाकेँ निहारि रहलि अछि। (5) आँखिसँ नोर टघरैत छैक। ने चीर सम्हारैत अछि, ने हार पहिरैत अछि। (6) चान लाख योजन दूर बसैत छथि तैओ कुमुदिनीकेँ आनन्द दैत अछि। (7) जे जकरा पर रितल (अनुरक्त) रहैत अछि से भनहि दूरसँ दूर चलि जाइक, प्रीति बढ़ितहि जएतैक। (8) विद्यापति कहैत छथि। आदर्श प्रेमी देल गेल वचनक पालन अवश्य करैत अछि। एकर रस लखिमादेवीक पति शिवसिंह रुपनारायण जनैत छथि।

[451]

तुअ बिसबास कुसुमे भरु सेज। रइनि बसन्तक[1] चान्दक तेज।।1।।
मन उतकण्ठित कतए न धाव। दहदिस सून नयन भमि आव।।2।।
हरि हरि हरि तुअ दरसन लागि। नागरि रइनि गमाउलि जागि।।3।।
सुपुरुख भए नहि करिअए रोस। बड़ भए कपटी ई बड़ दोस।।4।।
भनइ विद्यापति राखह[2] बोल। जे कुल राखए सेहे अमोल।।5।।

1. बसन्तक रजनी। 2. गरुबि।

सखी कृष्णसँ कहैत छथि -- (1) सखी राधा तोहर बातपर विश्वास कए चानसँ चकमक वसन्तक रातिमे फूलसँ सेज सजओलक। (2) एहन समयमे ओकर उत्कण्ठित मन कतए कतए ने दौड़ैत अछि ओकर शून्य नयन दसो दिस औनाइत रहैत अछि। (3) हाए, हाए, हे कान्ह, ओ तोहर दर्शन लेल सगर राति जागिकेँ बितओलक। (4) तों सुपुरुख सुनागर छह। तोरा तामस नहि करबाक चाही। बड़ लोक कपटी होअए से बड़ अधलाह

बात। (5) विद्यापति कहैत छथि, हे कान्ह, तों अपन वचन राखह (राधासँ मिलए चलह)। जे कुलमर्यादाक पालन करए सेह महान् थिक।

[452]

जसु मुख सेवक पुनिमक चन्दा। नअनक नेओछन नब अरबिन्दा।।1।।
अधर निमाल मधुरि फुल थाका। नहि कके भाडलि। अमिअ सलाका।।2।।
आइलि कलाबति तुअ रति साधे। तोहें परिहरलि कओने अपराधे।।3।।
भऔहक अनुचर मनमथ चापे। पिक पञ्चम परिपन्थि अलापे।।4।।
जा सओ बिहुँसि दरस अनुरागे। अनल झाँप से कएल पआगे।।5।।
अनुभबि भङ्गुर भाव तोहारे। संसअ न तेजए हृदअ हमारे।।6।।
की से अनागरि कि तोहें अकामी। सहज तोहर वा परजन्त गामी।।7।।
भनइ बिद्यापति न बोल सन्देहा। सुपुरुख बचन पखानक रेहा।।8।।
नृप सिबसिंहदेव एहु रस जाने। सोहाग आगरि देइ लखिमा रमाने।।9।।

1. तोहें कके पाउलि।

दूती वचनमे चुकनिहार कृष्णकेँ उलहन दैत छनि -- (1-2) चन्द्रमा जकर मुखक सेवक (दास) थिकाह, जकर नयन कमलक निछाओन थिक, मधुरी फूलक थोका जकर अधरक निर्माल्य थिक, से अमृतक शलाका सन राधा तोरा किएक नहि भओलह? (3) ओ कलावती राधा रतिरंगक कामनासँ तोरा लग आइलि तँ तों कोन अपराधेँ ओकरा उपेखि देलहक? (4) कामदेवक धनुख ओकर भऔंहक अनुचर थिक। ओकर बोल कोकिलक पञ्चम स्वरक शत्रु थिक। (5) ओ बिहुँसिकेँ अनुरागपूर्वक जकरा दिस तकैत अछि से मानू पूर्व जन्ममे तीर्थराज प्रयागमे अग्निझम्प लेने छल। (मानल जाइछ जे प्रयागमे जाहि कामनासँ आत्मदाह करब से कामना अगिला जन्ममे पूरत)। (6) तोहर चितक चंचलता देखि हमरा हृदयमे सन्देह दूर नहि होइत अछि (तों प्रायः दोसरि कामिनीमे फँसलह)। (7) की तँ राधा नागरी (रसिक सुनारि) नहि अछि, आकि तोंही कामहीन भए

गेलह।..........................। (8) विद्यापति कहैत छथि, सन्देहक बात नहि कहइ। सुपुरुखक वचन पाथर परक रेखा थिक। (9) परम सौभाग्यवती देवी लखिमाक पति राजा शिवसिंहदेव ई रस जनैत छथि।

[453]

कतन बचन[1] दए आनलि राही। अबसर जानि बिसरल ताही।।1।।
तोहें बड नागर ओ बड़ि भोरी। अमिञ पिअओलह बिख सञो घोरी।।2।।
चल चल माधव भल तुअ काजे। जत बोललह तत सकल बेआजे।।3।।
सुपुरुख जानि कएल बिसबासे। के पतिआएत फुलल अकासे।।4।।
पुरुख निठुर हिअ परिचय भेले। परधन लागि निजओ धन गेले।।5।।
निञ मने न गुनल न पुछल केओ। अपन चरन अपनेहि देल छेओ।।6।।
भनइ विद्यापति एहु रस जान। सिबसिंह लखिमा देबि रमान।।7।।

1.बचन रचन।

सखी कृष्णकें राधाक उपेक्षा करबाक उलहन दैत छथि -- (1) कतेक वचन (बोल भरोस) दए राधाकें संकेत स्थल आनल। मुदा तों अवसर जानि कें ओकरा बिसारि गेलह। (2) तों बड़ चतुर आ' ओ बकलेल। तहिं तों ओकरा बिख मिलाए अमृत पिअबैत रहुलह। (3) धन्य छह तों। खूब नीक काज कएलह। जतेक जे बजलह से सभटा वंचना छलहु। (4) सुपुरुख बूझिकें तोहर विश्वास कएल। के पतिआएत जे आकाशमे फूल फूलाएल (तोहर बात आकाश-कुसुम अर्थात् मिथ्या सिद्ध भेलहु)। (5) आब बुझबामे आएल जे पुरुष निठुर हृदय होइत अछि। बेचारी राधा आनक धनक (कृष्ण) लोभ कएलक, तें अपनो धन (अपन पति) हाथसँ चलि गेलैक। (6) राधा ने अपना मनमे सोच-विचार कएलक, ने अनकहि ककरहुसें पुछलक। बेचारी अपन टाड पर अपनहि छओ देलक। (7) विद्यापति कहैत छथि आ' तकर रस जनैत छथि लखिमादेवीक पति शिवसिंह।

[454]

ओतए अछलि छलि निञ पिअ पास। एतए आइलि धनि तुअ बिसबास।।
एतए न ओतए एकओ नहि भेलि। मदने आनि आहुति कए देलि।।2।।
सुन सुन माधब बचन हमार। पाउलि निधि परिहरए गमार।।3।।
तुअ गुनगन कहि कत अनुरोधि। निञ पिअ लग सञो आनलि बोलि।।4।।
अइसन सिथिल बुझल तुअ नेह। आबे अनितहुँ मोहि होएत सन्देह।।5।।
एँ बेरि जदि परिहरबह आनि। आनओ तेजबि अभिसारक बानि।।6।।
भनइ विद्यापति सुनह मुरारि। धनि परितेजिअ दोस बिचारि।।7।।

दूती कृष्णकें गंजन करैत अछि -- (1) राधा ओतए अपना घरमे अपन पतिक लग छलि। एतए संकेतस्थलमे आइलि तोहर बात पर विश्वास कए। (2) परन्तु ओ ने एतए ठाम पओलक, ने ओतए। कामदेव ओकरा एतए आनि मानू आगिमे आहुत कए देलनि। (3) हे माधव, हमर बात सुनह। पाओल (हाथ आएल) धनकें गमारे त्यागैत अछि। (4) तोहर गुणक वर्णन कए-कए, कतेक अनुरोध कए-कए ओकरा अपन पतिक लगसँ बजाए संकेतस्थल आनल। (5) मुदा तोहर प्रेम ततेक हलुक बुझाएल जे आब फेर अनबहुमे हमरा बड़ सन्देह होएत। (6) एहि बेर जँ ओकरा आनिकें त्यागि देबह तँ आनो कामिनी लोकनि अभिसारक परिपाटिए छाड़ि देतीह (करथु पुरुखे अभिसार)। (7) विद्यापति कहैत छथि, हे मुरारि, सुनह, प्रेयसीक परित्याग दोख देखिकें करक थिक।

[455]

माधव सुमुखि मनोरथ पूर। तुअ गुने लुबुधि आइलि एति दूर।।1।।
जे घर बाहर होइते फेदाए। साहस तकर कहहि नहि जाए।।2।।
पथ पीछर एक रयनि अन्धार। कुचजुगकलसे जमुना भेलि पार।।3।।
बारिद बरिस सकल महि पूळ। सहसह चउदिस बिसधर बूल।।4।।
न गुनलि ऐसनि भयाउनि राति। जीबहु चाहि अधिक सहु' साति।।5।।
भनइ विद्यापति दुहु मन बोध। कमल न बिकस भमर अनुरोध।।6।।

1. की।

दूती कृष्णकें उलहन दैत अछि -- (1) हे कान्ह, तों राधाक मनोरथ पुराबह। ओ तोहर गुण पर मुग्ध भए एतेक दूरसँ आइलि अछि। (2) जे घरसँ बाहर पाएर देबहुमे घबराहत अछि, तकर साहस कहल नहि जाए। (3) एक तँ बाट पीछर, ताहि पर अन्हरिआ राति। मने ओ अपन दूतू स्तनकें घैल बनाए यमुना पार भेलि। (4) मेघ मुसलधार बरसि कें सगर धरतीकें भरि देने छल। बिखधर साप सभ सहसह बुलैत छल। (5) एहनो भयाओन रातिक परबाहि नहि कएलक आ' प्राणपातहुसँ अधिक संकट सहलक। (6) विद्यापति कहैत छथि, दूतू मन-मन बुझैत छथि जे कमल भ्रमरक अनुरोधें नहि फुलाइत अछि।

[456]

माधव करिअ सुमुखि समधाने।
तुअ अभिसार कएल जत सुन्दरि कामिनि करए के आने।।1।।
बरिस पओधर धरनि बारि भर रयनि महाभय भीमा।
तइअओ चललि धनि तुअ गुन मने गुनि तसु साहस नहि सीमा।।2।।
देखि भवन भिति लिखल भुजगपति जसु मन परम तरासे।
करें सेहे सुवदानि[1] झपइते फनिमनि बिहुँसि आइलि तुअ पासे।।3।।
नित्र पहु परिहरि सन्तरि बिखम नरि अङ्गिरि महाकुल गारी।
तुअ अनुराग मधुर मदें मातलि किछु न गुनल बरनारी।।4।।
ई रस रसिक विनोदक विन्दक सुकवि विद्यापति गाबे।
काम पेम दुहु एकमत भए रहु कखनहु की न कराबे।।5।।

1. से सुवदनि करे।

दूती कृष्णकें राधाक अभिसारक कथा सुनबैत अछि -- (1) हे कान्ह, राधाकें आनि देलिअहु। आब एकरासँ समाधान (समझौता) करह। ई तोहर अभिसारमे जे-जे कएलक से आन कोनो कामिनी नहि कए सकैत अछि।

(2) मेघ बरसैत, धरती पानिसँ भरल, राति महाभयानक। राधा तैओ तोहर गुणक स्मरण कए-कए चलि पड़लि। ओकर साहसक अन्त नहि। (3) देवालमे लिखल साप देखि जकर मन त्रस्त भए जाइत छैक से अपना हाथें सापक मणि कें झँपैत प्रसन्नतापूर्वक तोरा लग आबि गेलि। (4) ओ अपन पति कें छाड़ि, विषम नदीकें टपि, अपन परम प्रतिष्ठित कुलक कलंककें उपेखि तोहर प्रेममदमे मातलि ओहि पथ-संकट सभक कोनो परबाहि नहि कएलक। (5) ई रस (सरस गीत) रसिक लोकनिक मनोरञ्जनकारी सुकवि विद्यापति रचलनि। काम आ' प्रेम जँ दूतू एकमत (एक मे मिलित) भए जाए तँ कखनहु किछुओ कराए सकैत अछि।

[457]

माधव जगत के नहि जान।
आरति आकुल जञो केओ आबए बड़ कर समधान।।1।।
हमे जे भाबिनि भादब जामिनि अएलाहुँ जानि सुठाम।
तोहें सुनागर गुनक आगर पूरत सकल काम।।2।।
कतन मन मनोरथ अछल सबे निबेदब तोहि।
पुरुब पुने परिनति पओलाहे पूछि न पूछह मोहि।।3।।
हम हेरि तोहें विमुख भेलाहे[1] मन बेआकुल भेल।
तोहें जञो परहित उदासीन जुग कि पलटि गेल।।4।।
एत सुनि हरि हँसि हेरु धनि कएल सोरस दान।
तखने सुन्दरि पुलके[2] पूरलि कवि विद्यापति भान।।5।।

1. हमे हेरि तोहें बिमुख भेलाहे। 2. जुग पलटि कि।

राधा कृष्ण कें मनबैत छथि -- (1) हे माधब, संसारमे ई बात के नहि जनैत अछि जे जँ केओ व्यथासँ व्याकुल भए सोझाँ अबैत छैक तँ बड़जन ओकर समाधन करैत अछि। (2) हम नारी भए भादबक एहि रातिमे सुठाम जानि तोरा लग अएलहुँ एहि आशा सँ जे तों उत्तम नागर

आ' गुणक आगर छह, तों हमर सभ मनोरथ पुरएबह। पूर्व जन्मक पुण्यक परिणाम स्वरूप तों भेटलह तँ, परन्तु पुछबो नहि कएलह जे की बात। ततबे नहि, हमरा देखि मुह घुमाए लेलह। हमर मन व्याकुल भए गेल। तों जँ आनक हित करबामे एना उदासीन होएबह तँ लगैत अछि जे युग बदलि गेल की। कवि विद्यापति कहैत छथि, एतबा सुनितहिँ कृष्ण बिहुँसिकें राधाक दिस तकलनि आ स्वरस देलनि (अपन हृदयक प्रीतिभाव देखओलनि)। तखनहि राधाक देह पुलक सँ भरि गेल।

[458]

अलखिते गोप आएल चलि गेल[1]। ससरि खसल चिर सम्भारि न भेल।।1।।
आध वदन तन्हि देखल मोर। चान्द अइँठ कए चलल चकोर।।2।।
कान्हु मोहि देखलिहुँ गेलिहुँ लजाए। तखनुक लाज अबहु नहिजाए।।3।।
आधहु अधिक सङ्कोचल[2] अङ्ग। मोळल मृनाल दोगुन भेल भङ्ग।।4।।
चान्दन लेपित तनु रह सोए। विरहक कसमसि नीन्द न होए।।5।।
ई रसतन्त बुझए केओ केओ। भाव भनए अभिनव जअदेओ।।6।।

1. समरि न गेल। 2. सकोचित।

राधा अपन रागोदयक वर्णन स्वयं करैत छथि -- (1) कान्ह अलक्षित रूपें आएल आ' जा' हम देखिऐक ता' चलि गेल। स्तनपरसँ चीर ससरिकें खसि पड़क, विह्वलतावश आँचर सम्हारल नहि भेल। (2) ओ हमर आधा अंग (स्तन) देखि लेलक। मानू चानकें ऐंठाए चकोर चलि देलक। (3) कान्ह हमरा देखलक तँ हम लजाए गेलहुँ। तखन जे लाज भेल से एखनहु नहि छूटि टहल अछि। हम आधहुसँ अधिक अंग मोड़ि लेल (लाज बचएबाक हेतु)। मानू दोगुन कए मोड़ल मृड़ाल (कमलक डाँट) बीचसँ टूटि गेल। (4) विरहक तापकें शान्त करक हेतु देहमे चानन लेपि सूति रहलहुँ। विरहसँ कछमछ करैत रहलहुँ। नीन नहि भेल। (5) ई

रसतन्त्र (कामक रहस्य) केओ-केओ बूझि सकैत अछि। एहि भावकें बन्हलनि अभिनव जयदेव विद्यापति।

[459]

कि कहब ए सखि केलि विलासे। विपरित सुरत नाह अभिलासे।।1।।
कुचजुग चारु धराधर जानी। हृदय पळत तें पहु देल पानी।।2।।
मातलि मनमथे दुर गेलि लाजे। अविरल किङ्किनि कङ्कन बाजे।।3।।
घाम बिन्दु मुख सुन्दर जोती। कनक कलस जनि फरि गेलि मोती।।4।।
कहहि न पारिअ पिअमुख भासा। समुह निहारि दुअओ मुह हासा।।5।।
भनइ विद्यापति रसमय बानी। नागरि रम पिअ अभिमत जानी।।6।।

राधा अपन विपरीत रतिक वर्णन सखीकें सुनबैत छथि -- (1) हे सखी, अपन केलि-विलास की सुनबिअहु। पहु कें अभिलाषा भेलैक जे विपरीत रति कएल जाए। (2) जखन हम दूनू स्तन कान्हक छाती पर देएए लगलहुँ तँ ओकरा भेलैक जेना पर्वत खसि रहल हो आ' ओ तकरा रोकबा लेल हाथ दए देलक। (3) कामोद्रेकसँ हम माति गेलहुँ। लाज बिलाए गेल। देहक संचारसँ घुघरू आ' कगना छमछमाए लागल। (4) घामक बिन्दु सँ मुह चमकि उठल, जेना सोनाक कलश पर मोति फड़ि गेल हो। (5) पिआक मुहक छवि की कहल जाए। दूनू एक दोसराक मुह देखलहुँ तँ दूनू बिहुँसि उठलहुँ। (6) विद्यापति ई रसमय गीत रचलनि। रमणी पिआक अभिमत जानि रमण करैत अछि।

[460]

दुहुक संजुत[1] चिकुर फूजल। दुहुक दुहु बलाबल बूझल।।1।।
दुहुक अधर दसन लागल। दुहुक मदन दुगुन जागल।।2।।
दुअओ अधर करए पान। दुहुक कण्ठ आलिङ्गन दान।।3।।
दुहुक केलि सम सम भेलि[2]। सुरत सुखे बिभावरी गेलि।।4।।
दुअओ चेतन चेत न चीर। दुहु[3] पिआसल पिबए नीर।।5।।
भन विद्यापति संसअ गेल। दुहुक मदने लिखन देल।।6।।

1. संयुत। 2. दुअओ केलि समे समे केली। 3. दुअओ।

कवि नायक-नायिकाक सम्भोगक वर्णन करैत छथि -- (1) रतिरंगक फलस्वरुप नायक नायिका दुनूक बान्हल केस फूजि गेल। दुनू बूझि गेल जे के कतेक बलगर ।। (2) दुनूक अधर पर दन्तक्षतक चेन्ह लागल। दुनूक मदन दू गुन जागि उठल। (3) दुनू दुनूक अधरपान कएल। दुनू दुनूक कंठमे बाँहि दए आलिङ्गन मे आबद्ध भेल।। (4) दुनूक केलि (रतिक्रीड़ा) बराबरि रहल। दुनू संगमक आनन्दमे राति बिताओल।(5) भोरमे दुनू थाकि-थाकि सेज धएल। कपड़ो सम्हारबाक सुधि नहि रहल। दुनूकें पिआस लगलैक तँ उठि-उठि पानि पीलक।। (6) विद्यापति कहैत छथि, के जीतल, के हारल से विवादक विषय नहि रहल किएक तँ कामदेव दुनूकें जयपत्र लिखि देलनि।।

[461]

सामर पुरुसा मझु घर पाहुन रङ्गे बिभाबरि गेली।
काँचाँ सिरिफल नखखत[1] लओलन्हि केसु पँखुरिआ भेली।।1।।
से पिआ दए गेल केसु पँसुरिआ धरए न पारल मोञे रे।
XX X X X X X ।।2।।
नब ससि[2] छन्दे अनुरागक आङ्कुर धएल मञे आञ्चरे गोई।
काजरे कार सखीजन लोचन परसे[3] मलिन जनु होई।।3।।
व्याध कुसुमसर सरे[4] बिघटाउलि लाज[5] कुरङ्गिनि मोरी।
नूतन नेह संसारक सीमा उपचित कइसनि चोरी।।4।।
चारि भावे हमे भरमलि अछलाहुँ समन्दि न भेले मोहि सेवा।
कान्ह रुप सिरि सिबसिंह आएल कवि अभिनब जयदेवा।।5।।

1.नखमुति। 2. ससिनब। 3. दीठिहु। 4. सञो। 5. रङ्ग।

नायिका सखी अपन संगमक वर्णन सुनबैत अछि -- (1) एक श्याम वर्णक पुरुष (स्वप्नमे) हमरा घर पाहुन भए आएल। ओकरा संग रंग-

रभस करैत राति बीति गेल। (2) ओ पुरुष हमर काँच श्रीफल (अभिनव स्तन) मे नखक्षत कएलक मानू पलासक फूलक पँखुरी अंकित भए गेल। ओ ई पलासक फूल उपहार दए चलि गेल। ओकरा हम जोगाएकें राखि नहि सकलहुँ। (3) ओ पंखुरी की छल, द्वितीयाक चन्द्रमाक छद्मरुपमे प्रेमक अङ्कुर छल। तकरा हम आँचर तर झाँपि जोगाए रखलहुँ एहि लेल जे सखी सभक कजराओल आँखि लगने ओ प्रेमाङ्कुर म्लान नहि होअए। (4) कामदेव रूपी व्याधक तीर हमर लाजरूपी हरिणकें भगाए देलक। नब प्रेम सांसारिक जीवनक सर्वोच्च सुख थिक। .... (?)। (5) चारि सात्विक भाव (स्वेद, कम्प, रोमांच आ' स्वरभंग) जागल आ' ताहिसँ हम भरमाए गेलहु (यथार्थ नहि बूझि सकलहुँ)। ओहि श्यामवर्ण पुरुषकें जएबाक काल किछु कहिओ नहि भेल। यथार्थमे कृष्णक रूप धए स्वप्नमे शिव सिंह आएल रहथि। एकर रचयिता थिकाह कवि अभिनव जयदेव।

[462]

मलयनिलें साहर डार डोल। कोकिल कलरव जनि[1] मअन बोल।।1।।
हरि कामिनि कन्ता[2] दुहुक मान। भमि भमर करए मकरन्द पान।।2।।
रङ्ग लागए जनि आएल[3] बसन्त। आनन्दित कामिनि[4] अवरु कन्त।।3।।
रङ्गिनि कर कौतुक[5] काम केलि। माधव रम नगरि[6] मेलि मेलि।।4।।

1. कल कोकिल रब... । 2. हेमन्त हटन्ता। 3. जनि रितु। 4. सानन्दित तरुणी। 5. रङ्गिनि करा। 6. माधब नारि।

कवि वसन्तक वर्णन करैत छथि -- (1) मलयपवनसँ आमक डारि डोलैत अछि। कोकिलक कलरव लगैछ जेना मदनक बोल हो। (2) कामिनी आ' कन्त दूनूक मान हरिकें भ्रमर घूमि-घूमि मकरन्द-पान करैत अछि। (3) रंग लगैछ जेना वसन्त आबि गेल। कामिनी आ' कन्त दूनू

आनन्दित अछि। (4) विलासिनी लोकनि कौतुकपूर्वक कामकेलि करैत छथि। कृष्ण नागरी (गोपी) सभसँ मिलि-मिलि रमण करैत छथि।

[463]

अभिनव कोमल सुन्दर पात। बसन सगर बन[1] परिहल रात।।1।।
मलय पवन डोलए बहु भाँति। अपने कुसुम रसे अपनेहि माति।।2।।
देखि देखि माधय मन उलसन्त। बिरिन्दाबन भेल बेकत बसन्त।।3।।
कोकिल बोलए साहर डार[2]। मदने पाओल जग नब अधिकार।।4।।
पाइक मधुकर कए मधुपान। भमि भमि जोहए मानिनिजन मान।।5।।
दिसि दिसि भमि-भमि[3] विपिन निहारि। रास रचाबए[4] मुदित मुरारि।।6।।
भनइ विद्यापति एह रस गाब। राधा माधब अभिनव भाव।।7।।

1. सबारे बने। 2. भआर। 3. से भमि। 4. बुझाय।

कवि वसन्त ऋतुक वर्णन करैत छथि -- (1) वन मे गाछ सभमे नव, कोमल आ' सुन्दर पात भेल। मानू समस्त वन नब लाल वस्त्र पहिरलक। (2-3) नाना भङ्गीमे मलय पवन बहैत अछि। से देखि देखि कृष्णक मनमे उल्लास जगैत अछि जे वृन्दावनमे वसन्त प्रकट भए गेला (4) कोकिल आमक डारिपर कुहकैत अछि। कामदेव संसार पर नव अधिकार जमओलनि। (5) वसन्तराजक भ्रमररूपी अमला मधुपान कए (मत भए) घूमि घूमि मानिनी लोकनिक मनमे संचित मानरूपी धन (करारोपण-हेतु) खोजि रहल अछि। (6) कृष्ण दिस-दिस घूमि-घूमि वनकें निहारि प्रमुदित भए रास रचबैत छथि। (7) राधा ओ कृष्णक अभिनव भाववाला ई गीत विद्यापति रचल।

[464]

लता तरुअर मण्डप दीउ[1] निरमल ससधर भिति धवलीउ[2]।।1।।
पत्रुम नाल ऐपन भल भेल। रात पल्लब नव परिहन[3] देल।।2।।
गाबह माइ है मङ्गल आए[4]। बसन्त बिआहब कानन थलि आए।।3।।

मधुकर रमनी मङ्गल गाब। दुजबर कोकिल मन्त पढब।।4।।
करु मकरन्द हथोदक नीर। बिधु बरिआती धीर समीर।।5।।
कनएकेआसुनि तोरन तूल। लाबा बिथरल बेलिक फूल।।6।।
केसु कुसुम कर सींदुरदान। जौतुक पाओल मानिनि मान।।7।।
[केलि कुतुक कर नब पञ्चबान। विद्यापति कवि दिढ कए भान]।।8।।
अभिनब नागर बुझ रसबन्त[5]। मन्ति महेस रेनुकादेवि कन्त।।9।।

1.जीति। 2. भीति। 3. पहीरन पल्लव। 4. देखह माइ हे मनचित लाय। 5. बुझए बसन्त।

कवि वसन्तकें दूल्हा बनाए विवाहक वर्णन करैत छथि -- (1) लतासँ छारल गाछ (कुञ्ज) मण्डप देल। निर्मल चान तकर भीतकें ढौरल। (2) कमलक डॉट अरिपन भेल। लाल पल्लव सभ नव वस्त्र देलक। (3) हे दाइ-माइ लोकनि, एतए आबि मंगलगीत गाबह। आइ वनमे जाए वसन्तकें बिआहह गए। (4) भ्रमरी सभ मंगल गीत गबैत छथि। द्विजवर (द्विज माने ब्रह्मण, द्विज माने पक्षी) कोकिल मन्त्र पढ़ओताह। (5) फूलक मकरन्द हस्तोदक (कन्या-दानक जल) होएत। चान आ' मलय पवन बरयात्री होएताह। (6) स्वर्णकेतकी (एक फूल) क तोरण बनल। बेलीक फूल थिक छिड़िआओल लाबा। (7) पलासक फूलसँ सिन्दूर दान होएत। जौतुकमे मानिनीक मान देल जाएत। (8) कामदेव खेल-तमासा करतह। विद्यापति कवि दृढ कए (पक्का-पक्का) कहैत छथि। (9) एकर रस बुझनिहार थिकाह रेणुकादेवीक पति युवा रसिक मन्त्री महेश।

[465]

मलय पवन बह। बसन्त बिजय कह।।1।।
भमर करइ रोल। परिमल नहि ओळ।।2।।
ऋतुपति रङ्ग देला। हृदय रभस भेला।।3।।
अनङ्ग मङ्गल मेलि। कामिनि करए[1] केलि।।4।।

तरुन तरुनि सङ्गे। रइनि खेपए[2] रङ्गे।।5।।
कवि विद्यापति भान। मानिनि जीवन जान।।6।।
नृप रुद्रसिंह बरु। मेदिनी कलपतरु।।7।।

1. करथु। 2. खेपबि।

कवि वसन्तक वर्णन करैत छथि -- (1) मलयपवन बहैछ। मानू वसन्तक विजय कहैछ। (2) भ्रमर गुंजन करैछ। अपार सौरभ पसरल अछि। (3) ऋतुपति उल्लास देल। सभक ह्रदयमे कामोद्रेक भेल। (4) अनंग महोत्सवमे कामिनि सभ हिलि-मिलि केलि-विलास करैत छथि। (5) युवक सभ युवती सभक संग रंग रभस करैत राति बितबैछ। (6-7) विद्यापति कहैत छथि, पृथ्वीपरक कल्पतरु सदृश राजा रुद्रसिंह मानिनीक जीवन (चरित्र) जनैत छथि।

[466]

अभिनव पल्लव बैसक देल। धवल कमल फुल पुरहर भेल।।1।।
करु मकरन्द मन्दाकिनि-पानि। अरुन असोक दीप दिहु आनि।।2।।
माइ हे आज दिवस पुनमन्त। करिअ चुमाओन राए वसन्त।।3।।
सम्पुन सुधानिधि दधि भल भेल। भमि भमि भमर हकारए गेल[1]।।4।।
केस कुसुम सीन्दुर सम भास। केतकि धूलि बिथरु पटबास[2]।।5।।
भनइ विद्यापति कवि कण्ठहार। रस बुझ सिवसिंह सिव अवतार।।6।।

1. भमरइ हकारइ देल। 2. बिथटलहु परबास।

कवि वसन्तक वर्णन हुनक चुमाओनक रुपमे करैत छथि -- (1) नव पल्लवक बैसक (आसन) देल गेल । श्वेत कमलक (ढौरल) पुरहर बनल। (2) मकरन्दरूपी गंगाजल हाथमे लेल गेल। लाल अशोकपुष्परूपी दीप आनल गेल। (3) हे दाइ माइ लोकनि, आइ शुभ दिन थिक। राजा वसन्तक चुमाओन कएल जाए। (4) पूर्णचन्द्र दहीक छाँछ थिक। भ्रमर सभ घूमि-घूमि हकार देअए गेल अछि। (5) पलासक फूलकें सिन्दूर बूझ।

केतकी (केओला) फूलक धूरा जे पसरल अछि सेह पटवास (अबीर) थिक। (6) कवि कण्ठहार विद्यापति कहैत छथि, हुनक एहि गीतक रस बुझनिहार थिकाह शिवक अवधार स्वरूप शिवसिंह।

[467]

परदेस गमन जनु करह कन्त। पुनमत पाबए रितु वसन्त।।1।।
कोकिल कलरबें पुरल चूत। जनि मदन पठाओल अपन दूत।।2।।
आबे के मानिनि करति मान। विरहें बिषम भेल पञ्चबान।।3।।
बह मलयानिल पुरुब जानि। मारए पञ्जसर सुमरि कानि।।4।।
बिरहे बिखिन धनि किछु न भाब। चान्दन कुङ्कुम सखि लगाब।।5।।
विद्यापति भन कण्ठहार। कृष्ण राधा वन विहार।।6।।

नायिका पिआसँ प्रार्थना करैत छथि -- (1) हे कन्त, परदेस जनु जाह। वसन्त ऋतु पुण्यवाने लोक पबैत अछि। (2) आमक गाछीमे कोइली कुहकैत अछि जेना मदन अपन दूत पठओने होथि। (3) आब के मानिनी मान करत। विरह भेलापर कामदेव आओर पीडाकर भए गेलाह। (4) ई जनितहुँ जे ई पूब थिक तैओ मलयानिल (दक्षिणपवन) पूर्व बहैत अछि। कामदेव मानू पूर्वक वैर मन पाड़ि प्रहार करैछ। (5) कामिनी लोकनि जे विरहसँ विखिन्न छथि, कथूमे मन नहि लगैत छनि। सखीलोकनि चानन आ' कुंकुम लगबैत छथिन। (6) कविकण्ठहार विद्यापति राधा-कृष्णक वृन्दावन-विहारक वर्णन करैत छथि।

[468]

के जान[1] कओने दोसे गेलाह बिदेस। अनुखने झखइते तनुभेल सेस।।1।।
बुझहि न पारल निज अपराध। प्रथमक पेम दइबे कर बाध।।2।।
बेरिएक दहब दहिन जओं होए। निरधन धन जओं[2] धरब मओे गोए।।3।।
भनइ विद्यापति सुनबर नारि। धइरज कएरह मिलन मुरारि।।4।।

1. न जानल। 2. जके।

विरहिणी नायिका विलाप करैत छथि अछि--(1) जानि नहि, हमरासँ कोन त्रुटि भेल जे पहु विदेश चलि गेलाह। सतत झुखैत झुखैत देह गलल गेल। (2) हमर अपराध की से बूझि नहि पओलहुँ। पूर्वक जे प्रेम छल ताहिमे दैव विघ्न कए देलक। (3) जँ कहिओ दैव अनुकूल भेल तँ पिआ कें निर्धनहु धन जकाँ जोगाए राखब। (4) विद्यापति कहैत छथि, हे वरनारी, सुनह। धैर्य राखह, मुरारि मिलथुन।

[469]

पहिलि पिरीति पड़ न[1] आँतर तखने एसन रीति।
से आवे कबहु हेरि न हेरथि भेलि नीम सनि तीति।।1।।
साजनि जीबथु सए पचास।
सहस रयनि रभसे[2] खेपथु मोराहु तन्हिकि आस।।2।।
कतने जतने गोरिआराधिअ माङगिअ सामि सोहाग।
तथुहु अपन करम झुञ्जिअ जैसन जकर भाग।।3।।
समय गेले मेघे बरिसब कीदहु तें जलधार।।4।।
सीत समापले बसन पाइअ तें दहु की उपकार।।4।।
रइनि गेलेऽ दीप निबोधिअ भोजन दिवस अन्त।।5।।
जोबन गेले जुबति पिरिति की फल पाओत कन्त।।5।।
धन अछइते जे नहि भोगए ता मने हो पचताब।
जौंबन जीबने बड़ निकारुन[3] गेले पलटि न आब।।6।।
भन बिद्यापति सुनह जौंबति समय बूझ सयान।
राजा सिबसिंह रुपनराएन लखिमा देवि रमान।।7।।

1. परान। 2. रमनि।

नायिका विरहव्यथा सखीकें सुनबैत छथि -- (1) प्रथम प्रीतिमे कहिओ व्यवधान (विच्छेद) नहि होइत लगैत छल। परन्तु सेह प्रथम प्रीति कएनिहार आब मुहो नहि तकैत छथि। ओ प्रीति आब नीम-सन तीत भए गेल। (2) हे सखी, पिआ सए सबा सए बरख जीबथु। हजार-

हजार राति रमणी सभक संग बिताबथु। हमरहु तनिके आशा रहत। (3) कतेक यत्नसँ गौरी पूजल आ' हुनकासँ नीक स्वामी पएबाक सोहाग माङल। से भेटल अवश्य मुद्रा ततहु अपन करमक फल भोगि रहलि छी। जकर भाग्य जेहन। (4) समय गेने जँ मेघ बरसए तँ ओहि चलधारक कोन काज। जाड़ बितला पर जँ वस्त्र भेटए तँ ताहिसँ कोन लाभ। (5) राति बीति गेलापर दीप बारब आ दिन बितला पर भोजन पाएब कोन काजक। यौवन बितला पर युवतीसँ प्रीति कएने प्रेमी कोन फल पाओत। (6) धनक अछैत जे भोगए नहि तकरा मनमे पश्चात्ताप होएबे करतैक। जीवनमे यौवन बड़ निष्ठुर होइत अछि, ओ गेलापर फेर घुरैत नहि अछि। (7) विद्यापति कहैत छथि, हे युवती, सुनह ज्ञानवान लोक समयक मूल्य बुझैत अछि। एकर रस जनैत छथि लखिमा... ।

[470]

हरि हरि हरि परिहरि गेल बिहिँ मोहि दुख देल रे।
सरसिज दल जलसेक अनलसम सेओ भेल रे।।1।।
लोचन धाए फेदाएल हरि नहि आएल रे।
सिब सिब जिबओ न जाए आसे आरुझाएल रे।।2।।
मन कर[1] तहाँ उड़ि जाइअ जहाँ हरि पाइअ रे।
पेम परस मनि पानि[2] आनि उर लाइअ रे।।3।।
सपनेहु सङ्गम पाओल रङ्ग बढ़ाओल रे।
से मोर बिहि बिघटाओल निन्दओ हराओल[3] रे।।4।।
हिमकरकर छल सीतल सेओ भेल तिखतर रे।
पिआ बिनु सबे बिपरीत नितेनिते जिबहर रे।।5।।
विद्यापति कवि[4] गाओल धनि धैरज कर रे।
अचिरे मिलत तोहि बालभुँ पुरत मनोरथ रे।।6।।

1. करि। 2. जानि। 3. हराएल। 4. भनइ विद्यापति गाओल।[ ] भाषा सँ।

विरहिणी राधा विलाप करैत छथि--(1) हाए, कान्ह हमरा छाड़ि चलि गेल। विधाता तँ भारी दुख देलनि। कमलक पात, पानिक सेचन सेहो आगिसन भए गेल। (2) आँखि दौड़ैत दौड़ैत (बाट तकैत-तकैत) अकछाए गेल। कान्ह नहि आएल। हाए, आसमे ओझराएल प्राणो छूटि नहि रहल अछि। (3) मन होइछ उड़िकेँ ततए चलि जइ जतए कान्ह भेटए आ' ओकरा स्पर्श मणि सदृश हाथ छाती सँ लगाबी। (4) सपनहुमे एक रती संग भेल आ' रंग रभस आरम्भ कएल, किन्तु विधाता ताहू मे बाधा कएलक ओही कालमे निद्रा हरि लेलक। (5) चन्द्र किरण जे शीतल छल सेहो तीख भए गेल। पिआक बिना सभ विपरीत (प्रतिकूल) भए नित्य प्राण हरवा पर अछि। (6) विद्यापति कहैत छथि, हे धनी, धैर्य राखह। शीघ्र तोहर मनोरथ पुरतहु; वल्लभ आबि जएथुन।

[471]

अविरल पळए मदन सरधारा। एकल देह कत सहत हमारा।।1।।
सपनेहु तिल एक तन्हि सञो रङ्गे। नीन्द बिदेसल ताहि पिआ सङ्गे।।2।।
कान्ह कान लागि कहिहहि भमरा। तोहें जानसि दुख अहनिसि हमरा।।3।।
एतबा बोलि कहब मोरि सेबा। तिरथ जाए जल आञ्जुलि देबा।।4।।
भनइ विद्यापति एहु रस जाने[1]। सिवसिंह[2] लखिमा देइ रमाने।।5।।

1. जानि। 2. राए सिबसिंह।

राधा भ्रमर कहैत छथि -- (1) हमरा पर निरन्तर कामबाणक वृष्टि भए रहल अछि। एकसर हमर देह से कतेक सहत। (2) सपनहुमे छनो भरि हुनकासँ मिलन होइछ। लगैत अछि निद्रा सेहो हुनके संग विदेश चलि गेल। (3) भ्रमर, कृष्णक कान लागि हमर समाद कहुन गए। तों हमर दुख निरन्तर देखैत रहैत छह। (4) एतबे कहि कें तों हुनका हमर सेवा निवेदित करबह जे कोनो तीर्थ जाए हमरा जलाञ्जलि देथि। (5) विद्यापति कहैत छथि। लखिमा देविक पति शिवसिंह ई रस जनैत छथि।

[472]

नउमि दसा देखि गेलाहे नडाए। दसमि दसा उपगति भेलि आ।।1।।
हुन्हि अरजल अपजस अपकार। हमे अबे अङ्गिरल जम बनिजार।।2।।
आबे कान्ह सुख[2] करथु बिदेस। सुमरि जलाञ्जलि दिहथि सन्देस।।3।।
बह मलयानिल झर मकरन्द। उगओ सहस दस दारुन चन्द।।4।।
करओ कमलवन केलि भमरा। आबे कि भल मन्द होए[3] हमरा।।5।।
भनइ बिद्यापति निरदए कन्त। एहि सञो भल बरु जीवक अन्त।।6।।

1.जिबे। 2. आबे सुखे कन्हाह। 3. होएत।

विरहिणी राधा विलाप करैत छथि -- (1) कान्ह हमरा विरहक नओम दशा (जड़ता) मे छाड़ि गेलाह। आब हम दसम दशा (मरणावस्था) मे पहुचि गेलहुँ । (2) ओ अनुचित काजक अपजस अरजि गेलाह। हम आब यमरूपी बनिआकें गहल। (3) आब कृष्ण विदेशमे सुख भोगथु। मन पड़िअनि तँ जलांजलिरूप सन्देश पठाए देथु। (4) मलयपवन बहैछ, मकरन्द झहरैछ, से बहओ, आ' झरओ। हजार-हजार दारुण चन्द्र उगओ। (5) भ्रमर सभ कमलवनमे केलि करओ। ताहिसँ आब हमरा कोन लाभ आ' कोन अलाभ। (6) विद्यापति कहैत छथि, हे राधा, तोहर कन्त निर्दय छथुन। विरहसँ जरैत रही, ताहिसँ तँ मरणे नीक।

[473]

कुन्द कुसुमे भरि सेज ओछाउलि[1] चान्द इजोरिअ राति।
तिला एक सुपहु समागम पाओल मास बरख भेलि साति।।1।।
पुनु कइसे पलटि मधुरपुर जाएब पुनु कइसे भेटत मुरारि।।2।।
चिन्ताजाल पड़लि हरिनी सनि कि करब बिरहिनि नारि।।2।।
एकल भमर भम[2] बहुत कुसुम रम[3] कतहुञ केओ कर बाध।
बहुवल्लभ सञो नेह[4] बढ़ाओल पड़ल हमर अपराध।।3।।
दिवसे दिवसे वेदन[5] अधिकाएल दारुन भेल पञ्चबान।
आओर बरख कत आसे गमाओब संसअ पड़ल परान।।4।।

भनइ वियापति सुनु बरजौबति चिन्ता करिअ तेआग[6]।
अचिर मिलत हरि रहु धइरज धरि सुभ दिन पलटत भाग।5।।

1. ओछाओन। 2. भमि। 3. रमि। 4. सिनेह। 5. बेआधक। 6. मन चिन्ता करु त्याग।

विरहिणी राधा विलाप करैत छथि -- (1) चानसँ चकमक रातिमे कुन्दक फूल भरि भरि सेज रचल। छन भरि वांछित पहुक संग पड़लहु आ' ताहि लेल मास के कहए बरख दिन सन्ताप भोगैत रहलहुँ। (2) हाए-हाए, कोना फेर घुरिकें मथुरा जाएब? कोना फेर कान्ह भेटत? चिन्तारूपी जाल बाझलि हरिनीक समान ई विरहिणी नारि (हम) कोन उपाए करत? (3) भमरा एकसरे घुमैत रहैत अछि, बहुतो फूलक संग रमण करैत रहैत अछि, कहाँ कतहु केओ ओकरा रोकैत छैक। परन्तु हम जे बहुवल्लभ कान्ह नेह बढ़ाओल से हमर अपराध भए गेल! दिन-दिन हमर वेदना बढ़ैत गेल। कामदेव दारुण भए गेलाह। आओर कतेक बरख आशापर खेपब? प्राण अब तब करैत अछि। (5) वियापति कहैत छथि, हे सुन्दरी सुनह। चिन्ता तेआगह। शीघ्र कान्ह भेटथुन्ह। धैर्य धरह, शुभ दिनमे भाग्य पलटतहु।

[474]

साहर मञ्जर भमर गुञ्जर कोकिल पञ्चम गाब।
दखिन पबन बिरह बेदन निठुर कन्त न आब।।1।।
साजनि रचह सेह उपाए।
मधुमास जञो माधब आबए बिरह बेदन जाए।।2।।
अछल अङ्गज भेल अनङ्ग[1] धनुखि धारल[2] हाथ।
नाह निरदए तेजि पड़ाएल पड़ल[3] हमर माथ।।3।।
एक बेरि हरे भसम कएलाहे दुसह लोचन आगिँ।
पुनु गोपकुल जनम लेलह बिरहि बधए लागि।।4।।

जञो तोहि पाबञो अरे बिधाता बान्धि मेलञो अन्धकूप।
जाहेरि नाह बिचेखन नहि ताके कके[4] दिअ रूप।।5।।
[ई रूप हमर वैरी भए गेल देअ बहु दिठि साल।
आनकाँ ई रूप हित पए होए[5] हमर ई भेल काल]।।6।।
दिने दिने दुख सहिन पारञो पीड़ए[6] अधिक मार।
X X X X X ।।7।।

1. अनङ्गज। 2. धनुरिबाड़ल। 3. ओड़ल। 4. काँ। 5. करए। 6. पड़ए। [ ] नेपा. सँ।

राधा सखीसँ विरहव्यथा सुनबैत छथि -- (1) सहकारक (आमक) मञ्जर पर भ्रमर गुञ्जार करैछ। कोकिल पंचम स्वरमे कुहकैछ। मलयानिलय बहैछ। विरहवेदना बढ़ल जाइछ। एहनहुमे निष्ठुर पिआ नहि अबैत अछि। (2) हे सखी, एहन उपाए करह जहिसँ एहि वसन्तमे कान्ह आबए। ओ आओत तखनहि हमरा एहि विरहवेदनासँ त्राण भेटत। (3) छल तँ ई काम अंगज (प्रद्युम्नक पुत्र अनिरुद्ध) किन्तु भए गेल अनंग (शिवक कोपेँ)। हाथमे धनुष लेलक। निष्ठुर कन्त तँ छाड़िकें पड़ाए गेलः ओकर सभ बाण हमरे माथ पर बजरए लागल अछि। (सखीकें एतबा कहि राधा कामदेवकें कोसए लागलि) (4) एक बेर तोरा शिव अपन आँखिक दुःसह आगिमे भस्म कए देलथुन तँ तों विरही सभक वध करक लेल फेर गोपकुलमे (कृष्णक पौत्र अनिरुद्ध रूपमे) जन्म लेलह। (पुनः राधा विधाताकें कोसैत छथि) -- (5) हे विधाता, हम जँ तोरा पबितहुँ तँ हाथ-पाएर बान्हि अन्धकूपमें धकेलि दितिअहु। जकर कन्त बुझनुक रसिक नहि हो तकरा तों रूप किएक दैत छहक? ई रूप हमर वैरी भए गेल। ई रूप तँ बहुतोक आँखिमे गड़ैत छैक। अनका हेतु भनहि रूप हितकर होइक, हमरा लेल तँ ई काल भए गेल। (7) दिन-दिन ततेक वेदना होइत अछि जे सहि नहि सकैत छी। कामदेव बहुत सताए रहल छथि।

[475]

प्रथनहि उपजल नब अनुरागे। मन कर प्रान धरिअ तसु आगे।।1।।
आबे दिने-दिने भेल पेम पुराने। भुगुतल कुसुम सुरभि कर आने।।2।।
हरिकें कहबि सखि हमरि बिनती। बिसरि न हलबिअ पुरुब पिरीती।।3।।
रभस समय पिआ जत कहि गेला। अरधेओ आध सेहओ दुर गेला।।4।।
भनइ विद्यापति एहु रस जाने। सिबसिंह लखिमादेवि रमाने।।5।।

राधा सखीकें विरहव्यथा सुनबैत छथि -- (1) पहिने जखन नब अनराग (पूर्वराग) उपजल तखन मन होअए जे अपन प्राणो कान्ह पर निहुछि दी। (2) आब जखन दिन-दिन प्रेम पुरान होइत गेल तखन रंग बदलि गेल। भोगि लेल गेल (बासि) फूलक सौरभ आने प्रकारक भए जाइत अछि। (3) हे सखी, कान्हकें हमर बिनती कहबहुन जे ओ पूर्वक प्रीति बिसरि नहि देथि। (4) कामकेलिक कालमे ओ जतेक जे कहि गेलाह तकर आधहुक आध नहि रहल। विद्यापति कहैत छथि, एहि रसक ज्ञाता थिकाह लखिमादेवीक पति शिवसिंह।

[476]

केओ सुखे सूतए केओ दुखे जाग। अपन अपन थिक भिन भिन भाग।।1।।
कि करति अबला न चेतए पार[1]। एकहि नगर रे बहुत बेबहार।।2।।
माजरि पाबि[2] भमर मधु पीब। से देखि पथिक कण्ठगत जीब।।3।।
कन्ता कन्त मनोरथ पूर। बिरहिनि बिरहे बेआकुलि झूर।।4।।
विद्यापति भन एहु रस जान। सिबसिंह रुपिनिदेवि रमान।।5।।

1. हार। 2. तोरि।

विरहिणी राधा विलाप करैत छथि -- (1) केओ सुखसँ सुतैत अछि तँ केओ दुःख सँ जगैत अछि। सभक अपन-अपन भाग्य होइत छैक। (2) विरहिणी अबला की कए सकैत अछि। ओ चेतिओ नहि सकैत अछि। एकहि नगरमे बहुत तरहक व्यवहार देखैत छी। (3) एम्हर भ्रमर मंजरी

पाबिकें मधुर मकरन्दक पान कए रहल अछि (अपन प्रेयसीक संग रमण कए रहल अछि।) आ' ओम्हर से देखि-देखि पथिक (विरही जन) केर प्राण सुखाए रहल छैक। (4) एम्हर कान्ता (कामिनी) कान्तक लालसा पुरबैत छथि तँ ओम्हर विरहिणी व्याकुल भेलि झाँखि रहलि छथि। (5) विद्यापति कहैत छथि, ई रस जनैत छथि रुपिनिदेवीक पति शिवसिंह।

[477]

जेहे लता लहु लाए कन्हाई। जल दए दए सिंचि[1] गेलाहे बढाई।।1।।
से आबे बढ़ि[2] कुसुमित भेलि आई। परिमल पसरल दहदिस जाई।।2।।
पिआ कँ कहब पिक मोर एहो[3] बानी। रभसक अबसर दुरजन जानी।।3।।
तोहँहि सुचेतन कि कहब आने। मनमथ तन्त भल तोहि गेआने।।4।।
हृदय बिचारह बिलम्ब न सहई। पुलला फुल मधु बसि नहि रहई।।5।।

1.किछु। 2. भरे। 3. सुललित।

विरहिणी राधा कोकिलकें दूत बनाए संवाद पठबैत छथि -- (1-3) हे कोकिल, कान्ह जखन प्रसन्न मुद्रामे रहथि आ' आन केओ नहि रहए तखन हुनका हमर ई संवाद कहबहुन -- 'हे कान्ह, तों जे लघु लता रोपि स्नेहक जलसँ पटाए-पटाए बढाए गेलह (4) से आब बढ़ि कें कुसुमित भए गेल आ' ओकर सौरभ दसो दिस पसरि गेल। (4) तों स्वयं बुधिआर छह आ' तोरा कामकलाक नीक ज्ञान छह। हृदयमे बिचार करह। आब विलम्ब सह्य नहि अछि। फुलाएल फूलमे मधु टिकल नहि रहैत अछि।

[478]

पिआ सञो कहब भमरवर पलटि आओब एहि[1] देस।
आए देखबि निज भाबिनि तबे[2] बर जाएब बिदेस।।1।।
सैसव समअ बहिए गेल जउबने तनु लेल बास।
सेहओ[3] तौरित चलि जाएत पूरति नरि[4] मोरि आस।।2।।
दिने दिने झखइते खिन तनु सुतञो नलिनिदल लागि।

चान्द ऐसन छल सीतल सेहओ दहए[5] जनि आगि।।3।।
मनमथ मन मथ सबतहु से सुनि हिअ मोर साल।
बालँभु हमर बिदेस बस तेँ जउबन भेल काल।।4।।

1. सेहे। 2. तजो। 3. तन्हुहु। 4. पुरए रहति। 5. बहए।

राधा भ्रमरकेँ दूत बनाए पिआकेँ समाद पठबैत छथि -- (1) हे भ्रमरवर, कान्हकेँ कहबह जे एक बेरि घुरिकेँ एहि देश आबए, आबिकेँ अपन प्रियाकेँ देखए आ' तखन बरु फेर विदेश चलि जाए। (2) शैशव अवस्था बीति गेल। देहमे यौवन बास लेलक। यौवनो शीघ्रे चलि जाएत। पुनः हमर आशा नहि पूरत। (3) दिन-दिन झखैत झखैत देह खिआए गेल। कमलक पात पर सुतैत छी। चान जे एहन शीतल छल सेहो आगि जकाँ जरबैत अछि। (4) कामदेव सभ ठाम मनकेँ मथैत (व्याकुल करैत) रहैछ, से सुनैत छी तेँ हमर हृदयमे टीस उठैत अछि। हमर पिआ विदेशमे रहैत अछि, तेँ यौवन बलाए भए गेल।

[479]

आनह केतकि पात[1]। X X X ।।1।।
X X X X X। मृगमद मसि नख काप।।2।।
प्रथम लिखह[2] मोरि नाम। बिनति देह[3] बिच ठाम।।3।।
सखि हे, गइए जनाबह नाथ। करक लिखन दए हाथ।।4।।
नाम लेइते पिअ तोर। सर गदगद कह मोर।।5।।
जातर जनु हो तोहार। ते दुर करु उर हार।।6।।
आबे भेल बन[4] गिरि सिन्धु। अबहु न सुमर[5] सुबन्धु।।7।।
बिधिगति नहि परकार। सालए सर कनिआर।।8।।
सुकवि भनथि कण्ठहार। के सइ काम पहार[6]।।9।।

1. कतकि केर पात। 2. सबहि लिखबि। 3. देबि। 4. नव। 5. सुमझ। 6. परहार।

विरहिणी राधा सखीसँ सन्देश पहुँचएबाक अनुरोध करैत छथि -- (1) हे सखी, केतकीक पात आनह, ...। (2) कस्तूरी घोरि मोसि बनाबह आ' नह सँ कलम। (3) सभसँ पहिने हमर नाम लिखबह। माझ ठाम हमर बिनती लिखह। (4) हे सखी, एहि तरहेँ हाथक लिखल ई पत्र हाथमे दैत पहुकेँ ई संवाद सूचित करह --- (5) हे पिआ, तोहर नाम लैत हमर कण्ठस्वर गद्गद (गह्वरित) भए जाइत अछि। (6) आलिंगनमे व्यवधान नहि होअए तेँ हार हटाए लैत छलहुँ। (7) अब वन, पर्वत आ' नदीक अन्तराल भए गेल। हे बन्धु, तोँ आबहुँ हमर स्मरण नहि करैत छह। (8) विधातक विधानक कोनो प्रतिकार नहि अछि। तोहर विरहक तीक्ष्ण बाण हमर हृदय सालैत अछि। (9) कवि कण्ठहार कहैत छथि, काम प्रहार के सहि सकैत अछि।

[480]

सखि है मोरे बोले बोलब[1] कन्हाई।
हमर सपथ थिक बिसरि न हलबे गए तेजि अबसर पाई।।1।।
हुन्हिसञो पेम हठहि हमे लाओल हित उपदेस न लेला।
तृनतरु छाया तर हमे बैसलाहुँ[2] जैसन उचित से भेला।2।।
एके हमे नारि गमारि सबहु तह दोसरे सहज मतिहीनी।
अपनुक दोस दैवकेँ कि कहब ओ नहि भेलाहे चीन्ही।।3।।
अकुलिन बोल नहि ओळ धरि निरबह धरए अपन बेबहारे।
आगिल दुर कर पाछिल[3] चित धर जइसनि बड़ि कुसिआरे।।4।।
भनइ विद्यापति सुन बरजौबति चिते जनु मानह आने।
राजा सिबसिंह रूपनराएन सकल कलारस जाने।।5।।

1. पुछब। 2. तृनतरुवर छाया तर बैसलाहु। 3. पाहिल।

राधा सखी द्वारा समाद पठबैत छथि -- (1) हे सखी, हमर समाद कान्हकेँ कहिअह। हमर सपत, हमर ई काज एतएसँ जाए अवसर

भेटलापर कान्हकें कहब बिसरि नहि जइहह। (2) कहबहुन जे हुनकासँ हम हठात् (हड़बड़ाए) प्रेम कए बैसलहुँ, हितैषी सभक उपदेश (निषेध) नहि सुनक। ताड़क गाछक छाहरिमे सुतलहुँ, तखन जे गति होएबाक चाही से भेल। (3) हम एक तँ सभसँ गमारि, नारी, आ' ताहिपर सहजहि बुद्धिहीन। दोष हमर अपने थिक। विधाताकें की कहबनि। हुनका हम चीन्हि नहि पाओल। (4) अकुलीन (गोपवंशी) जे वचन देत तकर निर्वाह (पालन) ओ अन्त धरि नहि कए सकैत अछि। ओ अपने बानि धएने रहत। पूर्वक बात (प्रेम) बिसरि पछिला बात (कलह) मोन राखत। जेना कुसिआर पहिने (जड़ि दिस) रसगर आ आगाँ (छीप दिस) उसठ। (5) विद्यापति कहैत छथि, हे युवती, सुनह, मनमे अन्यथा नहि सोचह। राजा शिवसिंह रूप नारायण सकल कलाक रस जनैत छथि।

[481]

की पहु पिसुन बचन देल कान। की पर कामिनि हरल गेआन।।1।।
की पहु बिसरल पुरुबक नेह। की जीवन दहु पळल सुन्देह।।2।।
पिसुन[1] बचन सुनलाहुँ मन[2] लागि। तूर[3] बान्हि घर लेसलि आगि।।3।।
कन्त दिगन्त गेलाह काँ लागि। सीतलि रअनि बरिस घन आगि[4]।।4।।
कहब कलाबति कन्त हमार। बारिस परदेस बसए गमार।।5।।
सब परदेसिआ एके सोभाब। गए परदेस पलटि नहि आब।।6।।
मार मनोज मरम सर साहि बरसा बरिअ बसन्तहु चाहि।।7।।

1. झूठा। 2. मोज। 3. तुरअ। 4. आहि।

विरहिणी राधा सखीद्वारा संवाद पबैत छथि -- (1) हे सखी, कन्तसँ कहबहुन, की हमर पहु पिशुनक बातपर कान देलनि? की आन सुन्दरी हुनक ज्ञान हरि लेलकनि? (2) की ओ पहिलुक प्रीति बिसरि गेलाह? (3) हुनका की कहिऔन, हम तँ अपनहि मन लगाए (विश्वासपूर्वक) पिशुनक बात सुनलहुँ। तूरमे बान्हि घरमे आगि खोंसल। (4) जानि नहि पिआ

किएक परदेस चलि गेलाह। हुनक विरहमे शीतल राति लगैछ जेना आगि बरसबैत हो। (5) हे लुरिगरि सखी, हमर पिआकें कहबनि जे वर्षा ऋतुमे गमारे परदेसमे रहैत अछि। (6) सभ परदेसिआक स्वाभाव एके रंग होइछ, परदेस जाएत तँ हठे पटलि नहि आओत। (7) हमरा कामदेव टिका कए मर्मस्थलमे शर-प्रहार करैत अछि। वर्षा ऋतु बसन्तहुसँ अधिक बलगर होइत अछि।

[482]

खेदब मञे कोकिल अलिकुल बारब कर कड़्कन झमकाई।
जखने जलदे धओलागिरि बारिसब तखनुक कओन उपाई।।1।।
गगन गरज घन सुनि सङ्कित मन[1] बारिस हरि कए राबे।
दखिन पवन सउरभे जदि सँतरब दुहु मन दुहु बिछुराबे।।2।।
से सुनि जुबति जीब कैसे[2] राखति सुन वियापति बानी।
राजा सिबसिंह ई रस बिन्दक मदने बोधि देब आनी।।3।।

1. मन सङ्कित। 2. जदि।

विरहिणी राधा विलाप करैत छथि -- (1) जँ कोइली कुहकत, भमरा गुंजत तँ हाथक कगना झमकाए कें ओकरा बैलाएब। परन्तु जखन धवलगिरि सदृश मेघ बरिसए लागत तखन कोन उपाए करब? (2) आकाशमे मेघ जखन गरजैत अछि तँ से सुनिकें छाती कापए लगैत अछि। बरसातक बेङ बाजए लगैत अछि।............... ..(?)। (3) से सुनि कें युवती कोना जिबैत रहत? विद्यापतिक बात सुनह। तोहर कन्तकें कामदेव बउँसिकें आनि देथुन। एकर रस जनैत छथि राजा शिवसिंह।

[483]

साहर सङरभ गगन भरे। भमरि भमर दुहु बाद करे।।
लोभक सम्भरम सङ्गक दन्द। बहुत पिआस[1] थोर मकरन्द।।
से देखि रितुपति आएल चली। जाकर मो मन सङ्का छली।।

कोमल माँजरि कोकिल खाए। मानिनि मान पिबि ओ न अघाए।।
जाबे मोर आङ्ग[2] तरुनत भेल। ताबे से कन्त दिगन्तर गेल।।
हित अनहित दुहु रह बिहि हाथ[3]। दुइ अभिमत न रहए एक साथ[4]।
धन कुल धरम मनोभव चोर। केओ न बुझब मुगुध पिआ मोर।।
विद्यापति कवि एहो रस भान। सिबसिंह लखिमादेवि रमान।।

1. बहुल पिआसल। 2. न ओ अङ्ग। 3. परहित अहित सदा बिहि बाम। 4. ठाम।

विरहिणी राधा विलाप करैत छथि – (1) आमक सौरभ आकाश मे पसरि गेल। भ्रमर आ' भ्रमरी दूनूक बीच मधु पीबामे झगड़ा (उपरोंझ) होइछ। (2) दूनू दिस लोभक वेग आ' संगीसँ प्रतिस्पर्धा। (3) ई स्थिति देखैत ऋतुराज वसन्त (न्याय करबाक हेतु) आबि गेल। एकरे आशंका हमरा मनमे छल। (4) कोकिल आमक कोमल मजर खाइत अछि। मानिनीक मान पिबि ओ अघाइत नहि अछि। (5) जा हमर अंग (स्तन) तरुनत (विकसित, पुष्ट) भेल ता' पिआ परदेस चलि गेल। (6) हित-अनहित दूनू विधाताक हाथमे छनि। दुइ गोट वांछनीय वस्तु एक संग नहि रहि सकैत अछि -- (7) धन आ चोर, कुलधर्म आ कामदेव (चोर तँ धन नहि, काम तँ कुलधर्म नहि)। हमर अबोध पिआकेँ ई बात केओ बुझबैत नहि अछि। (8) विद्यापति ई सरस गीत रचल आ' रस जनैत छथि लखिमा देवीक पति शिवसिंह।

[484]

लळित लता जनि तरु मिलती। तन्हि पिअ कण्ठ गहए जबती।।
आजु अपन मन थिर न रहे। मधुकर मदन समाद कहे।।
भमइ सरस कवि रसि सुजान[1]। त्रिपुरसिंह सुत अरजुन जान[2]।।

1.रस सुजान। 2. नाम।

कवि वसन्तक वर्णन करैत छथि -- (1) जेना सुन्दर लता गाछसँ मिलैत अछि तहिना तरुणी सभ पतिक कण्ठ गहैत छथि। (2) आइ अपन मन स्थिर (अपन कहलमे) नहि रहैत अछि। भ्रमर सभ मानू कामदेवक संवाद सुनबैत अछि। एकर रचयिता थिकाह सरस कवि आ' रस जननिहार थिकाह त्रिपुर सिंहक पुत्र अर्जुन सिंह।

[485]

कानने कानने कुन्द फूल। पलटि पलटि ताहि भमर भूल।।1।।
पुनमति तरुनी पिअ सङ्ग पाब। बरिस बरिसे रितुराज आब।।2।।
रअनि छोटि हो दिवस बाढ। जनि कामदेव करबाल काढ।।3।।
मलयानिल पिब जुबतिमान। बिरहिनि बेदन केओ न जान।।4।।
भन विद्यापति रितु वसन्त। कुमर अमर जानो देवि कन्त।।5।।

कवि वसन्तक वर्णन करैत छथि -- (1) वन-वनमे कुन्द फुलाएल। ओहि फूल पर भ्रमर लोभाए घुरि-घुरि कें अबैत अछि। (2) पुण्यवती तरुणी पिआक संग पबैत छथि। साले-साल ऋतुराज वसन्त अबैत अछि। (3) राति छोट होइत अछि, दिन पैघ। कामदेव मानू मिआनसँ तरुआरि घीचि लेलनि। (4) मलय पवन युवती सभक मान पिबैत अछि। विरहिणीक वेदना केओ नहि जनैत अछि। (5) विद्यापति वसन्त ऋतुक वर्णन करैत छथि। एकर रस जननिहार थिकार जानो देवीक पति कुमर अमर।

[486]

सरोवर मज्जि समीरन, बिथरइ[1] केवल कमल परागे।
माधविका मधू पिबहि न पारए। मधुकर[2] दे उपरागे।।1।।
साजनि साजनि, सुनहि हे साजनि मोरी।
बालम्भु सञो मझु दीठि मिलाबहि होइहञो दासी तोरी।।2।।
पाँड़रि परिमल आसा पूरए मधुकर गाबए गीते।

चान्दनि रजनी रभस बढ़ाबए मो पति सबे बिपरीते।।3।।
हदयक बाउलि कहिअइ पर जनु तोंहहि कहओ सआनी।
बिनु माधव मधुरजनी जाइति मीन कि जिब बिनु पानी।।4।।
बिद्यापति कबिबर एहु गाबए उपदेसए[3] रसन्ता।
अरजुन राए चरन पए सेबहि गूनादेबि रानि कन्ता।।5।।

1. बिथरओ। 2. कोकिल। 3. होउ उपदेशौं।

नायिका वसन्तकालिक वियोग सखीकें सुनबैत छथि -- (1) सरोवरमे डूब दए पवन कमलक पराग पसारैत अछि। मधुकर माधवी फूलक रस पिबि नहि पबैत अछि, तें ओकरा उपराग दैत अछि। (2) हे सजनी, हमर बात सुनह। हमरा पिआसँ आँखि मिलबाए देह। एहि उपकारक बदला हम तोहर दासी भए जएबहु। (3) पाँडलि फूलक सौरभसँ दिग्दिगन्त भरल अछि। भ्रमर गीत गबैछ। इजोरिआ राति कामवासना जगबैत अछि। परन्तु हमरा लेखें सभ विपरीत (केवल दुख देनिहार)। (4) आन लोक हमरा विक्षिप्त हृदयबाली कहैत अछि। तों बुझनुक छह तें तोरहि कहैत छिअहु। हमर ई वसन्तक राति बिनु कान्हहिक बीति जाएत की? माछ कि पानिक बिना जीबि सकैत अछि। (5) ई गीत रसिक लोकनि कें उपदेश देबाक हेतु विद्यापति रचल जे रानी गूना देवीक पति अर्जुन राए केर चरण सेवक छथि।

[487]

आज मओे जानल हरि बड़ मन्द। बोल बदन तोर पुनिमाक चन्द।।1।।
एकै दिन पुरित दिनहु दिन खीन। ता सओ तुलना नहि ओ हीन[1]।।2।।
बैसलि अधोमुखि चिते गुन दन्द। एकै बिरहिनि है दोसरे दह चन्द।।3।।
नअन नीर दर पानि कपोल। खने खने मुरुछ भरम कत बोल।।4।।
सखिसबे चेताबए[2] अवधिक आस। रिपु रितुराज तेज घन साँस।।5।।

1. हरि हमे दीन। 2. सखि चेताउलि।

(क) रूपगर्विता राधा सखीकें कहैत छथि -- (1) हे सखी, आइ हम जानल जे कान्ह मूर्ख अछि। ओ कहैत अछि -- तोहर मुह पूर्णिमाक चान थिकहु। (2) से कोना हए। पूर्णिमाक चान तँ एके दिन पूर्ण रहैत अछि, तकरा बाद दिन-दिन क्षीण भेल जाइत अछि। तखन तकरा संग हमर तुलना नहि। ओ हमरासँ हीन अछि।

(ख) कवि विरबीं राधाक वर्णन करैत छथि – (3) राधा मुह झुकओने चिन्ता करैत बैसलि अछि। एक तँ ओ विरहिणी अछि ताहि पर चान झरकाए रहल छैक। आँखिसँ नोर झबरि रबल छैक। (4)सखी सभ अवधिक आशा दए-दए ओकरा होसमे अनैत अछि। ऋतुराज ओकर शत्रु भए गेल छैक।ओ बेरि-बेर जोरसँ साँस लैत अछि।

[488]

जखने आओब हरि रहब चरन धरि चान्दे पुजब अरबिन्दा।
कुसुम सेज भलि करब सुरत केलि दुहु मन होएत सानन्दा।।1।।
साए साए X X X X X ।
हमर परानाथ कओने बिलमाओल कत जिब देब बिसबासे।।2।।
दिबस रहओ हेरि रअनि थैरि भेलि बिसम कुसुमसर भावे।
नअन नीर गर मुरुछि धरनि पड़ निरदए कन्त न आबे।।3।।
समय माधब मास पिआ परदेस बास ताहि देस बसन्त न भेला।
फुलल कदम्ब गाछ हाट बाट सेहो साछ[1] मोर पिआ सेओ न देखला।।4।।
भनइ विद्यापति सुन बर जौबति अछ तोके जिबन अधारे।
राजा सिबसिंह रूपनराएन एकादस अबतारे।।5।।

विरहिणी राधा विलाप करैत छथि -- (1) कान्ह जखनहि आओत, ओकर चरण धए रहब। ओकर नखरूपी चानक पूजा अपन कमलरूपी हाथ चढ़ाए करब। उत्तम पुष्प-शय्या पर काम-केलि करब। दूनूक मन आनन्दित होएत। (2) हाए... । हमर प्राणपतिकें के विलमओलक? प्राणकें कतेक दिन आशा-विश्वास दैत रहब। (3) दिन भरि तँ बाट तकैत बीति

जाइत अछि, मुदा राति बैरिनि भए जाइछ। कामदेवक असह्य शरप्रहारक प्रभावें आँखिसँ नोर बहैछ, मूर्छित भए भूमि पर खसैत छी। निर्दय कन्त नहि अबैत अछि। (4) वसन्तक समय पिआ परदेसमे अछि, की ताहि देशमे वसन्त नहि होइत अछि? कदम्ब फुलाएल। हाट-बाट सेहो स्वच्छ भए गेल। हमर पिआ सेओ नहि देखलक। (5) विद्यापति कहैत छथि, हे राधा, सुनह। एगारहम अवतार राजा शिवसिंह रुपनारायण तोहर जीवनक आधार छथुन।

[489]

लोचन नीर तटिनि निरमाने। करए कमलमुखि तथिहि सनाने।।1।।
सरस मृनाल कइए जपमाली। अहनिस जप हरि नाम तोहरी।।2।।
ओ कान्हु तुअ लागि[1] धनि तप करई। हृदय बेदि मदनानल बरई।।3।।
चिकुर बरहि हे सम्भरि करे लेअई। फल उपहार पओधर देअई।।4।।
जिब कए समिध समरपति आगी[2]। करति होम होएबह बध[3] भागी।।5।।
भनइ विद्यापति सुनह मुरारी। तुअ पथ हेरइते अछ बरनारी।।6।।

1. वृन्दवन कान्हु। 2. जिब कर समिछ समर कर आगी। 3. बध होएबह।

सखी कृष्णकें राधाक विरहदशा सुनबैत छथि -- (1) आँखिक नोर नदी भए गेल। राधा ततए स्नान कएलक। (2) कमलक कॉंच डॉंटक माला बनाए दिन-राति तोहर नाम जपैत रहैत अछि। (3) ओ वृन्दावनमे तपस्या (यज्ञ) करैत अछि। हृदयरूपी वेदीमे विरहरूपी अग्नि प्रज्वलित छैक। (4) केसरूपी कुशकें समेटि हाथमे लेने अछि। स्तनरूपी फल चढ़बैत अछि। आब प्राणकें समिध (होमक जारनि) बनाए आगिमे अर्पित करत। ओ जँ ई प्राण-होम करत तँ वधभागी (हत्याक अपराधी) तोंही होएबह। (6) विद्यापति कहैत छथि, हे कान्ह, सुनह। राधा तोहर बाट तकैत छहु।

[490]

फूजल चिकुर राहुडरे भोर[1]। रोअए सुधाकर कामिनि कोर।।1।।
ओ कान्हु ओ कान्हु देखह आए। बड़िअ मधथ देअ बाद छड़ाए।।2।।
दुहु आञ्जुरि भरि दुहु पुज सीब। कामदहन मोर राखह जीब।।3।।
जदि न गेलह[2] तोहें अपजस भेल। ससधर कला गगन चढ़ि[3] गेल।।4।।
भनइ विद्यापति हरि मन हास। राहु छड़ाए चान्द दिअ बास।।5।।

1.फुजलेओ चिकुर राहु कजोर। 2. जाएब। 3. चलि।

सखी कृष्णकें उपदेश दैत छनि -- (1) राधा विरहसँ केस फोलने रहैत अछि। तकरा राहु बूझि डरें बेसुधि (भोर) भेल चान राधाक कोरमे कनैत अछि। (2) हे कान्ह, आबिकें देखह चान आ' राहु लड़ि रहल अछि। ई लड़ाइ बलवान मध्यस्थे छोड़ाए सकैत अछि। (तों आबह तँ केस (राहु) बन्हाए जाएत, झगड़ा खतम। (3) तों दूनू गोटए दूनू हाथ जोड़ि शिवक पूजा करैत छह, हे कामकें जरओनिहार शिव (कामकें भगाए) हमर प्राण बचाबह। (4) जँ तों राधाक लग नहि जएबह तँ अपजसमे पड़बह। चान (राधाक मुह) राहुक डरे आकाशमे चल जाएत (राधा नहि बाँचति)। (5) विद्यापति कहैत छथि, ई सुनि कृष्णक मन प्रसन्न भेलनि। ओ राहुसँ मुक्त कए चानकें शरण देलनि। राधाक लग आबि गेलाह।

[491]

अकामिक मन्दिर भेलि बहार। चउदिस सुनल भमर झङ्कार।।1।।
मुरुछि खसलि महि न रहलि थीर। न चेतए चिकुर न चेतए चीर।।2।।
केओ सखि गाबए केओ कर चार। केओ चान्दन रसें[1] करए सम्भाए।।3।।
केओ बोल मन्त[2] कान कर[3] जोळि। केओ कोकिल खेद डाइनि बोलि।।4।।
ओ ओ अरे कान्ह कि कहब[4] बोळि। मदन भुजङ्ग डसु बालहि तोरि।।5।।
कवि[5] विद्यापति एहु रस भान। एहि बिख गारुड़ एक पए कान्ह।।6।।

1.गदे। 2. मते। 3. तर। 4. रहसि। 5. भनइ।

सखी राधाक विरहदशा कृष्णकें सुनबैत छथि -- (1) राधा अकस्मात् घरसँ बहराइलि कि चारू दिस भ्रमर सभक झंकार सुनलक। (2) सुनितहि मूर्छित भए भूमिमे खसि पडलि। थीर नहि रहि भेलैक। ने केसक चेत रहलैक, ने चीरक। (3) केओ सखी (विष झाड़बाक) गीत गबैत अछि तँ केओ चाटी चलबैत अछि। केओ चन्दन रससँ उपचार करैत अछि। (4) केओ हाथ जोड़ि कानमे मन्त्र पढ़ैत अछि। केओ डाइनि कहिकें कोइली कें बैलबैत अछि। (5) हे कान्ह, बाजिकें की कहबहु। तोहर राधाकें मदनरूपी साप डँसि लेलक अछि। (6) कवि विद्यापति एहि रसक प्रसंग कहैत छथि, एहि विषक गाडुर (विष झाड़निहार, मती, मान्त्रिक) एकमात्र कान्ह थिकाह।

[492]

गगन गरज मेघा, उठए धरनि थेघा पँचसर हिअ गेल साली।
से धनि देखलि खिनि जिउति आजुक दिन के जान कि होइति काली।।1।।
मधय मन दए सुनह सुबानी।
कुजन निरुपि सुजन सखि सङ्गति जे किछु कहए सयानी।।2।।
की हमे साँझक एकसार तारा भादव चौठिक चन्दा।
ऐसन कए पिआ मोर मुख मानल मो पति जीवन मन्दा।।3।।
[बामहु गति जत समदि पठाओल से सबे कहि कहि गेली।
चौदसि तिथि सखि सामर पख निसि तँ सनि दसा मोरि भेली]।।4।।
भनइ विधापति सुन वर जौबति मने जनु मानहु आने।
राजा सिवसिंह रूपनराएल लखिमापति रस जाने।।5।।

दूती कृष्णकें विरहिणी राधाक संवाद सुनबैत अछि -- (1) आकाशमे मेघ गरजैछ। राधा धरती टेकि उठैत अछि। ओकरा हृदय मदन घाइल कए गेल। ओहि बेचारीकें खीन देखल। आइ जिअत, के जानए काल्हि की

होइत। (2) हे माधव, मन दए ओकर समाद सुनह। दुर्जन तँ नहि अछि से देखि सुजन सखी सभक बीच (गुप्तरूपें) ओ जे किछु कहलकहु से सुनह। (3) की हम साँझक एकसर तारा थिकहुँ आकि भादबक चतुर्थी चन्द्र थिकहुँ। पिआ हमरा मुहकें एहने-सन मानलनि। हमर जीवन विफल भए गेल। (4)... (?) कृष्णपक्षक रातिमे चतुर्दशीक चान-सन हमर दशा भए गेल अछि। (5) विद्यापति कहैत छथि, हे सुन्दरी, सुनह। मन उदास नहि करह। एकर रस जनैत छथि लखिमा... ।

[493]

मलिन कुसुम तनु चीर। करतल वदन नयन ढर नीरे।।1।।
कि कहब माधव ताही। तुअ गुन लुबुधि मुगुधि भेलि राही।।2।।
उर लुर[1] सामरि बेनी। कमल कोस जनि कारि नागिनी।।3।
केअओ सखि ताकए साँसे[2]। केअओ नलिनदलें करए बतासे।।4।
कैअओ बोल आएल हरी। उससि उठलि सुनि[3] नाम तोहरी।।5।
सुकवि विद्यापति गाबे। बिरह बेदन निज सखि समुझाबे।।6।

1. पर। 2. निसासे। 3. समरि उठलि चिर।

सखी कृष्णकें राधाक विरहदशा कहैत अछि – (1) फूल-सन कोमल शरीरमे मलिन चीर छैक। मुह हाथ पर रखने अछि। आँखिसँ नीर झहरैत छैक। (2) हे कान्ह, राधाक हाल की कहबहु। ओ तोहर गुणपर लोभाए मुग्ध भए गेलि (ओकर सुधि-बुधि हराए गेलैक)। (3) ओकर छातीपर कारी वेणी (जुट्टी) झुलैत छैक से ओकरा लगैत छैक जेना कारी नागिनी हो। (4) केओ सखी साँस तकैत छैक (जिबैत अछि कि नहि से जनबाक हेतु) । केओ कमलक पातसँ हौंकैत छैक। (5) केओ (आश्वासनमे) कहैत छैक कान्ह आबि गेल, कि तोहर नाम सुनितहिँ उच्छवसित उल्लसित भए उठि बैसलि अछि। (6) सुकवि विद्यापति कहैत छथि, कृष्णकें सखी विरहिणी राधाक वेदना बुझबैत छथि।

[494]

सुन सुन माधब सुन मोरि बानी। तुअ दरसन बिनु जैसनि सयानी।।1।।
सयने मगन भेल ताहेरि देहा। कुहुनिसि मगनि जइसे ससिरेहा।।2।।
सखि जने आञ्चरे धइलि झपाई। अपनेहि साँसे जाइति उडि आई।।3।।
मुरुछि खसलि महि पेअसि तोरी। हरि हरि सिब सिब एतबाहि बोली।।4।।
अबसेओ जीब तेजति तुअ लागी। ताक मरन बध होएबह भागी।।5।।
भनइ विद्यापति कै कर तरान। तुअ दरसन एक जीब निदान।।6।।

सखी कृष्णकें राधाक विरहदशा सुनबैत छथि -- (1) हे कृष्ण, हमर बात सुनह; तोहर विरहमे राधाक दशा केहन भए गेल अछि। (2) ओकर पातर देह सेजमे तेना डूबि जाइत छैक जेना अमावास्याक रातिमे चानकला। (3) सखी सभ ओकरा आँचरसँ झाँपि कें रखने अछि, किएक तँ आशंका छैक जे ओ अपने साँससँ अपनहि ने उड़ि जाए। अर्थात् विरहसँ साँस बड़ तेज चलैत छैक। (4) तोहर प्रेयसी केवल हाए-हाए बजैत मूर्छित भए भूमि पर खसि पड़लि। (5) अवश्य ओ तोरा लेल प्राण त्यागि देत आ' तखन ओकर मृत्युक अपराधी तोहीं होएबह। (6) विद्यापति कहैत छथि, राधाकें आन के बचाए सकैत अछि। एकर प्राण बचएबाक एकमात्र निदान (प्रतिकार) थिक तोहर दर्शन।

[495]

नब किसलअ सयन सूतलि न बूझ दिबस राती।
चान्द सुरुज बिसेख न जानए चान्दन मानए साती।।1।।
बिरह अनल मने अनुभब पर कहहि[1] न जाइ।
दिबसे दिबसे खिनि सिनीबाली[2] चान्द अबथाञे पाई[3]।।2।।
मधव रमनि पडलि मोहे।
आज धरि मोञे आसे जिआउलि अतए[4] जानह तोहें।।3।।
कतहु कुसुम कतहु सौरभ कतहु भमर रावे।
इन्दिअ दारुन जतहि हटिअ ततहि ततहि धावे।।4।।

मदन सरे जे तनु सन्तापल[5] रितुपति के रोसे।
अपन बालँभु जञो होअ आएत तञो दिअ परके दोसे।।5।।
भन विद्यापति सुन तञे जौबति रहहि सङ्ग से पूले।
कन्त दिगन्तर जाहि न सुमर कि तसु रूप कि गुने।।6।।

1. परके कहए। 2. खिनीबाली। 3. जाइ। 4. ओतए। 5. पसहल।

सखी कृष्णकें राधाक विरह-दशा कहैत छथि -- (1) नब-नब पल्लवक सेज पर सुतलि राधा दिन थिक कि राति सेहो नहि बुझैत अछि। चान थिक कि सुरुज सेहो नहि बुझाइत छैक। चन्दन कष्टकर (छक दए) लगैत छैक। (2) विरहक आगि केहन होइत छैक तकर अनुभव मनहिमे होइत अछि, अनका कहल नहि जाए सकैत अछि। राधा दिन दिन खीन होइत-होइत अमावास्याक चानक अवस्था कें प्राप्त कएलक। (3) है कान्ह, राधा मोहावस्थामे पहुँचलि अछि। आइ धरि हम आशा दए जिअओने रहलहुँ, आब आगाँ तों जानह। (4) कतहु फूल अछि, कतहु सौरभ आ' कतहु भ्रमरक गुंजन। दारुण इन्द्रिय (क्रमशः आँखि, नाक आ कान) कें जतहि-जतहिसँ हटबैत अछि, ओ ततहि ततहि दौड़ैत छैक। (5)............ (?)। अपन पहु जें वशमे हो तखनहि अनका दोष देब उचित। विद्यापति कहैत छथि, हे युवती, पुण्यहिक बलें पति संग रहैत छैक। विदेशमे रहैत पति जकरा बिसरि दैछ तकर रूप, गुण सभ व्यर्थ।

[496]

माधब जानल न जिउति राही।
जतबा जकर लेलें छलि सुन्दरि से सबे सोम्पलक ताही।।1।।
सरदक ससधर मुखरुचि सोम्पलक हरिनकें लोचन लीला।
केसपास चमरीकें[1] सोम्पलक पाए मनोभब पीळा।।2।।
दसन दसा दाकळिम्बकें सोम्पलक मधुरि[2] अधर रुचि देली।
देह दसा सउदामिनि सोम्पलक काजर सनि सखि भेली।।3।।

भ्रुहेरि भङ्गि अनङ्ग चाप दिहु कोकिलकें दिहु बानी।
केवल देह नेह अछ लओले एतबा अएलाहुँ जानी।।4।।
भनइ विद्यापति सुन बर जउबति चिते जनु झाँखह आने।
राजा सिबसिंह रुपनाराएन लखिमादेवि रमाने।।5।।

1. लए चमरि के। 2. बन्धु।

सखी कृष्णकें राधाक विरह-दशा सुनबैत छनि -- (1) हे कृष्ण, बूझि गेलहुँ जे राधा आब नहि जुउति। जकर जकरासँ ओ जीवनकालमे जे-जे वस्तु लेने छलि से सभ मरण कालमे कामव्यथासँ व्याकुल भए तकरा-तकरा सुनझाए देलक। (2) शरदक पूर्णिमाकें अपन मुखक शोभा दए देलक, हरिणकें आँखिक लीला, (3) चमरी गाएकें केस, दाड़िमकें दाँत। मधुरी फूलकें अधर आ बिजुलीकें देह दए अपने कज्जली सन भए गेलि। (4) भऊँह कामदेवक धनुषकें देलक आ' कोकिलकें वाणी। देहमे केवल नेह (प्रेम) टा रहि गेल छैक। हे कान्ह, हम एतबा जानि अएलहुँ अछि। (5) विद्यापति कहैत छथि, हे सुन्दरी, मनमे अनिष्टाशंका नहि करह। एकर रसक ज्ञाता थिकाह लखिमादेवीक पति राजा शिवसिंह रुपनारायण।

[497]

कत कत भमि पुरुस देखल कत कलावति नारि।
जीबन तरु पेम उपजए[1] सबे से बुझ बिचारि।।1।।
तकरि दसा[2] देखि देखि कहु[3] मोहि न रह गेआन।
जाहि बधतब से जेहैन कर तोह चाहि नहि आन।।2।।
माधव कहओ तोहि बुझाइ।
से आबे मरन सरन जानल तोहर विरह पाइ।।3।।
धरनि सयन मुन्दल नयन मलिन नलिन समे।
कतने जतने बोलि कहु धनि तोळि बैसाउलि हमे।।4।।
तैअओ धनि[4] पुछले न बाजलि बचन न सुन आधे।
सुमरि से सखि तोहि मोह गेलि विधिबसे भेलि बाधे।।5।।

पिरिति गुन बिपरी न होए बिसरि न हल ताहि।
दिवस दोसे की नहि सम्भव पेम परानहु चाहि।।6।।
भन विद्यापति सुन तञे जुबति रस नहि अवसान।
राजा सिरि सिबसिंह जीबओ लखिमा देवि रमान।।7।।

1.जिब सञो पेम पलक उपजइ। 2. आसा। 3. तबे। 4. जदि।

सखी कृष्णकें राधाक विरहदशा सुनबैत छथि -- (1) जतए-ततए घूमि-घूमि हम बहुतो पुरुष आ' बहुतो कलावती कामिनी देखल। जीवनरूपी गाछहिमे प्रेम फड़ैत छैक। (2) राधाक दशा देखि-देखिकें हमर ज्ञान प्राण हराए गेल। हे कान्ह, तोरा बुझा कए कहैत ओ जँ प्राणत्याग करए तँ वधभागी तोरासँ आन नहि होएत। (3) आब ओ तोहर विरहक कारणें मरणहिकें शरण बूझि लेलक। (4) भूमिपर सुतैछ। म्लान कमल-सन आँखि मुनने रहैछ। कतेक प्रयासें बुझाए सुझाए हम ओकरा उठाएकें बैसाओल। (5) तैओ किछु पुछिऐक तँ उत्तर नहि। आध बात सुनैछ आध नहि। सखी राधा तोहर स्मरण कए बेहोस भए गेलि। विधाता विघ्न कए देलक। (6) हाए, प्रीतिक प्रभाव उनटा होइछ से बिसरि नहि जाह। दिनक दोखें की नहि हो। प्रेम प्राणहुसँ बढ़ि थिक। (7) विद्यापति कहैत छथि, हे युवती, सुनह। रस केर ओर नहि छैक। लखिमा देवीक पति राजा शविसिंह जीबथु।

[498]

कत नलिनीदल सेज सोआउबि कत देब मलयजपङ्का।
कत मृगमद रस[1] देह देआओल तथिहु हुतासन सङ्का।।1।।
कह कैसे राखबि तरुनी X X X ।
XX X X X तरुन मदन परतापे।।2।।
चिन्ताञे करतल लीन वदन तसु देखि उपजु मोहि भाने।
दरस[2] लोभे बिहि अपरुब सिरिजल चान्द कमल सन्धाने।।3।।

दारुन पञ्चसर मुरुछि धरनि पळ सुमरि सुमरि तुअ नेहे।
तोहें पुरुषोत्तम त्रिभुवन सुन्दर अपद न अपजस लेहे।।4।।

1.जलजदल न कत। 2. दर।

सखी कृष्णकें राधाक विरहदशा सुनबैत छथि -- (1) राधाकें पुरइनिक पातपर कतेक सुतएबैक, चानन कतेक लेपबैक, कस्तूरीक रस देहमे कतेक मलबैक। एहूसभमे तँ ओकरा आगैक भ्रम होइत छैक। तखन ओकरा कोना बचाएब? ....कामदेवक प्रखर प्रताप ....। (?) (3) चिन्तामे ओ अपन मुह हाथ पर रखने रहैत अछि। से देखि हमरा एहन सन लगैत अछि जेना विधाता तमासा देखबाक लोभें चान आ कमल दूनूकें (जे एक ठाम वा एक काल मे रहनिहार नहि) जोड़ि एकटा अपूर्व सृष्टि कएल। (8) राधा तोहर नामक स्मरण कए-कए कामदेवक दारुण शरप्रहारसँ मूर्छित भए भूमिपर खसि पड़ैत अछि। तों तीनू लोकमे सभसँ सुन्दर आ' सभसँ उत्कृष्ट पुरुष छह। एना अनेर अपजस नहि लेह।[430]

[499]

आजे तिमिर दह दिस छडला। आज दिघर भए दिन' बढला।।1।।
आजे अकथ भेल परिजन कथा। आरति न रह उचित बेबथा।।2।।
ए सखि ए सखि फललि सुबेला। निअर आएल पिआ लोचन मेला।।3।।
बिरह दगध मन कत² धओला। माङ्गल मनोरथ सखि³ पओला।।4।।
कत दिन⁴ धरब जाइते जिब राखि। आसा बान्ध पळल मन साखि।।5।।
भनइ विधापति सुन सजनी। बालभु सङ्ग महधि रजनी।।6।।

1. दिस। 2. कत दुर। 3. कओने सखि। 4. कति खन धरब जाइते जिब राखि।

राधा विरहोत्तर मिलनक उल्लास सखीकें सुनबैत छथि — (1) आइ दसो दिशासँ अन्धकार पड़ाए गेल। आइ दीर्घ (पैघ) भए दिन बढ़ल (जलदी बीति नहि रहल अछि जे रातिमे रंगरभस हो)। आइ घरक लोकक

कहब अकथ्य भेल (?)। आर्ति (उत्सुकता) जगैत छैक तँ उचित व्यवस्था नहि रहि पबैत छैक। (3) हे सखी, सुदिन आएल। पिआ लग आएल। आँखिसँ आँखि मिलल। (4) एतेक दिन विरहसँ जरैत मन कतए-कतए ने दौड़ैत छल। आइ माङल मनोरथ पाबि गेलहुँ (कृष्ण आबि गेलाह)। (5) बहुत दिन धरि जाइत प्राणकें रोकने रहलहुँ। प्राण आशाक बन्धनमे छेकल रहल। मने तकर साक्षी अछि। (6) विद्यापति कहैत छथि, हे सुन्दरी, सुनह। पिआक संग बाला राति बड़ दुर्लभ होइत अछि।

[500]

मोरा रे अंगना चान्दन घन' गछिआ ताहि चढ़ि कुचरए काग रे।
[कह कह आरे कागा पहुक सन्देसा कबे मोरा बहुरत भाग रे]।।1।।
सोने चोंच बन्धाए देब मञे बाअस आजे पिआ जञो पाओं रे²।
गाबह गाबह सहलोलिनि³ झूमरि मअन अराधए जाञो रे।।2।।
चउदिस चम्पा मउलि फुलाइलि⁴ चान्द उजोरिअ राति रे।
कइसे कए मञे मअन⁵ अराधबों होइति मोहि बड़ि⁶ साति रे।।3।।
विद्यापति कवि गाबिआ झूमरि पहु अछ गुनक निधान रे।
राउ भोगिसर गुन आगर नागर⁶ पदुमादेवि रमान रे।।4।।

1. मोराहि रे अँगना चाँदन केरि। [ ] अनुमित पाठ। 2. चञ्चु बँधए देब मोए बाअस जञो पिआ आओत आज रे। 3. सहि लोरि। 4. फुलिलि। 5. कए मअन। होइति बड़ि रति। 6. गुन नागरा।

राधा पिआक आगमनक प्रतीक्षामे उल्लास व्यक्त करैत छथि — (1) हमरा आङनमे चाननक झमटगर गाछ अछि। ताहिपर चढ़ि कौआ कुचरैत अछि। कह, कह रे कौआ, हमर पहुक समाद, कखन हमर भाग पलटत? जँ आइ हम पिआकें पाएब तँ तोहर चोंच सोनसँ मढ़ाए देबौक। (2) हे सखीलोकनि, झूमरि गाबह आ' चलह मदनक पूजा करए। (3) चारु दिस चम्पा आ' भालसिरीक फूल फुलाएल अछि। राति चानसँ

चकमक अछि। हम कोना मदनक पूजा करब? हमरा तँ बड़ सजाए भेटत। (4) विद्यापति झूमरि गबैत छथि, तोहर पहु गुणवान्, विचारवान् छहु, (अएबे करतहु)। एकर रस जननिहार थिकाह पदुमादेवीक पति राए भोगीसर।

[501]

सुरभि समय भल चल मलआनिल साहर सउरभ सार लो।
काहुक बिपद होअ[1] काहुक सम्पद नाना गति संसार लो।।1।।
कोइली X X X X X लो।
पञ्चम रागे रमन गुन सुमरब[2] कुसल आओत मोर नाह लो।।2।।
आज धरिए हमे आसहि अछलिहुँ सुमरि न छाड़ल[3] ठाम लो।।
भमर देखि भञ भागि पराइअ गहए सरासन काम लो।।3।।
X X X X X X X ।
भनइ विद्यापति रुपनराएन सिरि सिवसिंहदेव नाम लो।।4।।

1. बीपद। 2. सुमराञो। 3. छड़ल। 4. भञ भावे।

वसन्तमे विरहिणी राधा विलाप करैत छथि — (1) सुन्दर वसन्त ऋतु। मलय पवन बहैत। आमक सौरभ भरल। ई समय ककरो लेल आनन्दक थिक तँ ककरो लेल विषादक (संयुक्ता आनन्दमे, वियुक्ता विषादमे)। संसारमे भिन्न-भिन्न लोकक गति भिन्न-भिन्न होइत अछि। (2) हे कोकिल,...। तोहर पंचम राग सुनि पिआ हमर गुणक स्मरण करत आ' कुशलपूर्वक घर आओत। (3) आइ धरि हम आशामे रहलहुँ। पहुक स्मरण करैत ठाम नहि छाड़ल। (विरहावस्थामे) भ्रमरकेँ देखी तँ डरसँ पड़ाए जाइ। कामदेव धनुष-वाण लए उपस्थित होथि। (5) ....। विद्यापति कहैत छथि, एकर रस जननिहारक नाम थिक राजा शिवसिंह रूपनारायण।

[502]

जनम कृतारथ सुपुरुख सङ्ग। सेहे सुदिबस जञो नहि मन भङ्ग।।1।।
हृदअक आनन्दे सुख परगास। तरनि तेजेँ हो कमल बिकास।।2।।
भल भेल माइ हे कुदिबस गेल। नव[1] निधि मिलल सकल सिध भेल।।3।।
एक दिस मनिमय नवनिधि हेम। अओका दिस नवरस सुपुरख पेम।।4।।
निकुती तौलि कएल अनुमान। प्रीति अधिक थिक के नहि जान।।5।।
प्रीतिक सम हे दोसर नहि आन। जाहि तुलना दिअ अपन परान।।6।।
भनइ विद्यापति अनुपम रीति। दम्पतिकाँ हो अचल पिरीति।।7।।

1. हरि।

राधा पिआक मिलन जन्य उल्लास प्रकट करैत छथि — (1) जँ सुपुरुषसँ संग हो तँ जीवन सफल भए जाइत अछि आओर एहन संग बाला दिन सुदिन थिक जँ मनो- मालिन्य नहि हो। (2) जेना सूर्यक किरणसँ कमल विकसित होइत अछि तहिना प्रिय मिलनजन्य आनन्दसँ हृदय प्रफुल्लित होइत अछि। (3) हे सखी, अधलाह दिन (विरहकाल) बीति गेल। कृष्णरूपी निधि (खजाना) भेटल तँ मानू सभ मनोरथ सिद्ध भए गेल। (4) तराजूक एक पल्ला पर सोन, रत्न आदि नबो निधि राखल जाए आ' दोसर पल्ला पर सुपुरुख-प्रीति तँ प्रीतिहिक पल्ला भारी होएत से बात के नहि जनैत अछि। (6) प्रीतिक तुल्य दोसर आन किछु नहि। एकर तुलना केवल अपन प्राणसँ देल जाए सकैत अछि। (7) विद्यापति कहैत छथि, प्रीतिक ई अपूर्व परम्परा अछि। दम्पतिक (पति-पत्नीक) बीच प्रीति अचल रहओ।

[503]

अधर सुधा मिठि दूधेँ धवरि दिठि मधुसम मधुरिम बानी रे।
अति अरथित जे जतने न पाइअ सबे बिहि तोहि देल आनी रे।।1।।
जनु रूसह भाविनि भाव जनाई रे।
तुअ गुने लुबुधल सुपहु अधिक दिने पाहुन आएल मधाई रे।।2।।

जसु गुन झखइते झामरि भेलिहे रअनि गमओलह जागी रे।
से निधि विधि अनुरोधे मिलिलि तोहि कान्ह सम पिआ अनुरागी रे।।3।।
भनइ विद्यापति गुनमति मरखए[1] बालँभु के अपराधे रे।
राजा सिवसिंह रूपनराएन लखिमादेइ अराधे रे।।4।।

1. राखए।

सखी राधासँ कहैत छथि — (1) अमृत-सन मधुर अधर, दूध-सन उजर आँखि, मधु-सन मधुर बोल। अत्यन्त बेगरतू लोक जे यत्न कएलहु पर नहि पाबि सकैत अछि विधाता तोरा से सभ आनि देलथुन अछि (कथीक कमी छहु तोरा)। (2) एहना स्थितिमे तों असन्तोषक भाव देखाए प्रेमी कृष्णसँ रूसह नहि। ओ तोहर गुन पर लोभाए बहुत दिन पर पाहुन भए अएलथुन अछि। (3) जनिक गुणगणक ध्यान करैत तों विरहें झामरि भेलि जागि-जागिकें राति बितओलह से निधि (प्रेमी) अर्थात् कृष्ण-सन अनुरागी पिआ सौभाग्यवश प्राप्त भेलहु अछि। (4) विद्यापति कहैत छथि, गुनमन्ति (बुधिआरि) ललना अपन प्रेमीक अपराध सदा क्षमा करैत छथि। राजा शिवसिंह रूपनरायणक आराधना लखिमादेवी सदा करैत रहैत छथि।

[504]

जा लागि चान्दन बिखतह खर भेल चान्द अनल जा लागि रे।
जा लागि दखिन पवन भेल सायक मदन बैरि जा लागि रे।।1।।
से कान्ह कत दिने पाहुन आएल हँसि न निहारसि ताहि रे।
हृदअक हार हठहि टारह जनु पेम सुधा अवगाहि रे।।2।।
रोअइते नोरे अरुन[1] भेल लोचन रयनि जाम जुग गेल रे।
फूजल चिकुर चीर नहि चेतह[2] हार भार तनु भेल रे।।3।।
तप तोर तरुनत भेल[3] कान्ह आएल काञि बढ़ाबसि मान रे।
जेओ न अछल मन सेओ भेल सम्पन कवि विद्यापति भान रे।।4।।

1. आतुर। 2. चेतए। 3. तरुण करुने।

सखी राधाकें पहुक आगमन पर बधाइ आ' उपदेश दैत छनि — (1) जकरा लेल (जकर विरहमे) चानन बिखहुसँ अधिक तेज लगैत छलहु, चान आगि-सन, दक्षिण पवन बाण-सन आ' कामदेव वैरी-सन, (2) से कान्ह कतेक दिन पर आइ पाहुन भए आएल छथुन। धन्य छह तों जे ताहि कान्हकें (मानवश) हँसिकें निहारैत नहि छहुन। हृदयक हारकें बलहिं टारह नहि। प्रेमरूपी अमृतमे डूबह। (3) कनैत-कनैत नोरसँ आँखि लाल भए गेलहु। रातिक दू पहर बीति गेल। केस फूजल छहु। चीर सम्हरैत नहि छह। हार देहमे भार बुझाइत छहु। (4) तों अपन तपकें सफल करह। कान्ह आबि गेलथुन। एना मान किएक बढ़ओने छह। जेहो तों सोचने नहि छलह सेहो कामना सभ पूरा भेलहु। विद्यापति कवि ई रचल।

[505]

बएस कतए तेजिए गेला।
तोंह सेबइते जनम बहल तइअओ न अपन भेला।।1।।
सैसब दसा तोहें[1] खोअओलाहे मधुर माइक खीर।
दुइ सिरिफल छाँह सोअओलाहे जौवने[2] काँच सरीर।।2।।
दाँत झड़ि मुह थोथड़ भए गेल उड़ि[3] गेल सब दाप।
तीनिहु भुवन बइसल देखिअ कँचुअ आएल[4] साप।।3।।
आँखि मलामलि दुर न सूझए बन फुटि गेल कास[5]।
दुअओ अधर[6] धरि निरोधिअ तइअओ तरहि भास[7]।।4।।

1. चाहि। 2. कोमल। 3. झाड़ि। 4. जनि कचुमाएल। 5. कासी। 6. धराधर। 7. तर उपर उकासी।

कवि वार्धक्य पर नैराश्य प्रकट करैत छथि — (1) हे बएस, तों हमरा तेजि कतए पड़एलह? तोरहि सेबैत हमर जीवन बीतल, तैओ तों अपन नहि भेलह। (2) शैशव अवस्थामे तों माइक मधुर दूध पिअओलह। यौवनमे हमर काँच शरीरकें दू श्रीफल (बेलक गाछ) केर छायामे

सुतओलह। वार्धक्यमे आबि दाँत झड़ि गेल। मुह थोथड़ भए गेल। सभ दर्प (अभिमान) उड़ि गेल। आब केंचुआएल (जाड़क) साप जकाँ बैसले-बैसल तीनू भुवन देखि रहल छी (तन अचल, मन बौआइत)। आँखि झलफलाइत अछि, दूर नहि सुझैत अछि। केस पाकि गेल जेना वनमे कास फुलाएल हो। दूनू ठोरकें सम्हारैत छी, तैओ तरहि दिस भासल जाइत अछि।

(4) रागतरङ्गिणीक गीत

[506]

साँझक बेराँ जमुनाक तीराँ कदँबेरि बन तरु तराँ।।1।।
अकमि कानरा कि कहब समरा[1] सोझाहि जुझल सखि कुसुमसरा।।2।।
मोहि भेटल कान्हू, अनतए कहिनी कहह जनू।।3।।
उर चिर हरि करें कच धरि अधर पिबए मुख हेरी।।4।।
पुनु पुनु भोरा परस कुच मोरा निधने पाओल जनि कनअ कचोरा।।5।।
अरे रे जुबती बुझलि जुगुती दोसर मधुप[2] मधुपुर[3] पती।।6।।
तोरे अनुमाने विद्यापति भाने सिबसिंह लखिमादेइ रमाने।।7।।

1. काला। 2. मधुकर। 3. मधुरपती।

राधा कृष्णसँ आकस्मिक मिलनक कथा सखीसँ कहैत छथि — (1) हे सखी, साँझ खन यमुनाक कातमे कदम्ब-वनमे गाछतर (2) अकस्मात् कान्ह भेटल। तखनुक हाल की कहबहु। जेना साक्षात् कामदेवसँ युद्ध भए गेल। (3) हमरा कान्हसँ भेट भेल। ई कथा अनका नहि कहिहह। (4) कान्ह छाती परसँ चीर हटाए देलक। हाथसँ केस पकडि हमर मुह देखि-देखि अधरपान कएलक। (5) ओ भोर भए (सुधि-बुधि गमाए) बेरि-बेरि स्तन छूबए लागल, जेना निर्धन व्यक्ति सोनाक कटोरा पाबि गेल हो। (6) विद्यापति कहैत छथि, हे युवती, तोहर जुगुति (गोपनक प्रयास) हम बूझि गेलहुँ। मधुपुर (मथुरा)क स्वामी कृष्ण दोसर (मानवरूपी) मधुप थिकाह (ओ तोहर अधरमधु पीबे करताह)। हमरा तँ लगैत अछि जे कृष्ण आन नहि, लखिमा देवीक पति राजा शिवसिंह सेह थिकाह।

[507]

ससन परस खसु अम्बर रे देखल धनि देह।
नब जलधर तरें चमकए रे जनि बीजुरि रेह।।1।।
आजे देखलि धनि जाइतें रे मोहि उपजल रङ्ग।
कनकलता जनि सञ्चर रे महि नीरद सङ्ग[1]।।2।।

ता पुनु अपरुब देखल रे कुचजुग अरबिन्द।
बिगसित बिनु[1] किछु कारन रे सोझाँ मुखचन्द।।3।।
विद्यापति कबि गाओल रे बूझए रसमन्त।
देवसिंह नृपनागर रे हाँसिनि देवि कन्त।।4।।

1. निर अबलम्ब। 2. नहि।

कृष्ण राधाक रूपवर्णन मित्रकें सुनबैत छथि — (1) बसात लगलासँ आँचर खसि पड़लैक। हम राधाक देह देखल, जेना नव मेघक तर बिजुलीक रेखा हो (चीर श्यामवर्ण, देह गौरवर्ण)। (2) आइ राधाकें जाइत देखल तँ हमरा आभास भेल जेना मेघक संग सोनाक लता धरती पर बुलैत हो। (3) एक आओर अद्भुत बात देखल जे बिनु कारणहि (असमयहिमे) आ' सोझाँमे मुखरूपी चानक अछैत स्तनरूपी कमल विकसित अछि। (4) विद्यापति कवि ई गीत रचल। एकर रस बुझैत छथि हाँसिनि देवीक पति रसिक नागर राजा देवसिंह।

[508]

नन्दक नन्दन कदँबेरि तरुतरँ धिरे धिरे मुरलि बजाव।
समअँ सङ्केत निकेतन बैसल बेरि बेरि बोलि पठाव।।1।।
सामरि तोरा लागि अनुखने बिकल मुरारि।
गोरस बिकिनए[1] अबइते जाइते जनि जनि पुछ बनबारि।।2।।
जमुनाक तिरँ उपबन उदबेगल फिरि फिरि ततहि निहार[2]।
X X X X X X ।।3।।
तोहें मतिमन्ति[3] सुमति मधुसूदन बचन सुनह किछु मोरा।
भनइ विद्यापति सुन बर जौबति बन्दह नन्दकिसोरा।।4।।

1. बिके निकें। 2.निहारि। 3. मतिमान।

राधाकें सखी कहैत छथिन—(1) नन्दक बेटा कृष्ण कदम्बक गाछतर मन्द-मन्द स्वरें (बेसी लोक सुनए नहि तें) मुरली बजबैत छथि। ओ

निर्धारित समयमे संकेत स्थलमे बैसल छथि आ' बेरि-बेरि तोरा (वंशीक संकेतसँ) बजबैत छथुन। (2) हे सुन्दरी, तोहरा लेल मुरारि सतत विकल रहैत छथि। ओ गोरस बेचए अबैत-जाइत प्रत्येक गोपीसँ तोहर खोजपुछारी करैत रहैत छथि। (3) कृष्ण यमुनाक कातमे उपवनमे उद्वेगमग्न भेल बेरि-बेरि ओही बाटकें निहारैत छथि जाहि बाहें X X X X। (4) विद्यापति कहैत छथि। हे सुन्दरी, हमर बात सुनह। तों बुधिआरि छह आ' कृष्ण सेहो बुधिआर छथि। चतुरतापूर्वक नन्द किशोरक भजन करैत रहह।

[509]

मान परिहर हे करु वचन मोरा। मार मनोभव है धरु सरन तोरा।।1।।
न कर न कर हे मोहि विमुख आजे। पुरुबक पुने[1] हे पुनु भेल समाजे।।2।।
कमल बदनि हे करु आकम दाने। बिनअे कै नहि हे जग तेजए माने।।3।।
[विद्यापति कवि हे भन रसिक धीरे। राजा सिबसिंह हे वर भूपति बीरे]।।4।।

1. अपरुब पेमे। [ ] नगु.सँ।

कृष्ण मानिनी राधाकें मनबैत छथि — (1) हे सुन्दरी, मान छाड़ह। हमर बात मानि जाह। कामदेव हमरा सतबैत छथि, तें तोहर शरण धएल। (2) आइ हमरा विमुख (निराश) नहि करह। पूर्वक पुण्यसँ आइ पुनर्मिलन भेल अछि। (3) हे कमलवदनी, आलिंगन-दान देह। विनय (नेहोरा) कएने के नहि मान छाड़ैत अछि। (4) विद्यापति कवि कहैत छथि, एकर रस जनैत छथि रसिक धीर वीर राजा शिवसिंह।

[510]

कुसुम बान बिलास कानन केस सीन्दुर रेह।
निविळ नीरद उपर[1] दरसए अरुन जनि निज देह।.1।।
आजे लखु[2] गजराज गति बरजुबति त्रिभुवन सार।
जनि कामदेवक बिजयबल्ली बिहलि बिहि संसार।।2।।
सरद ससिधर सरिस सुन्दर बदन लोचन लोल।

विमल कञ्चन कमल चढ़ि जनि खेल खञ्जन जोळ।।3।।
अधर नव पल्लव मनोहर दसन दाळिम जोति।
जनि निबिळ विद्रुमदलें सुधारसें सींचि धरु गजमोति।।4।।
मत्त कोकिल बेनु बीना नाद तिहु जनु[3] भास।
जनि मधुर हास पसारि[4] आनन करए वचन विलास।।5।।
अमर भूधर सम पयोधर महघ मोतिम हार।
हैम निर्मित शम्भु शेखर गङ्ग निरमल धार।।6।।
कमल कोमल कर सुशोभन जङ्घ जुग आरम्भ।
जनि मदन मल्ल बेआम कारने गढ़ल हाटक थम्भ।।7।।
सुकवि एहु कण्ठहार गाओल रूप सकल सरूप।
देवि लखिमा कन्त जानए सिरि सिबए सिंह भूप।।8।।

1. रुचिर। 2. देखु। 3. तिहअन। 4. हाक पसाहि।

कवि नायिकाक रूपक वर्णन करैत छथि --- (1) कामदेवक विलासक उपवनरूपी केसमे सिन्दूरक रेखा लगैछ जेना घन मेघक उपर अरुणदेव अपन देह देखबैत होथि। (2) आइ गजगामिनी त्रिभुवनसुन्दरी युवतीकें देखल तँ लागल जेना ब्रह्मा कामदेवक विश्वविजयक ध्वजा बनओने होथि। (3) शरद चन्द्र सदृश आनन आओर चंचल लोचन देखि लागल जेना निर्मल सोनाक कमल पर चढ़ि एक जोड़ा खंजन क्रीड़ा करैत हो। (4) अधर नव पल्लव सन सुन्दर छैक आ' दाँत दाड़िमक दाना जकाँ चमकैत छैक, जेना ठोस मूँगाक पात पर गजमुक्ता अमृतसँ सींचि बैसाओल हो। (5) (ओकर बोलमे) जेना जेना मत्त कोकिल, वंशी आ' वीणा तीनूक आभास हो, ओकर मुह जेना मधुर हास पसारि वचन-विलास करैत हो। (6) ओकर सुमेरु सन स्तन परक मूल्यवान् मोतिक हार लगैछ जेना स्वर्ण निर्मित शिवक माथ पर गंगाक निर्मल धार बहैत हो। (7) ओकर कमल-सन कोमल हाथ आ' दूनू जाँघ लगैछ जेना कामदेवरूपी पहलमानक कसरत हेतु सोनाक स्तम्भ बनाओल गेल हो। (8) एहि

युवतीक सकल रूपक यथार्थ वर्णन कएलनि सुकवि कण्ठहार। एकर रसक ज्ञाता छथि लखिमा देवीक पति राजा शिवसिंह।

[511]

जनि हुतवह हबि[1] आनि मेराओल ता सम भेल विकार।
दुअओ नयन तोर बिखम मदनसर सालए हृदअ हमार।।1।।
हरि-हरि, कॉलागि सुमुखि पलटि हँसि[2] हेरलह जीबन पळल सन्देह।
XX X X X X X ।।2।।
पीन पयोधर अपरुब सुन्दर ता पर[3] मोतिम हार।
जनि कनकाचल उपर विमलजल दुइ वह सुरसरि धार।।3।।
भनइ विद्यापति सुन बरनागर सबहु होएत परकार।
राजा सिवसिंह रुपनराएन[4] लखिमा देवि उदार।।4।।

1. हरि। 2. बिहुँसि हँसि। 3. अपर। 4. गाओलएन।

कृष्ण राधासँ कहैत छथि — (1) हे राधा, तों हमरा दिस तकलह तँ हमर मन ओहिना धधकि उठल जेना आगिमे घी ढारलासँ। तोहर दूनू नयन मने कामदेवक तीक्ष्ण बाण थिक; ओ हमरा हृदयमे भोंकाए गेल। (2) हाए, हे सुन्दरि, मुसकी दैत पलटिकें हमरा दिस तकलह किएक? हमर तँ प्राणे संकटमे पड़ि गेल।.. । (3) तोहर अपूर्व सुन्दर सुपुष्ट स्तनक उपर जे मोतिक हार छहु से लगैत अछि जेना स्वर्ण पर्वत पर निर्मल जल बाली गंगाक दुइ धारा बहैत हो। (4) विद्यापति कहैत छथि, हे कान्ह, सुनह। सभ संकटक समाधान भए जएतहु। राजा शिवसिंह आ' लखिमादेवी उदार छथि।

[512]

उधसल केस कुसुम छिरिआएल दसने खण्डित भेल[1] अधरे।
नयन देखिअ जनि अरुन कमलदल मधुलोभे बैसल भमरे।।1।।
कलाबति कैतब न करह आज।
कओन नागर सङ्ग रयनि गमओलह कह मोहि परिहरि लाज।।2।।

पीन पयोधर नखरेख सुन्दर करें झाँपह[2] कों गोरि।
मेरु सिखरें ऊगल नब[3] ससधर गुपुति न रहलिए चोरि।।3।।
बेकतेओ चोरि गुपुति रह कउसले[4] विद्यापति कवि भान।
मलहम जुगपति चिरें जिबें जीवथु ग्यासदीन सुरतान।।4।।

1. खण्डित दशन। 2. बाँधह। 3. नब उगि गेल। 4. गुपुत कर कतिखन।

गुप्त संगमकें छिपएबाक चेष्टा करैत राधाकें सखी कहैत छनि — (1) तोहर केस उधेसल छहु। खोपाक फूल छिड़िआएल छहु। अधर पर दन्तक्षत छहु। आँखि लगैत छहु जेना भँओरा मधुक लोभें लाल कमलक दल (पत्ती) पर बैसल हो। (2) हे बुधिआरि, आइ लाथ नहि करह। लाज छाड़ि हमरा कहह जे आइ कोन रसिकक संग राति बितओलह। (3) पुष्ट स्तन पर जे नखक्षत (नछोर) छहु तकरा हाथसँ झँपैत किएक छह? सुमेरु पर्वतक शिखर पर (उच्च स्तन पर) द्वितीयाक चान (नखरेख) उगि गेल (इजोत भए गेल; एहि इजोतसँ तोहर) चोरि देखार भए गेलहु, गुप्त नहि रहलहु। विद्यापति कहैत छथि, व्यक्तो चोरि कौशलसँ छिपाओल जाए सकैत अछि। मलहमजुगक पति सुलतान गयासुद्दीन चिरजीवी होथु।

[513]

माघ मास सिरपञ्चमि गँजाइलि नओम मास हलु आई[1]।
अति घन पीड़ा दुख बड़ पाओल बनसपती भेलि धाई[2]।।1।।
सुभ खन बेरा सुकुल पक्ख है दिनकर उदए[3] समाई।
सोलह कला बतिस लक्खन जुत[4] जनम लेल रितुराई।।2।।
नाचए जौबतिगन हरखित मन[5] जनमल बाल मधाई।
मधुर महारस मङ्गल गाबए मानिनि मान उड़ाई।।3।।
बह मलयानिल ओत उचित है घनयन भउ[6] उजिआरा।
भल माधबिफुल[7] गजमुकतातुल तें देल बन्दनवारा।।4।।
पीअरि पाँडरि महुअरि गाबए काहरकार धुतूरा।
नागेसर कलि सङ्खधुनि पूरलि तगर[8] ताल समतूरा।।5।।

मधु लए मधुकरे बालक दए हलु कमल पङ्खुरिआ लाई[9]।
पौत्रनाल तोरि कटिसुत बान्धल केसु कइलि बघनाही।।6।।
नब नब पल्लब सेज ओछाओल सिर दहु कदँबेरि माला।
बैसलि भमरी हरउद गाबए चक्को[10] चान्द निहारा।।7।।
कनककेआ सुतिपत्र लिखिए हलु रासि नखत कए मेरा[11]।
कोकिल गनित गुनित भल जानए रितु बसन्त नाम देला[12]।।8।।
दखिन पबन घन आङ्ग उगारए कुबलय कुसुम परागे।
सुललित हार माँजरि घन काजर आँखि त आञ्जन लागे।।9।।
बाल बसन्त तरुन भए धाओल बेढ़ए सकल संसारा।
X X X X X X ।।10।।
नब बसन्त रितु अनुसर जौबति बिद्यापति कबि गाबे[13]।।
राजा सिबसिंह रूपनराएन सकल कला मन भाबे[14]।।11।।

1. नबए माँस पञ्चम हरुआइ। 2. कै बधाइ है। 3. उदित। 4. सोलह सँपुने बत्तिल लखने। 5. जुबतिजन हरखित। 6. वन घन। 7. मालति फूल भल। 8. पुर तकर। 9. झुलाइ। 10. हर उदगारए चक्का चन्द। 11. लोला। 12. थोएला। 13. गाया। 14. भाया।

टि. — गँजाएब थिक पूर्णगर्भा/आसन्नप्रसवा होएब, मैथिलीमे लदबदाएब कहबैक। ई शब्द एही अर्थमे असमिआमे एखनहु चलैत अछि।

कवि जन्मोत्सवक रूपमे वसन्तक वर्णन करैत छथि — (1) सीरपंचमी (वसन्त-पञ्चमी) माघ मासमे गँजाइलि (गर्भसँ लदबदाइलि, पूर्णगर्भा भेलि)। जखन नओम मास भेलैक तखन प्रसव-वेदना प्रबल भेलैक। वनस्पति नर्स भेलैक। (2) माघ शुक्ल प्रतिपत् दिन सूर्योदयक समय शुभ समयमे सोलह कला आ' बतीस लक्षणसँ युक्त ऋतुराज वसन्त जन्म लेल। (3) युवती सभ हर्षित मनें नाचए लागलि -- माधब होरिला जनमल है। मानिनी लोकनि अपन मान त्यागि-त्यागि मधुर आ' सरस स्वरमे मंगलगीत सोहर गाबए लगलीह। (4) मलय पवन बहैत छल।

ओत (अओढ़) करब उचित छल, से काज घनगर वन कएलक (उजिआरा शब्द शंकास्पद)। गजमुक्ता-सन माधवी फूल बन्दनबार (मेहराब) भेल। (5) पीतवर्णक पाँड़रि (जकर फूल मधुकरी नामक बाजा-सन होइत अछि) महुअरि बजाए गाबए लागलि। धुथूर फूल काहर नामक बाजा बजओनिहार छल। नागेसर फूल शंख बजओलक। तगर फूल झालि पर ताल देलक। (6) मधुकर (भ्रमर) कमलक पँखुरीमे लए नेनाकें मधु चटओलक। कमलक नाल तोड़ि डँड़ाडोरि बान्हल गेल। पलासक फूल बघनखी भेल। (7) नव पल्लवक सेज ओछाओल गेल। नेनाक माथक उपर कदम्बक माला लटकाओल गेल। भमरी सभ हरउद (सोहर) गाबए बैसलि। नेना चानरूपी 'आको माइ चाको' (दीप) निहारलक। (8) कनककेतकी फूल पर राशि-नक्षत्र मिलाए जन्मपत्री (कुण्डली) लिखल गेल। कोकिल, जे नीक गणितज्ञ (जोतखी) अछि, नेनाक नाम 'वसन्त' राखल। (9) मलयपवन कमलक पराग लए ओकर देह उडारलक। मञ्जरी सुललित हार पहिरओलक। मेघ आँखिमे काजर कएलक। (10) वसन्त शिशुसँ बाल, आ' ताहिसँ तरुण भए सकल संसारकें छेकए निकललाह। (11) विद्यापति कहैत छथि, हे युवतीलोकनि, नव वसन्तक अनुसरण करह (हुनक आज्ञा) मानह। राजा शिवसिंह रूपनारायणकें सभ कलामे रुचि छनि।

[514]

बिकट जटाचय किछु न लोक भय उर फनिपति दिग बास।।1।।
कञोन पथ भेटताह आगे माइ जाइते उमत हमार।।2।।
त्रिपुर दहन करु छारे छाल भरु बसह चढ़ल वर बूढ़।।3।।
तीनि नयन हर एक अनल बर सिर सुरसरि जलधार।।4।।
भनइ विद्यापति गोरि विकलमति ओहि उगनाक उदेस।।5।।

माथमे विकट जटाजूट छनि। लोक निन्दा करत तकर कनेको डर नहि छनि। छातीमे साप लपेटने छथि। वस्त्रहीन नाङट बुलैत रहैत छथि।

(2) हमर एहन उन्मत्त (बौराह) पिआ कोन बाटें जाइत भेटताह? ओ त्रिपुर नगरकें डाहि तकर छाउर अपन छाल (त्वचा) मे भरने (लेपने) छथि। बएसें बूढ़ आ' बसहा पर चढ़ल छथि। (4) हरकें तीन टा आँखि छनि। एक आँखिमे आगि बरैत अछि। माथ पर गंगाक जलधारा छनि। (5) विद्यापति कहैत छथि, ओहि उगनाक खोजमे गौरीक मन विकल छनि।

टि. — कतहु अन्त्यानुप्रास नहि। लगैत अछि जेना प्रत्येक खण्डक एक-एक चरण लुप्त भए गेल हो।

[515]

जदि तोरा नहि खन नहि अबकास। पर रमनी[1] कयँ देल बिसबास।।1।।
बिसबास दए कयँ सुतह निचीत। चारि पहर राति भम तसु चीत।।2।।
कर जोरि पैञा पळि कहबि बिनती। बिसरि न हलबिअ पुरुब पिरिती।।3।।
प्रथम पहर राति रभसें बहला। दोसर पहर परिजन नीन्द गेला।।4।।
नीन्द निरुपइते भेलि अधराति। तखने उगल चन्दा परम कुजाति।।5।।
भनइ विद्यापति तखनुक भाब। जे पुनमत जन से पए पाब[2]।।6।।

1. परकें जतने। 2. जेहे पुनमत सेहे जनपए परब।

राधा सखीक मुहें कृष्णकें समाद पठबैत छथि — (1) जँ तोरा फुरसति नहि छलहु, आकि अनुकूल अवसर नहि छलहु तँ पर-रमणी राधाकें विश्वास (वचन) किएक देलहुन? (2) विश्वास दए तों तँ निश्चिन्त भए सूति रहलह, किन्तु ओकर मन राति चारू पहर औनाइत रहलैक। (राधा हमरासँ अनुरोध कएलक, हे सखी) (3) तों कर जोड़ि पैञा पड़ि हमर बिनती हुनका कहिहुन, "हे कान्ह, पूर्वक प्रेम बिसरि नहि जाह। (हम जे संकेत स्थल नहि पहुँचि सकलहुँ से क्षमा करह। कारण सुनह)। (4) रातिक पहिल पहर घरक गपसबमे बीति गेल। दोसर पहर परिजनक नीन पड़बाक प्रतीक्षामे चल गेल। (5) प्रतीक्षा करैत-करैत आधा राति बीति

गेल आकि तखनहि महादुष्ट चान उगि आएल।" (6) विद्यापति कहैत छथि, एहि कालक भावक अनुभव पुण्यवाने पाबि सकैत अछि।

[516]

कुण्डल तिलक बिराज मुख सोभित सीन्दुर बिन्दु।
हैमलतों बिहि रचल जनि[1] कवि रवि तारा इन्दु।।1।।
इन्दु बदनि धनि नयन बिसाला।
कमल कलित जनि मधुकर माला।।2।।
देखलि कलावति अपरुब रमनी।
जिनए आइलि सुरपुर गजगमनी।।3।।
बेनी बिमल बिराज तसु लस[2] कुसुमावलि हार।
स्याम भुजङ्गाम देखि कहु किओ काम परहार।।4।।
करु परहार मदन सर बाला।
कुटिल कटाख बान कनिआरा।।5।।
कम्बु कण्ठ पत्रुनार[3] भुज वलित पयोधर भार।
कनक कलस रसें पूरि रहु सञ्चित मदन भण्डार।।6।।
मदन भण्डार पयोधर गोरा।
जनि उनटाओल कनअ कचोरा।।7।।
स्यामा सुलोचनि सुरति रति अपरुब भूखन भार।
विद्यापति कविराज कह सुफलें करथु अभिसार।।8।।
करु अभिसार मदन सर बाला।
कुटिल कटाख बान कनिआरा।।9।।

1. हैमलता मे समारु बिहि। 2. रस। 3. मृणाल।

कवि नायिकाक रूपक वर्णन करैत छथि — (1) नायिकाक मुख कुण्डल, तिलक आ' सिन्दूर-बिन्दुसँ शोभित अछि, जनु विधाता सोनाक लता (नायिकाक देह) कें शुक्र (कुण्डल), सूर्य (सिन्दूर बिन्दु), तारा (तिलक) तथा चान (मुख)सँ सजओलनि। (2) सुन्दरीक पैघ-पैघ आँखि

लगैछ जेना कमल (मुख) पर दुइ भमरा बैसल हो। (3) आइ ओहि अपूर्व कलावती रमणीकें देखल तँ लागल जेना ओ गजगामिनी स्वर्ग जीतए आइलि हो। (4) ओकर सुन्दर वेणीमे फूलक हार शोभित अछि, से लगैछ जेना कृष्ण सर्प (वेणी) कें देखि कामदेव फूलक बाण छोड़ने होथि। (5) सुन्दरी कामबाण चलबैत अछि, ओकर कुटिल कटाक्षे नोकदार बाण थिक। (6) ओकर कण्ठ शंख-सन छैक, बाँहि कमलक डाँट-सन आ' स्तन पुष्ट तथा गोल, से लगैछ जेना सोनाक कलस रससँ भरि मदन-भण्डार मे जमा कएल हो। (7) गोल-गोल स्तन लगैछ जेना सोनाक कटोरा कामदेवक भण्डारमे उनटाएकें राखल हो (8) विद्यापति कविराज कहैत छथि, अपूर्व भूषण सभसँ सुशोभित, संगममे रति (कामक स्त्री) क सदृश श्यामाङ्गी सफलतापूर्वक अभिसार करथु। (9) सुन्दरी अभिसार करैत छथि, जनिक कुटिल कटाक्ष तेज मदन-सर थिक।

[517]

गमन दिबस सओ तिथि[1] लेखि लेखी। परतह भीति भरिए गेलि रेखी।।1।।
सेहे रे मेटिए मेटि ऊन पुराबे[2]। बदन सिंचए सखि जल लए आबे।।2।।
कि होइति अरे कान्हु[3] कमलमुखी। जतने जिआउलि[4] सबहु सखी।।3।।
अबुझ सखीजन न बुझए आधी। आन औखध कर आन बेआधी।।4।।
काहुकाँ नलिनिदल काहु काँ चान्दने। केओ बोल आएल नन्द नन्दने।।5।।
मधुकर धुनि सुनि केओ[5] मुँद काने। करतल तालें कोकिल खेद आने।।6।।
सरस[6] पओनारि हृदय हलु थोइ। चान्द किरन केओ करे धरु[7] गोइ।।7।।

1. दिन। 2. बुझाबे। 3. अगे सखि। 4. जिआबह। 5. सबे। 6. सितल। 7. राखए।

सखी कृष्णकें राधाक विरहदशा सुनबैत छथि — (1) हे कान्ह, जहिआ तों गेलह ताहि दिनसँ राधा अपन देबालमे विरह-दिबस टिपैत गेलि। प्रतिदिन लिखैत-लिखैत रेखा (टिप्पी) सँ देबाल भरि गेलैक। (2)

तखन ओकरा मेटाए शेष विरह-दिवस पुराए रहलि अछि। (विरहज्वाला शान्त करक उद्देश्यसँ) मुह सिंचबाक हेतु सखी पानि अनैत अछि। (3) हे कान्ह, सुन्दरी राधाक की हाल होएतैक (से सोचह)। सखी सभ कतेक यत्न कए एखन धरि ओकरा जिअओने अछि। (4) बुद्धिहीन सखी सभ बूझि नहि रहलि अछि जे राधाकें कोन रोग छैक। रोग किछु छैक आ' उपचार किछु आने कए रहलि अछि। (5) ककरो हाथमे पुरैनिक पात छैक तँ ककरो हाथमे चानन। केओ (कानमे) कहैत छैक, कान्ह अएलाह। (6) केओ भ्रमर-झंकार सुनैत अछि तँ राधाक कान मूनि दैत अछि। केओ थोपड़ी बजाए कोइलीकें बैलबैत अछि। (7) केओ टटका कमल-नाल ओकरा हृदय पर रखैत अछि तँ केओ चन्द्र-किरणकें हाथसँ छिपबैत अछि।

[518]

कालि कहल पिआञे साँझहि रे जाएब मोञे मारुअ देस।
मोञे अभागलि नहि जानल रे सङ्गहि जइतहुँ सेहे देस।।1।।
मोर हृदय बड़ दारुन रे पिआ बिनु बिहरि न जाए।।
X X X X X X ।।2।।
एकहि सयन सखि सूतल रे अछल बालभु निसि मोर।
जानल नहि' कबे तेजि गेल रे बिछुरल चकेबा जोर।।3।।
सून सेज हिअ सालए रे पिआञे बिनु मरब मोञे आजि।
बिनति करञो सहिलोलिनि रे मोहि देहे अगिहर साजि।।4।।
विद्यापति कबि गाओल रे आए मिलत पिआ तोर।
लखिमा देइ वर नागर रे राए सिबसिंह नहि भोर।।5।।

1. न जानल।

विरहिणी राधा विलाप करैत छथि— (1) पिआ काल्हि कहलनि, 'हम मारुअ (?) देश जाएब।' ओ कखन गेलाह से हम अभागलि नहि

जनलहुँ। जँ जनितहुँ तँ हमहू हुनका संग लागि जइतहुँ। (2) हमर हृदय बड़ दारुण अछि, प्रियतमक वियोग भेलहु पर फटैत नहि अछि। .... । (3) हे सखी, राति हमर पहु एके पलंग पर सूतल रहथि। जानि नहि पाओल जे कखन तेजि गेलाह। चकेबाक जोड़ा बिछुरि गेल। (4) सून सेज हिआ सालैत अछि। आइ हम पिआक वियोगमे प्राण त्यागि देब। हे सखी, तोरासँ नेहोरा करैत छिअहु, हमरा लेल अगिहर (चिता) साजि देह। (5) विद्यापति कहैत छथि, तोहर प्रियतम अओथुन। फेर मिलन होएतहु। लखिमा देवीक वर नागर (रसिक पिआ) राजा शिवसिंह मतिशून्य (भोर) नहि छथि।

[519]

आजे पुनिम तिथि जानि मञे अइलिहुँ उचित तोहर अभिसार।
देह जोति ससि किरन समाइति के बिभिना बए पार।।1।।
सुन्दरि अपनेहु हलह बिचारि'।
[आँखि पसारि जगत हमे देखल के जग तुअ सम नारि]।।2।।
तोहें जनु तिमिर हीत कए मानह आनन तोर तिमिरारि।
सहज विरोध दूर परिहरि धनि² चलह जतए बनमारि।।3।।
दूतिक वचन हीत कए मानल चालक भेल पञ्चबान।
हरि अभिसार चललि बर कामिनि विद्यापति कबि भान।।4।।

1. हृदयँ बिचार। 2. परिहर बनि। 3. चल उठि जतए मुरारि। [ ] नगु. सँ।

सखी राधाकें अभिसार हेतु प्रेरित करैत अछि — (1) आइ पूर्णिमा थिक से जानि हम आइलि छी। आइ तोहर अभिसार होएबाक चाही। देहक जोति चानक किरणमे लीन भए जाएत; तकरा केओ फुटाएकें देखए नहि पाओत। (2) हे सुन्दरी, तों अपनहु बिचारिकें देखह। हम आँखि पसारि संसार भरि तकलहुँ; तोहर-सन सुन्दरी स्त्री कतहु नहि भेटल। (3) तों अन्धकारकें अभिसार हेतु अनुकूल नहि बूझह, किएक तँ तोहर (चान-सन)

मुह अन्धकारक शत्रु थिक। हे धनि, किछु अनबन होएब सहज स्वाभाविक थिक; तकरा बिसरिकें चलह, जतए कृष्ण छथि। (4) विद्यापति कहैत छथि, दूतीक ई बात राधा हितकर बुझलनि, कामदेव चालक भेलाह आ' सुन्दरी कृष्णसँ मिलए चलि पड़लीह।

[520]

रोपलह पहु लहु लतिका आनि। परतह जतनें पटओलह[1] पानि।।1।।
तें अचिरहिं[2] उपचित भेलि से। तोहें बिसरलि भल बोलत के।।2।।
माधब बुझल तोहर अनुरोध। हेरितहु कएलह नयन निरोध।।3।।
एकहु भवन बसि दरसन बाध। किछु न बुझिअ पहु की अपराध।।4।।
सुपुरुख बचन सबहु बिधि फूर। अमरखे बिमरख न करिअ दूर।।5।।
भनइ विद्यापति एहु रस जान। सिबसिंह लखिमा देइ रमान।।6।।

1. पटबितह। 2. अरथिते।

राधा कृष्णसँ सिकाइत करैत छथि — (1) हे पहु, तों (प्रेमरूपी) लता आनिकें रोपलह। प्रत्यह (प्रति दिन) यत्नपूर्वक पानि दए-दए पटओलह। (2) तकरे फलस्वरूप ओ लता शीघ्रे बढ़ि गेल। तकरहि तों जे बिसरि गेलह तकरा के नीक कहतहु। (3) हे कान्ह, तोहर अनुरोध (विवेक) आब बूझि गेलहुँ। आब हम तोरा दिस तकितहुँ छी तँ तों अपन नजरिकें रोकि (समेटि) लैत छह। (4) एको घरमे रहैत दर्शनहुमे बाधा। हमर कोन अपराध जे तों एना करैत छह?' जानि नहि तकर की कारण। (5) भद्र लोकक वचन सर्वथा सत्य होइत अछि। क्रोधवश विवेक दूर नहि करक चाही। (6) विद्यापति कहैत छथि...।

[521]

गमने गमाउति[1] गरिमा अगमने जिबन सन्देह।
दिने दिने तसु[2] अबसन भेल हिम कमलिनि सम देह[3]।।1।।
अबहु न सुमिरह मधुरिपु कि करति सुन्दरि रामा[4]।

बिनु दोसे ताहि[5] बिसरलह कहिनी पए[6] रह ठामा।।2।।
एक दिस पेम[7] अओका दिस सुविदित बंस बिसाला।
दुहु पथ चढ़लि नितम्बिनि संसअ पडु कुलबाला।।3।।
पाञ्चबान अळिआतए धैरजे पग करु थीरे।
आञ्चर मुह दए कान्दए झाँखए नएन बह नीरे।।4।।

1. गमाउलि। 2. तनु। 3. नेह। 4. नाम। 5. मोहि। 6. कहिनि रहु। 7. कान्ह।

सखी कृष्णकें उपराग दैत छथि — (1) हे कान्ह, राधा जँ तोरा लग जाएत तँ कुलमर्यादा गमाओत। जँ नहि जाएत तँ जीवनमे सन्देह। दिन-दिन ओकर देह क्षीण भेल गेलैक अछि, जेना हिम ऋतुमे कमलिनी। (2) हे कान्ह, आबहुँ तों ओकर सुधि नहि लैत छह। ओ बेचारी सुन्दरी कोन उपाए करत? तों ओकरा बिनु दोखहि बिसरि देलह। एना कएने केवल बदनामी रहि जएतहु। (3) एक दिस प्रेम आ' दोसर दिस बड़ गोट विख्यात वंश। सुन्दरी दू बाट पर पएर देने ठाढ़ि अछि। संशयमे पड़लि अछि जे कोन बाट धएल जाए। (4) कामदेव आगु बढ़बैत छथिन। ओ धैर्य (दृढ़ता) पूर्वक अपन डेग स्थिर कएने अछि। आँचरसँ मुह झाँपि कनैत अछि, विलाप करैत अछि आ' नोर ढारैत अछि।

[522]

विदिता देवी विदिता हो... अविरल केस सोहन्ती।
एका एक सहस छवि[1] धारिनि जनि रंगा पुर नटी।।1।।
कज्जल रूप तुअ काली कहिअए उज्जल रूप तुअ बानी।
रविमण्डल तोहि चण्डी[2] कहिअए गङ्गा कहिअए पानी।।2।।
ब्रह्मा घर ब्रह्मानी कहिअए हर घर कहिअए गोरी।
नाराएन घर कमला कहिअए के जान उतपति तोरी।।3।।
विद्यापति कवियर एहो गाओल जाचक जन के गती।
हासिनि देइ पति गरुडनराएन देवसिंह नरपती।।4।।

1. को। 2. रविमण्डल परचण्डा।

कवि आदिशक्तिक स्तुति करैत छथि — (1) हे देवी, तों अव्यक्तरूपा छह से व्यक्तरूपा (विदिता) होअह। घन केस तोहर शोभा बढ़बैत अछि। एक होइतहुँ तों अनेक छवि (रूप) धारण करैत छह। ....(?)। (2) तोहर जे कारी रूप छहु से काली कहबैत अछि, उज्जर रूप वाणी (सरस्वती), सूर्य रूप चण्डी आ' जलरूप गंगा। (3) तों ब्रह्माक घरमे ब्रह्माणी कहबैत छह, महादेवक घरमे गौरी आ' विष्णुक घरमे कमला (लक्ष्मी)। तोहर उत्पत्ति के जनैत अछि (तों आदिशक्तिरूपा थिकह)। (4) एकर रचयिता थिकाह कविवर विद्यापति। हाँसिनि देवीक पति राजा देवसिंह गरुड़नारायण याचक लोकनिक आश्रय थिकाह।

[523]

तोरए ऐलिहुँ[1] फूल। मोती मानिक तूल।
साजलि[2] साजी अछोरसि मोरि। गरुबि गरुबि आरति तोरि।
दिठि देखइते दिबस चोरि।
एत कन्हाइ परधन लोभ। जे नहि लुबुध सेहे पए सोभ।।1।।
निकुञ्ज वन[3] समाज। एथि नहि मुख लाज।
ढाँकिबों नहि[4] अपजसरासि। से कर कान्हु जे नहि[5] लजासि।
जखने नागर नगर जासि।।2।।
पीन पयोधर भार। मदन राए भण्डार।
रतने जड़िलो ताहेरि[6] माथ। मलिन होएत न देह हाथ।
बड रे कठिन हमर नाथ।।3।।
कवि भन कण्ठहार। रस एड़ए के पार।
सिरि सिबसिंह जानए तन्त। रतन-सन लखिमा कन्त।
सब कलारस जे गुन मन्त।।4।।

1. मोजे गेलिहुँ। 2. साजनि। 3. केर। 4. न। 5. न। 6. ता हरि।

छन्द – 8+8, 11, 11, 11.

राधा कृष्णक संग केलि-कलह करैत छथि — (1) हे कान्ह, हम मुक्ता आ' माणिक्य तुल्य फूल तोड़ए एतए अएलहुँ अछि। तों किएक हमर साजल-सजाओल साजी छिनैत छह? बाप रे, एतेक भारी आतुरता? आँखिक सोझाँ दिन-देखार चोरि? (2) हे कान्ह, आनक धनक एतेक लोभ? जे लोभ नहि करए तकरे शोभा (प्रतिष्ठा) टिकैत छैक। (2) वन बीच कुंजमे (एकान्तमे) भेट भेल, तें तोरा मुखलज्जा (मुह देखला पर लजाएब, दृष्टिलज्जा) नहि होइत छहु। तोहर एहि कुकर्मकें हम छिपएबहु नहि (देखार कए देबहु)। हे कान्ह, ततबे केलि करह जतबामे नगर गेला पर लज्जित नहि होअए पड़हु। (3) ई जे सुपुष्ट स्तन देखैत छह से राजा मदनक भण्डारक गहना थिक। एकर माथी (अग्रभाग)मे रत्न जड़ल अछि। एहि पर हाथ नहि देह, हाथ देने मलिन भए जाएत। हमर स्वामी बड़ कठोर छथि (हमरा भारी सजाए भेटत)। कविकण्ठहार कहैत छथि, के छाड़ि सकैत अछि रस। लखिमाक रत्न-सन कन्त सभ कलाक रसज्ञ गुणवान् श्री शिवसिंह ई तन्त्र (कामकला) जनैत छथि।

[524]

पिआ परबास आस तुअ पासहि तें कि बोलह सखि आन।
जे पतिपालक से भेल पावक इथि की बोलत आन।।1।।
साजनि, अघट न घटाबह मोहि।
पहिलहि आनि पानि पिअतमे गहि कर धरि सोम्पलि[1] तोहि।।2।।
कुलटा भए जदि पेम बढ़ाइअ तें जीवने की काज।
तिलाएक रङ्गरभस सुख पाओब रहत जनम भरि लाज।।3।।
कुलकामिनि भए निअ पिअ बिलसिअ[2] अपथे कतहु नहि जाइ।
की मालति मधुकर उपभोगए किंवा लतहि सुखाइ।।4।।
विद्यापति कह कुल रखलेंहि रह दूति बचने नहि काज।
राजा सिबसिंह रूपनराएन लखिमा देबि समाज।।5।।

1. सोंपलिहुँ। 2. बिलसए।

दूती राधाकें कृष्णसँ मिलए कहलक; ताहि पर राधा उत्तर दैत छथिन — (1) पति प्रवासमे छथि। हम तोरहिपर निर्भर छी। तें तों अनुचित काज करए कहबह की? जकरा स्वामी रक्षक बनाए गेलाह सेह यदि पावक (जरओनिहार) भए जाए तँ आन कोना बचाओत। (2) हे सखी, हमरा अघट नहि घटाबह (अनुचित काज नहि कराबह)। पहिनहि हमर पिआ हमरा डेन पकड़िकें तोरा हाथमे सौंपि गेलाह। (3) तखन जँ हम कुलटा भए परपुरुषसँ प्रेम करी तँ एहन जीवनक कोन काज। कामकेलिक सुख पाएब छन भरि आ' लाज रहि जाएत जीवन भरि। (4) कुलकामिनी भए अपने पतिक संग विलास करी, कतहु कुबाट नहि जएबाक चाही। मालती की तँ मधुकरक संग विलास करत, आकि लतहिमे सुखाए जाएत। (5) विद्यापति कहैत छथि, कुलक मर्यादा बचओलहि पर बचैत छैक। दूतीक कहने एहन काज नहि करह। राजा शिवसिंह रूपनारायण सदा लखिमादेवीक संग रहैत छथि।

[525]

सखि हे आज जाएब तहीं[1]।
घर गुरुजन डर न मानब वचन चूकब नही।।1।।
चान्दन आनि आनि आङ्ग लेपब परिहब[2] गजपोती।
अञ्जन बिहुन लोचनजुगल धरत धवल जोती।।2।।
धबल बसने तनु झपाओब गमन करब मन्दा।
जइअओ सगर गगन उगत सहस सहस चन्दा।।3।।
न हमे काहुकि डिठि निबारबि न हमे करब ओते।
अधिक न चोरि पर सञो करिअ एहे सिनेहक लोते।।4।।
भन विद्यापति सुनह जुबति साहसे सफल[3] काजे।
बुझ सिबसिंह रस रसमय सोरमदेवि समाजे.।5।।

1. मोही। 2. भूखन कए। 3. सकल।

शुक्लाभिसारिका राधा अपन प्रौढ़ता सखीकें सुनबैत छथि — (1) हे सखी, आइ जेना हो तेना हम ओहि कृष्णक लग जएबे करब। घरमे गुरुजनक कोनो डर नहि करब। मिलनक जे वचन देने छिअनि ताहिमे किन्नहु नहि चूकब। (2) अङ्गमे चानन लेपब, गहनामे गजमुक्ताक हार पहिरब। आँखिमे काजर नहि करब; ताहिसँ आँखिमे श्वेत आभा आबि जाएत। (3) श्वेत वस्त्रसँ देह झाँपि लेब आ' (मस्तीमे) मन्द मन्द गमन करब, भनहि हजार हजार चान सगर अकासमे उगि जाओ। (4) ने हम ककरो नजरि बारब, ने अओढ़ करब (जकरा देखबाक होइक से देखओ)। अनकासँ अधिक चोरि नहि करी इएह थिक वास्तव प्रेम करबाक रहस्य। (5) विद्यापति कहैत छथि, हे युवती, सुनह। काज साहसहिसँ सफल होइत अछि। एकर रस जननिहार छथि सोरम देवीक संग रसिक शिवसिंह।

[526]

रामा अइलिहे पिआ बिरसाइ[1]।
पुरुख कैसरि-जनि दमन सरिस[2] धनि छुअइते जा' असिलाइ।।1।।
सिरिहि पुरल[3] देहा न कुचँ चन्द रेहा घामे न पिउल सुगन्धा।
अधर मधुरि फुल देखिअ ताहेरि तुल धएलेहि अछ मकरन्दा।।2।।
गेलाहि कएलह मान की अवसर आन की सिसु बालँभु तोरा।
मुसए गेलिहे धन जागल परिजन लगहि धराओल[4] चोरा।।3।।
भनइ विद्यापति सुन वर जौबति ई रस केओ केओ जाने।
राजा सिवसिंह रूपनराएन लखिमादेबि रमाने।।4।।

1. बिसराइ। 2. लता। 3. मिलल। 4. कलाओक।

बिनु संगम कएनहि रुसिकें घुरलि राधाकें सखी पुछैत अछि — (1) हे सुन्दरी, लगैत अछि तों पिआकें विरस कए (विनु संगम कएनहि) घुरि अइलिह अछि। पुरुष सिंह-सन (बलवान) होइत अछि आ' नारी

दमनलता-सन (दुर्बल)। नारी तँ पुरुखक स्पर्श होइतहि थौआ भए जाइत अछि (तों तँ तेहनि नहि लगैत छह)। (2) एखनहु तोहर देह शोभा-शृंगारसँ युक्त छहु। स्तन पर चान-सन रेखा (नखक्षत) नहि छहु। देहक सुगन्धि लेप घामसँ दहाएल नहि छहु। मधुरीक फूल-सन अधर जेहने छलहु तेहने देखैत छिअहु (चुम्बनसँ मलिन कहाँ भेलहु)। ओहिमे मकरन्द (पुष्परस) धएले रहल। (3) की जाइत देरी तों मान कए बइसलह? की संगमक अवसरे नहि भेटलहु? की कान्हकें यौवन नहि आएल छलनि? आकि धन चोरबए गेलह, घरक लोक जागि गेल आ' चोर (कृष्ण) धराए गेलह? (4) विद्यापति कहैत छथि, हे सुन्दरी, सुनह, ई रस केओ-केओ जनैत अछि। ई जनैत छथि लखिमादेवीक पति राजा शिवसिंह रूपनारायण।

[527]

सपने आएल सखि पिआ मझु[1] पासे। तखनुक कि कहब हृदय हुलासे।।1।।
न देखिअ धनुगुन न देखु सन्धाने। चउदिस पळए कुसुमसर बाने।।2।।
मुकुलित लोचन[2] बिगसित थोरा। चान्द उगल जनि समुद हिलोरा।।3।।
उठलिहुँ चउँकि[3] आलिङ्गन बेरी। गेलिहुँ लजाए[4] सून सेज हेरी।।4।।
भनइ विद्यापति सुनह सपने। जे देखलह से पुराओत[5] मदने।।5।।

1. मझु पिआ पासे। 2. बङ्क विलोचन। 3. उठलि चेहाए। 4. रहलि। 5. पुरतौहे मने।

राधा सखीकें स्वप्न-समागमक वृत्तान्त सुनबैत छथि — (1) हे सखी, आइ हमर पिआ सपनामे हमरा लग आएल। तखन जे हृदयमे उल्लास भेल से की कहिअहु। (2) ने कतहु धनुख देखल ने कतहु लक्ष्य। मुदा लागल जेना चारू दिससँ कामदेवक बाण बरसि रहल हो। हमर संकुचित नयन विकसित भए गेल, जेना चन्द्रोदय भेलापर समुद्रमे हिलकोर आबि गेल हो। (4) ओ आलिंगन करए लगलाह कि हम चौंकि

उठलहुँ (जागि गेलहुँ) आ' सेज सून देखिकें लजाए गेलहुँ। (5) विद्यापति कहैत छथि, स्वप्नक फल सुनह। सपनामे जतेक जे देखलह से सभटा कामदेव पुराए (साकार कए) देथुन।

[528]

बान्धए बिकट जटा, तथिहु चान्देरि फोटा।।1।।
कत जुग सहस बएस बहि गेला।
उमत महादेव समत न भेला।।2।।
मौलि मिलए छार, सहज न तेजए पार।।3।।
सुकवि विद्यापति गाउ, जीबओ सिवसिंह राऊ।।4।।

कवि शिवक वर्णन करैत छथि — (1) शिव विकट जटा बन्हने छथि। ततहु चन्द्रमाक ठोप अछि। (2) बएस कतेक हजार वर्ष बीति गेलनि। उन्मत शिव तैओ समत (प्रकृतिस्थ) नहि भेलाह। (3) माथमे भस्म लगओने छथि। अपन प्रकृति छोड़ि नहि पबैत छथि। (4) कवि विद्यापति ई गीत रचल। राजा शिवसिंह जीबथु।

[529]

गेलाहु पुरब पेमे उतरो न देइ। दाहिन बचन बाम कए लेइ।।1।।
ए हरि बळ कए[1] रूसलि रमनी। हम तह न आउति कुञ्जरगमनी।।2।।
गइए मनाबह रहओ समाजे। सब तह बड़ थिक आँखिक लाजे।।3।।
जे किछु कहलक से गछि[2] लेले। भल कए बुझबह[3] अपनहि गेलें।।4।।
भनइ विद्यापति नारि सोभावे। रूसलि रमनि पुनु पुनमत पावे।।5।।

1. रस दए। 2. अछि। 3. बूझब।

दूती कृष्णकें राधाक मान सुनबैत अछि — (1) पूर्वक प्रेम सोचि राधाकें बौंसए गेलहुँ। परन्तु ओ हमर अनुकूलो वचनकें प्रतिकूल बूझि लेलक। (2) हे कान्ह, राधा बड़ जोर रूसलि अछि। ओ गजगामिनी हमरा कहने नहि आओत। (3) तों अपनहि जाएकें ओकरा बौंसह, मेल (मिलन)

करह गए। आँखिक लाज सभसँ पैघ थिक (समक्ष अएला पर किछु रोच भइए जाइत छैक)। (4) ओ जे-जे शर्त रखलक हम से गछैत गेलहुँ (तैओ ओ राजी नहि भेलि)। आब अपनहि जाह, तखन सभ बात नीक जकाँ बुझबह। (5) विद्यापति कहैत छथि, रूसब तँ नारीक स्वभावे थिक। पुण्यवाने पुरुष रूसलि रमणीकेँ पुनः प्राप्त करैत अछि।

[530]

कतहु रमश्रुधर कतहु पयोधर भल दुहु[1] मिलल सुसोभे।
अधँग धड़लि नारि न गुनलि निअ गारि गरुअ गौरिगुन लोभे।।1।।
आलो सिब सम्भू तुमि सिब सम्भू तुमि जे बधलो पञ्चबाने।
XX X X X X X ।।2।।
गाँग लागि गिरिजाके मनौलिहे कके देबि बोलह मन्दा।
चरन नमित फनि मनिमय भूखन घरखे[2] सिखाएल चन्दा।।3।।
भनइ बिद्यापति सुनह त्रिलोचन पअ पङ्कज मोरि सेबा।
चन्दल देइ पति बैदनाथ गति नीलकण्ठ हर देबा।।4।।

1. वर। 2. घरखि।

कवि अर्धनारीश्वर शिवक स्तुति करैत छथि — (1) हे शिव, तों कतहु मोछ आ' कतहु स्तन धारण कएने छह। दूनूक मिलन बड सुन्दर भेलहु। तों आधा अंगमे नारीकेँ धारण कएलह। एहिमे तों अपन गारि (निन्दा, अप्रतिष्ठा) नहि मानलह। (2) हे शिव शम्भु, तों शिव आ' शम्भु दूनू थिकह। तों कामदेवकेँ मारलह। (3) गंगाकेँ जे माथ पर रखलह, ताहिसँ रूसलि गिरिजाकेँ मनओलह — हे देवी, तों एकरा अधलाह किएक बुझलह? पाएर पर प्रणत भेल साप तोहर मणिमय भूषण भेलहु। तकर घर्षणसँ चान खिआए गेल। (4) विद्यापति कहैत छथि, हे त्रिलोचन, सुनह, तोहर पाएर पड़ि हम प्रार्थना करैत छिअहु, हे नीलकण्ठ हर, तों चन्दल देवीक पति वैद्यनाथकेँ शरण देबहुन।

[531]

जय जय भगबति भीमा भबानी। चारि बेदेँ अबतरु ब्रह्मानी।।1।।
हरि हर ब्रह्मा पुछइत भमे। एकओ न जान तुअ आदि मरमे।।2।।
भनइ विद्यापति राए मुकुटमनि। जिबओ रूपनराएन नृपति घरनि।।3।।

कवि भगवतीक स्तुति करैत छथि — (1) हे भगवती भीमा भवानी, अहाँक जय हो जे ब्रह्माणीक रूपमे चारि वेदक संग अवतार लेल। (2) ब्रह्मा, विष्णु आ' महेश तीनू देवता जकरा-तकरासँ जिज्ञासा करैत बौआइत रहलाह, किन्तु तीनूमे एको गोटए अहाँक आदि तत्त्व जानि नहि सकलाह। (3) विद्यापति कहैत छथि, राजा सभक मुकुटमणि राजा शिवसिंह रूपनारायणक गृहिणी लखिमादेवी जीबथु।

टि.— अन्तिम चरणक पाठ बिगड़ल।

[532]

जाति पदुमिनि सहति कला। गजेँ दमसलि दमनलता।।1।।
लोभेँ अधिक मूल न मार। जे मूल राखए से बनिजार।।2।।
अछल जोर सिरीफल भान्ति। कएलह छोलङ्ग नारङ्ग कान्ति।।
भन विद्यापति न कर लाथ। भूखल न खाए दुअओ हाथ।।

सखी कृष्णकेँ कहैत छथिन — (1) पद्मिनी जातिक नायिका राधा कतेक पराभव सहत। ओकर हाल तों तेहन कए देलहक अछि जेना हाथीक धाङल दमना लती हो। (2) बेसी लोभेँ मूलधनहुँकेँ चौपट नहि करह (राधाकेँ विरक्त नहि करहुन)। चतुर बनिआ ओ थिक जे मूलधनक रक्षा करए। (3) एकर स्तन जे दुइ बेल-सन कठोर छल तकरा तों पीचि-पीचिकेँ छोहारा आ' समतोला-सन लड़गुज बनाए देलह। (4) विद्यापति कहैत छथि, लाथ नहि करह। भूखल लोक दूनू हाथेँ नहि खाइत अछि।

[533]

करतल बयन[1] नयन ढर नीर। न चेतए कुन्तल न सँभर चीर।।1।।
तुअ पथ हेरि रह[2] चित नहि थीर। सुमिरि पुरुब नेहा दगध सरीर।।2।।
कत परि माधब साधब मान। बिरहिनि माङ्गए[3] दरसन दान।।3।।
जल मधे कमल गगन मधे सूर। आन्तर चान्द कुमुद कत दूर।।4।।
गगन गरज मेघा सिखर मजूर। कत जन जान नेह कत दूर।।5।।
भनइ बिद्यापति बिपरित मान। दूती[4] बचने लजाएल कान्ह।।6।।

1. कमल। 2. हेरि। 3. बिरहि जुबति माँग। 4. राधा।

कृष्ण मान कएने छथि। सखी हुनका मनबैत छथि — (1) राधा हाथ पर मुह रखने अछि। आँखिसँ नोर बहल जाइत छैक। ने केस सम्हारैत अछि, ने चीर। (2) तोहर बाट तकैत रहैत अछि। चित स्थिर नहि रहैत छैक (मन बौआइत रहैत छैक)। पूर्वक प्रेमक स्मरण कए-कए ओकर देह जरए लगैत छैक। (3) हे कान्ह, तों कतेक दिन धरि एना मान सधने रहबह? (4) कमल जलाशयमे रहैत अछि; सूर्य आकाशमे। चान आ' कुमुदक बीच बहुत दूरी अछि। (5) मेघ आकाशमे गरजैत अछि, आ' मयूर पर्वत-शिखर पर। सभ जनैत अछि जे प्रेम कतेक दूरहुसँ कएल जाए सकैत अछि। (6) विद्यापति कहैत छथि, मान नारी करैत अछि। कृष्णक मान विपरीत-सन लगैत अछि। तें दूतीक बात सुनितहि कृष्ण लजाए गेलाह।

[534]

गगन गरज घन जामिनि घोर। रतनहु लागि न सञ्चर चोर।।1।।
अपनहु न देखिअ अपनुक देह। जेहना तजि अएलाहुँ निज गेह।।2।।
तिला एक माधब परिहर मान। तुअ लागि संसअँ पळल परान।।3।।
दुतर[1] जउनि नरि अइलिहुँ लाँघि[2]। कुचजुग तरनि तरल[3] तों लागि।।4।।
देह अनुमति हे जुझओ पञ्चबान। तोह सन नागर नगर नहि आन।।5।।
भनइ बिद्यापति नारि सोभाव। अपनुक अभिमत जुगुति[4] बुझाब।।6।।

राजा रूपनराएन जान। सिबसिंह लखिमा देबि रमान।।7।।

1. दुसह। 2. भाँगि। 3. तरल तरनि। 4. उकुति।

कृष्ण मान कएने छथि; राधा हुनका मनबैत छथि --- (1) आकाशमे मेघ गरजैत। विकट राति। रत्नहुक लेल चोरो नहि बहराए। (2) (अन्हार तेहन जे) अपनो देह अपना नहि देखाए। एहन घोर समयमे हम अपन घरसँ बहराए तोहरा लग अएलहुँ। (3) हे कान्ह, तों छनो भरिक लेल मान छाड़ह। तोहरा लेल हम प्राण-संकटमे पड़लहुँ। (4) अगम-अथाह यमुना नदी पार कए आइलि छी। दूनू स्तन मानह नाओ भए गेल, तकरे बलें नदी पार कएल। (5) हे कान्ह, अनुमति देह। कामदेव समर ठानथु (रतिरंग होअओ)। तोहरा-सन नागर (रसिक पुरुष) जगतमे आन नहि अछि। (6) विद्यापति कहैत छथि, नारीक ई स्वभावे थिक; ओ अपन अभिमत (कामना) युक्ति द्वारा प्रकट करैत अछि। लखिमा...।

[535]

सखि हे बालँभु जितब बिदेसे।
हमे कुलकामिनि कहइते अनुचित तोहँहि दे हुन्हि उपदेसे।।1।।
ई न बिदेसक बेरी।
गुरुजने[1] हमर दुख न अनुमापब तैं तोंहे पिआ जाह एळी[2]।।2।।
किछु दिन करथु निबासे।
हमे पूजल जे सेहे पए भुञ्जब राखथु पर उपहासे।।3।।
होएताहे उन्हि[3] बध भागी।
जहिखने हुन्हि मने जाएब चिन्तब हमहु मरब धसि आगी।।4।।
विद्यापति कवि भाने।
राजा सिबसिंह रूपनराएन लखिमादेबि रमाने।।5।.

1. दुरजने। 2. लगे एली। 3. किए।

कृष्ण विदेश जएबा पर छथि। राधा तनिका रोकबाक अनुरोध सखीसँ करैत छथि — (1) हे सखी, हमर पिआ बिदेश जएबापर छथि। हम कुलकामिनी भए हुनका किछु कहबनि से उचित नहि होएत (तें तोरहि बजाए अनलिअहु अछि), तोंही हुनका उचित विचार दहुन। (2) गुरुजन ई अनुमान नहि कए सकताह जे हमरा कतेक वेदना होएत। तें तोंही पिआ लग जाए कहुन गए। (3) जँ नहिए मानताह तँ जाथु, किछु दिन रहथु परदेसहिमे। हम पूर्व जन्ममे जे कएने छी तकर फल भोगब। परन्तु, लोकमे जे उपहास (निन्दा) होएतनि ताहिसँ बचबाक उपाए करथु। (4) विदेश जएताह तँ ओ वधभागी होएताह। जखनहि ओ विदेश जएबाक निश्चय करताह तखनहि हम अग्नि-कुण्डमे धसि प्राणत्याग करब। (5) कवि विद्यापति एकर रचयिता थिकाह।

(5) भाषागीतसंग्रहक गीत

[536]

एत दिन आगे माइ हम छल भान। कओन परि बिरहिनि राख परान।।1।।
सेहे दूसह दुख विहि मोहि देला। पिआ बिनु बसल नगर सुन भेला।।2।।
कुलिस समान ह्रदय मोर साइ। पिअ बिसलेख बिदरि' नहि जाइ।।3।।
कत दिन अगे सखि बिहि होएब मन्दा। जलधर जाले लुकाओब चन्दा।।4।।
हरि हरि कतएक हम छल साधे। जानल बिधिबस नहि होअ बाधे।।5।।
भनइ विद्यापति न करह दन्दा। थिर नहि रहए दिबस भल मन्दा।।6।।

1. बिहरि।

राधा सखीसँ विरहव्यथा सुनबैत छथि — (1) हे सखी, एतेक दिन हमरा लगैत छल जे विरहिणी प्राण कोना रखने रहैत अछि। (2) विधाता सेह असह्य दुख हमरा देलनि। पिआक बिना हमर बसल नगर उजड़ि गेल। (3) हाए, हमर ह्रदय वज्र-सन अछि, जे पिआक वियोग भेलहुँ पर फाटि नहि गेल। (4) जानि नहि कतेक दिन विधि वाम रहत; कतेक दिन मेघ चानकें झपने रहत। (5) हाए-हाए, हमरा कतेक ने मनोरथ छल। आब बूझल जे विधाताक इच्छाकें केओ टारि नहि सकैत अछि। (6) विद्यापति कहैत छथि, चिन्ता नहि करह। दिन नीक कि अधलाह स्थिर नहि रहैत अछि।

[537]

नन्दनबन उपजलि जनि। मदने बान्धि थला देल पानि।।1।।
फुल फल भरें नउलि लता। पुरुख भमर ता अनुरता।।2।।
रुप कि कहब कहहि न जाइ। बड़ेओ चेतन भूल कन्हाइ।।3।।
काजर रेह रोमावलि देलि। अनङ्ग जनि' सरीरी भेलि।।4।।
भन विद्यापति...।

1. जीनि।

कवि नायिकाक रूपक वर्णन करैत छथि — (1) नन्दनवनमे एकटा मानू लती जनमल। तकरा कामदेव थाला बान्हि पटबैत रहलाह। (2) ओ लती फूल आ' फरक भारसँ नमड़ि गेल। पुरुषरूपी भ्रमर ताहिमे अनुरक्त भए गेल। (3) ओकर रूप की कहू, कहल नहि जाए। कृष्ण-सन परम सम्भ्रान्तो व्यक्ति मुग्ध भए गेलाह। (4) ककरो नजरि नहि लागि जाइक तें रोमावलीक रूपमे काजरक रेखा देल छैक। मानू अनङ्ग (अंगहीन/कामदेव) केर स्त्री रति शरीरी भए गेलीह। विद्यापति...।

[538]

हासक चतुरिम मन सानन्द। उपमिअ बदन पुनिम के चन्द।।1।।
सुन सुन माधव से सखि मोरि। चाहए बाँहक छाहरि तोरि।।2।।
रूपक आगरि नागरि नारि। त्रिभुवन दुरलभ तोंहहुँ[1] मुरारि।।3।।
जत जत सूनल गुन अतिरेक। अनुभवे बूझल सकल विवेक।।4।।
नयन तरङ्गे मएन उठ जीबि। मन कर लोचने छाड़िअ पीबि।।5।।
भनइ विद्यापति...।

सखी कृष्णसँ अनुरोध करैत छथि जे राधाक उपेक्षा नहि करथि – (1) हमर सखी हँसबामे चतुर आ' सदा प्रसन्न रहनिहारि अछि। ओकर मुह पूर्णिमाक चान सन छैक। (2) हे कान्ह, सुनह। हमर एहनि सखी तोहर बाहँक छाहरि चाहैत अछि। (3) ओ रूपवती अछि आ' नागरि सेहो (रूप आ' गुण दूनू)। तोंहू तीनू लोकमे दुर्लभ छह। (4) राधाक जतेक जे गुणोत्कर्ष सुनैत रही से सभ टा अनुभवसँ यथार्थ बुझाएल। (5) ओकर नयन-तरंगसँ कामदेव जीबि उठैत छथि आ' मन होइत अछि जे ओकर रूप आँखिसँ पीबि ली।

1. तोंहहु त्रिभुवन दुलभ।

[539]

बिगलित वसन पयोधर आरति दिहु पानि।
कामे कनक हर पूजल करें अम्बुज आनि।।1।।
कतन जतन बिहि साजल[1] धनि रुप बिसाल[2]।
X X X X X X ।।2।।
सामर कुञ्चित कुन्तल[3] कुसुमावलि काँती।
जलद जीनि जनि ऊगल[4] नखतावलि पाँती।।3।।
सहजहि आनन सुन्दर[5] चल लोचन जोरा[6]।
सरद सुधाकर देखिअ जनि चकित चकोरा।।4।।
विद्यापति कवि गाओल बूझए रसमन्ता।
देवसिंह वर नागर हाँसिनिदेवि कन्ता।।5।।

1. साजला। 2. बिसाला। 3. कुन्तलहु। 4. ऊगला। 5. सुन्दरा। 6. लोचन चल तोरा।

कवि नायिकाक रूपक वर्णन करैत छथि — (1) स्तनसँ आँचर ससरि गेलैक तँ नायिका ओहि पर हाथ दए देलक। से लगैछ जेना कामदेव कमलक फूल आनि सोनाक शिवक पूजा कएने होथि। (2) सुन्दरीक रूपकें विधाता बड़े यत्नसँ ओल। ....(?)। (3) कारी आँठिला केशराशिमे फूलक माला शोभित अछि से लगैछ जेना मेघकें जीति (मेघक तरसँ बहराए) ताराक पाँती ऊगल हो। (4) मुह सहज-सुन्दर अछि आ' दूनू आँखि चंचल, जेना दुइ चकित चकोर शरद चन्द्र पर बैसल देखाइत हो। (5) ई गीत कवि विद्यापति रचल। एकर बुझनिहार छथि हाँसिनिदेवीक पति नागरश्रेष्ठ रसिक देवसिंह।

[540]

अलप बयस मोर कान्ह तरुना। न तन्हि लाज डर नहि' करुना।।1।।
लोभें निठुर भए कएलन्हि केलि। के जान कते दुखे जामिनि गेलि।।2।।

न कर न कर धनि मोर परबोध। जिव की देब कान्ह अनुरोध।।3।।
हठे बस भेलाहुँ नठल गेआन। निबिबन्ध फुजइते के की जान।।4।।
देलन्हि आलिङ्गन भुजजुग चापि। कोमल हृदय उठल मोर काँपि।।5।।
कुच नख देलन्हि ते परकार[2]। जनि केसरि गजकुम्भ बिदार[3]।।6।।
अधर निरसि मुख कएलन्हि मन्द। राहुँ गरसि निसि छाड़ल चन्द।।7।।
भनइ विद्यापति नब अनुराग। भमर भरें नहि माँजरि भाँग।।8।।

1. न तन्हि। 2. परकारें। 3. बिदारि।

मुग्धा नायिका रतिभयक वर्णन करैत अछि — (1) हमर बएस थोड़ आ' कान्ह तरुण। कान्हकें रमण करबामे ने लाज छनि, ने डर, ने दया। (2) ओ लोभवश निष्ठुर भए रमण कएलनि। जानि नहि, राति कतेक कष्टमे बीतल। (3) हे सखी, हमरा बौंसह-परतारह नहि। की कान्हक अनुरोधें हम अपन प्राण गमाउ? (4) हठमे पड़ि गेलहुँ; सुधि-बुधि हराए गेल। जखन चीरक कसनी खोलाइत अछि तखन ककरा कोन ज्ञान रहि जाइत छैक। (5) ओ जखन दूनू बाँहिसँ जाँति आलिंगन कएलनि तँ हमर कोमल हृदय कापए लागल। (6) स्तनमे तेना नह गड़ओलनि जेना सिंह हाथीक मस्तक बिदारैत अछि। (7) अधरकें चुमैत-चुमैत नीरस कए देलनि आ' मुहक शोभा बिगाड़ि देलनि, मानू राहु रातिमे चानकें ग्रस्त कए छाड़ि देने हो। (8) विद्यापति कहैत छथि, ई नव प्रेमक फल थिक। भ्रमरक भरें कतहु मंजरी भग्न होअए।

[541]

कहब पथिक पहु हमर बुझाए। कत जिब आसँ धरब अरुझाए।।1।।
कुपित कुसुमसर समय बसन्त। मलय पवन बह समय दुरन्त।।2।।
मञे सुधि किछु न बुझल परजन्त। अछल भान निज आइति[1] कन्त।।3।।
आरति राति गमाबिअ जागि। तन्हि हम पेम पराभव लागि।।4।।
भनइ विद्यापति सुन बर नारि। पुरुब सुकृत बलें मिलत मुरारि।।5।।

1. आधिन।

नायिका अपन विरहवेदना पथिक द्वारा सूचित करैत छथि — (1) हे पथिक, हमर पहुकें बुझाएकें कहबनि जे हम कतेक दिन धरि प्राणकें एना आशामे बझओने राखब। (2) कामदेव कुपित छथि। वसन्त से आबि गेल। मलयानिल बहैत अछि। समय दुखद भए गेल। (3) हम शुद्ध स्वभावक लोक जानि नहि पओलहुँ जे प्रेम करबाक परिणाम की होएत। बुझैत रहलहुँ जे पिआ वशमे छथि। (4) विरहवेदनामे राति जागिकें बितबैत छी। हमरा-हुनकामे जे प्रेम भेल से एही पराभव लेल की? (5) विद्यापति करैत छथि, हे सुन्दरी, सुनह। पूर्वपुण्यक बलें मुरारि आबि मिलथुन।

[542]

निबिड़ नितम्ब निबेसलि नीबी निकट भइए कत बेरि।
अञ्चल चञ्चल दए कुच झाँपल दरसिए तसु मुख हेरि।।1।।
साजनि आबे कि करब रस जानि।
आसा अपनि निबेदि लजएलाहुँ बिसरलि मनसिज बानि।।2।।
कण्टक कपटें चरन हेरि कत बेरि भाव बुझाओल गोए।
असरिस[1] सञो जञो पेम बढ़ाबिअ कतए मनोरथ होए।।3।।
कठिन कुलिस सञो अधिक तन्हिक मन कखनहु न छाड़थि बामे।
कि सेहे चतुर नहि हम नहि चीन्हथि की जीबए[2] नहि कामे।।4।।

1. असदृस। 2. जिबइतें।

नायिका नायकक अरसिकता सखीकें सुनबैत छथि — (1) बेरि-बेरि लग जाए चीरक कसनीकें सघन नितम्ब पर चढ़ाओल (रमणेच्छाक संकेत)। पिआकें देखाए, हुनक मुह तकैत खसल आँचरकें सम्हारि स्तन झाँपल। (2) हे सखी, आब रसवती भए की होएत। (संकेत द्वारा) अपन कामना (रमणेच्छा) जनाए-जनाए लजाइत रहलहुँ। पिआ तँ जेना

कामदेवक परिपाटिए बिसरि गेल होथि। (3) कॉट गड़बाक लाथें पाएर दिस ताकि-ताकि हुनका अपन भाव (रमणेच्छा) संकेत रूपें जनाओल। असमान कामवासना बाला व्यक्तिसँ जँ प्रेम बढ़ाओल जाए तँ मनोरथ कोना पूरए। (4) पिआक मन वज्रहुसँ अधिक कठोर छनि। ओ कखनहु अपन विपरीत भाव नहि छाड़ैत छथि। की तँ ओएह चतुर (कामकलाविज्ञ) नहि छथि तें हमरा नहि चीन्हि सकैत छथि आकि कामदेवे जे मुइलाह से फेर जीलाह नहि।

[543]

बिसबसुपाबे हरल पति मोर। अन्ध तनय पिअ सखि भेल थोर।।1।।
सूर सुता सुत तन्हिकर तात। रखइतें दिने-दिने खिन भेल गात।।2।।
पहिल दोसरपन आइति गेल। आदिक तेसर अनाएत भेल।।3।।
सुरगुरुपञ्चम सेओ तनु जार। मलयज पवन विषमसर मार।।4।।
भनइ विधापति एहु रस जान। सिबसिंह लखिमादेइ रमान।।5।।

विरहिणी विलाप करैत छथि — (1) सौतिनि हमर पतिकें हरि लेलक। हमर अभिमान (प्रतिष्ठा) घटि गेल। (2) धर्म बचबैत-बचबैत देह दुबराए गेल। (3) पहिल (बाल्य) आ' दोसर (कौमार्य) तँ खेपि लेलहुँ; परन्तु तेसर (यौवन) दुरूह भए गेल। (4) चानो देह जरबैत छथि। मलयानिल मानू तीक्ष्ण बाण भोंकैत अछि। (5) विधापति....।

टि—ई कूट (पिहानी) थिक। मूल स्रोतक विद्वान् अनुलिपिक एकर अर्थक संकेत देने छथि। तदनुसार बिस=20, वसु = 8, पाबे = 7 (अर्थात् सौतिनि)। अन्ध धृतराष्ट्र, तनिक पुत्र दुर्योधन तनिक प्रिय अभिमन्यु (अर्थात् अभिमान)। सुरगुरु बृहस्पति, ताहिसँ पाँचम सोम (अर्थात् चान)।

[544]

देखलि दूखलि रूखलि भूखलि, बैसलि[1] सखी समेते।
फूजलि कवरी[2] बान्ध न सँभरि[3] सुन्दरि अबथा एते।।1।।

माधब काजि बिसरलि बाला।
ओ नबि नागरि गुनक आगरि भेलि निमालक माला।।2।।
ओ जे अभागलि देहरि लागलि पथ निहारए तोर।
निचल लोचन न सुन बचन ढरि ढरि पळ[4] नोर।।3।।
उससि उससि पळ खसि खसि[5] आलि आलिङ्गए धाए।
जाहि बेआधि पराधीन औखध ताहेरि कओन उपाए।।

1. देखलि। 2. कँवारि। 3. सामरि। 4. खस। 5. खसि खसी पळ।

सखी कृष्णकें राधाक विरहदशा सुनबैत छथि — (1) तोहर राधाकें देखल। ओ दुखी, मलिन, भूखलि आ' सखी सभक संग बैसलि छलि। फूजल कैस, सम्हारिकें बन्हने नहि। एहने अवस्था छैक ओहि सुन्दरीक। (2) हे कान्ह, तों ओकरा किएक बिसरलह? ओ गुनमन्ति नव नागरि निर्माल्यक माला-सन भए गेलि अछि। (3) ओ अभागलि, देहरि लागलि तोहर बाट तकैत रहैत अछि। ओकर आँखि निश्चल रहैत छैक। ककरो बात सुनैत नहि अछि। नोर झहरैत रहैत छैक। (4) बेरि-बेरि उसाँस लैत अछि आ' खसि-खसि पड़ैत अछि आ' (तोरा भ्रमें) सखीकें पँजिआबए दौड़ैत अछि। जाहि रोगीक औषध पराधीन हो तकर कोन उपाए कएल जाए।

[545]

मेदुर मुदिर बरिस जलधार। पाउस निसा निबिड़ अन्धकार।।1।।
नील निचोल पहिरि हमे लेल। मने अनुमाने चरन पथँ देल।।2।।
कए साहस सए अवसर पाए। सूनाँ सङ्केत तुलएलहुँ आए।।3।।
तोके कि कहब कान्ह हमे अगेआन। छड़लक बचन कएल परमान।।4।।
आबे कि कहब अवसर बहि गेल। अपन निरूपन अपनहि देल।।5।।
मोहि परबोधह जत जत भाखि। तोहरे ह्रदय सभक अछ साखि।।6।।
भनइ विद्यापति तखनुक भास। जे निरबाहिअ तों दिअ आस।।7।।

राधा संकेतस्थलमे नहि अएबाक उलहन कृष्णकेँ दैत छथि — (1) घन मेघ जलधार बरिसबैत। वर्षा ऋतुक राति। घन अन्धकार। (2) एहन विकट समयहुमे हम नील रंगक चीर पहिरि मनक अनुमानहिसँ पाएर रोपैत, (3) बहुत साहस कए अवसर पाबि संकेतस्थलमे पहुँचि गेलहुँ, किन्तु संकेतस्थल शून्य छल (तोँ नहि अएलह)। (4) तोरा की कहबहु, हमही बकलेल जे छैलक वचनकेँ सत्य बूझल। (5) जखन अवसर बितिए गेल तखन आब कहिकेँ की होएत। अपन परिचय तोँ अपनहि देलह। (6) किछु-किछु लाथ कहि-कहि हमरा अनेरे परतारैत छह। तोहर अपने हृदय सभ बातक साक्षी छहु। (7) विद्यापति ताहि कालक स्थिति कहैत छथि, जकर निर्वाह कए सकी तकरे टा आशा देबाक चाही।

[546]

हेरि हेरि[1] माधुर बाटक[2] आस। कत दिन लोचन पड़त उपास।।1।।
हमर सपथ दए पुछिहह तन्ही। जिबइते दरसन होएत कि नहीं।।2।।
लागु दुरासा चित अति खेद। होअओ कि जाओ पड़ओ परिछेद।।3।।
पुरत कि नहि मन संसय पाए। कण्ठ हिलोड़ा जीव खेलाए।।4।।

1. हरि हरि। 2. मधुर बाटके।

विरहिणी राधा कृष्णकेँ सखी द्वारा संवाद पठबैत छथि — (1) हाए, मथुराक बाटहि पर आस लागल रहैत अछि। जानि नहि, आँखि एना कतेक दिन उपासल रहत। (2) हे सखी, तोँ हमर शपथ दए हुनका पुछबहुन्ह जे जिबैत हुनक दर्शन होएत कि नहि। (3) हमरा तँ बड़ निराशा होइत अछि। चित बड़ विखिन्न रहैत अछि। आब ई निर्णय भए जएबाक चाही जे दर्शन होएत कि नहि (संशय असह्य भए गेल)। (4) दर्शनक मनोरथ पूरत कि नहि पूरत एहि संशयमे पड़ल प्राण 'कण्ठ हिलोड़ा' खेलाए रहल अछि (झूला जकाँ खन एम्हर खन ओम्हर कए रहल अछि)।

[547]

दूरहि रहिअ करिअ मन आने। नयन तरासल हटल न माने।।1।।
ह्रदय हराएल हरिमुख हेरी। सुदिढओ नीबि ससर कति बेरी।।2।।
कि करब कहह धरब कत गोई। करिअ मान जञो आइति होई।।3।।
गोपहि न पारल हृदय कुलासे। मुन्दलाहु बदन बेकत होअ हासे।।4।।
भनइ विद्यापति तोर नहि दोसे। भूखल मदन जगाबए रोसे।।5।।

राधा गुप्त प्रेमक कारणेँ अपन असमंजस स्थिति सखीकेँ कहैत छथि — (1) हे सखी, कान्हसँ हटले रहैत छी। मनकेँ आन दिस लए जाए चाहैत छी। किन्तु दर्शन लेल पिआसल नयन वर्जन नहि मानैत अछि। (2) कान्हक मुह देखितहि ह्रदय हराए जाइछ आ' कसिकए बन्हलो चीरक कसनी बेरि-बेरि ससरि जाइत अछि। (3) हे सखी, की कहिअहु। एहि प्रेमकेँ कतेक छिपाएब। मान कए बैसितहुँ तँ छिपाओल होइत, मुदा विवश छी, सेहो कएल नहि होइत अछि। (4) हार्दिक उल्लास छिपाओल नहि होइत अछि। प्रेमजन्य प्रसन्नताक हँसी मुनलो मुह पर आबि जाइत अछि। (5) विद्यापति कहैत छथि, हे राधा, तोहर दोख नहि। भूखल कामदेव (अतृप्त वासना) एहिना सतबैत रहैत छथि।

[548]

बिखिनि देखलि[1] राही।
तोहेँ बिसरलि संसय पड़लि ह्रदय कहति काही।।1।।
देहरि बैसलि पथ निहारए तुअ दरसन आसे।
करतलगत आनन रोअए उठए तेजि निसासे।।2।।
धरनि धरिए उठए चाहए मुरुछि खसए ठाम।
पेम महारसे मातलि बाला सुमर तोहरि नाम।।3।।
पिअ बियोगिनि ओ जे अभागिनि करति की परकार।
बिरहेँ दगधि तथिहु दारुन बिखमसर पहार।।4।।

1. देखलि तुअ।

सखी कृष्णकें राधाक विरहदशा सुनबैत छथि — (1) हे कान्ह, हम राधाकें देखल। तों बिसरि देलहक। बेचारी संशयमे पड़लि अछि। मनक बात ककरा कहत। (2) ओ तोहर दर्शनक आशासँ देहरि पर बैसलि बाट तकैत रहैत अछि। तरहत्थी पर मूड़ी रखने कनैत आ' निसास लैत रहैत अछि। (3) धरती पर हाथ रोपि जहाँ कोनहुना उठए चाहैत अछि कि मुरुछिकें ठामहि खसि पड़ैत अछि। तैओ प्रेमक महारसमे मातलि राधा तोरे नामक स्मरण करैत रहैत अछि। (4) पिआसँ बिछुरलि ओ अभागलि कोन उपाए करत? एक तँ विरहक सन्तापमे जरि रहलि अछि, दोसरें ताहू पर कामदेव दारुण प्रहार करैत छथिन।

[549]

बुझि हल माधव तुअ अनुबन्ध। प्रथम मधुर परिनामक धन्ध।।1।।
अपनि आरति नहि बूझह' आन।, बचन सुधारस हृदय पखान।।2।।
तोहें हरि कपटी न बुझह अन्त। बचनहु भल न कएल परजन्त।।3।।
तोहर दुखन नहि समय सोभाव। मधुकर मालति निरसि नड़ाब।।4।।
भनइ विद्यापति सुन वर नारि। कपटी पेम दिबस दुइ चारि।।5।।

1. अपनी आरति न बुझह।

राधा कृष्णकें उलहन दैत छथि — (1) हे माधव, हम जानि गेलहुँ जे तोहर प्रेम केहन छहु। आरम्भमे मीठ आ' अन्तमे कलह। (2) तों अपन बेगरताक आगाँ आनक बात (भावना) नहि बुझैत छह। तोहर बोल तँ अमृत-सन छहु किन्तु हृदय पाथर-सन। (3) हे कान्ह, तों वंचक छह। परिणाम की होएत से नहि जनैत छह। वचनहुसँ अन्त धरि भल नहि कए सकलह (प्रेम निबाहि नहि सकलह)। (4) एहिमे तोहर दोष नहि; ई समयक स्वभाव थिक। भ्रमर मालतीक सभ रस चूसि ओकरा नड़ाए (त्यागि) दैत अछि। (5) विद्यापति कहैत छथि, हे सुन्दरी, सुनह। कपटीक प्रेम दुइए-चारि दिन टिकैत अछि।

[550]

दोला तर नबइते ससि खसि पडु बाघछालँ गेल छिडिआइ।
तेहि अमिअ रसे मृगरिपु जिबि हलु भागे मोञे अएलाहुँ पड़ाइ।।1।।
दोसरि बिधि पढ़िचाँ चढ़ि बैसलाहे जखने दिगम्बर आइ।
लाजक लेलि गोरि नहि आबए सखि सबे गेलि पड़ाइ।।2।।
माइ हे माड़ब मञे नहि जएबे जहाँ बस उमत जमाइ।।3।।
पाएर धोअए खने दूध पिउल फनि हर लागलि तसु चोरी।
सबे सबतहु करताल बजाबए मधुर हासे हँस गोरी।।4।।
सासुड़ि सङ्कर बदन उगारल आँचर छान्दल गिमपासे।
देखि गिरिभाने भोगि कुच चढ़लाह आओ कि कहब उपहासे।।5।।
गोरि सखी मिलि ईस सीर धरि नयन आँजल मन मोहे।
एक हाथ नयनानल दाढ़ल दोसर गिड़ल गड्ग गोहे।।6।।
भनइ विद्यापति सुनह मन्दाइनि ओ वर सहजक भोरा।
गौरि सहित हर देथु अभय वर पुरत मनोरथ तोरा।।7।।

विधिकरी शिवविवाहक वर्णन करैत छथि—(1) महादेव पालकी चढ़ि विवाह करए अएलाह। पालकीसँ उतरैत काल माथ झुकओलनि तँ चान खसि पड़ल आओर बाघछाल छिड़िआए (ससरि) गेल। ओहि पर चानक अमृत पड़ल कि बाघ जीबि उठल। भल भेल जे हम (विधिकरी) पड़ाए अएलहुँ (नहि तँ बाघ खाए जाइत)। (2) आब दोसर विधि सुनू। दिगम्बर (नागट शिव) जखन आबिकें पटिआ पर बैसलाह तँ लाजें गौरी अएबे नहि कएलीह आ' सखिओ सभ पड़ाए गेलीह। (3) ओ सभ कहए लगलीह, आगे माइ, हम सभ मड़बा पर कोना जाएब। ओतए तँ बाउर जमाए (नगटे) बैसल अछि। (4) तेसर विधि सुनू। पाएर धोबाक काल दूध पिबि लेलक साप आ' आरोप लगलनि महादेव पर जे ओएह चोराक' दूध पिबि लेलनि। सभ सभ ठाम थोपड़ी बजबए लागल आ' गौरी मधुर-मधुर हँसए लगलीह। (5) चारिम विधि सुनू। सासु देह उडारिकें (बेदी घुमएबालए) आँचर हुनक गरदनिमे लपेटलनि कि साप सासुक स्तनकें पहाड़ बूझि ओहिपर चढ़ि गेल। एहिसँ बढ़ि आओर उपहास की कहू। (6) पाँचम विधि सुनू। गौरी सखी

सभक संग शिवकें माथ पकड़ि आँखिमे काजर करए लगलीह तँ एक हाथ आँखिक आगिमे जरए लगलनि, दोसर हाथ गंगाक गोहि गीड़ए लगलनि। (7) विद्यापति कहैत छथि, हे मनाइनि, सुनह, ओ वर सहजहि भोर (सरलमति) छथि। गौरी सहित शिव अभय वर देथु आ' अहाँक मनोरथ पूरओ।

[551]

कओने वर आनल तपसिआ। गोरि मुगुधि भेलि देखि रङ्गरसिआ।।1।।
नयन अनल काजर कहाँ लाओब। जटा गाङ्ग गोह कैसे चुम्बाओब।।2।।
भूत बरिआती कतए जेमाओब। पाँच बदन महुअक कहाँ पाओब।।3।।
पानि पिनाक मुसरें सरें गाबए। बाघछाल ओढ़न किछु न सोहाबए।।4।।
भनइ विद्यापति ओ वरदायक। देथु अभय वर ओ जगनायक।।5।।

एक पड़ोसिनि शिवविवाहक वर्णन करैत छथि — (1) के अनलनि एहन तपसिआ (जोगिआ) वरकें? तैओ आश्चर्य जे गौरी एही वरकें रंगरसिक बूझि एकरा पर मोहित भए गेलीह। (2) आँखिमे आगि छनि, काजर कतए करबनि? जटामे गंगा आ' गोहि छनि, चुमाओन कोना करबनि? (3) बरिआती अछि भूत। तकरा भोजन कतए करएबैक? मुह पाँच टा छनि। महुअक कोन मुहमे होएत? (4) हाथमे पिनाक (एक प्रकारक धनुष) छनि, अठोङरमे ओएह मुसरक स्वरें गाओत की? बाघक छाल ओढ़ने छथि, जे कोनो शोभा नहि दैत अछि। (5) विद्यापति कहैत छथि, ओ वरदायक थिकाह। ओ जगतक स्वामी अभय वर देथु।

[552]

आसें सुमुखि चलि अइली। सून सङ्केत हेरि पलटलि गेली।।1।।
चल चल चपल कन्हाई। आबे तुअ सपथहु के पतिआई।।2।।
जदि तोंह नहि अबकासे। पर रमनी कके दिअ बिसबासे।।3।।
जागि जौबन गेल सूती। तें कारने हमे भेलिहुँ दूती।।4।।

दूती कृष्णकें उलहन दैत अछि — (1) सुन्दरी राधा मिलनक आशासँ चलि आइलि, आओर संकेतस्थलकें सून देखि घुरिकें चलि गेलि। (2) जाह, जाह हे चंचल कान्ह, आब जँ तों सपथो खाए कहबह तँ तोहर बात केओ नहि पतिआओत। (3) जँ तोरा अवकाश नहि छलहु तँ पर-कामिनीकें विश्वास किएक देलहक? (4) यौवन सभ दिन नहि रहैत छैक। हमरहु एक दिन जौवन जागल छल, किन्तु आब ओ सूति रहल; ताही कारणें दूती भेलहुँ।

[553]

बीकें अइलिहुँ ई भेल भोर। की खति जओ न बिकएले घोर।।1।।
पलटि जाएब घर न होएब पार। हमे कुलबहु उपसओब पसार।।2।।
हठ तेज माधव कर मोहि पार। सबतह बड़ बथु पर उपकार।।3।।
कौतुकें पिआओे परिहओलाहुँ हार। रञ्जल पीन पयोधर भार।।4।।
छुइ जनु हलह जीब जओ काज। कामातुरकाँ नहि भय लाज।।5।।
आइति उचित करिअ बेबेहार[1]। थिर नहि रहए अथिर अधिकार।।6।।
भनइ विद्यापति ई रस जान। सिवसिंहं[2] लखिमा देइ रमान।।7।।

1. उपकार। 2. नृप सिबसिंह।

गोरस बेचए जाइत राधा नाविक कृष्णकें कहैत छथि — (1) भल नहि कएल जे बेचए चललहुँ। जँ घोर नहिए बिकाएत तँ कोन क्षति? (2) एना करबह तँ घर घुरि जाएव। पार नहि होएब हम। हम (कोनो व्यापारी नहि) कुलवधू थिकहुँ। दोकान उसारि लेब (व्यापार छाड़ि देब)। (3) हे कान्ह, हठ छाड़ह। हमरा पार कए देह। आनक उपकार करब सभसँ पैघ वस्तु थिक। (4) पिआ कौतुकपूर्वक हमरा ई हार पहिरओलनि आ' एहि पुष्ट स्तनकें पसाहलनि। (5) जँ हमर प्राणक काज छहु तँ एकरा छूबह नहि। कामातुरकें ने डर होइत छैक, ने लाज। (6) जे आयति (वश) मे पड़ल हो तकरा प्रति उचित व्यवहार करक चाही। अधिकार अस्थिर वस्तु

थिक, ओ स्थिर नहि रहैत अछि (अनुचित करबह तँ घाटक पट्टा छिनाए जएतह)। (7) विद्यापति ई रचल। एकर रस जनैत छथि लखिमादेवीक पति शिवसिंह।

[554]

चानुर मरदन तोहें बनमालि। सिरिसि कुसुम कोमल हमे नारि।।1।।
निरसि न करिअ अधर मधुपान। आनहु दिबस लाइ दिअ जिबदान।।2।।
दासि होएब मञे लिखि लेह नाम। अबला बलि दए न पुरिअ काम।।3।।
मृगमद तिलक धामे बहि गेल। चान्द कलङ्क कञोने हरि लेल।।4।।
चुम्बने नयन निरञ्जन भेल। कुचजुग नखे खण्डित भए गेल।।5।।
कहल न मानह दैब बिरोध। पर खति न बुझह निअ अनुरोध।।6।।

राधा कृष्णक निष्ठुर कामाचारक वर्जन करैत छथि — (1) हे कान्ह, तों चाणूर पहलमानकें हरओनिहार महाबली छह आ' हम सिरीसक फूल सन तनुक अबला छी। (2) हमर अधर-मधु तेना नहि पीबह जे सभ रस निःशेष भए जाए। आनो दिनक लेल हमरा प्राण-दान देह (हमरा जीबए देह)। (3) हमरा प्राणदान देबह तँ हम तोहर दासी भए रहब। बहिखतमे हमर नाम लिखि लेह। (3) बलिदान कएने मनोरथ पुरैत छैक से सोचि तों हमरा बलिपशु नहि बनावह, हम अबला नारी थिकहुँ। हमरा बलि देने तोहर मनोरथ नहि पुरतहु (किएक तँ बलि केवल नर-पशुक होइत अछि)। (4) कस्तूरीसँ बनाओल हमर पसाहिन घामसँ धोखरि गेल। जानि नहि के चानक कारी दाग भेटाए देलक। (5) चुम्मा लैत-लैत आँखिक काजर भेटाए गेल आ' दूनू स्तन नखक्षतसँ चिराए गेल। (6) वा हमर विधाते वाम छथि, तें तों हमर प्रार्थना नहि सुनैत छह। केवल अपन लाभ देखैत छह, आनक हानि (वेदना) नहि बुझैत छह।

[555]

तुअ पथ हेरि हेरि निन्दहु न सोअई। अवनत आनन धनि कत रोअई।।1।।
फूजल[1] चिकुर उलरि उरँ पळई। जनि कनकाचल चामर ढरई।।2।।
बेरा एक अबे कान्ह तोरि राहि जिबई। जञो तुअ रूप नयन भरि पिबई।।3।।
कत परबोधिअ नहि पतिआई। जत तन्हि समन्दल कहहि न जाई।।4।।
अरे[2] कान्ह काठ कठिन तुअ हृदया। धनि तोहँ रतलि तोहहि बड निदया।।5।।
भनइ विद्यापति ई रस जाने। सिबसिंह[3] लखिमा देइ रमाने।।6।.

1. फुजलेओ। 2. अबे। 3. नृप सिबसिंह।

सखी राधाक विरहदशा कृष्णकें सुनबैत छथि — (1) तोहर बाट ताकि-ताकि राधा नीनसँ सुतैत नहि अछि। मूड़ी झुकओने कनैत रहैत अछि। (2) फूजल केशराशि ओलरि-ओलरि छाती पर पड़ैत रहैत छैक, जेना सोनाक पर्वत पर चामर डोलाओल जाइत हो। (3) हे कान्ह, आब तोहर राधा छनो भरि तखने जीबि सकत जँ तोहर रूप भरि आँखि (भरि छाक) पीबए। (4) कतबो बुझबैत-सुझबैत छिऐक, हमर बात नहि पतिआइत अछि। ओ जतेक समाद कहा पठओलकहु अछि ततेक कहल नहि हो। (5) हे कान्ह, तोहर हृदय काठहुसँ कठोर छहु। राधा तोरामे रतलि (अनुरक्त) अछि, किन्तु तों बड़ निर्दय छह। विद्यापति.....।

[556]

मोरा मन मनमथ राखल[1] गोए। बिसरए चाहिअ बिसरि नहि होए।।1।।
देखलि मञे कामिनि कहहि न जाए। पुनु दरसन लागि रचिअ उपाए।।2।।
तळित लता सम तनु देखली। बिहि जनि दसहु दिसा लिखली।।3।।
पीन पयोधर रुचि उजरी। सिरिफले फळलि कनक मजरी।।4।।
सम्भ्रम सकल सखीजन बारि। पेम बुझओलनि पलटि निहारि।।5।।
भनइ विद्यापति अछ परकार। जमुन तरिनि तट[2] धर कण्डहार।।6।।
तन्हि जाएब बिके तोंहे लेब दान। दरस परस पूरत पञ्चबान।।7।।

1. राखलि। 2. तरुणितिर।

कृष्ण अपन प्रथम प्रेमक वर्णन मित्रकें सुनबैत छथि — (1) हे मित्र, हमर मन कामदेव चोराए लेलनि। बिसरए चाहैत छी, किन्तु बिसरि नहि होइत अछि। (2) आइ हम एकटा कामिनी देखल। जे देखल से कहब कठिन। आब एहन उपाय करह जाहिसँ फेर दर्शन होअए। (3) ओकर देह बिजुलीक रेखासन (चकचक गोर) छल, जेना विधाता दसो दिशा (?) लिखने होथि। (4) हे मीत, ओकर पुष्ट-पुष्ट स्तनक रंग पीअर छल, जेना बेलक फल पर सोनाक मजर पसरल हो। (5) ओ हड़बड़ाए सखीसभसँ कात भए घूमिकें हमरा दिस ताकि प्रेम जनओलक। विद्यापति कहैत छथि, ओकरासँ मिलनक एकटा उपाय अछि। यमुना नदीक तट पर कडुआरि धरह (नाविक बनह)। ओ दही-दूध बेचए आओत आ' तों ओकरासँ दान (घटबारि, घाट-शुल्क) लेबह। कामदेव दर्शन आ' स्पर्शन दूनूक मनोरथ पुराए देथुन।

[557]

बाङ्क नयन सर रे मन हनए हमरा[1]।
विमल कमल दलँ रे जनि भमए भमरा।।1।।
[मिता हे राधा दरसन भेला।
भल न देखञो महितल चान्द उगला]।।2।।
पीन पयोधर रे देख[2] सहजक गोरा।
कामे अञोध कर रे जनि कनक कटोरा।।3।।
लोचन चञ्चल रे बेबि खञ्जन मेरी।
भनइ विद्यापति रे राधा कान्हक केलि।।4।।

1. वाम नयन वर रे मन हरए हमारा। [ ] प्रक्षिप्त सन लगैत अछि। छन्द बेमेल। 2. सुखें।

कृष्ण अपन रागोदयक कथा मित्रकें सुनबैत छथि — (1) राधाक बाँक नयन-बाण हमरा विद्ध कए देलक। लागल जेना निर्मल कमलक फूल

(मुख) पर भ्रमर (आँखि) बैसल हो। (2) हे मित्र, राधाक दर्शन भेल। विचित्र (भल न) बात देखैत छी जे धरती पर चान उगि गेल। (3) ओकर पुष्ट स्तन देखल जे सहज गौरवर्ण छल। लागल जेना कामदेव सोनाक कटोराकें औन्हि देने होथि। (4) ओकर चंचल नयन लगैछ जेना दुइ खंजन परस्पर मिलैत हो। विद्यापति राधा ओ कृष्णक लीलाक वर्णन करैत छथि।

[558]

अनतए मानस अनतए काने। आन किछु पुछञो उतर देहे आने।।1।।
हास न बयन नयन दुहु सूने। गण्डजुग पाँडुर कञोनक पूने।।2।।
कह कह सुन्दरि कहह सरूपे। आज अनाइस कइसें तोर रूपे।।3।।
दूबरि होसि हेतु नहि कहसी। एकल पराने सकल दुख सहसी।।4।।

सखी गुप्त प्रेम कए बिमन भेलि राधाकें पुछैत छनि — (1) हे सखी, की बात थिकैक जे आइ तोहर मन आन ठाम छहु आ' कान आन ठाम? पुछैत छिअहु किछु आ उत्तर दैत छह किछु आने। (2) मुह पर हँसी नहि छहु आ' दूनू आँखि सून-सन छहु। कोन पुरुषक पुण्य जगलैक अछि जे तोहर गाल पिअराए गेलहु? (3) कहह हे सुन्दरी, सत्य-सत्य कहह। आइ तोहर रूप-रंग बदलल-सन (अनाइस, अन्यादृश) कोना भए गेलहु? (4) दुबराइत जा' रहलि छह आ' तकर कारण किछु नहि कहैत छह। एकसरिए (चुपेचाप) सभ दुख सहैत जाइत छह।

[559]

दुर सञो सुनिअ दामोदर नामे। केओ बोल दाहिन केओ बोल बामे।।1।।
आज अकामिक दरसन भेला। हेरितहिँ हृदय हरिए लए गेला।।2।।
कि पुछह आगे सखि कि कहब आने। भलें जानल तोँहे देखल मञे कान्हे।।3।।
अधराहु लोचने न हेरल लाजे। कत परमाद पड़ल सब[1] काजे।।4।।

1. बिनु।

राधा सखीकें अपन प्रेमजन्य विकलता सुनबैत छथि — (1) दूरहिसँ कान्हक नाम सुनैत रही। केओ कहए जे ओ दक्षिण (पक्का प्रेमबाला) छथि तँ केओ कहए वाम (वंचक प्रेमी) छथि। (2) आइ संयोगवश हुनक दर्शन भेल। देखैत देरी ओ हमर हृदय हरि लेलनि। (3) हे सखी, की पुछैत छह, अनका की कहबैक। तों ठीके जनलह, हमरा कान्हक दर्शन भेल। (4) लाज ततेक भेल जे आधो दृष्टिएँ हुनका देखि नहि भेल। तबहिमे सभ काजमे प्रमाद (चूक) होअए लागल।

[560]

कहाँ सञो कतए तुलइलिहुँ आए। दिठि अनुबन्ध दैबे देल लाए।।1।।
अपरुब रूप नयन भरि पीबि। बिरहिनि भए मोहि की फल जीबि।।2।।
बदन बिरोधे सुधाकर मार। अनिलओ करए अनल बेबहार।।3।।
सहजहि दसमि दसा मोहि आज। अपजस लए तोहि की अछ काज।।4।।
सुकवि विद्यापति ई रस भान। आरतिँ राखिअ परक परान।।5।।

विरहिणी राधा कृष्णकें उपराग दैत छथि — (1) जानि नहि कतएसँ कतए आबि गेलहुँ आ' विधाता नजरिमे नजरि मिलाए देलनि। (2) हे कान्ह, तोहर अपूर्व रूप भरि आँखि पिबि विरहिणी भए जीअब कोन काजक? (3) चानकें हमरा मुहसँ (स्पर्धाजन्य) विरोध छैक तें ओ सतबैत अछि। अनिल (पवन) हमरा संग अनलक (आगिक) तुल्य व्यवहार करैत अछि। (4) सुतराम् , आइ हम विरहक दसम दशा पर (मृत्युक निकट) पहुँचि गेलि छी। हमर मरबाक अपजस लएकें तोरा कोन फल होएतहु? (5) सुकवि विद्यापति ई रचलनि, आ' कहैत छथि, संकटमे पड़ल लोकक प्राणरक्षा करबाक थिक।

[561]

चरणायुध धुनि सुनि नहि होए। स्रबन मुन्दए छलें करतलें गोए।।1।।
अरुन किरन डरें मुन्दए गबाख। पल पल बाढ़ अधिक अभिलाख।।2।।

सरसिज सौरभ कए' अनुमान। मृगमदें करए तिलक निरमान।।3।।
कैतवें करए सकल समधान। रमनि जोगाब रसिक जनु जान।।4।।

1. मनें।

भरि राति रमण कइओ कए अपरितृप्त नायिका एहन उपाए करैत छथि जे भोर भेल से नायक नहि जानए — (1) नायक मुरगाक ध्वनि नहि सुनए ताहि हेतु कोनो लाथ कए दूनू हाथें ओकर दूनू कान झँपैत जड़ला बन्द करैत अछि। नायिकाक केलि-विलासक इच्छा एखनहु छन-छन बढ़ल जाइत अछि (ओ भोर भेलहु पर रमण करितहिं रहए चाहैत अछि)। (3) कमलक फूलक सौरभक आभास पाबि कस्तूरीसँ तिलक करए लगैत अछि (जाहिसँ कमलक सौरभ ओहिमे दबि जाए)। ई सभ समाधान छलपूर्वक करए। नायिका एहि सभकें जोगबैत-नुकबैत अछि जे नायक बूझए नहि।

[562]

रामा, देह पेमरस चित लाई। घनहन बसन करह काञी।।1।।
सम्पुन पुनिम ससि मुख काँति। कोपें जनु हेरह कुटिल भाँति।।2।।
चखु इखु काजर बिखे माखि। काञि मारह हे मरम लखि।।3।।
तिख कटाख सर सम्पून। भउह धनुख अञ्जन गुन।।4।।
व्याध मदन मृग मोर मन। देहे सरन जौबन बन।।5।।

नायक नायिकासँ प्रणययाचना करैत छथि — (1) हे सुन्दरी, हमरा हृदयसँ प्रेमरस देह। घनगर वस्त्रसँ देह किएक झँपैत छह? (2) तोहर मुखक शोभा पूर्णिमाक पूर्णचन्द्र-सन छहु। तों कोपसँ कुटिल आँखिएँ हमरा नहि देखह। (3) तों अपन नजरिक बाणकें काजरक बिख लगाए हमरा मर्म तका किएक मारैत छह? (4) तोहर चोख कटाक्ष बाण थिकहु, भऊँह धनुष थिकहु आ' काजर तकर ताँति (गुन)। (5) मदन व्याध

थिकाह आ' हमर हृदय हरिण थिक। तों अपन यौवनरूपी वन (अभयारण्य) मे एहि हरिणकें शरण देह।

छन्द – 6 + 2 + SS

[563]

हेमलता हिमकर उगि गेल। दुहु दिसँ गुरु सुके सेवा लेल।।1।।
देखलि रमनि पुरुब पुने आज। रति रस आँकुर पेलए लाज।।2।।
बँधलओ राहु करए कत लोभ। ताहि उपर तारागन सोभ।।3।।
हँसलि सुमुखि किछु भाव बुझाए। जनि नबदलें है कुसुम छिड़िआए।।4।।
भावक भरमल भमरा बूल। कामक चातर के नहि भूल।।5।।

नायक नायिकाक रूप पर मुग्ध भए ओकर वर्णन करैत छथि — (1) सोनाक लता (नायिकाक देह) मे चान (मुख) प्रकट भेल। तकर दुनू दिस गुरु आ' शुक्र (कर्णभूषण?) सेवामे उपस्थित भेलाह। (2) आइ पूर्वजन्मक पुण्यक बलें सुन्दरीकें देखल। रति-रसक अंकुर (कामोद्रेक) लाजकें ठेलि देलक। (3) बान्हल रहलहु पर राहु (केशराशि) मुखरूपी चानक लोभ करैत अछि। ताहि राहुक उपर तारा सभ विराजमान अछि। (नायिकाकें ततेक कामविकार जागि गेलैक जे) (4) ओ सुमुखी अपन भाव प्रकट करैत मुह ताकि बिहुँसि देलक; मानू..............पर (?) फूल छिड़िआए गेल हो। ओहि पर भावोद्रेकसँ उद्भ्रान्त भए भ्रमर मड़राए लागल। कामक प्रांगणमे के नहि भोतिआइत अछि।

[564]

जखने आएल[1] कान्ह समाजे। कएल मञे बदन अञोध लाजे।।1।।
हँसि सुनाओल[2] रभस बानी। राखल मून्दि मञे स्रवन पानी।।2।।
कत मञे साजनि कएल[3] मान। आरति पाव पराभव कान्ह।।3।।
मउन जतने कएल जते। कौसले बालँभु टोकल[4] तते।।4।।
तखने संसयँ पहु पराउन। कुण्डल फेरि परिहल कान।।5।।
भन विद्यापति आन न जान। गुपुत कथा बुझ सयान।।6।।

1. अएलाह। 2. सुनौलन्हि। 3. करब। 4. छिकल।

मुग्धा नायिका अपन संगमक कथा सखीकें सुनबैत छथि — (1) जखन कान्ह लग आएल तखन हम लाजें मूड़ी गोंति लेलहुँ। (2) जखन ओ हँसि-हँसि रसकथा सुनबए लागल तखन हम हाथसँ कान मूनि लेलहुँ। (3) हे सखी, हम बहुत मान कएल। ताहिसँ आर्तिवश कान्ह बड़ पराभव पओलक। (4) हम यत्नपूर्वक मौन धारण कएल। पिआ कौशलपूर्वक हमरा पराभूत कए देलक। (5) तखन हम प्राण-संकटमे पड़ि गेलहुँ। एक कानसँ कुण्डल फोलि दोसर कानमे पहिरल (किएक?)। (6) विद्यापति कहैत छथि, गुप्त कथा आन जानए कि नहि जानए; चतुर लोक बुझिए जाइत छथि।

[565]

जामिनि बहलि सुनिअ पिकराव। अलिधुनि सुनि मोहि किछु न सोहाब।।1।।
अरुणे उसारल तिमिर पसार। दुरजने जानि पाओब अभिसार।।2।।
जएबाँ देह मोहि हे जदुराए। लोभें अधिके परतछ भए जाए।।3।।
चेतन भए अकछिअ भल मन्द। पओला धन[1] न बढ़ाबिअ दन्द।।4।।
आगु निहारि खेलए पसबार। सरबस पैंति न कर[2] बेबहार।।5।।
भनइ विद्यापति ई रस जान। सिबसिंह लखिमा देइ रमान।।6।।

1. जस। 2. करए।

राधा राति भरि संगम कए भोरमे कृष्णसँ प्रस्थानक अनुमति मङैत छथि — (1) राति बीति गेल। कोइलीक कुहकब सुनि पड़ैत अछि। भ्रमरक गुंजन सुनला पर हमरा ई रंगरभस किछु नहि नीक लगैत अछि। (2) अरुणदेव अन्धकारक प्रसारकें हटाए देलनि। आब (घर घुरबामे विलम्ब करब तँ) दुर्जन हमर गुप्त मिलन जानि जाएत। (3) हे कान्ह, आब हमरा जाए देह। आओर अधिक लोभ करबह तँ देखार भए जाएत। (4) चतुर लोक भल अनभलक विवेचन करैत अछि। धन पाबि गेलापर अनेर विवाद नहि बढ़ाबी। (5) पसबार (जुआरी) आगु सोचिकें खेलाइत अछि। एकहि

बेर सर्वस्व (सकल सम्पति) पैंतिकें (दाओपर राखिकें) कारबाइ नहि करैत अछि (आशय जे किछु भोगलह, किछु आगाँ लेल बचाएकें राखह)। (6) विद्यापति.......।

[566]

सुन्दरि जञो तोहि पिसुनक भीती।
अपन अहित हित प्रथमहि बूझिए पर सञो करिअ पिरीती[1]।।1।।
एक जिब एक तनु बिभिन करह जनु जइओ गरुबि गुरु लाजे।
जुग दस जपिअ तैअओ नहि पाइअ सुवदनि सुपहु समाजे।।2।।
पहिलहि आस पास अरुझओलह आबे कके करह उदासे।
की मोहि कलाहीन कए बुझलह की तोहें बिरति बिलासे।।3।।
अथिर जौबन धन थिर नहि जीबन थिर अपजस थिर लाजे।
जदि परिनाम ऐसन धनि होएब एत X X X कए की काजे।।4।।

1. बूझिअ परस न करिअ पर सञो रीती।

प्रेम करबामे ततमताइत राधाकें कृष्ण उत्साहित करैत छथि — (1) हे सुन्दरी, तोरा जँ पिशुनक (निन्दक सभक) डर छलहु तँ पहिनहि अपन हिताहित बिचारि लितह, तखन पर-पुरुषसँ प्रीति करितह। (2) आब तँ हम-तों एक प्राण एक देह भए गेल छी; एकरा तों गुरुजनक (आ' दुर्जनक) संकोचें विभिन्न नहि करह (फुटाबह नहि)। हे सुमुखी, दस युग तपस्या कएलहु पर सुपहुक संग नहि प्राप्त भए सकैत छैक। (3) तों पहिने तँ हमरा आशाक फाँसमे बझाए लेलह तखन आब किएक उदास-निराश करैत छह? की तों हमरा कामकलामे अपटु बूझि लेलह आकि तोंही कामकेलिसँ विरक्त भए गेलह? (4) ने यौवन स्थिर थिक, ने धन, आ' ने जीवन। स्थिर थिक केवल अपजस आ' लाज (ताहिसँ बँचैत हमरासँ प्रीति करह)। जँ एहने परिणाम होएत तँ...........(?)।

(6) हरगौरी विवाहक गीत

[567]

परतह पुछ मोहि बाढलि भवानी। कतिएक भेलि[1] देखए देह आनी।।1।।
भीखि बैआजे बास मोर आबे। मनमोहन जोगिआ भल गाबे।।2।।
ए माइ ए माइ[2] अजगुत लागु। सूतलि गोरि जोगिआ देखि जागु।।3।।
जाहि जोगिआ देखि दुरहि पड़ाइ। ताहि जोगिआ कोर गौरि खेलाइ।।4।।
भनइ विद्यापति मन्दाइनि सूनु। ई जोगिआ बर होएत पुनु-पुनु।।5।।

1.भेलि अछे। 2. हे माहि।

मनाइनि (मन्दाकिनी) गौरीकें शिवमे अनुरक्त देखि चिन्ता करैत छथि — (1) ओ जोगिआ प्रतिदिन हमरा पुछैत अछि, गौरी कतेक बढ़लि? ओकरा आनि देखाए देह जे कतेक टा भेलि। (2) ओ मनमोहक जोगिआ मङबाक लाथें हमरा ओतए अबैत अछि आ' सुन्दर गीत गबैत अछि। (3) आगे माइ, बड़ अजगुत लगैत अछि। देखह तँ, सूतलि गौरी जोगिआकें देखितहिं कोना जागि उठैत अछि। (4) जाहि जोगिआकें देखि आन नेना सभ दूर पड़ाइत अछि, गौरी ताहि जोगिआक कोरमे खेलाए लगैत अछि। (5) विद्यापति कहैत छथि, हे मनाइनि सुनह; इएह जोगिआ जन्मजन्मान्तरमे पुनःपुनः गौरीक बर होएत।

[568]

कौतुक एक ब्रड भेला। जखन महादेव वेदी गेला।।1।।
जटा हलु ऑंकुसि लाई। झिकइते सुरसरि गेलि बढ़िआई।।2।।
बसहाञे हलु कुस खाई। लाबा देखि फनि उठल फोफाई।।3।।
लाबा भासल जाई। भूखल बासुकि बिछि बिछि खाई।।4।।
बाघछाल भासल जाई। फनि फुफ्कार बसह बिधुआई।।5।।
विद्यापति कवि गाऊ[1]। रूपनराएन होयु चिराऊ।।6।।

1. ईश चुमाउ।

कवि शिव-विवाहक वर्णन करैत छथि — (1) महादेवक विवाहमे एकटा बड़का कौतुक (तमासा) भेल। जखन महादेव वेदी पर गेलाह (आ' आँकुस लगएबाक विधि आरम्भ भेल। (2) टीक तँ छलनि नहि तँ) आँकुस जटामे लगाओल गेल। आँकुस झिकितहिं गङ्गाक धार फूटि पड़ल। (3) बसहा बाढ़िमे भसिआइत कुश खाए लागल। लाबा देखिकें सापसभ फुफुआए उठल। (4) लाबा भासल जाए आ' भूखल वासुकी ओकरा बिछि-बिछि खएने जाथि। (5) बाघछाल सेहो भसिआए लागल। सापसभक फुफकार सुनि बसहा बिधुआए (भड़कि) गेल। (6) कवि विद्यापति ई गीत लिखलनि। शिवसिंह रूपनारायण चिरजीवी होथु।

[569]

पञ्चानन पुरमथन भयङ्कर शङ्कर नाम कओने धरिआ।
तीनि नयन हर एक अनल बर के जान कओन कुल अब तरिआ।।
माए न बाप साप सङ्ग खेलए मेलए भसम दिगन्त भरी।
मनमथ मारि नारि आलिङ्गए उमत बुझाएब कओन परी।।2।।
पावनि गाङ्ग जटा जदि थोबए गोबए काजि जटा बिघनी।
संसय तोरि के गोरि बुझाबए अनुचित उचित इथी अपनी।।3।।

कवि महादेवक वर्णन करैत छथि — (1) पाँच गोट मुह छनि, नगरकें जरओने छथि। रूप देखितहिं लोककें डर होइत छैक। तखन हिनक नाम शंकर (सभक कल्याण कएनिहार) के रखलक? तीनि गोट आँखि छनि। एकमे आगि बरैत छनि। के जनैत अछि जे कोन कुलमे जन्म भेलनि। (3) ने माए छनि, ने बाप। साप सभक संग खेलाइत रहैत छथि। सगर देह भस्म लेपैत छथि। काम (कामवासना) कें तँ मारि देल, तैओ कामविवश भए नारीक आलिंगन करैत छथि (अर्धनारीश्वर बनैत छथि)। (3) पापहारिणी गंगाकें जँ जटामे रखैत छथि से तँ उचिते परन्तु........(?)। के संशय दूर कए गौरीकें उचित अनुचित बुझाओत। (4)

विद्यापति कहैत छथि, हे मनाइनि, सुनह, महादेवकें आन के बुझाओत; ओ तँ अपनहि सगर संसारक गुरु थिकाह। राजा शिवसिंह रूपनारायण सभ याचक जनक हेतु कल्पतरु थिकाह।

[570]

अमा, की न गमाउति गोरी।
सकल सम्पति मञे जोहि अएलाहु पाओल भसम झोरी।।1।।
न घर संवर न पीठि अम्बर न मिल पँच उधार।
तनए बापुर भूखें बेआकुल कि मञे देब अहार।।2।।
वासुकि जिउत पवन पिउत हर जीउब बिख खाइ।
सेवक स्वामी दुहू भल मिलल हमर कओन उपाइ।।3।।
पेट पचकल गाल चोकटल पाकल भौंहिरि गोछी।
ताहि बुढ़ा हाथ ई विधि देलहुँ ते मञे पापिनि धोछी।।4।।
माए न सोचल बाप न खोजल खोजल दैब अपने।
बिहिक लिखल मेटि न पाबिअ झाखिअ मनहि मने।।5।।
भन विद्यापति सुन पारवति ई वर त्रिलोक देवा।
जगत इसर सामि तोहि मिलु कर जोरि करु सेवा।।6।।

गौरी माएकें अपन कष्ट सुनबैत छथि – (1) हे माता, तोहर बेटी गौरी की ने गमओलक। हम अपन सासुरमे सभ सम्पति खोजि अएलहुँ, भेटल केवल भस्मसँ भरल झोरी। (2) ने घरमे अन्न, ने देहमे वस्त्र। पँचो-उधार भेटनिहार नहि। बेचारा बेटा गणेश आ' कार्तिक भूखसँ व्याकुल अछि। ओकरा की देबैक खाए लेल? (3) वासुकी नाग तँ पवन पीबि कें जीताह, महादेव अपने बिख खाएकें जीताह। जेहने सेवक (वासुकी), तेहने मालिक (शिव)। किन्तु हमर कोन उपाए होएत? (4) की हम निकृष्ट पाप कएने छी जे विधाता हमरा पचकल पेट, चोकटल गाल आ' पाकल भौंह बाला बुढ़बा बर देलनि? (5) ने माए सोचलनि, ने बाप खोजलनि; हमर अपने दैव (अभाग्य) एहन वर खोजलक। विधाताक लेख के मेटाओत।

मनहि मन झँखैत छी। (6) विद्यापति कहैत छथि, हे पार्वती, सुनू, ई वर तीनू लोकक प्रभु थिकाह। अहाँकें जगदीश्वर स्वामी भेटलाह, कर जोड़ि हुनक सेवा करू।

[571]

रुसलि भवानी हर परबोध[1]। आज छमह गोरि मोर अनुरोध॥1॥
जत किछु मँगलह अछए भण्डार। पहिरए[2] देब फनि मनि गिमहार॥2॥
भुखलौं भाड्ग देअओ बिख सानि। चढ़एक बसहा देबहु पलानि॥3॥
भनइ विद्यापति पुनु पुनु सेव। चन्दल देवि पति बैजनाथ देव॥4॥

1. न मानए बोध। 2. पहिलहि।

(1) गौरी रुसलि छथि। महादेव हुनका बौंसैत छथि -- हे गौरी, हम अनुरोध (नेहोरा) करैत छिअहु, आइ हमर अपराध माफ करह। (2) तों जे किछु मडबह से सभ हमरा भण्डारमे मोजूद अछि। पहिरबाक हेतु नागमणिक ग्रिमहार देबहु। (3) भूख लगतहु तँ बिखमे सानि-सानि भाड देबहु। चढ़बाक हेतु बसहा सजाए देबहु। (4) विद्यापति कहैत छथि, चन्दल देवीक पति वैद्यनाथ देव नित्य सेवनीय थिकाह।

[572]

सेबए अएलाहुँ सुख लागी। बिखम नयन अनुखन बर आगी॥1॥
बसह पराएल आगे। पैसि पताल रहल गए नागे॥2॥
ससि उड़ि चलल अकासे। गोरि चललि गिरिराजक पासे॥3॥
उचित कहए नहि जाई। उमत अराधब कओने उपाई॥4॥
विद्यापति कवि सेवा। देहु अभय वर सड्कर देवा॥5॥

कवि शिवक लीलाक वर्णन करैत छथि — (1) हम सुख-सम्पति भेटओ ताहि हैतु शिवक सेवा करए अएलहुँ, (परन्तु कठिन अछि हिनक सेवा; किएक तँ) तेसर आँखिमे सदा आगि बरैत रहैत छनि (जे क्रोधक / रुद्रताक प्रतीक थिक)। (2) हुनक बसहा आगाँ-आगाँ पड़ाएल तँ नाग

पताल पैसि गेल। (3) चान उड़िकें अकास चलि गेल तँ गौरी रुसिकें नैहर बापक (गिरिराजक) लग चलि गेलीह। (4) एहनामे कोना ककरहु उचित कथा कहब। ठीके, बताह मालिकक सेवा करब ककरा पार लगतैक? (5) विद्यापति कवि प्रार्थना करैत छथि, हे शङ्करदेव, अभय वर दिअ।

(7) गोरक्षविजयक गीत

टि. – एहि नाटकक गीत सभक पाठ ततेक बिगड़ल अछि जे बहुत कम अंशक अर्थ बुझबामे आएल। लगैछ जेना अनेक सन्दर्भ आ अनेक गीत मिझराएल अछि।

[573]

X X X नारायण देवा। युगुति भुगुति रहु बस सम सेवा।।1।।
गति एक दीन मेटावहि आधि। तनु रतिरस तस सुदिढ समाधि।।2।।
मन परितोष रोष तह दून। मारल मदन जिआओल पून।।3।।
युगुति कारणे भेलाह जटाधारी। भुगुति कारणे अर्धतनु नारी।।4।।
भनइ विद्यापति पुरबथु आसा। मङ्गल करए देव दिगवासा।।5।।

(1) नारायण देव X X X। हिनक (शिवक) सेवामे युक्ति (योग) आ' भुक्ति (भोग) दूनू उपस्थित रहैत अछि। (2) ई एकमात्र अवलम्ब छथि जे तीनू आधि (त्रिविध ताप) मेटबैत छथि। ई शरीरसँ रति (भोग) मे लागल छथि तँ मनसँ सुदृढ समाधिमे। (3) मनमे एक दिस परितोष (प्रसन्नता) छनि तँ दोसर दिस रोष सेहो कम नहि। तहिँ ने रोषसँ मदनकेँ मारल आ' पुनः परितोष (कृपासँ) जिआए देल। (4) भोगक कारणेँ अर्धनारीश्वर छथि तँ योगक कारणेँ जटाधारी। (5) विद्यापति कहैत छथि, ई शिव आस पुरबथु आ मंगल देथु।।

[574]

अच्छ अछ राजा मछेन्द्रनाथ। जोग तेजि रे युवति कति नाथ।।1।।
गुरुक उदेसे गोरखनाथ आब। तसु पय बन्दन करए के पाब।।2।।
मङ्गल करथु जगत एहु ब्रह्म। X X X X ।।3।।
सुजन सुनिञे सुख दुजनहु बोध। भला मन्दा दुहु परम विरोध।।4।।
दुअहुकें कर जस हमार। भनइ विद्यापति कवि कण्ठहार।।5।।

(1) राजा मत्स्येन्द्रनाथ विराजमान छथि, जे योगक त्याग कए सम्प्रति युवती सभक संग विहार करैत छथि। (2) (हुनका बुझएबाक हेतु) गोरक्षनाथ अबैत छथि। हिनक चरणक वन्दन के कए सकैत अछि। (3) ई ब्रह्म (ज्ञानी) संसारक कल्याण करथु। X X X X। (4) हिनक उपदेश सुनि कँ सुजन लोकनि सुख पबैत छथि आओर दुर्जन लोकनि ज्ञान (सद्बुद्धि)। (5) सुजन आ' दुर्जन दूनू.............(?)। कविकण्ठहार विद्यापति ई कहैत छथि।

[575]

X X X क नद पसरु पराग। मन्द पवन बह निरमल लाग।।1।।
मातल हाँस चकोर कर नाद। मधु X X X X ।।2।।
अएलाहे रे X X गोरखनाथ। राखा मुद्रा अभरन सिङ्गा हाथ।।3।।
सङ्गहि काननिपा हृदय आनन्द। सरद...............कोन चन्द।।4।।
भनइ विद्यापति बुझ सबे केओ। मङ्गल वितरथु भैरव देओ।।5।।

(1) कमल वाला सरमे पराग पसरल अछि। मन्द-मन्द पवन बहैछ। तड़ाग विमल अछि (विमल तड़ाग' पाठ)। (2) मातल हंस आ' चकोर चहकैत अछि। मधु [पिबिकेँ भ्रमर गुंजन करैछ]। (3) (एहन सोहाओन समयमे) गोरखनाथ अएलाह। देहमे राख लेपल छनि, मुद्रा अंकित छनि। गहना पहिरने छथि। हाथमे सिङ्गा छनि। (4) संगमे काननीपाद छथिन। हृदयमे आनन्द छनि। .... (?)। विद्यापति कहैत छथि। सभ केओ बुझैत अछि। भैरवदेव मङ्गल बिलहथु।

[576]

दू गोटा योगि हमे सहजक सङ्ग। पथ जनु होए मनोरथ भङ्ग।।1।।
आमि तथा बोलिआ खोजिल जाओ। यथा सुनिलो गुरु चरणेरि नाओ।।2।।
भिखिआ भोजन तरु तर बास। भनइ विद्यापति दुरे दुरे आस।।3।।

(1) सहज भावें संग चलनिहार हम दुइ जन योगी (चलल छी)। (हे ईश्वर) बाटमे हमरा लोकनिक लक्ष्यक सिद्धिमे कोनो बाधा नहि होअए। (2) हम ततए खोजबाक हेतु जाइत छी जतए गुरुचरणक ठाम (अवस्थिति) सुनल अछि। (3) भीखि माङि खाएब आ' गाछ तर विश्राम करब (इएह अछि हमरालोकनिक जीवन)। विद्यापति कहैत छथि, योगीकें द्वार-द्वारसँ (भीख भेटबाक) आस रहैत छनि।

[577]

राजकाज करजो मत्रे पञ्चशत। तीनि भुअण के बुझओ सकल तन्त।।1।।
कहहि दुआर कथा अरे रे दुआरिआ। भनइ विद्यापति तर्के तब परिहर।।2।।
निज अधिकार करब कर। X X X X X ।।3।।

(1) हम पाँच-सात (नाना प्रकारक) राजकाज करैत छी। तीनू भुवनक सकल तन्त्र (रहस्य) बुझैत छी। (2) हे द्वारपाल, कहह, मत्स्येन्द्रनाथ कतए छथि? विवाद छाड़ि तों अपन काज करह। विद्यापति कहैत छथि।

[578]

बहिर रोहायी उठल छोहायी। बैंत सहित देथि राए दोहायी।।1।।
निठुर दुअरिआ जएबा हम देहे। X X X टरि बाट न लेहे।।2।।
भने रससीधे कवि कण्ठहार। स्वच्छन्द योगी हमे धरिबाँ के पार।।3।।

(1) बहीर आ क्रुद्ध द्वारपाल बिगड़ि उठल आ' बेंत भँजैत राजाक दोहाइ (महिमा) बखानए लागल। ताहि पर योगी गोरक्षनाथ कहल – रे निष्ठुर द्वारपाल, हमरा जाए दे। ....बाट नहि छेक। रससिद्ध कविकण्ठहार विद्यापति कहैत छथि, हम स्वच्छन्द योगी थिकहुँ। हमरा के रोकि सकैत अछि।

[579]

थम्भन मोहन जानहुँ हमें। गुरु डरें सब X X नमे।।1।।
आबह काननिपा रचह उपाए। जेहुँ तेहुँ बात न नहि लये जाए।।2।।
भनइ विद्यापति सद उपदेस। नट भेस कए ले परबेस।।3।।

(1) हम स्तम्भन आ' मोहन जनैत छी। गुरुक डरें (?) X X X सभ प्रणाम करैत अछि। हे काननीपाद, आबह। (गुरुसँ भेट हो तकर) उपाय करह। जे कोनो बाटें... (?)। विद्यापति एकटा नीक विचार दैत छथि। नटुआक भेख बनाए प्रवेश करह।

[580]

कदलिपुर पाटन नगर एहु आथि। लाखे घोळ सहसे पुन हाथि।।1।।
मीननाथ राजा परताप। आज्ञा लाँघिअ कमनक बाप।।2।।
X X X मन्त्रि हुनक देथि। अनय काज तें कोप करथि।।3।।
भनइ विद्यापति बस के अङ्ग। साति कराबथु आज्ञा भङ्ग।।4।।

(1) ई कदलीपुर नगर थिक। एतए लाख घोड़ा आओर हजार हाथी अछि। मत्स्येन्द्रनाथ राजाक बड़ प्रताप अछि। ककर बाप हुनक आज्ञाक उल्लंघन कए सकैछ। हुनक मन्त्री (कठोर दण्ड) दैत छथि। नियमविरुद्ध काज कएने क्रोध करैत छथि। विद्यापति कहैत छथि........(?)। आज्ञाभङ्ग भेला पर दण्ड देआबथु।

[581]

X X X देस देखिलो सुखे जाए। ऐसन कठिन पुर कतहु न पाए।।1।।
कथा जाइ बोला कथा जाइ बोला। X X X X X ।।2।।
X X X X X। X X X X नटन प्रवेश।।3।।
कवि सरसति भने सद उपदेस। राए रूपनराएन बुझए बिसेस।।4।।

(1) हम कतेको देश जाए-जाए सुखपूर्वक देखलहुँ; परन्तु एहन कष्टकर नगर कतहु नहि भेटल। (2) कतए जाउ, कहह, आब कतए जाउ,

कहह। X X X। (3) X X X नटुआक प्रवेश। (4) कवि-सरस्वती नीक उपदेश दैत छथि। राजा रूपनारायण एकर वैशिष्ट्य बुझैत छथि।

[582]

मन्थर गमन मन्त को भारे। दूध पानि बेकताब बिचारे।।1।।
कार न पिरिति नीति मने XXX। सब मने राजकाज पए डीठि।।2।।
आएल महथ महामति नाम। आसन कैं अबकासह ठाम।।3।।
तपत प्रताप सबहि दिस धाब। X X तनि अवसरे आब।।4।।
धरम राखि धन भरिअ भण्डार। भनइ विद्यापति कवि कण्ठहार।।5।।

(1) मन्त्रक (राजकाजक चिन्तनक) भारसँ मन्द-मन्द चलैत छथि। अपन विचार (न्यायनिर्णय)मे दूधक दूध आ' पानिक पानि करैत छथि। (2) ने ककरहुसँ राग (प्रीति, ने ककरहुसँ द्वेष)। केवल नीति मनमे मीठ लगैत छनि। सभ खन केवल राजकाज पर दृष्टि रहैत छनि। (3) एहन महथा (मन्त्री) अएलाह जनिक नाम थिक महामति। हिनक बैसबाक स्थान खाली करैत जाउ। (4) हिनक उग्र प्रताप दिस-दिस पसरल अछि। X X X X.........(?)। (5) ई धर्मक रक्षा करैत धनसँ भण्डार भरैत छथि। कविकण्ठहार विद्यापति ई गीत लिखल।

[583]

X X X X X । उपथ डर सुनि तुअ नाम।।1।।
सुन सुन मतिवर बात कहओ फूर। X X X X X ।।2।।
आगु आगु धाबए आज्ञा तोरि। X X बिसरि हलु जनमक चोरि।।3।।
दुइ योगि आएल पलटिए गेल। तोरे डरे घर परबेस न भेल।।4।।
भनइ विद्यापति कहहि सरूप। एजन अवसर अछ मछेन्द्र भूप।।5।।

(1) X X X X X। अपनेक नाम सुनि (डरें) केओ उत्पथ नहि चलैत अछि। (2) हे मन्त्रिवर, सुनल जाए। हम सत्य

बात कहैत छी। X X X X X X। (3) अपनेक आज्ञा आगाँ-आगाँ दौड़ैत अछि (तुरन्त फलित होइत अछि)। चोरो सभ जन्मसँ अभ्यस्त चोरि बिसरि गेल अछि। (4) दुइ गोट योगी आएल छलाह जे घुरिकें चलि गेलाह। अपनेक डरें हुनका लोकनिकें भवनमे पैसए नहि देलिअनि। (4) विद्यापति कहैत छथि, ओ सत्य कथा कहैत अछि। एखन राजा मत्स्येन्द्रनाथ अवसर (आम दरबार) मे छथि।

[584]

जोगि भए राजा भेल मिननाथे। राज सोपल तन्हि हमरा हाथे।।1।।
यावत X X योगि सङगे जायी। अठारह महादेयिक मन उपायी।।2।।
परचार नगरी योगिक प्रवेश। दुआर जनु हो X X X ।।3।।
सगराँ नगर निअम एक भेला। चारिहुँ दिस बुलि डिण्डिम देला।।4।।
मन्ति निदेस मेटए के पार। भनइ विद्यापति [कवि कण्ठहार]।।5।।

(1) मत्स्येन्द्रनाथ पहिने योगी भए पछाति राजा भए गेलाह। राज हमरा हाथमे सोंपल। (2) ....(?)। (3) नगरमे योगीक प्रवेश नहि हो तकर प्रचार कएल गेल। (4) सगर नगरमे एक नियम (आदेश) निर्गत भेल। चारू दिस बुलि-बुलि ढोलहो देल गेल। (5) मन्त्रीक आज्ञा के टारि सकैत अछि। कविकण्ठहार विद्यापति ई रचल।

[585]

चामर बीजए चौदिस नारि। बइसल राजा खेल पसा सारि।।1।।
रतनक चकमकि बलए झँकार। पुरति नयन जनि मयन हकार।।2।।
पाट सिंहासन मुकुट सुबेश। राए मछेन्द्र देल परबेस।।3।।
कि करिबो जप तप योग धेआँन। कि करिबो दान कि परम गेआँन।।4।।
भनइ विद्यापति युवति समाज। बड़े पुण्ये पाइअ जौबन राज।।5।।

(1) नारीलोकनि चतुर्दिक् पंखा डोलाए रहलि छथिन्हि। राजा मत्स्येन्द्रनाथ पासा-सारि खेलाइत बैसल छथि। (2) पासा भँजबाक समय

सुन्दरी सभक गहनाक रत्न चमकैछ, कँगना झनझनाइछ। सुन्दरी सभ नयन चलाए मानू मदनकें हकार दैत हो। (3) पटोरक सिंहासन पर विराजमान छथि। सुन्दर मुकुट पहिरने छथि। एहन अवस्थामे राजा मछेन्द्रक प्रवेश होइत अछि। (4) की करताह जप-तप, की करताह ध्यान, की करताह दान पुण्य आ' की करताह अध्यात्म ज्ञान। (5) विद्यापति कहैत छथि, यौवन, राज्य आ' युवती सभसँ सङ्ग बड़ पुण्यें भेटैत छैक।

[586]

अधर हास कुसुम वास। मुदित मानिनि तिमिर हास।।1।।
खञ्जन लोचनि कमल मुखी। मुख देखि मने परम सुखी।।2।।
खेल नरपति रे X X X X। खेल नरपति युवति सङ्गे।।3।।
काहु आलिङ्गए काहु निहार। काहु लिलोपल मालात्रे मार।।4।।
काहु बुझाब बिसेखि सिनेह। पुलके मुकुल मण्डित देह।।5।।
बहुल कामिनि एकल कन्त। कृष्णपति आएल सयन तन्त।।6।।
रूपे से नागर रससिङ्गार। कौतुके गाब कवि कण्ठहार।।7।।

(1-2) खंजन-सन आँखि आ' कमल-सन मुह बाली मानिनी कामिनी लोकनिक अधर पर मुसकान अछि, मुहमे फूल-सन सौरभ अछि आ' हँसैत छथि तँ अन्धकार दूर भए जाइत अछि। राजा हिनकालोकनिक मुह देखि परम प्रसन्न छथि। (3) राजा युवती सभक संग खेलाइत छथि। (4) ककरहु पँजिअबैत छथि, ककरहु निहारैत छथि, ककरहु लीलाकमलक मालासँ मारैत छथि। (5) ककरो प्रति विशेष स्नेह देखबैत छथि। पुलकरूपी कलिका सभसँ देह सुशोभित भए जाइत छनि। (6) सुन्दरी बहुत छथि; कान्त एकै टा। ....(?)। (7) रूपसँ से राजा मानू शृंगार रसमे प्रवीण (नागर) छथि। कविकण्ठहार विद्यापति कौतुकपूर्वक ई गीत गाओल।

[587]

तेलङ्ग देश के नट चओरङ्ग। नाचए चाह माण्डि रस रङ्ग।।1।।
X X X X X । दखिन देस के देखब नाञ्च।।2।।
कह प्रतिहारी अवसर आए। बात जनाब भूमि सिर नाए।।3।।
नट बड़ सु X X X X। निते निते नबे दिवस सुख जाए।।4।।
नाटय लाबे संसारक सार। भनइ विद्यापति कवि कण्ठहार।।5।।

(1) ई दूनू तैलंग देशक चतुरङ्ग (नृत्य, गीत, ताल आ वाद्य चारूमे कुशल) नट थिकाह। रसानुरूप सिङार कएने ई नाचए चाहैत छथि। X X X X। दक्षिण देशक नाच दर्शनीय अछि। (3) ई बात प्रतिहारी अवसर (आम दरबाक समय) पाबि कहैत अछि। माटिमे माथ झुकाए प्रणाम कए जनबैत अछि। (4) नट बड़ सुन्दर X X । प्रति दिन नब-नब नाच देखबैत अछि, आ' आनन्दमे दिन बीति जाइत अछि। (5) ओ नाटक द्वारा संसारक सर्वोत्कृष्ट वस्तु देखबैत अछि। कविकण्ठहार विद्यापति ई रचल।

[588]

ताण्डव लास नृत्य भल नाचसि चारिहु अङ्ग समासे।
जे गाबसि से चित्र देखाबसि जे भाबसि से पासे।।1।।
तोरे गुने X X X X X X X ।
रहिह नटवटु हमरा सेवा। जे तुअ मनोरथ से हमे देबा।।2।।
बारे बौद्धनाथ दुलह हमार। गुन छलि चोरि लहए नहि पार।।3।।
खेलते उछडलनि अओ सबे रङ्ग। धूरिक धूसर आठओ अङ्ग।।4।।
सुकवि विद्यापति कौतुक गाब। बाहि पाबि दुलहा दौड़ल आब।।5।।
देल तनय आलिंगन दान। पानि पखारि बिसुद्धक गेआँन।।6।।

(1) हे नट, तों ताण्डव आ' लास्य दूनू प्रकारक नृत्य नीक जकाँ जनैत छह। चारू अंग (नृत्य, गीत, ताल आ' वाद्य) मे मेल छहु। जे गबैत छह से चित्रवत् देखबैत छह। जे भाव (अभिनय) करैत छह से.....। (2) हे

नटवट्ट, तों हमर सेवामे रहह। तोहर जे मनोरथ (माङ) होएतहु से हम देबहु। (3) ई हमर दुलारु बालक बौद्दनाथ,................, खेलएबाक काल घाएल भए गेल। आठो अंगमे धूरा लागल छैक। (4) सुकवि विद्यापति कौतुकपूर्वक गाओल। ओ प्रियपुत्र दौड़ल आएल। राजा पुत्रकें भरि पाँज कए धएलनि। जलसँ धोए विशुद्ध कएलनि।

[589]

मुइल जिअओलह बच्छ आनन्द। अन्त भए उगि गेल पुनिमक चन्द।।1।।
कह कह भाए मोर X X X X। कमन तु भेल रे हरि हरि।।2।।
गोरखनाथ से तोहर हमे सीख। सेवाँ अएलाहुँ देह असीख।।3।।
दुलह जिआओल तुह कुल सार। भनइ विद्यापति कवि कण्ठहार।।4।।

(1) हे नट, तों मरि चुकल हमर आनन्दमूर्ति बच्चाकें जिअओलह। मानू पूर्णिमाक चान अस्त भए पुनः उगि गेल। (2) कहह-कहह हे हमर भाए, कोन गुणसँ तों... हे हरि। (3) हे राजा मत्स्येन्द्रनाथ, हम तोहरे शिष्य गोरखनाथ थिकहुँ। तोहर सेवामे (तोहर उद्धार करए) आएल छी। आशीर्वाद देह तोहर प्रियपुत्र जे तोहर कुलक सर्वस्व थिकाह तनिका हम जिआए देलिअहु। कविकण्ठहार विद्यापति ई रचल।

[590]

गुरु है, जे छल पटनगरी। से आबे नदिआ गम्भीरी।।1।।
अछल दूध भेल दही। कालि देखल आज नही।।2।।
सैसव देह दुर गेला। तरुन अछल बुढ भेला।।3।।
सब तोहे शत असीसे। देह असीस होयेब दासे।।4।।
विद्यापति कवि बोध। एहि ओहि परम विरोध।।5।।

(1) हे गुरु मत्स्येन्द्रनाथ, जे पाटन गिरि छल से आब गहींर नदी भए गेल। (2) जे छल दूध से पानि भए गेल। जकरा काल्हि देखल से आइ नहि अछि। (3) शैशवावस्थाक देह बिलाए गेल। तारुण्य छल,

वार्धक्य आबि गेल। (4) सभ किछु तोरे शतशत आशीर्वादसँ भेल अछि। आशीर्वाद देह, हम तोहर दास होएबहु। (5) विद्यापति कवि बुझबैत छथि, एहिमे (योगमे) आ' ओहिमे (भोगमे) परम विरोध छैक।

[591]

सिरजह जानि सकल संसारे। तइअओ संसार न भेलाह पारे।।1।।
भए भल बाउल तोहे गुरु हमारा। सबे तओ जानि भैलाह कण्ठहारा।।2।।
पार भइए है पलटि के बुड़यी। पाँखि अछइते पखि के नहि उड़ई।।3।।
युवतिहि सङ्गे बिसरि गेल चन्द। भनइ विद्यापति फोअह फन्द।।4।।

(1) सकल संसारकें रचलह तैओ संसार पार नहि भए सकलह। (2) हे हमर गुरु, तों भल (ज्ञानवान्) होइतहुँ (युवतीक पाछाँ) बाउर (व्याकुल) भए गेलह। तों सभ किछु जानि कण्ठहारा(?) भेलह। (3) पार भइओ कए कें के मूर्ख फेर नदीमे डूबैत अछि? कोन पक्षी पाँखिक (ज्ञानक) अछैत उड़ैत (मोक्ष पबैत) नहि अछि? (4) युवती सभक संगमे रहैत तोरा चान बिरसि गेलहुँ (युवतीक मुखहिकें चान बूझि लेलह)। विद्यापति कहैत छथि, हे मत्स्येन्द्रनाथ, फन्द खोलह (सांसारिक मायाजालसँ मुक्त होअह)।

[592]

हाथि घोळ पएदल निते कोटि धाब। हकारलि नारि दूर सञो आब।।1।।
चउदिस नारि करए तुअ सेव। प्रहरी थिकाह धुरन्धर देव।।2।।
राजाञे है कएल X X काज। मन्तिक बले राजाञे निबह राज।।3।।
बिहबलताक कतहु नहि थेघ। जति खने बीजुरि तति खने मेघ।।4।।
कठजिब नारि सामि बिनु जीब। तोह मोर नाह अन्हारक दीब।।5।।
चामर बीजए चौदिस नारि। चरन पसाहन कर सए चारी।।6।।
इच्छा भोजन बड़ परिवार। राज तेआग करए के पार।।7।।
भनइ विद्यापति अनुभव जानि। साएर छाड़ि कहाँ बस पानि।।8।।

(1) हाथी, घोड़ा आ पएदल सेना नित्य दूर-दूर दौड़ैत अछि। दूर-दूरसँ सुन्दरी युवती हकारि-हकारि आनलि जाइछ। (2) हे राजा, चारू कात नारी तोहर सेवामे लागलि रहैछ। धुरन्धर देवता शिव तोहर प्रहरी थिकाह। (3) हे राजा, तखन तों एहन काज (संन्यासग्रहण) किएक कएलह? तोरा तँ राज्यक भारे नहि छहु; मन्त्रिए निमाहि दैत छथुन। (4) हमर विह्वलताक कतहु अन्त नहि अछि। मेघ (प्रेमी) जतबे काल रहत बिजुली (प्रेमिका) तबे काल रहि सकैत अछि। (5) जे नारी कठजीब होइत अछि सेह स्वामीक बिना जिबैत अछि। तों हमरा लेल अन्हार घरक दीप थिकह। (6) चारू कातसँ नारी सभ चँओर डालबैत रहैत छहु। चारि सए नारी चरण-प्रसाधन करैत रहैत छहु। (7) इच्छाक अनुरूप भोजन भेटैत छहु। पैघ परिवार छहु। एहन अवस्थामे राज्य के तेजि सकैत अछि। (8) अनुभव प्राप्त कए विद्यापति कहैत छथि, समुद्रकें छाड़ि पानि आन ठाम कतए बसत।

[593]

जागल जोग अभेआस, अमृतञो बाढ़लि आस, मोह आलस घन घोर।
आ केतञो छाड़ल दन्दा, उगल गेआँनक चन्दा, तम पिबि कए गेल [उजोर]।।1।।
सिख तञो सिखओल गुरु, पलटि जामल तरु, राजाञे पुनु पाओल गेआँन।
भनइ विद्यापति अभिनव जयदेव जागल परम गेआँन।
राजा सिबसिंह रूपनराएन बूझि बुझाओब आन।।

(1) राजा मत्स्येन्द्रकें पूर्वमे कएल योगक अभ्यास फेर जागि गेलनि। अमृतक (परम सुखक) आशा जागि गेलनि। पूर्वक घनघोर मोह दूर भए गेलनि ('आलस' नहि, 'हटल' शब्द रहल होएत)। ......द्वन्द्व (चिन्ता-व्यग्रता) दूर भए गेलनि। ज्ञानरूपी चानक इजोत भेल। चान अन्धकारकें पीबि इजोत कए गेल। (2) गुरु शिष्यसँ शिक्षा पाओल। ज्ञानरूपी तरु फेर जनमि गेल। राजा फेर ज्ञान पओलनि। अभिनय जयदेव

विद्यापति कहैत छथि, राजा शिवसिंह रुपनारायण स्वयम् ई तत्व बूझि अनका बुझओताह।

[594]

लबये पाट लब नारी। लोनुमि देखिअ दिवस दुइ चारी।।1।।
जेहि उपजल तेहि गेला। जाइते अपनुक धरिओ न भेला।।2।।
बाउर तोहें बड़ भोरा। अबहु न दोस बिचारह मोरा।।3।।
मायाबस संसारे। सबे अरुझाएल ब्रह्म विचारे।।4।।
विद्यापति कवि गाया। ई धन यौवन पानिक छाया।।5।।

(1) पाट (तख्त) जीर्ण होइत अछि, तहिना नारी जीर्ण होइत अछि। दुइए-चारि दिन सुन्दरि देखाइत अछि। (2) (रूप) जहिना उपजैत अछि तहिना चलि जाइत अछि। (3) तों बड़ बकलेल अज्ञानी छह जे आबहु हमर बात पर विचार नहि करैत छह। (4) ई संसार मायाक वशमे अछि। ब्रह्मक विवेचनमे सभ ओझराएल छथि। कवि विद्यापति कहैत छथि, ई धन, ई यौवन मेघक छाहरि थिक।

[595]

सुकृतिक बाट बिघिनि तञे नारी। एत दिन बएरिनि भेलि से हमारि।।1।।
अबे सबे दूर करहि मो राख। की तोर भ्रुकुटी कुटिल कटाख।।2।।
चल चल पदुमा चल निज गेह। योगि न लाग युवति जन नेह।।3।।
आसा छाड़लें पुरुष स्वछन्द। बादर दुर कए उगि गेल चन्द।।4।।
भनइ विद्यापति सेबह सेओ। भवनरि सन्तरि पारए जेओ।।5।।

(1) हे नारी, तों सुकृतिक बाटक विघ्न थिकह। तों एतेक दिन हमर बैरी भेलह। (2) आब अपन सभ माया समेटि हमर रक्षा करह। आब मेघ हटल, चान उगि गेल। विद्यापति कहैत छथि, सेवा तनिक करह जे भवसागरसँ पार कए सकथि।

[596]

बुदा हे,
अबे सुखे सुतह निचीते। बएरनि भेलि तोरि नीन्दे।।1।।
तोह हम बाल सिनेह। दैवे कएल बिसलेह।।2।।
तोह सन पुनु हो......। आरति न रहलि हमारि।।3।।
विद्यापति कवि बोध। एहि ओहि परम विरोध।।4।।

(1) ....'', आब निश्चिन्त भए सुखसँ सूतह। एतेक दिन निद्रा तोहर वैरी भेल छलहु। (2) तोरा-हमरा बाल्य कालहिसँ स्नेह रहल। आब भाग्यवश विच्छेद भए गेल। (3) तोहरा सन फेर प्रेयसी होअओ। हम तोरा छोड़बाक हेतु आब विवश छी। (4) कवि विद्यापति बुझबैत छथि, एहि ओहि बीच (योग आ' भोग बीच) बड़ विरोध छैक।

[597]

बिसरल गुरुमुखे बाच। ताहि परे अवर कि साच।।1।।
बिसरल मानिक मोति। तिरिअ नयन के जोति।।2।।
सबे तन्त बिसरल तोहे। अबहु न संभव मोहे।।3।।
रे मिननाथ,
भनइ विद्यापति बोध। एहि ओहि परम विरोध।।4।।
रूपनराएन जान। बूझि बुझाओब आन।।5।।

(1) तों गुरुक मुहसँ जे उपदेश-वचन सुनलह से बिसरि गेलहु। ताहि वचनसँ उपर आओर किछु सत्य नहि थिक। (2) मुक्ता-माणिक्य बिसरह। कामिनीक नयनक ज्योति बिसरह। (3) आब सभ तन्त्र (मायाजाल) बिसरि जाह। आब फेर मोहमे फँसब असम्भव। (4) हे मीननाथ, विद्यापति बुझबैत छथि, एहि ओहि बीच (योग आ' भोग बीच) बड़ विरोध छैक। (5) रूपनारायण जनैत छथि। स्वयं बूझिकें अनका बुझएबाक चाही।

[598]

तञे मोर गोरख प्रथमक सीख। सेवाँ अएलाहे लेह असीख।।1।।
सबे अबे गुरु भगति पए जान। तोहे मोर गोरख प्रानसमान।।2।।
महादेवि देवी सबे होथु। जनपद जन पूजा गए लेथु।।3।।
तोह हम मीलि कहाउक जाउ। जाइ जोग सुखे पखान जे पाउ।।4।।
भनइ विद्यापति जोड़िअ हाथ। सङ्गम लागहि मछेन्द्रनाथ।।5।।

(1) हे गोरक्षनाथ, तों हमर पहिलुक (पट्ट) शिष्य थिकह। हमर सेवामे (हमरा उधारए) अएलह। ताहि लेल तोरा आशीर्वाद दैत छिअहु। (2) आब हम तोहर गुरुभक्ति नीक जकाँ जानि गेलहुँ(?)। हे गोरख, तों हमर प्राणतुल्य छह। (3) आब सभ रानी पटरानी होथु। प्रजाजनसँ पूजा पबैत रहथु। (4) हम आ' तों मिलिकें..........(?) जाएब। ओतए जाए योगजन्य सुख..........(?) पाएब। (5) विद्यापति कहैत छथि, मत्स्येन्द्रनाथ हाथमे हाथ जोड़ि चेलाक संग लागि गेलाह।

(8) प्रकीर्ण स्रोतक गीत

(क) विद्यापतिगीतसंग्रह, ग्रन्थ संख्या 6978, तालपत्र,
लिपिकाल ल.सं. 477 (1586)।

[599]

नयन निरोधि निहारि बुझओलह आबति(?) अपथ कि मोही।
वचन विलासें आस उपजओलह मनहु लाज नहि तोही।।1।।
सुन्दरि बूझलि तुअ परिपाटी।
सिचिये सुधारसे साहर लाओल निमहु चाहि हो घाटी।।2।।
आध पयोधर छले तोहे दसेलिहे फल दय बोल जनु नेहे।
गुपुत हास कये मन गहलह किये अबे छड़वितहु सँदेहे।।3।.
कत अग उगि कये पुलक बेकत भेल कबरी बंधलह फेरी।
उकुति अनाइसि हृदय आन बस कपट करह कति बेरी।।4।।
पहिलहि पेम अधिक उपजओलह जगत आगरि सबे काजे।
अबे अनुदिने धनि बोल उदासिन मदन मदे मोहि लाजे।।5।।
भनइ विद्यापति सुनह नागर जन के बोल अपनुकि रामा।
जतेओ जतन कए भजिअ दास भये दाहिन न लागए बामा।।6।।

1. साइ्कर पड़लिहे। 2. मान गह।

नायक नायिका पर उपेक्षाक आरोप लगबैत छथि — (1) एक समय तों दृष्टि स्थिर कए हमरा दिस ताकि बुझओलह जे.............(?)। वाग्विलास(मधुरवचन)सँ आशा देलह। तोरा कनेको (मनहुमे) लाज नहि छहु। (2) हे सुन्दरी, तोहर चालि हम बूझि गेलहुँ। अमृतसँ पटाए-पटाए सहकार (आमक गाछ) लगाओल, मुदा तकर फल नीमहुसँ बेसी तीत भेल। कोनो व्याजें तों अपन आधा स्तन देखओलह,.............(?)। गुप्त हास कए हमर-मनकें किएक पकड़ि लेलह? आब तकरा छोड़ाए सकब कि नहि, ताहूमे सन्देह। (4) तोहर अंगमे कतेक रास पुलक जागि-जागि

व्यक्त भेल। तों अपन केशपाश (खोपाकें) फेरसँ बन्हलह (एहि सभसँ हमरा प्रति प्रेम प्रकट कएलह)। मुदा वचनसँ आन-सन (अन्यादृश अर्थात् प्रेम देखाबएबाला छलहु आ' हृदय आन पुरुषक वशमे) छलहु। कपट कतेक बेरि करबह। (5) पूर्वमे बहुत प्रेम जगओलह; सभ काजमे आगाँ रहैत छलह। आब, हे सुन्दरी, दिन-दिन तोहर बोल उदासीन भेल गेलहु।...........(?) (6) विद्यापति कहैत छथि, हे नागरजन, सुनह। के कहत जे रामा (सुन्दरी) अपन थिक। कतबो यत्न कए दास भए ओकर सेवा करैत रहबह तैओ ओ वामे रहतहु, दहिन (अनुकूल) नहि होएतहु।

[600]

मनजनमा अरि तिलक वैरि वैरि ता वैरि आनन दासा।
ताहेरि बाह जत खाए मरति तत केवल तोहर उदेसा।।1।।
माधव दूसह तनु पचबाने।
चरमे दोषे पाडउलि सेहे बाला तिरिबध कर समधाने।।2।।
किदहु देवगण आनन धसि कहु मरति से अनल समाई।
अस बिसलेह अन्तपुर जाइति जुगजुग तुअ सुधि लाई।।3।।
अनजनमा हनि हलु तोहरि धनि ते जानल जिय साई।
भनइ विद्यापति सिवसिंह नरपति अवसर हलह बुझाई।।4।।

(1) मनजनमा मनोभव कामदेव, तनिक शत्रु शिव, तनिक तिलक चान, तनिक वैरी राहु, तनिक वैरी विष्णु, तनिक वैरी रावण, तनिक आनन दस अर्थात् विरहक दशम दशा मरणावस्था। आशय जे नायिका मरणासन्न अछि। ततबे नहि, ओ रावणकें जतेक बहु ततेक खाए मरत; अर्थात् विष खाए मरत आ' से केवल तोहरे उदेसमे। (2) हे माधव, ओकरा लेल कामदेवक पीड़ा (विरहव्यथा) दुःसह भए गेलैक। आब ओ बेचारी तोरा पर चरम (सभसँ पैघ) अपराधक (स्त्रीवधक) आरोप लगओतहु। ताहिसँ बचबाक उपाय सोचह। (3) भए सकैछ जे ओ देवताक मुहमे कूदिकें आगिमे समाए जाए। (ज्ञातव्य जे आगि देवताक मुख

मानल जाइत अछि, किएक तँ हुनका भोजन आगिअहिमे देल जाइत छनि)। तोहर विरहवश ओ अन्तिम नगर मृत्युलोक जाएत आ' ओतहु युग-युग तोहर ध्यान करैत रहत। मनजनमा कामदेव तोहर प्रेयसीकें मारैछ, ताहिसँ बुझाइछ जे कामदेव जिबितहि अछि। विद्यापति कहैत छथि, हे राजा शिवसिंह, अवसर रहैत कृष्णकें ई बात बुझाए दिऔन।

(ख) रागभजनसंग्रह [49]

[601]

रोपल मञे दमना पिआ करु गमना सौरभे नगर बेआपल ना रे की
X X X X X X X X।।1।।
जञो पिआ अओताहे[1] नएन जुडओताहे[2] मनमन्दिर देब बासे ना रे की।।
अधर मधुर रस जतए अमिञ बस दए पिआ हरब पिआसे ना रे की।।2।।
कुच सिरि फल लए भेट करब गए पेम पानि पाएर धोआओब[3] ना रे की।
कबि विद्यापति भन सरुप तोहर[4] मन सिरि सिवसिंह देब आओब ना रे की।।3।।

1. अओता। 2. जुडओता। 3. धोआएब। 4. मोरहु।

विरहिणी नायिका पतिक अएला पर कोना उल्लास करत तकर वर्णन करैत अछि – (1) हम दमनपुष्पक गाछ लगाओल (यौवनमे प्रवेश कएल) कि पिआ परदेस चलि गेल। एम्हर ओ गाछ फुलाए गेल तँ नगर गमगमाए उठल। ....। (2) जँ पिआ आओत तँ हमर नयन जुडाएत। ओकर मन-मन्दिरमे डेरा देब। अधर-रस जे अमृतसँ भरल अछि से अर्पित कए पिआक पिआस हरब। (3) स्तनरूपी बेल भोजन हेतु उपहृत करब। प्रेमरूपी पानिसँ पाएर धोआएब। कवि विद्यापति कहैत छथि, तोहर मन ठीके सोचैत छहु, श्री शिवसिंह अवश्य अओताह।

(ग) नानारागगीत

[602]

साजनि तैसन[1] करिअ परकार। जे चलि आबए कन्त हमार।।1।।
आनह साजनि लेखनि पात। लिखिए पठाओब अपनुकि बात।।2।।
हुनिक कुसल किछु अपनुक खेम। बिरह कसौटी कसिहथि पेम।।3।।
मातल मनमथ करमचंडार। एकलि सएन मोहि रहइते मार।।4।।
मझु रे कन्त नहि करुना लेस। एकहि नगर बसि रहए बिदेस।।5।।
सबहु पथुक कैर एकै सोभाब। गए परदेस पलटि नहि आब।।6।।
तबहु उपाए[3] करिअ अबधान। की न मिलए जओं रहए परान।।7।।
भनइ विद्यापति कै नहि जान। सिवसिंह लखिमादेवि रमान।।8।।

1. जानि। 2. हुनि रे। 3. ततहु जोगाए।

विरहिणी सखीसँ पत्र लिखबैत छथि — (1) हे सखी, एहन उपाय करह जे हमर पिआ घुरि आबथि। (2) कागत आ' कलम आनह। अपन बात (वेदना) ओकरा लिखिकें पठाएब। (3) पहिने हुनक कुशलक जिज्ञासा लिखह, तखन अपन कुशल-क्षेम। ओ विरहरूपी कसौटी पर प्रेमक जाँच करथु। (4) एतए क्रूरकर्मा चण्डलबा कामदेव बताह भए गेल अछि। ओ हमरा एकसरि सूतलि पाबि मारैत-पीटैत रहैत अछि। (5) हमर पिआकें कनेको दया नहि छनि। एहि देशमे रहितहुँ ओ लगैत छथि जेना बिदेसमे रहैत होथि। (6) सभ परदेसीक एके चालि — परदेस जाएत तँ घुरबाक नाम नहि लेत। (7) तैओ यत्न कए कोनो उपाय रचल जाए। जँ परान बाँचए तँ की नहि भेटए। (8) विद्यापति कहैत छथि, ई बात के नहि जनैत अछि। शिव·······।,

[603]

आबह सङ्ग सहेलिनि[1], चन्दन वन जाञो[2]।
चन्दनवन जुडि छाहरि, मेरि झूमरि गाञो[3]।।1।।
झूमरि गबइते चञ्चल, नगरी को बाला।

चञ्चल चरन सुनिअ कत[4], रुनझुन बाज ताला।।2।।
उतर लाटको सींदुर, दक्खिन को सारी।
सेह पहिरि आराधिअ, गौरी भण्डारी।।3।।
गौरि पुजिए बर माङ्गिए किए किए फल पाबे।
नब नेहा नब रितुपति नब बालँभु आबे।।4।।
नब नब कौतुक उपजए मोहि घर न सोहाबे।
X X X X X।।5।।
विधापति कवि गाओल झूमरि रसबन्ता।
राजा गरुडनराएन[5] हासिनिदेबि कन्ता।।6।।

1. सहेलरि। 2. जाउ। 3. गाउ। 4. उतर दक्षिण सुनिय। 5. गरुडनारायण रमनि को।

नायिका गौरीक आराधनमे झूमरि गएबाक हेतु सखीकें संग करैत छथि — (1) आबह हे सखी सभ, चलह चन्दनवन। चन्दनवनक शीतल छायामे झूमरि गाओल जाए। (2) झूमरि गबैत-गबैत नगरक तरुणी सभक वलय चंचल भए गेल। ओकरा सभक चंचल चरणमे खूब रुनझुन ताल सुनाइत अछि। (3) उत्तर दिशाक लाट देशक (बंगालक) सिन्दूर, दक्षिण देशक (काञ्चीपुरक) साड़ी, पहिरि गौरी भण्डारीक पूजा कएल जाए। (4) गौरीक पूजा कएने आ' वर मङने कोन-कोन फल भेटैछ? नब प्रेम, नब वसन्त ऋतु, नब पति भेटैछ। (5) झूमरि नचबा लेल ततेक उमंग चढि जाइछ जे घरो नहि सोहाइछ। .... (6) कवि विधापति ई सरस झूमरि गाओल। एकर रस बुझनिहार थिकाह हाँसिनिदेवीक पति राजा गरुडनारायण।

[604]

ए सखि ए सखि कि कहब लाज। सपने अपन पिआ आएल समाज।।1।।
खने-खने माङ्गए आलिङ्गन दान। करे कुच परस अधर कर पान[1]।।2।।
अम्बर चिरलन्हि तोड़लन्हि हार। कत कत कहब हुनक बेबहार।।3।।

कर धए तन्हि पिआ पुछलन्हि बात। मत्रे हँसि तन्हिक छोड़ाओल हाथ।।4।।
उच[2] कुच देलन्हि कत नखरेह[3]। अबहु पुलके पूरल मोर देह।।5।।
भनइ विधापति सुन बर नारि। पुरुब पेम गुनि आओत मुरारि।।6।।

1. अधर मधुपान। 2. उरे नख करे लेह।

नायिका सखीकें अपन स्वप्न-संगमक वर्णन सुनबैत छथि — (1) हे सखी, की कहबहु, कहबामे लाज होइत अछि। आइ राति सपनामे पिआ लग आएल। (2) खन आलिंगन माङए, खन हाथसँ स्तन छूबए, खन अधर-पान करए। (3) कपड़ा फाड़लक, हार तोड़लक; आओर की-की कएलक से कतेक कहबहु। (4) पिआ हाथ धए एकटा बात (संगमक इच्छा) पुछलक तँ हम हँसिकें ओकर हाथ छोड़ाए लेल। (5) ओ हमर पुष्ट स्तन पर बहुत नखक्षत कएलक। एखनहु देह रोमांचसँ भरल अछि। (6) विधापति कहैत छथि, हे सुन्दरी, सुनह। पूर्वक प्रीति स्मरण कए कान्ह अवश्य आओत।

[605]

साओन जलधर बरिसए मेघ। तोह बिनु एकलि रहए[1] निरथेघ।।1।।
ए हरि अबहु करिअ परकार। तोह बिनु बिरहिनि जिबन असार।।2।।
एके अबला अओके बिरहक खीनि। दक्खिन पबन बहए रिमिझीमि।।3।।
दक्खिन पबन सहए के पारे। ह्रदयहि लागु काम[2] कनिआरे।।4।।
भनइ विधापति के नहि जाने। आदर लागि नारि कर माने।।5।।
राजा रूपनराएन जाने। सिवसिंह लखिमा देवि रमाने।।6।।

1. लहउ। 2. काँद।

सखी कृष्णकें राधाक विरहदशा सुनबैत छथि — (1) साओन मासमे मेघ बरसि रहल अछि। राधा तोहर विरहमे एकसरि निश्चेष्ट पड़लि अछि। (2) हे कान्ह, आबहु एकर प्रतिकार करह। तोरा बिना विरहिणीक जीवन बेकार भए गेल छैक। (3) एक तँ अबला, ताहि पर विरहसँ

व्यथित। ताहू पर मलयपवन मन्द-मन्द बहैत। (4) के सहि सकैत अछि मलयानिल? ओ तँ कामदेवक बाण जकाँ ह्रदयमे चुभैत छैक। (5) विद्यापति कहैत छथि, ई बात के नहि जनैत अछि जे नारी अधिक आदर पएबाक हेतु मान करैत अछि। (6) एकर रस लखिमा……।

[606]

मानिक बैसाहल रतन पसार। मोर पिआ रसिआ गुन बनिजार।।1।।
दुहु दिस गान्थल रतन पमार। माझहि गाँथल पिआ-अनुराग।।2।।
नेतक[1] गान्थल टुटि फुजि जाए। नेहक बान्धल रह अरुझाए।।3।।
सुरभि समय भेल मजरु सहार। कत दिन भेल रहत[2] बनिजार।।4।।
भनइ विद्यापति सुन वर नारि। तुअ गुने लुबुधल आओत मुरारि।।5।।

1. नियरक। 2. लहल।

विरहिणी राधा कान्हक स्मरण करैत छथि — (1) गुणक (प्रेमक) बनिजार (सओदागर) रसिक पिआ रत्नक दोकानमे माणिक्य बेसाहलक। (2) तकरा दूनू दिस रत्न आ' मूँगा दए-दए आ' बीचमे प्रेमक सूत दए हार गाँथल। (3) नेत (एक प्रकारक रेशमी सूत) सँ गाँथल हार टूटि-फूजि जाइत अछि, किन्तु प्रेमक सूतसँ गाँथल ग्रथिते रहि जाइछ (कहिओ नहि टुटैछ)। (4) वसन्त आएल। आम मजरल। जानि नहि, पिआ कतेक दिन बनिजार भेल रहत। (5) विद्यापति कहैत छथि, हे सुन्दरी, सुनह। तोहर गुण पर लोभाएल कान्ह अएबे करत।

[607]

सिब हे भलि अनुगति फल भेला।
एतए सङ्गति एति[1] परतर कओन गति मनोरथ मनहि रहला।।1।।
तोहें होएबह परसन पाओब अमोल धन जनम बहल[2] तें आसे।
जमक सङ्कट पुनु[3] उपेखि हलह जनु सेओल हे बडे परेआसे।।2।।
नएन स्रवन गेल तनु अबसन भेल जदि तोहें होएब परसने।

कि करब तति खने हय गज मनि धने[4] झँखैते बेआकुल मने।।3।।
हरि कमलासन इन्द चान्द गन सबे परिहरि हमे देबा।
भगत बछल हर बान[5] महेसर से जानि कइलि तुअ सेबा।।4।।
भनइ विद्यापति सुनह महेसर जनु होअ जम अवसादे।
हरह हमर दुख तथुहु तोहर सुख सबे होअ तुअ परसादे।।5।।

1. अति। 2. खपलिँ। 3. शिव। 4. संपद। 5. सुनि।

कवि जीवनसँ विरक्त भए शिवक स्तुति करैत छथि — (1) हे शिव, अनुगतिक (भक्तिक) परिणाम नीक भेल। एतए (एहि जीवनमे) बहुत संगति (प्रेम) भेटल। आगाँ जानि नहि कोन गति होएत। आब सेह मनोरथ मनमे रहल। (2) तोँ प्रसन्न होएबह, अमूल्य धन पाएब, एही आशामे जीवन बीतल। यमराजक आगाँ जे संकट उपस्थित होएत तकर उपेक्षा नहि करबह। बड़ यत्नसँ तोहर सेवा कएल। आँखि गेल, कान गेल, देह खसल। जँ तोँ प्रसन्न होएबह तँ हाथी, घोड़ा, धन-सम्पति लए की करब। चिन्ता करैत मन व्याकुल रहैत अछि। (4) विष्णु, ब्रह्मा, इन्द्र, चन्द्र, गणपति सभ देवताकेँ छाड़ि हम बाणेश्वर महादेव भक्तवत्सल छथि ई बूझि तोहर सेवामे लगलहुँ। विद्यापति कहैत छथि, हे महादेव, सुनह। एहन उपाय करह जे यमराजक यातना नहि होअए। हमर दुख हरह। एहीमे तारहु सुख छहु (भक्तक सुख भगवानक सुख)। तोहर प्रसादेँ सभ सम्भव अछि।

[608]

साजनि से दिन बेगे बहला।
आनन मोर निहारैते सतत पथुक पथँ रहला।।1।।
जोखल तौलल आनि निकुति घटल बाढ़ल थोरे[1]।
से सब जरा चोर चोराओल पुनु कि आओब मोरे[2]।।2।।
सेहे जुबजन बाहर होइते बारल लोचन हेरि।
सायन जाइअ लगन पाइअ नामो लए कत बेरि।।3।।

1. मोरे। 2. तोर।

नायिका अपन वार्धक्य पर विलाप करैत छथि — (1) हे सखी, ओ दिन (यौवन काल) द्रुत गतिएँ बीति गेल। ताहि दिन पथिक सभ हमर मुह देखैत बाटमे ठमकि जाइत छल। (2) अपन यौवन (सौन्दर्य) कें निकुती आनि जोखैत-तौलैत रहलहुँ जे (सौन्दर्य) घटल कि बढ़ल। आब तँ से सभ किछु वार्धक्यरूपी चोर चोराए लेलक। आब हमर ओ रूप घुरि नहि आओत। (3) आब ओएह युवा पथिक लोकनि बाहर होइत छी तँ देखिकें नजरि फेरि लैत छथि। सम्मुख जाइत छी, कए बेरि नामो लैत छी तैओ लग नहि अबैत छथि।

[609]

ए सखि ए सखि जनु लए जाह। मञे बड़ि बालिका अरतल नाह।।1।।
दुबर देह मोर झापल चीर। जनि डगमग नलिनी दल नीर।।2।।
पास जाइते सखि जिव मोर काँप। काँचौं कमल भमर करु झाँप।।3।।
सहए न पारिअ जीवक साति। कओने बिहि सिरजलि पापिनि राति।।4।।
भनइ विद्यापति एहु रस जान। सिवसिंह लखिमादेवि रमान।।5।।

नवयौवना नायिका संगम-भय सखीसँ सुनबैत अछि — (1) हे सखी, हमरा पिआ लग नहि लए जाए। हम नवयौवना छी आ' पिआ अरतल (आतुर) छथि। (2) हमर देह दुर्बल अछि। तकरा चीरसँ झपने छी। देह पुरइनिक पात पर पानि जकाँ डगमग करैत अछि। (3) हुनका लग जाइत हमर प्राण कँपैत अछि। जेना काँच (अविकसित) कमल पर भ्रमर आक्रमण करए। (4) सहि नहि होएत ओ आक्रमण। प्राण संकटमे पड़त। जानि नहि कोन विधाता एहि पापिनी रातिक सृष्टि कएलनि। (5) विद्यापति कहैत छथि, एहि रसक ज्ञाता थिकाह लखिमादेवीक पति राजा शिवसिंह।

[610]

पाउस रजनि पिआ परबासहिं तें बड़ि सुमुखि अबसऽनि।
कि आरे कि करति कमल बदऽनि।।1।।
दिने-दिने खिन देह पहु बिसरल नेह जीउति कञोने उपाई।
चान्दन अनल सम चान्द गरल बम चान्द चान्दन न सोहाई।।2।।
गगने उठलि धुनि भमर नाद सुनि कामिनि[1] हृदय उठु आगी।
डेगा एक दुइ चलु[2] धरनि मुरुछि पढ़ु होएत के बधभागी[3]।।3।।
भनइ विद्यापति सुनह सुमुखि दुति होएब[4] बिरह नरि पारे।
राजा सिबसिंह रूपनराएन तन्हिहि धएल कइहारे।।4।।

1. नलिनी। 2. गेलि। 3. बधहु होयत के भागी। 4. अयलहु। 5. धयल।

दूती नायिकाक विरह-वर्णन करैत अछि — (1) वर्षाक राति। पिआ प्रवासमे छैक। तें सुन्दरी बड़ व्याकुल अछि। हाए, कमलमुखी कोन उपाए करत। (2) देह दिन-दिन क्षीण भेल गेलैक। पिआ प्रीति बिसरि देलकैक। कोन उपायसँ जीबि सकत? चानन आगि-सन लगैत छैक। चान जहर बरिसबैत अछि। ने चान सोहाइत छैक, ने चानन। (3) आकाशमे उठल ध्वनि (मेघक गर्जन) आओर भ्रमरक गुंजन सुनिकें नायिकाक हृदयमे आगि उठि जाइत अछि। एक-दुइ डेग चलैत अछि कि मूर्छित भए धरती पर खसि पड़ैत अछि। जँ मरि जाएत तँ वध ककरा लगतैक? (4) विद्यापति कहैत छथि, हे सुन्दरी दूती, सुनह, नायिका विरहरूपी नदी पार करवे करत, किएक तँ राजा शिवसिंह रूपनारायण स्वयं करुआरि धएलनि।

(घ) रमानाथ झा, JGRI, Vol. II, 1945, P.408

[611]

कूढ एकाङ्गी एकल बीर। बच चितउर जैन्तिक सीर।।1।।
पीसि देबओ हरितारी पान। होएबह घिआ जमाइ परान।।2।।
जोग जुगुति सुनह घिआ। नहि परबस होअ पिआ।।3।।
गुर गुगुर आओ बहेला। माकर माछी मण्डप चेला।।4।।

सानि महेसर जारब आगि। पहु हुड़करब तोरा लागि।।5।।
अञ्जय आँखि परेबा पीत। होएबह पिअ जमाइक हीत।।6।।
नयन काजरे करब पान्ति। हाकब पहु परेबा भान्ति।।7।।
भन विद्यापति कहल सार। जोगक बान्धल थिक संसार।।8।।
राजा रूपनराअन जान। सुखे सुखमादेबि रमान।।9।।

कन्याक माए बेटीकें जोग (वशीकरणक टोना) सिखबैत छथि — (1) कूढ़, एकाङ्गी, एकळ आओर बीर (केशक पातक अविकसित पात), बच, चितौर आओर जयन्तीक सीर, हरितालीक संग पीसिकें पिआए देबहु तँ हे धिआ, तों पतिक प्राणतुल्य पिआरि भए जएबह। (3) हे बेटी, जोग(वशीकरण)क युक्ति सुनह। ई जोग कएने पिआ कहिओ आन नारीमे अनुरक्त नहि होएतहु। (4) गुड़, गुग्गुल, बहेड़, माकरमाछी, मण्डप, चेला ई सभ सानि आगिमे जरएबह तँ पिआ तेना पाछु लगतहु जेना गाइक पाछाँ बाछा। (6) परबाक पितसँ आँखि अँजबह तँ हे धिआ, जमाइक पिआरि होएबह। (7) एकर काजरसँ जँ आँखिमे रेखा करबह तँ पिआकें पोसा परबा जकाँ हँकबह। (8) विद्यापति ई मूल्यवान् बात कहैत छथि। ई संसार योगसँ (पारस्परिक संयोजनसँ) बन्हाएल अछि। (9) एकर रहस्य सुषमादेवीक पति राजा रूपनारायण नीक जकाँ जनैत छथि।

भाग द्

अर्वाचीन स्रोतक गीत

(9) ग्रिअर्सन द्वारा संगृहीत

[612]

कर धए करु मोहि पारे। देब मञे[1] अपरुब[2] हारे।।1।।
सखि सबे[3] तेजि चलि गेली। न जानु कओन पथ भेली।।2।।
हमे न जाएब एहि बाटे[4]। जाएब अओघट घाटे।।3।।
विद्यापति एहु भाने। गूजरि[5] भजु भगवाने।।4।।

पा.1. मैं। 2. अपरूप। 3. सभ। 4. तुअ पासे। 5. गुंजरी।

दानलीलाक गीत। प्रसिद्ध भाव। दान थिक बटबारि (चुंगी) वा घटबारि (खेवा)। मूल 416 तअ पासे मे छन्द टूटैत अछि, तें पाठ अनुमान सँ बदलल।

[613]

सरस बसन्त समय भल पाओल दछिन पवन बहु धीरे।
सजनि सरुप[1] बचन एक भाखिअ मुख सञो दुर करु चीरे।।1।।
तोहर बदन सन चाँद होअथि नहि जइओ जतन बिहि देला।
कए बेरि काटि बनाओल नब कए तइओ तुलित नहि भेला।।2।।
लोचन तूल[2] कमल नहि भए सक से जग के नहि जाने।
से पुनु[3] जाए नुकाएल जल भए पङ्कज निज अपमाने।।3।।
भनइ विद्यापति सुनु बर जौबति ई सबे लखन[4] समाने।
राजा सिबसिंह रूपनराएन लखिमादेवि रमाने[5]।।4।।

1. सजनि सरूप। 2. तूअ। 3. पैरि। 4. लछमि। 5. दइ प्रति माने।

नायिकाक प्रति नायकक चाटूक्ति (पोल्हएबाक हेतु प्रशंसा)। (1) पाओल - सम्प्रास भेल। एकटा सत्य बात कहैत छी से सुनह। (2) तुलित - बराबरी करबामे समर्थ। (4) लखन - लक्षण, विशेषता। चान आ मुह, आँखि आ' कमल एहि सभमे जे विशेषता देखाओल से सभ समान अछि। व्यतिरेक/उत्प्रेक्षा नहि, उपमा।

[614]

देखलि कमलमुखि कोमल देह। तिलाएक लागि कत उपजल नेह।।1।।
नूतन मनसिज गुरुतर लाज। बेकत प्रेम कत करए बेआज।।2।।
खन तेजए खन आबए[1] पास। न मिलए मन भरि न होए[2] उदास।।3।।
नयनक गोचर चिर नहि होए। कर धरइते धनि मुख धरु गोए।।4।।
विद्यापति कवि एहो रस गाब। अभिनब कामिनि जुगुति[3] बुझाब।।5।।

1.खन परितजय खन पाब (छन्द टूटल) 2. भनहिं विद्यापति (भनइ आ' गाब पुनरुक्ति)। 3. उक्ति।

नायक नायिकासँ मिलनक वर्णन सखीकें सुनबैत छथि -- (1) तिला एक-छन भरि। (2) मनसिज - कामदेव। प्रेम स्पष्ट छल, तैओ ओ तकरा छिपबए। (4) नयनक गोचर -- आँखिक सोझाँ। गोए -- छिपाए। (5) नवयुवती अपन मनक भाव सोझे नहि, कोनो युक्ति (संकेत) सँ बुझबैछ।

[615]

तीनिक ते सर तीनिक बाम। तीनिक तेसर धनि केर ठाम।।1।।
तीनि तीनि कए रोखलि फूल। तीनिकतेसर माधब भूल।।2।।
तीनितीनि कए उठलहि भागि। तीनिक तेसर माधब साखि।।3।।
भनइ विद्यापति तीनिहु नेह। नागर कों थिक नारिसिनेह।।4।।
ई थिक पिहानी। अर्थ लगएबाक प्रयास कतोक विद्वान् कएल, किन्तु हृदयग्राह्य नहि होइछ। दूती नायक कें कहैत अछि—

[616]

माधब आब न जीउति राही।
जतबा जकर[1] लेने छलि सुन्दरि से सबे सोपलक ताही।।1।।
आनन ससिमुखि ससिकें सोपलन्हि हरिनकें लोचन लीला।
केस पास चामर कों सोपलन्हि पाए मनोभव पीळा।।2।।
दसन बीज दाळिमकें होपलन्हि पिककें सोपलन्हि बानी।
देहदसा दामिनिकें सोपलन्हि ई सभ अइलिहुँ जानी।।3।।
हरि हरि कए पुनि उठथि धरनि धरि रइनि गमाबथि जागी।
तोहर सिनेह जीब दए जापथि रहलिहि धान एत लागी।।4।।
भनइ विद्यापति सुनु मथुरापति गमन न करिअ बिलम्बे।
जाए पिआबिअ अधरसुधारस तो पए सुन्दरि[2] जीबे।।5।।

1. जनिकर (छन्द ओ व्याकरण)। 2. जीबथि।

दूती कृष्णकें राधाक विरहदशा सुनबैत अछि -- (1-4) राधा आब नहि जीतीह। जकरासँ जे लेने छलीह (पैंच-उधार) से तकरा सुनझाए देलनि -- चानकें मुह, हरिणकें आँखि, चामर मृगकें केस, दाँत दाडिमकें, बोल कोकिलकें, देह बिजुलीकें। (4) प्राण-पणसँ तोहर स्नेह जपैत रही, इएह सोचि राधा एखन धरि जीबैत छथि।

[617]

बिहि मोर परसन भेल। जदुपति[1] दरसन देल।।1।।
देखल बदन अभिराम। पुरल सकल मन काम।।2।।
जागि उठल पँचोबान। बस[2] नहि रहल गेआन।।3।।
भनइ विद्यापति भान। सुपुरुख न कर निदान।।4।।

1. रघुपति। 2.बसि।

राधा कृष्णक दर्शनक सुसमाचार सखीकें सुनबैत छथि -- (1) विधाता प्रसन्न भेलाह। यदुपति कृष्ण दर्शन देलनि। (2) हुनक सुन्दर मुह

देखल। मनक सभ कामना पूर भेल। (3) कामदेव जागि उठलाह। ज्ञान (मन) वशमे नहि रहल।

[618]

सुन्दरि कह कह न कर बेआजे।
पुरुब सुकृत फल केदहु पाओल मदन महासिधि आजे।।1।।
मृगमद तिलक अगर अनुलेपह[1] सामर बसन समारि।
हेरह दिसि दिसि कखन होएत निसि गुरुजन नयन निहारि।।2।।
बिनु कारन गृह करह गतागत मूनि नयन अरबिन्दा।
घन पुलकित[2] तनु बिहुसि अकामिक जागि उठसि सानन्दा।।3।।
चेतन साथ लाथ नहि सम्भव विद्यापति कवि भाने।
राजा सिवसिंह रूपनराएन सकलकला रस जाने।।4।।

1. अनुलेपित। 2. पुलकित [छन्द]।

सखी नायिकासँ प्रतिक हाल पुछैत छथि -- (1) हे सुन्दरी, ठीक ठीक कहह। छल नहि करह। की तोँ सते पूर्व जन्मक पुण्यक बलेँ आइ मदन महासिद्धि (प्रेमी कृष्णकेँ) पाबि गेलह? लक्षण तँ एहने सन लगैछ। (2) तोरा अन्हरिआ रातिमे अभिसार करबाक छह्, तेँ कस्तूरीसँ पसाहिन कएलह, देहमे अगरक लेप लगओलह आ' कारी चीर पहिरलह अछि। (3) बिनु कारणहि आँखि मूनिकेँ घरमे चलबाक पूर्वाभ्यास करैत छह। देह रोमांचित छह्। अकस्मात् आनन्दित भए बिहुँसिकेँ जागि उठैत छह। कृष्णाभिसारिका नायिका।

[619]

माधव कि कहब सुन्दरि रूपे।
कतन रतन[1] बिहि आनि समारल देखल[2] नयन सरूपे।।1।।
पल्लवराज चरनजुग सोभित गति गजराजक भाने।

कनक कदलिपर सिंह समारल तापर मेरुसमाने।।2।।
मेरु उपर दुइ कमल फुलाएल नाल बिना रुचि पाई।
मनिमय हार धार बहु सुरसरि तेँ नहि कमल सुखाई।।3।।
अधर बिम्ब सन दसन दाड़िम बिज रबिससि ऊगथि[3] पासे।
राहु दूर बसु निअर न आबथि तेँ नहि करथि गरासे।।4।।
सारङ्ग नयन बयन[4] पुनु सारङ्ग सारङ्ग तसु समधाने।
सारङ्ग उपर उगल दस सारङ्ग केलि करथि मधुपाने।।5।।
भनहि विद्यापति सुन बर जौबति एहनि जगत नहि आने।
राजा सिबसिंह रूपनराएन लखिमादेवि रमाने[5]।।6।।

1.कतेक जतन। 2. देखलि (व्याकरण) 3. उगथिक (अर्थ)। 4. दइ प्रति 5.भाने।

सखी कृष्णकेँ राधाक सौन्दर्य सुनबैत छथि -- (1) हे कान्ह, सुन्दरी राधाक रूप की कहिअहु। अपन आँखिसँ प्रत्यक्ष देखि अएलहुँ अछि। विधाता नाना रत्न बटोरि राधाक रूप सजाओल। (2) चरण पल्लव-सन, गति गजराजक सन। सोनाक कदलीस्तम्भ (जाँघ) पर, सिंह (कटि) केँ सजाओल, तकरा उपर मेरु (नितम्ब), (3) ताहि पर दुइ कमल (स्तन) बिनु नालक सोभैछ। हार रूपी गंगा बहैछ तेँ कमल नालरहित होइतहुँ सुखाइछ नहि। (4) अधर तिलकोरक फड़-सन, दाँत दाडिमक दाना-सन। सूर्य (सिन्दूरक ठोप) आ' चान (चान नक ठोप) एक ठाम लगेलग उगल छथि। राहु (केस) दूर अछि, लग नहि अबैछ; तेँ चानकेँ गिड़ैत नहि अछि। आँखि हरिणक सन, वचन कोकिल-सन, कटाक्षमे मदन, भऔंहक उपए दस गोट भ्रमर (लट) अछि जे केलिपूर्वक मधुपान करैछ।

[620]

जाइते देखलि पथ नागरि सजनि गे आगरि सुबुधि सेआनि।
कनकलता सनि सुन्दरि सजनि गे विहि निरमाउल[1] आनि।।1।।
हस्ति गमन जकाँ चलइते[2] सजनि गे देखइते[3] राजकुमारि।

जनिकर एहनि सोहागिनि सजनि गे पाओल पदारथ चारि।।2।।
नील वसन तन घैरल[4] सजनि गे सिर लेल चिकुर समारि[5]।
तापर भमरा पिबए रस सजनि गे बइसल पाँखि[6] पसारि।।3।।
केहरि सम कटिगन अछि सजनि गे लोचन अम्बुज धारि।
विद्यापति एह गाओल सजनि गे गुन पाओल[7] अवधारि।।4।।

1.निरमाओल। 2. चलइति (एकारमे इकारक भ्रम)। 3. देखइति। 4. घेरलि (व्याकरण) 5. ससारि। 6. पंख। 7. पाओल।

सखी राधाक रूपवर्णन दोसरि सखीकें सुनबैत छथि -- (1) आगरि – अग्रगण्य। जेना विधाता (स्वर्गसँ सामग्री) आनिकें रचल। (2) चारि पदारथ - धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। (4) केहरि - सिंह। अम्बुज - कमल।

[621]

माधव जाइते[1] देखलि[2] पथ रामा।
गरुडासन सख तातक वाहन ता सम गति अभिरामा।।1।।
दच्छसुता चारिम पति भगिनी तनय घरनि सम रूपे।
सुरपति अरि दुहिता पति बैरी तैं भरि भेलि अनूपे।।2।।
अदिति तनय वैरी गुरु चारिम तासम आनन काँती।
कुम्भ तनय तसु असन तनय तसु कोख बैसाओलि पाँती।।3।।
नन्द घरनि तनया तसु वाहन तासम माझक छीनी।
कामधेनु पति ता पति प्रिय फल उरज हलल[3] जनि जीनी।।4।।
भनहि विद्यापति से[4] बरजौबति अपरुब रूपक रङ्गे।
रावन अरि पतनी तातक तय तासह पाबिअ सङ्गे।।5।।

1.जाइते। 2. देखल। 3. हनल। 4. सुन।

सखी राधाक रूपवर्णन कृष्णकें सुनबैछ -- (1) ओकर गति गरुडासन (कृष्ण) क सखा (अर्जुन) क पिता (इन्द्र) क वाहन (ऐरावत) क समान सुन्दर अछि। (2) ओकर रूप दक्षक चारिम बेटी (रोहिणी) क पति (सोम)

क बहिनि (रुक्मिणी - लक्ष्मी) क पुत्र (प्रद्युम्न = कामदेव) क पत्नी (रति) क समान अछि। सुरपति (इन्द्र) क शत्रु (हिमालय) क बेटी (पार्वती)क पति (शिव) क वैरी (कामदेव) क अपेक्षा अधिक सुन्दरि, तें राधा अनुपम भेलि (अर्थ अस्पष्ट)। (3) ओकर मुखक कान्ति अदितिक पुत्र (देवता) क वैरी (दैत्य) क गुरु (शुक्र) क बादक चारिम (चान) क समान अछि। कुम्भतनय (अगस्त्य) क भक्ष्य (समुद्र) क पुत्र (मोति) केर पाँती (बैसाओल अछि, अर्थात्) अर्थात् ओ मुक्ताक हार पहिरने अछि। (4) नन्दधरनि (यशोदा) क कन्या (माया, दुर्गा) क वाहन (सिंह) क समान क्षीण अछि। ओकर कटि। कामधेनुक पति (वृष) क पति (शिव) क प्रिय फल (बेल) कें मानू ओकर स्तन जीति लेल (मूलमे जीनि हलल)। विद्यापति कहैत छथि, ओहि श्रेष्ठ युवतीक रूपरङ्ग अपूर्व अछि। रावणक शत्रु (राम) क पत्नी (सीता) क पिता (जनक) क समान तपस्या कएलासँ ओहि युवतीक सङ्ग प्राप्त भए सकैत अछि।

[622]

माधव देखलहुँ तुअ धनि आजे।
X X X X X X X X X X।।1।।
भुतल नृपति सुत वसु तनया पति तातक तातक रामा।
तसु तातक सुत तनिकर उपमेय सेहो थीक ओहि ठाम।।2।।
दीस निगम दुइ आनि मिलाबिअ ताहि दिअ विधिमुख आधो।
से लए आदि आधि रस मङइछ[2] एहनि रमनि तुअ माधो।।3।।
पण्डित कों पठ जड कों पाहन इङ्गित गोरख धन हारी।
भनहि विद्यापति सेह चतुरजन जे बूझत अवधारी।।4।।

1. एक पाँती लुप्त अछि (अन्त्यानुप्रास)। 2. मंगैअछि।

सखी कृष्णकें राधाक रूपकक वर्णन सुनबैत छथि -- (1) हे माधव, आइ तोहर सखी राधाकें देखल। ....। (2) भुवनक

राजा (बलि) क पुत्र (बाणासुर) क कन्या (उषा) क पति (अनिरुद्ध) क पिता (प्रद्युम्नक) क पिता (कृष्ण) क पत्नी (लक्ष्मी) क पिता (समुद्र) क पुत्र (चान), तकर जे उपमेय (राधा) से ओतए उपस्थित अछि। (3) दिशा (10) निगम (4) एहि दुनू अंककें जोड़ू, ताहिमे ब्रह्माक मुखक आधा (2) दिऔक से लएकें (सोलहो सिङार लएकें) अपनाकें सजाए... (?) हे माधव, तोहर रमणी एहन सुन्दरी छहु। (4) ई पिहानी पण्डितक हेतु पठ (?) थिक, मूर्खक हेतु पाथर। ई गीत गोरख (धन्धा द्वारा) धनहारी थिक (?)। विद्यापति कहैत छथि, जे ई गीत बूझए से चतुरजन।

[623]

माधव जाइते देखलि पथ रामा।
अबला अरुन तरागन बेढ़ल[1] चिकुर चामर अनुपामा।।1।।
जलनिधि सुत सम बदन सोहाओन सिखर बीज रद पाँती।
कनक लता जनि फड़ल सिरीफल बीहि रचल बहुभाँती।2।।
अजयासुर[2] रिपुवाहन जेहन ता सम चलु जिमि राही।
सागर गरह साजि वर कामिनि चललि भवन पथ ताही।।3।।
खगपति तनय तासु[3] रिपुतनया तागति जेहन समाने।
हर वाहन तेहि हेरइते हेरलन्हि कवि विद्यापति भाने।।4।।

1.बेढ़ल। 2. अजेआसुत। 3. तासु।

सखी कान्हकें राधाक रूपवर्णन सुनबैत छथि -- (1) हे कान्ह, बाटमे राधाकें जाइत देखलहुँ। राधाक केशराशि अरुण (लाल ठोप) आ तारागण (मुक्ताहार) सँ बेढ़ल चामर सदृश अनुपम छल। (2) ओकर मुख समुद्रक पुत्र (चान) क समान सुन्दर छल। दाँत सिखरक (?) बीआ सन। मानू कनकलता (देह) मे श्रीफल (स्तन) फड़ल हो। ब्रह्मा ई बड़ कौशलसँ रचलनि। (3) अजयासुरक शत्रु (दुर्गा) क वाहन (सिंह) जेना चलैछ तेहने सुन्दरीक गति छल। सागर (सात) आ' ग्रह (नओ) सोलह सिङार साजि

अपन भवन दिस जाइत छलि। (4) राधाक गति तेहन छल जेहन खगपति (चन्द्र) क पुत्री (मोति) क शत्रु (हंस) क। हरक वाहन... (?)।

टि. -- पिहानी थिक। अर्थ कोनहुना बैसाओल।

[624]

पइरि मत्रे अइलिहुँ[1] तरनि तरङ्ग। पअ[2] लागल कत सहस भुजङ्ग।।1।।
निसिथ निसाचर सञ्चर साथ। भागे न मोहि केओ धएलन्हि हाथ।।2।।
एत कए अइलिहुँ जीव उपेखि। तइअओ न भेल मोहि माधव देखि।।3।।
तनि नहि पढ़लन्हि मनमथ रीति। पिसुन बचन कएलन्हि परतीति।।4।।
दूती दम्पति दुअओ अबोध। काज आलस दुहु परम बिरोध।।5।।
भनहि बिद्यापति सुन बरनारि। धैरज धए रह मिलत मुरारि।।6।।

1. पएरहि अयलहुँ। 2. पगु।

विप्रलब्धा राधा सखीसँ अपन वेदना कहैत छथि -- (1) नदीक प्रखर धारकें पार कए मिलए अएलहुँ। सहस्र सहस्र साप पर पाएर पड़ल। (2) रातिमे निशाचर सभ संग लागि जाइत छल। भाग्यवश केओ हाथ नहि धएलक। (3) प्राणक उपेक्षा करैत एना-एना संकेत स्थल पहुँचलहुँ। हाए, तैओ कान्हक दर्शन नहि भेल। (4) की ओ कामदेवक रीति (प्रीतिक व्यवहार) नहि पढ़ने छथि? लगैत अछि, ओ कोनो पिशुनक फेरमे पड़ि गेलाह। (5-6) विद्यापति कहैत छथि, जेहने दूती अबोध, तेहने राधा ओ माधव। काज आ' आलस्य दूनूक बीच बड़ विरोध छैक। हे सुन्दरी, सुनह; धैर्य धएने रहह; मिलन होएबे करतहु।

[625]

कुञ्ज भवन सत्रो निकसलि[1] हे रोकल गिरिधारी।
एकहि नगर बसु माधव हे जनु करु बटमारी[2]।।1।।
छाड़ कान्ह मोर आँचर हे फाटन नब सारी।
अपजस होएत नगाक भरि हे जनु करिअ उघारी।।2।।

सड्गक सखि अगुआइलि हे हमे एकसरि नारी।
दामिनि आए तुलाइलि हे एकराति अन्धारी।।3।।
भनइ विद्यापति गाओल हे सुनु गुनमति नारी।
हरिक सड्ग किछु डर नहि हे तोहें परम गमारी।।4।।

1. चलि भेलि। 2. बटबारी।

कवि केलि-कलहक वर्णन करैत छथि। पहिल पाँती कविक उक्ति, तदुत्तर राधाक उक्ति। (1) बटमारी - बाटमे बटोही सभकें मारिकें धन लुटनिहार डकैत बटमार कहबैत छल। (3) दामिनि - राति।

[626]

काननें कान्ह कान हम सूनल भए गेल आनक आने।
हेरइते[1] सड्कर रिपु मोहि हरलन्हि कि कहब तनिक गेआने।।1।।
सात पाँच हम लीखि पठाओल बहुबिधि लेखनि बनाई।
से पुनि नाथ पाँच जब रखलनि दुइ फेरि देलनि मेटाई।।2।।
चानन सगर[2] आँग हमे लेपल तैंहि बाढल अति तापे।
अधर लोभ सओ बिसधर ससरल धरए धाओल सेहे सापे।।3।।
भनइ विद्यापति दुहुक मुदित मन मधुकर लोभित केली।
असह सहति कत कोमल कामिनि जामिनि जिब दए गेली।।4।।

1. हेरैति। 2. चान।

राधा अपन व्यथा व्यक्त करैत छथि -- (1) कानमे सुनल जे कान्ह वनमे छथि; किन्तु भेट की होएत, आनक आने भए गेल। हुनका दिस तकितहि कामदेव पछाड़ि देलनि; हुनक चालि की कहल जाए। (2) कोनहु ना लेखनी बनाए हम हुनका लिखि पठओलहुँ सात आ पाँच (बिख खाए मरब; जँ नहि आएब) ताहिपर कान्ह पहिने तँ पाँच लिखलनि (नहि आएब), परन्तु फेर दू अक्षर (नहि) काटि देलनि। अएबाक आश्वासन देलकि। (3) चानन सगर देहमे लेपल, मुदा ताहिसँ ज्वाला बढ़िए गेल।

अधरपानक लोभें साप (वेणी) ससरि आएल; परन्तु तकरा हम साप बूझि पकड़ए चाहल।

[627]

कौतक चललि भवन कए[1] सजनि गे सड्ग दस चौंदिस नारी।
बिच बिच सोभित सुन्दरि सजनि गे जनहि[2] घर मिलत मुरारी।।1।।
लए अभरन कए सोड़स सजनि गे पहिरि उतिम रड्ग चीर।
देखि मदन[3] मन उपजल सजनि गे मुनिहुक चित नहि थीर।।2।।
नील बसन तन घेरलि सजनि गे सिर लेल घोघट सारी।
लगलग पहुके चलइत सजनि गे सँकुचए अड्कम नारी।।3।।
सखिसभ देलि भवन कए सजनि गे घुरि आइलि सभ नारी।
कर धए लेल पहुलग कए सजनि गे हेरे वदन उधारी।।4।।
भय बड़ सनमुख बोलए सजनि गे लागल करए बिलासे।
बएस जुगल समुचित[4] थिक सजनि गे दुज मन परम हुलासे।
बिद्यापति एहो गाओल सजनि गे ई थिक बड़ रसरीती।
X X X X X X X X X ।।6।।

1. कैं। 2. जनि। 3. सकल। 4. सन चित।

कवि अभिसारक वर्णन करैत छथि। अभिसार राधाक नहि, आजुक नय परिणीताक सन लगैछ। अर्थ स्पष्ट। (1) कौतुक - उल्लासपूर्वक। (2) सोड़स - सोलह सिड्गार। (3') अड्कम - आलिंगन। (5) दुज - दुहुक।

टि. -- मिगीसं. मे ई गीत चन्द्रकविक नामें अछि।

[628]

सुन्दरि चललिह[1] पहु घर ना। चहुदिसि सखि सभ धरु कर[2] ना।।
जइतहु[3] लागु परम[4] डर ना। जइसे काँप ससि राहुडर ना।।
जइतहि हार टुटिए गेल ना। भूखन बसन मलिन भेल ना।।
अदैंकहि सैंदुर मेटाए[5] गेल ना। रोए रोए काजर बहाए देल ना।।
भनइ विद्यापति गाओल ना। दुख सहि सहि[6] सुख पाओल ना।।

1. चललिहि। 2. कर धरि। 3.जैतँहि। 4. परेम। 5. मेट। 6. सहिजँ।

कवि अभिसारक वर्णन करैत छथि। परम सरल आ' स्वाभाविक।

टि.-- मिगीसं. मे ई नन्दीपतिक कहल गेल अछि।

[629]

प्रथमहि गेलि धनि पिअतम पासे। इदय अधिक भेल लाज तरासे।।1।।
ठाढ़ि भेलि धनि[1] आङ्ग न डोले। हेम मुरुति सनि मुख नहि बोले।।2।।
कर धए लेल पहु पास बैसाए। बैसलि रहलि धनि बदन झुकाए[2]।।3।।
मुख हेरि तकइते धनि[3] झाँपि लेल। आकम भरिए[4] कमलमुखि लेल।।4।।
भनहि बिद्यापति देह सुमति। रस बुझ हिन्दूपति हिन्दूपति।।5।।

1. रूसलि छलि। 2. सुखाए। 3. ताकए भमर। 4. भरि कँ।

अभिसार-वर्णन। (1) हेम मुरुति -- सोनाक प्रतिमा। (4) आँकम - आलिङ्गन।

टि. -- हिन्दूपति शब्दसँ लगैछ जे ई विद्यापतिक नहि, उमापतिक होएत।

[630]

आहे सखि आहे सखि लए जनु जाहे। हमे अति बालिक[1] आतुर नाहे।।1।।
गोट गोट सखि सब गेलि बहराए। बजर केबाड़ पहु[2] देलन्हि लगाए।।2।।
तेहि अबसर पए जागल कन्त। चीर सम्हारइते जिब भेल अन्त।।3।।
नहि नहि करए नयन ढर नोर। काँच कमल भमरा झकझोर।।4।।
डगमग जइसे नलिनिक नीर। तइसे डगमग धनिक सरीर।।5।।
भनहिँ विद्यापति नब[3] कविराज। आगि जार[4] पुनि आगिक काज।।6।।

1. बालक। 2. पहु। 3. सुनु। 4. जारि।

अभिसार-वर्णन। सहज-स्वाभाविक। (1) नाह - नाथ, प्रेमी। (5) नलिनी -- पुरइनिक पात। (6) कविराज - अप्रासंगिक लगैछ।

[631]

माधब सिरिस कुसुम सम राही।
लोभित मधुकर कौसल अनुसर नब रस पिबु अबगाही।।1।।
पहिल बएस धनि प्रथम समागम पहिलुक जामिनि जामे।
आरति पति परतीति न मानथि कि करति[1] केलिक नामे।।2।।
अङ्कम भरि हरि सयन सुताओल हरल बसन अबिसेखे।
चापल रोसे जलज जनि कामिनि मेदिनि देल उपेखे।।3।।
एके अधर एके[2] नीबि निरोधलि दुइ पुनु तीन न होइ।
कुचजुग पाँच पाँच ससि ऊगल कि लए करति धनि गोई।।4।।
आकुल इदय[3] बेआकुल लोचन आँतर पूरल नीरे।
कलसिक[4] मीन बनसि लए बेधल देह दसोदिस फीरे।।5।।
भनहि विद्यापति दुहुक मुदित मन मधुकर लोभित केली।
असह सहति[5] कत कोमल कामिनि जामिनि जिब दए गेली।।6।।

1. करथि। 2. कए । 3. अलप। 4. मनसिज। 5. सहथि।

मुग्धा नायिका। सखी नायककेँ बुझबैत छथि जे मुग्धा नायिकाक संग कोना करी। (1) हे कान्ह, राधाक देह सिरिसक फूल-सन कोमल अछि। लोभाएल भ्रमर जेना कौशलसँ मधु पिबैत अछि तहिना भरि छाक नव रस पीबह। (2) जामिनि जाम -- रातुक पहर। अरति - आर्तिवस, आतुरतावश पति मुग्धाक वेदना पतिआइत नहि छथि। अङ्कम भरि -- पँजिआए कँ। सयन -- सेजपर। (3) चापल... उपेखे - अस्पष्ट। (4) नीवि - चीरक कसनी डोर। निरोधलि - रोकल। एके - एक हाथसँ। (5) कलसमे पोसल माछकेँ बनसी खेलबैत छह, ओ भरि कलस छटपटाइत अछि। (6) जामिनि - राति। जिब दए - प्राण गमाए।

[632]

आजे देखिअ सखि बड़ि अनमनि सनि मलिन कमलमुख[1] तोरा।
मन्द बचन तोहि कैओ जँ कहल अछि से न कहिअ किअ[2] मोरा।।1।।
आजुक रयनि सखि कठिन बितल अछि कान्ह रभस कर मन्दा।
गुन अवगुन पहु एकओ न बुझलनि राहु गरासल चन्दा।।2।।
अधर सुखाएल केस ओझराएल घाम तिलक बहि गेला।
बारि बिलासिनि केलि न जानिअ[3] गाल अरुन रुचि भेला।।3।।
भनहि विद्यापति सुन बर जौवति ताहि करह[4] किअ बाधे।
जे किछु पहु देल आँचर झाँपि लेल सखि सभ कर उपहासे[5]।।4।।
सुरुज उदित भेल मन हरखित भेल परबस खेपलि राती।
सगरि रइनि नहि नयन झपाएल काठ भेल मोर छाती।।5।।
भनहि विद्यापति सुन बरजौबति न करिअ एहन गेआने।
एक दिन एहन सबहिकाँ होइछ सुजन हरख कए माने।।6।।

1. बदन मलिन। 2. किछु। 3. जानथि। 4. करह। 5. पाठान्तर देखू। मै गीताञ्जलि।

मुग्धाक रतिवर्णन। पहिल कड़ी सखीक उक्ति, आँगा नायिकाक। (1) अनमनि -अन्यमनस्का। (2) रभस - कामकेलि। (3) तिलक - पसाहिन।

[633]

हे हरि हे हरि सुनिअ स्रबन भरि अब न बिलासक बेरा[1]।
गगन नखत छल सेहो अबेकत भेल कोकिल करइछ फेरा।।1।।
चकवा मोर सोर कए चुप भेल ओठ मलिन भेल चन्दा।
नगरक धेनु डगर धए सञ्चर कुमुदिनि मुदु मकरन्दा।।2।।
मुख केर पान सेहो रे मलिन भेल अबसर भल नहि मन्दा।
विद्यापति भन इहो न नीक थिक जगभरि करइछ निन्दा।।3।।

1.बस।

राधा भोर भेला पर कृष्णसँ प्रस्थानक अनुमति मङैत छथि। प्रभात वर्णन। (1) स्रबन - श्रवण, कान। अबेकत - अव्यक्त, तिरोहित। (2) ओठ... चन्दा - चन्द्रमाक कोर क प्रकाश मन्द भेल। कुमुदिनी अपन मकरन्दकें मूनि (झाँपि लेलक), आशय जे आब राधा सेहो अपन रस झाँपए चाहैछ।

[634]

सुरत समापि सुतल वर नागर पानि पयोधर आपी।
कनक सम्भुजनि पूजि पुजारे धएल सरोरुह झाँपी।।1।।
सखि हे माधव केलि विलासे।
मालति रमि अलि ताहि अगेरए पुनु रतिरङ्गक आसे।।2।।
बदन मेराए धएल मुखमण्डल कमल मिलल जनि चन्दा।
भमर चकोर दुअओ अळसाएल पीबि अमिअ मकरन्दा।।3।।
भनइ विद्यापति सुनह मधुरपति राधा चरित अपारे।
राजा सिवसिंह रूपनराएन प्रानबती[2] कण्ठहारे।।3।।

1. अमित्रकर। 2. भनथि सुकबि।

एक सखी दोसरि सखीकें राधा-माधवक कामकेलिक वर्णन सुनबैत अछि। (1) संगम समाप्त कए नायक नायिकाक स्तन पर हाथ रोपि सूति रहलाह; मानू पुजेगरी शिवलिंग (स्तन) केर पूजा कए ओकरा कमल (हाथ) सँ झाँपि राखि देलनि। (2) हे सखी कान्हक कामकेलि अपूर्व अछि। मानू भ्रमर मालतीसँ रमण कए ओकरा ओगरनहि रहल एहि आशासँ जे फेर रमण होएत।

टि. -- रागतरङ्गिणीमे एहि गीतक रचयिता अमृतकर कहल गेल छथि।

[635]

माधब बचन करिअ प्रतिपाले।
बड़ जन जानि सरन¹ अबलम्बल सागर होएत ताले।।1।।
भुवन भमिए भमि तुअ जस पाओल चौदिस तोहर बड़ाई।
चिते अनुमानि बुझल² गुन गौरब, महिमा कहलो न जाई।।2।।
आगाँ सब केओ सील निबेदए फल जानए परिनामे।
बचन बड़ाक कबहु नहि बिचलए निसिपति हरिन उपामे।।3।.
भनइ विद्यापति सुनु बरजौबति ई गुन कतहु न आने।
राजा सिबसिंह रूप नराएन लखिमादेवि रमाने³।।4।।

1. सताले। 2. बूझि। 3. देइ प्रति भाने।।

राधा बेरि-बेरि वचन दए चुकनिहार कृष्णक मधुर स्वरमे भर्त्सना करैत छथि -- (1) हे कान्ह, अपन वचन निबाहह। बड़का लोक बूझि तोहर शरण धएल, जे पोखरि समुद्र भए जाएत (प्रेम उत्तरोत्तर बढ़ैत जाएत।) (2) संसार भरि घूमि-घूमि तोहर जस सुनलहुँ। सर्वत्र तोहर बड़ाइ सुनल। अपनहु मनमे अनुमान कएल। तोहर गुणगौरव सत्य बुझाएल। तोहर महिमा कहल नहि जाए। पहिने लोक शील देखैत अछि; फल की होएत से तँ पछाति बुझैत अछि। पैघ लोकक बचन कहिओ अन्यथा नहि होइत अछि; एकर दृष्टान्त छथि चान आ हरिण (चान हरिणकें कहिओ नहि छौड़ैत छथि) ।)

[636]

बड़ जन करए पिरीति रे। कोपहु न तेजए रीति रे।।1।।
काक कोइलि एक जाति रे। भेम भमर एक भाँति रे।।2।।
हेम हरदि कत बीच रे। गुनहि बुझिअ ऊँच नीच रे।।3।।
मनि कादब लेपटाए रे। तें कि तकर गुन जाए रे।।4।।
विद्यापति कवि भान रे। सुपुरुख न कर निदान रे।।5।।

ई बड़ प्रचलित उचिती गीत थिक। पूज्य सत्पुरुषकें सुनाओल जाइत छनि। भाव स्पष्ट। (3) हेम - सोन।

[637]

चानन भरमे सेबल हम सजनी पुरत सकल मन काम।
कण्टक दरस परस भेल सजनी सीमर भेल परिनाम।।1।।
एकहि नगर बसि माधब सजनी पर भाबिनि बस भेला।
हमे धनि एहनि अभागलि सजनी गुन गौरब दुर गेला।।2।।
अभिनब एक कमल फुल सजनी दओना नीमक डारि।
सेहो फुल ओतहि सुखएल सजनी रसमय फुलल नेबारि।।3।।
बिधि बसे आज आएल पुनि सजनी एत दिन ओतहि गमाए।
कोन परि करब समागम सजनी मोर मन नहि पतिआए।।4।।
भनइ विद्यापति गाओल सजनी उचित आओत गुनगाह।
उठु बधाब करु मन भरि सजनी आज आओत घर नाह।।5।।

नायिका नायकसँ प्रीति करब मे नैराश्य प्रकट करैत छथि --(1) चाननक गाछ बूझि सेबल, किन्तु सिद्ध भेल सीमर, काँटे काँट। (2) पर भाबिनि - दोसरि नारी। हमर सभ गुन बिसरि गेलाह। (3) हम कमलक कली जकाँ फुलएलहुँ, किन्तु ठामहि सुखाए गेलहुँ आ' नेबारि (दोसरि नारी) प्रफुल्लित भेलि। (4) आइ फेर हमर पिआ आएल। विश्वास नहि अछि जे प्रीति भेटत। कोना मिलए जाउ? (5) विद्यापति कहैत छथि, पिआ आओत आ समुचित प्रीति भेटत, किएक तँ ओ गुणग्राही अछि।

[638]

लोचन अरुन बुझल भल¹ भेद। रइनि उजागर गरुअ निबेद।।1।।
ततहि जाह हरि न करह लाथ। रइनि गमओलह जन्हिकर साथ।।2।।
कुच कुङ्कुम माखल हिअ तोर। जनि अनुरागे² राँगि करु कोर।।3।।
आनक भूषन लागल अङ्ग। उकुति बेकत होअ आनक सङ्ग।।4।।
भनहि विद्यापति बजबहु बाध। बड़ाक अनय मौन पए साध।।5।।

1. बड़। 2. अनुरागि राँगि करु गोर।

(1) खंजिता नायिका प्रेमीक भर्त्सना करैत छथि -- (1) हम तोहर सभ रहस्य बूझि गेलिअहु। आँखि जे लाल छहु से साफ-साफ सूचित करैत अछि जे-रातिमे खूब जागल छलह। (3) ओहि नारीक स्तनक कुंकुम तोहर छातीमे लागल छहु। मने, ओ नारी अपन अनुराग (प्रेम/रंग) सँ रङि तोरा कोर कएने छलि। (4) आनक भूषण तोरा देहमे लागल छहु। तोहर उक्ति (गद्गद स्वर) कहैछ जे सम्भोग कए आएल छह। (5) विद्यापति कहैत छथि, बजबहुमे बाधा, किएक तँ कहल जाइछ जे पैघ लोकक अत्याचार पर मौनावलम्बन करक चाही।

[639]

कौन बन बसथि महेस। केओ नहि कहए उदेस।।1।।
तपोबन बसथि महेस। भैरब कहथि उदेस।।2।।
कान कुण्डल हाथ गोल। ताहि बन पिअ मिठि बोल।।3।।
जाहि बन सिकिओ न डोल। ताहि बन पिआ हसि बोल।।4।।
एकहि बचन बिच भेल। पहु उठि परदेस गेल।।5।।
भनहि विद्यापति गाब। राए सियसिंह बुझ भाब[1]।।6।।

1. राधा कृष्ण बनाब।

गौरी रूसिकें पड़ाएल शिवक चिन्त करैत छथि। (1) उदेस - पता। (2) गोल - वलय।

[640]

एत दिन छलि नब रीति रे। जल मिन जैसनि पिरीति[1] रे।।1।।
एकहि बचन बिच भेल[2] रे। हसि पहु उतरो न देल रे।।2।।
एकहि पलङ्ग पर कान्ह रे। मोर लेखैं दुर देस भान रे।।3।।
जाहि बन सिकिओ न[3] डोल रे। ताहि बन पिआ हसि बोल रे।।4।।
धरब जोगिनिआक भेस रे। करब मञे पहुक उदेस रे।।5।।

विद्यापति कवि[4] भान रे। सुपुरुख न कर निदान रे।।6।।

1. जैसन प्रीति। 2. भेल बीच। 3. केओ न। 4. भनहि विद्यापति।

कलहान्तरिता नायिका अपन व्यथा व्यक्त करैत छथि -- (1) मिन - मीन, माछ। (6) निदान - सम्बन्ध विच्छेद, प्रीतिक ओर।

[641]

पुरुब पेम तुअ अएलहुँ[1] हेरि। मोहि अबइते बैसलिहे[2] मुख फेरि।।1।।
पहिल बचन उतरो नहि देसि[3]। नयन कटाखहिं[4] जिब हरि लेसि।।2।।
तोहें[5] ससिमुखि धनि न करिअ मान। हम चकोर[6] अति बिकल परान।।3।।
आसा दए पुन न कर[7] निरास। होहु परसन हे पुरह मोर आस।।4।।
भनहि विद्यापति सुनह सयानि। दुहु मन उपजल बिरहक बानि।।5।।

1.पुर्वक प्रेम ऐलहुँ तुअ। 2 हमरा अबैत बैसलि। 3. देलि। 4. नैन कटाक्ष सँ. 5. तुअ। 6. हमहु भ्रमर। 7. आस देह फेरि न करिऐ।

नायक मानिनी नायिकाकें बौंसैत छथि -- (1) पूर्वक प्रेम देखि तोरा लग अएलहुँ, किन्तु हमरा अबितहिं तों मुह घुमाए बैसि रहलह। (2) क्रोधपूर्वक तिरयक् दृष्टिसँ तकैत छह, तँ हमर प्राण उड़ए लगैत अछि। (5) विद्यापति कहैत छथि, हे बुधिआरि राधा, हमर बात सुनह। दूनूक मनमे विरहक आगि (बानि, वन्हि) धधकि रहल अछि(मान छाड़ह)।

[642]

मानिनी, आब उचित नहि मान।
एखनुक रङ्ग एहन सन लागए जागल पए पञ्चबान।।1।।
जूड़ि रयनि चकमक कर चान्दनि एहन समय नहि आन।
एहि अबसर पहुमिलन जेहन सुख जकरहि हो से जान।।2।।
रभसि रभसि अलि बिलसि बिलसि कलि[1] करए अधरमधु पान।
अपन अपन पहु सबहु जेमाओल[2] भूखल तुअ जजमान।।3।।
त्रिबलि तरङ्ग सितासित सङ्गम उरज सम्भु निरमान।

आरति पति माँगए परतिगरह[3] करु धनि सरबस दान।।4।।
दीप सिखा[4] देखि थिर न रहए मन दिढ करु अपन गेआन।
सञ्चित मदन बेदन अति दारुन विद्यापति कवि भान।।5।।

1. करि। 2. जेमाओलि। 3. परतिग्रह मंगइछ। 4. दिपक।

नायक मान कएने बैसलि नायिकाकें बौंसैत छथि -- आबहु मान त्यागह; भोर भए गेल। (3) भ्रमर कलीक संग रंग-रभस कए-कए मधुपान करैछ (तहिना तोहँहु करह)। आन सभ अपन-अपन पिआकें भोजन (संगम) द्वारा तृप्त कएलनि, केवल तोहर यजमान भूखल छहु। (4) तोहर त्रिवली मानू सितासित संगम (उजर आ कारीक मेल, त्रिवेणी) थिकहु आ तोहर स्तन मानू शिवलिंग। एहि अद्भुत तीर्थमे पति (पंडा) प्रतिग्रह (दान) मङैत छहु। हे सुन्दरी, एहन समयमे तों सर्वस्व दान करह (संगम करह)। (5) विद्यापति कहैत छथि, कामवेदना जँ भोगद्वारा समाप्त नहि कए संचित राखल जाए तँ ओ बड़ दारुण भए जाइछ।

[643]

माधब ई नहि उचित बिचार।
जनिक एहनि धनि कामकला सनि से किअ करु बेभिचार।।1।।
प्रानहु चाहि अधिक[1] कए मानए इदयक हार समाने।
कोन परजुगुति[2] आनकें ताकब घिक थिक[3] तोहर गेआने।।2।।
कृपिन पुरुखकें केओ नहि निक कह जग भरि कर उपहासे।
निज धन अछइते नहि[4] उपभोगब केवल परहिक आसे।।3।।
भनइ विद्यापति सुन मधुरापति ई थिक अनुचित काजे।
माँगि लाएब बित से जदि होअ नित अपन करब कोन काजे।।4।।

1. ताहि। 2. परियुक्ति। 3. की थिक। 4. अछैति नै।

राधा कृष्णक कुचालिक भर्त्सना करैत छथि। भाषा आ' भाव परम स्पस्ट। (2) प्रानहु चाहि अधिक - प्राणहुसँ बेसी।

[644]

आजु पड़ल मोहि कोन अपराधे। किए न हेरए हरि लोचन आधे।।1।।
आन दिन गहि गिम लाबए[1] गेहे। बहुबिध बचने बुझबए नेहे।।2।।
मन दए रुसि रहल पहु सोई। पुरुखक हृदय एहन नहि होई।।3।।
भनइ विद्यापति सुनु परमाने। बाढ़ल प्रेम उसरि गेल माने।।4।।

1. लाबिअ।

नायिका नायकक मानपर विस्मय प्रकट करैत छथि। (2) गहि गिम - गरदनि धए। गेह - घर। (4) प्रेम उमड़ैत अछि तँ मान स्वयं बिलाए जाइछ।

[645]

माधब कि कहब तोहर गेआने।
सरुप[1] कहल जबे रोस कएल तबे करे मून्दल दुहु काने।।
आएल गमनक बेरि न निन्द टरु तेँ किछु पुछिओ न भेला।
एहन करमहिनि हम सनि के धनि करसँ परसमनि गेला।।
जँ हम जनितहुँ एहन निठुर पहु कुच कञ्चन गिरि साँधि।
कौसले करतल बाहुलता लए दिढ कए रखितहुँ बाँधि।।
ई सुमिरिअ जब मन मरिअ तब बुझि पड़ हृदय पखाने।
हिमगिरी कूमरि चरन हृदय धरि सुकवि[2] विद्यापति भाने।।

1. सुपहु। 2. सुमति उमापति (आन स्रेतमे)।

[646]

माधब तोहँ जनु[1] जाह बिदेस।
हमारो रङ्ग रभस लए जएबह लएबह कोन सनेस।।1।।
जबहि गमन करु होइति दोसरि मति बिसरि जएबह[2] पहु मोरा।
हीरा मनिमानिक एको नहि माङब फेरि माङब पहु तोरा।।2।।
जबहि गमन करु नयन नीर भरु देखिओ न भेल पहु तोरा।
एकहि नगर बसि पहु भेल परबस कैसे पुरत मन मोरा।।3।।

पहु सङ्ग कामिनि बहुत सोहागिनि चान निअर[3] जैसे तारा।
भनइ विद्यापति सुनु बर जौबति अपन हृदय धरु सारा।।4।।

1. जनि। 2. जाएब। 3. निकट।

राधा कृष्णकें बिदेस (मथुरा) जएबासँ रोकैत छथि। गीत स्पस्ट। (3) एकहि... परवस - ई वाक्य (अन्यपुरुषमे) अप्रासंगिक लगैछ। (4) सार - धैर्य।

[647]

मोहि तेजि पिआ मोर गेलाह बिदेस। कोन परि खेपब बारि बएस।।1।।
सेज भेल परिमल फुल भेल बास। कतए भमर मोर पड़ल उपास।।2।।
सुमरि सुमरि चित न रहए थीर। मदनदहन तन दगध सरीर।।3।।
भनहि विद्यापति कवि जयराम। कि करत नाह दैब भेल बाम।।4।।

राधा कृष्णक प्रवास पर विलाप करैत छथि। भाव ओ भाषा स्पष्ट। (1) बारि -बाल्य। (2) सेज... बास - सेजमे सौरभ आबि गेल आ' फूलमे सेहो; अर्थात् हमर यौवन विकसित भए गेल।

टि. -- कवि जयराम अप्रासंगिक लगैत अछि।

[648]

सुन्दरि बिरहे सयन घर गेल। किए बिधाता लिखि मोहि देल।।1।।
उठलि चेहाए बैसलि सिरनाए। चहुदिस हेरिहेरि रहलि लजाए।।2।।
नेहक बन्धु सेहो छुटि गेल। दुहु कर पहुक खेलाओन भेल।।3।।
भनहि विद्यापति अपरुब नेह। जेहन बिरह हो तेहन सिनेह।।4।।

कवि विरहक वर्णन करैत छथि। गीत निम्न कोटिक। (3) दुहु... भेल - आशय अस्पष्ट।

[649]

माधब हमर रटल दुर देस। केओ न कहए सखि कुसल सनेस।।1।।
जुगजुग जिबथु बसथु लाख कोस। हमर अभाग हुनक नहि दोस।2।।
हमर करमे भेल बिहि बिपरीत। तेजल माधब पुरुब[1] पिरीति।।3।।
हृदयक बेदन बान समाना। आनक दुख सखि आन न जान।।4।।
भनहिं विद्यापति कवि जयराम। कि करत नाह दैब भेल बाम।।5।।

1. तेजलन्हि माधब पुरुबिल प्रीत (छन्द) ।

राधा विरहव्यथा सखीकें सुनबैत छथि। भाव ओ भाषा सहज। (1) रटल – गेल। (5) आक्रोश दैव पर, पिआ पर नहि।

[650]

माधब माधब होहु समधान। तुअ बिनु करब भुवन रितु[1] पान।।1।।
प्रथम पचीस अठाइस भेल। ता सम बदन हेम हरि लेल।।2।।
पचिस अठारह बिस तनु जार। छिति सुत तेसर से जिब मार।3।।
सुमरिअ माधब ओ दिन सिनेह। जे दिन सिंह गेल मीनक गेह।।4।।
भनहि विद्यापति अच्छरलेख। बुध जन होथि से कहथि बिसेख।।5।।

1. भुवन करब।

पिहानी। राधा विरहव्यथा व्यक्त करैत छथि। (1) समधान - सावधान। तोहर विरहमे हम विषपान करब [भुवन 14, ऋतु 6; 14+6=20=बिस=विष]। (2) [व्यंजनवर्णक प्रथम क, पचीसम ग, अठाइसम द, बीसम न, अर्थात् मदन हमर देह जरबैत अछि। [छिति पृथ्वी, तनिक पुत्र मंगल] मंगल तेसर स्थानमे छथि, तें प्राणपर संकट। (4) हे कान्ह, ओ दिन मन पाड़ह जहिआ सिंह (कान्ह) मीन (मीनाक्षी राधा) केर घर गेल। (अर्थ अस्पष्ट)।

[651]

कुसुमित कानन कुञ्ज बसी। नयनक काजर घोरि मसी।।1।।
नखसँ लिखलनि नलिनिक[1] पात। लिखिए पठाओल[2] आखर सात।।2।।
पहिलहि लिखलन्हि पहिल वसन्त। दोसरहि लिखलन्हि तेसराक अन्त।।3।।
लिखि नहि सकलिह अनुज बसन्त। पहिलहि पद अछि जीबक अन्त।।4।।
भनहि विद्यापति अच्छर लेख। बुधजन होथि से कहथि बिसेख।।5।।

1. नलिनि दल। 2. लिखि पठाओलि।

पिहानी। विरह-वर्णन राधाक। (1) राधा पुष्पित कुंजवनमे बैसि आँखिक काजरसँ मोसि घोरि कें (2) नहसँ पुरैनिक पात पर पत्र लिखलनि। सात गोट अक्षर लिखि पठओलनि। (3) पहिने वसन्तक पहिल मास 'मधु' लिखल; तकरा बाद लिखलनि (वसन्त सँ आरम्भ कए) तेसर ऋतु वर्षा, तकर अन्त, हस्त, अर्थात् कर (दूनू मिलाए भेल) मधुकर। (4) तकरा आगाँ वसन्तक अनुज (दोसर मास वैशाख) अर्थात् 'माधव' नहि लिखि सकलीह। किएक तँ पहिले अक्षर (माधवमे) म लिखितहि प्राणक अन्त मरण... ।

टि. -- ग्रि. ओ मजू. अर्थ लगएबाक प्रयास कएल; किन्तु स्पस्ट आ' हृदयंगत नहि भेल।

[652]

मन परबस भेल परदेस नाह। देखि निसाकर तन उठ धाह।।1।।
मदन बेदन देअ मानस अन्त। काहि कहब दुख परदेस कन्त।।2।।
सुमरि सिनेह गेह नहि आब। दारुन दादुर कोकिल राब।।3।।
ससरि ससरि खसु निबिबन्ध आज। बड़ मनोरथ घर पहुक समाज।।4।।
भनहि विद्यापति सुनु परमान। बुझ नृप राघव नव पञ्चबान।।5।।

1.पहु न।

नायिका विरहव्यथा व्यक्त करैत छथि। (1) नाह - पिआ। निसाकर - चान। (2) मानस अन्त -- अस्पष्ट। (3) पूर्वक स्नेह मन पाड़ि घर नहि घुरैत छथि। (4) घरमे पिआसँ मिलब तकर बड़ मनोरथ अछि।

टि. -- राघवसिंह धीर सिंहक पुत्र थिकाह।

[653]

प्रथम एकादस दए पहु गेल। सेहो रे बेतित मोर कत दिन भेल।।1।।
रितु अवतार[1] बएस मोर भेल। तैओ न पहु मोर दरसन देल।।2।।
अब न धरम सखि बाँचत मोर। दिन दिन मदन दुगुन सर जोर।।3।।
चान्द किरन[1] मोहि सहलो न होए। चान्दन लाग बिखम सर सोए।।4।।
भनहि विद्यापति गुनमति नारि। धैरज धए रहु मिलत मुरारि।।5।।

1. सुरुज।

पिहानी। नायिका विरहवेदना व्यक्त करैत छथि। (1) पिआ [व्यंजनवर्णक पहिल क, एगारम ट, अर्थात] कट (धुरबाक अवधि) दए गेल। सेहो बीतल। (2) आब हमर बएस [ऋतु 6, अवतार10, 6+10=16] सोलह वर्षक भेल। तैओ पिआक दर्शन नहि।

[654]

माधव बूझल तुअ गुन आजे।
पचगुन दसगुन सए गुन दसगुन सेहओ देलह कोन काजे।।1।।
चालिस काटि चारि चौठाइक से हम से पहु मोरा।
कपटी कान्ह केलि नहि जनलन्हि कएलन्हि जन्मक ओरा।।2।।
साठि काटि दह बिन्दु विवर्जित से तक कर उपहासे।
पहुक बिसाद सहए नहि पारिअ दुइ बुन्द करब गरासे।।3।।
नवो बिन्दु दए नवो वाम कर से उर हमर पराने।
से हरखित मुह देसि होअए नहि कारन केओ नहि जाने।।4।।
भनहि विद्यापति सुन बरजौबति करटि... केअ बाधा।
अपन जीब दए परहि बुझाबिअ कमलनाल दुइ आधा।।5।।

पिहानी। राधा कान्हकें उपराग दैत छथि, किन्तु द्वितीय कड़ीसँ कान्ह तृतीय पुरुष भए जाइत छथि। (1) हे कान्ह, आइ तोहर गुण (चरित्र) बूझि गेलहुँ। तों पचास हजार बेरि [5×10×100×10=50,000] सपत किएक खएलह? (2) [चालिस मे चारि घटाए तकरा चारिसँ भाग दए 9 होइछ] हम नवयौवना छी। (3) [साठिसँ 10 घटाउ, 50 भेल, बिन्दु हटओने 5 भेल] पाँच लोकक बीच तोहर उपहास भेल।... आब हम [2 पर सुन्ना 20, बीस] विष खाए मरब। (4) [नओ शून्य नवए, तकर वाम भाग भेल नव... ?] से देखि हमर प्राण उड़ैत अछि। (5) करटि... अर्थ-अस्पष्ट।

[655]

चानन भेल बिखम सर रे भूखन भेल भारी।
सपनेहु नहि फिरि आएल रे गोकुल गिरिधारी।।1।।
एकसरि ठाढ़ि कदम तर रे पथ हेरथि मुरारी।
हरि बिनु देह दगध भेल रे झाभरि भेलि सारी।।2।।
जाह जाह तोहें ऊधब हे तोहें मधुपुर जाहे।
चानबदनि नहि जीउति रे बध लागत काहे।।3।।
कवि विद्यापति गाओल रे[1] सुनु गुनमन्ति नारी।
आजु आओत हरि गोकुल रे पथ चलु झुटकारी।।4।।

1.भनहिँ विद्यापति तन मन दे।

राधा विरहवेदना व्यक्त करैत छथि। गीत स्पष्ट।

[656]

लिखब उनैस सताइसक सङ्ग। से पुनि लिखब पचीसक सङ्ग।।1।।
जनिकाँ सोंपि गेला मोरा पाहि। से पुनि गेलाह देखब नहि ताहि।।2।।
बड़ अनुचित आनक परबेस। से पुनि एलाह तकर सनेस।।3।।
माधब जनु दीअह मोर दोस। कतदिन राखब हुनक भरोस।।4।।
भनहि विद्यापति आखर लेख। बुधजन हो से कहए बिसेख।।5।।

पिहानी। राधा विरहव्यथा व्यक्त करैत छथि -- (1) [उनैसम व्यंजन ध, सताइसम र आ' पच्चीसम म, अर्थात् धरम लिखू। (2) जे धरम पिआ हमरा सौंपि गेलाह से धर्मराज देवता एतएसँ चलि गेलाह (हमर धर्म नहि बाँचत) ; तनिक फेर नहि देखब। (3) आनक (अधर्मक) प्रवेश बड़ अनुचित थिक। से अधर्म आबि गेल छथि तकर संकेत भेटैछ। तकर सनेस -- अस्पस्ट। (4) हुनक - धर्मक, धर्मरक्षाक।

[657]

मोहन मधुपुर बास। हमहु जाएब तनि पास।।1।।
रखलन्हि कुबजाक नेह। तेजलन्हि हमर सिनेह।।2।।
कत दिन ताकब बाट। रटलाह जमुनाक घाट।।3।।
ओतहि रहथु दग फेरि। दरसन देथु एकबेरि।।4।।
भनहि विद्यापति रूप। मानुस जनक अनूप।।5।।
राधा विरह विलाप करैत छथि। स्पष्ट।

[658]

आसक लता लगाउलि सजनी नयनक नीर पटाए।
से फल आब तरुनत भेल सजनी आँचर तर न समाए।।1।।
काँच-साँच पहु देखि गेल सजनी तसु मन भेल कुह मान।
दिन दिन फल तरुनत भेल सजनी हुनि[1] मन न करु गेआन।।2।।
सबहुक[2] पहु परदेस सञो[3] सजनी आएल सुमरि सिनेह।
हमर एहन पहु निरदए सजनी नहि मन बाढ़ए नेह।।3।।
भनहि विद्यापति गाओल सजनी उचित आओत गुनगाह[4]।
उठि बधाव करु मन भरि सजनी आज आओत घर नाह।।4।।

1.अहु। 2. सभकेर। 3. बसि। 4. गुन साह।

नायिका विरहवेदना व्यक्त करैत अछि। (1) तरुनत - जुआएल, परिपक्व। (2) कौंच साँच - काँच कुच। तसु... मन - हुनका मनमे कुहू (अमावास्या, घोर अन्धकार) बुझएलनि। (4) गुनगाह - गुणग्राहक।

[659]

प्रथम बएस हम कि कहब सजनी पहु तजि गेलाह विदेस।
कत हम धैरज बान्धब सजनी तनि बिनु सहब कलेस।।1।।
आओन अबधि बेतित[1] भेलि सजनी जलधर छापल दिनेस।
सिसिर बसन्त उसम भेल सजनी पाउस[2] लेल परबेस।।2।।
चहु दिस झिङ्गुर छड़कारए[3] सजनी पिक सुन्दर करु गान।
मनसिज मार मरम सर सजनी कतेक सुनब हम कान।।3।।
सेज कुसुम नहि भाबए सजनी बिख सन चानन चीर।
जइओ समीर सितल बहु सजनी मन बच उडल सरीर।।4।।
भनहि वियापति गाओल सजनी मन धनि करिअ उलास।
सुदिन हेरि पहु आओत सजनी मनजनि करिअ उदास।।5।

1. बितित। 2. पाओस। 3. झन करु।

नायिका विरहवेदना प्रकट करैत छथि। (1) आओन - आगमन, अबैआ। (2) दिनेस - सूर्य। उसम - ग्रीष्म ऋतु। पाउस - प्रावृष, वर्षाऋतु। (4) समीर - पवन। मन... सरीर --तन, वचन आ' मन तीनूमे उचाट लागि गेल।

[660]

प्रथम समागम भेल रे। हठहि रइनि बिति गेल रे।।1।।
नब तनु नब अनुराग रे। बिनु परिचय रस माँग रे।।2।।
सैसब पहु तजि गेल रे। जौबन उपगत भेल रे।।3।।
अब न जिअब बिनु कन्त रे। बिरहे जीब भेल अन्त रे।।4।।
भनइ वियापति भान रे। सुपुरुख गुनक निधान रे।।5।।

नायिका विरहवेदना व्यक्त करैत छथि। (1) यौवनक आरम्भहिमे पहिल बेर संग भेल तँ लज्जावश नहि-नहि करितहि राति बीति गेल। (2) देह नब छल, प्रेम नब छल, परिचय-पातो नहि भेल छल कि पहु रस माङए लगलाह। (3) अल्पे बएसमे पहु तेजि कैं परदेस गेलाह।... ।

[661]

माधब कि कहब ताही। तुअ गुन लुबुधि मुगुधि भेलि राही।।1।।
मलिन बसन तनु चीरे। करतल बयन नयन ढर नीरे।।2।।
उर पर सामरि बेनी। कमल जुगल जनि कारि नागिनी।।3।।
केओ सखि ताकए निसासे। केओ नलिनी दल करए बतासे।।4।।
केओ बोल आएल हरि। ससरि उठए सुनि नाम सुन्दरी।।5।।
वियापति कवि गाबे। बिरह बेदन निज सखि समुझाबे।।6।।

1.कोस।

सखी कान्हकें राधाक विरहदशा सुनबैत छथि -- (1) हे कान्ह, ओकरा (राधाक) विषयमे की कहिअहु। ओ तें तोहर गुण पर लोभाए मोहित भए गेलि अछि। (3) छाती पर कारी जुट्टी लटकल छैक जे लगैछ जेना दू कमल (स्तन) केर बीचमे कारी नागिनि हो। (4) नलिनीदल - पुरइनिक पात।

[662]

कोन गुन पहु परबस भेल सजनी बुझल तनिक भलमन्दा।
मनमथ मन मथ तनि बिनु सजनी देह दहए निसि चन्दा।।1।।
कहओ पिसुन सत अबगुन सजनी तनि सम मोहि नहि आने।
कतेक जतन सञो मेटिअ सजनी मेटए न रेख पखाने।।2।।
जँ दुरजन कटु भाखए सजनी मोर मन न होए बिरामे।
अनुभब राहु पराभब सजनी हरिन न तेज हिमधामे।।3।।
जइओ तरनि जल सोखए सजनी कमल न तेजए पाँकि।

जे जन रतन जाहि सञो सजनी कि करत बिधि भए बाँके।।4।।
विद्यापति कवि गाओल सजनी रस बूझए रसमन्ता।
राजा सिबसिंह मन दए सजनी मोदवती देइ कन्ता।।5।।

विरहिणी राधा अपन विरहवेदना सखीसँ सुनबैत छथि। प्रेमी किछु करथु, दुर्जन किछु बाजओ, राधाक अनन्य प्रेम टुटनिहार नहि। कान्हक प्रति कोनो उलहन उपराग नहि। (1) कोन गुन -- कोन कारणेँ। भलमन्दा -- गुणदोष। (2) मनमथ - कामदेव। (3) चान राहुक पराभव भोगैत छथि, तैओ हरिणकेँ (चानमे लागल कारी दाग हरिण मानल जाइछ)। हिमधाम -- चान। (4) तरनि - सूर्य।

[663]

माधव देखलि बियोगिनि[1] बामे।
अधर न हास बिलास न सखि सङ्ग अहनिस जप तुअ नामे।।1।।
आनन सरद सुधाकरसम तसु बोल मधुर धुनि बानी।
कोमल अरुन कमल कुम्हिलाएल देखि सबे अइलिहुँ जानी।।2।।
हृदयक हार भार भेल सुबदनि नयन न होए निरोधे।
सखि सभ आए खेलाउलि रङ्ग कए तसु मन किछुओ न बोधे।।3।।
रगड़ल चान्दन मृगमद कुङ्कुम सभ तेजल तुअ लागि।
धनि जलहीन मीन जकँ फिरइछ[2] अहोनिसि रहइछ[3] जागि।।4।।
दुति उपदेस सुनि हरि गुन सुमिरल तहिकखन चललाह धाई।
मोदवती पति राघवसिंह गति कवि विद्यापति गाई।।5।।

1. जनि। 2. फिरइछि। 3. रहइछि। 4. सुनिगुनि।

सखी कान्हकेँ राधाक विरहदशा सुनबैत छथि। (1) यामा - रमणी। अहनिस -दिनराति। (2) सुधाकर - चान। (3) सुबदनि - सुमुखी। (4) मृगमद - कस्तूरी।

[664]

कत सुखसार पाओल तुअ तीरे। छाड़इते निकट नयन बह नीरे।।1।।
कर जोड़ि बिनमञो विमल तरङ्गे। पुनु दरसन होअ पुनमति गङ्गे।।2।।
एक अपराध छैंओब मोर जानी। परसल माए पाएँ तुअ पानी।।3।।
कि करब जपतप जोग धेआने। जनम कृतारथ एकहि सनाने।।4।।
मनहि विद्यापति समन्दञो तोही। अन्त काल जनु बिसरब मोही।।5।।

गंगाक स्तुति। (1) सुखसार - उत्कृष्ट सुख। (3) छैंओब -- क्षमा करब। परसल... पानी--हे माता, अहाँक जल पाएरसँ छूलहुँ (से एक अपराध)। (5) समन्दओ - प्रस्थान-कालमे निवेदन करैत छी जे... ।

[665]

पिआ मोर बालक हम तरुनी। कोन तप चुकलहुँ भेलहुँ जननी।।1।।
पहिरि लेल सखि दछिनक चीर। पिआकेँ देखैत मोर दगध सरीर।।2।।
पिआ लैली गोद कए चलली बजार। हटिआक लोग पूछे के लागु तोहार।।3।
नहि मोर देओर कि नहि छोट भाए। करम लिखल छल तोहर जमाइ।।4।।
बाट रे बटोहिआ कि तोंहु मोरा भाइ। हमर समाद नैहर लेने जाइ।।5।।
कहिहुन बाबाकेँ किनए धेनु गाए। दुधबा पिआइके पोसता जमाए।।6।।
नहि मोरा टाका अछि नहि धेनु गाए। कोन बिधि पोसब बालक जमाए।।7।
भनहि विद्यापति सुनु ब्रजनारि। धैरज धए रहु मिलत मुरारि।।8।।

युवती छोट बएसक किशोरसँ विवाह होएबाक कारणेँ अतृप्त कामवासनाक व्यथा प्रकट करैत अछि। अथवा बेमेल विवाह (छोट बर, जेठि कन्या) केर कुप्रथा पर व्यंग्य करैत छथि।

[666]

सुन्दरि हे तोहेँ सुबुधि सेआनि। मरिअ पिआसेँ पिआबह पानि।।1।।
के तोँ थिकह ककर कुल जानि। बिनु परिचय नहि देब पिढ़ि पानि।।2।।
थिकहुँ पथुक जन राजकुमार। धनिक बिरहे भरमिअ संसार।।3।।
आबह बैसह पिबि लेह पानि। जे तोहेँ खोजबह से देब आनि।।4।।

ससुर भैंसुर मोर गेलाह बिदेस। स्वामी गेल छथि तनिक उदेस।।5।।
सासु घर आन्हरि नएन न सूझ। बालक मोर बचन नहि बूझ।।6।।
भनहि बिद्यापति अपरुब नेह। जेहन बिरह हो तेहन सिनेह।।7।।

पथिक ओ परकीयाक प्रेम-प्रसंग, उक्ति-प्रत्युक्तिमे। सरल स्वाभाविक। (3) पथुक -पथिक, बटोही। (5) उदेस - खोज।

[667]

घर घर भरमि जेमथि नित तनिकाँ केहन बिआह।
से आबे करब गौरि वर ई हो कतए निरबाह।।1।।
कतए भवन कत आङन बाप कतए कत माए।
कतहु ठहोर नहि ठेहर के कर एहन जमाए[1]।।2।।
कओने कएल एहो असोजन कैओ न हिनक परिबार।
जे कएल हिनक निबन्धन धिकधिक से पँजिआर।।3।।
कुल परिबार एकओ नहि परिजन भूत बेताल।
देखि देखि झूर होअए तन के सह हृदयक साल।।4।।
बिद्यापति कह सुन्दरि धैरज मन अबगाह।
जे अछि जनिक बिआही तनिकाँ सेहे पए नाह।।5।।

1. जनम।

बरकेँ देखि मनाइनि विलाप करैत छथि -- (1) जे शिव घर-घर भीख माङि-माङि पेट भरैत छथि तनिका विवाहक कोन प्रयोजन। (3) असोजन - मैथिल ब्राह्मणमे पंजीकार सँ लिखओल ई प्रमाणपत्र जे वर कन्याक बीच विवाह वर्जित नहि। निबन्धन - विवाहक व्यवस्था।

टि. -- गौरीस्वयंवरक अनुसार ई गीत लालकविक थिक।

[668]

एहन उमत बर कएल हेमत गिरि देखि देखि लगइछ रङ्ग।
एहन उमत बर घोड़बो न चढ़इक जेहि घोड़ रङ्ग रङ्ग जङ्ग।।1।।

बाघक छाल जे बसह पलानल सापक लागल[1] तङ्ग।
डिमिक डिमिक जे डमरु बजइन खटर खटर करु अङ्ग।।2।।
भकर भकर जे भाँङ भकोसथि छटर पटर करु गङ्ग[2]
चानन सओ अनुराग न थिकइन भसम चढ़ाबथि अङ्ग[3]।।3।।
भूतपिसाच अनेक दल साजल सिर सओ बहि गेल गङ्ग।।
भनहिँ बिद्यापति सुनिअ मनाइनि थिकाह दिगम्बर भङ्ग।।4।।

1.मोरल। धोरल। 2. गाल। 3. भाल।

शिवक विवाहक वर्णन, मनाइनिक उक्तिमे। (1) उमत - उन्मत, बौराह। रङ्ग -छगुनता। चढ़बाक लेल घोड़ो नहि। जेहि... जङग अस्पष्ट। (2) पलानल - जुआमे बान्हल। तङ्ग - जीन।

(2) भोल झा द्वारा संगृहीत गीत

[669]

कतेक जतन भरमाओल सजनि गे दए दए सपथ हजार।
सपनहु जँ छल जनितहुँ सजनि गे नहि करितहुँ अँगिकार।।1।।
आब जगत भरि भाविनि सजनि गे केओ जनु करओ प्रतीति।
मुखसँ अधिक बुझाबथि सजनि गे पुरुखक कपटी प्रीति।।2।।
बाजथि बहुत भाँतिसँ सजनि गे बचन राखथि नहि थीर।
तनुक हिआ मौर दगधल सजनि गे जैसे नलिनिदल नीर।।3।।
गुन अबगुन सब बुझलहुँ सजनि गे बुझलहुँ पुरुखक रीति।
भनहि विद्यापति गाओल सजनि गे पुरुख न कपटी प्रीति।।4।।

नायिका नायकक वंचकताक निन्दा सखीसँ सुनबैत छथि। भाव ओ भाषा स्पस्ट। (2) भाविनि - कामिनि, नारी।

[670]

उठु उठु सुन्दरि जाइछी बिदेस। सपनहु रुप नहि मिलन उदेस।।1।।
से सुनि सुन्दरि उठलि चेहाए। पहुक बचन सुनि खसलि झमाए।।2।।
उठइत उठि बैसलि सिर नाए। बिरहक मारलि खसलि हिआ हारि।।3।।
एक हाथ उबटन एक हाथ तेल। पिआकें मनाबए सुन्दरि चलि देल।।4।।
भनइ विद्यापति सुनु ब्रजनारि। धैरज धए रहु मिलत मुरारि।।5।।

कवि प्रवासजन्य विरहक आशंकाक वर्णन करैत छथि। (1) पहु कहलथिन, हे सुन्दरी, उठह, हम विदेश जाइत छी, फेर स्वप्न रूपहु मे हमर उदेस नहि भेटत। से सुनि... ।

[671]

हम अबला अगेलनि रे। पतिकें सेबल गुन जानि रे।।1।।
हमसँ अनेक कुरीति रे। सुपुरुख न तेज पिरीति रे।।2।।
डेडि दुबल मझधार रे। लए जहाज करु पार रे।।3।।
भनहि विद्यापति भान रे। सुपुरुख बसथि सुठाम रे।।4।।

ई उचिती थिक जे मान्य अतिथिकें सुनाओल जाइछ। एहिमे अपन हीनता आ' न्यूनता तथा अतिथिक गुणवता देखाओल जाइछ। प्रसिद्ध गीत।

[672]

रे नरनाह सतत भजु ताही। जाहि नहिजनक जननि नहि जाही।।1।।
बसु नैहर सासुरके नाम। जननिक सिर चढ़ि गेलिह गाम।।2।।
सासुक कोरमे सुतल जमाए। समधि बिलह तत्रो बिलहल जाए।।3।।
जाहि उदरसँ बाहर भेलि। से पुनि ततहि पलटि चलि गेलि।।4।।
भन विद्यापति सुकवि सुजान। कविकें कवि कह कवि पहिचान।।5।।

ई पिहानी थिक। उतर थिक सीता जे स्वतः स्पष्ट अछि। (2) नैहरमे रहैत छथि। सासुर के नाम - अस्पष्ट। जननिक... गाम -- माताक सिरपर पाएर दए अर्थात् पृथ्वी पर चरण रखैत गाम (अयोध्या) गेलीह। (3) जमाए (राम) सासुक कोरमे (धरतीपर) सुतलाह। समधि... जाए -- अस्पष्ट।

[673]

बर बउराह उमाके, सोचहि नारि निहार।
फनि मनि मौलि बिराजित सिर सुरसरि बहु धार।।1।।
भाल बिसाल सुधाकर कर त्रिशूल त्रिपुरारि।
X X X X X X X X ।।2।।
बाहन बसहा दिगम्बर परिजन भूत बेताल।
आक धतुर बिख भोजन बिजया प्रान अधार।।3।।
कह रानी राजासँ कन्या रहति कुमारि।
दुलहि जोग दुल्लह नहि दुलहिनि बड़ि सुकुमारि।।4।।
कह जगजननि जननिसँ चिन्ता छाड़ह माए।
जाएब जतए ततहि दुख लिखल मेटल नहि जाए।।5।।
शिवशङ्कर वर ईश्वर नाथचरन चित लाउ।
गिरिजा तहिसँ आनन्दित विद्यापति कवि गाउ।।6।।

महेसबानी। (1) हकार पूरए आइलि ललना लोकनि वरकें निहारि सोचैत छथि, अरे उमाक वर तँ बउराह छथि। (2) सिरपर नाग मुकुट (3) गंगाक धार, हाथमे त्रिशूल... । (4) रानी राजासँ कहैत छथि... । (5) गौरी सान्त्वना दैत छथिन।

[674]

हम नहि आजु रहब एहि आङन जओ बुढ होएत जमाए।।1।।
एक तँ बैरी भेल बीध बिधाता दोसर धिआ कैर बाप।
तेसर बैरी भेल नारद बाभन जे बुढ आनल जमाए।।2।।
पहिलुक बाजन डामरु तोड़ब दोसरे तोड़ब रुण्डमाल।
बड़द हाँकि बरिआति बैलाएब धिआ लए जाएब पड़ाए।।3।।
धोती लोटा पतरा पोथी सेहो सब लेबन्हि छिनाए।
जँ किछु बजता नारद बाभन दाढ़ी धए घिसिआएब।।4।।
भनहि विद्यापति सुनु हे मनाइनि दिढ करु अपन गेआन।
सुभसुभकए सिरि गौरि बिआहिअ गौरी हर एक समान।।5।।

प्रसिद्ध महेसबानी। स्वतः स्पष्ट।

[675]

सुनिऐन्हि हर बड सुन्दर। देखिऐन्हि बिभुति भुअंकर।।1।।
सुनिऐन्हि अओताह रथपर। देखिऐन्हि बूढ बडद पर।।2।।
सुनिऐन्हि पाट पटम्बर। देखिऐन्हि फटले बघम्बर।।3।।
सुनिऐन्हि गरा मोतिमाल वर। देखिऐन्हि रुदराछ हार-गर।।4।।
भनहि विद्यापति गाओल। गौरि उचित बर पाओल।।5।।

महेसबानी। स्वतः स्पष्ट।

[676]

आजुनाथ एक बरत महासुख लाबह है।
तोहें सिब धरु नट बेस कि डमरु बजाबह है।।1।।
तोहें गौरा कहै छह नाचए हम कोना नाचब है।

चारि सोच मोहि होए कओन बिधि बाँचब है।।2।।
अमित्र चुबिए भुइँ खसत बघम्बरे जाएत है।
होएत बघम्बर बाघ बसहा धए खाएत है।।3।।
सिर सओ ससरत साप दहोदिस जाएत है।
कातिक पोसल मजूर सेहो धए खाएत है।।4।।
जटा सओ छिलकत गङ्ग भूमि भरि पाटत है।
होएत सहसमुख धार समेटलो न जाएत है।।5।।
रुण्डमाल टुटि खसत मसानी जागत है।
तोहें गौरा जएबह पड़ाए नाच के देखत है।।6।।
भनहि विद्यापति गोओल गाबि सुनाओल है।
राखल गौराक मान। कि चारु बचाओल है।।
परम प्रसिद्ध नचारी।

[677]

ओहे मनाइनि देखह जमाए।
सिबक माथ फुढ़ल जटा। ताहि उपर नाग घटा।।1।।
जटा देल अँकुसी लगाए। झिकितहि सुरसरि गेलि बढ़िआए।।2।।
बेदी देल लाबा छिड़िआए। भूखल बासुकि बिछि बिछि खाए।।3।।
बट्टा भरि घोरल कसाए। उमत महादेव भसम लगाए।।4।।
भनहि विद्यापति देखह गे माए। गौरि सहित हर कोबर जाए।।5।।

[678]

दछिन पबन बहु लहु लहु। पासँ मिलन होएत कहु।।1।।
आम मजरि महु तूअल। तैओ न पहु मोर घूरल।।2।।
दीप जरिए बाती जरल। तैओ न पिआ मोर आएल।।3।।
भनहि विद्यापति गाओल। जोगिनिक अन्त नहि पाओल।4।।

[679]

हमे जोगिनि तिरहुत के जोग देबैन्हि लगाए।
नैना हमर पढ़ाओल जगमोहिनि मोर नाम।।1।।
आरसि काजर पारल आँखि आँजब।
ताहि आँजब दुइ आँखि जमैआ अपनाओल।।2।।
रुनुकि झुनुकि धिआ चलितथि जमैआ देखेतथि।
पागक पेज उघारि इदय बिच रखितथि।।3।।
भनइ विद्यापति गाओल फल पाओल।
जोग हमर बड़ तेज सेज धए रहताह।।4।।
जोग।

[680]

कहमासँ सूगा आएल नेह लागल
कहमा लेल बसेर अमृतफल भोजन।।1।।
फलाँ गामसँ सूगा आएल नेह लागल
फलाँ गाम लेल बसेर अमृतफुल भेजना।।2।।
के एहो पिजरा गढ़ाओल सूगा पोसल
के ताहि देल अहार अमृफल भोजन।।3।।
फलाँ बाबा पिजरा गढ़ा ओल सूगा पोसल
फलाँ सासु देथि अहार अमृत फल्म भोज्य।।4।।
एहन सूगा नहि पोसिअ नेह लाबिअ
सुगबा हैत उड़िऑत अपन घर जाएत।।5।।
भनहि विद्यापति गाओल गाबि सुनाओल
जोगिनि बड़ गुनमन्ति अन्तनहि पाओल।।3।।
जोग।

[681]

तोहें प्रभु सुरसरि धार हे। पतितक करिअ उधार हे।।1।।
दुर सत्रो देखल गाङ हे। पाप न रहले आङ हे।।2।।

सुरसरि सेबल जानि हे। एहन परसमनि पानि हे।।3।।
भनहि विद्यापति भान हे। सुपुरुख गुनक निधान हे।।4।।

[682]

भरल भवन तेजि गेलाह मुरारि। जत दिन गेलाह तकर गुन चारि।।1।।
प्रथम एगारह फेर दिअ पाँच। तीसक तेगुन थोड़ दिन साँच।।2।।
चालिस कोटि आध हरि लेल। तैं पुनि जीब एहन सन भेल।।3।।
सए मह चौगुन लिअ नै बिचारि। तैं तोहि भल नहि कहत मुरारि।4।।
भनहि विद्यापति आखरलेख। बुधजन होथि से कहथि बिसेख।।5।।
पिहानी। अर्थ नहि लागल।

[683]

माधब मन जनु राखिअ रोसे।
अबसर तेजि कतए चलि गेलहुँ, ताहि हमर कोन दोसे।।1।।
तिनि सए साठि आध मिन्हा दे से कए गेलहुँ ठेकाने।
ता दोगुन तकरो पुनि षटगुन अएलहुँ तकरो निदाने।।2।।
बिरह उदास दाप तन झामर करए चाह जिब अन्ते।
आब हम करब कि लए तुअ आदर प्रेमपदारथ तोहें कन्ते।।3।।
कुचजुग कमल उतुंग भार उर से कुम्हिलाएल फूटी।
गरगर चुबए अमिअ भिजु आँचर आब रहल भए सीठी।।4।।
ई सुनि धनिक बचन मधुरापति बिहुँसि हसल मुख फेरी।
धन जन जौवन थिर नहि कौखन ककरा नहि एक बेरी।।5।।
अजय वदन कमल सुनु भाविनि बुझल तुअ सदभावे।
सूखल सारि जऔं नीर पटाबिअ अवसर काज किछु आवे।।6।।
भनहि विद्यापति सुन बर जौबति ई थिक नबरस रीती।
अपन पुरुखकें प्रेमे जेमाबिअ बिसरि जाइ सब नीती।।7।।

पिहानी। (2) तिनि... दए--180 दिन अर्थात् छओ मासक अवधि। तकर दूना 360 दिन अर्थात् वर्ष, तकर छओ गुना अर्थात् छओ वर्ष। (6) सारि -- धान।

[684]

पाहुन नन्दि भवानी, बैसक देल बघम्बर आनी।।1।।
घर नहि सम्पति पर न परोस, पाहुन आनल कओन भरोस।।2।।
हर माला लए धरथि धेआन, पाहुन जेमथु पहिले साँझ।।3।।
माङ्गिचाङ्गि आनल तमादुइ भिखिआ, हरक चरिन देखि हँसथि परोसिया।
भनहि विद्यापति सुनहु मनाइनि, एहन पाहुन घर नितनित आनी।।5।।

[685]

गौरी औरी ककरापर करती बर भेल तपसि भिखारि।
हेम सिखर पर बसथि महादेव ने छनि घर ने दोआरि।।1।।
बारि कुमारि गौरी राजदुलारी रिसि के प्रान अधार।
से गौरी कोना बिपति गमओती के मुख करत दुलार।।2।।
तेल फुलेल लए केस बन्हाबथि आओर उँगारथि आड।
से गौरा कोना भसम लगओती नित उठि कुटती भाङ।।3।।
भनहि विद्यापति सुनिअ मनाइनि इहु थिका त्रिभुवननाथ।
सुभ सुभ कए धिआ गौरा बिआअ इहे बर लिखल ललाट।।4।।
नचारी। (1) औरी - लटाढम; गौरव।

[686]

हे हर जानि न भेल गरुअ दरबार।
असरन सरन धएल हम तोहि। अबला जानि बिसरलह मोहि।।1।।
भाँग खाए सिब सुतलाह भोर। तें दिन दिन दुरगति भेलि मोर।।2।।
दाता हमर सिंहेश्वर नाथ। तनिक सेवन कए भेलहुँ सनाथ।।3।।
भनइ विद्यापति सुनिअ महेस। अपन सेबक के मेटह कलेस।।4।।

[687]

गौरा तोर अङना; बड़ अजगुत देखल तोर अङना।।1।।
एक दिस बाघ सिंह करए हुलना। दोसर बड़द छल सेहो बओना।।2।।
कतिक गनपति दुइ चेङना। एक चढ़ए मोर एक मूस लदना।।3।।
पैंच उधार माङए गेलहुँ अङना। सम्पति मध देखल भङघोटना।।4।।
खेती ने पथारी भरए भाङ अपना। जगतक दानी थिका तीन भुबना।।
भनइ विद्यापति सुनु उगना। दारिद हरन करू धैल सरना।।5।।

[688]

जखन देखल हर हो गुननिधि। पुरल मनोरथ सब बिधि।।1।।
बसह चढ़ल हर हो बूढ़ जति। कान कुण्डल गरा गजमोती।।2।।
बैसल महादेव हर हो चौका चढ़ि। जट छिड़िआएल मौलि भरि।।3।।
बिधिकरि हर हो बिधि करु। बिधि न करए हर हठ धरु।।4।।
बिधि करइते हर हो घुमि खसु। ससरि खसल फनि गौरि हँसु।।5।।
किछु नहि सखि हे हिनि कहु। पुरुब लिखल थिका मोर पहु।।6।।
नचारी। (3) मौलि - मौर, मुकुट।

[689]

डाली कनक पसारल। नयना जोगिनि हकारल।।1।।
नयना कोन बिधि आइलि। सकल जोग सङ्ग लाइलि।।2।।
हेमन्त आनल बर पसुपति। एको नहि बाजथि दिढ़मती।।3।।
सुभ सुभ कए सभ भाखिअ। गौरी बसि हरकें राखिअ।।4।।
भनहि विद्यापति गाओल। जोगिनिक अन्त नहि पाओल।।5।।

[690]

नैहर आब हम जाएब सदासिव, नैहर आब हम जाएब।।1।।
पड़िबा तिथि हम जतरा कएकें दुतिआ गमन कराएब।
तृतीया के हम पथहि बिताएब चौठिमे काजर लगाएब।।2।।
पञ्चमि चन्दन अङ्ग लगाएब षष्ठी बेल तर जाएब।

नवपत्री सङ सप्तमी प्रातमे भक्तक घर हम आएब।।3।।
अस्टमी दिन महापूजा निसि बलि लए लए भक्त जगाएब।
नवमीमे तिरसूलक पूजा बहुबिधि बलि चढ़ाएब।।4।।
नबो निधि सेवक कैं दएकें दसमी कलस उठबाएब।
भन वियापति जननी कहल सिब फेर अपन गृह आएब।।5।।

[691]

हमरा कैं जँ तेजब, गुन बूझब,
जोगहि देब बनिसार अधिन कए राखब।।1।।
एको पलक जें तेजब, गुन बूझब,
एहन जोग मोर तेज सेज नहि छोड़ब।।2।।
आरसि काजर पारब, निसि डारब,
ताहि लए आँजब आँखि जोग परचारब।।3।।
नयनहि नयन रिझएब, प्रेम लाएब,
करब मोर गरहार हृदय बिच राखब।।4।।
भनहि वियापति गाओल, जोग लाओल,
दूल्हा दुल्हिनि समधान अधिन कए राखब।।5।।

जोग। (1) बनिसार-बन्दीशाला, कारागार।

[692]

कहु सखि कहु सखि रातुक रङ्ग। कतेक दिवस पर पहुक प्रसङ्ग।।1।।
कि कहब आहे सखि रातुक रङ्ग। पिठि दए सुतलहुँ मुरुखक सङ्ग।।2।।
बड़ रे जतने घर बैसलहुँ जाए। सूति रहल पहु दीप मिझाए।।3।।
आँचर ओछाए हमहु सङ्ग देल। जेहो जागल छल सेहो निन्द गेल।।4।।
भनइ वियापति सुनु व्रजनारि। धैरज धए रहु मिलत मुरारि।।5।।

(11) सीताराम झा द्वारा सम्पादित गीत

[693]

पढ़ल पुरुख मुरुख भेल। गाइनि सहित कोबर गेल।।1।।
झारि झुरि पटिआ ओछाए देल। ताहि पर दुहुकें बैसाए देल।।2।।
पाकल पान खोआए देल। बिनु बिधि बीधि कराए देल।।3।।
सुन्दर चीर ओढ़ाए देल। बिनु बिधि बीधि कराए देल।।4।।
भनहि वियापति गाओल। गौरि उचित बर पाओल।।5।।
पटिआ झारैक गीत

[694]

सात बहिनि हम जोगिनि। माइ हे, नयना थिकि जेठि बहिनि।।1।।
तनिकहुसँ जोग सीखल। माइ हे, चौदह भुवन हमे हाँकल।।2।।
इन्द्र हमर डर मानथि। माइ है, बिनु मेघ पानि बरिसाबथि।।3।।
हरिहर सनकादि मुनिजन। माइ हे, के ने मान डर त्रिभुवन।।4।।
भनइ वियापति गाओल। माइ है, जोगिनिक अन्त न पाओल।।5।।

[695]

स्यामबरन श्री राम। है सखि; देखइत छकइत काम।।1।।
आजु हमर बिहि बाम। हे सखि, पहु तेजि जाइअछि गाम।।2।।
पढ़ल पण्डित जन भान। है सखि, पहुक ने करि अपमान।।3।।
भनहि वियापति भान। हे सखि, सुपुरुख गुनक निधान।।4।।

[696]

सुजन अरजि कत दन्द रे। अवसर नहि कर मन्द रे।।1।।
सात खण्ड कुसिआर रे। निकसल प्रेम पोआर रे।।2।।
नव कामिनि नव नेह रे। तेजलन्हि हमर सिनेह रे।।3।।
ओतहि रहथु हग फेरि रे। दरसन देथु एक बेरि रे।।4।।
भनहि वियापति भान रे। पुरुखक नहि परमान रे।।5।.

[697]

उचित पुछिअ तोहि मालति सजनि गे मन मलीन मुख तोर।
की देखि भमर पड़ाएल सजनि गे बिरहिनि हृदय कठोर।।1।।
चान तेजल जँ कुमुदिनि सजनि गे हरि तेजि मधुपुर गेल।
सुन देखि जीब उपेखल सजनि गे दगध दैब दुख देल।।2।।
कमलनयन नहि आएल सजनि गे कत दिन धरु हुनि आस।
मनिमय हार भार भेल सजनि गे मन बड़ भेल उदास।।3।।
तकर कतेक अभिलाखब सजनि गे देलनि कत बिसबास।
भनहि विद्यापति गाओल सजनि गे ई थिक परम उदास।।4।।

[698]

कोमल कमल कियै विधि सिरजल मोर चिन्ता पिअ लागी।
चिन्तहि सखी निन्द नहि सूतिअ रइनि गमाबिअ जागी।।1।।
बर कामिनि हे काम पिआरी निसि अन्हिआरि डेराही।
गुरु नितम्ब भरे चलहु न पाबए कामक पीड़लि राही।।2।।
साओन मेघ झिमिक झिम बरिसए बहल भमय जलपूरे।
भनहि विद्यापति बिजुरि रेह चंक दीठि न परसब दूरे।।3।।

[699]

हरि गेल मधुपुर हम कुलबाला। कुपथ पड़ल जँ मालति माला।।1।।
की कहु की पुछु सुनु प्रिय सजनी। कोन परि जाएत दिन ओ रजनी।।2।।
नयन निन्द गेल बचनक हास। सुख गेल पिअ संग दुख मोर पास।।3।।
भनहि विद्यापति सुनु बरनारि। सुजनक दुदिन दिबस दुइ चारि।।4।।

[700]

दारुन समय बसन्त। हे सखि, दुरहि बसथि मोर कन्त।।1।।
आजु किए मन मन्द। हे सखि, तैं दरशन मुख चन्द।।2।।
जौवन भेल जिबकाल। हे सखि, ताहि लए रुसल गोपाल।।3।।
भनहि विद्यापति भान। हे सखि, पुरुखक नहि परमान।।4।।

[701]

आँगुर धए पहु लए गेल सजनि गे कएलक अन्तक बात।
हम धनि बाला मुइलहुँ सजनि गे हिय भेल पिपरक पात।।1।।
पहिने दुख पाछाँ सुख सजनि गे नाह तोहर गुनमन्त।
भनहि विद्यापति सुन सजनि गे ई नहि थिक किछु अन्त।।2।.

[702]

कतए रटल मोर माधव ना। तनि बिनु कत जिब साधब ना।।1।।
हरि हरि कर ब्रजनागरि ना। चिहुकि उठल नब कामिनि ना।।2।।
सिरसँ खसल कारी नागिनि ना। हिचुकि उठल नब कामिनि ना।।3।।
फुलल कमल उर लागल ना। जौबन काल बेसाहल ना।।4।।
भनहि विद्यापति गाओल ना। देवसिंह रस बूझल ना।।5।।

[703]

माधब तेजि गेल विषम बिदेस। नयन बरसि गेल मघ असरेस।।1।।
कतेक दिबस पर पाहुन भेल। रतन सिंहासन बैसक देल।।2।।
पैंचो ने भेटल अपन फल काँच। पहु लेखे मधुरस मोर मन काँच।।3।।
से सुनि कान्ह चलल रिसिआए। हँसिहँसि हम धनि राखल लोभाए।।4।।
कॉच सॉच फल तोहें बरु खाह। हम दुख सहब विमुख जनु जाह।।5।।
आँगन मोरा लेखें चानन के गाछ। तेहि पर भमरा परल उपास।।6।।
भनहि विद्यापति कवि जयराम। कि करत नाह दैव भेल बाम।।7।।

[704]

माधव, सब विधि थिक मोर दोषे।
बएस अलप अछि तन अछि कोमल तें नहि दरसब रोसे।।1।।
तुअ अविशेष रोस हम चललहुँ जाए सहब दुख देहे।
सखि सब हेरि घेरि कै राखल एखनहि एहन सिनेहे।।2।।
काँच कली जँ हरि तोड़ब तें पुन से होएत उदासे।
होएत कली से रंग सुरंगित दिन दिन होएत प्रकाशे।।3।।

निकसि सुवास आस तोहि पूरत पिबिहह रहि रसपासे।
किछु दिन आओर धीर धरु मधुकर जखन होएत सुविकासे।।4।.
वियापति भन अरज कर कामिनि ने करु एहन गेआने।
दिन दिन तोहि सुवास बढ़त हरि पुरत सकल मनकामे।।5।।

[705]
दछिन पबन तोहें जाह। जहाँ बसए मोर नाह।।1।।
जाइते देखल पथ कान्ह। मदन साजल पाँचो बान।।2।।
नयन ढरकि भिज चीर। पिआ बिनु दगध सरीर।।3।।
परदेस रहल कन्हाइ। रमनि खसलि मुरुछाइ।।4।।
कहथिन्हि हमरो बिनती। बड़ जन न तेज पिरीती।।5।।
वियापति कवि भाने। पुरुखक की परमाने।।6।।

[706]
अवधि मास छल माधब सजनि गे निज कर गेलाह बुझाए।
से दिन आबि तुलाएल सजनि गे धैरज धएल न जाए।।1।।
अति आकुल भेलि पहु बिनु सजनि गे सुन्दरि अति सुकुमारि।
उकछि हिया पथ हेरथि सजनि गे अबहु न आएल मुरारि।।2।।
खन खन मदन दहो दिस सजनि गे बिरह उठए तन जागि।
से दुख काहि बुझाएब सजनि गे बैसब ककरा लागि।।3।।
हरि गुन सुमरि बिकल भेल सजनि गे के बूझत दुख मोर।
विद्यापति कवि गाओल सजनि गे आओत नन्द किसोर।।4।।

[707]
तरुन बएस मोर बीतल सजनि गे पहु बिसरल मोर नाम।
कुसुम फुलिय फुलि मउलल सजनि गे भमर न लेअ बिसराम।।1।।
सिर सेँदुर नहि भावए सजनि गे मुरुछि खसलि महि ठाम।
उठइत परम बेआकुल सजनि गे किएक दैब भेल बाम।।2।।
कोकिल कुहुकि सुनाओल सजनि गे नयन ढरकि खस बारि।

अधरस ओतए गमाओल सजनि गे दए गेल सौतिनिक सारि।।3।।
जुगल नयन मन व्याकुल सजनि गे थिर नहि रहए गेआन।
वियापति कवि गाओल सजनि गे ई थिक दुखक निदान।।4।।

[708]
भाड़गए चाह चिकुर भर सजनि गे सहजहि दूबरि देह।
प्रथमहि पहुक समागम सजनि गे बाढ़ल परम सिनेह।।1।।
दुर भए सुतलि विमुख भए सजनि गे बिरह बसन मुख झाँपि।
अभिनव केलिक नामे सजनि गे नहि नहि कए उठ काँपि।।2।।
नयन नीर भरि बाजए सजनि गे भेल सपथ निरबाह।
पुरुख न मानए नारि दुख सजनि गे केवल निज सुख चाह।।3।।
नूपुर काढ़ि नराओल सजनि गे हरल बसन अबसेख।
भाव भरल छल नागर सजनि गे अति उनमत भेल देख।।4।।
भनहि वियापति गाओल साजनि गे केओ जनु नेह लगाब।
भाव एकर हम की कहु सजनि गे जे सुन से दुख पाब।।5।।

[709]
की कहु पहु परदेस गेल सजनि गे की करु किछु ने सोहाए।
फूजल केस नीर बहु सजनि गे काजर गेल दहाए।।1।।
कङ्कन बसन भार भेल सजनि गे जौबन भेल अति भार।
आँगन मोर लेखें बृजबन सजनि गे घर भेल दिवस अन्हार।।2।।
हरि बिनु सेज सूल भेल सजनि गे तकिया मोहि न सोहाए।
जँ प्रियतम नहि आओब सजनि गे मरब जहर बिख खाए।।3।।
विद्यापति कवि गाओल सजनि गे मन जनु करह उदास।
तकर कतेक अभिलाखब सजनि गे दए गेल मोहि बिसबास।।4।।

[710]
माधव एखन दूर करु सेबे।
किछु दिन धैरज धरु मनमोहन हमहि उमगि रस देबे।।1।।

कॉच कमलफुल कलि नहि तोड़ह अधिक उठत उदबेगे।
एहन बएस रतिजोग न थिक पहु मानिअ मोर उपदेसे।।2।।
राहु गरासल ससिधर जेना तेहन न करिअ गेआने।
किछु दिन आओर बितए दिअ माधब तखन होएत रस दाने।।3।।
भनहि विद्यापति सुनिअ मधुरपति धैरज धरिअ सुरेसे।
समय जानि तोहि होएत समागम आब हम छाडु नरेसे।।4।।

[711]

बुढबा बड़ रंग रसिया। जतए गौरि देख ततए हुलसिया।।1।।
बुढारि बएसमे बालक भेल। नहि घर उबटन नहि घर तेल।।2।।
मडनिक साड़ी देलन्हि ओछाए। चान सुरुज देल देहरि बैसाए।।3।।
भनहि विद्यापति सुनह महेसिया। हरक चरित देखि हसथि परोसिया।।4।।

(12) नरेन्द्रनाथ गुप्त द्वारा संगृहीत गीत

क--मिथिला

[712]

गगन बलाहके छाड़ल रे बारिस काल अतीत।
करिअ बिनति तन्हि[1] आओब रे जन्हि बिनु तिहुअन तीत।।1।।
आबह सुमति सङ्घातिनि रे बाट निहारए जाओ।
कुदिना सब दिन नहि रह रे सुदिबस मन हरखाओ।।2।।
सामर चन्दा उगलाह रे चढ़ि[2] पुनि गेलाह अकास।
एतबाहि पिआके अएबाँ रे पलटत बिरहिनि साँस।।3।।
सूनहु[3] दुरहि निहारबा रे जति दुर हिअरा धाब।
कि करब[4] हिअरा आकुला रे आगिहि बात न पाब।।4।।
विद्यापति कवि गाबिहा रे रस जानए रसमन्त।
मन्ति महेसर सुन्दर रे रेनुका देवि सुकन्त।।5।.

1. सौं एँ। 2. चान्दै। 3. सुतिये। 4. करत।

झूमरि गीत। भाषा आ' भनितासँ प्रामाणिकताक आभास। कान्हक बाट जोहैत राधा सखीसँ कहैत छथि -- (1) आकाशसँ मेघ हटि गेल। बरसात बीतल। प्रार्थना करह जे ओ आबथि जनिका बिना तीनू लोक सून लगैछ। (3) श्यामचन्द्र अर्थात् कृष्णचन्द्र छन भरि दर्शन देलनि, फेर आकाश चढि गेलाह, दूर चलि गेलाह। एतबहिमे (एखनहि, शीघ्रे) अओताह। विरहिणीक गेल प्राण घुरि आओत। (4) शून्य (आकाश) मे दूर धरि तकैत छी, जतेक दूर हृदय (मन) दौड़ैत अछि। (4) कोन उपाय करू; आगिहि...पाब — अस्पष्ट।

[713]

हमे हसि हेरल थोरा रे। सफल भेल सखि कौतुक मोरा रे।।1।।
हेरितहि हरि भेल आने रे। जनि मनसिजे मन बेधल बाने रे।.2।।
लखल ललित तसु गाते रे। मन भेल परसिअ सरसिज पाते रे।।

तनु पसरल सेद बिन्दु रे। नेउछि नडाओल सनखत इन्दु रे।।3।।
काँपल परम रसाले रे। जनि मनसिज करे पेलु तमाले।।
विद्यापति कवि भाने रे। करए कमलमुखि हरि समधाने रे।।4।।

राधा कान्हक दर्शन पाबि अपन उल्लास सखीकें सुनबैत छथि। (2) मनसिज —कामदेव। (3) गात-शरीर। परसिअ....पाते — कमलक पातकें छूबी। सेद — घाम। सनखत — तारासहित। (4) परम रसाल — रसराज कृष्ण। पेलु — डोलबथि।

[714]

बिधिबस नयन पसारल पसरल हरिक सिनेह।
गुरुजन गुरुतर डरे सखि उपजल जिबहु सन्देह।।1।।
दुरजन भीम भुअङ्गम बम कुबचन बिसधार।
तें तिखे बिखे जनि माखल लाग मरम कनिआर।।2।।
परिजन परिचय परिहरि हरि हरि परिहरि पास।
सगर नगर बड़ पुरजन घरे घरे कर उपहास।।3।।
पहिलुक पेमक परिभब दुसह सकल जग जान।
धैरज धर धनि मने गुनि कवि विद्यापति भान।।4।।

राधा अपन प्रथम प्रेमक अनुभव सखीकें कहैत छथि। (1) जिबहु सन्देह – प्राणहु पर संकट। (2) दुर्जन सभ मानू भयानक साप थिक; ओ दुर्वचनरूपी विष उगिलए लागल। ओकर ओहि तेज विषसँ बोरल तीर हमरा मर्मस्थलमे लागि गेल। (3) पड़ोसी सभ (कलंकिनी बूझि) अनचिन्हार बनि गेल आ' लगौ आएब छाड़ि देलक।

[715]

माधब बूझल तोहर नेह।
ओर धरि हमे राखि न पारिअ रहए कि जाए देह।।1।।
तोहें है माधब अति सुनागर देखइते अति अमोल।

जेहन मधुक माखल पाथर तोहन तोहर बोल।।2।।
ई रीति कए हम पिरीति लाओल जोग परिनति भेल।
अमृतफल बदि लता लाओल बिस फरिफरि गेल।।3।।
भन विद्यापति सुन रमापति सकल गुन निधान।
अपन बेदन ताहि निबेदिअ जे परबेदन जान।।4।।

राधा कृष्णकें प्रीतिमे चुकबाक उपराग दैत छथि। (3) हम जे प्रीतिक निर्वाह एहि तरहें करैत रहलहुँ तकर उचित परिणाम भोगि रहलि छी। लाओल — लगाओल, रोपल।

[716]

मालति मन जनु मानह आने।
तोहरासँ हमे जे किछु भाखल से सब बचन परमाने।।1।।
सब परिहरि कहुँ तोहि हमे भजलहुँ ताहि करत के भङ्गे।
जँ दुरजन सए कोटि जतन कर तैओ जनम भरि सङ्गे।।2।।
अनुखन मन धनि खिन्न करह जनि देब सपथ थिक लाखे।
हमरा तोंहहि दोसरि नहि तेहनि मन अछि दृढ अभिलाखे।।3।।
विधिक दोखे जत रोख कएल तत कहल तोहि एक-आधे।
नागरि सेह जगत गुन आगरि जे खेम पति अपराधे।।4।।
विद्यापति कह धैरज सबतह मन जनु करह मलाने।
तुअ गुन मन गुनि पहु रहु अनुगत करत अधर मधुपाने।।5।।

रूसलि नायिकाकें नायक बौंसैत छथि (मालती आ' भ्रमरक अन्योक्तिमे)। (2) परमान — सत्य। (2) परिहरि कहुँ — छाड़िकें। (2) दुर्जन हमरा दूनूक प्रेम तोड़बाक लाख उपाय करओ, तैओ हमरा दूनूक प्रेम जन्म भरि टिकल रहत। (4) अभाग्यवश क्रोध भेल तें किछु कटु वचन मुहसँ बहराएल।

[717]

सेहे कान्ह सेहे हम सेहे पञ्चबान। पाछिल छाड़ि रङ्ग आबे आन।।1।।
आगिल[1] पेमक कि कहब साधे। पछिलाहु पेम देखिअ अबे आधे।।2।।
बोलि बिसरलह दए बिसबास। से अनुरागल हृदय उदास।।3।।
कवि विद्यापति एहो रस भान। विरल रसिकजन ई रस जान।।4।।

1. पाछिल।

राधा कृष्णकें प्रीति-भंगक उपराग दैत छथि। (1) हे कान्ह, तोहूँ ओएह छह आ' हमहूँ ओएह छी; किन्तु आब ओ पछिला रंग कहाँ रहल। (2) आगाँ प्रेमक आशा करब तँ दूर, पूर्वमे जे प्रेम छल सेहो आब आधे रहि गेल।

[718]

धिक त्रिय कर जे प्रिय पर कोप। कुलकामिनि कर[1] प्रेमक लोप।।1।।
भल जनमे हो अपजस ख्यात। प्रियतम मनसँ होएब कात।।2।।
एकसरि तारा केओ नहि देख। चढ़लि अकास अमङ्गल लेख।।3।।
अपने सुख हरि कर जनु मान। कविवर विद्यापति एह भान।।4।।

1. जन।

नायिका कुलकामिनीक आदर्श सहनशीलताक प्रशंसा करैत छथि। (1) त्रिय - स्त्री, नारी। कुल...लोप — जे कुलकामिनी पतिक अपराधें प्रेमक उपेक्षा करए तकरहु धिक्कार। (3) जेना एकाकी तारा देखब अमंगल मानल जाइछ तेना पतिसँ रूसि एकसरि भेलि नारीकें सेहो अमंगल बूझू।

[719]

हरि धरु हार चञुकि पडु राधा। आध माधब कर गिम रहु आधा।।1।।
कपट कोपें धनि दिठि रहु फेरी। हरि हँसि उठल बदन बिधु हेरी।।2।।
मधुरिम हास गुपुत नहि भेला। तखने सुमुखि मुखचुम्बन देला।।3।।

करे धरु कुच आकुल भेलि नारी। निरखि अधरमधु पिबए मुरारी।।4।।
चिकुर चमर झरु कुसुमक हारा। पिबिकहु तम जनि बम नभ तारा।।5।।
विद्यापति कह सुन्दरि बानी। हरि हँसि मिललि राधिका रानी।।6।।

कवि आकस्मिक घटनासँ दम्पतिक बीच वैमनस्यक अन्त देखबैत छथि। (1) रूसलि राधाकें बउँसए लेल कान्ह हार पहिराबए लगलाह, कि राधा मूड़ी छिपि लेलनि। आधा राधाक हाथमे रहल आ......'। हँसीमे वैमनस्य दूर भए गेल। (2) दिठि — नजरि। वदनविधु — मुखचन्द्र। (5) पिबि... तारा — जेना आकाश अन्धकारकें पीबि तारा उगिलैत हो।

[720]

अपरुब रूपक धामा। तीनि भुवन जिनि बिहि बिहु रामा।।1।।
सीतल सील सोहाबे। जेहन रूपरँग[1] तेहन सोभाबे।।2।।
मधुर बचन मधु[2] सीची। बिहुस पसर जनि अमित्रक बीची।।3।।
हेरइते हरए पराने। परसन मन परिरम्भन दाने।।4।।
कि कहब रतिरङ्ग रीती। निरवधि बाढ़लि गाढ़[3] पिरीती।।5।।
विद्यापति कवि गाबे। पुने गुनमत पुनमति धनि पाबे।।6।।

1. रहिअ। 2. मुख। 3. बढ़लि बाढ़।

कवि कामिनीक गुण बरनैत छथि। (1) धामा — खजाना। जिनि — जीतिकें। बिहि — विधाता, ब्रह्मा। बिहु — रचलनि। (3) मधुसीची — मधु मखाओल। बिहुस — मुसकान। अमित्रक बीची — अमृतक लहरी। (4) परिरम्भन — आलिंगन।

[721]

एहन करम मोर भेल रे। पहु मोर दुर देस गेल रे।।1।।
दए गेल बचनक आस रे। हम आएब तुअ पास रे।।2।।
कतेक कएल अपराध रे। पहु सओ छुटल समाज रे।।3।।
कवि विद्यापति भान रे। सुपुरुख न कर निदान रे।।4।।

नायिका विरह-विलाप करैत छथि। (3) समाज—मिलन, संग। (4) निदान—प्रीतिभंग।

[722]

बड़ि बड़ाइ सबे नहि पाबए विधि निहारए जाहि।
अपन बचन जे प्रतिपालए से बड़ सबहु चाहि।।
साजनि, सुजन जन सिनेह।
कि दिअ अजर कनक उपमा कि दिअ पसान रेह।।
ओ जदि अनल आनि पजारिअ तैओ न होए मलान।
ई जदि असि कि कसिए काटिअ तैओ न छाड़ए ठान।।
गरल कि आनि सुधारसे सिञ्चिअ सीतल होअए न पार।
जइओ सुधानिधि अधिक कुपित तइओ न बरिस खार।।
भन विद्यापति सुन रमापति सकल गुन निधान।
अपन बेदन ताहि निबेदञो जे पर बेदन जान।।

[723]

कमल सुखाएल भमर न आब। पथिक पिआसल पानि न पाब।।1।।
दिन दिन सरोबर होइ अगारि। अबहु न बरिसह महि भरि बारि।।2।।
जदि तोहें बरिसब समय उपेखि। की फल पाओब दिवस दिप लेखि।।3।।
भनइ विद्यापति असमय बानि। मुरुछित जिबए आँजुरि भरि पानि।।4।।

नायिका नायककें प्रवाससँ झट घुरबाक अनुनय करैत छथि— पोखरि आ मेघक प्रतीक द्वारा। (1) पोखरिमे कमल सुखाए गेला पर भमर कथी लए आओत। (2) पोखरि दिन दिन अगारि (?) भेल जाइछ। (3) दिनमे दीप बारब व्यर्थ।

[724]

मधुपुर मोहन गेल रे मोर बिहरए छाती।
गोपी सकल बिसरलनि रे जत छलि अहिवाती।।1।।

सूतलि छलहुँ अपन गृह रे गेलहुँ सपनाए।
कर सञो छुटल परसमनि रे कोने लेल अपनाए।।2।।
कत कहबञो कत सुमिरञो रे हमे मरिअ गरानि।
आनक धनसञो धनमन्ति रे कुबजा भेलि रानि।।3।।
गोकुल चान अछोरल रे चोरी गेल चन्दा।
बिछुरि चललि दुहु जोडी रे जिब दए गेलि धन्दा।
काक भाष निज भाखह रे पहु आओत मोरा।
खीर खाँड़ भोजन देब रे भरि कनक कटोरा।।5।।
भनइ विद्यापति गाओल रे धैरज धर नारी।
गोकुल होएत सोहाओन रे फेर मिलत मुरारी।।6।।

कृष्णक मथुरागमनसँ व्यथित राधा विलाप करैत छथि। (1) बिहरए—फाटए। (3) गरानि—ग्लानि, विरहव्यथा। (4) गोकुलक चानकें (केओ) छीनि लेलक। (5) खाँड़—मिसरी, चीनी।

[725]

फुल एक बाड़ी लाओल मुरारि। जतने पटाओल सुवचन बारि।।1।।
चउदिस बान्धल सीलक आरि। जिब अबलम्बन करु अबधारि।।2।।
तथुहु फुलल फुल अभिनब पेम। जसु मुल लहए न लाखहु हेम।।3।।
अति अपरुब फुल परिनत भेल। दुइ जिब अछल एक भए गेल।।4।।
पिसुन कीट नहि लागए ताहि। साहसे फल देल बिहि निरबाहि।।5।।
विद्यापति कह सुन्दर सेह। कएले जतने फलमन्त होअ जेह।।6।।

कवि वा राधा कृष्णक प्रेमक वर्णन एक वृक्षक रूपकमे करैत छथि। (1) लाओल—लगाओल, रोपल। सुवचन बारि—मधुर वचनरूपी जल। (3) जसु...हेम—जकर मूल्य लाख स्वर्णमुद्रहुसँ अधिक।

[726]

बिनु दोखे पिअ परिहरि गेल। जौवन जनम बिफल भेल।।1।।
जगत जनमि सखि हम सनि। करमहीन न दोसरि धनि।।2।।

हरि सङ्ग कएल रभस जत। बिसलेखे बिस सन भेल तत।।3।।
निरबधि बिरह पयोनिधि। कतहु मरन नहि देल बिधि।।4।।
मनोरथ मनहि रहल कति। बिरह दहन होअ तन अति।।5।।
विद्यापति कह गुनमति। अचिरहि मिलत मधुरपति।।6।।

राधा सखीकें विरहवेदना सुनबैत छथि। (3) बिसलेखे--विश्लेष, विरह। (4) पयोनिधि--समुद्र।

[727]

कानन भमि भमि कुहुक मयूर। कट भेल नियर कन्त बड़ दूर।।1।।
कत दुर मधुपुर कह सखि जानि। जहाँ बस माधब सारङ्गपानि।।2।।
सुनि अपझम्प काँप मोर देह। गरए गरल बिस सुमरि सिनेह।।3।।
भनइ विद्यापति सुनु बरनारि। धैरज धए रहु मिलत मुरारि।।4।।

राधा सखीकें अपन विरहवेदना सुनबैत छथि। (1) वनमे घूमि-घूमि मयूर कुहकैत अछि (वर्षा ऋतु आबि गेल); कान्ह जे कट (अवधि) दए गेल से निकट आएल, मुदा कान्ह दूरे रहल।

[728]

एहि जग नारि जनम लेल। पहिलहि बएस बिरह भेल।।1।।
कथि लए दैब जनम देल। कठिन अभाग हमर भेल।।2।।
अपनहि कमल फुलाएल। तहि फुल भमर लोभाएल।।3।।
विद्यापति कवि गाओल। उचित पुरुब फल पाओल।।4।।
राधा विरहवेदना व्यक्त करैत छथि। स्पष्ट।

[729]

पिअ बिरहिनि अति मलिनि कओन परि जीउति रे।
अबधि न आएल माधब अब बिस पीउति रे।।1।।
रविकर सन भेल बिधुकर परसैते भीमा रे।
दिन दिन अबसन देह सिनेहक सीमा रे।।2।।

पहर निमिख जुग जामिनि कामिनि जगइते रे।
मुरुछि पड़ए महि माझ साँझ ससि उगइते रे।।3।।
विद्यापति कह सबतह दुसह मनोभव रे।
केओ जनु अनुभव जग जन विरह पराभव रे।।4।।

कवि राधाक विरहक वर्णन करैत छथि। (1) रविकर--सूर्यक किरण। विधुकर--चानक किरण। भीम--भयानक। अबसन--खिन्न। (3) राधाकें एक निमेष एक पहर-सन लगैत छनि आ' एक राति एक युग सन। (4) सबतह--सभसँ अधिक।

[730]

भाबिनि भल कए विमुख विधाता।
जेहे पेम सुरतरु सुखदायक सेहे भेल दुखदाता।।1।।
तोर सुमरि गुन मोर हृदय सुन नोर नयन रहु झाँपे।
गरज गगन भरि जलधर हरि हरि आवे हमर हिअ काँपे।।2।।
करिअ जतन जत बिफल होअए तत न पाइअ तोहर समाजे।
विरह दहन दह तइओ जीब रह सब तह ई बड़ि लाजे।।3।।
निबिड़ नेह रस बस भेल मानस पाब पराभव लाखे।
पुरुष परुषमति के धनि न कहति कवि विद्यापति भाखे।।4।।

नायक अपन विरहवेदना व्यक्त करैत छथि। (1) हे सुन्दरी, विधाता पहिने भल कएल, राधासँ मिलाओल, मुदा लगले विमुख भए गेलाह। जे प्रेमरूपी कल्पवृक्ष पहिने (मिलन-दशामे) सुखदायक छल सेह (विरह-दशामे) दुखदायक भए गेल। (2) सुन--शून्य। (3) समाज--संग, मिलन। विरह...लाजे--विरहक आगिमे जरैत छी, तैओ प्राण नहि जाइछ, से बड़ लाजक बात। (4) निबिड़--घन। परुषमति--कठोरहृदय। ई बात कोन युवती नहि कहत।

[731]

अपद विपदतरु पाओल रे पुनु नब नब पात।
बिरहिनि नयन बिहल बिहि रे अविरल बरिसात।।1।।
सखि अन्तर बिरहानल रे नित बाढ़ल जाए।
हरि बिनु लाख उपचारहु रे हिअ दुख न मेटाए।।2।।
पिउ पिउ रटए पपिहरा रे हिअ दुख उपजाब।
कुदिना हित जन अनहित रे थिक जगत सोभाब।।3।।
कवि विद्यापति गाओल रे दुख मेटत तोर।
हरखित चित तोहि भेटत रे पिअ नन्दकिसोर।।4।।

विरहिणी राधा विलाप करैत छथि। (1) अचानक विपत्ति (विरह) रूपी गाछमे नब-नब पात भए गेल। लगैछ जे विधाता विरहिणीक आँखिमे नब-नब वर्षा ऋतुक सृजन करैत रहैत छथि।

[732]

के पतिआ लए जाएत रे मोर पिअतम पास।
हिअ नहि सहए असह दुख रे भेल साओन मास।।1।।
एकसरि भवन पिआ बिनु रे मोहि रहलो न जाए।
सखि अनकर दुख दारुन रे जग के पतिआए।।2।।
मोर मन हरि हरि लए गेल रे अपने मने गेल।
गोकुल तेजि मधुपुर बस रे कत अपजस लेल।।3।।
विद्यापति कवि गाओल रे धनि धरु मन आस।
आओत तोर मनभाओन रे एहि साओन मास।।4।।
राधा सखीकें अपन विरह वेदना सुनबैत छथि।

[733]

सिसिर समय बहु[1] बहल बसन्त। तइअओं[2] घर नहि आएल कन्त।।1।।
ओ परदेसिआ धन बनिजार। मोरा हृदय भार भेल हार।।2।।
गुनिजन भए पहु भेलाह भोर। आकुल हृदय सहए[3] नहि मोर।।3।।

ए सखि ए सखि कि कहब तोहि। भल कए नाथ बिसलन्हि मोहि।।4।।
निज तन भमए कुसुम मकरन्द। गगन अनल भए ऊगल चन्द।।5।।
भनइ विद्यापति पुनु पहु पास[4]। जाबत रहत देह ता आस[5]।।6।।

1. बहि। 2. गरजहु। 3. तजए। 4. आस। 5. तिल सास।

राधा विरहवेदना सखीकें सुनबैत छथि। (1) शीत ऋतु बीतल। वसन्त सेहो बीतल। तैओ कन्त (कान्ह) घर नहि घुरल। (3) भोर—बेसुधि। (5) निज मकरन्द—अस्पष्ट। गगन—आकाशमे। अनल—आगि।

[734]

फिरि फिरि भमरा उनमत बूल। कानन कानन केसु फूल।।1।।
मोहि भान लागल कहओ काहि। रितुपति बेकताएल असकसाहि।।2।।
चन्दा उगि चण्डाल भेल। द्विजराज धरमता बिसरि गेल।।3।।
भनइ विद्यापति बुझ रसमन्त। राघवसिंह सोनमति देइ कन्त।।4।।

विरहिणी अपन वेदना प्रकट करैत अछि। अधम कोटिक गीत। (1) केसु—पलास। (2) मोहि... असकसाहि—अस्पष्ट। (3) द्विज... गेल—चन्द्रमाक एक नाम थिक द्विजराज अर्थात् उत्तम द्विज, परन्तु ओ द्विजक धर्म (दया) बिसरिकें चाण्डाल भए गेल।

[735]

मास *अखाढ़* उनत नव मेघ। पिआ बिसलेख रहओ निरथेघ।।1।।
कओन पुरुख सखि कओन से देस[1] करब तहाँ मञे जोगिनि भेस।।2।।
मोर पिआ सखि गेल दुर देस। जौबन दए गेल साल सनेस।।3।।
साओन मास बरिस घन बारि। पन्थ न सूझए निसि अन्धिआरि।।4।।
चौदिस देखिअ बीजुरि रेह। तैं सखि कामिनि जिबन सन्देह।।5।।
भादव मास बरिस घन घोर। सभ दिस कुहकए दादुर मोर।.6।।
चेहुँकि चेहुँकि पिआ कोर समाए। गुनमति सूतलि अङ्कम लगाए।।7।।
आसिन मास आस धर चीत। नाह निकारुन नहि भेल हीत।।8।।

सरबर खेलए चकवा हाँस। बिरहिनि वैरि भेल आसिन मास।।9।।
कातिक कन्त दिगन्तर बास। पिअ पथ हेरि हेरि भेलाहु निरास।।10।।
सुख सुखराति सबहुकाँ भेल। हम दुख साल सोआमि दए गेल।।11।।
अगहन मास जीब के अन्त। अबहु न आओल निरदय कन्त।।12।।
एकसरि हमे धनि सूतञो जागि। नाह न आओत खाएत मोहि आगि।।13।।
पूस खीन दिन दीघरि राति। पिआ परदेस मलिन भेल काँति।।14।।
हेरञो चौदिस झाखञो रोए। नाह बिछोह काहु जनु होए।।15।।
माघ मास घन पड़ए तुसार। झिलमिल केचुआ उनत थन भार।।16।।
पुनमति सूतलि पिअतम कोर। बिधिबस दैब बाम भेल मोर।।17।।
फागुन मास धनि जीब उचाट। बिरह बिखिन भेलि हेरञो बाट।।18।।
आतुर मत पिक पञ्चम गाब। से सुनि कामिनि जिबहु सताब।।19।।
चैत चतुरगुन पिआ परबास। माली जानए कुसुम बिकास।।20।।
भमि भमि भमरा कर मधुपान। नागर भए पहु भेल अगेआन।।21।।
बैसाख तबए खर मरन समान। कामिनि कन्त हतए पञ्चबान।।22।।
न जुड़ि छाहरि नहि बरिसए बारि। हम जे अभागिनि पापिनि नारि।।23।।
जेठ मास ऊजर नव रङ्ग। कन्त चाहए खलु कामिनि सङ्ग।।24।।
रूपनराएन पूरथु आस। भनइ विद्यापति बारह मास।।25।।

बरहमासा गीत। विरहिणी बारहो मासक उत्तेजक परिवेशमे अनुभूत अपन विरह वेदना सखीकेँ सुनबैत अछि। अर्थ सामान्यतः सरल अछि।

(1) बिसलेख- विश्लेष, विरह। निरथेघ—अस्थिर, आकुल। (3) साल—शल्य, शूल, वेदना। (7) अङ्कम लगाए—परस्पर पँजिआए, आलिंगनबद्ध भए। (8) निकारुन—निष्करुण, निर्दय। (10) दिगन्तर—परदेस। (14) दीघरि—दीर्घ, पैघ। (16) तुसार—पाला, ओस। (22) खर—तीख।

[736]

कत दिन रहब कपोल कर लाए। रविक अछैते कमलिनि कुम्हिलाए।।1।।
कहबन्हि उकुति जुगुति परचारि। अबे न जिउति धनि तोहरि पिआरि।।2।।

अभरन भूषन हलु छिड़िआए। कनकलता जनि फुल झड़ि जाए।।3।।
बसन उघारि हेरल भरि डीठि। गारि नड़ाओल कुसुमक सीठि।।4।।
भनइ विद्यापति सुनु बर नारि। धैरज धए रहु मिलत मुरारि।।5।।

विरहिणी पिआकेँ सखी द्वारा संवाद पठबैत छथि। (1) हम एतए हाथ पर गाल रखने एना कतेक दिन रहब? सूर्यक अछैत कमल म्लान भेल जाइछ (पिआक अछैत विरहसँ हम जरैत छी। (3) छिड़िआए हलु—छीटि देलक। (4) हेरल—अपन स्तन देखल।

[737]

रइनि समापलि रहलिछ थोर। रमनि रमन रति रस नहि ओर।।1।।
नागर निरसि सुमुखि मुख चुम्ब। जनि सरसिज मधु पिब ससिबिम्ब।।2।।
दिढ परिरम्भने पुलकित देह। जनि अँकुरल पुनु दुहुक सिनेह।।3।।
धनि रसमगनि रसिक रसधाम। जनि बिलसए अभिनव रति काम।।
कि कहब अपरुब दुहुक समाज। दुअओ दुहुक कर अभिमत काज।।5।।
विद्यापति कह रस नहि अन्त। गुनमति जुबति कलामय कन्त।।6।।

कवि नायक-नायिकाक संगमक वर्णन करैत छथि। (1) राति बीति गेल तैओ रति रंगक अन्त नहि। (2) नायक कसि कए सुन्दरिक मुह चूमैत छथि, जेना चान कमलक रस पीबए। (5) समाज—संगम।

[738]

सपन देखल पिअ मुख अरबिन्द। तेहि खन हे सखि टूटलि निन्द।।1।।
आज सगुन फल सम्भव साँच। बेरि बेरि बाम नयन मोर नाच।।2।।
आँगन बैसि सगुन कह काक। विरह विभञ्जन दिन परिपाक।।3।।
आज देखल पिअ अलखक चान। विद्यापति कवियर एहु भान।।4।।

नायिका सपनामे पिआक मुह देखि अपन उल्लास सखीकेँ कहैत अछि। (2) सम्भव जे आइ हमर सगुनक फल साँच हो। (3) विरह परिपाक—विरह दूर होएबाक समय आबि गेल।

[739]

जे दुखदायक से सुख देथु। अबला जनसँ आसिख लेथु।।1।।
पिअ मोर आएल अपन¹ परोस। विरह व्यथा जनि गेल लाख कोस।।2।।
नभ भरि² उगथु सहस द्विजराज। कुदिवस हित कर अनहित काज।।3।।
त्रिविध समीर बहथु दिन राति। पञ्चम गाबथु कोकिल जाति।।4।।
हो³ गृह गृह नित उत्सव आज। विद्यापति भन मन निर्व्याज।।5।।

1. आन। 2. नहि छथि। 3. से।

नायिका प्रवासी पिआक घर घुरला पर अपन उल्लास प्रकट करैत छथि। (3) द्विजराज—चान। अधलाह दिनमे हितो अहित करैछ।

[740]

दुसह बियोग दिबस गेल बीति। प्रियतम दरसन अनुपम प्रीति।।1।।
आब लगइछथि विधु अनुकूल। नयन कपूर आँजन समतूल।।2।।
गाबथु पञ्चम कोकिल आबि। गुञ्जथु मधुकर लतिका पाबि।।3।।
बहथु निरन्तर त्रिविध समीर। भन विद्यापति कविवर धीर।।4।।

नायिका विरहक अन्त भेला पर अपन उल्लास व्यक्त करैत छथि। (2) आब चन्द्रमा अनुकूल लगैत छथि, जेना आँखिमे कर्पूरक अंजन प्रिय लगैत छैक। (4) त्रिविध समीर—शीतल, मन्द आ सुरभि पवन।

[741]

जँ हमे जनितहुँ तनि तह उपजत विरह¹ बेआधि।
बाहु फाँस लए फँसितहुँ हँसितहुँ अभिमत साधि।।1।।
समुखि भइए हसि हेरितहुँ फेरितहुँ सखि तनखेद।
मनसिज सर नहि सहितहुँ रहितहुँ हमे निरभेद।।2।।
परसनि भए रति सजितहुँ बजितहुँ लाज निबारि।
कए परिरम्भन गबितहुँ भवितहुँ² गुन अवधारि।।3।।
अजस सुजस कए गुनितहुँ सुनितहुँ नहि उपहास।

मनाहु न³ हरि परिहरितहुँ करितहुँ मन न उदास।।4।।
नारि मनोरथ अभिमत सत सत रहस निरूप।
कवि विद्यापति गाओल रस बुझ सिबसिंह भूप।।5।।

1. विमदन। 2. भरितहुँ। 3. मनओ नहि।

नायिकाकेँ नायकसँ छनेक मिलन भेलनि आ' लगले विरह भए गेलनि। एहि स्थितिमे ओ सोचैत छथि—(1) जँ ई जनितहुँ जे हुनकासँ छने भरि मिलन होएत आ' लगले विरह-व्याधि भए जाएत तँ ओही कालमे सभ मनोरथ पुराए लितहुँ।

[742]

माधब कत तोर करब बड़ाई।
उपमा तोहर कहब ककरा हम कहितहुँ अधिक लजाई।।1।।
जँ श्रीखण्ड सौरभ अति दुर्लभ तँ पुनि काठ कठोरे।
जँ जगदीश निशाकर तँ पुनि एकहि पक्ष उजोरे।।2।।
मनि समान अओरो नहि दोसर ताकर पाथर नामे।
कनक कदलि छोटि लज्जित भए रहु की कहु ठामक ठामे।।3।।
तोहर सरिस एक तोंहहि माधब मन होइछ अनुमाने।
सज्जन जनसँ नेह उचित थिक कवि विद्यापति भाने।।4।।

भक्त कवि आराध्यदेव कृष्णक गुणवर्णन करैत छथि। अर्थ सरल।

ख--हरगौरी

[743]

जय जय भैरवि असुर भयाउनि पसुपति भाविनि¹ माया।
सहज सुमति वर देह हे² गोसाउनि अनुगति गति तुअ पाया।।1।।
बासर रइनि सबासन सोभित चरन चन्दमनि चूड़ा।
कतओक दइत मारि मुह मेलल कतोक³ उगिलि करु⁴ कूड़ा।।2।।
सामर बरन नयन अनुरञ्जित जलद जोग फुल कोका।
कट कट विकट ओठपुट पाँड़रि लिधुर फेन उठ फोका।।3।।

घन घन घनन[5] घुघुरु कत बाजए हनहन कर तुअ काता।
विद्यापति कबि तुअ पद सेबक पूत बिसरु जनु[6] माता।।4।।

1. भामिनि। 2. दिअओ। 3. कतओ। 4. कैल। 5. घनए। 6. पुत्र बिसरि जनि।

गोसाउनिक स्तुति। सुनैत छी भैरवी विद्यापतिक कुलदवता छलीह। (1) भाबिनि—भामिनी; प्राचीन मैथिलीमे भाबिनि इएह रूप बेरि-बेरि भेटैत अछि। (2) बासर रइनि—दिन-राति, सतत। चन्दमनि चूड़ा—चानक माङटीका। (3) जलद... कोका—जेना मेघ आ' रक्तकमल एक ठाम जुटि गेल हो।

[744]

कनक भूधर शिखरवासिनि, चन्द्रिकाचय चारु हासिनि,
दशन कोटि विकास बङ्किम तुलित चन्द्रकले।
कुद्ध सुररिपु बल निपातिनि, महिष शुम्भ निशुम्भ घातिनि,
भीत भक्त भयापनोदन पाटव[1] प्रबले।।1।।
जय देवि दुर्गे दुरिततारिणि, दुर्गमारि विमर्दकारिणि,
भक्तिनम्र सुरासुराधिप मङ्गलायतरे।
गगन मण्डल गर्भ गाहिनि, समरभूमिषु सिंहवाहिनि,
परशु पाश कृपाण सायक शङ्खचक्रधरे।।2।।
अष्टभैरवि सङ्ग मालिनि, स्वकर[2]कृत कपाल मालिनि[3],
दनुजशोणित पिशितवर्धित पारणा रभसे।
संसारबन्ध निदान मोचिनि, चन्द्रभानु कृशानुलोचिनि,
योगिनीगण गीत शोभित नृत्य भूमिरसे।।3।।
जगत्[4] पालन जनन मारण रूप कार्य सहस्र कारण
हरिविरञ्चि महेश शेखर चुम्ब्यमानपदे।
सकल पाप कलाप विच्युति[5] सुकवि विद्यापति कृतस्तुति
तोषिते शिवसिंह भूपति कामना फलदे।

1. पाटल। 2. सुकर। 3. कपाल कदम्बमालिनि। 4. जगति। 5. कलापरिच्युति।

दुर्गाक स्तुति। भाषा ने शुद्ध संस्कृत, ने मैथिली।

[745]

भल हर भल हरि भल तुअ कला। खन पित बसन खनहि बघछला।।1।।
खन पञ्चानन खन भुज चारि। खन सङ्कर खन देब मुरारि।।2।।
खन गोकुल गए चराइअ गाए। खन भिखि माङ्गिअ डमरु बजाए।।3।।
खन गोबिन्द भए लिअ महादान। खनहि भसम भरु काँख बोकान[1]।।4।।
एक सरीर लेल दुइ बास। खन बैकुण्ठ खनहि कैलास।।5।।
भनइ विद्यापति बिपरित बानि। ओ नाराएन ओ सुलपानि।।6।।

शिव ओ विष्णुक युगलमूर्ति हरिहरक स्तुति। (4) बोकान—झोरा। (6) भनइ... सुलपानि—दूनूक बानि (स्वरूप) तँ विपरीत (भिन्न-भिन्न) छनि किन्तु थिकाह एक।

[746]

एतए कतए आएल जति गोरि अछ तपे। राजेरि[1] कुमारि बेटि डरु देखि सापे।।1।।
तोड़ब मञे जटाजूट फाड़ब बोकाने। हटल न मान जति होएत अपमाने।।2।।
बिसम नयन हर जरए[2] दहनू। उमा मोरि नोनुत्रि[3] हेरह जनू।।3।।
भनइ विद्यापति सुन जगमाता। ओ नहि उमता थिका त्रिभुवन[4] दाता।।

1. राजरे। 2. तीनि नयन हर बीसम जर। 3. ननुमि। 4. उमत त्रिभुवन।

शिवक पूर्वराग। भाषा प्राचीन आ' परिमार्जित। प्रामाणिकताक आभास।

[747]

ए मा कहह मोहि पुछओ तोही।
ओहि तपोबन तापसि भेटल फुल[1] तोड़ि देल मोही।।
ऑञुर भरि कुसुम तोड़ल जे जत अछल तहाँ।
तीनि नयने मोहि[2] निहारल बैसलि छलिहुँ[3] जहाँ।
गरा गरल नयन अनल सिर सोभ इन्हि ससी।
डिमि डिमि कर डमरु बाजए एह आएल तपसी।।
सिर सुरसरि भ्रमु कपालौं हाथ कमण्डु गोटा।
बसह चढ़ि[4] आएल दिगम्बर बिभूति कएल फोटा।।
भन विद्यापति सामिक निन्दा न कर गोरी माता।
तोहर सामि जगत ईसर भुगुति मुकुतिदाता।।

कुसुम (छन्द टूटैछ)। 2. नयने खने मोहि (छन्द टूटैछ)। 3. रहलि।
4.बसल चढ़ल।

प्रसिद्ध भाव। प्राचीन परिष्कृत भाषा।

[748]

जोगिआ मन भावए हे मनाइनि।
आएला[1] बसहा चढ़ि बिभूति लगाए है। मन मोर हरलन्हि डमरु बजाए है।।
सुन्दर गात अजर पति कोना रे[2]। चितसँ न छुटथि जानथि किछु टोना रे।।
तीनि नयन एक अगिनिक ज्वाला रे। भाल तिलक चान फटिकक माला रे।।
ओहे सिंघेसरनाथ थिका मोर पति रे। विद्यापति कह मोर गौरीहर गति रे।।

1. आएल। 2. से नाहे।

सिंहेश्वरनाथ नवीनताक प्रमाण। भाषा नवीन। सुन्दर...पति—अस्पष्ट।

[749]

मङ्गल बिलहिंअ[1] सेंदुर पिठारे। तोहें सौंपलह साजी भरि छारे[2]।।1।।
चलह चलह हर पलटि दिगम्बर। हमरि गोसाञुनि जोग न तोहें बर।।2।।
तोहहु चाहि[3] गुरु गौरबे गोरी। कि करब तप जपमाला तोरी।।3।।

नयने निहारब सँभरम लागी। हिमगिरि धीअ सहब कैसे आगी।।4।।
भाल बरए नयनानलरासी। झरकत मउर डाढ़ति पटबासी।।5।।
बड़े सुखे सासु चुमाओल मथा। ओहो बुड़त सुरसरि के सथा।।6।।
करब सखी जबे[4] केलि अलापे। बिलग होइति फुफुआइते सापे।।7।।
विद्यापति भन बूझल जुगुती। मेलि कराउबि हमे सिब सकती।।8।।

1. बिलुबिअ। 2. तोंहे भलि सोपलि साजलि छारे। 3. हर चाह। 4. जने।

शिवविवाहक कौतुक। (1) शुभ अवसर पर सिनूर-पिठार बिलहल जाइछ; मुदा हे शिव, तों तँ साजीमे भरि केवल छाउर अनलह। (3) तोहहु...गोरी—गौरी तँ गुणगौरवमे तोरहुसँ उपर अछि। (5) मउर—वैवाहिक मुकुट। डाढ़ति—जरि जाएत। पटबासी—पटोर।

[750]

जटाजूट दह दिस हलु नमड़ाए। बसह चढल उपगत भेल आए।।1।।
दुर सञो मन्दाइनि हलिअ पुछाए। के बरिआती के पुनि[1] जमाए।।2।।
कण्ठ आएल छन्हि बासुकि राए। सेहे बरिआती इसर जमाए।।3।।
ऐसन ठाकुर हर सम्पति थोरि। भार आएल छन्हि भसमक झोरि।।4।।
विधि न करए हर खेल पासासारि। सापक सङ्ग सिब रचल धमारि।।5।।
खिर न खाथि हर धुकथि गजाए। एहन उमत कओने जोहल जमाए।।6।।
भनहि विद्यापति एहु रस भान। ओ नहि उमता जगत किसान।।7।।

1. हथि।

शिवविवाहक कौतुक। भाषा प्राचीन आ' प्रांजल। प्रसिद्ध भाव। (1) उपगत—लगमे उपस्थित। (7) जगत-किसान—संसारक स्रष्टा।

[751]

जखने सङ्करे गौरि करे धरि आनलि मण्डप माझ।
सरद सम्पुन ससधर जनि उगल समय साँझ।।1।।
चौदह भुवन सिब सोहाओन गउरि राजकुमारि।

हेरि हरखित भेलि मन्दाइनि आएल जनि जम्भारि।।2।।
हेमन्त सरीर पुलके पुरल सफल कामना मोरि।
हरि विरञ्चि दुहू जन बैसल हरकें देलन्हि गोरी।।3।।
नारद तुम्बुरु मङ्गल गाबथि आओर कतन नारि।
कौतुके कोबर पैसलि कामिनि सबे सब दिअ गारि।।4।।
भन विद्यापति गोरि परिनय कौतुक कहि न जाए।
साप फुफकारे नारि पड़ाइलि बसन ठाम नड़ाए।।5।।

शिवविवाह। कोनो चिन्ता नहि, उल्लासे उल्लास। भाषामे प्राचीनताक आभास। (2) जम्भारि—जम्भ नामक राक्षसक आरि भगवान् इन्द्र। मनाइनिकें बुझएलनि जेना इन्द्र आएल होथि। (3) ब्रह्मा आ' विष्णु दूनू कन्यादानक साक्षी भेलाह। (4) कौतुक दूटा भेल —पहिल, ललनालोकनि उपहासमे एक दोसराकें गारि दैत रहथि। जेना ननदि-भौजाइ आदि; दोसर (5) किछु ललना सापक डरें नङटे पड़इलीह।

[752]

उमता न तेजए आपनि[1] बानि। बसि सासुर[2] कत करए उबानि।।1।।
गङ्गाजलें सींचलि[3] रङ्गभूमि। पिछरि खसलि गौरा[4] घुमि-घूमि।।2।।
अवलम्बल गोरि तोरितहिं[5] जाए। कर कङ्कन फनि उठल[6] फँफाए।।3।।
सबे सबतहु बोल बउरा[7] जमाए। बसह चढल बर रूसल जाए।।4।।
जमाइक परिहन बाघक छाल। चरन घाघर बाज सिर मुण्डमाल।।5।।
भनइ विद्यापति सिबक बिलास। गौरि सहित हर पूरथु आस।।6।।

1. अपनि। 2. बस ससुरा। 3. सिचु। 4. खसल हर। 5. अवलम्बे गोरी तोरए। 6. उठ। 7. गिरि।

[753]

अञ्जलि भरि फुल तोरि लेल आनी। सम्भु अराधए चललि भबानी।।1।।
जाहीजूही तोरल आओ बेलपाते। उठिअ महादेब भेल पराते।।2।।
जखने हेरल हरे तिनहु नयने। ताहि अबसर गोरी पीड़लि मदने।।3।।

करतल काँपु कुसुम छिड़िआऊ। बिपुल पुलक तनु बसन झँपाऊ।।4।।
भल हर भल गोरि भल बेबहारे। जपतप दुर गेल मदन बिकारे।।5।।
भनइ विद्यापति ई रस गाबे। हर दरसने गोरि मदन सँचारे।।6।।
गौरी चललीह शिवक पूजा करए आ' पड़ि गेलीह कामदेवक जालमे।

[754]

माटि भलि जोहि कहुँ आनलि सयानी। सम्भु अराधए चललि भवानी।।1।।
आक धुतुर फुल देल मञे जोही। जगत जनम[1] डर छाड़ल मोही।।2।।
जम किंकर मोर कि करत भङ्गे। रह अपराधी बलिया सङ्गे।।3।।
जे सभ कएल हमे हे हर[2] दोसे। से सब कएल हर तोहर भरोसे।।4।।
भनइ विद्यापति संकर सुनु। अन्त काल मोहि बिसरब जनु।।5।।

1. जनमि। 2. कएल हर सबे मोर।

गौरी शिवक पूजा कएल आ' भुक्ति-मुक्ति वर माङल। (2) पुनः संसारमे जन्म लेबाक डर नहि रहल। (3) जँ अपराधीक संग (पीठ पर) बलवान् (शिव) तँ।

[755]

हम सञो रुसल महेसे। गौरि बिकल मन करथि उदेसे।।1।।
पुछिअ पथुक जन तोही। एँ पथँ देखल केहु बूढ बटोही।।2।।
आङ्ग विभूति अनूपे। कतेक कहब हुनि जोगिक सरूपे।।3।।
विद्यापति भन ताही। हर लए गौरी भेलि बताही।।4।।

[756]

उगता रे मोर कतए गेलाह। कतए गेलाह सिब किदहु भेलाह।।1।।
भाङ नहि बटुआ रुसि बैसलाह। जोहि हेरि आनि देल हँसि उठलाह।।2।।
जे मोहि कहता उगना उदेस। ताहि देबओ कर-कङ्गन सन्देस[1]।।3।।
नन्दन बनमे भेटला महेस। गौरि मन हरखित मेटल कलेस।।4।।
विद्यापति भन उगनासँ काज। नहि हितकर मोरा त्रिभुवन राज।।5।।

1. कंगना बेस।

[757]

पीसल भाङ रहल एहि गती। कि लए मनाएब उमता जती।।1।।
आन दिन निकहि छलाह मोर पती। आज देल बनाए कओने उदमती।।2।।
आनक नीक अपन कर छती। ठामे एक ठेसता पड़त बिपती।।3।।
भनइ वियापति सुन है सती। ई नहि बाउर त्रिभुवनपती।।4।।

[758]

मोर निरधन भोरा। अपने भिखारि बिलह नहि थोरा।।1।।
पहिरि कछोटा[1] हर इसर कहाबे[2]। मंगन जना सबे कोटि कोटि पाबे।।2।।
सब बोल हुनि हर जगत किसाने। बूढ़ बड़द चढ़ काँख बोकाने।।3।।
भनइ विद्यापति पुछु केदहु[4]। कि लए पौसब परिजन पुत बहु।।4।।

1. फड़ि कचोटा। 2. बोलाबे। 3. कुट। 4. पुछु हुनि दहु।

(3) काँखमे भाङक झोरा लटकल छनि।

[759]

कओने उमतओलाहे तैलोकनाथे। नित उँगरिअ नित भसम साथे।।1।।
पाट पटम्बर धर उतारि। बाघ छाल निते पहिर झारि।।2।।
तुरय छाड़ि चढ़ बसह पीठि। लाजें भरिअ मत्रे हेरिए डीठि।।3।।
भन विद्यापति सुलह गोरि। हर नहि उमता तोंहहि भोरि।।4।।

(3) तुरय – तुरग, घोड़ा।

[760]

सेबए अएलाहुँ सुख लागी। बिखम नयन अनुखन बर आगी।।1।।
बसह पड़ाएल आगे। पैसि पताल नुकाएल नागे।।2।।
ससि उड़ि चलल अकासे। गोरि चललि गिरिराजक पासे।।3।।
उचित बोलहि नहि जाई। उमत बुझाओब कओन उपाई।।4।।
भनइ विद्यापति दासे। गौरी सङ्कर पुराबथु आसे।।5।।

(1) बिखम नयन—तेसर आँखि।

[761]

बेरि बेरि आहे सिब मत्रे तोहि बोलओ किरिस करिअ मन लाए।
बिनु सरमे रहिअ भिखिआ पए माङगिअ गुन गौरब दुर जाए।।1।।
निरधन बोलि सबहु उपहासए नहि आदर अनुकम्पा।
तोहें सिब पओलह आक धुतुर फुल हरि पाओल फुल चम्पा।।2।।
खटङ काटि हर हरबा बँधाबह तिसुल तोड़िए करु फारे।
बसह धुरन्धर लए हर जोतह[1] पाटिअ सुरसरि धारे।।3।।
भनइ विद्यापति सुनह महेसर ई जानि कएल तुअ सेबा।
एतए जे होएत से बरु होअओं[2] ओतए सरन मोहि देबा।।4।।

1. जोतिअ। 2. होअल।

[762]

तोहि कओने ई बुधि देल हे उमता।
ललित धाम तेजि बसह मसाने। अमित्र न पिबह करह विखपाने।।1।।
चानन नहि हित बिभुति भूसने। मनि न धरह फनि कओन दूसने।।2।।
हय गज रथ तेजि बसह पलाने। पलङ्ग न सूतह सुतह पसाने।।3।।
भनइ विद्यापति बिपरित काजे। अपने भिखारि सेवक दिअ राजे।।4।।

[763]

आइ तँ सुनिअ उमा भलि परिपाटी। उमगल फिर मुस झोरी मोर काटी।।1।।
झोरि रे काटिए मुस जटा काटि जीबे। सिरम बैसल सुरसरिजल पीबे।।2।।
बेटा रे कातिक एक पोसल मजूरे। सेहो देखि डरे मोर फनिपति झूरे।।3।।
तोहें जे पोसल गौरा सिंह बड़ मोटा। सेहो देखि डर मोर बसहा गोटा।।4।।
भनइ विद्यापति बाँसक सिङ्गा। तपोबन नाचथि धतिङ्गा धतिङ्गा।।5।।

[764]

बुढहु बएस हर बेसन न छडले की फल बसह धबाइ।
भाग भेल सिब चोट न लगले के जान कि होइत आइ।।1।।
बसह पडाएल के जान कतए गेल हाडमाल कीदहु[1] भेल।
फुटि गेल डामरु भसम छिड़िआएल अपदहि सम्पति गेल[2]।।2।।
हमर हटल सिब तोहे नहि[3] मानह अपना हठ बेबहार।
सगरो जगत सबहुकाँ सूनिअ घरनिक बोल न टार।।3।।
भनइ विद्यापति सुनह महेसर ई जानि अएलाहुँ तुअ पास।
तोहरा लग सब बिघिन बिनासब आनक कोन तरास।।4।।

1. की। 2. अपथे सम्पति दुर गेला। 3. तोहहि न।

(क) बेसन – व्यसन, लति। धबाइ—दौड़ाएकें। (2) अपदहि--अनेरे। (3) हटल – वर्जन।

[765]

नित मञे जाञो भिखि आनञो माँगि। कतहु न जाए[1] मोरा सङ्गहु लागि।।1।।
झोरिओ लए नहि देअ उसास[2]। ई पोसि होएत कि परतर[3] आस।।2।।
कहह आहे गौरा[4] मोर कोन दोस। बइसल जेम गन कञोन भरोस।।3।।
थूल पेट भूमि लड़ए नहि[5] पार। देखए पारह नहि सिब मोर[6] बार।।4।।
खेदि देह ओहि निकलि बरु[7] जाओ। मोरे नामे भिखिआ माँगि बरु खाओ[8]।।5।।
देखह लोक हे अइसनि जोए। मनुस उपर कइसे माउगि होए।।6।।
अपना पूतक जानए न काज। निठुर भइए कत मो सञे बाज।।7।।
भनइ विद्यापति देवक देओ। करिअ करम जइसे हसए न केओ।।8।।
गनपति देखलेहि हो सबे काज। राए सिबसिंह एकछत्र राज।।9।।

1. गेल। 2. झोरिआहु लेबाके नहि उसार। 3. परतरक। 4. एहे गउरि। 5. न। 6. सिब देखए न पारह हमर। 7. देहे वरु निकलि जाउ। 8. भिखि माँगि खाउ। 9. देखले।

महादेव गौरीकें उपराग दैत छथि जे गणेश कोनो काज नहि करैत अछि; बैसल ठाम खाइत अछि। (4) गौरी अपन बेटाक पक्षमे उत्तर दैत छथिन्ह।

[766]

आने बोलब कुल अधिकह हीन। बेटा जे[1] कुमार अछल एत दीन।।1।।
तोहर हमर बएस गेल[2] आए। आबहु न चिन्तह बिआह उपाए।।2।।
भल सिब भल सिब भल बेबहार। चित चिन्ता नहि बेटा कुमार।।3।।
हसि हर बोलथि सुनह भवानी। जनितहुँ कके देबि होह अगेआनी।।4।।
देस बुलिए बुलि खोजञो कुमारी। हुन्हिक सरिस मोहि न मिलए नारी।।5।।
एत सुनि कातिक मने भेल लाज। हम नहि[3] माए बिआहक काज।।6।।
नहि हम बिआहब रहब कुमार। न कर कन्दल अमा सपथ हमार।।7।।
भनइ विद्यापति एहे भल भेल। कातिक बचने कन्दल दुर गेल।।8।।
जगत बुलिए हर देहु अभय वर। जुग जुग जीबयु महथ महेसर।।9।।

1. तोँहि। 2. सिब बएस भेल। 3. न है।

शिव ओ पार्वती बेटा कार्तिकक विवाहक चिन्ता करैत छथि। भाषामे प्राचीनताक आभास आ भनितामे महेश्वर महथाक नाम प्रामाणिकताक संकेत दैत अछि।

[767]

तोहें प्रभु त्रिभुवननाथ, हे हर। हम निरदीस अनाथ।।1।।
करम धरम तप हीन, हे हर। पड़लहुँ पाप अधीन।।2।।
बेड भासल मझधार, हे हर। भैरब धरु करुआर।।3।।
सागर सम दुख भार, हे हर। अबहु करिअ प्रतिकार।।4।।
भनहि विद्यापति भान, हे हर। सङ्कट करिअ तरान।।5।।

[768]

सिबसङ्कर हे भल' अनुगति फल भेला।
एतए सङ्गति एति परतर कोन गति मनोरथ मनहि रहला।।1।।
तोहें होएब परसन पाओब अमोल धन जनम बहल एहि आसे।
जमक² सङ्कट पुनु उपेखि हलह जनु सेबलाहुँ बड़े परेआसे।।2।।
सवन नयन गेल तनु अबसन भेल जदि तोहें होएब परसने।
कि करब ततिखने हय गय मनि धने झखैते बेआकुल मने।।3।।
इन्द चान्द गन हरि कमलासन सबे परिहरि हमे देबा।
भगत बछल प्रभु बान महेसर ई जानि कइलि तुअ सेबा।।4।।
विद्यापति भन पुरह हमर मन छाड़ओ जमक तरासे।
हरह हमर दुख तथिहि तोहर सुख सबे होअ तुअ परसादे।।5।।

1. भलि। 2. जमहु।

कवि वैराग्य आ' भक्तिक संग शिवक स्तुति करैत छथि। (1) तोहर शरण धएल तकर नीक परिणाम भेल। एतए (एहि जन्ममे) नीक लोकक संग भेटल, किन्तु आगाँ कोन गति होएत तकर चिन्ता लागल अछि। (2) बहल—बीतल। (3) अबसन—क्षीण। हय गय – घोड़ा हाथी। (4) इन्द–इन्द्र। गन–गणेश। (5) तथिहि—ताहीमे।

ग--परकीया

[769]

अपर पयोधि मगन भेल सूर। नरि कुल सङ्कुल बाट बिदूर।।1।।
नरि परिहरि नाविक घर गेल। पथिक गमन पथ संसअ भेल।।2।।
अनतए पथिक करह गए बास। हमे धनि एकसरि कन्त न पास।।3।।
एक चिन्ता आओ मनमथ सोस। दसमि दसा मोर कओनक दोस।।4।।
रयनि न जागए परिजन' मोर। अनुखन सगर नगर भम चोर।।5।।
तोंहे तरुनत हमे बिरहिनि नारि। उचितेहु बचने उपज कुलगारि।।6।।
बामा बचन बाम पथे धाव। अपन मनोरथ जुगुति बुझाब।।7।।
भनइ विद्यापति नारि सुजानि। भल कए रखलक दुहु अनुमानि।।8।।

1. सखिजन।

विरहिणी कामोद्रेकक शान्ति हेतु पथिकक स्वागत करैत अपन आशय बुझबैत छथि। (1) सूर्य पश्चिम समुद्रमे डुबलाह। बाट (गन्तव्य स्थान) दूर अछि आ' बीचमे अनेक नदी पड़ैत अछि। (6) तरुनत—युवा। उचितो (राति एतए टिकबाक) बात कहबहु तँ ताहूमे कलंक लागत। (7) वामाक (नारीक) वचन उनटा वाम दिस चलैत अछि, कहत 'हँ' तँ बूझह 'नहि'। ओ अपन कामना युक्तिसँ (कोनो आन संकेतसँ) बुझबैछ। (8) दूनू दूनूक मनक बात अनुमान कए राखि (मानि) लेलक।

[770]

बालुम निठुर बसए परबास। चेतन पड़ोसिआ नहि मोर पास।।1।।
ननदि बालिका बोलो नहि बूझ। पहिलहि साँझ सासु नहि सूझ।।2।।
हमे घर जौंबति रइनि अन्धार। सपनेहु नहि पुर भम कोटवार।।3।।
पथिक बास अनतए भमि लेह। हमरा तैसन दोसर नहि गेह।।4।।
एकसरि जानि आओत चलि चोर। आपु अपन धन करिअ अगोर'।।5।।
सुकवि विद्यापति कहथि विचारि। पथिक बुझबए बिरहिनि नारि।।6।।

1. मोरा सम्पति मोरा अगोर।

कामातुर विरहिणी पथिककें अपन कामना जनबैत अछि। (3) कोतबाल रातिमे कहिओ भाउरि नहि दैत अछि। (4) भमि—घूमिकें। गेह—घर।

[771]

सासु जरातरि भेली। ननदी छलि सेहो सासुर गेली।।1।।
तैसन न देखिअ कोई। रअनि जगाए सँभासन होई।।2।।
एहि पुर एह बेबहारे। काहुक केओ नहि करए पुछारे।।3।।
मोर पिअतमकाँ कहबा। हमे एकसरि धनि कत दिन रहबा।।4।।
पथिक कहब मोर कन्ता। हम सनि रमनि न तेज रसमन्ता।।5।।
भनइ विद्यापति गाबे। भमि-भमि विरहिनि पथुक बुझाबे।।6।।

कामातुर विरहिणी पथिककें अपन कामना जनबैत अछि। (1) जरातरि—बहुत बूढ़ि। (2) एहन केओ नहि अछि जे रातिमे जगाए गप चलए। (5) रसिक पुरुष हमरा-सन रसवती नारीकें एना तेजैत नहि छथि।

[772]

हमरा घर नहि घरनिक लेस। तें कारने घूमिअ[1] परदेस।।1।।
नाना रतन अछए मझु हाथ। सेवक चाकर केओ नहि साथ।।2।।
सहजक भीरु थिकहुँ मतिभोर। रयनि जागि[2] के करत अगोर।।3।।
बैसि गमाओब कओनाक माझ। अवगुन अछए रतौन्धी साँझ।।4।।
भनइ विद्यापति छइल सोभाव। नागर पथिक ठकुति बिरमाब।।5।।

1. गूनिअ। 2. जगाए।

कामातुर पथिक एक गृहिणीकें अपन कामना जनबैत छथि।

[773]

मोराहि रे अंगना पाकड़ी सुनु बालहिया।
पटेबा आउस बास परम हरि बालहिया।।1।।
पटेबा भैया हित मीत सुनु बालहिया।
चोलरि एक बिनि देहि परम हरि बालहिया।।2।।
जब हमे चोलरि बीनहि सुनु बालहिया।
काह बिनउनी देह परम हरि बालहिया।।3।।
लहुरी देउ रातासना सुनु बालहिया।
ननद बिनउनी देओं परम हरि बालहिया।।4।।
चोलरि पहिरि हमे हाट गयें सुनु बालहिया।
चोर परीखन लागु परम हरि बालहिया।।5।।
कवि गाविआ सुनु बालहिया।
य सिबसिंह गुन जान परम हरि बालहिया।।6।।

रसिक पटबाक संग एक रसिक युवतीक मधुर सम्भाषण। भाषा विद्यापतिक नहि, कोनो सुदूर अंचलक। भिन्न शब्दावली, भिन्न व्याकरण। लोकगीतक प्रसिद्ध भाव।

[774]

मोराहि रे अङ्गनमा चान्दनक गाछे। सौरभे आवए भमर पचासे।।1।।
अरे अरे भमरा न फोअ केवारे। अचिरे सुतल अछ पदुम हमारे।।2।।
सङ्गहि बसए सुत देहरि भइसूरे। कइसे बहराएब बाजत नेपूरे।।3।।
गोड़हुक नेपुर भेल जिब काले। नहु नहु चलितहुँ उठ झनकारे।।4।।
माए बाप दए हलु नेपुर गढ़ाई। नेपुर भङ्गइते जिब अकुलाई।।5।।
भनइ विद्यापति एहु रस जाने। सिबसिंह लखिमा देवि रमाने।।6।।

परपुरुष-प्रेमिका नायिका कोनटामे प्रतीक्षा करैत गुप्त प्रेमीकें (भमरक व्याजें) अपन विवशता सूचित करैत अछि। (2) अचिरे—एखनहि। पदुम—पद्म, कमल अर्थात् अपन पति।

घ--प्रहेलिका

[775]

हरि सम आनन हरि सम लोचन हरि तहाँ हरि बर आगी।
हरिहि चाहि हरि हरि न सोहाबए हरि हरि कए उठ जागी।।1।।
माधव हरि रहु जलधर छाई।
हरिनयनी धनि हरिघरनी जनि हरि हेरइते दिन जाई।।2।।
हरि भेल भार हार भेल हरि सम हरिक भजन न सोहावे।
हरिहि पइसि जे हरि जे नुकाएल हरि चढ़ि मोर बुझावे।।3।।
हरिहि बचन पुनु हरि सयँ दरसन सुकवि विद्यापति भाने।
राजा सिबसिंह रुपनराएन लखिमा देइ रमाने।।4।।
पिहानी थिक। अर्थ नहि लागल।

[776]

जननी असन असन बाहन के भासा सागर अरि कर सादे।
ते दुहु मिलित नाम एक दुरजन तें मोहि परम बिसादे।।1।।
सखि हे रमन भवन परबासी।
रितुपति राए आए सम्प्राप्त तें भउ परम उदासी।।2।।
सुर अरि गुरु वाहन रिपु ता रिपु ता रिपु अनुखन तापे।
हेरि कपट पति तासु अनुज हित से मोहि अबहु न आबे।।3।।
पिहानी। अर्थ नहि लागल।

[777]

हरि पति बैरि सखा सम तामसि रहसि गमाबसि रोइ।
समन पिता सुत रिपु घरनी सख सुत तनु बेदन होइ।।1।।
माधब तुअ गुने धनि बड़ खीनी।
पुर रिपु तिथि रजनी रजनीकर ताहू तह बढ़ि हीनी।।2।।
दिविसद पति सुअ सुअ रिपु वाहन भख भख दाहिन मन्दा।
ब्रह्मनाद सर गुनिकहु खाइति छाड़ि जाएत सब दन्दा।।3।।
सारङ्ग साद कुलिस कए मानए विद्यापति कवि भाने।

राजा सिबसिंह रूपनराएन लखिमा देइ रमाने।।4।।
पिहानी। अर्थ नहि लागल।

ङ--नाना

[778]

अजर धुनी जनि रिपु सुअ घरनी ता बन्धु न देअए राही।
तेसर दिगपति पतने सताबए बड़ बेदन हरि चाही।।1।।
माधव तुअ गुने धनि बड़ि खीनी।
महिखा तनय भान छिल ता बिधु देह दुबरि ता जीनी।।2।।
राजा भसन दवस कण्ठीरव अछिक दहिन सताबे।
लाए तमोर जीबे तबे खाइति जदि न आओब परथाबे।।3।।
काकोदर प्रभु रिपु ध्वज विड़कर विद्यापति कवि भाने।
राजा सिबसिंह रूपनराएन लखिमा देइ रमाने।।4।।
पिहानी। अर्थ नहि लागल।

[779]

पङ्कज बैरि बैरि को बान्धव तसु सम आनन सोभे।
नयन चकोर जोड़ जनि सञ्चर तथिहु सुधारस लोभे।।1।।
सखि हे जाइते देखलि बर रमनी।
हर कङ्कन आनन सम लोचन तसु बर वाहन गमनी।।2।।
सैसब दसा दोने परिपाललि तसु सम बोलइते बानी।
गिरिजापति रिपु रूप मनोहर बिहि निरमाउलि सजानी।।3।।
सिन्धु बन्धु गिरि तात सहोदर पीन पयोधर भारा।
दुइ पथ छाड़ि तेसर नहि सञ्चर हारा सुरसरि धारा।।4।।
अपरुब रूप जे बिहि निरमाउलि विद्यापति कवि भाने।
राजा सिबसिंह रूपनराएन लखिमा देइ रमाने।।5।।
पिहानी। अर्थ नहि लागल।

[780]

माधव देखलि मञे सो अनुरागी।
मलयज रज लए सम्भु ठकुति कए ऊरज पुजए तुअ लागी।।1।।
भय हित अरि भगिनी पति जननी तनय तात बन्धु रूपे।
नाग सिरज सिर सोभ दुखज सम देखल बदन सरूपे।।2।।
खगपति पति तिअ जनक तनय सम बचने निरूपलि रमनी।
सुरपति अरि दुहिता वर वाहन तासु असन सम गमनी।।3।।
तुअ दरसन लागि उपजल बिसधर सुकवि विद्यापति भाने।
राजा सिबसिंह रूपनराएन लखिमादेइ रमाने।।4।।
पिहानी। अर्थ नहि लागल।

[781]

हर रिपु तनय तात रिपु भूसन ता चिन्ता मोहि लागी।
तासु तनअ सुत ता सुत बान्धब उठलि चतुर धनि जागी।।1।।
माधब तें चिन्ताञे खिनि भेलि बाला।
हरि हेरइते चिन्ताञे मन आकुलि कठिन मदन सर साला।।2।।
पुनु चिन्तह हरि सारङ्ग सबद सुनि ता रिपु लए पए नामे।
तासु तनअ सुत ता सुत बान्धब अपजस रह निज ठामे।।3।।
तरनि तनअ सुत ता सुत बान्धब विद्यापति कबि भाने।
राजा सिबसिंह रूपनराएन लखिमा देवि रमाने।।4।।
पिहानी। अर्थ नहि लागल।

[782]

सुतलि छलहुँ हम घरबा रे गरबा मोतिहार।
राति जखन भिनुसरबा रे पिआ आएल हमार।।1।।
कए[1] कौसल करे कँपइते रे हरबा उर उर टार।
करपङ्कज उर थपइत रे मुखचन्द निहार।।2।।
केहनि अभागलि बैरिनि रे भाँगलि मोरि निन्द।
भल कए नहि देखि पाओल रे गुनमय गोविन्द।।3।।

विद्यापति कवि गाओल रे धनि मन धर धीर।
समय पाए तरुवर फर रे कतबो सिचु नीर।।4।।

1. कर।

नायिका स्वप्नसमागम सखीकें सुनबैत अछि। परम प्रसिद्ध गीत। प्रसिद्ध भाव। नवीन भाषा।

[783]

माइ हे बालुम अबहु न आब। ओहि[1] देस सखि की न[2] मनोभव भाब।।1।।
तरुन साल तमाल कानन कुञ्ज कण्डल पुष्पिते।
पद्म पाटलि परम परिमल बकुल सङ्कुल विकसिते।।2।।
अरुण किसलय राग मुद्रित मञ्जरी भर लम्बिते।
मधु लुब्ध मधुकर निकर मुद्रित लोभ चुम्बन चुम्बिते।।3।।
चुम्बति मधुकर कुसुम पराग। कोरक परसे बढ़ल अनुराग।।4।।
चौदिस करए भृङ्ग झङ्कार। से सुनि बाढ़ए मदन बिकार।।5।।
चीर चन्दन चन्द्र तारक पावकोपम मान से।
हार काल भुजङ्गमेव हि बिस सरिस बम रस बिसे।।6।।
मानिनी मन मान हारक कोकिला रब कलकले।
बहए मारुत मलय संयुत सरस सौरभ शीतले।।7।।
शीतल दखिन पबन बह मन्द। ता तनु तापए चान्दन चन्द।।8।।
हृदयहार भेल भुजग समान। कोकिल कलरबे पिड़ल परान।।9।।
सरद निर्मल पूर्णचन्द्र सुवक्त्र सुन्दरलोचनी।
कथं सीदति सुन्दरी प्रियविरह दुःख विमोचनी।।10।।
ता तर तरुन पयोधर घनी। ओजा शङ्कर कृष्ण जनी।।11।।
अवसर पाउति एत खने। विद्यापति कवि सुदृढ़ भने।।12।।

1. जाहि। 2. सखि न।

नायिका सखीकें विरहव्यथा सुनबैत छथि। संस्कृतमिश्रित कृत्रिम भाषा, तत्सम शब्दमय। शिथिल वाक्यबन्ध।

[784]

साजनि निहुरि फुकह आगि।
तोहर बदन कमल देखल मदन उठल जागि।।1।।
जँ तोहें भाविनि भवन जएबह अएबह कओने बेला।
जँ एहि सङ्कट सओ जिब बाँचत होएत लोचन मेला।।2।।
भन विद्यापति चाहथि जे बिधि करथि से से लीला।
राजा सिबसिंह बन्धन मोचल तखन सुकबि जीला।।3।।

ई गीत विद्यापतिक जीवनक एक घटना पर आश्रित अछि। घटना किंवदन्तीक रूपमे प्रख्यात अछि, किन्तु तकर प्रमाण अनुसन्धेय अछि। भाषा आजुक आ' परम सरल।

[785]

नील कलेवर पीत वसन धर चन्दन तिलक धवला।
सामर मेघ सौदामिनि मण्डित तथिहि उदित ससिकला।।1।।
हरि हरि अनतए जनु परचारे।
X X X X सपने मओ देखल नन्द कुमारे।।2।।
पुरुब देखल पए सपना देखिअ ऐसनि न करह बुधि[1]।
रस सिङ्गार पार कै पाओत अमोल मनोभव सुधि[2]।।3।।
भनइ विद्यापति अरे बरजौबति जानल सकल मरमे।
सिवसिंह राए तोहर मन जागल कान्ह-कान्ह करसि भरमे।।4।।

1. बुधा। 2. सिधा।

राधा स्वप्न-समागमक वर्णन करैत छथि। (1) देह श्यामवर्ण, वस्त्र पीअर, चानन उज्जर; से लगैछ जेना कारी मेघमे बिजुली चमकैत हो आ' ओतहि चान सेहो उगल होथि। (2) हमर एहि सपनाक बातक प्रचार नहि

करह जे आइ हम सपनामे कान्हकें देखल। (3) ई नहि बूझह जे पूर्वमे जे देखल रहैत छैक सेह फेर सपनामे देखैत अछि। (4) विद्यापति कहैत छथि, हम एहि सपनाक सभ रहस्य जानि गेलहुँ। तों कृष्णकें नहि, शिवसिंहकें सपनामे देखलह (जें प्रत्यक्ष देखल छलहु तें वस्तुतः तों प्रत्यक्षे देखल सपनामे देखलह)।

[786]

अनल रन्ध्र कर लक्खण नरबइ सक समुद्द कर अगिनि ससी।
चैत कारि छठि जेठा मिलिअओ बार बेहप्पइ जाउ लसी।।
देवसिंह जं पुहवी छड्डिअ अद्धासन सुरराए सरू।
दुहु सुलतान नीन्दे अबे सोअउ तपनहीन जग तिमिर भरू।।
देखहु ओ पुहमी[1] के राजा पौरुस माझ पुन्न बलिओ।
सतबले गङ्गा मिलिअ[2] कलेबर देवसिंह सुरपुर चलिओ।।
एक दिस[3] सकल जबनबल चलिओ अओका दिस[4] जमराए सरू[5]।
दुज्जओ[6] दलटि मनोरथ पूरेओ गरुअ दाप सिबसिंघ करू।।
सुरतरु कुसुम घालि दिस पूरेओ दुन्दुभि सुन्दर साद धरू।
बीर छत्र देखन को कारन सुरजन सत्थहिं[7] गगन भरू।।
आरम्भिअ अन्तेट्ठि महामख राजसूअ असमेध जहा[8]।
पण्डित घर आचार बखानिअ जाचक कॉं घर दान कहा[9]।
बिज्जाबइ कविवर एहु गाबए मानव मन आनन्द भएओ।
सिंहासन सिबसिंह बइट्ठओ उच्छबे बैरस बिसरि गएओ।।

1. पृथिमी। 2. मिलित। 3. दिन। 4. ओका दिससे। 5. चरू। 6. दुअओ। 7. सते। 8. जहाँ। 9. कहाँ।

[787]

दूर दुग्गम दमसि भञ्जेओ गाढ़ गढ गूढ़ीअ गञ्जेओ।
पातिसाह ससीम सीमा समर दरसेओ रे।।1।।
ढोल तरल निसान सद्दहि भेरि काहर सङ्ख नद्दहि।

तीन भुवन निकेत केलकि सान भरिअओ रे।।2।।
कोह नीरे पयान चलिओ वायु मध्ये राय गरुओ।
तरनि तेअ तुला धरा परताप सहिअओ रे।।3।।
मेरु कमठ सुमेरु कप्पिअ धरनि धूरिअ गगन झप्पिअ।
हाथि तुरग पदाति पय भर कमन सहिअओ रे।।4।।
तरलतर तरबारि रङ्गे बिज्जु दाम छटा तरङ्गे।
घोर घन संघात बारिस काल दरसैओ रे।।5।।
तुरग कोटि चाप चूरिअ चारि दिस चोविदिस पूरिअ।
बिसमसार असार धारा धोरनी भरिओ।।6।।
अन्धकूअ कबन्ध लाइअ फेरबी फप्फरिए गाइअ।
रुहिर मत्त परेत भूत बेताल चलिओ रे।।7।।
पार भइ परिपन्थि गञ्जिअ भूमि मण्डल मुण्डे मण्डिअ।
चारु चन्द्रकलेब कित्ति सुकेत तुलिअओ रे।।8।।
रामरूप सुधम्म रक्खिअ दान दप्पे दधीचि सिक्खिअ।
सुकवि नब जयदेव भनिअओरे।।9।।
देवसिंह नरेन्द्र नन्दन सतु नरबइ कुल निकन्दन।
सिंहसम सिबसिंह राआ सकल गुनक निधान गनिओरे।।10।।

[788]

तातक बचने बिकल बन खेपल जनम दुखहि दुखे गेला।
सीअक सोगे स्वामि सन्तापल बिरहे विखिन तन भेला।।1।।
मन राघब जागे; रामचरन चित लागे।
कनक मिरिग मारि बिराध बधल बालि बानर सेन बटुराइ।
सेतुबन्ध दिअ राम लंक लिअ राबन मारि नड़ाइ।।2।।
दसरथ नन्दन दससिर खण्डन तिहुअन कै नहि जाने।
सीता देइ पति रामचरन गति कवि विद्यापति भाने।।3।।

एके गीतमे समस्त रामचरित। रामभक्ति सम्प्रदायक रचना। विद्यापतिक सन नहि लगैछ।

[789]

सुरसरि सेबि मोहि किछुओ न भेल। पुनमति गङ्गा भगीरथ लए गेल।।1।।
जखन महादेव कएल गङ्गा दान। सुन भेल जटा मलिन भेल चान।।2।।
उठबह बनिआ तों हाट बजार। एहि बाटे आओत सुरसरि धार।।3।।
छोटमोट भगिरथ छितनी कपार। से कोना लओताह सुरसरि धार।।4।।
विद्यापति भन विमल तरङ्गे। अन्त सरन देब पुनमति गङ्गे।।5।।

गंगाक अवतरणक कथा आ' स्तुति। भाषा आजुक। (1) शिव चिन्ता करैत छथि, हम जे एतेक दिन गंगा कें माथ पर राखल तकर फल किछु नहि भेल।

[790]

ब्रह्म कमण्डुवास सुवासिनि सागर नागर गृहबाले।
पातक महिष बिदारण कारण धृत करवाल वीचि माले।।1।।
जय गङ्गे जय गङ्गे, शरणागत भय भङ्गे।।2।।
सुरमुनि मनुज रचित पूजोचित कुसुम विचित्रित तीरे।
त्रिनयन मौलि जटाचय चुम्बित भूति भूषित सित नीरे।।3।।
हरि पद कमल गलित मधु सोदर सलिल पुनित सुरलोके।
प्रविलसदमरपुरी पद दान विधान विनासित सोके।।4।।
सहज दयालुतया पातकिजन नरकविनाशन निपुने।
रुद्रसिंह नरपति वरदायक विद्यापति कवि भणित गुणे।।5।।

गंगाक स्तुति। अर्ध–संस्कृत भाषा। अर्थ स्पष्ट। (1) हे गंगा, ब्रह्माक कमण्डलु अहाँक वासभवन छल। ओतए अहाँ सुखसँ बसैत छलहुँ। अहाँ समुद्ररूप नागरक गृहिणी थिकहुँ। अहाँक तरंगावली मानू तरुआरि थिक जे पापरूपी महिषासुरकें मारबाक हेतु अहाँ धारण कएल अछि। (2) हे गङ्गा, अहाँक जय हो। अहाँ शरणमे आएल लोकक भय दूर करैत छी। (3) अहाँक तट पर नाना प्रकारक फूल अछि जकर प्रयोजन देवता, मुनि आ' मानव सभकें अहाँक पूजा लेल होइत छनि। शिवक जटामे लागल

विभूतिसँ अहाँक जल श्वेत भए गेल अछि। (4) अहाँ विष्णुक चरणसँ निर्गत मधु सदृश जलसँ स्वर्गलोककें पवित्र कएल। (5) अहाँ स्वभावतः दयालु होएबाक कारणें पापिओ सभकें नरकसँ बचबैत छी।

[791]

सपन देखल हम सिबसिंघ भूप। बतिस बरख पर सामर रूप।।1।।
बहुत देखल गुरुजन प्राचीन। आब भेलहुँ हम आयुविहीन।।2।।
समदु समदु निज लोचन नीर। ककरहु काल न राखथि थीर।।3।।
विद्यापति सुगतिक प्रस्ताव। त्याग के करुना रसक स्वभाव।।4।।

किंवदन्ती अछि जे विद्यापति पूर्वहिसँ अपन मृत्युक दिन जनैत रहथि। ई गीत तकर संकेत दैत अछि। (1) विद्यापति कहैत छथि, हम शिवसिंहकें बतीस वर्षक बाद सपनामे देखल। ओ श्यामवर्ण छलाह। (2) ताहि संग बहुतो स्वर्गवासी गुरुजनक सपना देखल। एहिसँ बूझल जे आब हमर आयु शेष भए गेल। (4) विद्यापति आब अपन सद्गतिक विचार करैत छथि। एहन अवसर पर करुण रससँ के बाँचत।

[792]

दुल्लहि तोहरि कतए छथि माए। कहुन्ह ओ आबथु एखन नहाए।।1।।
वृथा बुझथु संसार विलास। पल पल नाना भौतिक त्रास।।2।।
माए-बाप जँ सद्गति पाब। सन्ततिकाँ अनुपम सुख आब।।3।।
विद्यापतिक आयु अबसान। कातिक धबल त्रयोदसि जान।।4।।

विद्यापति जनैत रहथि जे कहिआ मरब। तदनुसार पत्नीकें अन्तिम उपदेश दैत छथि। एहीसँ ज्ञात होइछ जे विद्यापतिक मृत्यु कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी तिथिकें भेल।

भाग-3

बंगाल स्रोतक अवशिष्ट गीत

(13) नगेन्द्रनाथ गुप्त

[793]

खने खने नयन कोन अनुसरई। खने खने धूलि बसन तनु भरई।।1।।
खने खने दसन छटा छुट हास। खने खने अधर आगु गहु बास।।2।।
चहँकि चलए खने खने चलु मन्द। मनमथ पाठ पहिल अनुबन्ध।।3।।
हिरदए मुकुल हेरि हस थोर। खने आँचर देअ खने होए भोर।।4।।
बाला सैसब तारुन भेट। लखए न पारिअ जेठ कनेठ।।5।।
भनइ विद्यापति सुन बर कान्हा तरुनिम सैसब चिन्हए सयान।।6।।

राधाक वयःसन्धि। (2) खन दाँतक छटा देखबैत मुह खोलिकें हँसैछ तँ खन हँसी ठोरहिपर देखाइछ, केवल मुसकान। (3) कामदेवक पाठमे पहिले बेर दाखिल भेल अछि। (4) मुकुल--स्तनंक अंकुर। भोर--बेसुधि। (5) कनेठ--कनिष्ठ, बएस मे छोट।

[794]

कुच अङ्कुर किछु[1] उतपति लेल। चरन चपल गति लोचन लेल।।1।।
अबे सब खन रह आँचर हाथ, लाजें सखीगन न पुछए बात।।2।।
कि कहब माधब बएसक सन्धि। हेरहते मनसिज मन रहु धन्धि।।3।।
तइअओ काम इदये अनुपाम। रोपल कलस ऊँच कए ठाम।।4।।
सुनइते रसकथा थापए चीत। जइसे कुरङ्गिनि सुनए सङ्गीत।।5।।
सैसब जउबन उपजल बाद। केओ नहि मानए जय अवसाद।।6।।
विद्यापति कौतुक बलिहारि। सैसव से तनु छोड़ि पारि[2]।।7।।

1. किछु किछु अङ्कुर। 2. छोड़हि पार। पारए पाठ चाही बंगलाक प्रभावें पार सँ पारि भए गेल।।

राधाक वयःसन्धि। (2) रस-कथा सुनबाक मन तँ होइत छैक मुदा लाजें सखीसभसँ नहि पुछैत अछि। (4) अनुपाम--अनुपम। कलस--(अर्थात् स्तन)। (5) हरिणी। (6) वाद--स्पर्धा। जय अवसाद--हारि जीत। (7) शैशवकें राधाक देह छोड़हि पड़तैक।

[795]

सैसब जौवन दुहु मिलि गेल। स्रबनक पथ दुहु लोचन लेल।।1।।
बचनक चातुरि लहु लहु हास । धरनिये चान्द कएल परगास।।2।।
मुकुर लइए अब करए सिङ्गार। सखि पूछए कैसे सुरत बिहार।।3।।
निरजन उरज हेरए कत बेरि। बिहुसए अपन पयोधर हेरि।।4।।
पहिलें बदरि सम पुनु नबरङ्ग। दिन दिन अनङ्ग अगोरल अङ्ग।।5।।
विद्यापति कह तोहैं अगेआनि। दुहु एक जोग इह के कह सयानि।।6।।

[796]

पहिल बदरि कुच पुनु नबरङ्ग। दिने दिने बाढ़ए पिड़ए अनङ्ग।।1।।
से पुन, भए गेल बीजक पोर। अब कुच बाढ़ल सिरिफल जोर।।2।।
माधब पेखल रमनि सन्धान। घाटहि भेटलि करैते असनान।।3।।
तनसुख बसन हृदय मह लाग। जे जन देखल तन्हिकर भाग।।4।।
उर हिल्लोलित चाँचर केस। चामरे झाँपल कनक महेस।।5।।
भनइ विद्यापति सुनह मुरारि। सुपुरुख बिलसए से बरनारि।।6।।

वयःसन्धि। (1) बदरि--बैर सन। नबरङ्ग--समतोला नेबो, नारंगी। (2) बीजक पोर---बीजपूर, टाभ नेबो-सन। (5) चाँचर--चंचल।

[797]

सैसब जौबन दरसन भेल। दुहु दल बलहि दन्द पड़ि गेल।।1।।
कबहु बान्ध कच कबहु बिथार। कबहु झाँप अङ्ग कबहु उघार।।2।।

थीर नयान अथिर किछु भेल। उरज उदय थल लालिम देल।।3।।
चञ्चल चरन चित चञ्चल भान। जागल मनसिज मुदित नयान।।4।।
भनहि विद्यापति सुन बर कान। बाला अङ्ग लागल पञ्च बान[1]।5।।

1. धैरज धरह मिलायब आन।

वयःसन्धि। (1) शैशव आ यौवन दूनू राजाक सेनामे भिड़न्त भए गेल। (2) नयान--नयन।

[798]

सुधामुखि कोने[1] बिहि निरमिलि बाला।
अपरुप रूप मनोभव मङ्गल त्रिभुवन विजयी माला।।1।।
सुन्दर बदन चारु[2] लोचनयुग काजरे रञ्जति भेला।
कनक कमल माझे काल भुजङ्गिनि श्रीयुत खञ्जन खेला।।2।।
नाभिविवर सओ लोम लतावलि भुजगि निसास पिआसा।
नासा खगपति चञ्चु भरम भयें कुचगिरि सन्धि निबासा।।3।।
तिन बाने मदन जिनल तिन भुवने अवधि[3] रहल दुइ बाने।
बिधि बड़ दारुन बधए रसिक जन सौंपल ताहेरि नयाने।।4।।
भनइ विद्यापति सुन बर जौबति ई रस केओ पए जाने।
राजा सिबसिंह रूपनराएन लखिमादेवि रमने।।5।।

1. को। 2. अरु लोचन। 3. अबधि—अवशेष।

कवि राधाक सौन्दर्यक वर्णन करैत छथि। (1) कामदेव जे तीनू लोककें जितलनि तनिक ई मानू मंगलमय जयमाला थिकीह। (2) मुह कमल, लोचन खंजन, काजरक रेखा कृष्णवर्णा नागिनी बूझू। (3) बालाक सुरभि श्वास पीबाक हेतु रोमवाली नाभिरूपी बीहरि सँ बहराएल, किन्तु बालाक नाककें गरुड़क लोल बूझि डरें दूनू स्तनक सोन्हिमे सुटुकि गेल। (4)। ताहेरि--ओहि बालाक।

[799]

सजनी भल कए पेखि न भेलि¹।
मेघमाल सङ्ग तड़ितलता जनि इदय सेल दए गेलि।।1।।
आध आँचर खसि आध बदन हसि आधहि नयन तरङ्ग।
आध उरज हेरि आध आँचर भरि तब धरि दगधे अनङ्ग।।2।।
एक तनु गोरा कनक कटोरा अतनु काँचला उपाम।
हार हरल मन जनि बुझि ऐसन फाँस पसारल काम।।3।।
दसन मुकुता पाँति अधर मिलाएल मृदुमृदु कहतहि भासा।
विद्यापति कह अतए² से दुख रह हेरि हेरि न पुरल आसा।।4।।

1. पेखल न भेल। 2. अतएव।

कृष्ण राधाक रूप पर मुग्ध भए अपन सखीके सुनबैत छथि। (1)राधा एक झलक देखाए इदयकेँ आहत कए चलि गेलि, जेना मेघ मालाकेँ विद्युत् लता। (2) सभ किछु आधे-आध देखएल, आ तखनसँ कामदेव शरीर जराए रहल छथि। (3) एक... उपाम--अस्पष्ट। हार तँ मानू कामदेवक फाँस थिक।

टि.-- खसि, हसि, हेरि, भरि, इत्यादि रूप बंगलामे समापिका क्रिया थिक, किन्तु मैथिलीमे असमापिकाक। एहिना कहतहि वर्तमानकालिक समापिका क्रिया थिक।

[800]

परिहर ए सखि तोहि परनाम। हम नहि जाएब से पिआ ठाम।।1।।
बचनक चातुरि हम नहि जान। न बुझिअ इङ्गित न जानिअ मान।।2।।
सहचरि आबि बनाबए भेस। बान्धए न जानिअ आपन केस।।3।।
सुनल कबहु नहि सुरतक बात। कइसे मिलब हमे माधब साथ।।4।।
से बरनागर रसिक सुजान। हमे अबला अति अलप गेआन।।5।।
विद्यापति कह कि बोलब तोहि। आजुक मिलन तुअ समुचित होइ।।6।।

मुग्धा नायिका सखीकेँ संगम-भय सुनबैत छथि। (1) परिहर--छोड़ह। (4) सुरत--संगम।

[801]

तोहरि बिहुबेदने बाउर सुन्दरि माधब मोर।
खने अचेतन खने सचेतन खने नाम धरु तोर।।1।।
रामा तोहेँ बड़ि कठिन देह।
गुन अबगुन न बुझि तेजल जगत दुलह नेह।।2।।
तोहरि कहिनी कहैते जागए सूतए देखिए तोइ।
कि घर बाहर धैरज न धर पन्थ निरेखए रोइ।।3।।
कत परबोधन मानि रहसि न कर भोजन पान।
काठक मुरुति ऐसन अछए कवि विद्यापति भान।।4।।

सखी राधा कृष्णक विरहदशा सुनबैत छथि। (1) बाउर--व्याकुल, पागल। (2) दुलह--दुर्लभ। (4) न... रहसि--अस्पष्ट। (4) परबोधि--बुझबैत छिऐक।

[802]

जाइते देखल नहाइते गोरी। कत सञो रूप धनि आनल चोरि।।1।।
गारइते केस बहए जलधारा। चामर झरए जनि मोतिम हारा।।2।।
अलकहि तीतल तहि मुख सोभा। अलिकुल कमल बेढल मधुलोभा।।3।।
नीरे निरञ्जन लोचन राता। सिन्दुर मण्डित जनि पङ्कज पाता।।4।।
सजल चीर रह पयोधर सीमा। कनक बेल जनि पड़ि गेल हीमा।।5।।
तूल करैत केस पाबए एहा। अबहु छोड़बि मोहि तेजबि देहा।।6।।
ऐसन पुनि रस न पाओब आरा। इथि लागि रोए गलए जलधारा।।7।।
विद्यापति कह सुनह मुरारी। बसने लागल भाव रूप निहारी।।8।।

सद्यःस्नाता कामिनीकेँ देखि मुग्ध भेल रसिक अपन भाव व्यक्त करैत छथि। (3) तीतल लट मुहपर छैक से लगैछ जेना भ्रमरक दल

मधुक लोभें कमल पर बैसल हो। (4) राता--लाल। (5) बेल--लता। (6) तूल-- तुलना। इथिलागि--एही कारणें।

टि- -- ई कामिनि करए सनाने एहि गीतक नकल थिक।

[803]

जबे गोधुलि समय बेलि धनि मन्दिर बाहर भेलि।।1।।
नव जलधर बिजुरि रेहा दन्द पसारि गेलि... ।।2।।
धनि अलप बएस बाला, जनि गाँथलि पुहुप माला।
थोड़ दरसने आस न पूरल बाढ़ल मदनज्वाला।।3।।
गोर कलेबर नूना, जनि अचिरे उजोर सोना।
केसरि जिनिया माझहि खीन दुलह लोचन कोना।।4।।
नसीर शाह भाने, मुझे हानल नयन बाने।
चिरें जिबे रहु पञ्च गौड़ेश्वर कवि विद्यापति भाने।।5।।

सुन्दरीकें देखि रसिक अपन मनोभाव प्रकट करैत अछि। (1) समय बेलि--दूनू शब्द समानार्थक। (2) दन्द--चिन्ता, विकलता। (3) पुहुप--पुष्प, फूल। (4) नूना--लावण्यमय। (4) कटि मानू सिंहकें जीति पातर छैक। (5) नसीर शहकें लगैत छनि जेना ओ सुन्दरी हुनका पर नजरिक तीर चलाए देलक।

[804]

जहाँ जहाँ पदजुग धरई। तहिं तहिं सरोरुह भरइ।।1।।
जहाँ जहाँ झलकए अङ्ग। तहाँ तहाँ बिजुरि तरङ्ग।।2।।
हेरलि अपरुब गोरि। पइठलि हिअ माझ मोरि।।3।।
जहाँ जहाँ नयन बिकास। तहाँ तहाँ कमल प्रकास।।4।।
जहाँ जहाँ हास सञ्चार। तहाँ तहाँ अमित्र बिथार।।5।।
जहाँ जहाँ कुटिल कटाख। ततहि मदनसर लाख।।6।।
हेरइते से धनि थोर। अब तिन भुबन अगोर।।7।।
पुनु जबे दरसन पाब। तबे मोर एह दुख जाब।।8।।
विद्यापति कह जानि। तुअ गुने देअब आनि।।9।।

नायक कामिनीकें देखि अपन मनक भावना व्यक्त करैत अछि। (1) जलए-जलए कामिनीक चरण जाइछ ततए-ततए लगैछ जेना कमलक फूल झरैत गेल हो। (5) अमित्र--अमृत। (7) कामिनीकें एकरती देखल, ततबहिसँ लगैछ जेना तीनू लोकमे अडोरे-अडोर हो (विरहज्वलाक पराकाष्ठ)।

[805]

ए सखि पेखल एक अपरूप। सुनइते मानब सपन सरूप।।1।।
कमल जुगल पर चान्दक माल। तापर उपजल तरुन तमाल।।2।।
तापर बेढ़लि बिजुरि लता। कालिन्दि तीरे धीरे चलि जता।।3।।
साखा सिखर सुधाकर पाँति। ताहि नव पल्लव अरुनक भाँति।।4।।
बिमल बिम्बफल जुगल बिकास। तापर कीर थीर करु बास।।5।।
तापर चञ्चल खञ्जत जोर। तापर सापिनि झाँपल मोर।।6।।
ए सखि रङ्गिनि कहल निसान। हेरइते पुनु मोर हरल गेआन।।7।।
सुकवि विद्यापति पहु रस भान। सुपुरुख मरम तोंहहि भल जान।।8।।

नायिकाक सौन्दर्यपर मुग्ध नायक सखीसँ अपन भावना कहैत छथि। अलंकारक छटा। (1) अपरुप--अद्भुत। (2) कमल=चरण, चान=नह, तमालवृक्ष=जाँघ। (3) बिहुली =पीअर पटोर। (4) शाखा शिखर--डारिक फुनगी अर्थात् हाथक आङुर सभ]। सुधाकर पाँति--चानक पाँती, नह। पल्लव=तरहत्थी। (5) दू गोद तिलकोडक फड़=ठोर। कीर=नाक। (6) खंजन=आँखि। सापिनि=भौंह। मोर--मयूर=केशपाश।

[806]

कि कहब हे सखि कान्हक रूप। के पतिआएत सपन सरूप।।1।।
अभिनव जलधर सुन्दर देह। पीत बसन सौदामिनि रेह।।2।।
सामा झामा कुञ्जित केस। काजरे साजल मदन सुबेस।।3।।
जातकि केतकि कुसुम सुबास। फुलसर मनमथ तेजल तरास।।4।।
विद्यापति कह कि कहब आर। सून कएल बिहि मदन भण्डार।।5।।

राधा सखीकें कृष्णक सौन्दर्य सुनबैत छथि। (2) सौदामिनि--विद्युत्। (3) कारी केस लगैछ जेना कामदेव अपन धनुख काजरसँ रङि कें सजओने होथि।

[807]

कान्ह हैरब छल मन बड साध। से हेरइते भेल एत परमाद।।1।।
तबधरि अबुधि मुगुधि हमे नारि। कि कहि किसुनि किछु बुझएत पारि।।
साओत घन सम झरु दु नयान। अबिरत धसमस करए परान।।3।।
कॉं लागि सजनी दरसन भेल। रभसे अपन जिब पर हाथ देल।।4।।
ने जानि किए करु मोहन चोर। हेरइते प्रान हरि लए गेल मोर।।5।।
एत सभ आदर गैल दरसाए। जत बिसरिअ बिसरल नहि जाए।।6।।
विद्यापति कह सुन बरनारि। धैरज धरु चित मिलत मुरारि।।7।।

राधा सखीकें विरहव्यथा सुनबैत छथि। (1) साध-मनोरथ, लालसा। परमाद-गड़बड़। (2) तबधीर-तखनसँ। (3) धसमस-कछत्तछ। (4) रभसे-हठात्। जिब-प्राण।

[808]

कि कबह हे सखि इह दुख ओर। बाँसि निसास गरले तनु भोर।।1।।
हठ सञे पइसए स्रबनक माझ। तहिखन बिगलित तनु मन लाज।।2।।
बिपुल पुलक परिपूरए देह। नयने न हेरि हेरए जनु केह।।3।।
गुरुजन समुखहि भाव तरङ्ग। जतनहि बसन झाँपिअ सब अङ्ग।।4।।
लहु लहु चरन चलिअ गृह माझ। दैब से बिहि आजु राखल लाज।।5।।
तनु मन बिबस खसए निबिबन्ध। कि कहब विद्यापति रहु धन्ध।।6।।

राधा विरहवेदना सखीकें सुनबैत छथि। (1) वंशी मानू साप थिक, तकर साँसक विषसँ हमर देह भोर (अचेत) भए गैल। (2) विगलित--नष्ट। (3) विपुल--बहुत।

[809]

ए धनि पहुमिनि। सुन हित बानि। प्रेम करब गए सुपुरुख जानि।।1।।
सुपुरुख पेम हेम समतूल। दहइते कनक दुगुन होअ मूल।।2।।

टूटइते न टूट पेम अदभुत। जइसे नटूटए मृनालक सूत।।3।।
सबहु मतङ्गज मोति न मानि। सकल कण्ठ नहि कोकिल बानि।।4।।
सकल समय नहि रीतुबसन्त। सकल पुरुख नहि हो गुनमन्त।।5।।

1. कमालिनि। 2. अब।

सखी नायिकाकें प्रेमक उपदेश दैत छथि। (1) पद्मिनी--उत्तम कोटिक नारी। (2) हेम--सोन। (2) मृनाल--कमलक डाँट। (4) मतङ्गज--मत हाथी।

[810]

कबरी भये चामरि गिरिकन्दर मुखभये चान्द अकासे।
हरिन नयन भये सर भये कोकिल गति भय गज बनबासे।।1।।
सुन्दरि काहे मोहि सम्भासि न जासि।
तुअ भये इह सबे दुरहि पड़ाएल तोहें पुनु काहि डरासि।।2।।
कुचभये कमल कोरक जले मुँदि रहु घट परबेस हुतासे।
दाड़िम सिरिफल गगन बास करु सम्भु गरल करु ग्रासे।।3।।
भुज भये कमल मृणल पड्के रहु करभये किसलय काँपे।
विद्यापति कह कतकत ऐसन कहब मदन परतापे।।4।।

नायक रूसलि नायिका कें चाटुवचन सँ बड़ँसैत छथि। (1) कबरी-केशराशि। (2) हमरासँ बजैत किएल नहि छी। (3) कुच-स्तन। हुतास-आगि, आबा। सिरिफल-बेल।

[811]

सुन सुन ए सखि बचन बिसेस। आज मञे देबओ तोहि उपदेस।।1।।
पहिलहि बैसब सयनक सीम। हेरइते पिआ मुख मोड़ब गीम।।2।।
परसैते दुहु कर बारब पानि। मौन रहब पहु पुछइते बानि।।3।।
जब हमे सआँपब करे कर आपि। साधसे धरब उलटि मोहि काँपि।।4।।
विद्यापति कह एह रसठाठ। गुरुभए काम सिखओब पाठ।।5।।

सखी मुग्धा नायिकाकें संगमक रीति सिखबैत छथि। (2) सयन--पलंग। सीम---कात। गीम--गरदनि। (3) परसैते--छुबैत। बारब--रोकब। (4) साधसे--डराए कें।

[812]

पहिलहि राधा माधव भेट। चकितहि चाहि बयन करु हेट।।1।।
अनुनय कत कत[1] करतहि कान्ह। नविन रमनि धनि रस नहि जान।।2।।
हरि हरि नागर पुलकित[2] भेल। काँपि उठल तनु सेद बहि गेल।।3।।
अथिर माधव धरु राहिक हाथ। करे कर बाधि धरये धनि माथ।।4।।
भनइ वियापति नहि मन आन। राजा सिबसिंह लखिमा रमान।।5।।

1. काकु। 2. पुलक।

कवि राधा ओ कृष्णक प्रथम संगमक वर्णन करैत छथि। (1) चाहि--देखिकें। बयन करु हेट--मूड़ी झुकाए लेल। (2) करतहि--करैत छथि।

[813]

ए हरि बलें जदि परसब मोहि। तिरिवध पातक लागत तोहि।।1।।
तोहें रससागर नागर ढीठ। हमे न बुझिअ रस तीत कि मीठ।।2।।
रस परसङ्ग उठए मझु काँप। बाने हरिनि जनि करु भये झाँप।।3।।
असमय आस न पूरए काम। भल जन न कर बिरस परिनाम।।4।।
वियापति कह बूझह साँच। फलओ न मीठ होए जओ काँच।।5।।

राधा कृष्ण कें रभस (बलजोरी विलास) करबासँ रोकैत छथि। (1) परसब--छूअब।

[814]

गरबे न कर हठ लुबुध मुरारि। तुअ अनुरागे न जिब पर[1] नारि।।1।।
तोहें नागरगुरु हमे अगेआन। केलिकला रस[2] तोहे भल जान।।2।।
फोअलि कबरि[3] मोरि टूटल हार। अबुझ नारि हम तोहहु गोआर।।3।।
वियापति कह कर अबधान। रोगी करए जैसे औखध पान।।4।।

1. बर। 2. सब। 3. केशपाश।

राधा कृष्ण कें हठकेलि (रभस) सँ बरसैत छथि। (1) गरबे--अभिमानसँ।

[815]

निबि बन्धन हरि किए कर दूर। एहो पए तोहर मनोरथ पूर।।1।।
हेरने कओन सुख न बुझ बिचारि। बड़ तुहु ढीठ बुझल बनमारि।।2।।
हमर सपथ जौं हेरह मुरारि। लहु लहु तबे हम पारब गारि।।3।।
बिहरसि[1] रहसि हेरने कोन काम। से नहि सहबहि हमर परान।।4।।
कहूँ नहि सुनिए एहन परकार। करए बिलास दीप लए जार।।5।।
परिजन सुनि सुनि तेजब निसास। लहु लहु रमह परिजन पास।।6।।

1. बिहर से।

राधा कृष्णकें हठकेलिसँ बरजैत छथि।

[816]

कि कहब हे सखि जनिक बात। बड़ दुख पाओल माधब साथ।।1।।
करे कुचभत झपइते अधर कर पान। बदन दसन दए बधए परान।।2।।
नब जौवन नहि रस परिचार। रतिरस जान न कान्ह गोआर।।3।।
मदने बिभोर किछुओ नहि जान। मिनति करिअ कत तबहु न मान।।4।।
भनइ वियापति सुन बर नारि। तोहें मुगुधिनि सेहे लुबुध मुरारि।।5।।

1. मधु।

राधा सखी कें रति-रंगक अनुभव सुनबैत छथि। (2) दसन-दन्तक्षत। (5) मुगुधिनि-मुग्धा।

[817]

थर थर काँपए लहु लहु भास। लाजे न बचन करए परगास।।1।।
आजे पेखलि धनि बड़ि बिपरीत। खने अनुमति खने मानए भीति।।2।।
सुरतक नामे मुँदए दुहु आँखि। पाओल मदन महोदधि साखि।।3।।

चुम्बन बेरि करए मुख बङ्क। मीलल चान्द सरोरुह अङ्क।।4।।
निबिबन्ध परसे चमकि उठ गोरि। जानए मदन भण्डारक चोरि।।5।।
फुजले बसने हिअ भुज रहु साँठि। बाहर रतन आँचर देअ गाँठि।।6।।
बिद्यापति कि बुझब बल हेरि। तेज तलप परिरम्भन बेरि।।7।।

कृष्ण सखीकें राधाक संग केलि विलासक वर्णन सुनबैत छथि। (1) लहुलहु--मन्द-मन्द। भास--बजैत अछि। (4) अङ्क--कोर। (7) तलप--तल्प, सेज। परिरम्भन--आलिंगन।

[818]

करिवर राजहंस जिनि कामिनि चललिह सङ्केत गेहा।
अमला तड़ितदण्ड हेममञ्जरि जिनि अति सुन्दर देहा।।1।।
जलधरं तिमिर चामर जिनि कुन्तल अलका भृङ्ग सेवाले।
भउह लता धनु भ्रमर भुजङ्गिनि जिनि आधा बिधुबर भाले।।2।।
नलिनि चकोर सफरि वर मधुकर मृगि खञ्जन जिनि आखी।
नासा तिलफुल गरुड़ चञ्चु जिनि गिधिनी स्रबन विसेखी।।3।।
कनक मुकुर ससि कमल जिनिया मुख जिनि बिन्दु अधर पवारे।
दसन मुकुता जिनि कुन्द करगबिज जिनि कम्बु कण्ठ अकारे।।4।।
बेल तालजुग हेमकलस गिरि कटोरि जिनिआ कुच साजा।
बाहु मृणाल पास बल्लरि जिनि डमरु सिंह जिन माझा।।5।।
लोमलताबलि सैवल कज्जल त्रिवलि तरङ्गिनि रङ्गा।
नाभि सरोवर सरोरुहदल जिनि नितम्ब जिनिआ गज कुम्भा।।6।।
ऊरु जुग कदली करिवरकर जिनि स्थलपङ्कज पदपानी।
नख दाड़िम बिज इन्दु रतन जिनि पिक जिनि अभिया बानी।।7।।
भनइ विद्यापति अपरुब मूरति राधारुप अपारा।
राजा सिबसिंह रुपनराएन एकादस अबतारा।

कवि राधाक रूपक वर्णन करैत छथि, सभ रूपक मे। (1) गति--हाथी, राजहंस। देहक रंग---निर्मल तड़ित, स्वर्णमञ्जरी। कुन्तल--मेघ,

अन्धकार, चामर। (2) अलक--भ्रमर, सेमार। भऊँह----धनुष, भ्रमर, नागिनी। कपार---अर्धचन्द्र। (3) आँखि--कमलिनी, गरुड़क लोल। कान--गिधिनी पक्षी। (4) मुख--कनक, दर्पण, चान, कमल। अधर--प्रवाल। दाँत--मुक्ता, कुन्द, दाड़िमबीज। कण्ठ--कम्बु। (5) स्तन--बेल, ताड़, स्वर्णकलश, स्वर्ण पर्वत, स्वर्णकटोरा। बाहु--(6) लोम--लता, सेमार, कज्जल। त्रिवली--नदी। नाभि--सरोवर, कमलदल। नितम्ब--गजकुम्भ। जाँघ--कदली, सूँढ़। पाएर-हाथ---स्थलकमल। नख--दाड़िम, चन्द्र, रत्न। वाणी--अमृत।

[819]

नब अनुरागिनि राधा। किछु नहि मानए बाधा।।1।।
एकलि कएल पयान। सुपथ बिपथ नहि जान।।2।।
तेजल मनिमय हार। उचकुच मानए भार।।3।।
कर सञो कङ्कन मुन्दरी। पन्थहि तेजलि सुन्दरी।।4।।
मनिमय मञ्जिर पाए। दुरहि तेजि चलि जाए।।5।।
जामिनि घन अन्धिआर।मनमथे हिया उजिआर ।।6।।
बिघिन बिथारित बाट। प्रेमक आयुधे काट।।7।।
विद्यापति कवि भान। अइसनि न हेरिअ आन।।8।।

कवि राधाक अभिसारक वर्णन करैत छथि। (1) पयान--प्रयाण, प्रस्थान। (6) जामिनि--यामिनी, राति।

[820]

कुङ्कुम लओलह नखखत गोए। अधरक काजर अएलह धोए।।1।।
तैअओ न छपलि कपटबुधि तोरि। लोचन अरुन बेकत भेलि चोरि।।2।।
चल चल कान्ह बोलह जनु आन। परतख चाहि अधिक अनुमान।।3।।
जानञो प्रकृति बुझञो गुनसीला। जत तोर मनोरथ मनसिज लीला।।4।।
धन सङ्ग जउबन छड़लक जाति। कामिनि बिनु कैसे गेलि मधुराति।।5।।
बचने नुकाबह बेकतेओ काज। तोहें हसि हेरह मोहि बड़ लाज।।6।।

अपदहु सपथ बुझाबह बाधे। खेओब कओन परि सठ अपराधे।।7।।
भनइ वियापति पिअअपराधे। न कर उघारि मनोरथ बाधे।।8।।
देवसिंह सुत एहु रसजाने। सिबसिंह लखिमा देबि रमाने।।9।।

राधा गुप्त संगम कए आएल कृष्णकें देखार करैत छथि। (1) लओलह--लगओलह, लेपलह। गोए--छिपाबक लेल। (3) परतख-चाहि--प्रत्यक्षक अपेक्षा। (4) मनसिज लीला--कामकेलि।

[821]

अपनेहि अइलिहुँ कएल अकाज। मान गमाओल अरजल लाज।।1।।
आदर हरल बहल मुखसोभ। राङ्क न फाबए मानिक लोभ।।2।।
ए सखि ए सखि कि कहब तोहि। दिबसक दोसे दुजस भेल मोहि।।3।।
हरि न हेरल मुख सयन समीप। रोसे निझाओल चरनहि दीप।।4।।
बइसि गमाओल जामिनिजाम। कि कहब भावि विधाता बाम।।5।।

कृष्णसँ उपेक्षिता राधा सखीकें अपन सन्ताप सुनबैत छथि। (1) अकाज--अनुचित काज। बहल--नष्ट भेल। मुखसोभ--प्रतिष्ठा। राङ्क--रंक, दरिद्र। फाबए--छजए। (5) जामिनिजाम--रातुक पहर।

[822]

बिगलित चिकुर मिलित मुख मण्डल चान्द बेढ़ल घन माला।
मनिमय कुण्डल स्रबन दुलित भेल घामे तिलक बह गाला।।1।।
सुन्दरि तुअ मुख मङ्गल दाता।
रति रने मदन पराभब मानल कि करब हरिहर धाता।।2।।
किङ्किनि किनिकिनि कङ्कन कनकन रुनझुन नूपुर बाजे।
निज मदे मदन पराभय मानल जयजय दुन्दुभि बाजे।।3।।
तिलएक जघन सघन रब करइते होएब सैनिक भङ्गे।
वियापति कवि ओ रसगायक जओनि मिलल जनि गङ्गे।।4।।

कृष्ण कामकलामे पारंगत राधाक प्रशंसा करैत छथि युद्धक रूपक। (1) हे सुन्दरी, तोहर मुहपर झबरल केस लगैछ जेना चानकें मेघ घेरने हो। (2) रतिरूपी युद्धमे कामदेव हारि गेल। ब्रह्मा, विष्णु, महेश की करताह अर्थात् रक्षा नहि कए सकलथिन। (4) रतिक कालमे डाँड़क घुघरू एक रती बाजत कि कामदेवक सेना लंक लेतह।

[823]

आएल रितुपति राए बसन्त। धाओल अलिकुल मालति पन्थ।।1।।
दिनकर किरन भेल पौगण्ड। केसर कुसुम धएल हेमदण्ड।।2।।
नृप आसन नव पीठल पात। काञ्चन कुसुम छत्र धरु माथ।।3।।
मौलि रसाल मुकुल भल भाय। समुखहि कोकिल पञ्चम गाब।।4।।
सिखिकुल नाचए अलिकुल जन्त। आन दुजकुल पढ़ आसिख मन्त।।5।।
चन्द्रातप उड़ कुसुमपराग। मलय पवन सह भेल अङ्गराग।।6।।
कुन्दवल्ली तरु धएल निसान। पाटल तून असोकदल बान।।7।।
किसुक लबङ्गलता एक सङ्ग हेरि सिसिर रितु भेल दल भङ्ग।।8।।
सैन साजल मधुमाखिक कूल। सिसिरक सबहु कएल निरमूल।।9।।
उधारल सरसिज पाओल परान। निज नव दले करु आसन दान।।10।।
नव वृन्दावन रास बिहार। वियापति कह समयक सार।।11।।

कवि राजाक रूपमे ऋतुराज वसन्तक वर्णन करैत छथि। (1) राजा वसन्त अएलाह। भ्रमर मालती दिस दौड़ल। (2) पौगण्ड--प्रौढ़, प्रखर। केसर पुष्प स्वर्णदंड भेल। (3) पीठल (?) केर पात राजाक सिंहासन भेल। चम्पा फूल छत्र भेल। (4) आमक मजर, मुकुट भेल। कोइली गायक भेल। (5) मयूर नर्तक भेल, भ्रमर वादक, आन-आन पक्षी सभ स्वस्तिवाचक भेल। (6) उड़ैत पुष्प-पराग चनबा भेल, मलय पवन अंगराग (पओडर) भेल। (7) कुन्द आ बेलीक गाछ सभ पताका फहरओलक। पाँड़रिक फूल तूणीर (तरकस) भेल आ' अशोक बाण। (8) जहाँ पलास आ' लवंगलता एक संग भेल कि से देखि प्रतिद्वन्द्वी राजा शिशिरक सेना हारि पड़ाएल।

[824]

नव वृन्दावन नव नव तरुगन नव नव विकसित फूल।
नवल वसन्त नवल मलयानिल मातल नव अलिकूल।।1।।
बिहरइ नवल कि सोर।
कालिन्दि पुलिन कुञ्जवन सोभन नव नव प्रेम बिभोर।।2।।
नवल रसाल मुकुल मधु मातल नव कोकिल कुल गाब।
नव जुवतीजन चित उमताइअ नव रस कानन धाब।।3।।
नव जुवराज नवल बरनागरि मीलए नवनव भाँति।
नित नित ऐसन नव नव खेलन विद्यापति मति माति।।4।।

कवि राधाकृष्णक विहारक संग वसन्तक वर्णन करैत छथि। 2. पुलित--तट। 3. रसाल मुकुल--आमक मजर।

[825]

मधुरितु मधुकर पाँति। मधुर कुसुम मधु माति।।1।।
मधुर वृन्दावन माझ। मधुर मधुर रस राज।।2।।
मधुर जुबतिजन सङ्ग। मधुर मधुर रसरङ्ग।।3।।
मधुर मृदङ्ग रसाल। मधुर मधुर करताल।।4।।
मधुर नटन गति भङ्ग। मधुर नटिनि नट सङ्ग।।5।।
मधुर मधुर रसगान। मधुर विद्यापति भान।।6।।

कवि राधाकृष्णक वसन्त-विहारक वर्णन करैत छथि। (6) नटन--नचनिहार, कृष्ण। गतिभङ्ग--अंगसंचारक विविध भंगी वा मुद्रा।

[826]

रितुपति राति रसिकबर राज। रसमय रास रभस-रस माझ।।1।।
रसबति रमनिरतन धनि राहि। रासरसिक सह रस अबगाहि।।2।।
रङ्गिनिगन रसरङ्गहि नटई। रनरनि कङ्कन किङ्किनि रटई।।3।।
रहि रहि राग रचए रसमन्त। रतिरस रागिनि रमन बसन्त।।4।।
रटति रबाब महति कपिनाश। राधारमन कर मुरलिविलास।।5।।
रसमय विद्यापति कवि भान। रुपनराएन भूपति जान।।6।।

कवि गोपी सभक संग कृष्णक नृत्यक वर्णन करैत छथि। अनुप्रासक तर भाव दवल अछि। (1) रभस--केलि। (2) अबगाहि--निमग्न। (5) रबाब, महती, कपिनास--सभ बाजाक नाम थिक।

[827]

पिआ गेल मधुपुर हमे कुलबाला। बिपथे परल जैसे मालति माला।।
कि पुछसि कि कहसि सुन प्रिय सजनी। कइसे बञ्चब ई दिन रजनी।।
नयनक निन्द गेलि बयनक हास। सुख गेल पिआ संग दुख हम पास।।
भनइ विद्यापति सुन बर नारि। सुजनक कुदिन दिबस दुइ चारि।।

राधा सखीकेँ विरह विलाप सुनबैत छथि। (1) बिपथ--कुमार्ग, अनुपयुक्त स्थान। (2) बञ्चब--बिताएब।

[828]

दखिन पबन बह दहदिस रोल। से जनि बादी भासा बोल।।1।।
मनमथकाँ साधन नहि आन। निरसाओल से मानिनिमान।।2।।
माइ हे सीत बसन्त बिवाद। कओने बिचारब जय अबसाद।।3।।
दुहु दिस मधथ दिवाकर भेल। दुजबर कोकिल साखिता देल।।4।।
नव पल्लव जयपत्रक भाँति। मधुकरमाला आखर पाँति।।5।।
बादी तह प्रतिबादी भीत। सिसिरबिन्दु होअ अन्तरहीत।।6।।
कुन्द कुसुम अनुपम बिकसन्त। सतत जीत बेकताव बसन्त।।7।।
विद्यापति कबि एहो रस भान। राजा सिबसिंह एहो रस जान।।8।।

शिशिर आ' वसन्तक बीच वाद-प्रतिवादक वर्णन। (1) रोल--अबाज। वादी--मुद्दइ, वसन्त। भासा--वादीक आवेदन पत्र। (2) मान--प्रमाण, सबूत (सबूत नष्ट कएलनि)। (3) अवसाद--हारि। (4) सूर्य मध्यस्थ भेलाह। द्विज (पक्षी/ब्राह्मण) कोकिल गबाह भेल। (5) नव पल्लव जयपत्र (डिक्री) भेल। भ्रमरपंक्ति अक्षर भेल।

[829]

दखिन पबन बह मन्द। माजरि झर मकरन्द।।1।।
तखने हलब मन मारि। लोचन हलब निबारि।।2।।
पिअ हे।
जदि तोहें जाएब बिदेस। धरब हमर उपदेस।।3।।
मधुकर जदि कर राब। जदि पिक पञ्चम गाब।।4।।
तखने करब अबधान[1]। मूँदि रहब दुहु[2] कान।।5।।
परतिरि मानब तीति। धैरजे मनोभव जीति।।6।।
राखब अपन परान। मोहि[3] करब जलदान।।7।।
सुकवि भनथि कण्ठहार। कै सह काम प्रहार।।8।।

1.अनुमान। 2. बरु। 3. हमहि।

विरहिणी प्रवासी प्रियतमकें उपदेश दैत छथि। (1) जखन दक्षिण पवन मन्दमन्द बहए आ' मंजरीसँ मकरन्द झरए लागए, (2) तखन मन कें जाँति लेब आ' ओम्हरसँ आँखि हटाए लेब। (4) राब--कू-कू शब्द। पिक--कोकिल। (5) अबधान--सतर्कता। (6) परतिरि--परस्त्री। (7) अपन प्राण बचाएकें राखब आ' हमरा तिलांजलि देब।

[830]

अब मथुरापुर माधब गेल। गोकुल मानिक के हरि[1] लेल।।1।।
गोकुल उछलल करुनाक रोल। नयनक जल देखु हृदय हिलोल।।2।।
सुन भेल मन्दिर सुन भेल नगरी। सुन भेल दसदिस सुन भेल सगरी।।3।।
कैसे हम जाएब[2] जामुन तीर। कैसे नेहारब कुञ्ज कुटीर।।4।।
सहचरि सञे जहाँ कएल फुलबारि। कैसे जिअब हमे ताहि निहारि।।5।।
विधापति कह कर अबधान। कौतुके छापित तँहि रहु कान।।6।।

1.को। 2. कैसने जाओब। 3. जीयब।

राधा कृष्णक विरहमे विलाप करैत छथि। (1) आब कान्ह मथुरा चलि गेल। जानि नहि के गोकुलक चान कृष्णकें हरि लेलक। (2) रौल--अवाज। (5) सहचरि... फुलबारि--अस्पष्ट। (6) कान्ह कौतुक (मजाक) करबाक हेतु नुकाएल छथि (मथुरा नहि गेलाह)।

[831]

नउमि दसा देखि गेलाहे नड़ाए। दसमि दसा उपगति भेलि आए।।1।।
हुन्हि अरजल अपजस अपकार। हमे जिबे अड़िगरल जम बनिजार।।2।।
अबे सुखे भोगथु कान्ह बिदेस। सुमरि जलाञ्जलि दिहथि सन्देस।।3।।
बह मलयानिल झर मकरन्द। उगओ सहसदस दारुन चन्द।।4।।
करओ कमलबन केलि भमरा। अबे कि होएत भलमन्द हमरा।।5।।
भनइ विधापति निरदय कन्त। एहिसञो भल बरु जीबक अन्त।।6।।

राधा विरहमे विलाप करैत छथि। (1) नउमि दसा---विरहक दस अवस्थामे नवम मूर्छा। दसमि दसा--मृत्यु। उपगति--सम्प्रास।

[832]

सरसिज विनु सर सर बिनु सुरसिज की सरसिज बिनु सूरे।
जौबन बिनु तनु बिनु जौवन की जौबन पिअ दूरे।।1।।
सखि हे, मोर बड़ दैब बिरोधी।
मदन बेदन बड़ पिआ मोर बोलछड़ अबहु दे हुन्हि परबोधी।।2।।
चौदिस भमर भम कुसुम कुसुम रम नीरसि माँजरि पीबइ।
मन्द पवन बह पिक कुहु-कुहु कह सुनि बिरहिनि कइसे जीबइ।।3।।
सिनेह अछल जत हम भेल न टुटत बड़ बोल जत सब थीरे।
ऐसन के बोल दहु निज सिम तेजि कहु उछल पयोनिधि नीरे।।4।।
भनइ विधापति ओरे कमलमुखि गुनगाहक पिआ तोरा।
राजा सिबसिंह रुपनराएल सहजे एकओ नहि भोरा।।5।।

राधा सखीकें विरह वेदना सुनबैत छथि। (1) सरसिज--कमल। सूर--सूर्य। (2) बोलछड़--अपन वचनसँ हटनिहार, छली। (3) नीरसि--निःशेष कए।

[833]

सजनी के कह आओब मधाई।
विरह पयोधि पार किअ पाएब मोर मन नहि पतिआई।।1।।
एखन तखन कए दिबस गमाओल दिवस दिवस कए मासा।
मास मास कए बरस गमाओल छाड़ल जीवन आसा।।2।।
बरस बरस कए समय गमाओल छाड़ल कान्हक आसे।
हिमकर किरन नलिनि जदि जारब कि करब माधव मासे।।3।।
अङ्कुर तपनताप जदि जारब कि करब बारिद मेहे।।
ई नवि जौवन बिरहे गमाओब कि करब से पिअ नेहे।।4।।
भनइ विद्यापति सुनु वरजौवति अब जनु होउ निरासे।
से व्रजनन्दन हृदय आनन्दन झटिति मिलब तुअ पासे।।5।।

राधा सखीकें विरहव्यथा सुनबैत छथि। (1) विरह पयोधि--वियोगरूपी समुद्र। (3) जँ चन्द्रकिरण कमलिनीकें जराए देअए तँ पाछाँ वसन्तक अएनहि की। (4) तपनताप--सूर्यक प्रखर किरण। मेह--मेघ।

[834]

चन्दन गरल समान। सीतल पवन कृतासन भान।।
हेरइ सुधानिधि सूर। निसि बैठलि होअ सुबदनि झूर।।
हरि हरि,
दारुन तोहर सिनेह। तोहर जिबन अबे पड़ल सन्देह।।
गुरुजन लोचन बारि। धनि अनुखन पथ हेरए तोहारि।।
तेजए नयन घन नीर। कतकत बेदन सहत सरीर।।
सुकवि विद्यापति भान। दूतिक बचने लजाएल कान।।

दूती कृष्णकें राधाक विरहदशा सुनबैत छथि। (1) तोहर विरहमे राधा चानन बिख-सन लगैत छैक। शीतल पवन लगैत छैक जेना आगि हो।

[835]

हमे धनि तापिनि मन्दिर एकाकिनि दोसर जन नहि सङ्ग।
बरखा परबेस पिआ गेल दुर देस रिपु भेल मत अनङ्ग।।1।।
सजनी आजु समन दिन होइ।
नबनब जलधर चउरस झाँपल जिब निकसए हेरि सोइ।।2।।
घन घन गरजए सुनि जिब चमकए काँपए अन्तर मोर।
पपिहा दारुन पिउपिउ सुमिरए भमि भमि देइ तसु रोर।।3।।
बरसए पुनि पुनि आगि दहए जनि जानल जीवन अन्त।
विद्यापति कह सुन रमनीवर मीलब पहु गुनमन्त।।4।।

राधा सखीकें विरहवेदना सुनबैत छथि। (2) समन दिन--मृत्युक दिन। जउदिस--चारू दिशाकें। (3) पपिहा (चातक) पिउ (प्रियतम) केर स्मरण करैत अछि ओ ओकरा पिउ-पिउ ध्वनि कए पुकारैत अछि।

[836]

फुटल कुसुम नब कुञ्ज कुटिर वन कोकिल पञ्चम गाबे रे।
मलयानिल हिमसिखर सिधारल पिआ निज देस न आबे रे।।1।।
चान्द चान्दन तनु अधिक सन्ताबए उपवन अलि उतरोल रे।
समय वसन्त कन्त रहु दुर देस जानल बिहि प्रतिकूल रे।।2।।
अनिमिख नयन नाह मुख निरखैत तिरपित न होअ नयान रे।
एहि सुख समय सहए एत सङ्कट अबला कठिन परान रे।।3।।
दिनदिन खिन तनु हिम कमलिनि जनु न जानि कि जिब परजन्त रे।
विद्यापति कह धिकधिक जीवन माधव निकरुन कन्त रे।।4।।

राधा विरह-विलाप करैत छथि। (1) मलया .. सिधारल--मलयपवन हिमालय दिस चलल, दक्षिण पवन बहए लागल। (2) उतरोल -कोलाहल।

(3) अनिमिख--अपलक। नाह--पिआ। (4) हिम... जनु--जेना शिशिर ऋतुमे कमलक लता। (5) जिब परजन्त--प्राणक अवसान।

[837]

कुसुमित कानन हेरि कमलमुखि मुन्दि रहु दुअओ नयान।
कोकिल कलरब मधुकर धुनि सुनि कर दए झापए कान।।1।।
माधब सुनसुन बचन हमार।
तुअ गुने सुन्दरि अति भेलि दूबरि सुनि सुनि पेम तोहार।।2।।
धरनि धरिए धनि कत बेरि बैठइ पुन तहि उठइ न पारा।
कातर दिठि करि चौदिस हेरि हेरि नयने गलइ जलधारा।।3।।
तोहर बिरह दिन खने खने तनु खिन चौदसि चान समान।
भनइ विद्यापति सिवसिंह नरपति लाखिमा देवि रमान।।4।।

दूती कृष्णकें राधाक विरहदशा सुनबैत छथि। (1) नयान--आँखि। (2) तुअ गुने--तोहर कारणें। (4) चौदसि चान--कृष्णपक्षक चतुर्दशी तिथिक चन्द्रमा जकाँ।

[838]

सुपुरुष पेम[1] सुधनि अनुराग। दिनेदिने बाढ़ अधिक दिन जाग[2]।।1।।
माधय हे मथुरापति नाह। अपन बचन अपनेहि[3] निरबाह।।2।।
कमलिनि सूर आने[4] अनुभाव। भमि भमि भमर मदन गुन गाब।।3।।
कवि[5] विद्यापति एह रस भान। सिरि हरिसिंहदेव ई रस जान।।4।।

1. प्रेम। 2. लाग। 3. अपने। 4. आने आने। 5. भनइ।

दूती कृष्णकें उपराग दैत छनि। (1) जाग--टिकैत अछि। निरबाह--पालन।

[839]

माधव कत परबोधब राधा।
हा हरि हा हरि कहइते बेरि बेरि अब जिब करब समाधा।।1।।
धरनि धरिए धनि जतनहि बैठए पुनु तह उठए न पारा।

सहजहि बिरहिनि जगमह तापिनि बैरि मदन सर धारा।।2।।
अरुन नयन लोरे तितल कलेबर बिलुलित दीघर केसा।
मन्दिर बाहिर करइते संसय सहचरि गनतहि सेसा।।3।।
कि कहब खेद भेद धनि अन्तर घन घन उतपत सास।
भनइ विद्यापति सेहे कलावति जीवन बान्धल पास।।4।।

दूती कृष्णकें राधाक विरहवेदना सुनबैत छथि। (1) अब ... समाधा--आब प्राणक अन्त कए देत। (3) कलेवर--देह। विलुलित--छिड़िआएल। दीघर--दीर्घ, पैघ-पैघ। सहचरि... सेसा--सखी गणना करैत अछि जे शेष (प्राणान्त) कतेक कालमे होएतैक (4) उतपत--उत्तप्त, धीपल। सेहे... पास--ओएह पाश तँ राधाक प्राणकें बान्हि रखने अछि।

[840]

अनुखन माधव माधव सुमिरैत माधब भेलि मधाई।
ओ निज भाय सोभावहि बिसरल आपन गुन लुबुधाई।।1।।
माधब अपरुब तोहर सिनेह।
अपनेहि बिरहे अपन तनु जरजर जिबइते भेल सन्देह।।2।।
भोरहि सहचरि कातर दिठि हेरि छलछल लोचन पानि।
अनुखन राधा राधा रटइत आध आध कहु बानि।।3।।
राधा सञो जबे पुन तहि माधव माधव सञो जबे राधा।
दारुन भरम तबहु नहि टूटए बाढ़ए बिरहक बाधा।।4।।
दुहु दिस दारु दहन जैसे दगधइ आकुल कीट पराल।
ऐसन वल्लभ हेरि कमलमुखि कवि विद्यापति भान।।5।।

सखी राधाक एक अद्भुत विरहवेदना कृष्णकें सुनबैत छथि। (1) मधाई (राधा) निरन्धर माधवक स्मरण करैत-करैत (हुनक ध्यानमे मग्न होइत-होइत स्वयं माधव भए गेलि (अपनाकें माधव बूझए लागलि)। ओ अपने गुणपर मुग्ध भए अपनाकें बिसरि गेलि। तद्भावनात् तन्मयत्वम्। (2) आ' तखन अपने विरहसँ अपनहि जरए लागलि। (3) एही विभ्रमक

अवस्थामे ओ कातर दृष्टि एँ सहचरी दिस ताकए लागलि। (4) फेर जखन ओ राधासँ माधव आ' पुनः माधवसँ राधा भेलि; तैओ ओकर दारुण विभ्रम दूर नहि भेल। स्थिर नहि कए पओलक जे ओ राधा थिक कि माधव। एहि अवस्थामे ओकर विरहज्वाला आओर बढ़ए लागल। (5) ओकर अवस्था ओहने-सन भए गेल जेहन दशा दूनू कात जरैत काठक बीचमे पड़ल कीट केर होइछ (अपनाकेँ माधव बुझलक तँ राधाक विरहेँ व्याकुल, जँ राधा बुझलक तँ कृष्णक विरहेँ)।

टि. -- ई दशा चैतन्य-सम्प्रदायमे महाभाव (स्व कें पर बूझब) कहबैत अछि।

[841]

आङ्गन आओब जब रसिआ पलटि चलब हम ईखत हँसिआ।।1।।
आबेसे आँचर पिआ धरबे, जाएब हम न जतन पहु करबे।।2।।
केँचुआ धरब जब हठिआ, करे कर बारब कुटिल आध दिठिआ।।3।।
रभस माँगब पिअ जबही, मुख मोड़ि बिहुँसि बोलब नहि तबही।।4।।
सहजहि सुपुरुख भमरा, चिर धरि पिअब अधररस हमरा।।5।।
तखने हरब मोर गेआने, विद्यापति कह धनि तोर धेआने।।6।।

राधा सोचैत छथि जे जखन प्रवाससँ कृष्ण घुरताह तखन ओ की-की करतीह। (1) ईखत--अल्पमात्र, कनेक। (2) आबेसे--भावोद्रेकमे। (4) रभस--रति। (6) धनि--धन्य।

[842]

पिआ जबे आओब ए मझु गेहे। मङ्गल जतहुँ करब निज देहे।।1।।
कनअ कुम्भ भरि कुचजुग राखि। दरपन धरब काजर देइ आँखि।।2।।
बेदि करब हम अपन आँकमे। झाड़ि करताहे चिकुर बिछाने।।3।।
कदलि रोपब हमे गरुअ नितम्ब। आम पल्लव ताहे किङ्किनि सुझम्प।।4।।
दिसिदिसि आनब कामिनि ठाट। चौंदिस पसारब चाँदक हाट।।5।।
विद्यापति कह पूरब आस। दुहु एक पलके मिलब तुअ पास।।6।।

राधा सोचैत छथि जे जखन पिआ आओत तखन की-की करब। (1) गेह--घर। मङ्गल... देहे--जतेक जे मांगलिक उपचार छैक से सभ अपना देहहिसँ कए लेब। (2) जेना, स्तन मंगलघट होएत, कजराओल आँखि दर्पण होएत। (3) अपन आँकम (भुज पाश)कें वेदी बनाएब। चिकुर होएत बिछान। नितम्ब केराक थम्ह होएत।

[843]

दारुन बसन्त जतेओ दुख देल। हरि मुख हेरइते सब दुर गेल।।1।।
जतहु अछल मोर हृदयक साध। से सबे पूरल हरि परसाद।।2।।
कि कहब हे सखि आनन्द ओर। चिर दिने माधब मन्दिर मोर।।3।।
रभस आलिङ्गने पुलकित भेल। अधरकक पाने विरह दुर गेल।।4।।
भनहि विद्यापति आब न आधि। समुचित औखधे न रह बेआधि।।5।।

राधा सखीकेँ चिरागत कृष्णसँ मिलनक उल्लास सुनबैत छथि। (1) विरहावस्थामे वसन्त जतेक दुख देलक से कान्हक मुह देखितहि दूर भए गेल। (4) हठपूर्वक आलिंगन कएलनि। ताहिसँ देह रोमांचित भए उठल। चैतन्यचरितामृत मध्य लीला (तृतीय सोपान) मे कहल गेल अछि जे अद्वैताचार्य ई गीत सुनओलनि तँ श्री चैतन्यदेव व्याकुल भए पृथ्वी पर खसि पड़लाह।

[844]

सखि हे कि पुछसि अनुभव मोए।
सेहे पिरीति अनुराग बखानिआ तिले तिले नूतन होए।।1।।
जनम अबधि हम रूप निहारल नयन न तिरपित भेल।
सेहे मधुर बोल स्रबनहि सूनल श्रुतिपथे परस न गेल।।2।।
कत मधु जामिनि रभसे गमाओल न बुझल कैसन केलि।
लाख लाख जुग हिए हिअ राखल तैओ हिअ जरनि न गेलि।।3।।
कत बिदगध जन रस अबगाहल अनुभवि काहु न पेख।
विद्यापति कह प्रान जुड़ाइते लाखे न मीलल एक।।4।।*

राधा प्रेम की थिक से सखीकें बुझबैत छथि। (1) हे सखी, प्रेमक अनुभव हमरा की पुछैत छह। ओहि प्रीतिकें अनुराग कही जे क्षण-क्षणमे नूतन होइत जाए। (2) हम सगर जनम कान्हक रूप निहारैत रहलहुँ, तैओ आँखि तृप्त नहि भेल। ओकर बोल जीवन भरि सुनैत रहलहुँ, परन्तु कानमे मानू ओकर स्पर्शो नहि भेल। (3) कतेको वसन्त रजनी रंग-रभसमे गमाओल, तैओ ई नहि बूझल जे केलि केहन होइत अछि। लाख-लाख युग हृदय सँ हृदय सटओने रहलहुँ, तैओ हृदयक ज्वाला शान्त नहि भेल। (4) कतेको विदग्ध (रसिक) लोकनि रसमे डुबकी लगबैत रहलाह, किन्तु रस की थिक तकर अनुभव कनिकहु नहि भेलनि। विद्यापति कहैत छथि, लाखमे एको एहन नहि भेटल जे हमर प्राण जुड़ाओत।

* ई गीत दार्शनिक दृष्टिएँ विद्यापतिक सर्वश्रेष्ठ रचना मानल जाइछ, परन्तु एहिमे वर्णित महाभाव (प्रेम-वैचित्र्य) चैतन्योत्तर कालक आविष्कार थिक तें कतोक विद्वान् एकरा विद्यापतिक रचना नहि मानैत छथि।

[845]

तातल सैकत बारि बिन्दु सम सुत मित रमनि समाजे।
तोहि बिसरि मन ताहि समापल अब मझु हब कोन काजे।।1।।
माधव हम परिनाम निरासा।
तोहें जगतारन दीन दयामय अतए तोहर बिसबासा।।2।।
आध जनम हमे नीन्दे गमाओल सैसब कत दिन गेला।
जौबने रमनि रङ्गरस मातल तोहि भजब कोन बेला।।3।।
कत चतुरानन मरि मरि जाएत न तुअ आदि अबसाना।
तोहि जनमि पुनि तोहि समाएत सागर लहरि समाना।।4।।
भनइ विद्यापति सेसे समन भय तुअ बिनु गति नहि आरा।
आदि अनादिक नाथ कहाबसि तारन भार तोहारा।।5।।

कवि जीवनक अन्तिम चरणमे निराश भए सद्गतिक याचना करैत छथि। (1) पुत्र, स्त्री आ' मित्र ओहने क्षणिक (अनित्य) थिक जेहन धीपल

बालु पर जलकण। हे कान्ह, तोरा बिसरिकें हम अपन मन ओही पुत्र, स्त्री आ मित्र सभमे लगाओल। आब हमर कोन उपाय होएत? (4) कतेक ब्रह्मा जन्म लेताह आ' मरताह, किन्तु तोहर ने आदि अछि, ने अन्त। ब्रह्मा सहित सभ केओ तोरहिसँ जन्म लए तोरहिमे समाएत, जेना समुद्रक लहरि समुद्रहिमे लीन भए जाइत अछि। (5) विद्यापति कहैत छथि, जीवनक अन्तमे यमक भय होइछ। ताहिसँ मुक्ति पएबाक उपाय तोरा छाड़ि आन कोनो नहि। तोहीं आदि आ' अन्त दूनूक विधाता (जन्म-मरणदाता) छह। एहि (भवसागरसँ) तारण करबाक भार तोरहि उपर।

[846]

जतने कतेक धन पापें बटोरल मिलि मिलि परिजन खाए।
मरनक बेरि हरि केओ नहि पूछए सङ्ग करम पए जाए।।1।।
ए हरि समन्दओ तुअ पद नाए।
तुअ पद परिहरि पाप पयोनिधि पार हब कओने उपाए।।2।।
जाब जनम तुअ पद नहि सेबल जुबती मति मय मेलि।
अमरित तेजि हलाहल पीउल सम्पद विपदहि भेलि।।3।।
भनइ विद्यापति लेह मनहि गुनि कहलहिँ की हो काजे।
साँझक बेरि सेबको नहि माँगए हेरइते तुअ पद लाजे।।4।।

कवि वैराग्य आ परलोकक चिन्ता व्यक्त करैत छथि। (2) तोहर चरण मे प्रणाम कए निवेदन करैत छिअहु। पयोनिधि--समुद्र। (3) जाब जनम--सगर जनम। जुबती... मेलि--अस्पष्ट।

[847]

माधब बहुत मिनति करि तोय।
देइ तुलसी तिल देह समरपल दया जनि छाड़बि मोय।।1।।
गनइते दोस गुनलेस न पाओब जब तुहँ करब बिचार।
तुहु जगन्नाथ जगते कहाओसि जग बाहर मोहि न छार।।2।।
किए मानुस पसु पाखिये जनमिअ अथवा कीट पतङ्ग।

करम बिपाक गतागत पुनपुन मति रहु तुअ परसङ्ग।।3।।
भनइ विद्यापति अतिसय कातर तरइते इह भवसिन्धु।
तुअ पदपल्लव करि अवलम्बन तिल एक देह दिनबन्धु।।4।।

कवि इहलोकसँ विरक्त भए परलोकक चिन्ता करैत छथि। (1) हे माधव, हम तोहर बहुत प्रार्थना करैत छी। तिल आ' तुलसी लए अपन देह तोरा अर्पित कएल। आब हमरा प्रति दया करब नहि छाड़ह। (2) तुहु ... छार--तों संसार जगन्नाथ (सम्पूर्ण संसारक पालनकर्ता) कहबैत छह; हमरा ओहि संसारसँ बाहर नहि बूझह। (3) मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट, पतंग जाहि कोनहु रूपमे हमर जन्म हो, कर्म फलक अनुसार पुनःपुन: जन्म मरण हो, सभ अवस्थामे हमर ध्यान तोरा पर लागल रहए इएह हमर प्रार्थना।

[848]

हमर मन्दिर जबे आओब कान्ह। दिठि भरि हेरब से चान्द बयान।।1।।
नहि नहि बोलब जब हम नारि। अधिक पिरिति तब करब मुरारि।।2।।
कर धए मोहि बैसाओब कोर। चिर दिन साध पुरब तबे मोर।।3।।
करब आलिङ्गिन दुर कए मान। औ रसे पुरब हमे मुँदब नयान।।4।।
भनइ विद्यापति सुन बरनारि। तोहर पिरीति जाओ बलिहारि।।5।।

राधा कल्पना करैत छथि जे कृष्णक संग कोना-कोना रंग सभस करब। (1) दिठि भरि--भरि नजरि। बयान--वदन। (3) साध--मनोरथ। (4) नयान--आँखि।

14. पण्डित बाबाक पोथीसँ-

[849]

कतन जतन कए आनलि पास। खने खने खने धनि छाड़ए निसास।।1।।
करए सुधामुखि चुम्बन दान। रोगि करए जैसे औखध पान।।2।।
न मिलए आँखि न करए रसबात। निबिबन्ध फोअइते चल पद आध।।3।।
कुचजुग परसैते मोड़ए अङ्ग। मन्त्र न मान जनि बाल भुजङ्ग।।4।।
भनइ विद्यापति सुन बर कान। अलपे अलपे तोहे कर मधुपान।।

कृष्ण राधाक संग अपन रंगरभसक वर्णन करैत छथि। (3) निबिबन्ध... आध--चीर खोलए लगलहुँ तँ आधहि पएरें (द्रुत गति सँ) चलि गेलि।

[850]

पहिलहि राइ कानु दरसन भेल। परिचय दुलभ दूर रहु केलि।।1।।
अनुनय करइते अबनत बयनी। चकित बिलोकने नख लिखु धरनी।।2।।
अञ्चल परसैते चञ्चल कान्ह। राइ कएल पद आध पयान।।3।।
बिदगध नागर अनुभव जानि। राइक चरन पसारल पानि।।4।।
करे कर धरइते उपजल पेम। दारिद घट भरि पाओल हेम।।5।।
हास दरसि मुख झापल गोरि। देइ रतन पुनु पुनु लेइ चोरि।।6।।
भनहि विद्यापति सुनह सुजान। प्रेम भरे भुलल रसिकवर कान्ह।।7।।

कवि मुग्धा राधाक संग कृष्णक प्रथम संगमक वर्णन करैत छथि। (3) पद आध पयान....आधहि पएरें पड़ाइलि। (4) बिदगध--विदग्ध, कामकलानिपुण।

[851]

गगनक चान हाथ धरि देअलुँ कत समुझाएब नीति।
जत किछु कहलह सब तइसन भेल चीतपुतरि सभ रीति।।1।।
माधब बोध न मानइ राही।
बुझइते अबुझ अबुझ करि मानए कतए बुझाएब ताही।।2।।

तोहर मधुर गुन कतन सुनाओल तबहु कठिन करि माने।
जइसन तुहिन बरिस रजनीकर कमल न सहए पराने।।3।।
विद्यापति बानी सुन गुनमति आपे करहि पयाने।
राजा सिबसिंह रूपनराएन लछिमा देइ रस जाने।।4।।

दूती राधा कें बँसबामे अपन विफलता कृष्णकें सुनबैत अछि। (1) हे कान्ह, तोरा आकाशक चान (राधा) आनि देलिअहु। ओकरा कतेक नीति उपदेश देब? तों जे जेना-जेना करए कहलह, हम सभटा तहिना-तहिना कएलहुँ। (2) तैओ राधा हमर प्रबोधन नहि मानलक। (3) तुहिन--पाला, तुषार। रजनीकर--चान।

[852]

कुचजुग चारु धराधर जानि। हृदि पैसए जनि, पहु देल पानि।।1।।
धाम बिन्दु मुख हेरए नाह। चूमए हरखि सरस् अबगाह।।2।।
बुझए न पारए पिआ मुख भास। बदन निहारइते उपजए हास।।3।।
आपन भाव मोहे अनुभाव। न बुझए ऐसन किअ सुख पाब।।4।।
ताकर बचने कएल हम काज। कि कहब से सब कहइते लाज।।5।।
ए विपरीत विद्यापति भान। नागरि रमइत भय नहि मान।।6।।

[853]

घन घन गरजए घन मेह बरिसए दस दिस नहि परकासा।
पथ बिपथहु चीन्हए नहि पारिअ कइसे पुरए नित्र आसा।।1।।
माधव आजु अएलाहु बड़ धन्धे।
सुख लागि अएलाहुँ बड़ दुख पओलाहुँ पाप मनोभव सन्धे।।2।।
कण्टक पड्क दुअओ हमे पड़लहुँ जलधर बरिसल माथे।
जत दुख पएलहुँ हृदय हमे धएलहुँ काहि कहब दुखबाते।3।।
लाभक लोभे दुतर नरि तरलहुँ जीव रहल पुन भागे।
हेरइते ओ मुख बिसुरल सब दुख ऐसन कान्हु जनु लागे।।4।।
भनइ विद्यापति सुन बरजौबति ईसुख केओ पए जाने।

राजा सिबसिंह रूपनराएन लखिमादेइ रमाने।।5।।

राधा अभिसारमे भेल कष्ट कृष्णकें सुनबैत छथि। (1) पथ बिपथ--बाट कुबाट। (2) पाप मनोभव--पापी (दुष्ट) कामदेव। सन्ध--कुचालि? (4) जीव रहल--प्राण बाँचल।

[854]

ए धनि कर अवधान। तो बिनु उनमत कान।।1।।
कारन बिनु खने हास। कि कहए गदगद भास।।2।।
आकुल अति उतरोल। हा धिक हा धिक बोल।।3।।
काँपए दुरबल देह। धरए न पारए थेह[1]।।4।।
विद्यापति कह भाखि। रूपनराएन साखि।।5।।

1.केह।

दूती राधाकें कृष्णक विरहवेदना सुनबैत अछि। (1) हे राधा, ध्यान दए सुनह। उनमत--बौराएल। (3) खन व्याकुल भए घोल करए लगैत अछि। (4) थेह--स्थैर्य।

15. बेनीपुरीसँ

[855]

आएल उनमद समय बसन्त। दारुन मदन निकारुन कन्त।।1।।
रितुराज आज बिराज है सखि नागरीजन वन्दिते।
नव रङ्ग नव दल देखि उपवन सहज सोभित कुसुमिते।।2।।
कुसुमित कानन कोकिल नाद। मुनिहुक मानस उपजु बिसाद।।3।।
अतिमत मधुकर मधुर रव कर मालती मधु सञ्चिते।
समय अन्त उदन्त नहि किछु हमहि विधिवश वञ्चिते।।4।।
वञ्चित नागर सेहे संसार। एहि रितुपति जे न कर विहार।।5।।
अति भार हार मनोज मारए चन्द रवि सन भान ए।
पुरुब पाप सन्ताप जत हो मन मनोरथ जान ए।।6।।
मारुख मनसिज मार सर साधि। चान्दने देह चौगुन हो धाधि।7।।
सब धाधि आधि बेआधि जाएत करिअ धैरज कामिनी।
सुपहु मन्दिर तुरित आओत सुफल जाइति जामिनी।।8।।
जामिनि सुफल जाइति अबसान। धैरज धरु विद्यापति भान।।9।।

राधा वसन्तमे तीव्र भेल विरहवेदना सखीकें सुनबैत छथि। (1) निकारुन--निष्करुण, निर्दय। (4) समय अन्त--अवधि बीति गेल। उदन्त--समाचार। (6) हार परम भार बूझि पड़ैछ। (7) मारुख--घातक।

[856]

जोगिआ एक हमे देखल गे माई। अदभुत रूप कहलो नहिजाई।।1।।
पाँच बदन तिन नयन बिसाला। बसन बिहून ओढ़न बघछाला।।2।।
सिर बह गङ्ग तिलक सोह चन्दा। देखि सरुप मिटल दुखधन्धा।।3।।
एहि जोगिआमे रतलि भवानी। मन आनल बर कोन गुन जानी।।4।।
कुल नहि सिल नहि तातमहतारी। बएस दिनक थिक लाख दुइचारी।।5।।
सुनु ए मन्दाइनि विद्यापति बानी। एहो जोगिआ थिका त्रिभुवनदानी।।6।।
मनाइनि शिवक वर्णन करैत छथि।

[857]

सिब हो उतरब पार कओन विधि।
लोढ़ब कुसुम तोड़ब बेलपात। पुजब सदासिब गौरिक साथ।।1।।
बसह चढ़ल सिब फिरए मसान। भङिआ जरठ बेदन नहि जान।।2।।
जपतप नहि, नहि कएलहुँ दान। बिति गेल तिनपन करइते आन।।3।।
भनइ विद्यापति सुनह महेस। निरधन जानि मोर हरह कलेस।।4।।

कवि शिवसँ प्रार्थना करैत छथि। (2) जरठ--कठोर। (3) तिनपन--तीन अवस्था बाल्य, तारुण्य, यौवन।

[858]

हर जनु बिसरब मो ममिता। हम नर अधम परम पतिता।
तुअ सम अधम उधार न दोसर हम सन जग नहि पतिता।।
जम के द्वार जबाब कओन देब जखन पुछत पुन बतिया।
जब जमकिंकर कोपि पठाओत तखन के होत धरहरिआ।।
भन विद्यापति सुकवि पुनितमति संकर बिपरित बानी।
असरन सरन चरण सिर नाओल दया करु हे सुलपानी।।
कवि शिवसँ प्रार्थना करैत छथि।

[859]

एत जपतप हम किअ लागि कएलहुँ कथि ला कएल नित दान।
हमर धिआके एहे बर होएता अब नहि रहत परान।।
हर के माए बाप नहि थिकइन नहि छनि सोदर भाए।
मोर धिया जँ सासुर जइती बैसति ककर लग जाए।।
घास काढ़ि लइती बसहा चरइती कुटती भाङ धतूर।
एको पल गोरा बैसहु न पइती रहती ठाढ़ि हजूर।।
भन विद्यापति सुनु ए मनाइनि दिढ़ करु अपन गेआन।
तीन लोक के एहो छथि ठाकुर गौरा देवीके जान।।
मनाइनि शिवकें देखि विलाप करैत छथि।

[860]

कखन हरब दुख मोर हे भोला दानी।
दुखहि जनम भेल दुखहि गमाओल सुख सपनहु नहु मोर।।
एहि भवसागर पार कतहु नहि भैरब धर करुआर।
भन वियापति मोर भोलानाथ गति करब अन्त मोहि पार।।
कवि शिवक स्तुति करैत छथि।

[861]

एहि बिदि व्याहन आयो एहन बाउर जोगी।
टपर टपर कए बसहा आएल खटर खटर रुण्डमाल।
भकर भकर सिब भाङ भकोसथि डमरु लेल करलाए।
ऐपन मेटल पुरहर फोड़ल बर किमि चौमुख दीप।
पिआ लए मनाइनि मण्डप पैसलि गाबिअ जनु सखि गीत।
भनइ विघापति सुनु ए मनाइति ई थिका त्रिभुवन ईस।
कवि शिव-विवाहक वर्णन करैत छथि।

[862]

जोगिआ हमर जगत सुखदायक दुख ककरहु नहि देथि।
एहि जोगिआकें भाङ पिआ कए धतुर खोआ धन लेथि।।1।।
कातिक गनपति दुइ जन बालक जग भरि के नहि जान।
तनिका नहि किछु अभरन थिकइन रतिएक सोन नहि कान।।2।।
आनक पूतकें सोनें रुपें छारथि गरों देथि मनिमाल।
अपना पूत लए किछु नहि जुड़न्हि अनका लए जंजाल।।3।।
भनइ वियापति सुनु हे गौरादेबि दिढ करु अपन गेआन।
ई हर थिका। त्रिभुवनपति दानी जग भरि के नहि जान।।4।।
कवि शिवक महिमा गबैत छथि।

[863]

जँ हम जनितहुँ भोला भेला। ठकना होइतहुँ रामगुलाम।
भाइ विभीषण बढ तप कएलन्हि जपलन्हि रामक नाम।।1।।

पुरुब पछिम एको नहि गेला अचल भेला यहि ठाम।
बीस भुजा दस माथ चढ़ाओल भाङ दिहल भरि गाल।।2।।
एक लाख पुत सवा लाख नाती कोटि सुवर्णक दान।
गुन अबगुन सिब एको नहि बुझलनि रखलन्हि राबणक नाम।।3।।
भन विद्यापति सुकवि पुनित मति कर जोड़ि बिनऔं महेस।
गुन अबगुन हर मन नहि आनथि सेवकक हथि कलेस।।4।।
कवि भक्तिक अतिरेकमे शिवकें उपराग दैत छथि।

[864]

बिआह चलल सिबसङ्कर हर बड़कर।
डामरु लेल कर लाए कि बिभूति भुअङ्कर।।1।।
नगर निअर हर आएल सुनि पाओल।
देखए चलल सब भूप रुप देखि लुबधल।।2।।
परिछए चललि मनाइनि सब गाइनि।
नाग कएल फुफकार कि दुरहि पड़ाइलि।।3।।
एहन उमत बरु के कर उर बिखधर।
गौरी बरु रहथु कुमारि करब बर दोसर।।4।।
भनइ वियापति गाओल गाबि सुनाओल।
तुरित करिअ सुभ काज कि हर बड़ सुन्दर।।5।।
शिव-विवाहक वर्णन।

[865]

भोला मंगबा खाइते भेल रंगिया, भोला बौड़हबा।
सबके ओढ़ाबे भोला साल दोसलवा आप ओढ़ए मृग छलबा।
सबके खिआवे भोला पाँच पकवनमा आप खाए भाङ धतुरबा।
कोइ चढ़ावे भोला अच्छत चानन कोइ चढ़ावे वेलपतबा।
जोगिन भूतिन सिब के संघतिया भैरो बजावे मिरदङिया।
भन विधापति जय जय संकर पारबती गौरी सगिया।
शिवक स्तुति।

16. मजूमदारसँ

[866]

कमल मिलल दल मधुप चलल घर बिहग गहल निज ठामे।
अरे रे पथिक जन थीर करिअ मन बड़ पाँतर दुर गामे।।1।।
ननदि रुसिए रहु परदेस बस पहु सासुड़ि न सूझए साँझे।
निठूर समाज पुछार उदासिन आओर कि करब बेआजे।।2।।
चन्दन चम्प घन चामर अगर कुङ्कुम पटबासे।
विद्यापति भन पथिक बचन सुन चिते बुझि कर अवधाने।
राजा सिबसिंह रुपनराएन लखिमादेइ रमाने।।4।।

विरहिणी पथिककें संकेतसँ संगम हेतु आह्वान करैत छथि। (1) साँझ पड़ि गेल। आगाँ गाम बहुत दूरमे अछि। बीचमे बड़का पाँतर (जनशून्य बाध) छैक।

समाप्त।

परिशिष्ट।

विद्यापतिक वंशावली

टि. – कोष्ठमे पिताक नाम देखाओल अछि।

(एक)

1. विष्णु ठाकुर।
2. हरादित्य ठाकुर। <
3. गढ़ बिसपी सं. त्रिपाटि कर्मादित्य ठाकुर।
4. सान्धिविग्रहिक देवादित्य, राजवल्लभ भवादित्य।
5. सान्धिविग्रहिक महावार्तिक नैबन्धिक पार्णागारिक वीरेश्वर, महावार्तिक नैबन्धिक महामहोपाध्याय धीरेश्वर, महासामन्ताधिपति महामहत्तक गणेश्वर, भाण्डागारिक जटेश्वर, स्थानान्तरिक हरदत्त, मुद्राहस्तक लक्ष्मीदत्त, राजवल्लभ शुभदत्त (देवादित्य)।
6. महामहत्तक चण्डेश्वर (वीरेश्वर), जयदत्त, कीर्तिदत्त, (धीरेश्वर), गोविन्ददत्त, रामदत्त(गणेश्वर)।
7. गौरीपति प्र: गोपाल, गणपति (जयदत्त), गज्रेन, सुपर (कीर्तिदत्त)।
8. राजपण्डित महो. विद्यापति (गणपति), इन्द्र, गिरीश्वर (गज्रेन)।
9. वाचस्पति, हरपति, नरपति (विद्यापति), सुचरित, मतीश्वर (गिरीश्वर)।
10. रतिधर प्र. नोने (वाचस्पति), बसाओन (हरपति)।
11. रघुनाथ (रतिधर), जसात्रि, पुरुषोतम (बसाओन)।

12. विश्वनाथ (रघुनाथ), गोण्ढि(जसाजि)।

13. अच्युत, नारायण, मोहन (विश्वनाथ), कुलधर, राजधर (गोंढि)।

14. लक्ष्मण, देवानन्द (अच्युत), दिनमणि (नारायण), भिखारी, चतुर (मोहन)।

15. तुलानाथ (दिनमणि)।

16. एकनाथ, जीवनाथ प्र. नाथै।

17. भैया, चेतनाथ (एकनाथ)।

18. बाबूलाल, प्यारेलाल, दुलार, नूनू, फणिलाल (भैया)।

19. लक्ष्मीनाथ (बाबूलाल), अपूछ, मोहन (दुलार), वनमाल, विश्वेश्वर, माहेश्वर (नूनू), मनोहर, बदरीनाथ, श्रीनाथ प्र. दुखन (फणिलाल)।

20. बबुजन बलदेव यदुनाथ (लक्ष्मीनाथ), रामेश्वर, राजेश्वर (विश्वेश्वर), धनेश्वर (महेश्वर), विन्ध्यनाथ, विजयनाथ, दिव्यनाथ (बदरीलाल), अक्षयधर, शशिधर, तेजधर, राजधर, नागेन्द्र, उपेन्द्र, सुरेन्द्र, महेन्द्र, भूपेन्द्र (दुखन)।

परिशिष्ट 2

पंजीमे विद्यापतिक वंशक सन्दर्भ

(एक)

(बुधबाल)......श्रीकरसुतौ शुभङ्कर दालूकौ सूबासं. हेलूदौ. हरिसिंहपुर निखुतीसं हीमादौ।

(दू)

(बुधबाल)......शुभङ्करसुताः मुरारि कान्ह केशवाः गढ़बिसपीसं. कीर्तिदौ.। गढ़बिसपीसं. बीजी त्रिपाटिकर्मादित्यः। एसुतौ सान्धि-विग्रहक देवादित्य राजवल्लभ भवादित्यौ। तत्र सान्धिविग्रहिक देवादित्यसुताः पार्णागारिक वीरेश्वर महामहोपाध्याय गणेश्वर महामहोपाध्याय धीरेश्वर भाण्डागारिक जटेश्वर स्थानान्तरिक हरदत्त सान्धिविग्रहिक लक्ष्मीदत्त ठक्कुर शुभदत्ताः। आद्यौ न्यायवासि त्रिपाटिकामेश्वरदौ; अपरौ महरौलीवासि माधवभागिनेयौ; अन्त्याः महथापाटकवासि कार्जी मानेदौ.। धीरेश्वरसुतौ जयदत्त कीर्ती गङ्गौरासं. हरिकेशदौ.। कीर्तिसुतौ गजेन सुपरौ पालीसं. चन्द्रकरदौ.। गजेनसुतौ *इन्द्र गिरीश्वरौ* तिसुतीसं. भवेश्वरदौ.। गिरीश्वरसुतौ सुचरित मतीश्वरौ सङ्कोनासं. हरिहरदौ महुआसं. धारू, सहुली सङ्कराढीसं. नयदेवस्ततः ....।

(तीन)

(पनिचोभ).....भगीरथदौ। रघुसुताः गङ्गाधर सोमधर महामहत्तक चन्द्रधर नारायण पार्णागारिक हरदत्ताः *ओइनीसं.* पार्णागारिक *उदयसिंहदौ* महाराज *भवेश्वर*सुतः पार्णागारिक उदयसिंहः माहरसं. गाङ्गदौ। पार्णागारिक उदयसिंहसुतः कुमार *प्रतापसिंहः*

हरिसिंहपुरनिखुतीसं. पुष्पभट्ट सूपनदौ. गढबिसपीसं. महादेव,......। महामहतक चन्द्रधरसुताः दिवाकर-दिनकर-दूबन-नोनेकाः सोदरपुरसं. देवेश्वरदौ घोसौतसं. गुणाकर.....। दिवाकरसुताः माने धाने भगीरथ ठक्कुराः खौआलसं. बुद्धिनाथदौ हरिअम्बसं.......। भगीरथसुतौ रामदत्त-शिवदत्तौ गढ बिसपीसं. जसत्रि दौ। जयदत्तसुतौ गौरीपति-गणपती सुआरीसं. शिशु प्रः चन्द्रकरदौ.। तत्र गणपतिसुतो राजपण्डित महो विद्यापतिः बुधबालसं. श्रीकरदौ;। अपराः श्रीकरसुताः बलहा बलिआससं. मूसेदौ. सोदरपुरसं. जीवेश्वर...। राजपण्डित महो. विद्यापतिसुतौ हरपति-नरपती सम्बुआलसं. शुक्लहरिवंशदौ डीह्दहिभतसं. हरिहरसुत रघु...। ठक्कुर हरपतिसुतो बसाओनः तप्पनपुरपालिसं. भत्रोसरदौ दरिहरासं. हैलू...। बसाओनसुतौ जसत्रि-पुरुषोत्तमौ पद्मपुरपनिचोभसं. बागेदौ। बागेसुतौ भानुहरदत्तौ माण्डरसं. ऋषिदौ. एकम्बा खण्डवलासं. रुद्रसुतहोरे..., जसयीसुत बछौनिवासि बम्मनिआमसं....दौं।

परिशिष्ट-3

शिवसिंहक वंशावली

पूर्वज --- (1)नाह झा प्र. ओएन ठाकुर (2)अतिरूप ठाकुर (3)विश्वरूप ठाकुर (4)गोविन्द ठाकुर (5)राजा कामेश्वर ठाकुर।

कामेश्वरकें तीन बालक- भोगीश्वर, कुसुमेश्वर आ भवेश्वर। तीनूमे राज्यक विभाजन भेल। यथा-

क-- (1) भोगीश्वर ठाकुर

(2) स्थानान्तरिक विश्वेश्वर, मुद्राहस्त वीरेश्वर, मुद्राहस्तक गणेश्वर, स्थानान्तरिक गोविन्द।

(3) महाराज नयसिंह, महाराज वीरसिंह, वर कुमर कीर्तिसिंह (गणेश्वर), कुमर माधव, कुमर केशव, कुमर मुरारि, राजा जयसिंह, कुमर दामोदर (गोविन्द)

ख – (1) महाराज कुसुमेश्वर ठाकुर

(2) महामहतक महेश्वर, महाराज रत्नेश्वर, राजपण्डित चन्द्रसिंह।

(3) महामहत्तक हराइ, राजपण्डित सराइ, कुमर सरवर, देयागारिक मतीश्वर, मुद्राहस्तक गुणीश्वर, कुमर सोमेश्वर, (महेश्वर)। राजा उद्धवसिंह, महाराज रुद्रसिंह, राजपण्डित पिथाइ, (रत्नेश्वर)। कुमर दुर्गसिंह, (उदयसिंह)।

(4) महाराज अमरसिंह (रुद्रसिंह)।

(5) कुमर क्षेमसिंह, कुमर भोजसिंह, कुमर बुद्धिसिंह (अमरसिंह)।

भवेश्वर ठाकुर, दे. 'ग'

'क'

महाराज भोगीश्वर

स्थानान्तरिक विश्वेश्वर, मुद्राहस्तक वीरेश्वर, मुद्राहस्तक गणेश्वर, स्थानान्तरिक गोविन्द

महाराज जयसिंह, महाराज वीरसिंह, वर कुमर कीर्तिसिंह, कुमर माधव, कुमर केशव, कुमर मुरारि, राजा जयसिंह, कुमर दामोदर

'ख'

महाराज कुसुमेश्वर

महामहतक महेश्वर, महाराज रत्नेश्वर, राजपण्डित चन्द्रसिंह

महामहतक हराइ, राजपण्डित सराइ, कुमर सरबए, कुमर चन्द्रेश्वर, देवागारिक मतीश्वर, मुद्राहस्तक गुणीश्वर, कुमर सोमेश्वर (महेश्वर), राजा उद्धवसिंह, महाराज रुद्रसिंह, राजपण्डित पिथाइ (रत्नेश्वर)।

महाराज अमरसिंह (रुद्रसिंह)

कुमर क्षेमसिंह, कुमर भोजसिंह, कुमर बुद्धिसिंह

'ग'

1. महाराज भवेश्वर
2. पार्णागारिक उदयसिंह, कुमर त्रिपुरसिंह, महाराज देवसिंह, महाराज हरिसिंह (रेखू घ)

3. कुमर प्रतापसिंह, कुमर संसारसिंह, कुमर शान्तिसिंह, कुमर दुर्गसिंह,(उदयसिंह)। कुमर साम्बसिंह(प्र.राए अर्जुन),(त्रिपुरसिंह)। महाराज शिवसिंह, महाराज पद्मसिंह(देवसिंह)। दर्पनारायण महाराज नरसिंह (हरिसिंह)।
4. कुमर सूर्यसिंह, कुमर हेमसिंह, कुमर कर्मसिंह, कुमर दमन सिंह, कुमर प्राणसिंह, कुमर कल्याणसिंह, कुमर गोसाईं सिंह (प्रतापसिंह) रूपनारायण नरसिंह।
5. दर्पनारायण महाराज नरसिंह, कुमर विजयनारायण राजसिंह, कुमर वीरनारायण भानुसिंह, कुमर रताइ (हरि)।
6. हृदयनारायण महाराज धीरसिंह, हरिनारायण महाराज भैरवसिंह, भूपुरन्दर राजा चन्द्रसिंह, दुर्लभनारायण राजा रणसिंह, कुमर धुराइ(नर)।
7. महाराज राघवसिंह, महाराज जगनारायण (धीरसिंह), रूपनारायण महाराज रामभद्र, गरुडनारायण महाराज पुरुषोत्तम (भैरव), नरनारायण महाराज विश्वनाथ।
8. हरि प्र. कुमर गदाधर, महाराज जयनारायण, कंसनारायण महाराज लक्ष्मीनाथ, राजा बलभद्र, कुमर रतिनाथ, हृदयनारायण महाराज भवनाथ, राजा प्रतापरुद्र, रूपनारायण राजा रामचन्द्र

   रूपनारायण महाराज वीरवर, कुलनाशक भूपुरुन्दर रत्नसिंह।
9. कुमर मधुसूदन, कुमर श्रीनाथ, महाराज कीर्तिसिंह, महाराज रुद्रनारायण, रूपनारायण(बल)., कुलनाशक भूपुरन्दर रत्नसिंह।

परिशिष्ट-4

भनिता मे आएल कवि ओ आनक नाम

(क) कविक

अभिनव जयदेव 58, 86, 458, 461, 593, 787

कण्ठहार 78,467,468, 578

कवि कण्ठहार 43, 85, 123, 188, 194, 331, 335, 349, 353, 403, 422, 431, 434, 466, 467, 479, 519, 523, 574, 578, 582, 584, 586, 587, 589, 829।

विद्यापति अधिक ठाम

कण्ठहार 78, 468

कविकण्ठहार 43

सरस कवि 87, 284, 303, 384, 408, 484।

सरसति 581

(ख) आश्रयदाता

अमर, कुमर 87, 485।

अर्जुन 94, 355, 486।

कंसनारायण 334।

कमला 355।

गयासुद्दीन 512।

गरुड़नारायण 603।

गुणीश्वर 90।

गुना देवी : अर्जुन 486।

चन्दल देवी : बैजल 205, 330, 577।

जयमती : शङ्कर 414।

जयराम 647, 649, 703।

जानोदेवी 485।

जूड़म देवी 90।

दामोदर, दशावधात 360।

देवसिंह 126, 251, 277, 507, 522, 539।

नसिरासाह 803।

पदुमादेवी 500।

पद्मसिंह 26।

बैजलदेव, बैजनाथ 205, 530, 571।

भोगीश्वर 500।

मधुमती 375।

मलहमजुग 512।

मलिक बहारुद्दीन 432।

महेश्वर, मन्त्री 90, 350, 464।

मोदवती 662, 663।

परिशिष्ट 5

सन्दर्भ ग्रन्थ

गोविन्द झा– *विद्यापति-गीतावली,* मैथिली अकादमी, पटना, 1981.

ग्रिअर्सन, जार्ज अब्राहम– *मैथिली क्रेस्टोमेथी,* रायल एसिआटिक सोसाइटी ऑफ बैंगाल, कलकता, 1882.

बेनीपुरी– *विद्यापति-पदावली,* पुस्तक भंडार, पटना।

भोल झा– *मिथिला गीत संग्रह,* 1917।

रमानाथ झा– *भाषागीतसंग्रह,* मैथिली डेभलपमेंट फंड, पटना विश्वविद्यालय, पटना, 1969.

रामदेव झा– *हरगौरीविवाह,* मिथिला रिसर्च सोसाइटी, लहेरियासराय, दरभंगा, 1970.

विमानविहारी मजूमदार– *विद्यापतिर पदावली,* शरत् कुमार मित्र, कलकता, 1952.

शशिनाथ झा(1)– *विद्यापति-पदावली,* बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, प्रथम खंड, 1961, द्वितीय खंड 1967, तृतीय खंड 1979.

शशिनाथ झा(2)– *गोरक्षविजय,* का.द. संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा.

शिवनन्दन ठाकुर– *महाकवि विद्यापति,* पुस्तक भंडार, पटना, 1941.

सीताराम झा– *मैथिली गीताञ्जलि,* 1921.

सुभद्र झा– Songs of Vidyapati, मोतीलाल बनारसीदास, पटना, 1950.

सुरेन्द्र झा– *मैथिली प्राचीन गीतावली,* मैथिली अकादमी, पटना, 1977.

परिशिष्ट – 6

गीतक अनुक्रमणी

गीतक आदि	गीतांक	स्रोत
अकामिक मन्दिर	491	त.210
अगमने पेम	116	ने.23
अघट हठे	293	ने. 220
अच्छ अच्छ	574	गोर.2
अछलि पुरुब	235	ने.157
अछलि भरमे	236	ने.158
अजरधुनी	778	नगु (प्र)11
अञ्जलि भरि	753	नगु (हर) 21
अतिनागर दे. गुञ्जा		
अधर मड़्गइते	308	ने.236
अधरसुधा	503	त 227
अधर सुशोभित	335	त 4
अधर हास	586	गोर 14
अनतए मानस	558	भाषा 90
अनलरन्ध	789	नगु.( )9

गीतक आदि	गीतांक	स्रोत
अनलहु न आबए दे. ए कि		
अनुखन माधव	840	नगु 791
अपत सपत दे. अपद सपथ		
अपद सपथ	432	त 135; मै. 95
अपनहि नागरि	154	ने 66
अपनहि पेमक दे. पहिलहि		
अपना काज	354	त. 28; ग्रि. 3
अपना मन्दिर	157	ने. 69
अपनेहि अइलिहुँ	821	नगु. 489
अपर पयोधि	769	नगु. (पर)।
अपरुब रूपक	720	नगु (मिथि) 575
अबधि बढ़ओलनि	209	ने. 130
अबधि बहिए	203	ने. 122
अबधि मास	706	मै. 143
अबनत आनन फू	254	ने. 179
अबनत आनन कए दे. अबनत मुह		
अबनत मुह	345	त. 17
अब मथुरा	830	नगु. 625; मै.99
अबयब सबहि	125	ने.32
